कन्हैयालाल ओझा



राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

मूल्य	:	आठ रुपये
प्रथम संस्करण	:	नवम्बर, १९५९
प्रकाशक	:	राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक	:	युगान्तर प्रेस, दिल्ली

प्रस्तावना

अपने इस उपन्यास के बारे मे मैं कोई बहुत बडा वक्तव्य देना नहीं चाहता। फिर भी मैं यह कहना चाहूगा कि कई दृष्टियो से यह मेरे अब तक के अन्य उपन्यासो से विशिष्ट है। आदर्शवाद या यथार्थवाद के आग्रहो मे मैं प्राय नही पडता, किन्तु प्रस्तुत उपन्यास मे मैंने चरित्र का अनुसरण करने की चेष्टा की है, और विशेषत नारी-चरित्र का अनुसरण करने की। नर या नारी के सम्बन्ध मे मेरी आस्था मे कोई चढाव-उतार नही है। नारी की वकालत के लिए यद्यपि आधुनिक समाज मे, और खासकर भारतीय समाज मे, काफी आवश्यकता और अवसर है, किन्तु मुझमे उसके लिए लोभ नही है। न ही मैं पुरुष की एकान्त श्रेष्ठता पर हामी हू, वह कई स्थलो पर प्रकृत्या हीन है, और जहा नही है, वहा भी वह कितनी ही गहरी निचाई मे उतर सकता है। नारी भी, उसी तरह, कई मानो मे पुरुष से हीन है, और वह भी अपने प्रकृत ऊचाई के क्षेत्र मे भी, कितनी ही निचाई मे उतर सकती है। नर-नारी की पारस्परिक अपेक्षा, सहानुभूति और आकर्षण का पर्याप्त महत्व है, सृष्टि के विकास मे उसकी महत्वपूर्ण भूमिका को भी कोई नज़रअन्दाज़ नही कर सकता। किन्तु मैं मानता हू, आज मानव समाज की मौलिक आवश्यकताएं सभ्यता के प्रकाश मे इतनी सस्कारित हो चुकी हैं, कि नर-नारी की पारस्परिक अपेक्षा को सहज रूप मे केवल मनोवैज्ञानिक ही कहना चाहिए, और इसीलिए आज नर या नारी कोई भी निरपेक्ष रूप मे ही अपने क्षेत्र मे पर्याप्त विकास कर सकता है। रहा प्रश्न मनोवैज्ञानिक

अपेक्षा का, सो मैं समझता हूं, हमारा वैयक्तिक विवेक, सामाजिक चेतना, तथा आचरण की विशिष्ट पृष्ठभूमि मे विकसित हमारी वासनाए और आदतें इस सीमा मे ईप्सित व्यतिरेक पैदा कर सकती है, और कर रही हैं।

यदि इस तथ्य मे सत्य का थोडा भी अश हो, तो नर-नारी के मिलन की सम्पात-रेखा पर, हमे नये क्षितिज की खोज करनी हीं पडेगी। यदि हमे ऐसा अभिनव क्षेत्र नही मिला, या हमने ही किसी ऐसे क्षेत्र की उद्भावना नही की, तो नर-नारी के सम्बन्धो मे निकट भविष्य मे ही हमे एक ऐसे अवरोध का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए, जो हमारी सभ्यता ही के लिए चुनौती हो जाए। इस अवरोध के लक्षण हम इस समय समाज मे तो पाते ही है, व्यक्ति के जीवन मे भी इन दरारो का अभाव नही है।

पर यह तो, निकट ही क्यो न हो, भविष्य की बात है। वर्तमान मे भी इन क्षितिजो की खोज के अभाव ने हमारे दाम्पत्य जीवन को कितना खोखला बना दिया है, यह हम सब जानते हैं, आज का समूचा ही साहित्य इन समस्याओ से भरा पडा है। मैंने प्रस्तुत उपन्यास मे चाहा है कि नारी के मनोविज्ञान की गहराई मे प्रवेश कर उसके व्यक्तित्व के विकास की मौलिक आवश्यकताओ का सूत्र पाया जाए, और उनकी ओर समाज का सहानुभूतिपूर्ण ध्यान आकृष्ट किया जाए। एक पुरुष के लिए कदाचित् यह कार्य अत्यन्त ही दुष्कर है। फिर हमारे, और खास कर नारी के जीवन की प्राकृतिक इकाइयो पर आर्थिक, नैतिक और सामाजिक विधि-निषेधो की कितनी परतें चढी हुई हैं, इनको भेदकर मूल उत्स को पाना शायद असम्भव ही हो, किंतु फिर भी मैंने चेष्टा की है। हो सकता है कि कोई नारी ही यह कह दे कि मेरी अनुभूति मिथ्या है, कि मैं उसकी भावनाओ का स्पर्श नही पा सका। इस कथन मे सत्य हो भी सकता है, नही भी हो सकता है। अपने अचेतन की बात को चेतना की सतह पर लाकर देखना अभी हमने सीखा ही कहां है, और अपने

आग्रहो से भी अभी हमने छुट्टी कहा पाई है ? किन्तु मानव-इतिहास की तरह मन का भी एक इतिहास है, और सच पूछा जाए तो उसका वैज्ञानिक अन्वेषण ही एक अच्छे उपन्यास का कार्य है। मैं समझता हू, नारी-चरित्र की आवश्यकता का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण कदाचित् विश्व-साहित्य मे पहली बार अकुतोभय-भाव से फ्रासिसी लेखक फ्लाबेयर ने अपने उपन्यास 'मदाम बावरी' मे किया था। मैने भारतीय नारी को लिया है, उसके मानसिक गठन मे कितनी जडता (frustration) और कितना कीट (rust) लग सकता है, इसके लिए परिस्थितिया पैदा की हैं, और उस गहराई मे ले जाकर मैने उसे छोड नही दिया। उसके मातृत्व तथा पतिव्रत के सस्कारो को भी मैंने कसौटी पर कसा है। मैंने उसे समाज की मान्यताओ के बीच केवल अपनी बात कहने ही का अवसर नही दिया, बल्कि व्यक्तित्व के विकास की परिधि मे उसकी रुचि और सस्कारो के अनुकूल मनचाही भूमिका खेलने का अवसर भी दिया है। और सेक्स की सीमा के आगे एक नये निस्सीम क्षेत्र के क्षितिज की प्रतीति कराने का भी मेरा प्रयत्न इसमे है।

मैं समझता हू, कथा साहित्य के प्रभावशाली तत्व वे ही हो सकते है, जो लेखक के व्यक्तित्व मे निहित हो। कथा के चरित्र लेखक की भावनाओ और मनोवेगो के ही मूर्त रूप होते है और इन भावनाओ तथा मनोवेगो के बीच लेखक की मनोभूमि का सम्बन्ध ही इन विभिन्न पात्रो के बीच का सम्बन्ध होता है। किसी रचना की श्रेष्ठता इन सम्बन्धो की सचाई और वास्तविकता पर ही निर्भर करती है। वस्तुत. इसीलिए मिथ्या होते हुए भी हमे लेखक की सृष्टि सत्य प्रतीत होती है। वह हमे पकड पाती है, केवल निहित तत्वो की विविधता के कारण नही, प्रत्युत इन तत्वो की सयुक्त गतिशील समग्रता के कारण। लेखक के इस निस्सग व्यक्तित्व को प्रस्तुत रचना मे मैंने मूर्त रूप दिया हे। साहित्य मे चाहे यह नया प्रयोग लगे, किन्तु यह एक सचाई है, जो हर रचना मे परदे के पीछे रहती ही है। मैं उसे परदे के बाहर रगभूमि मे घसीट लाया हू।

इस चरित्र मे कल्पना और यथार्थ का अजीब मिश्रण है, जिसमे अनुपात खोजने की चेष्टा नही की जानी चाहिए। फिर भी सत्य यह है कि यह व्यक्ति लेखक स्वय नही है, है केवल उसका शुद्ध व्यक्तित्व। और इस पात्र की भौतिक परिस्थितियो की वास्तविकता उतनी ही उधार ली हुई है, जितनी कथा-निर्वाह के लिए आवश्यक थी। हा, मनोविश्लेषण का पैमाना लेकर नाप-जोख करने वाले आलोचक अपने मत के लिए स्वतत्र है।

पात्रो के सम्बन्ध-निर्माण मे चाहे मेरा अचेतन उत्तरदायी रहा हो, किन्तु उनके निज के व्यक्तित्व-निर्माण में मेरा चैतन्य ही उत्तरदायी रहा है। मैंने चेष्टा की है कि मै अधिक से अधिक इस माने मे निर्लेप रहू, और अपने व्यक्तित्व को उनपर थोपने की अपेक्षा उनके व्यक्तित्व से ही तादात्म्य प्राप्त करू। इस निर्लिप्ति ही मे एक लेखक की सफलता है।

यथार्थ और कल्पना के इस द्वन्द्वात्मक आग्रह के कारण पात्रो के ऊपर वास्तविक व्यक्तियो की छाया चाहे आ गई प्रतीत हो, पर उनका विकास मेरा निज का है। लेखक की सृष्टि कोई निराली नही होती, उसमे भी हम-आप ही बसते हैं। यदि कोई इनमे अपने आपको देखने की चेष्टा करे, तो वह मेरे श्रम की सफलता ही का प्रमाण होगा। मै उसका स्वागत करता हू—सबसे आगे अपने अछद्म नाम-रूप मे मैं तो हू ही! किन्तु मै तब भी प्रार्थना करूगा, कि पाठक मेरी कल्पना का प्रसाद ही ग्रहण करे, दड ग्रहण करके मुझे लज्जित न करे। सच तो यह है, जैसा कि मैं कह भी चुका हूं, कि ये सभी पात्र मेरी कल्पना ही के प्रतिनिधि हैं, वास्तविक व्यक्तियो से यदि ये कुछ लेते-देते दिखाई दे, तो वह भ्राति ही है।

पाठक लेखक का परमेश्वर ही होता है। मेरे पाठक ने मुझे पढा अवश्य है, पर अपनी सामर्थ्य और अभावो को जानने का उसने मुझे कम ही अवसर दिया है। मैं पाठक को बहलाना नही चाहता, यद्यपि पकड़े अवश्य रखना चाहता हू—उसे बरगलाना तो कतई नही चाहता, फिर

भी यदि वह इन पृष्ठो मे अपने आप को पहचान सके, भूल भी सके, तो वह मुझे ज़रूर याद करे, यही मेरी उससे प्रार्थना है। अपने व्यक्तित्व का तो मैंने इसमे विनियोग ही कर दिया है।

शुभ कामनाओ के साथ—

८/ए, नन्दन रोड, भवानीपुर,
कलकत्ता २५.
२० अक्तूबर, १९५९

—कन्हैयालाल ओझा 'स्नेह'

१

नरवरोत्तम नारायण नटनागर ने—नटनागर मुझे क्षमा करें, उनका गुणानुवाद प्रारभ करने की जल्दी मे, सविधान द्वारा प्रदान की हुई उनके नाम को भूमिका 'श्री' मैं भूल गया हू, प्रायश्चितस्वरूप मैं लिखता हू श्रीमान् नरवरोत्तम नारायण नटनागर ने अपने ताम्बूल-राग-रजित अधरो को १८० के कोण पर समानान्तर करके कहा, 'आप लोगो को धन्यवाद देने मे मिसेज नटनागर भी मेरे साथ हैं। आपने सचमुच बडी कृपा की है!'

जोशी ने कहा, 'मिसेज़ नटनागर को पाकिट मे छिपाते फिरते हो क्या दोस्त ?'

'दिल मे तो जरूर छिपाते फिरते होगे!' नानकचन्द ने फबती कसी।

धर्मप्रकाश ने कहा, 'पाकिट मे निकल जाए तो भाइयो, सीने पर चिपके हुए पाकिट की तलाश करना!'

जूनियर जोशी कहता-कहता रुक गया कि मिसेज़ नटनागर तो श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर के सिर पर चढकर बोल रही हैं!—पर प्रकट मे वह यह तो कह गया, 'जादू वह जो सिर पर चढकर बोले!'

जब कि श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर खिसियाने-से खीस निपोरते हुए सबकी बातो का अपनी और मिसेज़ नटनागर की ओर से भी रस-पान-सा करते दिखाई दे रहे थे, नानकचन्द ने झुककर उनके कन्धे पर

हाथ रखा और पूछा, 'यार, माल तो तुमने लज्जतदार खिलाया, खुदा करे, तुम्हारा माल भी उतना ही लज्जतदार हो, पर एक बार तो जरूर भाभी की शकल दिखानी पडेगी ! क्यो भाइयो, आपका क्या ख्याल है ?'

लगभग सभी बोलि उठे, 'बिल्कुल दुरुस्त ! भाई नटनागर जी, इसके बिना तो आज का यह सब प्रोग्राम फीका रहेगा !'

धर्मप्रकाश ने कहा, 'ऐसी क्या बात है ?—अबकी सण्डे (रविवार) आप सबकी इनके घर पर चाय रही ! चार बजे !'

श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर ने किंचित् घबराते हुए कहा, 'पर भाई साहिब, मुझे ज़रा मिसेज़ नटनागर से पूछ तो लेना चाहिए था !'

धर्मप्रकाश ने किंचित् हसकर कहा,'वे क्या आपसे दूर,मेरा मतलब· ।'

बीच ही मे रोककर नटनागर बोले, 'सो तो मैं समझता हू, पर उनको यह सब प्रबन्ध करने मे कितनी असुविधा होगी यह तो वही जान सकती हैं !'

जोशी ने कहा, 'मालूम देता है, भाभी काली है ।'

जूनियर जोशी ने उत्तर दिया, 'जोशी जी, यह आप मिसेज नटनागर का अपमान करते हैं ।'

जोशी बोला, 'तो फिर दिखाने मे हिचकिचाते क्यो हैं ?'

नटनागर को जोश आ गया, 'अच्छा तै रही, सण्डे को चार बजे !'

यह थी श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर द्वारा अपने विवाह के उपलक्ष्य मे अपने कार्यालय के सहयोगियो को दी हुई दावत, जिसका प्रबन्ध किया गया था एक होटल मे ।

इतवार को चायपान का आयोजन किया गया । श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर सरकारी क्वार्टर ही मे रहते थे । पास ही मे कुछ दूर हटकर बडे बाबू धर्मप्रकाश का क्वार्टर था, बाईं ओर नानकचन्द रहते थे । दूसरे बाबुओ के क्वार्टर भी इसी तरह बिखरे हुए थे । पूर्व मे उनका दफ्तर था ।

कुर्सिया और मेज़ें दफ्तर से मगवा ली गई। रेशम के सुन्दर धागो से कढे हुए बेल-बूटेदार मेज़पोश को टेबल पर इस तरह बिछाया गया कि बेलबूटे अतिथियो की दृष्टि को पकडे ही। पास-पडोस से एक टी-सेट माग लिया गया था, उनके घर की भी चार कप-प्लेटे मौजूद थी। काच के दो गिलासो मे फूलदान भी सजा दिए गए थे! क्वार्टर के पीछे वाले चौक मे सारी व्यवस्था की गई थी।

चम्मच पूरे न थे, इसलिए शक्करदानी ही के चम्मच से काम चलाया जा रहा था। पकौडियो के मसाले की सभी तारीफ कर रहे थे। रसोई-घर मे पकौडिया बनाती हुई मिसेज नटनागर एक कान इधर भी लगाए बैठी थी।

जूनियर जोशी दफ्तर मे श्री नटनागर का असिस्टैण्ट था। नानक-चन्द ने उससे कहा, 'श्री नटनागर अकेले ही 'सर्व' कर रहे है, जोशी, तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम भी सहायता करो।'

धर्मप्रकाश ने कहा, 'और तुम अभी बच्चे हो! तुम्हे कही रोक-टोक भी न होगी!'

जब कि श्री नटनागर कुछ लाने के लिए रसोईघर की ओर गए, नानकचन्द ने इशारा किया और जूनियर जोशी उठकर 'भाई साहिब, भाई साहिब' कहता एकदम भीतर चला गया।

कमला, उर्फ मिसेज नटनागर एकाएक व्याकुल हो गई। यद्यपि उनको आदेश मिल चुका था, कि वे घूघट नही निकालेगी, पर किसी अपरिचित के उनके सामने आने की अपेक्षा उनके ही उन अपरिचितो के सामने जाने की बात थी। लजाकर उन्होने सिर का आचल खीच लिया।

देखकर जूनियर जोशी बोला, 'अरे भाभी, यह क्या करती हैं? मै तो इनके छोटे भाई जैसा हू। उमर मे, ओहदे मे—सभी मे!'

कमला की अपेक्षा श्री नटनागर ही को अधिक लज्जा अनुभव हुई। उन्होने शीघ्र ही आगे बढकर प्रगतिगामिता का परिचय देना उपयुक्त समझा, स्वय ही उन्होने कमला का घूघट उलट दिया। कमला 'ना-ना'

हाथ रखा और पूछा, 'यार, माल तो तुमने लज्जतदार खिलाया, खुदा करे, तुम्हारा माल भी उतना ही लज्जतदार हो, पर एक बार तो ज़रूर भाभी की शकल दिखानी पडेगी ! क्यो भाइयो, आपका क्या ख्याल है ?'

लगभग सभी बोले उठे, 'बिल्कुल दुरुस्त ! भाई नटनागर जी, इसके बिना तो आज का यह सब प्रोग्राम फीका रहेगा !'

धर्मप्रकाश ने कहा, 'ऐसी क्या बात है ?—अबकी सण्डे (रविवार) आप सबकी इनके घर पर चाय रही ! चार बजे !'

श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर ने किंचित् घबराते हुए कहा, 'पर भाई साहिब, मुझे ज़रा मिसेज़ नटनागर से पूछ तो लेना चाहिए था !'

धर्मप्रकाश ने किंचित् हसकर कहा,'वे क्या आपसे दूर,मेरा मतलब·· ।'

बीच ही मे रोककर नटनागर बोले, 'सो तो मैं समझता हूं, पर उनको यह सब प्रबन्ध करने मे कितनी असुविधा होगी यह तो वही जान सकती हैं !'

जोशी ने कहा, 'मालूम देता है, भाभी काली है ।'

जूनियर जोशी ने उत्तर दिया, 'जोशी जी, यह आप मिसेज नटनागर का अपमान करते हैं ।'

जोशी बोला, 'तो फिर दिखाने मे हिचकिचाते क्यो हैं ?'

नटनागर को जोश आ गया, 'अच्छा तै रही, सण्डे को चार बजे !'

यह थी श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर द्वारा अपने विवाह के उपलक्ष्य मे अपने कार्यालय के सहयोगियो को दी हुई दावत, जिसका प्रबन्ध किया गया था एक होटल मे ।

इतवार को चायपान का आयोजन किया गया । श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर सरकारी क्वार्टर ही मे रहते थे । पास ही मे कुछ दूर हटकर बडे बाबू धर्मप्रकाश का क्वार्टर था, बाईं ओर नानकचन्द रहते थे । दूसरे बाबुओ के क्वार्टर भी इसी तरह बिखरे हुए थे । पूर्व मे उनका दफ्तर था ।

कुर्सिया और मेज़ें दफ्तर से मगवा ली गईं। रेशम के सुन्दर धागो से कढे हुए बेल-बूटेदार मेजपोश को टेबल पर इस तरह बिछाया गया कि बेलबूटे अतिथियो की दृष्टि को पकडे ही। पास-पड़ोस से एक टी-सेट माग लिया गया था, उनके घर की भी चार कप-प्लेटे मौजूद थी। काच के दो गिलासो मे फूलदान भी सजा दिए गए थे। क्वार्टर के पीछे वाले चौक मे सारी व्यवस्था की गई थी।

चम्मच पूरे न थे, इसलिए शक्करदानी ही के चम्मच से काम चलाया जा रहा था। पकौडियो के मसाले की सभी तारीफ कर रहे थे। रसोई-घर मे पकौडिया बनाती हुई मिसेज नटनागर एक कान इधर भी लगाए बैठी थी।

जूनियर जोशी दफ्तर मे श्री नटनागर का असिस्टैण्ट था। नानकचन्द ने उससे कहा, 'श्री नटनागर अकेले ही 'सर्व' कर रहे हैं, जोशी, तुम्हारा कर्तव्य हे कि तुम भी सहायता करो।'

धर्मप्रकाश ने कहा, 'और तुम अभी बच्चे हो! तुम्हे कही रोक-टोक भी न होगी!'

जब कि श्री नटनागर कुछ लाने के लिए रसोईघर की ओर गए, नानकचन्द ने इशारा किया और जूनियर जोशी उठकर 'भाई साहिब, भाई साहिब' कहता एकदम भीतर चला गया।

कमला, उर्फ मिसेज़ नटनागर एकाएक व्याकुल हो गईं। यद्यपि उनको आदेश मिल चुका था, कि वे घूघट नही निकालेगी, पर किसी अपरिचित के उनके सामने आने की अपेक्षा उनके ही उन अपरिचितो के सामने जाने की बात थी। लजाकर उन्होने सिर का आचल खीच लिया।

देखकर जूनियर जोशी बोला, 'अरे भाभी, यह क्या करती हैं? मै तो इनके छोटे भाई जैसा हू। उमर मे, ओहदे मे—सभी मे!'

कमला की अपेक्षा श्री नटनागर ही को अधिक लज्जा अनुभव हुई। उन्होने शीघ्र ही आगे बढकर प्रगतिगामिता का परिचय देना उपयुक्त समझा, स्वय ही उन्होने कमला का घूघट उलट दिया। कमला 'ना-ना'

करती ही रह गई। उसकी आखे नीचे झुक गईं।

'जोशी ने एक ही क्षरण मे देखा कि सूखी-सी लडकी है, पक्का रग, बैठे हुए गाल, खडे दात, पतली-सी नाक और झुकी हुई आखे, काजल की रेखा से मालूम पडता था कि वे जरूर खूबसूरत होगी। जोशी ने पलक झापते मे यह भी देख लिया कि मुह पर उनके कुछ हलकी रोमावलि है, वस्तुतः इसीलिए उनका मुह कुछ पक्के रग का दिखाई देता है, वरना कोई बात नही कि रग को खासा-अच्छा न कहा जाए। दुबली-पतली, इसलिए खडी होने पर श्री नटनागर से कुछ लम्बी भी दिखाई दे रही थी।

श्री नटनागर लम्बे न थे, यद्यपि उनकी राय थी कि लम्बा आदमी मूर्ख होता है, किन्तु फिर भी लम्बा होने की ओषधियो का विज्ञापन वे बिना पढे छोडते न थे। उनकी ऊचाई चार फुट छ. इच से अधिक न थी, शरीर कोई खास दुबला न था, बल्कि पेट कुछ मोटा ही था, सिर भी गोल, यानी शरीर का मारा बोझ उनकी टागो पर ही था, वे अनुपातत छोटी तो थी ही, शायद अधिक भार के कारण दुबली भी थी, अत श्री नटनागर गोल-गोल चलते थे, समता बनाए रखने के लिए उन्हे चलते समय सिर, हाथ और पेट सबको हिलाना पडता था। उनकी चाल एक टाइप थी।

घूघट की खीचतान मे मिसेज नटनागर के बेसन से भरे हुए हाथ श्री नटनागर के भाल से छू गए, अत वहा पर बेसन का निशान हो गया। कपाल पर तो नटनागर के आखे थी नही, इसलिए वे देख न सके, और कमला ने नजर जो नीची की तो उठाना उसे भारी पड गया।

जोशी ने कहा, 'भाभी, नमस्ते नही कीजिएगा ? मै भाई साहब का असिस्टैण्ट हू, मुझे कहते हैं कमलनयन जोशी !'

नटनागर ने कहा, 'लजाती क्यो हो ! नमस्ते का जवाब दो !—और जोशी, तुम्हारा नाम कमलनयन है, तो मिसेज नटनागर का नाम जानते हो ?—अच्छा ये ही बताएगी तुम्हे। नाम सुनकर खुश होओगे !'

नमस्ते का उत्तर देते हुए मिसेज नटनागर बोली, 'मुझे कमला कहते है।'

गला कुछ बेसुरा-सा मालूम दिया, पर जोशी को लगा, कुछ धीरे बोलने से उसकी स्वाभाविकता नष्ट हो गई हो। किन्तु तत्काल ही उसने कहा, 'तभी तो भाभी मालूम देता है, हमारा-आपका कुछ पूर्वजन्म का मस्कार है। मैं कमल, आप कमला, और फिर यहा '

कमला ने एक क्षण के लिए, केवल एक क्षण के लिए ही अपनी आखो को ऊपर उठाकर देखा, देखा कि लडका बुरा नही है, किन्तु तभी उसकी दृष्टि नटनागर की जासूस नजर से टकरा गई, वह शीघ्र ही पकौडिया निकालने मे लग गई।

बाहर आते ही नानकचन्द ने टोका, 'नटनागर जी, आपके कपाल पर भाभी ने क्या डिठौना लगा दिया है?—पर हमारी नज़र लगेगी नही, यह बताए देते है।'

सीनियर जोशी ने कहा, 'नजर लगना ही हो तो अब नटनागर को क्या लगेगी!—भाभी के होते हुए भैया को कौन पूछने लगा?'

कमलनयन ने कहा, 'भाभी ने निशान लगा दिया है। नये-नये ठहरे! मरदुओ की भीड मे पहचानने मे कठिनाई न हो!'

बडे बाबू भी बोल उठे, 'भाई नटनागर, इनका मतलब समझे न?'

नटनागर के अधर उसी १८० के कोण पर हस रहे थे, बोले, 'चाय-पार्टी का मकसद ही यही था कि सब मिलकर खुशी मनाए।'

नानकचन्द ने कहा, 'थ्री चीयर्स टू नटनागर, हिप हिप हुर्रे!—भाभी, अगर हुकुम दो तो बाजार से कल एक पट्टा खरीद लाऊ! औरतो की म्युनिसिपालिटी शहर के इन गबरू जवानो की तलाश मे ही रहती है, पट्टा देखकर फिर किसीको हिम्मत न होगी कि इनके पास फटके!'

हसी का कहकहा चारो ओर फैल गया।

पान लेकर श्रीमती जी को स्वय आना पडा।—नीची दृष्टि से ही

उन्होने एक मूक नमस्ते की और चल देने का उपक्रम किया, कि नानकचद ने कहा"

'भाई नटनागर जी, इस पार्टी की कसम, जब तक भाभी अपने हाथ से सबको पान न दे, कोई पान को छुएगा भी नही !'

सभी मित्रो ने समर्थन किया ।

नटनागर ने श्रीमती जी से कहा, 'क्या हर्ज है ?—तुम तो बेकार लजा रही हो ! आजकल के जमाने मे अगर महिला थोडी आगे बढी हुई न हो तो वह केवल अपना ही नही, अपने पति का भी बडा अहित करती है । चलो, इसी बहाने मैं तुम्हारा सबसे परिचय करा दूगा !'

नई लडकी, पति के अहित से डरकर बेचारी ने नटनागर का आदेश स्वीकार कर लिया ।

उपस्थित सदस्यो को पान मिलने लगा, और कमला को उनका परिचय । 'ये है हमारे बडे बाबू श्री धर्मप्रकाश बी० ए०, मेरे ऊपर खास तौर से मेहरबान है । ये है हमारे अन्यतम मित्र श्री नानकचन्द, साहब बहादुर के निजी सहायक, आप श्री के० एन० जोशी—कृपानारायण जोशी, मेरे सहयोगी, बडे ही जिन्दादिल, इन्हे तुम जानती ही हो, जूनियर जोशी—के० एन०, यानी कमलनयन जोशी, मेरे सहायक, और · '

जब तक कि श्री नटनागर आगे वाले का परिचय दे रहे थे, कमलनयन ने पान लेते समय कमला के हाथ को अगुली से छू दिया, उसकी कनपटिया सुर्ख हो गई, एक क्षण को फिर दोनो के नेत्र मिले—श्री नटनागर का परिचय चलता रहा, किन्तु कमला ने फिर कुछ नही सुना, वह कुछ सुन ही नही सकी ।

धन्यवाद की तुमुल ध्वनि मे चाय की यह सक्षिप्त पार्टी भी समाप्त हुई ।

नव दपति ने मुस्कराकर एक दूसरे की ओर देखा, लहरो के हलकोरो मे उनकी नाव आगे बढ रही थी । जीवन की कहानी का शीर्षक मुखर होने का प्रयत्न करने लगा ।

२

किन्तु, इसके पूर्व कि कथा आगे बढे, आप श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर का परिचय कुछ और सूक्ष्म रेखाओ मे देखना चाहे ! अठारह बरस की उमर मे प्रवेशिका (मैट्रिक) पास करके, वे इस कार्यालय मे क्लर्क हो गए थे । पिता पुरानी सिंधिया रियासत के किसी कस्बे मे गिरदावर थे । यहा पर दूर के रिश्ते मे कोई मामा थे, उन्हीके यहा रहकर मैट्रिक पास किया, और उन्हीकी सिफारिश से नौकरी भी लग गई । छ-सात साल हो गए उस बात को । क्लर्क को जीवन के प्रारम्भ मे कुछ सघर्ष तो करना ही पडता है; तीनेक वर्ष तक दफ्तर मे लोटन कबूतर रहकर श्री नटनागर ने आखिर अपनी पोजीशन जमा ली, और तब से बराबर उन्नति करते हुए अब अपने विभाग के प्रमुख लेखक हो गए हैं । साल भर हुआ, दफ्तर के उपनिवेश मे इन्हे रहने को मकान भी मिल गया है । मामा का घर छोडकर तब से वे यही रहते है ।

पर यह परिचय तो सभी क्लर्को का हुआ करता है । हमारे नायक नटनागर जी इतने-से परिचय से सतुष्ट होने वाले नही । उनके व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने के लिए, और बारीक कलम की आवश्यकता है ।

पहली बात तो, आजकल वे अपना नाम नरवरोत्तम नारायण नटनागर नही लिखते । उन्होने उसे सक्षिप्त कर लिया है मिस्टर एन० एन० नटनागर ! हस्ताक्षर भी वे बडे मजे के करते हैं : नामाक्षरो के लिए वे लिखते है 'एन्' और फिर उसपर '३' की सख्या लिख देते हैं, जिसका अर्थ होता है 'एन्-क्यूबिक' यानी एन् की तीन बार आवृत्ति; और पूर्ण हस्ताक्षरो के लिए लिखते है, 'एन्-क्यूबिक अटनागर' ! हस्ताक्षरो मे कुछ विशिष्टता चाहिए ही, सो यही उनकी विशिष्टता है । कुछ दोस्त उन्हे कभी-कभी मौज मे 'मिस्टर एन्-क्यूबिक' के नाम से पुकार भी लेते है, और ये हसकर उसी नाम से बोल भी लिया करते हैं ।

यहा पर उनके मूल नाम की मौलिकता पर भी हमारा ध्यान खिच आना स्वाभाविक है। नाम मे व्यक्ति का महत्व ही नहीं, उसका अस्तित्व भी हम स्थापित करने का प्रयत्न देखते हैं। व्यक्ति मर जाता है, पर तब भी नाम जीवित रह सकता है, अत व्यक्ति से अधिक नाम बढ जाए तो आश्चर्य ही क्या है ? भारतवर्ष मे नाना के घर पैदा होने वाले बच्चों के नामो की एक तालिका है, जो उसके जन्म के सम्बन्ध की ओर इगित करती है। नदलाल, नदकिशोर, इसीके बिगडे हुए रूप नोदराम, नदिया और कवित्वमय रूप नन्द, उपेन्द्र आदि इसी तालिका से सम्बन्ध रखते हैं। श्री नटनागर के पिता लाला नन्दलाल जी भी नाना के घर पैदा हुए थे, अत जब उनके पुत्र भी नाना के घर ही पैदा हुए, तो उनके नाम की समस्या उपस्थित होना स्वाभाविक ही था। उपेन्द्र आदि सस्कृत शब्दो की ओर उनका ध्यान जा नही सका, और दूसरे नामो मे से कुछ चुना जाना उन्हे अच्छा न लगा। झुझलाकर नाना-नानी बच्चे को 'नाना' ही कहने लगे, और उनका शिष्ट नाम हो गया 'नाना लाल'।—धीरे-धीरे पुकारने का नाम हो गया उनका 'नन्ना'।

नन्दलाल जी गुजराती न थे, वरना मैट्रिक तक आते-आते श्री नटनागर को अपने व्यक्तित्व-प्रदर्शन के लिए श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर जैसे बडे नामाभिधान की शरण न लेनी पडती, और वे सरलता से अपना कवित्वमय ही नही, चित्रमय नाम रख लेते 'ननु नटनागर'; किन्तु जब यह नही हो सका, तो नही ही हुआ!

स्वाभाविक था कि नन्ना नाम उन्हे अच्छा न लगे, इसलिए 'नन्ना' शब्द को नामाक्षर मानकर किसी सुन्दर-से नाम का आविष्कार करना आवश्यक था। लाला-वश की फारसी के कीचड मे अग्रेजी का कमल बनकर उसका उद्धार करने का उन्हे श्रेय था, अपने नाम ही का फिर क्यों उद्धार न किया जाए ? किसीने 'नर-नारायण' सुझाया, किसीनें 'नरोत्तम नारायण'; किन्तु फिर भी इनमे विशेष विशेषता न थी। उन्ही दिनो पाठ्य पुस्तक की कविता-पक्ति मे, मात्रा और तुक के प्रयत्नो से

निकाले गए किसी कवि द्वारा प्रयुक्त 'नरवरोत्तम' शब्द पर उनकी दृष्टि अडी, और अड ही गई। स्वीकार करने के सिवा कोई चारा न था; कवि ने वह शब्द इन्हीके लिए गढा था, तभी तो लेखक, सकलक, सम्पादक, प्रकाशक, पाठ्य पुस्तक-निर्वाचक, परीक्षक, अध्यापक आदि समस्त क-अतको के चक्रव्यूह से बचकर यह शब्द उनकी दृष्टि तक पहुच पाया था। नारायण शब्द और जोडकर उसे मौलिक भी कर लिया गया।

नरवरोत्तम नारायण, नाम तो हो गया, पर आगे भी तो कुछ होता है!—उनके पिता भटनागर कायस्थ थे। नाम के आगे लिखते तो न थे, पर कहलाते तो थे। श्री नरवरोत्तम नारायण ने अपने नाम से मेल खाने के लिए 'भटनागर' शब्द का भी कवित्वमय जीर्णोद्धार कर डाला, वह हो गया नटनागर, चटनी की तरह चटपटा-मसालेदार! सम्पूर्ण नाम को प्रसन्नता और असीम सतोष के साथ उन्होने मानो अपनी आखो से प्रत्यक्ष देखा, कविता की पक्ति के समान कई बार अधरो पर गुनगुनाया, और सहस्रनाम पाठ की भाति ही अपनी नोट-बुक पर सहस्र बार उसे लिखकर उसके असीम सौंदर्य को ससीम साधनो द्वारा आकने की चेष्टा की। शीघ्र ही, स्वल्प समय मे यह नाम उनका कॉपी राइट पेटेण्ट, सर्वाधिकार सुरक्षित, सुविशेष-विशेषक हो गया।

और अब और भी विशिष्ट रूप से वे कहलाते हैं, मिस्टर एन्-क्यूब् अटनागर!

शायद आप भूले न होगे, उनकी लम्बाई चार फुट छः इच से अधिक नही है। रग उनका अच्छा-खासा गोरा है। चाल उनकी अपनी है, कोई सुन्दरता के साथ उसकी नकल तक नही कर सकता। सिर गोल, पेट गोल; गोल धरती पर, अपना स्थान बनाने के प्रयत्न मे अभी-अभी उन्होने विवाह किया है कमला के साथ, जिसे आप देख ही चुके हैं! यो शादी उनकी जल्दी हो जानी चाहिए थी, किन्तु बुरा हो इन जाति वालो का, कुछ दुर्वाद फैला बैठे थे इस कुटुम्ब के लिए! श्री नटनागर का नाना के यहा जन्म लेना इन लोगो के लिए रहस्य की बात थी। वे कहते हैं कि

श्री नटनागर के पिता नन्दलाल के विवाह को नौ महीने समाप्त होने मे कुछ समय शेष था, फिर तो लोगो ने आसमान से कुलाबे मिलाए, नन्दलाल जी के जल्दी-जल्दी मे विवाह करने की बात भी याद की गई, आदि-आदि। इसलिए नटनागर को कमला जरा कठिनाई से मिली, जब कि वे स्वय मैट्रिक पास होकर भी खाने-कमाने लायक हो गए, और माता-पिता से अलग मकान लेकर रहने लगे!—कमला मिली और खूब मिली!

वैसे अच्छे-खासे रग का गोल चेहरा उनका बुरा नही लगता। काफी चौडा उनका ललाट है, बाल पीछे की ओर जाते हैं, प्रवृत्ति यह है कि ललाट बढते-बढते बालो की जमीदारी को दखल कर लेना चाहता है। आखें, जैसी कि आदमी की होनी चाहिए; न बडी, न छोटी, बल्कि गड्ढे मे ठीक तरह बैठी हुई; नाक साधारणतया ठीक, जमाने के साथ कटकर फिर सम्हल जाने वाली, नीचे की ओर झुकी हुई, ऊपर की ओर उठी हुई! फिर भी, जैसी कि इस युग की प्रवृत्ति है, उनकी नाक चाहे आपको निर्दोष दिखाई दे, उन्हे ऐसी नही दिखाई देती। ओठ भरे हुए, और काफी लम्बे, चेहरे के सारे अर्धव्यास पर फैले हुए, जिससे हर समय मुह खोलते ही १८०° का कोण बन जाता है। हसते है तो ओठो ही ओठो मे कभी नही, उनका सारा गोल मुह उछल पडता है, ओठ दांतो का रास्ता छोड देते हैं, सारी बत्तीसी मानो बिखर जाना चाहती है, बत्तीसी के बीच मे ठेठ गले का हिस्सा—यानी खिलखिलाकर हसते हैं। किसीने कहा भी था कि उनका मुह हसता नही, हिनहिनाता है।—अवश्य ही मनुष्य हिनहिनाता नही, पर घोडा भी तो नही बोलता, शायद उनकी हसी आदमी के हिनहिनाने और घोडे के बोलने का मध्य-बिन्दु थी। एक बात तो थी ही, श्री नटनागर चाहकर भी, और न चाहकर भी हस सकते थे।

अपनी अग्रेजी पर उन्हें नाज था, हिन्दी के इस गौरव के युग में उन्होंने हिन्दी की भी कुछ परीक्षाएं पास की थी, अपने भाषा-ज्ञान के

आगे वे अन्य किसीको कुछ नही समझते थे। शादी के पूर्व उनकी वेश-भूषा सामान्य-सी थी—पजामा, कमीज़, कोट और खुला सिर, परन्तु शादी के बाद एकदम परिवर्तन हुआ, पूरे सूटेड-बूटेड-अपटूडेट, टाई-कॉलर-पिनें, बूट तक सूट से मेल खाते हुए।

मेरा खयाल है कि श्री नटनागर को अब आप सरलता से कैसी भी भीड मे पहचान लेगे।—तो फिर मैं कहता चलू :

श्री नटनागर के क्वार्टर मे, पीछे की ओर खुले मे एक स्थान पर टीन छाए जा रहे थे ताकि बरसात मे ईंधन आदि रखा जा सके। छोटी-छोटी दो कैंचिया, रेल के खम्भों पर खडी की जाने वाली थी। कैंचिया बनाई जा रही थी।—दो बज चुके थे, और श्री नटनागर भोजन करके पुन दफ्तर चले गए थे।

कमला खाट पर बैठी ऊन से एक स्वेटर बुन रही थी। महरी को चौका उठा देने के लिए कह दिया गया था। खिडकी के ठीक सामने चौक मे कारीगर और मजदूर काम कर रहे थे। एक ओर आग जल रही थी, जिसमे लोहा गरम किया जा रहा था। गरम हो जाने पर उसे काटकर जोड दिया जाता था। घन की आवाज़, मज़दूर के हाफने की आवाज, और रह-रहकर पेड पर बोल उठने वाले कौए की आवाज़, सब इतनी स्वाभाविक हो गई थी कि कमला को अपने आप तक का ध्यान न था। वह स्वेटर की जाली मे किरोशिए के साथ ही साथ अपने आपको भी उलझाती जा रही थी।

तो शहर की जिन्दगी का यह नमूना है।—रहने का मकान कोई खास बुरा नही, आबोहवा भी ठीक ही है।—शहर की चहल-पहल, नये-नये खेल-तमाशे, पडोसियो की चुहल, नया फैशन, पति का दुलार—सब नई चीज़े थी उसके लिए। छोटे-से कस्बे की रहने वाली थी, तीसरी जमात तक स्कूल मे पढा भी था। मा-बाप गरीब घर के, उनकी गृहस्थी का बोझा ढोकर ही इतनी बढ़ी थी। यहा पर महरी मिली तो उसके पैर आसमान से जा लगे।

सिखाने के लिए पतिदेवता कम नही, क-ख-ग से लगाकर दफ्तर की फाइलो तक की सब बाते बताने के लिए पूरे तौर से तैयार। सदैव सध्या को दफ्तर से लौटते ही उसे ठीक तरह से कपडे पहनाना, शृगार के बाद 'शापिग' और 'मार्केटिग' के लिए बाजार ले जाना, लौटकर चाय पीना, फिर घूमने जाना, या सिनेमा-थिएटर और फिर लौटकर भोजन, दो घंटे तक पढाई, और तब थककर सो जाना। चारो ओर आनन्द ही आनन्द था। पहली तारीख को तनखा, और शेष ३० दिनो मे मनमाना खर्च!—और तभी एक सिन्धी महिला रखी गई, उसे सीना-पिरोना-कशीदा काढना आदि सिखाने के लिए, और एक म्यूजिक मास्टर रखा गया, सगीत सिखाने के लिए! कमला जीवन की गति मे भागने लग गई थी।

यो पतिदेवता, देवता जाने कैसे होते हैं, पर मज़े का मनुष्य है। खाता-पीता है, खिलाता-पिलाता है, उसकी देखरेख करता है, परवाह करता हे, चार आदमियो मे बडाई करके फूला नही समाता, और कुछ उठा नही रखता उसे सुखी करने मे। शादी के पहले कितना डरती थी वह पति नाम के भयकर जानवर से!—सोचती थी—कि यह करेगा, वह करेगा, यह न करने देगा, वह न करने देगा; हसने न देगा, रोने न देगा—पर सब कुछ तो बडा अच्छा है! कही भी तो कुछ नही हुआ। पति यदि ऐसा ही होता है, तो नाहक उसे हौवा मान लिया गया है, और ऐसा वह होता ही है, कमला खुद जो जान गई है।

और पड़ोसी?—वह धर्मप्रकाश, कैसा घूर-घूरकर देखता हे, लगता है खा जाएगा! लम्बा-चौडा ताड़ जैसा, बीवी उसकी भैंस जैसी; बडा बाबू है तो हुआ करे! खुशामद करे कमला की जूती। क्यो जाऊ उसके यहा, उसकी बीवी के तो जमीन पर पैर ही नही पड़ते! खुशामद करे वह, जिसे नौकरी करना है, और मेरे यहां तो चार बार चाय पी गया है!

एक वह बन्दर है कृपानारायण जोशी, उछल-उछलकर टागे रखने वाला, बात करता है तो सारे शरीर से, हसता है तो सिर हिलाता

हुआ, कपडे पहनता है मानो थैले हो। और उसकी श्रीमती जी, औरत है कि जनती ही चली जा रही है, साल भर नही हुआ कि कलैण्डर तैयार, रुकने का नाम ही नही लेती। है तो बित्ती-भी, पर हाथ भर लम्बी जीभ रखती है, तैल मे से अगूठी निकालती है। बोलने लग जाए तो अच्छे-अच्छे तीसमारखा के पित्ते पानी हो जाते है। बेचारे जोशी की क्या बिसात, खरगोश लगता है उसके सामने !

यह सामने वाला छोकरा खूब है !—छोकरा, कमला कुछ मुस्करा उठी, अरे ! वे तो छोकरा कह सकते हैं, उनके हाथ नीचे जो काम करता हे, पर तुझसे तो दो-चार साल बडा ही होगा। हुआ करे, पर है खूब ! बोलता क्या है, हसी का फव्वारा छोड देता है, हरदम फूल झडते ही रहते है।—आखों से मानो अधेरी रात मे ठडी चादनी फैल जाती है, दूर खडा रहता है, पर मानो कोई गुदगुदा रहा हो। पान लेते समय उस दिन उसने हाथ जो छू दिया, जैसे बिजली जाग उठी। छरहरा बदन, जी चाहता है बाहो मे भर लिया जाए, और कभी न छोडा जाए ! नाम भी क्या सुन्दर है !—कमलनयन, कमलनयन, जीभ पर किसीने शहद टपका दी, पलको को आधा ढककर, ओठो से उसे छिपा देने की तबियत होती है—कमलनयन !

घन की आवाजे एक लय के साथ हवा मे झूम रही थी, काल की अनवरत प्रवाह जैसी रेगती हुई लम्बी कृष्ण देह मे मानो विषैली कुण्डलिया पड रही हो। गर्म लोहे की सुर्ख छडो पर घाव करने वाली छैनी, घन की भयानक चोट खाकर मानो लोहे के तृष्णा-दग्ध अधरो पर अपना तीक्ष्ण दशन छोड देती है, किन्तु उस आग से जलकर शीघ्र ही दूर जा गिरती है, सडासी की पकड तक शिथिल हो जाती हैं, किन्तु वह बलिष्ठ लुहार कन्सीराम अपनी भयानक मासल भुजाओ को फैलाकर, फिर उस छैनी को सडासी मे फंसाता है, फिर चोट पडती है। फिर वही अग्निमय दशन, फिर छैनी का प्रत्यावर्तन—और लोहे के बदन मे दरार बढती जाती है। पूजीवाद की शोषण-प्रणाली का जड संस्करण—

सडासी, छैनी, घन, लोहा, शोषण की कडिया, एक दूसरे से विद्रोह करती हैं, किन्तु लुहारो का षड्यन्त्र, पूजीवादी प्रणाली की भाति एक दूसरे को वित्रस्त करता हुआ निर्बाध चला जा रहा है।

एक भयानक आवाज से कमला का ध्यान टूट गया, दृष्टि उठाकर उसने देखा कि घन चलाने वाले मजदूर ने घन को एक ओर पटक दिया है, और अपनी कमर पर सीधा होकर बाए हाथ की तर्जनी से ललाट पर बिखरे हुए पसीने के मोतियो को समेटकर जमीन पर चुआ रहा है। कमला ने देखा और देखती ही रह गई। उसने इस आदमी को पहले भी देखा है, परन्तु केवल आख से ही देखा है, ध्यान से नही।

याद पडता है उस आदमी ने इसे 'दादू' कहकर पुकारा था—'अबे दादू के बच्चे !'—शायद यही उसका नाम हो! सचमुच यही उसका नाम था! अजीब आदमी है, आदमी है या तमाम भयानक जानवरो और आदमी के बीच की कोई वस्तु! ऊट की लबाई, भैसे की मुटाई, गैडे की भयानकता, और आदमी का ढाचा। इस्लाम की सस्कृति से उत्पन्न 'दाऊद' हिन्दू संस्कृति मे आते-आते घिस-घिसाकर 'दादू' हो जाने वाला उसका नाम, अफ्रीका के हब्शीपने से चलकर, भारतवर्ष की तराइयो तक आ पहुचने वाली मनुष्यता की स्थानिक विशेषताओ से ओत-प्रोत उसका शरीर-पिंजर, और अपने पूर्वज गोरिल्ला की वृत्तियो से लगाकर आज के मानव की आदिकालिक सस्कृतियो की विकासवादी धारा से समन्वित उसकी चिन्तन-मुद्रा, सब मिल-मिलाकर उसके बाहुल्यपूर्ण शरीर को बहुकालिक और बहुस्थानिक व्यक्तित्व दे रहे थे। उसे देखकर आखे फिरा लेना असम्भव था, और उसकी ओर देखकर सतोष प्राप्त करना भी उतना ही असम्भव था। देखने योग्य न होने पर भी मानो उसे देखे बिना आख मानती न थी!

जो पाजामा वह पहने हुए था, उसे उसने मोडकर घुटनो पर चढा रखा था। काफी लम्बी-लम्बी टांगें थी, उतनी ही मोटी भी, बडे-बडे बालो से ढकी हुई।—उतनी ही लम्बी और चौड़ी पगथली, चौडे-पृथुल

पजे पर अगुलियां—मालूम पडता था, सब कुछ इतना मोटा था कि एक साचे मे ढल नही पाया, इसलिए पृथक्-पृथक् साचे मे ढालकर, बाद में सबको चिपका दिया गया है !—पजो के काले रग पर रास्ते की धूल और पसीने ने मिलकर, कहीं सफेद कही मटमैला चित्र खीच दिए हैं। उसी अनुपात मे ऊचा और चौडा पेट तथा वक्ष का भाग, एक गन्दे बनियान से ढका हुआ; बनियान जगह-जगह फटी हुई ही नही, लम्बाई मे कुछ छोटी भी थी, अतः नाभि के पास का त्रिभुज बडा अजीब-सा दिखाई दे रहा था। बाहे खुली हुई उतनी ही लम्बी और मोटी, जिनमे मछलिया तैर रही थी, गला मानो उठे हुए कधो के बीच दबा दिया गया था, जिसमे काली डोरी से कोई तावीज बधा हुआ चौडे तने हुए सीने पर हिल रहा था। छोटे-छोटे कान, नाक एकाएक ही नोक पर उठी हुई, दोनो ओठ काफी फैले हुए किन्तु मासल, ललाट ऊपर की ओर नुकीला होता हुआ, बहुत ही छोटा सिर, जिसपर छोटे-छोटे रूखे-सूखे बाल जो कानो के पीछे जाकर सघन हो गए थे। केवल उसकी गोल छोटी आखो का भाव बडा निरीह, अनासक्ति से भरा हुआ मालूम देता था। आखो की दृष्टि मिलने पर मालूम देता था मानो एक करुण पुकार निमत्रण दे रही है, जिसकी उपेक्षा करना बडा कठिन होगा, वरना उसकी ओर देखकर तबियत हिल उठना स्वाभाविक है, और चित्त का उचाट हो आना भी उतना ही स्वाभाविक है। उसका नाम दादू है !

और लुहार कन्सीराम भी सामान्य व्यक्ति नही, कठोर परिश्रम से सधी और गठी हुई उसकी देह उसके स्वभाव की कठोरता का भी परिचय दे रही थी। वह कुशल कारीगर था, दादू अकुशल सहायक, कन्सीराम अभी मालिक था, दादू मजदूर, वह हाकिम था, यह नौकर, उसे छ रुपया रोज़ मिलता था, इसे एक रुपया आठ आना—यद्यपि श्रम और आवश्यकता की दृष्टि से विलोम अनुपात पर दृष्टि जाना ही स्वाभाविक है।

लोहा ठण्डा हो चुका था, उसे फिर पास मे जलने वाले आग के

जगरे पर रख दिया गया। जब तक वह लाल रहता है, तभी तक उसे चोट पहुँचाई जा सकती है। कठिन तपस्या मे लोहा भी पानी हो जाता है। नरम होने पर चोट उसपर कारगर हो जाती है।

जब तक लोहा गरम हो दोनो ने बीडिया निकाली, जगरे से छुआकर उन्हे प्रदीप्त किया, और सफेद धुए मे दोनो के चेहरे व्याप्त होने लगे। लोहे का एक दूसरा टुकडा गरम हो चुका था। देखकर दादू बोला :

'उस्ताद, यह तो गरम हो गया !'

कन्सीराम ने बीडी का एक लम्बा कश खीचा, फिर सिरे को आगन पर जोर से दबाकर बुझाते हुए उसे अपने कान मे खोस लिया, और बोला 'लो तुम छैनी पकडो, मै चोट मारता हू। तुम तो बैल हो बिलकुल—घन पटकने मे सिरफ ताकत ही नही, अकल भी चाहिए। इस तरह चोट पडनी चाहिए कि छैनी घुसती ही चली जाए !'

घन लेकर जब कन्सीराम खडा हो गया तो दादू ने सडासी से छैनी को पकडकर लोहे पर रख दिया। बीडी तब भी उसके मुह मे उलझी हुई थी, धुआ नाक, मु ह और आख के रस्ते बाहर निकल रहा था। घन की चोटो का गीत शुरू हो गया। कमला किरोशिए पर लगी हुई आटियो को गिनने लगी।

कुल मिलाकर उन्नीस आटिया है, झुका हुआ फूल कितनी आटियो के बाद शुरू होगा ?—ऊपर से एक ज्यादा—ऊपर कितनी आटियो के बाद सफेद धागा शुरू हुआ था ?—तेरह पर या पन्द्रह पर; भूल गई, फिर से गिनना पडेगा। कमला गिनने लगी, एक, दो, तीन—

दादू कैसा भयानक आदमी है, देखते ही बदन मे कपकपी छूट जाती है। वैसे रग काला है, पर आदमी को ऐसा ही तो लम्बा-चौडा होना चाहिए। आदमी और पिद्दी जैसा, वह भी कोई आदमी है ?—गोरे रग मे रखा ही क्या है ?—उन जैसो को चार को दबा ले, और चू तक न करें;—हा यह दादू उन जैसे चार को दबा ले ! आदमी क्या है, भूत है। हाथ और पैरो मे मास की कैसी गाठें बंधी हुई हैं। जब घन उठता है

तो नसे फूल जाती है, मास की लम्बी-लम्बी पेशिया पानी की लहरो की तरह टकरा जाने के लिए मचल उठती हैं, नथुनो मे सास भर जाती है, और नीचे के ओठ को दातो से दबाकर जब समस्त शक्ति के साथ घन को वह नीचे पटकने को होता है, तो उसकी लम्बाई छ इच और बढ जाती है, जब एक तीक्ष्ण हुकार कर वह घन को छेनी पर पटकता है तो 'घट्ट' की एक आवाज़ के साथ लोहे के लाल शरीर मे छेनी आधा इच तक घुस जाती है। पर ! फिर कही का कही मन जा लगा—उसे स्वेटर की आटिया अभी गिनना है !—यहा तक वह गिन चुकी थी, पर कितनी ? ऊहू, फिर से गिनना पडेगा !

रग का यदि सवाल न हो, तो मुह भी कोई वैसा खराब नही है ! खिडकी के बाहर निगाह उठाकर कमला ने उसकी ओर एक बार देख लिया। कन्सीराम घन चला रहा है और दादू मुह मे बीडी उलझाए उसी तरह सडासी से छेनी पकडे निर्द्वन्द्व भाव से बैठा हुआ है।—ओठ बडे है; पर शरीर को देखते हुए कुछ बडे तो होगे ही ! मुह भी वैसे कोई खास चौडा नही। उनका मुह तो ठीक ऐसा ही चौडा है। दूना है तो क्या, आदमी भी तो उनसे चार गुना है ! नाक जरूर भद्दी-सी है; जड से कुछ उठी हुई होती ! पर नाक का इसमे क्या दोष ?—और आखे ?—आह, जैसे उनमे पानी भरा हुआ है, साफ पानी, जिसके तले तक को देखा जा सके; और कही छलक पडा, तो देखने वाले की सारी तस्वीर धरातल पर खिच आएगी !—बुरा हो इन आटियो का, गिनने ही मे नही आती !—एक, दो, तीन, चार—

अकस्मात् ही मानो कमला को एक धक्का लगा। 'अरे, मर गया रे !' चिल्लाता हुआ दादू ज़मीन पर लोट गया, और घन को एक ओर फेकते हुए कन्सीराम उसे उठाने के लिए लपका। क्या हो गया एकाएक ?—कमला ने सलाइया नीचे पटक दी, और एकदम से चौक मे दौड पडी।

कन्सीराम और दादू दोनो ही अपना-अपना काम सधे हुए यत्र की भाति कर रहे थे—सडासी की पकड आप ही आप छेनी को अपने आसन

पर स्थिर सीधी कर देती थी, लोहे की छड पर उसकी नोक ठीक जगह बैठ जाती थी, और घन की चोट खाकर पुन. उसे पूर्व स्थिति मे आने में कुछ भी समय नही लगता था। सब काम स्वाभाविक गति से हो रहे थे, दादू दाहिने हाथ से सडासी पकडे हुए था, यदि कभी सडासी की समता करने मे कुछ गडबडी हो जाए तो बाया हाथ सहायता के लिए आगे बढ जाता था, और सब पूर्ववत् हो उठता था, चोट मारने वाले को पता नही लगता था। दादू का बाया हाथ उसके ओठो मे उलझी हुई बीडी से सलग्न था। कन्सीराम भी उसी तरह अपने आपको भूले हुए यत्रवत् ही कार्य कर रहा था। दुहरी कमर पर वह जरा-सा दबाव डालता, कधे ऊपर की ओर उछलते, हाथो की बद्ध सपुटी एक चक्कर काटती, और सीधे खडे होने के साथ ही घन थामे हुए उसके दोनो हाथ सिर के ऊपर खडे हो जाते। सास को दबाकर अपने पजो पर खडे होकर वह घन को नीचे लाता।

दादू के मु ह से एकाएक बीडी की पकड ढीली पड गई, पर तभी उसने अनुभव किया कि सडासी के जवडो मे छैनी की पकड भी उसी तरह ढीली पड गई है। यदि छैनी टेढी हो गई तो लोहा टेढा कटेगा, अब भी लोहा पहले जैसा जमे हुए ताजा रक्त के समान लाल है, उसने छैनी को सम्हालने के लिए अपना बायां हाथ बढाया—सभी कुछ पूर्व के समान ही स्वाभाविक गति मे यत्रवत् ही हुआ, चित्तवृत्ति का कोई अश इस व्यापार के अनुवीक्षण मे व्यय नही हुआ, किन्तु कदाचित् कन्सीराम के अव्यक्त मन ने इसे देख लिया, और उसके हाथो की दिशा ही कुछ बदल गई। चोट छैनी ही पर लगी, किन्तु ठीक जगह नही। जलते हुए लाल लोहे पर दादू का बाया हाथ उसपर टेढी छैनी, और घन की भरपूर चोट !—दर्द के मारे दादू वही जमीन पर दुहरा-तिहरा हो गया। ठीक समय पर कन्सीराम ने उसे उठा लिया, वरना पास मे धधकता हुआ आग का जगरा, और इधर गरम किया हुआ, मानो अपने काटे जाने के कारण क्रोध से लाल लोहा। जो हो गया, वह सामने था; जो नही हुआ

उसकी कल्पना करना व्यर्थ है—वहा क्या नही होता ?

कमला ने देखा, और उसके हाथ के तोते उड गए ! जमीन पर उस मानवाकार दानव या कह लीजिए दानवाकार मानव की देह पडी हुई थी, लगभग निश्चेष्ट, जला-कुचला, रक्त से लथपथ उसका बाया हाथ मिट्टी मे तडफडाता हुआ, दाहिना हाथ, उछल-उछलकर फूट पडने वाली छाती पर, और सिर गर्दन की जगह से कभी बाईं तरफ, कभी दाहिनी तरफ मुडता हुआ ! पानी के बाहर जैसे बिद्ध मछली तडफडाती है।

मुह पर भयानक पीडा, काले ओठ और भी काले पडते जा रहे थे। लम्बी सास को बाहर जाने देने के लिए, और उतनी ही हवा को भीतर लेने के लिए दोनो ओठो की सपुटी खुल गई थी, मुह के किनारे से पानी बहने लग गया था, और आखे आसुओ से गीली होकर बन्द पडी थी। असह्य पीडा के कारण उसके मुह से कोई शब्द भी नही निकल पा रहा था। कमला ने ऐसा दृश्य कभी देखा न था, यदि वह अकस्मात् ही आखे बन्द न कर लेती तो कदाचित् अचेत हो जाती।

कन्सीराम ने कहा, 'बाई साहब, आप कुछ मदद कर सकोगी ?'

'क्या करना है ?'

'खून को रोकना ज़रूरी है ! अगर आप कुछ कपडा दे दें, और इसके हाथ को थाम ले तो पट्टी मै बाध दूगा। मिट्टी मे लग जाने से जहर फैल जाने का भी डर हे। फिर मैं डाक्टर से कहकर कुछ इन्तज़ाम कर ही लूगा।'

'मैं कर सकूगी ?'

'अगर थोडी हिम्मत रखे तो कर सकेगी।'

'अच्छी बात है।' कहकर कमला ने अपना दस्ती रूमाल कन्सीराम को थमा दिया। कन्सीराम ने उसे फाडकर अपने काम मे लाने योग्य बनाना शुरू किया। कमला घायल हाथ को अपने हाथो मे लेकर नीचे बैठ गई। आखो की कोरो से दादू ने कमला की ओर दृष्टि डाली, और मानो उस मूर्ति को अपनी आखो ही मे छिपाने के लिए उसने आंखो को

पुन' बद कर लिया।

एंक दस्ती रूमाल से क्या होता ? एक पट्टी भी पूरी तौर से नही बँध पाई !

कन्सीराम ने इधर-उधर देखा, 'धत्तेरे की ! पगडी ही बाधता होता तो आज काम तो आती !'

कमला ने महरी को आवाज दी, पर मालूम देता है, बाहर ही के रास्ते वह लौट गई। कमला ने साहस का काम किया। अपनी ही साडी का एक हिस्सा फाड दिया, और बोलीं, 'क्या होगा अब इस बेचारे का ?'

'डॉक्टर, शायद हाथ काटे !'

'सच ?'

'हा, नही तो ज़हर चढने से जान पर आ बनने का अदेशा है !

'लगी कैसे यह ?'

कन्सीराम ने एक क्षण तक कुछ सोचा, और फिर कहा, 'बीडी सम्भालने मे छैनी ठीक जगह नही बैठी और उसे हाथ से ही ठीक करने लग गया ! खुद की बेवकूफी को कोई क्या करे ?'

दर्द से तडफडाते हुए दादू ने फिर आखें खोली, निहोरा करती हुई उन निरीह आखो ने कन्सीराम को मानो चुनौती दी, झूठ क्यों बोलते हो ? मेरा हाथ गडबडा गया, या तुम्हारा ? परन्तु वह मज़दूर था, और यह मिस्त्री; नौकर दोनों थे, फिर भी छोटे-बडे के उस अन्तर मे एक मालिक था, दूसरा मज़दूर ! दादू ने उस करुण दृष्टि को फिर कमला पर डाला और मानो मूक प्रार्थना करके वे बद हो गईं। बन्द पलको पर आसू छलछला उठे।

कन्सीराम ने कहा, 'पाच मिनट अगर आप इसके पास बैठी रह सकें, तो मैं दफ्तर में इत्तला कर दू, और फोन से कहकर डॉक्टर को बुलवा लू। एम्बुलेन्स की गाडी आ जाएगी तो बेचारा जल्दी ही पहुंच जाएगा !'

कमला ने स्वीकार कर लिया। कन्सीराम की अनुपस्थिति मे कमला

से दादू ने पानी भी पिया ।

कुछ ही देर बाद एम्बुलेन्स-कार आ गई, डॉक्टर भी आयीं, और देख-दिखाकर दादू को अस्पताल पहुचा दिया गया। इधर दफ्तर मे इत्तला पहुचा दी गई।

इसी बीच कमला ने दादू से ही कुछ पूछ-पुछाकर उसकी असहाय निरवलम्ब अवस्था का पता लगा लिया था। जिस समय दादू को स्ट्रेचर पर डाला जा रहा था, हाथ उठाकर उसने कमला से प्रणाम करने की चेष्टा की थी, किन्तु एक हाथ के अपाहिज हो जाने से उसका मनोरथ पूरा न हो सका। विवशता के कारण जब उसकी आंखो से फिर पानी बहने लगा, तो कमला को भी महसूस हुआ कि अगर वह खडी रही, तो उसकी आखो की चोरी भी छिपी न रहेगी। दादू वहा से बाहर ले जाया जाए, इसके पहले ही वह भीतर कमरे मे अदृश्य हो गई।

३

जी हा, यह है हमारी छोटी-सी रेलवे का बडा दफ्तर। आकार-प्रकार मे तो खैर, जितना लम्बा-चौडा है, उससे न तो बडा ही कहा जा सकता है न छोटा ही, पर सस्कार मे अवश्य जहा बडा है, वहा बडा, और जहा छोटा है वहा छोटा! मसलन इमारत के ठीक बीच मे महा-व्यवस्थापक—जनरल-मैनेजर—का कमरा काफी बडा है, उनके सकर्तक (सेक्रेटरी) का कमरा ठीक उनके कमरे के पास ही बहुत छोटा है। और मजेदार बात यह है कि सकर्तक महोदय काम बहुत बडा करते हैं, व्यवस्थापक महोदय से भी अधिक। आसपास बडे कमरो मे छोटे बाबुओ के करीने से बैठने की व्यवस्था है। और कई अफसरो को बडे-बडे कमरे के छोटे-छोटे हिस्सो मे प्रतिस्थापित किया गया है, किसी बडे मन्दिर में

छोटी-छोटी असख्य मूर्तियो की भाति। छोटी रेलवे का दफ्तर होते हुए भी काफी बडा है; कह सकते हैं आवश्यकता से अधिक।

यो, सस्कार मे तो सभी बडे है, छोटे से छोटा चपरासी अपने आपको जमादार मानता है, छोटे से छोटा बाबू अपने को बडा बाबू मानता है, और छोटे से छोटा अफसर अपने आपको सीधा जनरल-मैनेजर! जिनको मोटी तनखाए मिलती हैं, उनके खर्च का अनुपात बहुत छोटा है, काम भी उन्हे बहुत कम करना पडता है, केवल कागजो पर दस्तखत करना, पर जवाबदारी उनकी, कहते हैं, बहुत है, मानो उसी-का प्रतीक बनकर उनका क्रोध अपने मातहत अफसरो और क्लर्कों पर सदैव बरसा करता है, कागज पर दस्तखत करते समय भी, और चाय का कप खाली करते समय भी। उधर बाबू लोग, वेतन उनके सक्षिप्त, किन्तु व्यय का भार उतना ही विपुल, काम भी उनका उतना ही विपुल रहता है, सवेरे से शाम तक सख्त कुर्सी पर बैठे कागज पर पेसिल घिसा करते हैं, आध घटे के लिए बीच मे सरकारी कैण्टीन से एक आने की एक कप चाय और आध आने की सडे तेल की कचौडी खाकर आसानी से बवासीर की सेवा का पुरस्कार प्राप्त कर लेते हैं। दिन भर वैसे अफसरो की फटकार भी खाने को मिलती ही रहती है, इसलिए उनका हाजमा भी गडबड़ाया रहता है। शाम को फिर दो घटे अतिरिक्त बैठने पर भी उन्हें मालूम देता है कि कागजो का ढेर घटने की अपेक्षा बढ ही गया है, तो एक मोटी सास लेकर चल देते हैं, कभी बैलगाड़ी पर, और कभी अपने ही पैरों पर! क्लर्क के जीवन मे ऐसी बातो के सिवा और है ही क्या?

हा, आप ठीक कहते हैं, यहा पर हमारे पूर्वपरिचित श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर बैठते हैं। महत्वाकांक्षी तो हैं ही! विभागीय लेखक हैं, पर सोचते हैं कि अफसर हैं। ठीक तो है, कई अफसर हैं, जो इनसे भी गन्दी और गलत अगरेजी लिखते हैं। सिफारिश न होती तो कोई उन्हें नटनागर के अधीनस्थ क्लर्क तक के लिए न पूछता! यो उनके पास

भी हाथ नीचे दो-तीन क्लर्क है ही। एक को आप जानते भी हैं—वही के० एन० जोशी—कमलनयन जोशी, जी हा—कमलनयन जोशी, कृपानारायण जोशी नही।

वे भी यो तो के० एन० जोशी ही है, सीनियर कहते है उन्हे; वे उधर बैठते है, वे भी विभागीय लेखक है, हमारे यहा विभागीय लेखक को हेडक्लर्क कहने का रिवाज ही है, हा हा, सीनियर जोशी के पास विभाग तो है, पर कोई सहायक क्लर्क नही, फिर भी हेडक्लर्क तो हैं ही! बडे मजे के आदमी हैं। थैले जैसे कपडे, सिर पर बडा-सा साफा, उछल-उछलकर चलते हुए, और मुफलिसी का राग तो जीभ पर रखते ही हैं—उनकी बीवी, क्या करे बेचारे! बच्चा जनने की लोकलाइज्ड इडस्ट्री—स्थानीकृत उद्योग है! लगभग पौन दर्जन, और एक को छोडकर सब लडकिया—कोर्ट की डिगरिया कहिए न उन्हे! मुफलिसी तो है ही। इसलिए वे घर पर कम रहते हैं, बाहर अधिक, दफ्तर मे काम कम करते है, बाते अधिक, बातो मे सुनते कम है, बोलते बहुत, और बोलने मे तथ्य कम रहता है, कचरा ज्यादा—एक बात अपनी मुफलिसी, और अगर कोई उन्हे उधार देकर, फिर पैसा वापिस न मागे! इसीलिए आप उन्हे प्राय अपनी कुर्सी पर नही देखेंगे, सदैव दूसरो की कुर्सी पर ही!

उधर पार्टीशन की ओट मे? वह है श्री धर्मप्रकाश का आफिस! जाने क्या-क्या नही है वह! इस कमरे मे आफिस सुपरिण्टेण्डेण्ट, उधर बडे बाबू, और उस कमरे की दुम मे मैनेजर की दुम, हा सेक्रेटरी कहा जाता है उसे। सब डरते है—छोटा आदमी बडा बना हुआ—ऐसो से डरा ही जाता है।

मेरी क्या बात पूछते हैं आप! मै उधर बैठता हू, हा, वह बेत की कुर्सी, छोटी-सी टेबल, यह रेडियो जैसी? अरे भाई, यह है इण्टर कॉम—डिक्टोफोन—यानी, बस यही समझ लो, अपने दफ्तर का लोकल टेलीफोन। सब तो नही पर हमारे अफसर हमसे सीधे इससे बात कर सकते हैं। करते-वरते नही, कर सकते हैं। हा, सबकी टेबलो पर तो नही,

मेरी नियुक्ति कुछ इसी तरह की है । यहा मेरे साथी बैठते हैं ! ओहदा ? एक क्लर्क का ओहदा ही क्या ! कागज़ और कलम की नौकरी ठहरी ! कभी-कभी टेबल की स्याही से चिट्ठी लिखकर, फाउण्टेन पेन से हस्ताक्षर भी मैं ही कर देता हू, ताकि दूसरे व्यक्ति यही समझे कि लिखी किसी क्लर्क ने है, और हस्ताक्षर किसी अफसर ने किए हैं !

अच्छा, उस दिन जो किसीका हाथ जल गया था, उसके बारे मे जानना चाहते हैं ? बैठिए, बैठिए ! दुर्घटना से सम्बन्ध रखने वाले कागज़-पत्र इसी विभाग मे आते हैं । मेरा हेडक्लर्क बडा भला आदमी है । अमलो के हथकण्डे जानता जरूर हैं, उमरयाफ्ता आदमी जो ठहरा, पर बिना आवश्यकता उनका प्रयोग नही करता । फाइल देख लू, डॉक्टर की रिपोर्ट अब तक तो आ ही जानी चाहिए ।

दादू नाम बताया न आपने ? हा, यह नम्बर है फाइल का और यह रही फाइल ! डॉक्टर की रिपोर्ट—देखिए, यह रिमाइण्डर, यह रिमाइण्डर, अजी पूछिये मत, दफ्तरियत की इन दिनो कोई सीमा नही, रिमाइण्डर की राह देखकर ही जवाब लिखने का रिवाज है ! यह लीजिए, यह रिपोर्ट रही डॉक्टर की ! ऐ ? हिज़ हैण्ड हैज़ बीन एम्प्यूटेटेड—उसका हाथ काट डाला गया ? हाथ कट गया ? जिन्दगी बरबाद हो गई बिचारे की, पक्षी के पख कट गए । क्या करेगा अब बेचारा ? अकुशल, अनस्किल्ड मज़दूर, घर पर बाल-बच्चे, सब कुछ होगे ही ! क्या कहा ? कम्पन्सेशन—क्षति-पूर्ति ? हा, मिलनी तो चाहिए ! किन्तु नही-नही, ऐसे कागज़-पत्र मेरे विभाग से सम्बन्ध नही रखते । वर्क्समेन कम्पेन्सेशन ऐक्ट के अनुसार क्षतिपूर्ति के दावो की जाच के लिए एक निरीक्षक भी है, स्पेशल मजिस्ट्रेट भी; कानून की पूर्ति तो करनी ही पडती है ! बस उसके बाद, जो आपकी इच्छा हो आप करने के लिए स्वतत्र हैं । कानून के पजे से बचने की आपको सतर्कता अवश्य बरत लेनी चाहिए ।

वही अपने परिचित मिस्टर एन्-क्यूब भटनागर—नही जानते ? अजी नटनागर को नहीं जानते—हां वही, वही उस विभाग के काम-

चलाऊ हेडक्लर्क है, काम चलाऊ इसलिए कि अभी मुस्तकिल नही हुए हैं; हा-हा होने मे क्या सशय है ! हो ही जाएगे ! बडी पहुंच है भाई, उनकी ! बडे-बडे आदमी चाय पीने जाते है उनके यहा, और काबिल आदमी भी हैं ही, अभी-अभी शादी हुई है। सो तो मानता हू कि नई शादी और चाय पिलाने की क्षमता, किसीकी तरक्की के लिए काबलियत का पैमाना नही होता, पर यह है जनयुग — कलियुग से एक चरण आगे, जिसकी हमारे शास्त्रकारो तक ने कभी कल्पना नही की। जाने क्या-क्या हो सकता है इस युग मे ! वही, उस परले कमरे मे बैठते है, कोने मे टेढी कुर्सी जमाए, टेढी गर्दन से बैठे हुए ! आदमी टेढ़े हैं, इसमे क्या शक है ? टेबल पर कागज़ को टेढा रखकर टेढी कलम से बडा टेढा लिखते हैं—अक्षरो का शरीर ही नही, उनकी आत्मा तक वैसी ही टेढी होती है कटार की तरह। उनकी टेढी दृष्टि से बच बहुत कम पाता है। मामला चाहे कितना सीधा क्यो न हो, उनकी टेबल पर गया नहीं कि उस जैसा टेढा फिर दूसरा कोई मामला नज़र नहीं आता।

मुझे यही से रुखसत कीजिए। देख नही रहे, टेबल पर काम कितना पडा है ? अखबार और किताब तो खैर पढता ही हू ! समय निकाल ही लेता हू, अगर इतना समय न निकाल सकू तो मैं काम को क्या निबटाऊ, काम ही मुझे निबटा दे। काम का बहाना खूब कहा आपने ! फैशन तो है ! एक अफसर है, जो उधर बैठते हैं ! मक्खी मारते है मक्खी ! दिनभर, जिस अफसर की टेबल पर चाय आई, वही लपक जाते है; और इनसे फुरसत मिलती है, तो क्लर्को की जिन्दगी मुहाल कर देते है। पर बात करिए, कहेगे काम मे बिल्कुल गले तक गर्क है, कभी मरने की भी फुरसत नही मिलती। पर, फिर कभी कहूगा आपके बारे मे, अभी तो आप मुझे छुट्टी दीजिए।

जी, मैं नही चल सकूगा ! दुश्मनी ? खूब कही आपने ! नटनागर जी से कोई दुश्मनी कर सकता है ? उनकी चाय-पार्टियो का स्वाद, उनकी आपाद-मस्तक हसी की छलछलाहट, वे क्या कभी दुश्मनी करने

के काबिल हैं ? लेकिन फिर भी मैं कुछ सभी से कतराता हू, और सब मुझसे कुछ कतराते है। मैं, मैं जो हू मेरे बारे मे ? आप तो सब जानते ही हैं ! विदा, फिर। हा-हा बता क्यो न देगे ! उन्हीके घर पर काम करते-करते तो बेचारे का हाथ कटा है ! मिसेज नटनागर की परिचर्या का पुरस्कार भी, कहते है, मिला है उसे। शायद इसीलिए जान बच गई बेचारे की, वरना मर ही गया था। अच्छा विदा मित्र ! फिर मिलेगे। क्या कहा ? जनरल मैनेजर के पास ही क्यो न चले जाए ? बात तो ठीक है। हा, वह वही पर सभी सूचनाए एकत्रित करवा देगे। यही ठीक है, बिल्कुल ठीक !

श्री नटनागर की टेढी टेबल के चारो ओर काफी भीड लगी हुई थी। कमरे के लगभग सभी क्लर्क उनके चारो ओर खडे हुए थे, और नटनागर बडे खिचे हुए-से, किसी भयानक छाया के कारण मलीन मुह बैठे थे, अपने हवास को एकत्रित करने के प्रयास मे।

कृपानारायण ने कहा, 'बात तुमने अजीब कही है, और चिन्ता जैसी है, पर एन्-क्यूब, डॉक्टर कोई बूदम ही मालूम पडता है !'

नानकचन्द बोले, 'ज़रा डॉक्टर का नाम तो बताना भई !'

'डॉक्टर माथुर को नही जानते क्या ?'

'डॉक्टर माथुर ?' कृपानारायण ने कन्धो को उछालकर टेबल के और निकट आते हुए कहा, 'डाक्टर माथुर ने कहा और तुमने मान लिया !'

नटनागर ने नीची गर्दन किए हुए कहा, 'तुम नही जानते जोशी, उसे टी० बी० का काफी अनुभव है।'

नानकचन्द ने उत्तर दिया, 'सो मैं मान सकता हू। उसकी बीवी टी० बी० से मरी। उसकी मा की मृत्यु का भी, कहते हैं, यही कारण था। उसकी एक बडी बहन अब भी सेनेटोरियम मे रोग-मुक्ति की राह देख रही है। और हम सब इन्ही डॉक्टर माथुर के साथ आशा कर सकते

हैं, कि रोग-मुक्ति उसकी अवश्य होगी । विवाद की यदि बात रहे तो केवल इतनी-सी कि वह शारीरिक मुक्ति होगी या आध्यात्मिक ! सो डॉक्टर माथुर को टी० बी० का अनुभव तो है ही ।

कमलनयन ने कहा, 'क्या यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि स्वय डॉक्टर माथुर टी० बी० का शिकार नही है ?'

'भाई, किसी सर्जन को भी बता दिया होता ।'

नटनागर ने उत्तर दिया, 'अब इन सब डॉक्टरो को बताकर समय बरबाद करने मे क्या लाभ होता ? जितने डॉक्टर उतने मत ! मैं आज सध्या को ही जा रहा हू । मिसेज़ नटनागर भी साथ ही जाएगी ।'

कमलनयन ने कहा, 'भाई साहिब, भाभी को साथ कहा लिए जा रहे है ? कष्ट होगा, आपको भी और उन्हे भी । बम्बई कोई छोटा-सा शहर तो है नही !'

'तो बम्बई जा रहे हो भाई !'

'क्या करू न जाऊ तो । लाइफ को रिस्क मे तो डाल नही सकता !'

नानकचन्द ने मानो किसी तथ्य का आविष्कार करके कहा, 'टी० बी० वार्ड का इचार्ज कौन है जी एन्-क्यूब ?'

'वही डाक्टर माथुर !'

'तो, मै समभता हू, उसका कहना मानकर तुम लाइफ को रिस्क मे डालोगे ।'

'तुम तो यार, डॉक्टर माथुर से प्रेज्यूडिस्ड हो ।'

'प्रेज्यूडिस्ड नही एन्-क्यूब, मै सच कहता हू । वह जिस वार्ड मे होता है, जिस मूड मे होता है, उसकी बेगार अपने मन पर सदैव ढोता रहता है । उन दिनो दात का वार्ड-डॉक्टर कही छुट्टी गया था । ये हज़रत काम देख रहे थे—एक मलेरिया के मारे हुए बीमार किसान का दात ही उखाड बैठे !'

'कैसे-कैसे ?' करीब-करीब सभी ने एक साथ पूछा ।

'अरे मज़ेदार किसा है । गाव का कोई अपढ किसान था । कहा

कौन-सा वार्ड है, सो तो जानता न था, गले मे डॉक्टरो की ट्रेडमार्क नली लगाए इन्हे इनके कमरे से बाहर निकलते देखकर पीछे पड गया। उसकी बात तो कुछ सुनी नही, जल्दी मे थे, उसे वार्ड मे बैठकर राह देखने को कह गए और आगे बढ गए। जूडी मे ठिठुरता हुआ बेचारा बदनसीब किसान कोने मे कम्बल ओढे गठरी बना बैठा था। जब डॉक्टर माथुर लौटे, उन्होने बुलाकर किसान को टेबल पर लिटा दिया। बेचारा समझा कि सूई लगा रहे हैं। डॉक्टर साहब ने कम्पाउण्डर की सहायता ली। उसने किसान का सिर थामा। डॉक्टर ने मुह खोलने को कहा। किसान ने समझा, जीभ देखना चाहते है। और इसके पहले कि किसान कुछ समझे और कहे, डॉक्टर माथुर ने कोकीन का इजेक्शन देकर एक अच्छी-भली नीचे की दाढ को निकालकर रख दिया।'

'वाकई ?'

'हॉस्पिटल का बच्चा-बच्चा जानता है। किसान बेचारा चिल्लाया, तो डॉक्टर ने कहा, अरे तेरा दात सड गया था। उसीकी वजह से बुखार है। अब ये गोलिया भी ले जा। जा, दिन मे तीन बार गरम पानी के साथ लेना। ठीक हो जाएगा।'

कमलनयन ने कहा, 'भाई साहब, तब तो ! '

नटनागर बोले, 'नही, ऐसी तो बात नही है। मैं यहा के वैद्यराज जी से भी मिल चुका हू ! प्राणाचार्य को तो जानते है न।—यह देखिए उनका नुस्खा !'

सकेत-नाम और सकेत-लिपि के कारण रोग के नाम का तो जीर्णोद्धार नही हो सका, किन्तु औषध का नाम तो पढा जा सका। च्यवनप्राश अवलेह था, सिद्ध बाजीकरण प्रयोग सख्या ७, स्वर्ण भस्म, पारद भस्म —पढकर कृपानारायण बोले, 'अरे, यह तो ताकत का नुस्खा है, ताकत का !'

'क्षय के निदान मे शक्ति का उपचार न होगा तो होगा किसका ?'

कृपानारायण ने कुछ धीरे से कहा, ताकि कोई सुन भी न सके,

और सभी सुन भी ले—'यह तो चिकित्सा है पुसत्वहीनता की।'

श्री नटनागर ने सुनकर अनसुना कर देने ही मे कुशल समझा, पर-एक वक्रदृष्टि उन्होने अवश्य कृपानारायण के ऊपर प्रक्षिप्त की।

किन्तु कमलनयन ने फिर सूत्र सम्हाला। इतनी जल्दी एक आवश्यक प्रसग का इस तरह सरलता से टल जाना किसीको ईप्सित न था।

कमलनयन ने कृपानारायण को उद्दिष्ट कर कहा, 'मालूम पडता है, इन्ही ओषधियो के अनुभव और प्रयोग से आपने कलैंडर के बारहो पत्ते पूरे भरने का सकल्प कर रखा है। कितने, तीन ही तो घटते है न ?'

कृपानारायण लज्जित न हुए, बोले 'और सतुष्ट होओगे मित्र, शादी हुए को नौ वर्ष अभी पूरे नही हुए है।'

'सच ?'

'झूठ क्यो कहने लगा! —बल्कि एन्-क्यूब, मेरा कहा मानो तो टी० बी० के भूत को तो मारो गोली, और इस वैद्यराज के नुस्खे को ही प्रमाण मानकर थोडी अच्छी-सी चिकित्सा करवा लो।'

एक सज्जन थे, अवकाश-प्राप्ति की सीमा पर पहुचे हुए। पचपन वर्ष की जिन्दगी का परिश्रम उठाकर भी जो जवानो को पुसत्व के क्षेत्र मे सदैव चुनौती देते सुने जाते थे, दूसरे विवाह की अपेक्षाकृत युवती पत्नी से सदैव डरा करते थे। इस प्रकार की ओषधियो का उन्हे भी पर्याप्त अनुभव था। बोले

'यदि यही बात हो अटनागर जी, तो एक हकीम को मै भी जानता हू। बडे आजमूदा नुस्खे जानता है। ताकत की दवाओ का तो शहन्शाह है, शहन्शाह। शर्तिया इलाज करता है। जिनको कोई आस नही रहती उनको नई जिन्दगी देता है, बिल्कुल नई। बीमार को सभी कोई खडा कर सकते है, वह तो एक बार मुर्दे को खडा कर देगा!'

नानकचन्द ने मुस्कराकर कहा, 'अपनी हिम्मत दिखाने के लिए आखिर कोई मुर्दा न मिले तो फिर जीवित बीमार को वहा तक आसानी से पहुचा

भी तो देता है ।'

कुछ लोगो ने सुनकर मुस्करा दिया, पर जिन्हे सुनना चाहिए था उन्होने नही सुना।

नटनागर ने कहा, 'उनसे भी मिलता चलूगा । कहा रहते है वे ?'

'उनका पता मेरे पास लिखा हुआ है। अभी लिखवा देता हू ।'

कमलनयन ने फिर पुराना सूत्र सम्हालकर कहा, 'पर भाई साहब, मेरी राय है, अभी भाभी को न ले जाइए। नई जगह मे आपको बडी तकलीफ पडेगी। फिर आप तो रहेगे इधर-उधर। इन सभी डॉक्टर-वैद्य-हकीमो से मिलने-मिलाने जाएगे और ये ?'

'पर यही छोडू भी तो किसके भरोसे ?'

'क्यो ? —आपका घर है। और हम पडोसी क्या आखिर मर गए हैं ? —जिस चीज की उन्हे जरूरत होगी, बराबर उसका इन्तजाम कर दिया जाएगा। आप कह रहे थे आपकी माता जी भी तो आने वाली है।'

'इरादा यही है कि मिसेज़ अटनागर को वही 'मदर' के पास छोड दूं, और फिर बम्बई जाऊ ।'

'लेकिन यह क्या भाभी के लिए बेकार मुसीबत न होगी ? —उनकी पढाई मे भी हर्ज होगा ।'

'यह बात तो है । —मै समझाऊगा उन्हे। अगर वे मान गईं, तो यही रहेगी। पर कमल, उनकी जिम्मेदारी तुम्हारे सिर रहेगी। तुम्हारे कहने से मैं उन्हे यहा छोड रहा हू ।'

—कि तभी चपरासी ने आकर एक चिट दिया, और कहा, 'साहब सलाम बोलते हैं।'

'मैं आया !' कहकर श्री अटनागर ने एक फाइल तलाश करनी प्रारम्भ की। सहायता के लिए कमलनयन को कहा। बडा सिर पटका, पर फाइल न मिली। अटनागर ने निराश होकर कहा,

'ऐन वक्त पर कम्बख्त फाइल ही गायब हो गई। मैं कहता हू जोशी, तुम पूरे गधे हो। फाइलो को कभी सम्हालकर नही रखते ।,

चपरासी दूसरी बार फिर याद दिला गया । साथी लेखक मीमांसा करने लगे कि फाइल को सम्हालकर नही रखने मे और गधा होने मे कौन-सी तुल्ययोगिता है !

कमलनयन ने पूछा, 'पर यह तो बताइए, फाइल आपको चाहिए कौन-सी ?'

'अरे वही दादू के एक्सिडेण्ट की ।'

'वह तो उस परले सेक्शन (विभाग) मे होगी ।'

'नही, नही, हमारे सेक्शन की फाइल बाबा, कम्पेनसेशन की !'

'ओह आई सी (मैं समझा) । पर देखिए तो, यह आपके बगल मे । यही तो रखी है ! अभी तो आपने इसपर नोट लिखवाया है ।'

'हा, हा, मैं भूल ही गया था । नोट लिख दिया न ।'

'पढ लीजिए ।'

'पढूगा क्या ? —साहब जल्दी मचा रहे हैं । तीन बार तो चपरासी आ चुका है ।'

भटनागर ने फाइल उठाई और चल दिए । इधर यार लोगो मे चुहल फैलने लगी ।

नानकचन्द ने जूनियर जोशी के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, 'मुबारक-बाद देता हू जोशी, पर अमानत मे खयानत का इरादा तो नही है न ?'

जोशी ने उत्तर दिया, 'खयानत जैसी अमानत भी तो हो ।'

सीनियर जोशी बोला, 'तो बडे बाबू चक्कर पर चक्कर जो काटते है सो क्या यो ही है ? —उडो मत ।'

'बड़े बाबू का काम बडे बाबू जाने ।'

'और तुम न जानोगे'—नानकचन्द ने कहा—'कोयले की दलाली करो ऐसे भोले तो हो नही तुम !—अच्छा यह बताओ ! यह टी० बी० क्या बला है ?'

'तो इसकी कैफियत भी मुझे देनी पडेगी ?'

'तो क्या मैं दूगा ?—जिम्मेदारी जिसपर छोडी जाती है वह नाक पर

क्या मक्खी भी न बैठने देगा ?'

'भाई मेरे, जिम्मेदारी तो छोडी है आज, अभी! और वह भी तब, जबकि भाभी को वहा रहना मजूर हो जाए।'

सीनियर जोशी ने कहा, 'अरे टी० बी०-वी बी तो बस यो ही है। शर्त लगा सकता हू। बेचारे को मेहनत करते-करते साल भर हो गया, लेकिन कुए का डोल खाली का खाली! टी० बी० का तो बहाना भर है। है न कमल यही बात ?'

'हो सकता है।'

'हो क्या सकता है, है!—मै शर्त बद सकता हू।'

नानकचन्द ने कहा, 'तो हम दोस्त लोग क्या मर गए है।—इस दिन ही काम न आए तो किस दिन काम आएगे!—कहो तो चरस चला दें कुए पर। दसवे महीने फसल न कट जाए तो मूछ मुडा ले।'

दूर बैठे एक और बाबू को बात मे रस आया। थे भी रसीले, नाम राधावल्लभ! उम्र रिटायर होने के नजदीक। बोले, 'तुम चरस चला दोगे तो क्या चक्कर काटने वाले लोग लोटा-डोर पर गुज़र कर लेगे ?'

नानकचन्द ने कहा, 'अच्छा, दिल के मारो मे आप भी है। विजया की मात्रा दूनी करनी पडेगी !'

'दूनी होगी तब तो प्रलय हो जाएगा, प्रलय।'

कृपानारायण ने आख मटकाकर कहा, 'बडे बाबू से झडप करोगे ?'

तब तक राधावल्लभ ने हथेली पर तम्बाकू और चूना मल लिया था; फाककर उसे मसूढे मे एक ओर दबाया और ऊचा मुह करके बोले, 'क्लाक टॉवर के नीचे ऐसे बडे बाबू कौड़ी के तीन बिकते है।'

'उनके मुह पर कहोगे ?'

'ज़रूरत पडी तो उनकी बदरिया के मुह पर भी· ·!'

'तो किसी दिन तुम्हारी हिम्मत भी देखेगे।'

'किसी दिन क्यो, आज, अभी, लो चलो!'—कहकर वे उठ खडे हुए।

कमल ने बीच-बचाव करते हुए कहा, 'आपकी हिम्मत के क्या कहने बाबूजी ! आपने तो ऐसे कई देखे होगे ।'

'यही क्या, तुम्हारे मैनेजर जैसे आधे दर्जन देख चुका हू !'—उनके सामने से सभी लोग हट जाया करते थे । यह कहना कठिन था कि कब उनके पोपले मुह मे ठूसे हुए तम्बाकू के पीक का प्रसाद बाहर निकल-कर सुनने वाले को अपने रग मे न रग दे । यो भी बोलने मे उनके मुह से शाब्दिक ही नही, वास्तविक छीटाकशी भी अविराम हुआ करती ।

नानकचन्द ने कहा, 'अच्छा बाबूजी, क्या आप हमारे अटनागर बाबू से भी लोहा ले सकते हो ?'

यह खुली चुनौती थी !

राधावल्लभ ने कपाल पर आखे चढा ली, उनका ढीला चश्मा नाक की नोक से मानो गिरते-गिरते रुका । बोले, 'उस जोरू के गुलाम से ?...'

तभी अटनागर बाबू फाइल उठाए कमरे मे प्रविष्ट हुए । सभी क्लर्क चुप हो गए । अटनागर ने निश्चय ही राधावल्लभ की बात सुन ली थी ।

सभी क्लर्कों ने इशारे से नानकचन्द की ओर देखा और नानकचन्द ने तब राधावल्लभ की ओर । राधावल्लभ ने पुनः अपनी कुर्सी पर दखल जमा लिया था । छेडते हुए नानकचन्द ने कहा, 'कहिए न बाबूजी आगे ?'

'तो क्या मै डरूगा किसीसे ?'

अटनागर ने मुह उठाकर देखा, सभी के मुह पर मुस्कराहट व्याप्त थी । शीघ्र ही अटनागर के ओठ एक सौ अस्सी डिग्री पर खिच गए; और उसने कहा

'जोरू का गुलाम कौन है बाबू राधावल्लभ ?'

'समझ लो, अगर तुम्ही होओ !'

अटनागर बाबू की सघन भ्रुवो से, मानो दो भूखे भेड़िए छूट पड़े, राधावल्लभ ने चश्मे के ऊपर से अपनी कजी आखों को अटनागर की

विषैली दृष्टि से टकराने दिया, मानो यह बतलाने के लिए कि मुझे तुम्हारी इस दृष्टि की तनिक भी चिन्ता नही है। उसने नितान्त सहज मुद्रा से कागज उलटना शुरू कर दिया। गलफडे मे लसीली तम्बाकू चक्कर काटने लगी। भ्रटनागर ने थूक निगलकर जरा गर्दन को हिलाया कि देखने वाले देख लें कि भ्रटनागर कच्ची गोली नही खेली है, समय आने पर राधावल्लभ भी समझ जाएगा।

कमलनयन ने परिस्थिति को सम्हालना चाहा, राधावल्लभ की ओर मुखातिब होकर कहा।

'जोरू का गुलाम कौन नही होता राधावल्लभ बाबू?—तुम्ही कौन बचे हो?'

तम्बाकू के शोरबे को सुरक्षित रखने के लिए उन्होने मुह को ऊचा उठाया और कहा, 'दुधारू गाय की लात खाने मे क्या शर्म है?—पर बद्दूर की लात तुम्हारे बाबू ही को मुबारक हो।'

बात कुछ हलकी पड गई, पर भ्रटनागर ने उस ओर ध्यान न देकर कमलनयन से कहा, 'काम करो जोशी, काम करो। यह फाइल लो, जरा वर्क्समेन कम्पेनसेशन ऐक्ट देखकर बताओ, दादू के केस में क्या किया जा सकता है?'

और दूसरे लोग अपनी-अपनी कुर्सियो पर खिसक गए, कमलनयन भी कुछ अप्रतिभ हो गया। बोला, 'किन्तु आपने तो नोट दिया था कि दादू अपनी ही गलती से आहत हुआ है, वह किसी रकम को पाने का मुस्तहक नहीं है।'

'लिखा तो है; पर इन सिरफिरे अफसरो के सर का कोई क्या करे!—कोई बात उनके भेजे मे बैठे तब न! किसीने आकर कह दिया कि मिलना चाहिए, बस क्लर्क के सिर सवार! खैर अपनी तरफ से तो लिख दिया है।'

कमल ने दबे स्वर से कहा, 'बेचारा कुछ पा जाए तो दुआ ही देगा आपको।'

'यह कोई सदावर्त नही है कमल, हमे अपनी रिस्पॉन्सिबिलिटी (जिम्मेदारी) समझनी ही चाहिए। भावुकता से दिमाग का बैलेन्स (सतुलन) बिगड जाता है।'

'किन्तु—'

'जानते हो, एक क्लर्क की सफलता किसमे है ?'

'नही तो !'

'इसीमे कि वह प्रत्येक प्रस्ताव की विरोधी दृष्टिकोण से आलोचना करे।'

'पर इससे लाभ ?'

'वह एडमिनिस्ट्रेशन (शासन) की पॉलिसी (नीति) को अपहोल्ड (बनाए) रखता है !'

'चाहे वह नीति भ्रमपूर्ण हो ?'

'यह हमारे देखने की बात नही कमल, यह आफिसर्स के देखने की बात है। ऐण्ड द किग कमिट्स नो मिस्टेक (और राजा कोई गलती नहीं करता।)'

'पर बेचारे दादू के मामले मे कहा 'किंग' है और कहा 'मिस्टेक' है ?'

'भई ! काम करो, तुम तो बेकार की बहस करने लग जाते हो। माइण्ड यू (सावधान रहो।) यह प्रवृत्ति क्लर्क के लिए अयोग्यतासूचक है।'

'वहा कब बातचीत हुई इसके बारे मे ?'

'कोई एक नेता आया था ! बस साहब बहादुर सहानुभूति का समुद्र बन गए ! कहने लगे, अरे नागर, मैं चाहता हू कि इस गरीब मजदूर के लिए कुछ किया जाए।—लो, तुम्हारे चाहने से हो क्या जाता है। कोई खाला का घर तो है नही। बजट मे देखना पडेगा, फाइनेन्शियल एडवाइज़र (आर्थिक सलाहकार) की राय लेनी पडेगी और फिर यह सब दर्दसर क्यो ? क्या रेलवे ने उसके हाथ पर हथौडा पटका था ? मैंने तो

कह दिया कि अगर आप कुछ करना चाहते है, तो उसमे प्रेसिडेण्ट (राष्ट्रपति) की स्वीकृति की आवश्यकता होगी !'

'फिर ?'

'फिर क्या ?—कहने लगे, वह सिरपच्ची तो खैर न करनी पडे, पर यहीं कोई रास्ता निकालो !'

'रास्ता कैसे मिलेगा भाई साहिब ? बेचारे गरीब के लिए अगर कुछ हो सके '

'बस यह ऐक्ट देख लो, फिर ज़रा 'एस्टाब्लिशमेण्ट कोड' (नियुक्ति-नियम-सहिता) उठा लेना, या उसमे न मिले, तो 'फैक्टरीज ऐक्ट', और 'एक्सिडेण्ट मैन्युअल' (दुर्घटना-नियम) भी देख लो—जरा जल्दी से, मैं जाऊ उसके पहले, और मै ज़रा जल्दी जाना चाहता हू । शाम की गाडी से जाने के लिए तैयारी करनी है ।'

कमल सिर खुजाने लगा । इन सब ग्रन्थ रत्नो का नाम सुनकर ही उसकी सहज सहानुभूति और सदय भावना काफूर हो गई । दादू ने चोट खाई है, यह तो ठीक है, और इस अवस्था मे यदि उसे किसी प्रकार की सहायता मिल जाए, तो यह और भी ठीक है, किन्तु यह जो शब्दो के जाल मे फसे हुए कानून को खोज निकालने का चक्रव्यूह-प्रवेश है, उसे अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु से, काल-देश और परिमाण के मान से इतना अधिक भिन्न क्या एक सामान्य क्लर्क सम्पन्न कर सकेगा ?—सप्त महारथियो से मरने की अपेक्षा, सिह द्वार पर ही हथियार रख देने मे क्या बुराई है ?

कमल ने कहा, 'भाई साहब, इस समुद्र मे गोता लगाकर, दादू का दारिद्रय दूर करने के लिए मोती तो क्या, काच भी नही लाया जा सकेगा ।'

'फिर क्या करे ?—साहब अभी माग रहे है ।'

'एक तरकीब बताऊ ?—आपकी बात भी रह जाएगी और साहब का मन भी !'

'कैसे ?'

'साहब खुद तो इन पोथो को देखने से रहे !'

'अरे, वे क्या देखेगे !—शकल देखकर ही भडक जाएगे वे।'

'तो दूसरा नोट लिख दो कि कानून मे तो कोई गुंजायश है नही; किन्तु यदि एडमिनिस्ट्रेशन सदय भावना से कुछ करना चाहता है, तो दादू को अस्पताल से छूटने पर कोई हलके काम की नौकरी दे सकता है। मसलन लाइन पर फाटक वाले चौकीदार की जगह, या दफ्तर मे चपरासी या ऐसा ही कुछ—'

'ठीक तो है, ऑफिस मे एक खलासी की जगह खाली भी तो है। अच्छा, यही नोट लिख दो। मै हस्ताक्षर कर दूगा ! तब तक मैं जरा घर हो आऊ। तुम्हारी भाभी को सामान बाधने के लिए कुछ इन्स्ट्रक्शन (सूचनाए) दे आऊ।'

'पर वे तो नही जा रही है न ?'

'यह भी तै कर आता हू।'

—उनके पीठ फेरते ही फिर सब चूहे बिल से सिर निकालकर कमलनयन की मेज पर इकट्ठे होने लगे। राधावल्लभ अपनी ही कुर्सी पर से बोला—मुह की थूथनी उसी तरह हवा मे ऊपर की ओर उठाए हुए मानो कोई बैल अपने मालिक को निकट आया देख, कुछ पाने की उम्मीद मे अपने नथुने फैला देता है !

'कमलनयन, एक सीख माने, तो ऐसे मामलो मे गहरे मत उतरना !'

'यानी ?'

'यदि कही आगे सम्हला नही, तो यह अटनागर का बच्चा छोडेगा नही तुझे; जहर का बुझा हुआ है यह !'

'कैसे कहते हो यह ?'

'देखा नही ?—जो बिना कारण ही दूसरो के मामलो को बिगाडना अपना कर्तव्य समझता है, उसकी नीयत का क्या ठिकाना ?'

कमलनयन ने कहा, 'उपदेश तो गुरू जी, ठीक है; पर आप क्या किसीसे कम हैं !'

लम्बी सास-सी लेकर राधावल्लभ ने कहा, 'तुम्हारी चादी है दोस्त, कह सकते हो। अगूर खट्टे है हमारे लिए! पर हमारा क्या है! बावन साल के हो चुके, तीस साल से ज्यादा की नौकरी हो चुकी, किसी भी साल रिटायर हो सकते है। वरना · '

कृपानारायण ने कहा, 'वरना ?'

'अबे जा बे लगूर!—घर मे आटे-दाल का इन्तज़ाम है या नही ?'

नानकचन्द ने कहा, 'कलियुग है राधावल्लभ जी, सुनते है नाम की बडी महिमा है। यह भी तो कमलनयन न सही, के० एन० जोशी तो है; उम्मीदवारी के लिए शत-प्रतिशत न हो, नब्बे प्रतिशत अवसर तो होगा ही।'

एक टाइपिस्ट ने कहा, 'उम्मीदवारी करने कौन दे इस बेचारे को! अभी तो कैलेण्डर के तीन पत्ते जो बाकी हैं। कण्ट्राक्ट (ठेका) जब तक पूरा न हो जाए, इसे हाथ-पैर हिलाने कौन देगा ?'

एक दूसरे बाबू ने कहा, 'अरे ठेके की अवधि के दिन रह गए है केवल ढाई बरस! अडा सेने आदि का समय निकाल दो तो भी एक महीना फुर्सत का नही रह जाता!'

नसीर अहमद डिस्पैचर ने कहा, 'इश्क करने के लिए कमर मे ही नही, अण्टी मे भी ज़ोर चाहिए जनाब, और यह फटीचर, मुफलिस—'

टाइपिस्ट ने कहा, 'फटीचर मुफलिस न कहो खा साहब!—सोने की तिज़ारत करता है, सोने की। क्यो जोशी, झूठ करता हू ?'

जोशी ने कहा, 'अरे वह कोई तिजारत मे तिजारत है! एकाध तोला सोना खरीद लिया। दूसरे दिन भाव चढ़ गया तो दो-चार रुपये मार लिए, वरना सोना पडा है, दु ख तो देता नही।'

'और भाव उतर गया तो ?'

'बुखार तो चढ़ ही जाता है।' नानकचन्द ने कहा, 'पर उससे इश्क-बाजी मे क्या फर्क हो जाता है ?'

एक हज़रत बोले, 'एक भेद की बात कहू ?—कृपानारायण ने अपने

मकान का आधा हिस्सा एक सिधी शरणार्थी को किराए दे दिया है। लडकी है एक उनके, जो जादू जानती है जादू !'

'तो फिर ?'

'तो फिर क्या ! कृपानारायण उसकी कृपा के लिए मुह ताका करते हैं और किराए का पैसा वसूल करने मे भी गफलत कर जाते है ।'

राधावल्लभ ने कहा, 'यह भी तिजारत है भाई। भाव कभी चढ गया, कभी उतर गया ।'

कमलनयन ने तब तक अपनी फाइल पूरी कर ली थी। वह इस चुहलबाजी से बेखबर रहा हो सो भी बात नही—एक कान इधर एक कान उधर, कही कुछ का कुछ लिख दिया तो फिर पढकर ठीक कर देगा तब तक वह भी क्यो न कृपानारायण के इस नये रोमान्स मे कुछ थोडा-बहुत रस प्राप्त करे कि तभी एक ही साथ सबसे बडे बाबू और सबसे छोटे साहब धर्मप्रकाश अपने लम्बे-लम्बे डग भरते हुए ठीक उसीकी टेबल के सामने खडे हो गए। वहा खडे सभी बाबुओ के मुह पर हवाइया उडने को हो गई। राधावल्लभ अपनी ही कुर्सी पर एक फाइल के पन्ने उलटता दिखाई दिया।

'क्या कर रहे हो तुम लोग यहा इकट्ठे होकर ?'

जवाब नदारद, सभी लोगो की दृष्टि नीचे पैरो पर झुकी हुई।

फिर कृपानारायण की ओर मुखातिब होकर बमक उठे, 'ऐण्ड यू जोशी, हमेशा शिकायत करते हो कि काम बहुत है, फुरसत नही मिलती ! दिसिज़ द वे यू, डोण्ट गेट फुरसत ! (इस तरह तुम्हे फुरसत नही मिलती !)'

'सर, सर—'

'ह्वाट सर !—गो टू योर प्लेसेस ! (अपने-अपने स्थान पर जाओ ! न तो खुद काम करेगे और न दूसरो ही को काम करने देगे ! नेक्स्ट टाइम (दूसरी बार) अगर आप इस तरह मिले, माइण्ड यू, सीरियस एक्शन विल बी टेकन ! (सावधान, कडी कार्यवाही की जाएगी !)'

इतने मे कमलनयन प्रकृतिस्थ हो चुका था। उसने सामने वही फाइल रख ली, जैसे सारे समय उसीमे व्यस्त था। तभी धर्मप्रकाश उसकी ओर अभिमुख हुए।

'और तुमने भी वह नोट तो क्यो लिखा होगा ?'

तनिक मुस्कराकर कमलनयन ने कहा, 'आइ डिडट अलाउ माइसेल्फ टू बी एन्ग्रॉस्ड बाइ देम ! (मैं उन लोगो से बचा रहा !) यह लीजिए नोट ! तैयार है।'

'इज इट ? (ऐसा क्या ?) थैक्यू।'

और फाइल उठाए हुए, धर्मप्रकाश लौट गए।

तात्पर्य यह कि कटे हुए हाथ के दादू को वहीं पर दफ्तर मे खलासी की जगह मिल गई। क्षतिपूर्ति की कोई रकम उसे नही मिली, कह दिया गया कि दुर्घटना मे दोष उसीका था। उसे जो खलासी की जगह दी जा रही है, वह भी सरकार की, और खासकर श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर की मेहरबानी का फल है। श्री नटनागर के प्रति वह कृतकृत्य हो गया।—क्षतिपूर्ति न मिली, इसके लिए उसे किसीके निकट शिकायत न थी। छोटे आदमी की कामनाओ को अगुलियो पर गिना जा सकता है, और उनके प्राप्त होते ही, उन्हे सतोष भी हो जाता है।

४

अधेरी रात थी। बिजली का दीपक निर्वापित था। जाने कितनी देर तक सो चुकने के बाद नीद उड चुकी थी, और कोशिश करने पर भी पकडाई नहीं दे रही थी। कभी कविता की पक्ति को साचे मे ढालने की चेष्टा करता, कभी कहानी के कथानक को सोचता, या फिर किसी धवले क्षण मे अपने आपको नोबल-पुरस्कार के दरवाजे पर दस्तक देता

देखता, पर मन को कही पर आवास नही मिल पा रहा था। घडी टिक-टिक कर रही थी, पर क्या समय होगा, यह देखने का न उत्साह ही था, न सुविधा ही। हुआ तो इधर करवट बदल ली, या फिर अंधेरे मे ही छत की कडिया गिनने लगे।

खुली खिडकी मे से तारे झाक रहे थे, उनके ऊपर तना हुआ आकाश कुछ कहता-सा दिखाई दे रहा था, कभी-कभी हवा के झोके वदन की सुस्ती को झकझोर डालते!—यही नही, बाहर आगन मे बिखरे सूखे पत्तो मे भी उन झोको से मुखरता भर जाती थी। मध्य रात्रि के सूने निर्जन-अभ्यतर मे पवन क्या किसीसे परिहास कर रहा था ?

मन न माना। खाट पर से उठा और उस ओर पडी स्टूल पर रखी सुराही से पानी पीने के पहले अनजाने ही खिडकी पर आ खड़ा हुआ।—वह उधर वृक्ष-वृन्त के पास ही क्या कोई खडा हुआ है, या निरा भ्रम-मात्र ?—नही, नही, वह तो कोई मनुष्य-मूर्ति है, वह हिली, किसीकी राह देखती-सी मालूम देती है!—शोर मचाऊ ? चोर दिखाई देता है। पर नही, और भी कोई जरूर होगा! किसी मकान मे चोरी कर रहे हो, और यह बाहर खडा पहरेदारी कर रहा हो।—तब तो आवाज़ देनी ही चाहिए।—इस ओर अवश्य ही उसकी पीठ है, उधर जोशी का—कमलनयन जोशी का क्वार्टर है! अकेला तो है, और है ही क्या उसके घर मे ? उसके ठीक सामने, दाहिने हाथ की ओर, पहला क्वार्टर है श्री अटनागर का, अटनागर तो तीन-चार दिन हुए छुट्टी गया हुआ है, अवश्य उसकी पत्नी अकेली है। कही....

एकाएक वह छायामूर्ति वृक्ष की आड मे हो गई। जोशी के मकान के दरवाजे से प्रकाश की एक पतली खडी रेखा दिखाई दी, वह कुछ और अधिक मोटी हुई। पर तभी प्रकाश को आड मे कर दिया गया, या बुझा दिया गया। उसके दरवाजे के सामने कुछ फुसफुसाहट सुनाई दी; देखा कि—दो छाया-मूर्तिया आगे बढी, एक उनमे स्त्री की आकृति मालूम दी। तीन-चार कदम चलने के बाद पुरुष आकृति रुक गई, और एक क्षण के

बाद परावर्तित हो गई। स्त्री आगे की ओर धीरे-धीरे सावधानी के साथ बढने लगी। हलकी आहट से मालूम दिया, जोशी के मकान का दरवाज़ा बन्द हो गया। मेरी सास रुकी हुई थी।—दरवाजे की आहट से स्त्री एक क्षण के लिए रुक गई।

वृक्ष की आड से वह मूर्ति निकलकर आगे बढने लगी, मालूम दिया, उसने उस महिला का पीछा किया। दो-चार कदमो तक तो उसे खयाल न हुआ कि कोई पीछा कर रहा है, किन्तु जैसे ही वह भटनागर के मकान के पास पहुची कि उस पीछा करने वाली मूर्ति ने पीछे से उसके कधे पर हाथ रख दिया। मकान के पृष्ठभूमि मे आ जाने के कारण उसके सामने क्या हो रहा था, यह एकाएक दिखाई नही दिया, किन्तु कुछ फुसफुसाहट की आवाज़ अवश्य हुई। सोच ही न पाया, कि शोर मचाऊ, या बिजली जलाऊ या टार्च की रोशनी उनपर फेककर पहचानने की चेष्टा करू—पर मन ने कहा कि यहा पर एक रहस्य का अभिनय हो रहा है, और उसे स्पष्ट कर देने से उसका सौंदर्य नष्ट हो जाएगा, शायद कुछ आफत भी हो।—चोरी का कथानक यह अवश्य नही है; जितना दिखाई दे जाए देखते रहने मे ही क्या बुराई है ?

फुसफुसाहट से काम चला नही, कुछ छीना-झपटी-सी मालूम दी, और तभी नारी-कठ से निकली दूर से कुछ-कुछ सुनाई दी जाने वाली ध्वनि का मैंने अर्थ लगाया, 'मैं सहायता के लिए चिल्लाती हू।'

मालूम पडा उसके मुह पर हाथ रख दिया गया, जिससे कि जब वह सचमुच चिल्लाने लगी तो अस्पष्ट चीख के सिवा कुछ सुनाई नही दिया।

पर कमलनयन के घर के तभी किवाड खुले। मुझे मालूम ही न था, कब से मेरे हाथ मे टार्च आ गई थी, इसलिए जैसे ही वह अपने घर से बोला, 'कौन ?' वैसे ही मैंने टार्च का बटन दबा दिया—प्रकाश को अनुसरण करते हुए देखा कि एक व्यक्ति मेरे मकान के सामने की ओर भाग रहा था—बाज़ू की खिड़की मे से प्रकाश डाल रहा था, इसलिए सामने की ओर प्रकाश जा नही सकता था। वह आदमी आगे भाग गया।

भटनागर के मकान पर रोशनी डाली तो दानव की देह लिए, दादू दरवाजे से बाहर आ रहा था, और मकान के ठीक सामने खडी थी वह नारी, भीता-चकिता हरिणी की भाति ! तब तक कमलनयन उसके पास आ रहा था ।

मैंने खिडकी मे से ही आवाज लगाई, 'क्या बात है ?'

'पता लगाता हू ।' कहकर कमलनयन और आगे बढा ।

दरवाजा खोलकर टार्च लिए मैं भी बाहर निकला, और जब तक कि मैं भटनागर के मकान तक पहुचू, देखता क्या हू कि वे लोग वहा पर नही हैं । शायद भीतर कमरे मे चले गए थे । क्या जरूरत थी कि मै भी घर मे जाता ?—और टार्च जलाकर देखने की भी क्या जरूरत थी ?—परावर्तित होने को मैंने पैर मोडे कि तभी आवाज आई—आवाज मैं पहचानता था, वह दादू की थी—'बाबू साहब, भीतर आ जाइए, आपको बुला रहे हे !'

'बुला रहे हैं ?—पर क्यो ?'—मै भीतर जा पहुचा ।

देखता हू कि कमरे मे एक ओर लालटेन की धुधली रोशनी मे मुह किए हुए अश्रु-रुद्ध दृष्टि से श्रीमती कमला भटनागर दीवार की ओर देख रही है, शायद कुछ कह रही थीं, किन्तु मुझे आया देखकर एकाएक ही चुप हो गई है । दूसरी ओर सामने कमलनयन कुर्सी की पीठ से हाथ टिकाए मेरी ओर दृष्टि फिरा रहा है । चेहरे पर दोनो के हवाइया उडी हुई मालूम दी !

पहुचते ही कहा, 'भाभी जी, नमस्कार !—क्या बात हो गई ?'

जवाब दिया कमलनयन ने, 'कोई चोर मालूम देता है । उसने बाहर से किवाड खटखटाए; इन्होने समझा दादू है, दरवाजा खोला तो देखती हैं कि कोई गुण्डा है ।'

—अधूरी बात को देवी जी ने पूरा किया—'चाहा कि शोर मचाऊ, पर उसने मुह पर हाथ रख दिया, और दूसरे हाथ से खीचकर वहा तक घसीट ले गया ! यह तो गनीमत हुई कि कमल बाबू जाग गए …'

मैंने पूछा, 'पर आप क्यो उठी ?—कोई आने वाला तो था नही !'

कमला देवी उत्तर के लिए कुछ इधर-उधर देखने लगी तो कमल-नयन ने कहा

'इन्हे ख्याल न था कि दादू आ गया है। नरवरोत्तम बाबू नही है, तो रईस बना हुआ है। सिनेमा देखता फिरता है ! क्यो रे ठीक है न ?'

दादू की मुद्रा से मालूम न हुआ कि क्या ठीक है और क्या ठीक नही ! पर फिर भी वह बोला, 'सिनेमा देखने तो आपने कहा तभी गया हू .'

'पूछा तो, क्या तब इनकार करता ? यह तो तुझे पूछने के पहले ही सोचना चाहिए था !—पर—' बात का रुख बदलकर बोला—'और फिर सोता है तो ऐसा कि कुम्भकर्ण भी होता तो हार मान जाता। इतना सब कुछ हो गया, दरवाजे खटखटाए गए, मगर हजरत की नीद ही अब खुली !'

मैं चुपचाप बैठा हुआ सब कुछ सुनता रहा, और मन ही मन मुस्कराता जाता था। मनुष्य धोखा देने के लिए दूसरो को कितना मूर्ख समझता है, और स्वय कितना मूर्ख बन जाता है ?—चोर कोई किवाड क्यो खट-खटाने लगा, और देवी जी से घर की देहली से बाहर सामना करने का क्या मतलब है ?—जब उसने मुह पर हाथ रख दिया, तब वह उन्हे खीच कैसे सका ?—झटके मे जब देवी जी परवश होकर घसीटी जाने लगी, तव तो वे जरूर ही चिल्ला सकने की अवस्था मे होगी ?—और कमल बाबू ही क्यो, स्वय मै भी ज़रा-सी धीमी-सी फुसफुसाहट पर कैसे जाग गया ?—अथवा दादू की कुम्भकर्णी नीद का आधार इसी बात से कितना कच्चा है ?—इन सभी बातो को एक क्षण मे धुए के बादल की तरह उडाया जा सकता है, पर क्यो ?—मैंने कमला की ओर उडती दृष्टि डाली, मालूम देता था वे मेरी ही ओर देख रही थी, पर उन्होने नज़रो को चार होने का मौका न दिया !

मैं उठ खडा हुआ, बोला—'सावधान रहना चाहिए। कोई किवाड

खटखटाए तो जब तक वह आवाज देकर अपना परिचय न दे लें, किवाड न खोलना चाहिए ! अच्छा, चल दिया ।'

कमल ने कहा, 'मै भी चलता ही हू !' और उसने भी हाथ जोडे, पर मैं उसकी राह न देखकर बाहर हो लिया, और आगे बढा, किन्तु अपने मकान के फाटक पर आकर देखा कि कमल अभी तक बाहर नही निकला, बल्कि भीतर ही रह गया है। एक बार और मन ही मन हमकर, मैने दरवाज़ा खोला और भीतर हो लिया । बिजली जलाकर देखा कि मेरे खाट पर भी एक बिल्ली सोई हुई है ।

कमला अपनी खाट पर बैठकर दादू से बोली, 'दरवाजा बन्द कर दे दादू ! इस समय कोई जाग गया, तो क्या कहेगा !'

दादू ने दरवाज़ा बन्द कर दिया ।

कमला ने एक नज़र कमल पर डाली, और फिर दादू को सम्बोधित करके कहा :

'अब चाहे तो सोजा, पर ऐसा घोडे बेचकर क्यो सोता है ?'

'नही बीबी जी, मै तो ज़रा-सी आहट पाते ही जाग उठता हू ?— और आज तो आपसे कहकर सोया था, आप खुद दरवाज़ा खोलने की बनिस्बत मुझे ही आवाज़ दे लेती !'

'बाते न बना ! जा !'

दादू बेचारा दूसरे दरवाज़े से होता हुआ पीछे बरामदे मे अपनी कथरी पर पड रहा और सोचने लगा कि रात्रि की इस घटनावली में उसकी भूमिका मे कहा दोष रहा, और यदि सचमुच ही उसका कोई अपराध न था, तो इन सब आरोपो का सूत्र किस तरह ये लोग लगा पाए हैं !

इधर कमल ने पूछा, 'अच्छा शकल से न सही, पर क्या आकृति, लम्बाई-चौडाई किसीसे कुछ अन्दाज़ नही लग सकता ? कपडे कैसे पहने था ?'

'सुनो इसकी बात !—अरे जब उसकी शकल नही पहचान सकी, तो क्या कपडे खाक पहचान लेती ?'

'फिर भी कुछ अनुमान तो लगाया ही जा सकता है ! है वह यही कहीं का आदमी, इसमें तो कोई शक हो नही सकता ! और वह ध्यान रख रहा था कि तुम कब मेरे घर से निकलती हो। तुम तो यहा सबको जानती ही हो !'

कमला बहुत ही चिन्तित हो उठी, उसकी विचारधारा को मानो एक दूसरा ही स्रोत मिल गया। बोली, 'तब तो उसे यह भी मालूम होगा कि मैं अपने घर से कब निकली ?'

'जरूर मालूम होगा !'

'और वह इस आधी रात को यहा पर आ खडा हुआ, तो हमारी बातचीत को वह इससे भी पहले से जानता होगा ?'

'मुमकिन है !'

'हमारे सभी रहस्यो को वह जानता होगा ?'

'सभी को जानता हो या न हो, पर इस रात्रि के रहस्य को तो जान ही गया है। इसीलिए तो पूछ रहा हू कि कुछ अनुमान तो लगाया जाए ! —आखिर कुछ तो तुमने उसे देखा ही होगा !'

कमला कुछ देर तक कर्तव्यमूढ-सी बैठी देखती रही। क्या अपना अनुमान वह उसे बता दे ? कमल से क्या छिपाया जाए !—यदि यह जान लेगा तो कुछ उपाय भी बन जाएगा ! आखिर एक से दो भले !

परन्तु—यदि वही हो ?—वह ! और कमला की ओर लोलुप हो !—इसमे आश्चर्य की तो कोई बात नही ! कमला क्या किसीसे कम सुन्दर है ?—उसकी पत्नी, नही-नही—

कमल ने फिर पूछा, 'और यह तुक्कड कहा से आ टपका ? दाल-भात में मसूरचन्द ?'

इशारा मेरी ओर था, पर मालूम देता है, कमला नही समझी, 'तुक्कड कौन ?'

'नही जानती ?—बडा कवि की दुम बना फिरता है न !'

कमला ने कहा, 'यदि यह सामने न आया होता, तो ख्याल होता कि वह आदमी यही है !'

'यानी, इतना ही लम्बा-चौडा, इसी तरह के कपडे पहने था ?'

'दूसरो जैसा भी हो सकता है, उस वक्त क्या किसीको पहचानने के लिए किसीको होश-हवास रह सकते हैं ?'

'पर यह तुक्कड जी ही खिडकी पर खड़े क्या कर रहे थे ?'

'यदि इसने भी हमारी सारी हलचल न देखी हो, तो सचमुच आधी रात को कोई क्यो जागता ?'

'इसके जागने की तो कोई बात नही। तुक्कड जो होते हैं, वे नीम पागल होते हैं ! कोई है भी तो नही घर पर आजकल ! मुट्ठिया कस-कसकर छाती और माथे पर ठोकता होगा, और हाय पिंगला, हाय पिंगला गुनगुनाता हुआ मेघदूत लिख रहा होगा !'

'पर मैं अब क्या करूगी ? अगर सब ओर बात फैल गई, तो मैं तो कही मुह दिखाने लायक भी नही रहूगी।' और उसकी आखें कण्डील के धुंधले प्रकाश मे उद्भासित हो उठी।

कमल ने कहा, 'घबराने की कोई बात नही है भाभी ! अभी तो यही कैसे कहा जा सकता है कि वह आदमी यही का था ! यदि यही का था, तो भी उसकी क्या नीयत है, क्या वह सचमुच सारी बाते जानता है—या सयोग से ही वहा पहुच गया था ? और कह भी दे तो आखिर उसके पास प्रमाण क्या है ?'

'लेकिन कमल, अगर तुम्हारे भाई को पता लग गया तो मुझे जहर ही खाना रह जाएगा !' और उसकी आखो से मोती टपकने लगे।

कमल ने उठकर उन्हे अपने हाथो से पोछ दिया, और कहा, 'पागल हो भाभी, तुम तो ! जहर खाना होगा, तो वह खाएगे हमारे दुश्मन ! और अगर खाना ही हुआ, तो मैं भी तो तुम्हारे साथ हू। इश्क के रास्ते मे जो कदम रखता है, वह सर पर कफन बाधकर निकलता है ! तुम

क्यो घबड़ाती हो ? मैं तुम्हारे साथ हू । ना-ना, मेरी कसम है तुम्हे, अब और अगर यह मोतियो का खज़ाना बरबाद किया !—मुझे मरा देखोगी।' और उसने झुककर बैठी हुई कमला की अश्रुप्लावित आखो पर अपने प्यासे अधर रख दिए ।

कमरे मे कोई न था, अत' श्री धर्मप्रकाश अपने छोटे-से कमरे मे काफी मोटे होकर गोपनीय पत्रो पर विचार कर रहे थे । लम्बी-चौडी टेबल थी, कागज़ बिखरे हुएं पडे थे, और जिस कागज़ पर आखे दौडाई जा रही थी, वह भी कम छोटा न था । लाल-नीली पेंसिल से किसी स्थान पर इस सिरे से, किसी स्थान पर उस सिरे से एक-एक बिन्दु लगाया जा रहा था । कोई देख नही रहा था, इसलिए किसीको कुतूहल होने की बात ही नही थी ।

तभी चिक को हटाकर कोई भीतर प्रविष्ट हुआ । धर्मप्रकाश ने दृष्टि उठाकर देखा कि चपरासी चाय की ट्रे लिए खडा हुआ है। पास की छोटी टेबल पर रखने का सकेत करते हुए उन्होने कहा :

'देखो, जरा जोशी बाबू, जूनियर जोशी को भेज दो ।' और उन्होने पेंसिल के लाल सिरे को अपने दोनो ओठो मे दबाकर फिर उस कागज़ को देखना शुरू कर दिया ।

जोशी ने प्रवेश करके जब नमस्ते की तो धर्मप्रकाश ने बिना दृष्टि उठाए, सामने कुर्सी की ओर अगुली उठाई, और कहा, 'बैठो !' और उसी तरह चपरासी को उद्देश्य करके कहा, 'चाय बनाओ'''

कमल ने चपरासी ही से कहा, 'मेरे लिए मत बनाना ।'

'क्यो ?' दृष्टि उठाकर धर्मप्रकाश ने पूछा ।

'मैं दुपहर में चाय नही पीता !'

'पर चाय पीने का समय तो यही है ! काम करते-करते जब थकावट आ जाए, तो एक कप चाय से बढकर कोई नियामत हो ही नही सकती !'

'लेकिन दुपहर मे पीने से चाय गरमी भी तो पहुचाती है।'

'अरे वाह कमल, तुम भी उन्ही पोगापन्थियो मे हो क्या ? चाय गरमी पहुचाती हैं ? अरे, वह ताज़गी देती है, ताज़गी ! बनाओ-बनाओ, कमल भी पिएगा; मेरी खातिर ही सही ।'

दोनो के सामने चाय की प्यालिया रखकर चपरासी बाहर चला गया ।

चम्मच से चाय को हिलाते हुए धर्मप्रकाश ने कहा .

'आर्थिक एकीकरण के साथ ही रेल-पथ की ये अलग-थलग व्यवस्थाए भी एकत्रित की जा रही हैं। व्यवस्था-मण्डल ने सभी रेल-व्यवस्थाओ से कर्मचारियो के विवरण मागे हैं।' और यह कहकर उन्होने एक घू ट को उदरस्थ करने का उपक्रम किया ।

कमल ने कहा, 'जी हा, अपने यहा की तालिका तो मैंने बना दी है।'

कुछ कागज़ उलटकर धर्मप्रकाश ने कहा, 'यह रही । तुमने बनाई है, पर किसीने जाच की है ?'

'एक तो जल्दी थी, दूसरे जाच करवाता ही किससे ?'

'किसीसे भी करवा लेते ! तुम्हारे नरवरोत्तम कब तक आ रहे है ?'

'सिक रिपोर्ट मे है, उनका क्या ? किन्तु यह बनाई उनके निर्देश के अनुसार ही गई है ।'

बात के उत्तरार्द्ध पर धर्मप्रकाश ने ध्यान नही दिया ।

'क्या कोई खत-वत नही आया ?'

'आता तो है उनके घर पर !'

धर्मप्रकाश ने चाय पीते हुए एक वक्र दृष्टि कमल पर डाली । कमल ने देखकर भी नही देखा । वह चाय के प्याले मे ही किसी दूर के काल्पनिक मिठास का स्वाद लेने लगा ।

धर्मप्रकाश ठडी करके पीने वाला था, चाय का प्याला नीचे रखकर बोला .

'पर तुम्हे निश्चय है कि यह विवरण प्रामाणिक है ?'

'अपने जानते तो मैने ऐसा ही बनाया है।'

'फिर भी एक बार और देख लिया होता।'

'मैंने दो बार देखा है !'

'तो ठीक है।' चाय का एक और घूट उदरस्थ हुआ, बात को मुडने की सुविधा हुई, धर्मप्रकाश ने कहा, 'तुम तो कमल, काफी नये—जूनियर हो !'

'नवीनतम, जूनियर मोस्ट, कहिए न !'

'सो तो देख रहा हू !'—फिर कुछ देर रुककर बोले, 'मुझे तुमसे कुछ राग पैदा हो गया है ! चाहता हू कि तुम उन्नत होओ।'

'मै आपका कृतज्ञ हू। पर '

प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने पर कमल ने वाक्य पूरा किया, 'पर पुरीणता कहा से लाऊ ?'

'पुरीणता ?'

'जी, सीनिओरिटी, अच्छा शब्द है; नवीन-पुरीण, सीनिअर-जूनिअर !'

'रीअली ! (सचमुच !)—पर 'पुरीण' तो तुम अवश्य हो !

'आप भी खूब है ! नवीन-पुरीण और धुरीण यानी—'

'एक्स्पर्ट (कुशल)—या योग्य—सबमे पढे-लिखे भी तो तुम्ही हो !'

'पर…'

'हा, तुम्हारी मजबूरी तो है; पर अटनागर होता तो किसी तरह तुम्हें पुरीण भी प्रमाणित कर देता।

'वह कैसे ?'

'बाय जूडीशियस ऐण्ड विशफुल अप्लीकेशन ऑफ रूल्स (नियमो के विचारपूर्ण स्वेच्छाकृत प्रयोग द्वारा !) यदि नियम दुधारी तलवार होते हैं तो नियामक उनका दुहरा प्रयोक्ता होता है। पर यह दुहरा प्रयोग अनुभव के बिना सिद्ध नही होता। अटनागर एक अनुभवी योद्धा है।'

'उनके गुरु भी तो आप ही है।' और यह कहकर उसने अपना कप समाप्त कर दिया।

धर्मप्रकाश ने एक छिपी दृष्टि कमलनयन पर डाली, और चाय गटकते हुए अवसर की खोज करने लगा। फिर कप मे ही दृष्टि रखते हुए उसने मानो अपने आप से कहना शुरू किया

'उस दिन वह भटनागर की श्रीमती जी को लेकर बडी ही अजीब बात हो गई! रात को उसका बाहर निकलना, और किसी आदमी से मुठभेड, किसी डाकू का किस्सा—अच्छा कमल, तुम तो इस लडकी को जानते मालूम देते हो! तुम्हारी क्या राय है?'

'मेरी क्या राय हो; जो किस्सा आपने सुना, वह मैंने भी सुना है! और उससे अधिक गहरा उतरना मेरे लिए जरूरी ही क्यो हो?'

मुस्कराकर धर्मप्रकाश ने कहा, 'भटनागर तुम्हे चार्ज जो दे गए हैं।'

'गुनाह और बेलज्जत समझिए!' हसकर कमल ने जवाब दिया।

'क्या लडकी सचमुच चाहने लायक है?'

'आपने भी तो उन्हे देखा है! उस दिन चाय-पार्टी मे तो आप भी सम्मिलित थे!'

'था तो, पर ऐसी बातो पर तब ध्यान देने की जरूरत ही न थी।'

'अब है क्या?'

'रास्ते मे पडे हीरे को देखकर किसका लोभ रुका रहता है?'

'क्या उसे आप रास्ते मे पडा समझते है?'

'नही तो तुम्ही बेलज्जत गुनहगार कैसे होते?'

कमल ने चुप रहने ही मे कुशल समझी।

एक-एक प्याला चाय का और बनाते हुए धर्मप्रकाश कहने लगे, 'मुझसे छिपाना बेकार है कमल, और यही देखकर मैं भी सोचता हू तुम से भी छिपाना बेकार है! उस दिन रात को तुम्हारे किस्से के अनुसार जिस चोर ने श्रीमती भटनागर का दरवाजा खटखटाया था, वह मैं ही हू। और अब तुम्हारे किस्से मे कितना भाग सचमुच किस्सा है, यह मुझसे

कहने की जरूरत नही।'

कमल ने नीची दृष्टि किए ही कहा, 'मेरा अनुमान था कि वह व्यक्ति शायद आप ही हो।'

'जब वह बात अनुमान से आगे पहुच गई है तो मै समझता हू, एक ही मजिल के राही के नाते हमे मिल जाना चाहिए और एक दूसरे की लब्धि का हमे लाभ उठाना चाहिए।'

'यानी ?'

धर्मप्रकाश ने मुस्कराकर कहा, 'तुम स्वीकार कर चुके हो एक दिशा मे मैं तुम्हारे गुरु का गुरु हू, दूसरी दिशा मे तुम अपने गुरु के भी गुरु निकले। जिस दिशा मे मैं गुरु हू मैं तुम्हारी सहायता करूगा, और जिस दिशा का गौरव तुम्हे है, तुम्हे मेरी सहायता करनी चाहिए।'

'पर उनसे पूछे बिना '

'मैं वादा करने के लिए नही कहता, केवल सहायता के लिए कह रहा हू।'

कमलनयन ने चाय का प्याला ओठो से लगाकर उत्तर देने का अवसर बचाया।

मुझे उनकी मुलाकात का नियाज कम ही हासिल हुआ करता है, परन्तु उस दिन सध्या को मुझे भी उनके यहा चाय का निमन्त्रण मिला—निमन्त्रण क्या, चपरासी आया और सलाम बोल गया। मै जानता था, सलाम और चाय तो चपरासियों के औपचारिक सम्बोधन है, होगा कुछ सरकारी-गैर सरकारी काम ही; और साध्य चाय जैसे किसी रईसी कार्यक्रम का न मुझे कोई आग्रह या सुविधा ही है, किन्तु सरकारी निमन्त्रण की उपेक्षा नही की जा सकती, इसलिए उनके घर तक, बेमन ही सही, जाना पडा।

सोच रहा था वे अकेले न होगे—प्राय: वे अकेले नही रहते, भक्तजन, स्तुतिवाचक, अनुग्रहयाची और नौकरी के उम्मीदवार एक-दो, एक-दो बने

ही रहते हैं और सबको अपने-अपने प्रयत्न के अनुकूल परितोष भी मिलता ही है। वे समर्थ जो ठहरे ! पर आज कोई न था, शायद किसीको रहने ही न दिया हो या कोई आया ही न हो। दफ्तर का काम छोडकर कलम से यदि कथा-लेखन का काम करना चाह रहा हू, तो मुझे चाहिए कि इम्पर्सनल (निर्वैयक्तिक) रह सकू तो बहुत ही उत्तम है।

जिस कमरे मे मिलते हैं, वह कमरा भी नही था; मुझसे मिले वे अपने ही कमरे मे; और देखता हू कि चाय, फल आदि का उपस्कर भी सामने एक छोटी टेबल पर प्रस्तुत है। मैंने सोचा चलो, अग्रेजी पढे-लिखे शिखा-सूत्र हीन ब्राह्मणो को श्रद्धा भी यत्र-तत्र किसी भी व्याज से इस युग मे भी मिल ही जाती है ! जय हो श्रद्धालु यजमानो की !

चाय भी पी, मिठाई भी खाई, फल भी उडाए और उनकी रसभरी बातो का नीरस उपभोग भी किया। मुशियाना ढग से बोले। मुझसे बोलते समय वे भाषा का आग्रह नही रखते। यद्यपि वे जानते है कि यदि मुझसे भी वे, जैसा कि वे दूसरो के साथ प्राय करते हैं, हिन्दी ही के शब्दो का प्रयोग करे तो अनायास ही एहसान कर सकते है ! कहने लगे :

'रेलवेज-इटिग्रेशन (रेलो के विलीनीकरण) को आप कैसा समझते हैं ?'

केवल मेरा मत जानने के लिए चाय का व्यय उठाना बुद्धिमानी नही-है, यह वे जानते थे, मैं भी जानता था। इसलिए मैंने कहा 'काम बहुत बडा है। योजनाबद्ध और धीरे-धीरे हो तो इसके लाभ स्पष्ट हैं, पर इसी भाति काता और ले दौडे किया तो खतरे भी साफ ही हैं। मैंने तो इस योजना के प्रकाशित होने के पहले ही इसकी आवश्यकता की ओर 'पेपर्स' (पत्रिकाओ) मे ध्यान आकर्षित किया था।'

'सचमुच किया था क्या ? क्या रिएक्शन (प्रतिक्रिया) रहा उसका ?'

मैं हस दिया। पहले तो जैसा कि 'पेपर्स' के बहुवचनी प्रयोग से ध्वनित हो सकता है, मैंने कई पत्रो मे नही बल्कि एक ही किसी सामान्य-से पत्र के 'युद्धोत्तर कालीन पुर्ननिर्माण' सम्बन्धी विशेषाक के लिए यह

निबन्ध लिखा था और फिर रेल-पथ-समस्या पर नितान्त हिदी मे, जिसकी ७५ प्रतिशत चिकित्सा तो प्रेस के मुद्रको ने कर दी थी और शेष २५ प्रतिशत को पढ़कर समझने वाला माई का लाल हिन्दी की क्षमता में विश्वास ही क्यो करने लगा ! फिर उसका एक्शन (क्रिया) क्या और रिएक्शन क्या ?

मैंने हसकर कहा, 'पसारियो की दूकान पर सौदे के लिए तो वे कागज जरूर सफल हुए होगे।'

'आप तो मजाक करते है। आपके पास तो उसकी कॉपी होगी। देखिए न कोई चीज काम की ही निकल जाए। रेलवे बोर्ड को उसकी एक कॉपी भिजवानी चाहिए।'

मेरी कॉपी, रेलवे के एक अफसर-मित्र जो ऊपर कहे हुए २५ प्रतिशत मे से हैं, कुतूहलवश हिन्दी शब्दो का लीला-विन्यास देखने के लिए ले गए थे। कुछ शब्दो की अभ्यर्थना के साथ-साथ वे कुछ विचारो की भर्त्सना भी शायद करना चाहते थे पर उसके पहले ही उन्होने कहा कि वह प्रति ही कहीं नही मिल रही है। चलो छुट्टी हुई।

'स्टाफ-अरेजमेट (कर्मचारियो की व्यवस्था) के बारे मे आपने क्या सुझाया था ?'

'वह कोई विस्तृत योजना नही थी। रेलवे की प्रस्तुत अर्थनीति, तथा दर-प्रणाली पर कुछ आलोचना थी और फिर युद्धोत्तरकालीन पुनर्योजना के लिए कुछ विचार !'

'कुछ तो आप वैसे भी सोचते होगे ?'

'क्यो नही !—कुछ ही क्यो, बहुत कुछ। परन्तु आप तो जानते ही हैं, यह विचार कई दृष्टिकोणो से किया जा सकता है। और वे दृष्टिकोण परस्पर विरोधी भी हो सकते है।'

'जैसे ?'

'योजना की दृष्टि ही से लीजिए, तो व्यय के विपुल और दुहरे भार को कम करना ही इस योजना का सबसे पहला दृष्टिकोण है। यदि यह

बात स्वीकार कर ली जाए तो इससे समस्त दुहरे कर्मचारियो को छुट्टी दे देना पहला आवश्यक और वांछनीय कदम होगा, पर कर्मचारियों की दृष्टि से कौन इस तरह सोचेगा ?'

'सो तो है ही, स्टाफ के इटरेस्ट्स तो सेफगार्ड (कर्मचारियो के स्वार्थो की रक्षा) करने ही पडेगे !'

'स्वार्थों की रक्षा ही तो समस्त झगडो का मूल है मित्र ! यही तो इम्पीरियलिज्म (साम्राज्य-लिप्सा) है ! स्वार्थ किसके ? व्यक्ति के या समाज के ?'

'पर वह व्यक्ति हमी तो हैं !'

'यह 'हम' है क्या ?—'मैं' की भूख का बडा सस्करण मात्र। यह 'हम' 'सब' का पर्याय तो नही कहा जा सकता ?—क्या इस 'हम' के अतिरिक्त राष्ट्र मे और कोई नही है ? तब उनका क्या होगा ?'

'उनके बारे मे राष्ट्र सोचेगा !'

'और रेलवेज़ को भी राष्ट्र ही ले रहा है, रेलवे-कर्मचारी नही !'

हसकर धर्मप्रकाश ने कहा, 'तो आप रेल-कर्मचारियो की बेहतरी के हिमायती नही ?'

'उनकी अनन्य (एक्सक्लूसिव) उन्नति का नही। और मैं आपको विश्वास दिला सकता हू कि कर्मचारियो की उन्नति मे किसी तरह का विघ्न कभी पैदा ही न होगा। इस लिफाफे मे हमारे दर्देसर का मजमून बिल्कुल ही दूसरा है।'

'वह कौन-सा ?'

'यह चिन्ता है अधिकारी वर्ग की। इन बडे-बडे हाथियो का व्यय राष्ट्रीय सरकार वहन नही कर सकती। छोटे कर्मचारियो की हित-रक्षा की आड़ मे वे अपनी ही हित-रक्षा करना चाहते हैं। यह आप खूब समझ रखिए।'

'यह आप कैसे कहते हैं कि कर्मचारियो के हित की रक्षा आप से आप हो जाएगी ?'

'इसलिए कि वे मुफ्त की तनखा नही लेते। छ घण्टे की जगह दस घण्टा प्रतिदिन काम करके भी उनके भार का कभी अन्त नही आता। और जब अन्त आता है तो उनके कार्य का नहीं, बल्कि उनके कार्यकाल का। उनको तो लाभ ही होगा महाशय, सचमुच का लाभ; किन्तु ये मुफ्त के खाने वाले हाथी यह होने दे तभी न!'

यह मैं जानता था कि मेरे कथन मे व्यग्य भी था, पर उन्होने कहा :

'पर अधिकारियो से आपको ऐसी आशका होने का कोई पुष्ट प्रमाण है ?'

'पुष्ट प्रमाण अधिकारी कभी मिलने देगे ?'

हसकर धर्मप्रकाश ने कहा, 'आप इस वर्ग के प्रति प्रेज्यूडिस्ड (पक्ष-पाती) हैं!...'

मैंने भी हसकर कहा, 'और इस मनोवृत्ति को अधिकारियो की भाषा में 'कम्यूनिज्म' कहा जाता है।'

'तो यह कोई सच से दूर तो नही!'

'नही, बल्कि इसकी निकटता की प्रतीति भी अधिकारियो की कृपा से कर्मचारियो को प्राय हो ही जाया करती है। एक क्लर्क कुतूहलवश एजिन पर चढ गया, तो अधिकारियो को उसकी इस क्रिया मे आतक की गन्ध मिल गई—उनकी लम्बी नाक इसी गध को पहचानती थी, स्थान-काल-पात्र मिल गए, सिद्ध योग का अवसर आते ही, बेचारे का मुक्ति-योग हो गया! तब भी क्या इसे उनकी दूरदेशी नही कहा जा सकता ?'

'किन्तु इन अधिकारियो के सहयोग के बिना भी क्या कर्मचारी उन्नति कर सकते हैं ?'

'यही तो अधिकारियो की दुर्गम व्यूह-रचना का प्रमाण है! बेचारे कर्मचारी को अधिकारी की कृपा की भीख के सिवा चारा ही क्या है? उसके प्रतिनिधियो तक को तो अधिकार खरीद लेता है!'

'पर यह क्या कर्मचारी का दोष नही ?'

'दोष तो सदैव ही उसका है! राजा तो कभी गलती करता नही!

आपको भी तो अपनी स्थिति दृढ करने के लिए दो-दो कीमती बलिदानो की व्यवस्था करनी पडी थी ! बेचारे कर्मचारी नही जानते कि महात्मा गाधी द्वारा प्रचारित अनशन और सत्याग्रह के नुस्खे विदेशियो पर ही प्रभावशील होते हैं, स्वदेशियो पर नही !'

आघात कुछ तीव्र हो उठा था, और व्यक्तिगत भी। बात यह थी कि नये व्यवस्थापक के प्रति भी इन्होने एक स्थिति मे विद्रोह किया था। आख की शर्म दोनो ही दलो को न थी, अतः बडी मछली छोटी मछली को निगल जाने की परिस्थिति मे आ गई। तब इन्होंने अपने दल के अनुचरो का अपने ही हाथो गला काटकर अपनी स्थिति काबू मे की थी। इस संकेत से उनको रोष हो आना स्वाभाविक था, अतः मैंने हसकर कहा :

'देखिए विवाद मे व्यक्ति कितनी जल्दी अपने को भूल जाता है। विचार की दुनिया, क्रिया की दुनिया से भिन्न होती ही है। लेकिन मेरा इरादा आपके प्रति आक्षेप का न था, आशा है कि आप बुरा न मानेगे !'

'ना, ना, मै पूरी तरह आपका मतलब समझता हू। और मेरे इस समस्त विवाद का मूल भी आपके भविष्य के बारे मे ही है ! आप अपने लिए क्या सोचते है ?'

मुस्कराकर मैंने कहा, 'आप लोगो के होते हुए अपने बारे मे कुछ सोचने की मुझे आवश्यकता ही क्या है ?'

'समझ लीजिए, इसीलिए मैं आपसे पूछ रहा हू।'

'पर इसकी आवश्यकता है क्या ?'

'सो क्या आप नही जानते ?'

जानता मैं क्यो न था !—एक दूसरे विभाग का निर्माण हो रहा था, जिसका कार्यक्षेत्र, मेरे कार्यक्षेत्र ही को अन्तर्भुक्त करता था। आवश्यकतानुसार धुरीण-पुरीण मैं था ही, उन्नति की जगह थी, और कोई कारण न था कि वह मुझे न मिलती। पर मैंने अनजान बनते हुए कहा, 'नही तो !'

'मै समझता था आपको मालूम है ! आपके अधिकारी ने आपसे नही कहा ? चूकि आपके वर्तमान विभाग को इस नये विभाग मे अन्तर्भुक्त किया जा रहा है, कही आप सरप्लस (अनावश्यक) बता न दिए जाए !'

'क्यो क्या ऐसी बातचीत चल रही है क्या ?'

'आप तो इन लोगो को जानते ही हैं, ये लोग कुछ भी कर सकते है ।'

'पर मुझे ये विस्थापित तो नही कर सकते ।'

'पुनर्वास की व्यवस्था भी तो की जा सकती है ?'

चिन्ता होना स्वाभाविक है । आशा थी उन्नति की, और लक्षण प्रकट होने लगे उल्टे ! लेकिन धर्मप्रकाश की नस पहचानता हू, छिपे हुए ताशो से वह कई खेल खेला करता है । मैंने सफलतापूर्वक अपनी उदासीनता प्रकट होने दी ।

कुछ देर के बाद वे ही बोले, 'यह कमलनयन कैसा लडका है ?'

'कौन जोशी ?'

'हा, जूनियर जोशी ! आजकल नरवरोत्तम तो यहा है नही ! कर्मचारियों के परिचय-पत्र यही तैयार कर रहा है ।'

'आपका मतलब है, हम लोगो का भाग्य उसीके हाथ है !' मुस्कराकर मैंने कहा ।

'एक दर्जे तक !'

'तो मैं कहूगा कि हमारे सर के ऊपर की तलवार गलत हाथो थमाकर आप निश्चित हो उठे हैं ।'

'पर कमलनयन तो उतना बुरा नही मालूम देता !'

'वह तो दूसरे के हाथ मे कलम मात्र है !'

'तो फिर उसे दोष क्यो दिया जाए ?'

'इसलिए कि यह कार्य किसी कलम मात्र के करने का नही, बल्कि दिमाग वाले हाथ का है ।'

'पर कमलनयन क्या सचमुच एक कलम मात्र है ?'

'देखिए, आदमी की पहचान मेरी जरा कमजोर है, परन्तु अब तक

मेरी यही धारणा बनी है !'

'आपको तो मालूम होगा कि पर्दे के भीतर वह क्या खेल करता है ?'

मैंने हसकर कहा, 'जो उस समय पर्दे मे हो, उसे ही तो मालूम होगा !'

'सो तो है, पर पर्दे के भीतर जा सकना भी क्या कम है ?'

'बाहर रहने वाला उसे कैसे बता सकता है ?'

'उडिए मत मिस्टर ! उस रात को तो आपने बेचारी को पकडा ही दिया था !'

'मैने ? कहते क्या है आप ?' मैंने दृष्टि उठाई; शैतानी से भरी उसकी आखो को पकडकर मैंने भी कहा—'उडे आप भी तो कम नही !'

जहा तीर जाकर बैठा, वहा का मुझे लक्ष्य न था। धर्मप्रकाश समझे कि उस रात को उनकी उपस्थिति के बारे मे मुझे कोई शका न थी, यद्यपि मेरा केवल अनुमान ही था।

धर्मप्रकाश ने कहा, 'न उडता तो क्या होता ?—वह चीख भी तो उठी थी !'

'आपने जल्दी की। कुछ धैर्य से काम लेना चाहिए था। जोशी तो आपके हाथ मे है ही !'

'और आप ?'

हसकर मैंने कहा, 'मैं इस भूमिका मे हू ही कहा ? आग जाने, लुहार जाने।'

'तो फिर आप उस खिडकी मे इतनी रात गए क्या कर रहे थे ?'

'खटमल और मच्छरो के खिलाफ जिहाद बोलना चाहता था !'

'अधेरे मे ?'

'मेघदूत की कृपा का भरोसा करके ! और यदि आपको यकीन न हो तो आपकी इच्छा !'

'नही, नही, यकीन क्यो न होगा ! अच्छा, एक मदद तो आप कर सकेंगे ?'

'फरमाइए।'

'जब कि आप सब बाते जानते ही है—देखिए यदि आप कुछ सहायता न कर सके, तो कम से कम इसे जाहिर तो न होने दें; और मैं आपके केस को बनाने की कोशिश करूगा।'

'यानी यदि मैंने यह न किया, तो मेरा केस बिगड जाएगा ?'

उठते हुए मैंने कहा, 'व्यर्थ की बातो मे दिलचस्पी लेना न तो मेरा शौक है, न धन्धा ही। आज के इस कष्ट के लिए धन्यवाद।'

और हाथ मिलाकर मैं बाहर हो लिया।

५

शनिवार का दिन दफ्तरो मे बड़े महत्व का होता है, इतने महत्व का कि रविवार का महत्व भी उसके सामने क्षीण है। इस दिन कार्य कही एक बजे, कही डेढ बजे और कही दो बजे, अपराह्ण के लिए बन्द हो जाता है। मित्र लोग पूर्वाह्ण मे मिलते हैं, और सन्ध्या के लिए सामाजिक कार्यक्रमो की योजना बनाते है—दूसरे दिन रविवार का पूर्ण अवकाश होता है, अत ऐसे कार्यक्रमो को गहरी रात्रि तक चलते रहने वाला बनाए रहने मे कोई विशेष बाधा नही होती। और कुछ न हुआ तो किसी उपाहारगृह मे अच्छी-खासी चाय-सभा और फिर चित्र-गृह का कोई फडकता हुआ 'चित्र'—ये तो हो ही जाते है। इतवार के पूर्णावकाश मे कोई सामाजिकता नही होती, रगीनी तो हो ही कहां से ! यदि कभी इतवार की योजना उपस्थित की जाती है तो सभी अपनी गृहस्थी की आवश्यकताओ का राग छेड बैठते हैं। किन्तु शनिवार के सक्षिप्त सुन्दर कार्यक्रम में कोई बाधा उपस्थित नही होती। उत्साह के प्राचुर्य और समय की क्षीणता के बीच कार्यक्रम की मोहकता बढ ही नही

जाती, उसकी धारा भी बडी क्षिप्र हो उठती है ।

शनिवार की ऐसी ही दुपहरी का प्रारम्भ था । यो सप्ताह के दिनो मे मध्यान्तर एक बजे से डेढ बजे का रहता है, आज डेढ बजे छुट्टी हो जाती है, अत. मध्यान्तर नही होता, किन्तु मध्यान्तर की वृत्ति तो बन ही जाती है । एक बजते ही नियमानुसार दाल-सेव, चाट-दहीबडे, आलू-कचौडी या फल-फूल आदि के कई सडे-गले, भले-बुरे खोमचे इकट्ठे हो जाते हैं, और बाबुओ का भूखा समुदाय, कैद से छूटे कैदियो की भाति टूट पडता है उन खोमचो के ऊपर; और फिर सडा-गला खाद्य-अखाद्य पदार्थ खाकर कभी बवासीर, कभी कब्जी—ऐसे ही किसी रोग को पाल लेता है ।

किन्तु यह बात है उन बाबुओ की, जो इस जमाने मे पचपन रुपया मासिक वेतन और पैंतीस रुपया मासिक महगाई के सूत्र द्वारा अपनी गाडा भर गृहस्थी की समस्त टीका सम्पन्न करते है, फिर दस से एक बजे तक टेबल के कागजो मे आखे गड़ाते रहने के बाद भी जब कागजो के पहाड का अन्त नही दिखाई देता, तो हारकर वे आठ-दस पैसे के श्राद्ध पर थोडा-बहुत 'रिफ्रेशमेंट' (स्फूर्ति) प्राप्त करने की चेष्टा करते है, इस मृग-तृष्णा के पीछे यदि कही बवासीर की बीमारी ही छिपी हो, तो किसे दोष दिया जा सकता है ? —पर यह इतिहास सदैव से इसी तरह तो चला आ रहा है ।

इनसे ऊचा समुदाय, जिसे हम उच्च-मध्यवर्गीय कहा करते है और जो स्वय भी इसी नाम से अभिहित होना पसन्द करता है, पचपन-तीन-अस्सी की सतह से काफी ऊचा है, वह डेढ सौ-ढाई सौ से लगाकर चार सौ तक के वेतन-स्तर का भाग्य और अभाग्य के बीच डूबता-उतराता रहता है । यह समूह एक प्रकार से सोशल-स्नॉब (सामाजिक बौडम) है । सचमुच मे जो इन व्यक्तियो को प्राप्त हो चुका है, उसके लिए ये अनुपयुक्त है, किन्तु जो इन्हे प्राप्त नही हो सका, उसके लिए अपने आपको सर्वथा उपयुक्त समझते हैं । ये सवेरे छ बजे ही

नीद से निवृत्त होने पर भी, बिस्तर से आठ बजे से पहले निवृत्त होना नही चाहते। शैया-पान—बेड-टी—के रूप मे एक प्याला चाय, उसके बाद सिगरेट के धूम्र-शोधन के साथ शौच-निवृत्ति, नौ बजे तक सेवन-ओ-क्लोक की सहायता से श्मश्रु-निरसन फिर जुकाम के भय को दूर रखने के लिए ज्येष्ठ के दिनो मे भी उबलते हुए जल से स्नान, और समय के अभाव की घोर शिकायत करते हुए चाय-पान और प्रातराश, जल्दी-जल्दी मे सूट पहनकर टाई को बिना बाधे ही गले मे लटकाकर भागते-भागते दफ्तर पहुचना पडता है इन्हे, कभी-कभी दस-पन्द्रह मिनट की देरी के लिए, यदि कभी साहिब दफ्तर जल्दी आ गए तो, मृदु फटकार भी पचानी पडती है।

दुपहर मे साहब के लच पर जाते ही, आप भी घर पर 'लच' के लिए जाते हैं, चेष्टा करते है कि भारतीय खाना भी पाश्चात्य ढग ही से खाया जाए, चीनी की तश्तरियो मे छुरी-काटे की सहायता से। फिर कुछ थोडा विश्राम करके साहब के लौटने के पहले ही दफ्तर पहुच जाते है। शाम को पाच बजे दफ्तर ही मे घर से 'आफ्टरनून टी' आती है, चूकि दफ्तर मे आती है, इसलिए आवश्यक है कि साहबाना ढग से हो, फिर दो-चार मनचले मातहत क्लर्क जरा लल्लो-चप्पो करके शरीक हो जाते है। बाबू साहब की जगह उन्हे 'साहब' शब्द से सबोधित करने मात्र से बहुतेरी बाधाए नष्ट हो जाती है। अच्छी बढिया चाय, कभी-कभी काफी भी, और बढ़िया इगलिश बिस्कुट, कभी सूखा मेवा आदि का प्रसाद अनायास ही प्राप्त हो जाता है। साढे छ. बजे घर लौटने पर फिर एक प्याला चाय, यदि जल्दी आ गए तो टेनिस, और रात को नौ बजे 'डिनर' खाकर बारह बजे तक गप्पे लडाकर पडे रहना—कभी-कभी 'ड्रिक्स' आदि भी। गृहस्थी के एक जीवन पर इतना भार!—पर यह तो चादर का एक ही कोना है।

दूसरे कोने पर आया-नौकर, घर मे भर्ती का फर्नीचर, रेडियो, फूलदान, उगालदान, बे-शुमार कपडे, कॉस्मेटिक्स—बाहर कही गए तो

टैक्सी या तागा; सिनेमा गए तो दो-चार दोस्त पीछे लगे हुए, और फिर 'बॉक्स' से कम मे कैसे बैठा जाए ?—यदि श्रीमती जी ने सहयोग दिया तो फिर क्या पूछिए !—यह सारा खर्चा चलता है दो सौ-ढाई सौ मासिक पर।

श्री भटनागर इसी वर्ग का प्राणी बनने का प्रयत्न कर रहे है। उनकी पत्नी श्रीमती कमला भटनागर भी इसी साचे की है, हैं क्या, बल्कि भटनागर ने उन्हे ऐसा ही बना लिया है। शनिवार को वे सिनेमा देखने जाया करते है, रात्रि का अन्तिम शो देखने, पर आज भटनागर बाहर है, अतः कमला 'मैटिनी' देखने गई है, और उनका नौकर दादू आज फुरसत से है।

दुपहर मे दफ्तर खाली होता जा रहा था; चपरासी गण खोमचे वालो से दाल-सेव, कचौडी आदि लेकर एक ओर दफ्तर के पीछे बगीचे मे बैठे गप्पे हाकते हुए सह-भोज कर रहे थे, कि तभी एक ओर से कटे हाथ का दादू भी आ पहुचा।

चपरासियो की इस जमात मे किशन विदूषक है। वह है भी सबसे बडे साहब का मुहलगा अर्दली। बोला—'आओ जी कबन्धराम !—लहगे की छाया से कैसे भाग आए ? कही चरने की छुट्टी तो नहीं है आज ?'

दादू बहुत कुछ नही समझ सका। पर जब अन्य चपरासी हसने लगे तो उसने सोचा कि कदाचित् व्यग्य उसके नाम को लेकर उसीके ऊपर है, तो बोला :

'मेरा नाम तो दादू है भाई !'

'उसके जादू से हम भी बेखबर नही है दादू !—बैठो भी ! आज उस चमक चन्दा ने तुम्हे छुट्टी कैसे दे दी ?'

दादू भी उस गिरोह मे एक ओर बैठा गया। उसके सामने लगते सब पिद्दो जैसे थे, जब बैठा तो सचमुच मानो किसी गुफा के मुह पर एक बडा भारी पत्थर पटक दिया हो।

'कमल बाबू है बडा खुशकिस्मत यार ! किशन ने कहा ।

रामू ने बाईं आख का कोना दबाकर कुछ रहस्य व्यक्त किया और बोला, 'हम और तुम एक जैसे है दद्दन !—हमारा साहब भी सलीमा देखने गया है ।'

रूपसिह ने कहा, 'मगर तेरे साहब कभी पैसा खर्च करके सनीमा देखते है ?'

'मौका मिलने पर अपना ही नही, दूसरो का टिकिट भी वे ही खरीदते है ।'

'और मेम साहब ?' हरपाल ने पूछा ।

'वे तो उनसे भी पहले अपनी सहेली के यहा गई है ।'

'और बच्चे-कच्चे ?'

'वे यही खेल रहे हैं !—देखो न, वह लौंडा मिट्टी मे लेट रहा है, बस इधर-उधर देखेगा और एक मुट्ठी मुह मे—बहुत मिट्टी खाता है ।'

'तो तुम्हारा क्या लेता है ?'

किशन ने कहा, 'इनके ही लौंडे इनका नहीं लेते तो दूसरो के लौंडे इनका क्या ले लेंगे !—पर यार रामू ! यह तुम्हारी सफेद भैस इन कलैण्डरो को अपने साथ क्यो नही रखती ?'

'अरे शरम जो लगती है !—क्या करे बेचारी, कुदरत पर बस नही चलता । वरना रोज भगवान को कोसा करती हैं कि अगर आया दूध पिला सकती है तो जन क्यो नही सकती ।'

'जन भी सकती है, बशर्ते कि बगल खाली की जाए !'

रामू ने कहा, 'सो कैसे हो ? उनकी बगल खाली रह ले, पर अपनी कैसे रहे ?'

दादू कुछ समझता, कुछ न समझता, दाल-सेव के एक-एक दाने से बीतता हुआ समय गिन रहा था ।

रामू ने कहा, 'मेम साहब एक रुपया उगल गई थी कि बच्चो को कुछ लेकर खिला देना । बच्चे मिट्टी खा ही रहे है—क्या हर्ज है, बड़े

आदमियो के बच्चे हम छोटे आदमियो की देख-रेख मे थोडी धूल ही फाक लिया करे !—ले किशन, यह अठन्नी ले, दाल-सेव ले आ !'

'कितने रोज़ बना लेता है रामू इस तरह ?'

'अपने कौन लहगा पसारे पीछे बैठी है कि इसकी फिकर करे—यहा तो मिला सो उडाया !'

किशन चला गया, तो हरपाल ने रामू से पूछा, 'तू तो जानता होगा रामू, सच बताएगा ?'

'झूठ बोले मेरी जूती ! किसीसे डरता हू ?'

'तेरे सा'ब और दादू की बबुआइन मे साठ-गाठ की जो अफवाह है, वह सच है ?'

'इस कबन्धे से पूछ न ! यह जानता होगा, दरवाज़े पर पहरा तो यही देता है !'

पार्टी मे बैठकर भी दादू पार्टी से अलग था। बहरा वह नही था, किन्तु जब तक कोई बात उसीको न कही जाए, उसे सुनने की गरज न होती, सुनकर समझना उसके लिए और भी दूर की बात थी। फिर, जो बात उसे सुना दी गई है, उसीसे उसे मतलब है, उसके पहले का पाठ साफ हो चुका होता है। उसका मन कागज का पुलिन्दा नही, कि एक के बाद एक लिखते चले जाइए, सब कुछ, साफ या धुधला बना रहेगा; वह तो बच्चो की स्लेट है, दूसरा पाठ देने के लिए पहले पाठ को साफ कर लेना पडता है। और इन भिन्न-भिन्न सूत्रो को जोडकर एक सगत-किस्सा बुन लेने की उसकी क्षमता भी सीमित है।

हरपाल ने कहा, 'किशन आ जाए तो वही पूछेगा। इस हब्शी से उलझे कौन ?'

किशन आया तो रामू ने कहा, 'अरे कुछ बीडी-वीडी भी ले आया है, या बुद्धू ही रहा ?'

'तेरे जैसे पराए-पाकिट पर नही रहते बेटा ! यह देख, पीते है तो पास रखते हैं। असली केसरी छाप है ! यही नही; पान तक खिलाऊगा

तुम्हे जिगर !'

दाल-सेव फिर बाटी गई। इसी बीच हरपाल ने किशन से धीमे-धीमे दादू से क्या पूछना है, सो सारी बात बता दी।

किशन ने कहा, 'तुम्हे क्या मतलब है इन बातो से !—और रमुए ! तेरे ससुर का माल तो है नही ! जिसका माल है, उसकी खुशी है, चाहे जिसको दे, और चाहे मुफ्त दे !—क्यो भाई दादू ! सच कहता हू न।'

दादू ने सिर हिलाकर कह दिया कि किशन की बात ही ठीक है।

रामू ने कहा, 'बेचना ही हो तो बाजार लगाकर क्यो न बैठे !—जिसकी कमर मे जोर होगा, वही खरीद लेगा। कीमत भी भरपूर मिलेगी !—क्या कहते हो जी दादू ?'

'ठीक कहते हो, कीमत भी पूरी मिलेगी !'

हरपाल ने कहा, 'बेचने न बेचने की तो बात ही कहा है !' हरपाल ने दादू की ओर देखा।

'नही है, कोई बात ही नही है !'

'तो तुम्ही बताओ न दादू, बात क्या है ?'

दादू ने कहा, 'इस दाल मे कुछ मिरची ज्यादा है !'

किशन ने कहा, 'खाक ज्यादा है !—अरे काला है, इसमे काला !'

'हा-हा, देखो यह है जला हुआ !'—कहकर जली दाल का काला टुकडा उसने सामने रख दिया।

'जला हुआ दाल का टुकडा नही, जला हुआ दिल, और उसका सौदा; सवाल है, वह किसको बेचा गया और क्यो ?' किशन ने कहा।

तब दादू ने समझा कि बात उसीसे कही जा रही है ! होठो पर चिपक जाने वाली नमकीनता को जीभ से चाटकर वह बोला, 'किसका दिल ?'

'तेरी मालकिन का और किसका क्या ?'

'वो तो आज सलीमा देखने गई हैं।'

'जरूर दिल लेकर गई होगी, लेकिन लेकर लौटेगी भी ?'

'कहा है कि शाम को कुछ देर हो जाए तो घबराना मत ! वही से अपने रिश्तेदार के यहा शायद चली जाए। रात को देर भी हो सकती है !'

'तुम साथ नही गए ?'

'उन्होने कहा जरूरत नही है। घर पर भी कोई था नही !'

'हा ! हा ! सो तो ठीक है। घर पर तुम रह गए !'

किशन ने कहा, 'अकेली सिनेमा जाते उन्हे डर नही लगता ?'

'डर कैसा ? दिन का वक्त है ! कोई खाता थोडे है !'

'सच कहते हो दादू, हमारे साहब भी तो अकेले ही देखने गए है। उन्हे भी कोई खा नही सकता !'

किशन ने कहा, 'तब तो पौ-बारह है रामू !—दो जब मिल गए है, तो उन्हे कोई खा नही सकता। और यही क्या ठीक है कि वे सिनेमा देखने ही गए हो। सिनेमा देखने की बनिस्बत अगर सिनेमा करने का मौका मिल जाए तो कौन छोडेगा ?'

दादू कुछ समझा नही; बोला, 'तुम तो पागल हो किशन !—सलीमा कही आदमी करते होगे !—अरे वे तो सब तस्वीरे है तस्वीरे !—मालकिन कहती थी !'

'जरूर कहती होगी ! तू भी तो एक तस्वीर है दादू !—अच्छा यह बता, तेरा दिमाग कितना बडा है ?'

हाथ लगाकर दादू ने बता दिया।

'यह तो खोपडा है, हड्डी, समझा न ? दिमाग कहा है, मालूम है ?'

रामू ने कहा, 'खोपडा हो तो भी क्या कम है ? अच्छा दादू, इस किशन की बात तो रहने दे, मेरी बात बता।'

'पूछो !'

'तेरी मालकिन तुझे अच्छी लगती है ?'

'बहुत अच्छी !'

'कुछ मिलता भी है ?'

'बहुत कुछ ! आज भी जब सलीमा देखने गई, तो मुझे अठन्नी दे गई ।'

'वह सामने वाला कमल बाबू भी तुझे कुछ देता है ?'

'वह भी बहुत अच्छा आदमी है । उसने भी मुझे होली का एक रुपया इनाम दिया था ।'

'और तेरी मालकिन के लिए चिट्ठी-विट्ठी भी दी थी या नही ?'

'मुझे क्यो देने लगे ?—वे खुद ही आकर नही दे सकते ?—आमने-सामने ही तो घर है । चिट्ठी वे तो नही देते ।'

'फिर कौन देता है ?'

'दफ्तर से बडे बाबू देते है । कहते हैं, तुम्हारे बाबू की चिट्ठी आई है, मालकिन को दे देना !'

''अच्छा ।—क्या डाकघर की मुहर होती है उसपर ?—टिकस वगैरा रहता है उसपर ?'

'नही !—कहते है, वह उनके खत मे ही आई है ।'

किशन ने कहा, 'तो दादू, एक बात कहू ?'

'कहो न !'

'तेरी मालकिन मे और बड़े बाबू मे आशनाई है ?'

दादू ने आखे ऊची उठाई, पहली बार; बोला, 'क्या कहा ?'

बैठे हुए सभी व्यक्ति डर गए । दादू का दैत्याकार शरीर, उसपर अग्नि-स्फुलिग-सी चमकती हुई आखे, यदि वह केवल एकाएक किसीपर गिर भी पडे, तो सडक पर पडे हुए पत्थर को स्टीम के रोड-रॉलर का अनुभव दुहराना पडे ।

रामू ने कहा, 'दद्दा, आशनाई का मतलब जानते हो ?'

हरपाल ने कहा, 'रईसपना कहते हैं उसे ! हमारे बडे बाबू भी रईस तबियत हैं, और तुम्हारी मालकिन भी रईस-तबियत । तुम्हे अठन्नी मिली है, तो रामू को एक रुपया मिला है आज !'

किशन ने कहा, 'और रईस-रईस मे ही तो तबियत मिलती है

'और तबियत मिली कि फिर पूछना ही क्या ! सिनेमा-होटल-पैसा-रुपया यहा तक कि जान तक कुर्बान !—इसका नाम है आशनाई मिस्टर दादू !समझ गया ?'

और रामू के कहने के ढग से सभी हस पडे । न हसा केवल दादू ।

किशन ने कहा, 'देख, बडो की बातो का क्या ?—हम तो अपनी बातें करे ! हमने सुना कि मालकिन को आदमी की जरा अच्छी पहचान है ! कही हमारी टिप्पस भी लड सकती है ?'

रामू ने कहा, 'दस रुपये अपनी तरफ से कुर्बान ।'

किशन ने कहा, 'पाच रुपये तुम्हारी फीस दादू ।'

हरपाल ने चुटकी काटी, 'तो क्या दादू को भड ुवा समझ लिया है तुम लोगो ने ?'

—कि हरपाल के मुह पर एकाएक बिजली गिर पडी, उसे काले-पीले दिखाई देने लगे । जिस शब्द का उच्चारण किया गया, वह इतना सामान्य था कि दादू के लिए समझने मे कोई कठिनाई नही हुई । शब्द जहा से सकेत करता था वहा से उसे सरोकार न हो, पर जहा तक सकेत कर सकता था, वह बिन्दु उसके लिए असहनीय था, इसलिए हरपाल ने जब लाल कनपटियो के बीच झुलसा हुआ रुआसा मुह ऊपर उठाया, तो गाल पर उगलियो के नीचे निशान उभर कर मानो उसी शब्द का लिखित रूप प्रस्तुत करने लगे । सभी उपस्थित लोगो के मुह पर हवाइया तैरने लगी ।

दादू का डरावना चेहरा और अधिक भयानक हो गया था । दोनो भवें, दो खांडो की तरह आपस मे उलझकर टूट पडने के लिए बल खा रही थी, नाक सिकुडकर ऊपर खिच रहा था, जिससे फैले हुए नथुने और भी फैलकर गुफा के मुह के समान काप रहे थे, और काले पडे हुए मोटे सूखे ओठ बाहर निकलकर और भी गहरे हो जाना चाहते थे । दृष्टि मे उसकी घृणा छिपी हुई थी । उसके काले चेहरे से मानो आग के दो अगारे झपक रहे हो ।

फुकार-सी मारते हुए उसने कहा, 'मुझे चाहे जो कह लेना, मगर

मेरी मालकिन या मालिक को कुछ कहा—रोजी की कसम,—एक-एक को दफना दूगा।'

हिम्मत करके रामू ने कहा, 'पर तुम कुछ समझ भी हो या यों ही....'

'भडुवा होगा यह हरपाल, और इसका बाप इसकी मा का।' और वह उठ खडा हुआ, क्रोध से उसका मुह काप रहा था, शब्द निकलना मुश्किल थे।

किशन ने कहा, 'दादू, कोई तुम्हारा राज है, सो चाहे जिसको...'

दादू ने आखे फिराई, तभी किशन सहम गया, और जब दादू ने कहा, 'टिकाऊ एक झापड...'

रूपसिह ने हाथ जोडते हुए का, 'दादू दादा, चलो, चलो, यह तो सब पागल है! चलो · ' और करीब-करीब हाथ पकडकर वह उसे दूर छोड आया। दादू घर चला गया।

हरपाल का हाथ पकडकर रामू ने पूछा, 'क्या चोट ज़ोर से लगी है ?'

'देखते नही ?—नीली नसे उभर आई है।' किशन ने कहा।

'सारा गाल झनझना रहा है रमुए! यह सब तेरी वजह से हुआ। मौज तेरा बाप वहा सिनेमा मे उडा रहा होगा, और चाद हम सहला रहे है यहा!' हरपाल ने कहा।

'तो बचुए, जब हम दस और पाच से दादू को पूजा करना चाह रहे थे, तो तुमने उसे खिताब कहा से दे डाला ?' रामू ने कहा।

किशन ने कहा, 'पर खिताब रहा खूब!—यही रख दो उसका नाम!'

रामू ने कहा, 'मालूम पडता है तेरे गाल पर भी खुजली चल रही है!'

'चल तो रही है पर '

रूपसिह ने पूछा, 'पर ?'

'उस खुजली को किसीके नरम-नरम ओठ '

'वाह बेटे·· ' सभी हस पडे, हरपाल के मुह पर भी मुस्कराहट

फैल गई। रामू ने कहा, 'पर इस कबन्धे की इतनी मजाल कि वह हाथ छोड बैठे ?—इसका बदला तो लेना ही होगा।'

हरपाल ने कहा, 'देखे तुम्हारी मर्दानगी, क्या बदला लोगे ?'

रूपसिंह ने कहा, 'किशन के गाल की खुजली मिट जाएगी ?'

रामू ने चुटकी बजाकर कहा, 'देखूगा···नौकरी बडे बाबू के पास करता हूं, भाड नही झोकता। भाड भी झोकता होता तो, इसके उसी हाथ को झुलस देता !'

किशन ने दूर देखकर कहा, 'अरे देखो तो, वह तो वापिस लौटता दिखाई देता है।'

रामू ने ही शेखी मारी थी, उसका दिल धडकने लगा, पूछा, 'कहा ?'

'वह देखो '

हरपाल सिंह अपनी पहले की वेदना भूल गया, बोला, 'उजड्ड है साला, फिर कही मार-पीट करने लग जाए। भैसा है भैसा, जगली; दया-माया नो है नही। चलो भागो, यहा से, इधर से।'

और जैसे ही वह उठा, सब उसके पीछे, दूसरी ओर से झाडियो की ओट होते हुए बाहर निकल गए। दादू ने देखा कि कोई नही है, तो लंबी सास लेकर बोला, 'भाग गए साले।'

—और फिर वही पहले वाली जगह पर बैठ गया—बैठ क्या गया लेट गया। शनिवार की सामजिक महत्ता मे वह एकाकी, अपनी ही शक्ति के बोझ से व्याकुल, नरम दूर्वा को कुचलता हुआ, हाफता हुआ, पड रहा, एक जगली भैसे की तरह ही।

६

कहते है मरते समय रावण की दो कामनाए शेष रह गई थी। एक तो स्वर्ग तक सीढी लगाने की, और दूसरे कल्पवृक्ष को पृथ्वी पर उतार लाने की। उसके बाद फिर कोई रावण पैदा नही हुआ, यद्यपि बिना सीढी के ही अनगिनत महापुरुष स्वर्गारोहण कर गए और बिना कल्प-वृक्ष के पृथ्वी पर अवतीर्ण हुए कई उतने ही महापुरुषो ने चाहा सो किया। यह कहना भी कठिन है कि समय और सुविधा होने पर कल्प-वृक्ष के नीचे बैठे-बैठे स्वर्गारोहण की इच्छा स्वाभाविक है, या स्वर्गारोहण कर लेने पर कल्पवृक्ष की छाया का लोभ! पर जो हो, यह इस युग मे तो सम्भव हो गया है, सिनेमा के द्वारा! आप चाहे तो सिनेमा को रावण कह लीजिए—उसके बीस हाथ है, और दस सिर, उनके बीच मे एक गधे का सिर भी! टिकिट के दाम, सभी प्रकार के लोगो की जेबो के लिए मौजे, बेचो पर बैठिए या बॉक्स मे; सिर पर आपके कल्पवृक्ष की छाया और पैरो मे स्वर्ग को ले जाने वाली सीढी! बीसवी शताब्दि का अन्यतम वरदान, सभ्यता और सस्कृति का एकमात्र निःशेप सत्व। जिसने इस तीर्थ-स्थान मे पैर नही रखा, उसके यौवन की तपस्या व्यर्थ हो गई। अगरु-विनिन्दित गन्ध से बोझिल ताम्रपर्णी की धूम्र-धारा से, जिस अभागे की घ्राण आपूरित न हुई, वह इस युग मे तेज हीन है, 'जुबना के के उभार' पर, श्रवण और दर्शन का इन्द्रधनुषी-समन्वय जिसने परदे पर नही देखा—उसे क्या देखकर हम इन्सान कहे और क्या खाकर यह लेखनी उसको कह जाए! तो, चलिए आप भी, सिनेमा घर मे!

लम्बाई-चौडाई, ऊंचाई-निचाई, रग-ढग, साज-सज्जा, यानी भूगोल एक सिनेमा घर का दूसरे से जुदा हो सकता है, पर उसका इतिहास सब जगह एक जैसा है। और इतिहास-भूगोल की बाहरी रेखाओ के बीच मे खोए जीवन की धारा को तो आप कही बदला नही पाएगे!

परदे पर वही एक क्रिया, परदे के पीछे वही एक मनोवृत्ति ! प्रश्न केवल 'पाच आने जुर्माना और ढाई घटे की कैद' पर ही समाप्त नही हो जाता। परदे पर चित्र नही पडते, किन्तु चित्रो पर परदा पड जाता है, और चलता रहता है शोषण का अरोक चक्र।

आप बॉक्स की ओर चलिए। नये आदमी है, यदि कही सिनेमा की घिसी-घिसाई क्लासिकल-टेकनीक से 'लडका-लडकी से मिला' वाली विकसित कहानी आपकी रुचि को न छू सकी, तो बाक्स मे आपकी रुचि ही कुछ और छू सकेगी ! यो तीसरा पहर है, पर यहा अधेरा है, अधेरा न हो तो तमाशा नही दिखाया जा सकता। बैठके अच्छी है, नीचे छल्ले लगे है, ताकि बैठते ही दर्शक उछल जाए। इस उछल-शक्ति (स्प्रिग ऐक्शन) का इस युग मे बडा महत्व है, पर अभी तो चित्र देखिए !

ये जो सज्जन इधर बैठे हैं, चित्र देखने उतना नही आते, जितना समय बिताने के लिए। स्थान पहिले से ही सुरक्षित है। भीड बहुत होती है, और कोई 'योग्य' पात्र निराश लौटता है, तो ये उसकी सगति का लोभ रोक नही सकते। चाय आदि के प्रारभिक आपानक के चीनी के प्याले से लगाकर यदि आवश्यकता हुई तो काच के प्याले तक की रस्म-अदाई यही पर हो जाती है, और जब बीच ही मे अकस्मात चित्र -प्रदर्शन समाप्त हो जाता है, तो ये लोग उठकर किसी रेस्टरा मे देखे जा सकते है, रही-सही कोर-कसर वहा पूरी कर ली जाती है, और आधी रात के इधर-उधर ये बिछुड जाते हैं। कह नही सकता, घर पर बीवी-बच्चे हैं या नही। होने तो चाहिए ! भारतवर्ष के रहने वाले पर यदि लक्ष्मी की कृपा हो तो बाल-बच्चे न सही, बीवी तो मिल ही जाती है ! वह आधी रात तक क्या करती है ? आप भी तो यही रहते है, यह मुझसे क्यो पूछते है ? लीजिए जनाब, ये एक की बॉक्स तो सब भरे पडे है। अच्छा ही है, हम कोई प्रेमी-प्रेमिका तो है ही नही; चलिए इस खुली बालकनी मे बैठे। तफरीह यहा भी रहेगी, विश्वास दिलाता हू !

जरा धीरे, यह जो आपके सामने बैठे है—सपत्नीक नही मित्र,

स-प्रेमिका कहो । इनका नाम है, हा-हां आप तो जानते हैं, और ये हमारी पडोसिन कमला नटनागर—भई मैं चला ! डरता हू, इन्हीके दफ्तर का आदमी ठहरा, अगर पहचान मे पड गया, तो दोनो तरफ बदरग हो जाएगा । आपको मुबारक हो, सवेरे मिलेंगे, तब कहिएगा कैसी रही !

चित्र शुरू हुआ, सब देखने मे व्यस्त थे । लडका-लडकी से मिला और देखते ही दोनो की आखो मे विद्युत्सदेश प्रक्षरित हो गया । चार बाहें उठी; दोनो के अधर-पल्लवो पर निमत्रण नाच उठा । दर्शको के हृदय धडक उठे, आगे क्या होगा ? सेन्सर का नियम ? उधर तो ठीक है, पर दर्शको मे ?

कमला ने पास बैठे हुए धर्मप्रकाश की ओर अपनी आयत दृष्टि को आरोपित कर दिया । विद्युत्चित्र से प्रतिभासित प्रायान्धकार मे भी धर्मप्रकाश ने उस दृष्टि को ताड लिया । दोनो के अधरो पर ललचाई हुई मुस्कान फैल गई । पुरुष का बाया हाथ नारी की पीठ को घेरकर उसके कन्धे पर आरोपित हो गया । उधर परदे पर खल नायक का प्रवेश हो गया था ।

सास रोके हुए सभी खेल देख रहे थे, केवल पाच आने की नीचे की बेचो पर बैठे हुए कुछ दर्शको ने खल नायक को गालिया देना शुरू कर दिया था । मानो वे गालिया अपने को ही दी जा रही हो, यह सोचकर उनके पडोसी प्रत्युत्तर देना चाह रहे थे । इस चिल्ल-पो से नाराज़ होकर उधर ही से कोई दर्शक अपनी तर्जनी और अगूठे से जीभ को सिकोड़-कर एक सीटी मार बैठा । पास वाले ने कहा 'सुनने क्यो नही देता ?' पडोसी ने भी कुछ कहा—पीछे की सीट पर से किसीने बिना कुछ बोले, जिससे कि किसी भी दर्शक की दर्शन-क्रिया मे किसी तरह का व्याघात न हो, उठकर उसके एक धौल जमा दी । बस, फिर क्या था, अधकार, धर-पकड, उछल-कूद, मार-पीट—सीटियो पर सीटिया ! सभी उत्कर्ण होकर खिलते हुए इस नये गुल को देखने लग गए ! पर वाह रे मशीन मैंन,

फिल्म चलती रही ।

कधे से हाथ बढना शुरू हुग्रा, तो कमला ने उसे अपने हाथो की सम्पुटि मे बन्द कर लिया और कपोलो से सम्पुटि सटा दी; हाथ ने विद्रोह नही किया ।

कमला ने कहा, 'ये लोग न तो देखने देगे और न सुनने ही !'

'देखने-सुनने आता ही कौन है ?'

मुस्कराकर उसकी ओर देखते हुए कमला बोली, 'आप तो जरूर नही आए है ! पर ये लोग तो अकेले हैं !'

'कहा ? बचा हुआ खलनायक का काम नही कर रहे हैं क्या ?'

'लेकिन मैं तो देखने के लिए आई हू !'

'तो देखो न ! और सबक भी सीखो ! सेन्सर है तो वह केवल पर्दे के चित्रो पर, हमारे ओठो पर नही ! अगर मैं अभी भी· '

'नही, नही, यहा नही; मैं हाथ जोडती हू ।' और उसने धर्मप्रकाश का हाथ छोड दिया ।

मुस्कराकर धर्मप्रकाश ने कहा, 'पर तुमने तो जुडे हुए हाथ को छोड दिया ?'

कमला ने कुछ न कहा, केवल उस हाथ को फिर हाथो मे लेकर अपने अधरो से लगा दिया ।

खेल चलता रहा । मध्यान्तर हुआ, चाय मगवाई गई; नीचे पाच आने वाली गैलरी मे अब झगडा न था । जब कि प्रकाश हो उठा था, खडे होकर सभी दर्शक पीछे की ओर जीवित मूर्तियो को देखना चाह रहे थे । किसी-किसीको आश्चर्य हो रहा था कि उसके पास ही जो मूर्ति बैठी हुई है, उसकी उसे कल्पना भी न थी । उत्तरार्द्ध मे वह ध्यान रखेगा, कम से कम उसके भावो का चढाव-उतार तो जासूसी के योग्य होगा ही ।

फिर अधकार हुआ और खेल के चित्र परदे पर थिरकने लगे ।

धर्मप्रकाश ने कहा, 'सीधे ही घर नहीं लौटना है ! मालूम है न ?'

'कहा चलिएगा ?'

'जहा मैं ले जाऊ !'

'बहुत देर तो नही लगेगी ?'

'जितनी लगना चाहिए, उतनी तो लगेगी ही ! रेस्टरा मे सब प्रबन्ध है !'

परदे पर नायक मध्यरात्रि को वृक्ष के सहारे प्रेमिका की खिडकी मे कूद रहा था ।

कमला ने कहा, 'खाना खाने के बाद मै वहा नही ठहर सकूगी !'

'क्यो ?'

'मुझे डर लगता है !'

'पगली !' धर्मप्रकाश ने उसके गालो पर चपत लगाते हुए कहा ।

'यह दृश्य देख रहे है ?'

'किन्तु तुम्हारे घर पर ऐसी खिडकी कहा है ?'

'जरूरत ही क्या है ? दरवाजा जो है !'

'पर खलनायक ?'

'कमल आपके रास्ते मे नही आएगा ।'

'मैं कमल की नही कहता, पर मेरी श्रीमती जी का ध्यान नही है क्या तुम्हे ?'

'वह मुझे क्यो होने लगा ? पर अगर आप उनका उतना ख्याल रखते हैं तो · '

'ख्याल न रखू तो खा न जाए !'

—पर मालूम दिया, कमला परदे के किसी चित्र मे खो गई ! दफ्तर मे बडे बाबू के हाथ अवश्य लम्बे थे, इसलिए हथकण्डे भी उतने ही जानते थे, किन्तु प्रेम के राज्य मे गडबड-घोटाला एक व्यवस्थित तरीके से चलता है । उस व्यवस्था को जानने वाले ही जानते हैं ! धर्मप्रकाश को जानना चाहिए था कि स्त्री कही पर भी किसी भी अवस्था मे अपने किसी प्रतियोगी को सहन नही कर सकती ।

—और जब कि परदे पर किसी कोकिला का कामनृत्य धर्मप्रकाश को मुग्ध कर रहा था, तभी कमला ने पूछा, 'अच्छा, अगर आप अपनी 'वाइफ' से इतना डरते हैं तो बाहर की हवा क्यो खाते हैं ?'

'इसलिए कि घर मे दम घुटता है ।'

'तो अपने घर की खिडकी भी खुली छोड दीजिए न !'

धर्मप्रकाश एक क्षण के लिए निरुत्तर हो गया ! क्या यह मामूली पढ़ी-लिखी लडकी भी ऐसा व्यग कस सकती है ?

कमला ने उत्तर न पाकर सोचा कि परदे पर और कुछ उलझाने वाला चल रहा है, नृत्य तब भी चल रहा था। पाच आने वाले सिसकारिया भर रहे थे।—आखे नाच रही थी, वक्षस्थल नाच रहा था, कूल्हे मटक रहे थे, पाच आने वसूल होने मे शेष क्या रह गया था ?

कमला ने कहा, 'आदमी की प्यास कब बुझती है ?'

धर्मप्रकाश ने सुन लिया, कहा, 'जब तुम जैसी बगल मे बैठ ले !'

'किन्तु आप तो इस परदे की खूबसूरती पर ही लुटे बैठे हैं ।'

'असल जब तक नही मिले, तब तक छाया से मन भरमाना पडता है ।'

'अगर यह सामने आ जाए तो मेरे लिए क्या आप इसे छोड़ देगे ?'

'मैं छाया को नही चाहता, उसमे धोखा है । सामने आने पर भी रहती तो वह छाया ही है । मै तुम्हे चाहता हू कमला, छाया को नही ।'

'और आपकी 'वाइफ' ?'

'उसकी बात छोड़ो ! वह गले-पडी घण्टी है । बजाना भी उसे पड़ता ही है ।'

अपने हाथ को धर्मप्रकाश के कन्धे पर आवेष्टित कर कमला ने कहा, 'किसी दिन मैं भी तो गले-पडी हो सकती हू ।'

'हृदय का हार होकर; छाती का साप होकर नही ।'

रेस्टरा से जब दोनो बाहर निकले तो रात्रि के ग्यारह बज रहे थे।

सडको पर सन्नाटा छा रहा था, इक्का-दुक्का कोई व्यक्ति कभी इधर निकल जाता, कभी उधर। सवारी कोई उपलब्ध न थी, दोनो पैदल चले, पर किसीने लक्ष्य न किया। जिसने किया, उसने इन्हे पति-पत्नी ही समझा।

कालोनी के निकट आते ही धर्मप्रकाश ने कहा

'कोई देख लेगा, अब हमे जुदा होना चाहिए। तुम इधर से चलो, मैं उधर से चलूगा।'

'इतना डरते है ?—कल फिर शायद अपनी सतान को भी नही पहचानोगे ?'

'जब कोकिल अपनी सन्तान को कौओ से पलवाता है, तो कुछ समय के लिए तो उसे उसको भूलने ही मे भलाई है।'

'काम बन जाने पर सन्तान ही को नही, उसकी मा को भी भूला जा सकता है। पर देखिए, मैं तो नही डरती। हालाकि डरना सबसे अधिक मुझे ही चाहिए। बल्कि अकेली पड जाऊगी तो डरना पडेगा।'

'मै तो कमला, तुम्हारे लिए ही डर रहा हू।'

'सो तो मै जानती हू ! आपका उपकार यो ही कम नही है। मेरे ही लिए तो आज आप अपनी पत्नी तक को छोडकर, इस गहरी रात मे मुझे घर पहुंचाने के लिए तैयार हो उठे हैं। पर इतनी रात को अब मिलेगा ही कौन ?'

'अरे, ये नौकर लोग रात के दो-दो बजे तक गपशप लडाते रहते हैं, या ताश खेलते रहते हैं।'

'ओह, इन नौकरो से डरने की क्या जरूरत है ?—बल्कि हमे देखकर वे खुद ही डर जाएगे, और इधर-उधर छिप जाएगे।'

सचमुच इन्हे कोलोनी का मार्ग निर्जन ही मिला। कमला अपने घर के दरवाजे पर रुक गई, बाहर दादू बरामदे मे लेटा हुआ था, और उसकी नाक उसका पहरा दे रही थी। जब धर्मप्रकाश आगे निकल गया तो कमला ने दादू को जगाया। इतने बडे भरकम आदमी को

जगाना सरल काम न था। जब आखे मसलता हुआ दादू जागा तो कमला ने कहा :

'घोडे बेचकर सोते हो ?—कब से जगा रही हू ?'

पर सामने अधेरे क्वार्टर मे बैठे हुए उन्निद्र कमलनयन के अधर आप ही आप फैल गए। बेचारा दादू आज तो एक ही स्पर्श मे जाग उठा था। स्त्री-चरित्र की महिमा का कही अन्त नही है।

उस रात को फिर कमलनयन को नीद नही आई।

दूसरा दिन रविवार था। सवेरे सात-आठ बजते न बजते भाभी के दरवाजे कमलनयन की दस्तक लग जाती है, पूछने के लिए कि भाभी को किसी चीज़ की जरूरत तो नही है; या दिन मे करने को कोई काम हो, आदि-आदि बाते पूछने के लिए। जब कि अटनागर अपनी गृहस्थी का समस्त चार्ज उसे दे गए है, तो यह उचित है कि वह मनोयोगपूर्वक अपना कर्तव्य निबाहता रहे! बल्कि उनकी अनुपस्थिति मे पहले कुछ दिनो तो सवेरे और शाम दोनो समय कमलनयन वहा पर चाय पीते थे। अब कुछ दिनो से रग बदला दिखाई दे रहा है। कमलनयन सवेरे की चाय वहा पी लेते है। कभी-कभी रात्रि का कुशल-सम्वाद भी पूछ लेते है। इतवार होता है तो कभी-कभी खाना भी वही खा लेते है।

यद्यपि कमला आज देर से उठी, किन्तु घडी की ओर देखकर उसे आश्चर्य हुए बिना न रहा। साढे आठ बज रहे थे। यह नही कि वह जल्दी उठने की आदी है, पर सात बजे के बाद उसे कभी सोने नही दिया जाता। यदि आवाज़ देने मात्र से न उठती, तो कमलनयन उसे गुदगुदाने से भी बाज नही आता। और तब कही दादू सुन या देख न ले, इस भय से उसे शीघ्र ही उठ जाना पडता। आज वह साढे आठ बजे तक सोती रही। आश्चर्य है! क्या कमल आया ही नही!

बिखरे कपडो को ठीक करती हुई, आखे मलकर वह उठी। सूरज सिर पर चढ आया था। बैठक के कमरे मे जाते ही देखा कि एक लिफाफा पडा हुआ है, मिसेज़ एन्-क्यूब अटनागर के नाम, केअर-ऑफ कमल-

नयन ! हस्ताक्षरो को देखकर ही वह पहचान गई कि पत्र श्री भटनागर महोदय का है। पत्र मे क्या लिखा होगा, यह भी वह जानती थी ! फिर भी पत्र पढने का सहज औत्सुक्य उसमे न हो, यह नही कहा जा सकता ! उसने पत्र की ओर हाथ बढाया। पते पर लिखा था केयर ऑफ कमलनयन ! अमूमन ऐसे पत्र कमलनयन स्वय लेकर आता है; और दोनो साथ बैठकर पढते हैं। आज क्या बात हो गई ?—रात को. उसे ध्यान आया, जब वह लौटी तो पत्र वहा पर नही था। कमलनयन ने सवेरे ही उसे भिजवाया है। पर वह स्वय क्या हो गया ?

उसने दादू को आवाज़ दी, 'यह पत्र कौन दे गया ?'

'सामने वाले बाबू ने भिजवाया है। बोला सा'ब का खत है।'

'सो तो है ! वे खुद आए थे ?'

'नही ! उन्होने मुझे बुलाकर दिया था।'

'देखो, वे घर पर हैं, या बाहर गए हुए है ?'

वितृष्णा कमला अनमनी-सी वही कुर्सी पर बैठ गई। उसने पत्र को छुआ तक नही।

दादू ने आकर कहा, 'वे घर पर ही है। बुलवा दू ?'

'तो बुला क्यो नही लाया ?—इतनी भी अकल नही है ? कमल बाबू क्या कोई प्रदर्शनी की चीज है कि खाली देखने के लिए भेजती !'—और वह उठकर बाथ-रूम की ओर चली गई। बेचारा दादू नही समझ सका कि उसका क्या कसूर था, और मालकिन उसपर क्यो बिगडी ?

सूखे बाल, भूखे नयन, और सूखा मुह लिए कमलनयन आया, और बैठक मे ही एक कुर्सी पर बैठ गया। हाथ मे सवेरे का ताजा अखबार लेता आया था। जब उसे मालूम हुआ कि कमला बाथरूम मे गई हुई है, तो उसे सन्तोष हुआ कि वह अखबार तो पढ सकेगा, किन्तु ऐसी कोई चेष्टा उसकी दिखाई न दी। अखबार हाथ मे लिए वह शून्य दीवारो की ओर ताकता रहा। इसी बीच उसने देखा कि जो पत्र उसने सवेरे भिजवाया था, वह उसी तरह टेबल पर पडा हुआ है, खोलकर

देखा नही गया । यद्यपि अब कमला इतनी अगरेजी पढ-लिख गई थी, कि अटनागर के प्रेम-पत्रो को खूब अच्छी तरह पढ-समझ ले, और अट-नागर महोदय पत्र अंगरेजी ही मे लिखते थे, और लिखते समय यह ध्यान रखना आवश्यक नही समझते थे कि जिसको पत्र लिखा जा रहा है, वह अभी विद्यार्थिनी ही है, और उनकी ऊंची प्रयत्न-साध्य अग्रेजी को वह नही भी समझ सकती है—इतने भावुक है वे कि एक बार उन्होने एक पत्र अपनी भावी सन्तान के लिए ऐसी ही अग्रेजी मे लिखकर भेजा था, ताकि वह सुरक्षित अमानत के रूप मे उसकी माता के पास रहे, और जब वह पढने लायक हो जाए तो उस पत्र को पढकर गर्व अनुभव करे कि उसका पिता इतनी बढिया 'कुसुमित' अग्रेजी भाषा लिख लेता था—किन्तु कमला ये प्रेम-पत्र स्वय नही पढती थी । उसका व्रत था कि वह कमल-नयन ही पढकर उसे सुनाए । उसकी प्यास को तृप्ति मिलती थी कि कमलनयन प्रेम के उसी आवेश को अनुभव करके उसे पत्र सुनाता था ! देखकर कमल के अधरो पर एक कुटिल मुस्कान भी फैल गई ।

कमला जब स्नानघर से बाहर निकली, तब भी कमल की दृष्टि अखबार की ओट ही मे थी । उसने कमला के प्रवेश को अनुभव भी किया किन्तु उसने अनजान बने रहना ही उचित समझा । पहल कमला ही को करनी पडी :

'ओह कमल बाबू ! खैर आए तो ।'

कमल ने अखबार हटाया, देखकर स्तब्ध हो गया ! सद्य स्नाता, भीगी-बिखरी पीठ पर फैली चिक्कण-घन केश-राशि, अत्यन्त सावधानी के साथ उठाई हुई स्खलनप्राय: लपेटी हुई साड़ी, सारा परिवेश बडे यत्न से अयत्न-सज्जित बनाया हुआ, क्षीण-सी कसी हुई अगिया से निकल भागने को उद्यत कठोर वर्तुल उरोज, गर्दन और स्कन्ध का प्राय: समस्त भाग खुला हुआ—जैसे दोनो की दृष्टिया मिली, मुस्कराकर कमला ने कहा :

'क्या देख रहे हो मेरी ओर घूर-घूरकर ? शर्म नही आती ।'

'घूंघट डाल लू ? यह लीजिए।' कमल ने फिर अखबार ओट मे कर लिया।

'नाटक करना भी सीख गए ? खैर नाटक ही सही; सभ्य तो बनते जा रहे हो ! मैं सोच रही थी कही ...'

जब कमला रुक गई तो कमल ने कहा, 'क्या चीर-हरण कर लेता ? वह द्वापर युग था, गोपिया दिन-दहाडे जमुना मे वस्त्र किनारे पटककर नहा सकती थी, और कृष्ण को उनकी प्रीति पर भरोसा था !—आज कैसे याद किया ? बाजार से कुछ मगवाना है ?'

'जल्दी मे हो क्या ? मैं जरा कपडे पहन लू ! दादू भी आ गया, तो क्या समझेगा ? नाराज़ मालूम देते हो कुछ; पर आदमी का रूठना रूठना ही क्या है ?'

उसकी स्निग्ध दृष्टि मे फिर कुटिल उल्लास की एक चमक पुलकित हो उठी, और वह बडे हलके पदो से दूसरे कमरे में फुदकती हुई चली गई।

सचमुच आदमी का रूठना भी कोई रूठना है ! अभी-अभी वह कमला के प्रति विश्व की समस्त तिक्तता से भरा हुआ था, और अभी मालूम दिया कि उसकी गहरी आयत आखो से बढकर कामना की विश्व में अन्य कोई वस्तु हो ही नही सकती। वे आखे नही, वे तो शीतल-स्वच्छ-मधुर सलिल से भरी हुई दो झीलें हैं, जिनमे स्नान करके अजलि-बद्ध जल पीकर उत्तप्त अन्तर की प्यास बुझाने का लोभ रोका नही जा सकता। यदि कोई सर्वस्व भी मागे, तो उस आनन्द के सामने वह है क्या ? उस अनन्त जलराशि मे कही गन्दगी फैल सकती है ? उसकी पवित्रता, उसकी शीतलता, उसकी स्वच्छता क्या इसीलिए सीमाबद्ध हो जाएगी कि उससे किसी और की प्यास भी बुझ सकती है ? वह प्रकृति का एक अद्भुत लीला-विलास है। मरुस्थल तो सारा विश्व है, प्यास उससे भी अधिक अनन्त है। कहा है ऐसी शीतल आकुल तृप्ति ? कहां है ऐसी उज्ज्वल दृष्टि का उत्सुक आलोक ? कहा है ऐसी मुक्ति का अनिमंत्रित

उन्मुक्त बन्धन ? फिर जो प्राप्य है उसको छोडकर अप्राप्तव्य की आशा करना क्या दुराशा न होगी ?

अत. जब कमला लौटी तो कमल अपना प्रकृत स्वास्थ्य प्राप्त कर चुका था। देखकर बोला :

'बिना बादलो के आज यह बिजली कैसी ? कही गिरेगी ?'

'जी हा, अगर तुम बादल नही हो, तो समझो तुम्ही पर गिरेगी।'

'क्या अभी तक मुझपर बीती नही ? मन का पहचानने लायक कोई अश भी साबित वचने दिया है तुमने ?'

'जरूरत है क्या तुम्हारे पहचाने जाने की।' और मुस्कराकर उसने कमल के गालो को छूते हुए कहा, 'चाय की कहकर आती हू !' और वह नाचती-सी हुई बाहर बरामदे मे चली गई।

इतनी उत्फुल्ल ? रात्रि का वह वरदान क्या इतना अनुपमेय था ? इतनी सम्पूर्ण तो कमला कभी दिखाई नही दी थी। तो क्या वह स्वय इतना अपदार्थ है ? कल से शायद बाजार से सौदा लाने जितनी पात्रता भी उसमें न रह जाएगी।

कमला लौटी तो उसने कहा, 'यह पत्र नही पढा अभी तक ?'

'मैंने कभी पढा है ? यह अधिकार तो तुम्हारा ही है।'

'क्यों मजाक उडाती हो कमला ! मैं अब वह पत्र नही पढ सकूगा !'

'सौतिया-डाह पैदा हो गया ?—तुम समझते हो, मै उस पत्र के लिए मर रही हू !—लो यह लो—' और उसने पत्र उठाकर बिना पढे ही चीर-चीर कर डाला, और रद्दी की टोकरी मे डाल दिया। 'लिखा होगा, माइ व्हेरी व्हेरी डीयर कमला, मैं तुम्हारी जुदाई को नही सह सकता ! मेरी तबियत ठीक हो रही है, सिर्फ तुम्हारे प्रेम मे घुल रहा हू !—सिली ! यह कभी नही लिखेंगे कि वह बुढिया डायन कब मरेगी ! उससे कब पीछा छूटेगा। जरा राहत तो मिले।'

'उस बेचारी बुढिया ने तुम्हारा क्या बिगाडा है ?'

'वह मरती जो नही। ससुर का सब पैसा और जेवर पेट के नीचे

बांधकर सोती है। मरने के बाद नागिन होगी या नही, कह नही सकती, पर ज़िन्दा तो सापिन से किसी तरह कम नही है ! कान तो नही ही हैं, दिखाई भी कुछ खास नही देता। और चलना-फिरना तो मुहाल है ही ! और ये है कि उस चुडैल के इकलौते साहबज़ादे बनकर, उसकी गुलामी से बाज नही आते। उसके आगे दुनिया को कुछ समझते ही नही। अगर मा कही लक्ष्मी होती, तो सच कहती हू सिर पर लादकर दूसरे श्रवणकुमार बन जाते। कहती हू, बडे हुए ही क्यो ? मा की गोद मे लेटे रहकर दूध पीते-पीते जिन्दगी गुजार देने मे क्या बुराई थी ? सच कहती हू, बीमारी-बीमारी सब बहाना है ! मुझसे तग आकर मा की गोद मे मुह छिपाए पडे है। पर उनकी परवाह करे मेरी जूती !' और कमला ने जोर से अपना पैर जमीन पर दे मारा।

कमल ने आख उठाकर कहा, तुम्हे परवाह करने की जरूरत ही क्या है ?'

'क्यो नही है ? तुम भी तो तोता-चश्म हो ! बाज़ार का ज़रा काम कर दिया, कि समझ लिया तीर मार लिया।—रोज-रोज के इस एहसान के बोझ को मैं लादे कैसे फिरती रहू ?'

'किसने कहा तुमसे कि तुम्हारे ऊपर यह एहसान है ?'

'जीभ से कही जाने पर ही वह बात मै समझूगी, क्या मैं इतनी मूर्ख हू ? आज सवेरे से तुम्ही कौन-से सीधे मुह मुझसे बात कर रहे हो ?'

लेने के देने पड गए। कमल एकाएक समझ नही सका कि परिस्थिति को किस तरह सम्हाले, कि नौकरानी चाय का सामान लेकर उपस्थित हो गई। कमल को अनुभव हुआ कि मुक्ति मिली। पर कमला नौकरानी पर ही उबल पडी।

'इतनी देर मे अगर तुम्हे काम पर आना है, तो कल से तुम्हारी छुट्टी ! यहा पर नौकरानियो की कमी नही है।'

नौकरानी घबरा गई। बेचारी बडी सीधी औरत थी। डरते-डरते बोली, 'आप ही ने तो कहा था मेम साहब, कि जब तक साहब न आएं,

आठ बजे से पहले न आया कर, नीद मे खलल पडता है ।'

मध्यवित्त समाज मे नौकरो के द्वारा दिया हुआ 'साहब' और 'मेम साहब' सम्बोधन गौरव का चिह्न समझा जाता है । श्री भटनागर-दम्पति मध्यवित्त समाज के आदर्श है ।

कमला ने कहा, 'पर इतवार को इतना काम करने को पडा रहता है । इतवार को सात बजे आ जाया करो । देखो नौ बज गए, और अब चाय दे रही हो ।'

कमल एकाएक फिर भी नही समझ सका कि उस उबाल का कारण क्या है ? नौकरानी जब बाहर चली गई तो कमल ने पूछा, 'अच्छा यह कहो, सदा की भाति आज बिना बुलाए क्यो न आए तुम ?'

'मैंने सोचा शायद तुम्हे मेरी ज़रूरत न हो ।'

'पहले भी कभी तुम्हारी ज़रूरत होने की खबर मैंने तुम्हे दी थी ?'

'दी नही थी, पर आंखो से समझा था ।'

'और आज ?'

'समझता हू आज नही है ।'

'आज नही है ! कैसे ? क्या आखो की भाषा तुम्ही समझते हो ?'

'तुम्हारी आखो की भाषा न भी समझू । पर अपनी का तो अविश्वास नही किया जा सकता !'

कमला आशङ्कित हो गई । चाय का प्याला सामने ठेलकर उसने कहा, 'देखो कमल, बात साफ-साफ करना अधिक अच्छा है, ताकि कोई गलत-फहमी न हो ! हम कोई बधे हुए पति-पत्नी तो है नही कि बिना लुका-छिपी के काम नही चलेगा ! सच कहना, क्या तुम्हे भटनागर के लिए ईर्ष्या होती है ?—सच कहती हू, तुम्हारे लिए मैं उसकी राई भर चिन्ता नही करती । पर अगर वह मुझे चिट्ठी लिखे तो तुम्ही कहो मैं क्या कर सकती हू । आखिर शादी की है, तो इतना अधिकार तो उसका है ही । और यह कोई बहुत बडा अधिकार भी नही है कमल ! इसकी कीमत है

सिर्फ पोस्ट ग्राफिस के दो ग्राने का टिकिट ! फिर भी तुम मुझसे नाराज़ हो गए ?'

जानकर कमला अनजान बन रही है। वह शायद सोचती है कि रात को उसका देर से ग्राना किसीको मालूमन ही है। ज़रूरत क्या है कि वह अपने विश्वास मे खो जाए। तो भी कमल ने अंधेरे मे तीर मारा :

'रात को ग्राप कहा थी ?'

कमला एक क्षण के लिए घबरा गई। तो क्या रात की कथा कमल को मालूम हो गई ? पर एक ही क्षण के लिए ! कमला कच्ची गोली न खेली थी। बछडा जब कुदान भरने लग जाता है, तो वह चौंकडिया भर कर भी सन्तुष्ट नही होता, उसे खेलने के लिए मैदान चाहिए। उसने कहा, और उसने भी अन्धेरे मे जवाब दिया, 'तुम कल शाम से ही कहा थे ?'

'यही था।'

'झूठ ! दरवाज़ा तो बिलकुल ही बन्द था।'

'दफ्तर मे ही तो था ! जरा दादू को इशारा कर दिया होता।'

'मुझे क्या मालूम कि शनिवार को भी शाम तक तुम्हे दफ्तर ही की मोहब्बत घेरे रहती है। जब कुछ सूझा नही, तो सिनेमा चली गई थी, इसीमे तुम नाराज़ हो गए ?'

कमल ने देखा कि बात को तूल देने से कोई लाभ नही, है, किन्तु ईर्ष्या की अग्नि इतनी सरलता से बुझ भी नही सकती। स्त्री का दाक्षिण्य पुरुष के बुभुक्षित अहम् की तृप्ति जो है !

उसने व्यग्य किया, 'तुम्हे तो अकेले फिल्म देखने की कभी इच्छा ही नही होती थी न ! कोई पार्टनर मिल गया था क्या ?'

'जी उकता जाए तो अकेले भी देखना पड सकता है !'

कमल ने दूसरा तीर फेंका, 'कल शाम को दफ्तर मे बडे बाबू ने तुम्हारे बारे मे पूछ-ताछ की थी !'

'बडे बाबू ने ?'

'हा धर्मप्रकाश ने। कल शाम को हमे देर तक दफ्तर मे जो बैठे रहना पडा था !'

कमला ने भी दाव पहचान लिया। बोली, 'क्या बोले ?'

'पूछ रहे थे कि कोई तकलीफ तो नही है, तुम्हे। यदि किसी बात की जरूरत हो तो उन्हे बता दिया जाए।'

'फिर तुमने क्या कहा ?'

'क्या कहता ! यही की, पूछकर बताऊगा !'

'यदि बता सको और उनके पास इलाज हो तो कह देना, मुझे सिर्फ तुम्हारी जरूरत है !'

'यानी धर्मप्रकाश की ?' हसी को दबाकर उसने पूछा।

'चाहो तो यही कह देना ! कम से कम तुम्हारी बे-मुरव्वती का नाज़ तो न पालना पडेगा !'

कमल अप्रतिभ हो गया। चाय का प्याला टेबल पर रखकर बोला, 'बेमुरव्वती का नाज़ तुम्हे पालना पडता है या मुझे, तुम इसे नही समझ सकोगी···'

'इसीलिए समझाने के लिए ही क्या यह नाटक खेल रहे हो ?'—और वह कमल के कप में चाय उडेलने लगी।

'नही, अब अधिक नही पी सकूगा।'

'नाराज़ हो गए ? राजी और नाराजी मे फर्क तो सिर्फ 'ना' का है न ?—अच्छा, अगर अपनी यह 'ना' निकाल दो तो फिर राजी ही राजी है। है न ?—लो, तग न करो। बल्कि इन नखरो से तो, सचमुच की नाराजी ही भली होती है !' और उठकर उसने स्वय ही कप को कमल के ओठों से छुआ दिया।

७

अपने आप के बारे मे तो मैं भूल ही चला हूं। चाहता भी यही हू कि प्रत्यक्ष मे मेरा नाम लिखने की अपेक्षा यह लेखनी अपने कजरारे नयनो ही मे मुझे छिपा ले, और अलग न करे। झर पड़ने की इच्छा न रखते हुए भी मैं आसू से नही डरता। किन्तु आख की किरकिरी बनने का जब अवसर आ जाए तो मैं अलग बैठकर प्यासे नैनो उस ओर देखते रहना गवारा कर लूगा। इस समय इसी परिस्थिति मे हू, इसलिए अनायास ही अपनी याद पड गई है।

१५ अगस्त, १९४७ से ही भारतवर्ष का प्रत्येक जीवित नागरिक स्वतत्र है, और वह स्वतत्र हुआ है वर्षो की परतत्रता के बाद, अतः सचमुच ही उस दिन के बाद मैं बहुत डर गया था, जब कि धर्मप्रकाश की वह स्मरणीय चाय मेरे भविष्य के अन्धकार का आभास दे गई थी। व्यर्थ की बातो मे दिलचस्पी लेना वस्तुत· मेरा शौक नही था, न धन्धा ही। इसलिए जब कमल-कमला-धर्मप्रकाश के तीन बिन्दुओ को मिलाकर एक त्रिभुज बन रहा था तो मैं अनायास ही अनासक्त भाव से अलग हो गया था। धर्मप्रकाश को मुझसे आशका का कोई कारण न था, इसलिए उन्होने कोशिश तो की ही मेरे केस के सम्बन्ध मे, पर वह बनाने के लिए नही, बल्कि बिगाडने के लिए। शायद उन्हे दोष न भी दिया जाए तो भी काम बन जाएगा, और वह इसलिए कि १५ अगस्त, १९४७ से हम सभी आज़ाद जो हैं!

उस दिन व्यवस्थापक महोदय ने मुझे अपने कक्ष मे बुला भेजा।

व्यवस्थापक महोदय का प्रकोष्ठ मेरा अनजाना नही। मेरे ही कार्यकाल में ये तीसरे व्यवस्थापक थे, किन्तु वर्तमान व्यवस्था मे मैं इस प्रकोष्ठ में यदा-कदा ही जा पाता हू। कई दिनो के बाद जाकर आज जो देखा, तो पाया कि यह कमरा तो मेरा अनदेखा ही है। पहले वाला

कमरा तो जैसे पहले वाले मालिक के साथ ही चला गया। साज-सज्जा ही नही, खिड़की दरवाज़े तक बदल गए थे। कमरे की एक विशेषता थी, उसमे एतद्पूर्व सभी व्यवस्थापको के आ-वक्ष चित्र सजे हुए थे। पूर्व व्यवस्थापक तक तो यह क्रम चलता रहा, किन्तु अब कोई चित्र कक्ष मे न था। वर्तमान व्यवस्थापक को कदाचित् यह आभास हो गया था कि विलीनीकरण के पश्चात् जब उनका कोई चित्र वहा पर प्रतिस्थापित न हो सकेगा, तो वर्तमान चित्रो को तो वे सहज हो उत्थापित या विस्थापित कर सकते हैं। स्वतत्रता के फलस्वरूप शासन बदलते ही बहुतेरी आबादी विस्थापित हुई है, यहा भी यदि शासन के बदलने से कुछ चित्र ही विस्थापित हो, तो इसमे कोई आश्चर्य नही।

और भी कुर्सी-टेबल आदि के अनेक परिवर्तनो के बीच बैठे थे परिवर्तित महा व्यवस्थापक महोदय। उमर पचास के लगभग, आकृति लम्बी, चेहरा भरा हुआ। मूछ और सिर के बाल भरे हुए किन्तु खिचडी। छोटी-सरल-कोमल नाक के ठीक नीचे आयताकार कटी हुई मूछें, जिनके बाल घने होने पर भी सीक जैसे एक-एक कर गिने जा सकते थे। सिर के बाल ठीक बीच मे से विभाजित, घुघराले किन्तु वैसे ही सीक जैसे, और कपाल पर इस तरह छाए हुए कि उसका कुछ ही हिस्सा आखो के ऊपर दृश्यमान था। वास्तव मे उनका कपाल कुछ सकुचित ही था। आखो पर मोटी फ्रेम का चश्मा, जिसके भीतर से कोटरों मे छिपी आखें इस तरह देखती थी मानो आड मे छिपी कोई बिल्ली अपने शिकार को ताक रही हो। गाल उभरे हुए, जो चश्मे के उभार से दब गए थे। मूछो के आवरण के नीचे उनका मुख, कोणो से झुका हुआ सदैव ही गम्भीर कुटिलता की प्रतीति देता था। उन निर्मांस सूखे पर्पट अधरों पर मुसकान देखी, कभी याद नही पडती।

घूर्णमान (रिवोल्विग) चौडी कुर्सी पर एक उच्छलनशील (स्प्रिग) बैठक पर बैठे हुए व्यवस्थापक महोदय सहज ही आकर्षण का केन्द्र हो उठते थे। सफेद कमीज़ के आवेष्टन मे घिरा हुआ मशकाकार

उनका वर्तुल उदर यद्यपि सामने पडी हुई टेबल की सतह से छुप जाता था, किन्तु ज़रा पास आने पर यदि आपके सामने कुर्सी पर बैठकर आखो की सीमा को उसी टेबल की सतह से प्रतिबधित करने का सौभाग्य प्राप्त न हो, तो अनायास ही आप अपने को उस वर्तुल उदर को देखने से रोक नही सकते। और मैं, भला एक कर्मचारी, वहा खड़ा रहने दिया जा सकू, यही कम सौभाग्य नही है।

लेकिन यह तो उनका ऊपरी परिचयमात्र है, जिसे गणित के अको या भूमिति के औज़ारो द्वारा अधिक से अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। इस परिचय मे किसीके व्यक्तित्व की कोई विशेषता परिलक्षित नही हो सकती, किसीकी नाक दो इच हुई तो क्या और ढाई इच हुई तो क्या! नाक के छोर पर आखे समकोण बनाती हैं, या न्यून कोण, यह भी चश्मे से छिपाया-सुझाया जा सकता है, इसलिए इनके भीतरी परिचय का आभास भी मैं दे देना चाहता हू ताकि भविष्य की घटनाओ को इस घटक के चरित्र के तारतम्य से देखा जा सके।

व्यवस्थापक महोदय अपने समुदाय के एक बडे मौज़ू प्रतिनिधि थे। अपने कुटुम्ब के तीन-चार भाइयो मे उन्हे सरलता से पृथक् करके देखा जा सकता था, उनकी ऊचाई के कारण भी, और उनके विशिष्ट रहन-सहन, चाल-ढाल और आचार-व्यवहार के कारण भी। सनक, दम्भ, कंजूसी और अपने अभावो को छिपाने के लिए आयास-कृत श्रेष्ठ भावना का आच्छादन, इन विशेषताओ को वहन करने के लिए उन्हें अपने ही आदमियो से कतराकर चलना पडता था, किन्तु अपने विशेष क्षेत्र मे, जो इनके घरेलू और व्यक्तिगत सम्बन्धो से अपरिचित था, ये विशेष रूप से खुलकर आत्मीयता लाभ करते थे। अपने मातहतो से बात प्रारम्भ करते थे 'यू सी' (देखो) शब्दो के साथ, बराबरी वालो से 'जस्ट इमैजिन' (ज़रा कल्पना करो) के साथ। यानी न तो इनके मातहत मानो कुछ देख पाते थे, और न बराबरी वाले कुछ कल्पना ही कर पाते थे! देख-कर आश्चर्य होता कि ये इतने बडे कैसे बन गए। बडप्पन कभी-कभी

सयोग से और कभी-कभी दुर्घटना से भी प्राप्त हो जाता है, इसका ये अच्छा उदाहरण है।

जब भारतीय रेलें कम्पनी के शासनाधिकार मे थी, तब इनकी नियुक्ति एक सहायक इजिनियर के तौर पर हुई थी, और तब से ये बराबर इस पद के आसपास ही चक्कर काटते रहे। अग्रेज अधिकारियो के सामने या उनके कारण ये तरक्की न कर सके, किन्तु १९४७ मे पासा पलट गया, और अग्रेजो को भारत छोड देना पडा। इन महापुरुषो की अग्रेज-भक्ति की सराहना करनी पडेगी। उनकी लात खाकर भी उनके जमाने मे औंधे मुह पडे रहने वाले इन अफसरो को अग्रेजो के सिवा आज भी कोई नही दिखाई देता। ये उनका तारीफो के पुल बाधकर ही शायद इजिनियर हो गए हो, किन्तु उनके जाते ही इनका सितारा चमका। असिस्टैण्ट से डिप्टी, डिप्टी से डिस्ट्रिक्ट और डिस्ट्रिक्ट से एग्जीक्यूटिव इजिनियर रातो-रात होने लग गए। परन्तु इधर दूसरी मुसीबत सामने आई। भारतवर्ष मे अब केवल तारीफो के पुल की नही, बल्कि सच्चे पुलो की जरूरत महसूस हुई। साफ था कि इनकी कलई खुल जाती, और अधिक वेतन का अवसर ताककर ये इस रियासत के रेलवे-विभाग की व्यवस्था के लिए तशरीफ ले आए। पुल यहा भी बनाने थे, किन्तु किसीकी निगाह के नीचे पुल बनाने की अपेक्षा अपनी निगाह के नीचे पुल बनते देखना अधिक सुविधाजनक, सरल और लाभदायक है।—अत. एकाध और इजिनियरो को अपने मातहत बुला लिया गया। पुल बनाने की चिन्ता इन्हे नही थी। वह तो मिस्त्री और ओवरसीयर कर ही सकते हैं। इन्होने अपने शासन को मज़बूत बनाने और आमदनी के रास्ते को प्रशस्त बनाने मे अपने शिल्प का प्रयोग किया। लेकिन यह तो राहे-गुज़र की बात है। सवाल सिर्फ इतना ही था कि इनके बडप्पन का कारण क्या था।

भले तो थे किन्तु कल्पनाशक्ति से नितान्त कोरे, बिलकुल वस्तुतत्व के जीव जिसे जैसा देखा, वैसा समझा। छोटा आदमी वह जो

उनसे कम वेतन पाता हो, बडा वह जो उनसे अधिक । छोटे आदमियो पर शासन करना ही चाहिए । उनका भरोसा भी नही किया जा सकता । आजादी के बाद से इसी तबके के लोगो का सबसे अधिक पतन समझते थे । क्लर्क लोग पहले जैसा काम नही करते । कांग्रेस ने उनको असहयोग तथा हडताल के शस्त्र भी तो पकडा दिए थे । पर ये अग्रेजो से शासनविद्या सीख चुके थे । अत. जब एक क्लर्क ने अपने विरुद्ध की हुई अनुचित कार्यवाही के विरोध मे, रेलवे के क्षेत्र मे ही अनशन प्रारम्भ कर दिया, तो उसे छ रोज की फाकाकशी से प्राप्त दुर्बलता, डिसमिसल और अविलम्ब मकान छोड देने की आज्ञा का प्रसाद मिला । अपील करने की अवधि मे ही पुलिस ने उसकी कमजोरी का लाभ उठाकर उसे गर्दनिया देकर निकाल दिया । साथ मे एक-दो और क्लर्को की कुशाग्रो को उखाडकर जमीन साफ कर ली गई । हमारे पूर्व परिचित धर्मप्रकाश भी जो तब तक एक बडे बाबू थे, प्रसाद स्वरूप छोटे अफसर बन गए, सो आप सब जानते ही है ।

इजिनियर हैं, इसलिए साहित्य-सगीत-कला से क्या वास्ता ? लेकिन जमाना जो बदलता चला जा रहा है ! आज पूछ उसकी होती है, जो नेता हो, और नेता होने के लिए साहित्य-सगीत-कला न सही, उनके तमाशे की ज़रूरत तो है ही । साहित्य यानी छापे के अक्षरो मे लिखा हुआ कुछ, सगीत यानी सितार या तानपूरे के साथ आलाप, और कला यानी रेखाओ का आडा-तिरछा झुण्ड । एक कल्पना से शून्य व्यक्ति के लिए इससे अधिक इनका अर्थ ही क्या हो सकता है ।

यदि ए . दरवाज़ा है तो स्पष्ट रूप मे दरवाज़े के सिवा उन्हे वहा कुछ दिखाई नही देता । बहुत हुआ, तो दरवाजे की लकडी या चौखट की मज़बूती या कमज़ोरी के बारे मे उनसे आप टिप्पणी सुन सकते है । किन्तु उस दरवाज़े के आगे कुछ देखने योग्य अदृष्ट भी हो सकता है, इसकी वे कल्पना नही कर सकते । एक क्लर्क को यदि उसका प्राप्य स्थान नही मिला, तो क्या हुआ ? किसी दूसरे क्लर्क को तो मिला !—इसमे पहले

क्लर्क के नाराज़ होने का प्रश्न ही कहा है ? शतरज पर एक प्यादे को न बढाकर यदि दूसरे प्यादे को आगे बढा दिया, तो यह तो खिलाडी के देखने की बात है। यदि प्यादा इसके लिए उज्र करने लग जाए, तो हो चुका खेल !—हुकूमत का खेल शतरज की चाल के सिवा और भी कुछ है, और वे प्यादे लकडी के मुहरे न होकर हाड-मास—चैतन्यमय प्राणी है इसकी उन्हे विशेष खबर न थी।

सो मैं पहुचा उनके सामने—सलाम की—अनल्प अनुग्रह के साथ उन्होने सामने की कुर्सी का इशारा किया। धन्यवाद कहकर मैं सामने बैठ गया।

अधिक भूमिका की आवश्यकता न थी। सीधे उन्होने कहना शुरू किया :

'यू सी, तुम्हे इसलिए बुलाया है कि मैं तुम्हे एक खास काम सौंपना चाहता हू।'

'फरमाइए।'

'सोचता हू कि वह तुम्हारे लिए तरक्की का कारण भी होगा। मुझे कोई दूसरा आदमी भी इस समय ऐसा दिखाई नही देता, जिसपर भरोसा कर सकू।'

'आपकी कृपा है, जो आप मुझे इस योग्य समझते हैं।'

'यू सी, स्टोर्स विभाग मे मुझे एक अच्छे व्यक्ति की आवश्यकता है'

'शायद उसके लिए तो चुनाव हो गया है।'

'हा, चुनाव तो हो गया किन्तु यू सी, उससे मुझे सतोष नही है।'

'तो क्या दूसरा चुनाव होगा ?'

'नही, मैं उसकी ज़रूरत नही समझता। मैंने सोचा है कि मैं तुम्हे उस स्थान पर बदल दूं !'

'मै ? किन्तु....'

'मैं जानता हू कि तुम उस लाइन के आदमी नही हो, किन्तु यू सी, तुम्हारे लिए—सच तो तुम जैसे शिक्षित व्यक्ति के लिए कोई भी काम

कठिन नही होगा। तुम्हें हिम्मत नही खोना चाहिए।'

'जी नही, हिम्मत तो मै नही खोता, न ही मै आत्मविश्वास ही खो रहा हू, किन्तु · ·'

'किन्तु क्या ?'

'यही कि इस पोस्ट का वेतन-स्तर तो मेरे वर्तमान वेतन-स्तर के अनुकूल नही।'

'उसकी तुम्हे चिन्ता नही करनी होगी। तुम्हारे वेतन मे कोई अन्तर नही होग · '

'किन्तु—आप जानते ही है मेरे ही विभाग मे एक स्थान निर्माण हुआ है, वह मेरी वेतन-शृखला से ऊपर है, और उसपर मेरा दावा भी है !'

दावे की बात सुनकर महा व्यवस्थापक महोदय एक क्षणभर के लिए मानो चौके। वट यू सी, उस पोस्ट के लिए तो तुम ट्रेण्ड (प्रशिक्षित) नही हो।'

अब मेरे चौंकने की बारी थी। प्रशिक्षण का प्रश्न कभी उठ सकता है, यह तो मैने सोचा ही न था। तब भी मैने कहा, 'किन्तु और तो कोई प्रशिक्षित है नही।'

'है क्यो नही ?—तीन आदमियो का जो बैच (समूह) अभी ट्रेनिंग से लौटा है ?'

'किन्तु वे तो सभी असिस्टैण्ट (सहायक) का प्रशिक्षण लेकर आए हैं। उनका वेतन-स्तर तो मेरे वेतन-स्तर से भी नीचे है।'

'किन्तु वे तुमसे तो अधिक अच्छे है। यू सी, सम ट्रेनिंग इज़ बेटर दैन नथिंग !'

'उनके लिए तो ट्रेनिंग की जरूरत थी, क्योकि वे एकदम दूसरे विभाग से लिए गए हैं। मेरे लिए तो इस ट्रेनिंग की आवश्यकता ही न थी। आप जानते ही हैं, इस विभाग को विकसित करने का सारा श्रेय मुझे ही है। मै बराबर मनोयोगपूर्वक इसका विकास करता रहता हूं।

शायद मेरे निकट के अफसर भी इस बात को स्वीकार करते है। इसके अलावा प्रायोगिक प्रशिक्षण प्राप्त न करके भी मुझे इस विभाग की पूरी जानकारी और अनुभव है। आप मेरी चाहे जिस तरह परीक्षा ले सकते है। यही क्यो, अभी भी मै इन तीनो प्रशिक्षित व्यक्तियो का बराबर मार्ग-दर्शन करता रहा हू, इनको आधे से अधिक प्रशिक्षण मैने दिया है।'

'यू सी आ' एम सॉरी, आइ केनॉट डू एनीथिंग इन दिस मैटर !—चूकि यह ऊपर का स्थान भरा जा रहा है, इसलिए तुम्हारा स्थान अनावश्यक हो गया है। तुम्हारे ही हित के लिए मैने तुम्हें स्टोर्स का विकल्प दिया था, सो अब तुम्हारे चुनने का सवाल है।'

'चुनने का सवाल ही कहा है ?'

'एक तरह से नही ही है !'

'क्या मै पूछ सकता हू कि इन तीनो मे से इस ऊची जगह के लिए आप किसे चुन रहे है ?'

'यू सी, मै यह पोस्ट मोहनलाल को देना चाहता हू।'

'मोहनलाल ?—किन्तु वे ही तो स्टोर्स के चुनाव मे लिए जाने वाले थे ?'

'थे; किन्तु उसे इस लाइन का कोई अनुभव नही है।'

'सो तो मुझे भी नही है।'

'तुम काम कर सकोगे।'

मोहनलाल का नाम सुनकर मुझे कुछ क्रोध हो आया। क्रोध हो आना स्वाभाविक था। मोहनलाल एक बार पहले रिश्वत के अपराध मे बरतरफ कर दिया गया था। पहले के महा व्यवस्थापक ने लडका समझकर बिना चार्ज लगाए ही अलग कर दिया था। शासन बदलते ही उसने अपील की। वर्तमान महा व्यवस्थापक से कुछ दूर-पास का रिश्ता भी था। फिर कर्मचारियो के सघ का सचिव भी था। सरलता से पुन: बहाल हो गया, और अब तिकडम लगाकर काफी अच्छी पोस्ट पाने का हकदार भी हो गया।

मैंने कहा, 'जी, मुझे माफ किया जाए, मै स्टोर्स विभाग मे नही जाना चाहता।'

'क्यो ?'

'इसलिए कि उस शाखा मे मुझे दिलचस्पी नही, दूसरे मै अपनी उन्नति का कोई अवसर वहा नही देखता।'

'भूलते हो तुम। उन्नति के अवसर तो वहा बहुत हैं। उस डिपार्ट-मेंट मे पढे-लिखे लोग तो बहुत है नही। जाते ही तुम चमक जाओगे।'

जाहिलो मे मैं नही चमकना चाहता।'

'मगर उस हालत मे तुम्हे सरप्लस (अनावश्यक) स्टाफ घोषित करने के सिवा मै कुछ नही कर सकूगा।'

मैं उठ खडा हुआ, बोला, 'वही कर दीजिए।' और मैं बाहर निकलने के लिए उद्यत हो गया।

उन्होने कहा, 'बचपना मत करो ओझा! देखो, यह मेरे पास एक और प्रधान कार्यालय से पत्र आया हे। जूनियर आफिसर्स की जगह के लिए अपने स्टाफ मे से कुछ व्यक्तियो के नाम मागे है। मै चाहता था, कि तुम्हारा नाम भी भेज द ।'

'कृपा के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद! किन्तु मुझे मेरा प्राप्य तो दिलवा दीजिए।'

'बैठो, बैठो। ज़रा ठण्डे दिमाग से बात सोचो। तुम एक समझदार व्यक्ति हो। शासन ने सदैव ही तुम जैसे जहीन पढे-लिखे लोगों से काफी उम्मीद रखी है। मैंने सुना है कि मेरे भूतपूर्व व्यवस्थापक तुम्हें बहुत अधिक मानते थे।'

'मानने को तो मैं नही कह सकता, किन्तु मेरी राय की वे बडी कद्र करते थे। जिस विभाग मे मैं काम करता हू उसका विकास मेरी सलाह के अनुसार ही हुआ है।'

'यह मैं जानता हू। मैं भी चाहता हू कि तुम्हारे ऊपर मैं अपना विश्वास स्थापित कर सकू।'

'क्या मैंने कोई ऐसा अवसर आपको दिया कि आप मुझसे इस बारे मे शिकायत कर सके ?'

'नही । किन्तु, इसी नाते क्या मैं तुमसे कोई आशा नही कर सकता ?' मैंने उत्तर मे उनकी आखो मे अपनी आखे डाल दी ।

उन्होने कहा, 'तुम जानते ही हो, यह कर्मचारी सघ मुझे किस तरह परेशान कर रहा है ।'

'जी हा, किन्तु मैं तो उसका सदस्य भी नही हू ।'

'नही हो ? ठीक ही है । अपने उच्च कर्मचारियो से मुझे यही उम्मीद है, ऐसे सघो का उद्देश्य होता ही प्रशासन को परेशान करने का है । क्यो ठीक कहता हू न ?'

मैंने एक क्षण के लिए सोचकर कहा, 'जी, मुझे इनका कोई खास अनुभव तो नही, किन्तु मैं समझता हू कि दोनो के उद्देश्यो मे तो आखिर अन्तर नही; और कोई कारण नही कि दोनो ही मिल-जुलकर काम न करें ।'

'यानी ?'

'साफ कहने के लिए आज्ञा दे, तो कहना चाहूगा कि जिस काण्ड को लेकर दोनो दलो मे कटुता बढी है, उसको आगे न बढने दिया जा सकता था ।'

'आगे किसने बढने दिया ?'

'उस कर्मचारी का इतना बड़ा अपराध तो नही था कि उसे एकदम बरखास्त कर दिया जाता ।'

'यू सी, वह कम्युनिस्ट है ।'

'आपकी बात सच भी हो, तो भी जो दण्ड उसे दिया गया है, वह तो उसके अपराध की तुलना मे बहुत भारी है ।'

'वेल, वी मे डिफर टु एग्री ।—जो भी हो चुका है, उसे वापिस नही किया जा सकता ।'

'मेरा ख्याल है कि यदि हम अपनी गलती को समझ जाए, तो उसे

सदैव ही ठीक किया जा सकता है ।'

'नही ओझा, यू डोण्ट सी, एडमिनिस्ट्रशन :ज ए व्हैरी डेलीकेट बिजनेस ! मैं डिसिप्लीन को बनाए रखना चाहता हू । उस क्लर्क को पुन. बहाल करने से मेरा डिसिप्लीन खराब हो जाएगा ।'

'एडमिनिस्ट्रेशन ने ऐसा पहले भी किया हे, और समझता हू डिसिप्लीन मे भी ऐसी कोई खराबी उससे पैदा नही हुई है ! आप जानते ही है, यही श्री मोहनलाल पहले भी डिस्चार्ज्ड हैण्ड है ।'

आघात सीधा बैठा । किन्तु व्यवस्यापक महोदय ने स्वीकार किया, 'यह अन्याय मेरे प्रेडीसेसर (भूतपूर्व अधिकारी) से हुआ था । मैंन तो उसका परिष्कार ही किया है ।'

'दूसरो की गलती का परिष्कार करने की अपेक्षा अपनी ही गलती का परिष्कार कर सकना और भी अधिक ऊचे दर्जे की बात हैं....' उसी समय किसी कार्य से श्री धर्मप्रकाश भी भीतर आए ।

मैं शायद उपदेश देने की सीमा को बढाता ही जा रहा था । मैं भला एक मातहत आदमी ! एकाएक ही व्यवस्थापक महोदय गरज उठे—शायद दूसरे व्यक्ति के सामने वे मुझे महत्व नही देना चाहते थे ।

'मैने तुम्हे उपदेश देने के लिए नही बुलाया है । मैंने फैसला कर लिया है । तुम्हे स्टोर्स मे जाना पडेगा । मि० धर्मप्रकाश, यू इशू द ऑर्डस एज़ डिस्कस्ड लास्ट इवनिग ! (जैसा कि कल शाम को निश्चय किया है वैसी आज्ञा प्रचारित कर दो ।)

धर्मप्रकाश ने कहा, 'व्हेरी वेल सर !'

उठकर मैंने कहा, 'तो मुझे जाने की इजाजत है ?'

'यस, यू कैन गो ।'

मैं बाहर चला आया । चाहता था कि अपने निकटस्थ अधिकारी के पास जाकर सारी रिपोर्ट बयान कर दू, किन्तु तभी उन्हे भी व्यवस्थापक महोदय ने बुला भेजा ।

सीनियर जोशी अपनी कुर्सी पर शात नही बैठ सकता था । यदि

कागज़ पर उसकी दृष्टि पाच मिनट रहती थी, तो पचीस मिनट उसे अपने आसपास देखना पडता था। किसी साथी को कोई अफसर कब बुलाता है, कब वह लौटता है, उसे क्या कहा गया है, आदि सब बाते जब तक वह जान न ले, तब तक उसे रोटी नही पचती। उसके पैरो मे ही स्प्रिग नही, बल्कि उसके मन मे भी वैसी ही स्प्रिग लगी हुई है। फिर शायद मेरे चेहरे पर भी कुछ लिखा हुआ हो। वह अपनी कुर्सी पर से उठा, और मेरी टेबल पर कुहनिया टेककर झुक गया, और बोला, 'कहा, रेगिस्तान की हवा खाने गए थे क्या ?'

प्रत्येक दफ्तर मे देश-काल-पात्र के अनुसार एक अप्रस्तुत रूपक चल पडता है। महा व्यवस्थापक महोदय लम्बाई मे औसत से अधिक थे, उनकी अकल की जैसी कुछ धारणा लेखक-समुदाय मे फैल गई थी, उससे उनके लिए एक रूपक तलाश करने मे कोई कठिनाई नही हुई। अत जहा वे मालिक होकर तशरीफ रखते है, उस दफ्तर को रेगिस्तान से बढकर और कहा का उपमान स्थिर किया जाता ?

मैंने कहा, 'रेगिस्तान मे हवा के साथ रेत भी तो खानी पडती है।'

'सो तो तुम्हारा चेहरा ही कह रहा है।'

'चेहरा ?' मैंने हसते हुए कहा।

'बनो मत मिस्टर !—दाल मे काला ज़रूर है ! यह कमल है न। यह भी आज तुम्हारे बारे मे सवेरे से कुछ फुसफुसाहट कर रहा था।'

'सो करने दो जोशी !—आखिर जो काबिल हैं, उन्हीके बारे मे तो चर्चा होती है।'

'कहता था कि तुम्हारी जगह पर कोई दूसरा ही आ रहा है।'

'अपनी जगह ही कौन-सी है भाई ?—अपने को मतलब है पैसे से, सो पहली तारीख को कही पर भी मिल जाए। फिर क्या जगह, और क्या पोस्ट ?—अच्छा यह बताओ, तुम्हारे लडके का एडमिशन हुआ या नही ?'

'थैंक्यू ओझा, व्हेरी मच फॉर योर लेटर !—हेडमास्टर ने एक भी

सवाल नही किया और झट से एडमिशन दे दिया। और लडको की इतनी भीड, इट वाज शीयर लक ऐण्ड योर लेटर ! पर दोस्त ...'वह टेबल पर और अधिक झुक गया।

क्या ?'

'एक मदद करनी पडेगी।'

'बताओ भी तो ?'

'इन चोरो ने मेरे साथ चाल खेली है।'

'किन चोरो ने ?'

'यही कमल-एन्-क्यूब ऐण्ड डी० पी० कपनी ने !'

डी० पी० का मतलब धर्मप्रकाश से था।

'चाल क्या है ?'

'इन्होने जो लिस्ट भेजी है, उसमे हमारे नामो के प्रथमाक्षरो की आड लेकर मुझे कमल से जूनियर बना दिया है।'

'तुम्हे निश्चय रूप से विदित हुआ है ?'

'निश्चित तो मैं नही कह सकता, किन्तु मुझे इसका आभास हुआ है। मेरे असिस्टैण्ट ने एक झलक वह लिस्ट देखी थी।'

'निश्चित ऐसा हो, तब तो तुम आगे बढकर रिपोर्ट कर दो। पर यदि केवल अनुमान मात्र निकला, तो मुफ्त मे दुश्मनी गले पड जाएगी।'

'यही तो मैं डरता हू। समझ नही पडता कि क्या करू।'

'फिर प्रतीक्षा करो, जब आउट हो जाए तो अपील कर सकते हो।'

'तुम्हारे बारे मे भी वही कह रहा था कि ट्राफिक की लिस्ट मे तुम्हारा नाम नही है।'

मैंने जैसे कुछ न हुआ हो, इस भाव से कहा, 'मै स्टोर्स विभाग मे जा रहा हू।'

'स्टोर्स विभाग मे ! —क्यो ?'

'नौकरी जो ठहरी ! इसमे 'क्यो और क्या' की कोई गुजाइश है ?'

'किन्तु—वहा उस कमरे मे।'

जोशी बोला, 'सिन्धी माल के बारे मे ?'

'हा, हा, वही तो।'

'यार, उसके बारे मे तो तुमसे बात करना ही है। एक बडी मुसीबत गले पड गई है।'

'अच्छा, अभी तो सलाम का जवाब दे आऊ ! फिर बात करेंगे। पर यह मेरे स्टोर्स जाने को बात किसीको बताने की ज़रूरत नही है।'—मैं जानता हू, ऐसा कहने का अर्थ और फल क्या होता है।

धर्मप्रकाश जी के उसी कमरे मे चिक उठाकर प्रविष्ट हुआ। अकेले ही थे। मुस्कराकर स्वागत किया। सामने बैठने का इशारा किया। धन्यवाद कहकर मैं बैठ गया।

कागजो को इधर-उधर सम्हालकर रखने मे मानो उन्होने भूमिका के लिए अपने आपको तैयार किया। बोले—'मैं कहता था न ? याद है आपको ?'

'जी हा ? —मुझे सब बाते याद हैं। किन्तु, शायद आप स्वीकार करेंगे, मैंने तो अपनी बात रखने मे कुछ नही उठा रखा !'

'हा, आपने अपनी बात रखी है।'

'फिर मेरे इस दुर्दैव का कारण ?'

उन्होने थोडा मुस्कराकर कहा, 'दुर्दैव ! दुर्दैव क्यो कहते हैं ?'

'मेरी पोस्ट को सरप्लस जो बनाया जा रहा है।'

'किन्तु आपको तो सरप्लस नही बनाया जा रहा है। आप स्टोर्स डिपार्टमेट मे जो जा रहे है।'

'लेकिन जिस पोस्ट के लिए मै कमर बाधे था, और जिसके लिए आपने आशा दिलाई थी ?'

'वह अवश्य घपले मे पड गई ! मैंने प्रयत्न तो बहुत किया था, कि आप ही को वह जगह मिले, यकीन दिलाता हू कि मैंने प्रयत्न किया था, चाहे प्राप इसे माने या न माने !'

'मानूगा क्यो नही, जब आप कहते हैं तो।'

'किन्तु एक तो आपके इमीजिएट बॉस (निकटस्थ अधिकारी) मे कुछ दम नही; दूसरे इन दूसरे अफसरो मे आपके प्रति एक बुरी धारणा बनी हुई है। क्यो है, यह तो मैं नही कह सकता।'

'अपने इमीजिएट बॉस के बारे मे तो मैं जानता हू, वे स्वय बड़े परेशान हैं। और दूसरे, अफसरो के कहना चाहिए आखे तो होती नही, होते है केवल कान। इसीके बल पर बना लेते है अपनी धारणाए वे!'

'कौन है ऐसा दुश्मन आपका जो व्यवस्थापक के कान आपके विरुद्ध भरे?'

'मैं व्यर्थ किसीको दोष नही देना चाहता। किन्तु एक बात समझ मे नही आती।'

'क्या?

'व्यवस्थापक महोदय का स्टाफ के साथ सम्बन्ध तो सब आपके ही द्वारा है।'

'क्या आपका ख्याल है कि मैने उनके कान भरे है?'

'उनके कानो मे सही बात तो आप भर ही सकते थे।'

हसकर उन्होने कहा, 'आप उन्हे पूरी तरह नही जानते। उनके हथकण्डे भी शायद आपको मालूम नही।'

'मैं अपने काम से सरोकार रखता हू।'

'जमाना तो चाहता है कि आदमी काफी चौकन्ना रहे। —मै स्वय चाहता हू कि सब काम नियमानुसार हो, और सबके साथ न्याय हो। किन्तु आजकल तो मोहनलाल ही प्रशासन की आख-कान और मस्तिष्क तक बना हुआ है। मैं भी उनके हाथ का खिलौना बनने पर विवश हुआ हूं।'

'आपकी आत्मा गवाही दे देती है?'

'क्या करू? —मेरा कोई साथी भी तो नही। मुझे अपनी स्थिति की भी तो चिन्ता रखनी पडती है। आप ही मुझे सहायता दे • '

'आपका कोई साथी नही?—यह तो आप ताज्जुब की बात कह

रहे हैं। सुना तो यह जाता है कि आपका एक बडा भारी मजबूत गढ है। निर्माण-विभाग, नियुक्ति-विभाग, लेखा-विभाग, पडताल-विभाग·· '

'क्या कर्मचारी ऐसा कहते हैं ?—कौन कहता है ऐसा ?'

'जी, नाम तो मैं बतलाना नही चाहता !—यो सभी जो बात जानते हैं, उसे कहने वाले एकाध व्यक्ति का नाम बताने से क्या होता है ?'

'अच्छा, मेरे गुट मे किन-किन व्यक्तियो को गिना जाता है ?'

'इन विभागो के सभी कर्मचारी ! यो अटनागर, जूनियर जोशी,—और यह मोहनलाल भी आप ही के दल का गिना जाता है ।'

'अच्छा !—खैर, मैं यह तो नही जानता कि कौन मेरे साथ है, किन्तु यह ज़रूर जानता हू कि कौन-कौन मेरे साथ नही है ।'

'उन्हे अगर आप छोड दे तो शेष सभी आपके हाथ हैं ।'

'आप तो मेरे साथ नही है ।'—आखिर धर्मप्रकाश को स्पष्ट रूप से कहना ही पडा ।

'मैं एक क्षुद्र व्यक्ति हू । मेरे होने न होने का कोई महत्व ही नही है । आप तो जानते ही है मैं सभी दलो से अलग हूं ।'

'आप जिस दल मे भी होगे, वह शक्तिशाली होगा !—यदि आप मुझे सहायता दे, तो मैं आप ही का केस लेकर एडमिनिस्ट्रेशन मे लड सकता हू ।'

'किन्तु एडमिनिस्ट्रेशन का एक खासा अग आप भी तो हैं ।'

'हू, किन्तु सैद्धान्तिक दृष्टि से मै इनके साथ नही हू । मैं इन लोगों को नीचा दिखाना चाहता हू, परन्तु आपके विभाग मे मेरा प्रवेश नही है । नीचा मैं इन्हे आपके विभाग के द्वारा ही दिखा सकता हू । आप यदि सहायता दें तो आपके केस मे काफी दम है । मैं प्रॉमिस करता

'धन्यवाद, मैं दुहरी चाल चलने का अभ्यस्त नही, न ही इसमे मेरी इच्छा होती है ।'

'फिर क्या करेंगे आप ?'

'करूंगा क्या ?—स्टोर्स विभाग मे ही जाना पडा तो जाऊंगा। नौकरी में इच्छा का सवाल ही क्या है बेगर्स आर नॉट चूजर्स।'

'और अपना अधिकार छोड देगे ?'

'नौकरी—गुलामी का अधिकार ?—अगर अधिकार कहते हैं इसे, तो वही से दावा करूगा—और यदि न हो पाया कुछ—तो त्यागपत्र दे दूगा।'

'वैसे ही ?—यदि त्यागपत्र ही देना हो, तो इन लोगो को एक बार तो मज़ा चखा दीजिए। आपके साथ जो-जो ज्यादतिया हुई है, किसी दूसरे के साथ होती · '

'आपकी सहानुभूति के लिए कृतज्ञ हू, किन्तु किसीको मज़ा चखाने जितनी भी मुझे फुर्सत नही है। दूसरे यदि एक आदमी नीचता पर तुल जाए तो मैं भी उससे नीचे उतरने की चेष्टा करू यह मैं नही चाहता। एक दिन उन्हे जब अपनी भूल मालूम होगी, तो आप ही उन्हे अपने किए पर ग्लानि होगी।'

'पर तब तो आपका कुछ बन नही सकेगा ?'

'जब वे देखेगे कि उस भूल का प्रतिविधान नही हो सकता तो उनकी ग्लानि की मात्रा और भी बढ सकती है। रहा सवाल मेरा, सो दूसरे की बला यदि मेरे ही सिर पर गिरे तो गिर लेगी।'

'देखता हू मैंने अपने मन की बात आपसे कहकर धोखा ही खाया।'

मैंने उठकर कहा, 'मि० धर्मप्रकाश ! धोखा चाहे आपने खाया हो पर मैंने नही दिया ! मैं वैसे भी एक क्षुद्र व्यक्ति हू। ट्रान्स्फर हो जाने पर आपके मार्ग से एकदम ही चला जाऊगा। मुझसे डरने की आपको ज़रूरत ही क्या है ? और आज की बात को अवश्य ही आप न भूलेंगे; किन्तु मेरे लिए इसका कोई महत्व नही है। मैं इसे याद भी नही रखूगा। धन्यवाद !' और मैं दरवाजे की ओर मुडा।

जाते-जाते उन्होने कहा ही, 'नही, मैं आपसे नही डरता। आप चाहे

तो व्यवस्थापक महोदय से सारी बाते कह सकते है ।'

'मैं सच बोलकर भी ये बाते नही कह सकता । यह जानता हू कि आप स्वय इस योग्य है कि नई कहानी गढकर मेरे विरुद्ध व्यवस्थापक महोदय को और अधिक भडका दे । उनके कान कौन है और कितने कच्चे है, यह तो मै जानता ही हू ! नमस्कार !'—और मै अपने कमरे मे चला आया ।

८

अटनागर से आप मिल चुके है । आशा है आप उन्हे भूले नही है । उनको और भी नज़दीक से पहचानने के लिए उनके व्यक्तित्व के एक और कोने को भी आपको समझना होगा । इस कोने को पहचाने बिना उनके चरित्र की प्रशस्ति को आप नही अनुभव कर सकेगे। चरित्र का यह कोना है उनकी मा !

मा का नाम जो भी हो, उससे आपका-मेरा कोई सरोकार नही । 'मा' शब्द ही स्वय एक सस्था है जिसका अपना निज का व्यक्तित्व है, उसे और व्यक्तिवाचक शब्द की सहायता से अलग-थलग करके देखने की आवश्यकता ही नही है । अमुक की मां कह देने भर से मा का सारा ही व्यक्तित्व निखर उठता है, इसलिए यहा पर भी अटनागर की मा कह देने से काम चल जाना चाहिए ।

मा नाम के व्यक्ति की ऊमर जानने का भी कोई प्रयोजन नही है, यद्यपि नारी के लिए वर्ष-मान द्वारा उसके व्यक्तित्व की नवीनता को परखने का ही पाठक का आग्रह रहता है । मा बन जाना अपने आप मे नारी की ऊमर का एक प्रतिमान है, चाहे वर्ष-मान द्वारा वह लडकी ही प्रमाणित हो ! जब अटनागर केवल नन्नू ही थे और मा-बाप की गोद से

उतर ही नही सकते थे, तब भी जो मा थी, वह आज भी नन्नू के अटनागर साहब हो जाने पर भी मा ही है, यद्यपि तब की २५ वर्ष की ऊमर का आज की साठ वर्ष की उमर से कोई सामंजस्य नही है।

फिर भी शरीर को जितना साठ वर्ष चर जाते हैं, उतना तीस वर्ष नहीं। और जब कि पूर्व के तीस वर्ष जीवन को उधार देते ही रहते है, उत्तरार्द्ध के तीस वर्षो को ब्याज सहित उस ऋण का परिशोध करना पड़ता है अत तीस वर्ष पूर्व के रग, कद, काति और स्वभाव के बने रहने के बावजूद अटनागर की मा का इन्द्रिय धर्म शिथिल होता जा रहा था। अटनागर साहब निम्न मध्यवर्ग के प्राणी होने के बावजूद उच्च मध्य वर्ग की आदतें ग्रहण करना चाह रहे थे, किन्तु अटनागर की मा की गृहस्थी सामाजिक दृष्टि से निम्न मध्यवर्ग की होने पर भी आर्थिक स्थिति मे निम्न वर्ग की ही थी। वह युग ही ऐसा था कि जीवन की आवश्यकताए तो सुलभ थी, किन्तु पैसे को परमात्मा समझकर दात से पकडे रहना ही पडता था। अत· अटनागर की मा ने गृहस्थी के सभी काम अपने हाथो ही किए थे। इसके बाद भरी जवानी मे विधवा होकर एक पुत्र का हाथ पकडे जब वह इस दुखी ससार-सागर के किनारे खडी हुई तो स्वभावत ही लोगो ने कहा कि 'चलो, बेचारी को एक सहारा तो है! किन्तु पाच-सात वर्ष के बाद ही जब वह 'सहारा' स्कूल जाकर अपने हठ और इच्छाओ को मां पर डालने लगा, तो सभी को लगना स्वाभाविक था कि यह लड़का उस बेचारी के लिए ससार-सागर की नाव तो न हुआ, हा उस निरवलम्ब डूबती दुखिया का बोझ अवश्य बन गया। दुखिया ने इसे क्या समझा, यह कोई भी मा बता सकती है, समझ सकती है। जो हो, अटनागर पढ़-लिखकर बडा हुआ, नौकरी की, और विवाह भी किया—इस सबका कर्ता वह स्वय है, यह आप जानते ही हैं। यदि मा थी, तो वह पर्दे के पीछे ! उसे केवल मां जानती है या बेटा और जो सब कुछ जानता है, वह आपको जनाने के लिए व्यग्र नही है।

मां को सुनाई कम पडता है, इससे विशेष कुछ असुविधा नही है,

यदि कुछ है तो उन लोगो को जो मा को कुछ सुनाना चाहते हैं, उन्हें कुछ बल लगाकर बोलना पडता है। मा को जिससे असुविधा है, वह है आखो की ज्योति की क्षीणता ! इससे भी किसी तरह काम तो चला ही रही थी कि एकाएक भटनागर शरीर से अधिक मन की बीमारी लिए बम्बई होते हुए घर लौटे। भटनागर शारीरिक रूप से कितने दुबले हो गए है, मा के लिए आखो से देखकर विश्वास करने का मूल्य न था, किन्तु भटनागर ने ज़रा बल लगाकर, कानो द्वारा मा को अपनी अस्वस्थता की प्रतीति करा दी। बुढिया की नाव किनारे आकर डगमगाने लग गई।

मा ने कहा 'बहू को क्यो नही ले आया नन्नू ?'

'मा, उसकी पढाई चल रही है।'

कमला को दोष देने के कोई मानी नही है, सास-बहू मे न बनना गृहस्थी का सामान्य-सा नियम ही है, कमला अपवाद क्यो बनने लगी ? मा ने भी समझ-बूझकर अपने पैतृक घर मे ही रहना मजूर किया था, चाहे बेमन से ही सही। फिर भी मा-बेटे की पारस्परिक आसक्ति की सीमा न थी। मा की तरफ से हो, उसमें तो कोई आश्चर्य है ही नही, किन्तु इस बीसवी सदी मे पुत्र की तरफ से भी वही बात हो, यह ज़रा आश्चर्य की बात हो सकती है, खासकर तब जब कि सास-बहू मे इस आसक्ति को लेकर भी (ही !) दुरासक्ति की सीमा नही है।

क्षीण आखो से दृश्य को स्पष्ट करने के लिए मा ने पुत्र के मुह को बिलकुल आखो के सामने कर लिया। आखो से तब भी कुछ साफ नही दिखाई दिया तो मा ने आखें बन्द कर ली और बेटे के गालो पर अपने अधर रख दिए। बन्द आखो से ही उसे सब कुछ दिखाई दे गया। उसने उसके सिर को अपनी धडकती हुई छाती मे छिपा लिया, आखो मे आसू भर आए और कापते अधरो से वह केवल बोल सकी :

'नन्नू, मेरे लाल, कितना दुबला हो गया है !—कैसा सफेद फक चेहरा पड गया है मेरे बाच्छा !'

'चिन्ता करने की कोई बात नही है मा !—मै जल्दी ही अच्छा भी हो जाऊगा।'

यद्यपि बेटे ने ज़रा ऊची आवाज़ ही मे कहा था, फिर भी मा के कानो मे शब्द और स्वर कुछ टेढे-मेढे ढग से ही प्रवेश पा सके, स्वाभाविक था कि उनका मूल अर्थ भी गडबडा जाए। मा ने समझा 'चिन्ता करने की बात तो है मा, मै जल्दी अच्छा भी हो पाऊगा ?'

भरे हुए आसू झरने की तरह टपकने लगे। चेष्टा करके बोली, 'तो इतने दिन तक मुझे खबर क्यो नही दी नन्नू !—बहू की नाक बडी है, तो मैं तो मा हू। अपनी नाक रखने के लिए वह सिन्दूर की परवाह न करे पर अपनी नाक के लिए मै तो अपना पेट नही काट लूगी !' एक क्षण चुप रहकर बोली, 'खैर, तू चिन्ता मत कर ! मैं जब तक ज़िन्दा हू, क्या तुझे डर है ? आजकल अर्जुनदास जी वैद तो नज़र नही आते, लेकिन उनका लडका मथुरादास भी कम होशियार नही है। और अभी मैं रामद्वारे वाले बाबाजी से कहकर ताबीज बनवा देती हू। कलियुग है तो क्या हुआ ? मा के रहते बेटे को क्या हो सकता है ?—सारा मुह सूख गया है, कुछ नाश्ता कर ले तो रास्ते की थकावट मिट जाएगी।'

बेटे को कुछ भी बोलने का अवसर न देकर मा लौटी, पास ही दरवाज़े की ओर नन्नू का भारी सूटकेस रखा हुआ था। भावाविष्ट नन्नू बाबू ने देखा कि मा उसी ओर बढ रही है, शायद उसे उठाकर एक ओर रखना चाहती हैं, किन्तु तभी मा उससे टकराकर, नन्नू बाबू आगे बढे-बढे, तब तक सूटकेस पर उलटकर फर्श पर गिर पडी, मुह से निकला—'हाय राम, दीखा ही नही कि क्या पडा है !'

लपककर नन्नू ने मा को उठाया, चोट विशेष नही लगी थी। सभलकर मा ने हाथो से नन्नू के चेहरे को टटोलकर कहा—'घबरा मत बेटा, कोई ज्यादा लगी नही। दिखाई ज़रा कम देता है न ! और इधर अधेरा भी तो है न।'

नन्नू बाबू को खयाल तो था कि मा को कुछ कम दिखाई देता है

किन्तु इतना कम, इसकी उन्हे कल्पना नही थी । मा को देखे ही दो साल हो गए थे । मा की यह हालत हो गई थी और उन्होने उसकी सुधि ही न ली ?—आखो मे उनकी भी आसू तैरने लगे पर वह जान गए थे, मां उन्हे नही देख सकती थी । बोले, 'मां, तुमने तो कभी अपनी आखो के बारे मे लिखा नही । तुम्हारा पहले वाला चश्मा क्या हुआ ?'

हसकर मा ने कहा 'चश्मे को ढूढने के लिए भी तो आखे चाहिए न !—और ढूढकर भी क्या करती, जब कि दिखाई देना उससे भी बन्द हो गया ! तू फिकर न कर, सब ठीक हो जाएगा बेटा ।'

यदि मा ने लिखा होता, तो आगे के नम्बर का चश्मा अटनागर जरूर भिजवा देते । खैर, अब भी बम्बई वे एक्स्प्रेस लेटर लिखकर चश्मा तो मगवा लेगे, पर मा ने उन्हे लिखा क्यो नही ?

उठने का उपक्रम करती हुई मा ने कहा, और कहते-कहते ही फिर उनकी आखे भर आईं, यद्यपि अधरो पर उनके मुस्कान थी, 'आज तो यह गिरना भी बड़ा सुख का कारण हुआ है बेटा !'—और मन मे कहा, 'आखो के अभाव मे कितनी बार इस मकान मे गिरकर मैंने सिर फोड़ा है, यह अब तक किसीने देखा है ? यदि इस तरह गोद मे उठाने वाला कोई हो और खासकर पेट का बेटा ही हो, तो कितनी बार मै गिरना नही चाहूगी ?'

बम्बई के डाक्टरो का उपचार तो चलता रहा और यद्यपि गण्डे, ताबीज तथा वैद्य-हकीमो की दवाओ पर विश्वास करना अटनागर साहब बिलकुल मूर्खता और फूहड़पन समझते थे, किन्तु अब उनके गले और बाह मे कितने धागे उलझकर एकाकार हो गए थे, इसकी गणना खुद वे नही कर सकते थे, और कितनी तरह के पाक-भस्म, याकुति आदि खा चुके थे, इसका कोई लेखा न था । मा के प्रति अदम्य भक्ति, या बीमारी के कारण उत्पन्न आत्मविश्वास का अभाव, इन दोनो मे कौन उनके इस परिवर्तन का कारण है, यह अटनागर तो बड़ी सरलता से

बता देते थे, किन्तु उसपर विश्वास करना शायद औरो के लिए सम्भव न हो।

जो हो, गाड़ी इसी तरह चलती रही। मा को ऊचे नम्बर के चश्मे से भी विशेष लाभ नही दिखाई दिया, यद्यपि मा कहती रही कि चश्मा उनको ठीक लग गया है। और यद्यपि चक्षु-कर्णहीन मा की दृष्टि और श्रवण मे अटनागर बाबू स्वस्थ होते गए, अपनी और दूसरो की दृष्टि मे क्षय की उनकी बीमारी बढती गई, बढती गई और वे अनुदिन क्षय से क्षीण होने लगे।

कमला को वे पत्र बराबर लिखते रहते है। कमला का उत्तर भी यदा-कदा आ ही जाता है, पढने मे बहुत व्यस्त है वह, फिर भी समय निकालकर कुछ पक्तिया लिख ही देती है। परीक्षा सिर पर है। लेकिन कुछ दिनो से उसके पत्र की भाषा कुछ अजीब-सी लगती है। जो बात वे पूछते हैं उसका जवाब नही। वैसे कमल उसका खयाल रखता ही है, दादू वहा पर है ही, चिन्ता करने की कोई बात नही है। फिर भी मानो अटनागर की प्यास कमला के दो-चार पंक्तियो के औपचारिक पत्र से तृप्त होती दिखाई नही देती। वह नये युग के रोमान्सवादी युवक है, टी०-बी० के पेशेन्ट हैं तो क्या हुआ? दुनिया मे हर तीन मिनट मे एक आदमी इस रोग से मरता है, तो हर मिनट मे एक आदमी बीमार जरूर ही पडता होगा—सच तो, यदि नन्नू बाबू जैसा स्वास्थ्य-परीक्षण हो तो कौन माई का लाल इस रोग से मुक्त प्रमाणित होगा! और जब टी०-बी० ही के नही, बीवी-रोग के भी वे बरखुरदार वैसे ही रोगी हैं तो कोई कारण नही कि कमला उन्हे ऐसा लव लेटर न लिखे कि मित्रो को तो दिखाया जा सके। प्रभाकर की परीक्षा वे दे ही चुके हैं, पास भी हो ही जाएगे! 'कमलाज़ लव लेटर्स' नाम से एक पुस्तक छपवाई जाए तो कैसा हो?—वह ओझा का बच्चा ही बडा साहित्यिक की दुम बन रहा है। यह पुस्तक फिर अग्रेज़ी मे निकले तो मजा आ जाए!

उधर का हाल जो हो, इधर के हालचाल दिन-ब-दिन बदलते जा

रहे हैं। घर मे दो नौकरानिया हो गई हैं; एक खाना बनाती है, दूसरी बरतन-चौका। बाज़ार से सौदा-सुलुफ के लिए एक लडका अलग काम करता हे। इनका खर्चा कुछ विशेष नही। मवई-गाव मे ऐसे काम करने वाले सरलता से मिल जाते है। यद्यपि मा नौकर रखने के पक्ष मे बिलकुल न थी, किन्तु नन्नू बाबू को मा की असुविधा की अपेक्षा अपनी प्रतिष्ठा का अधिक ख्याल था, और मा यह सोचकर गद्गद् हो गई कि बेटे को मा की सुविधा और सुख का कितना अधिक ख्याल है। बेटा मा की परवाह करता है, इसमे बढकर सुख मा को किस बात से मिल सकता है।

किन्तु तब भी मा की व्यस्तता की सीमा नही है। वे पुराने ज़माने की गृहस्थिन है। आखो से उन्हे चाहे नौकरानी न दिखाई दे, पर उसके निकाले हुए झाड़ू मे उन्हे कोने मे बचा हुआ कचरा सरलता से दिखाई दे जाता है, बरतनो की चमक के बारे मे भी वे शिकायत करने से चूकती नही, और तब तक उन्हे सतोष नही होता, जब कि वे खुद ही एक बार और अपने ही हाथो वही काम पूरा नही कर लेती, और महरी के होते हुए भी नन्नू के लिए स्वय खाना बनाना उनकी जीवन की आकाक्षा का एक भाग ही है।

कहा जा चुका है कि उनके पिता स्वर्गीय नन्दलाल जी भटनागर कस्बे के गिरदावर थे। सरकारी तनख्वाह तो कोई वैसी न थी, किन्तु फिर भी आमदनी का अभाव न था। लगभग डेढ दर्जन पटवारी उनके मातहत थे। मालगुजारी की वसूली, पट्टो की अदला-बदली, दखल-बेदखल आदि-आदि कई नुसखे उनके पास थे। इसके अलावा हर मौसम पर मौसमी जिन्सो की आमद से घर के बखार भरे रहते थे। कस्बे के सुनार-लुहार सब घरू नौकर थे, जब जिससे जो चाहा वसूल किया। उन दिनो भी गावो मे इसी तरह श्रमदान, धनदान, भक्तिदान, आदि दानो का रिवाज था, और पटवारी-गिरदावर-अमले भूमिदान करते थे। मतलब यह कि नन्नूबाबू के पैतृक घर मे किसी चीज़ की कमी तो थी

ही नही, बल्कि बहुतेरी अनावश्यक वस्तुओ का अम्बार भी लगा हुआ था। किसी पेटी मे लोहे के कीले-नकूचे, किसी गाठ मे पुराने सरकारी कागज़ो का ढेर, किसी पेटी मे बरसो से जमा की हुई स्टेशनरी, दवात-कलम, पेसिल—नन्नू बाबू ने अपने स्कूल के दिनो मे स्टेशनरी के नाम एक पैसा भी खर्च नही किया था, और अब उन्हे स्वय भी उससे बढिया स्टेशनरी मिल जाती है—कुछ पेटियो मे पिता जी के कपडे, एक पेटी मे खेत नापने की जरीब, सर्वे करने के गुनिया, थियोडोलाइट, ग्लास, जाने क्या-क्या औज़ार-अपरेटस पडे हुए थे। एक दूसरे कमरे मे बरतनो के बोरे, पीतल की दो कोठिया, बच्चो के खेलने की गाडी, घोडे आदि खिलौने, और कुछ एक पुराना फर्नीचर जिनमे तीन-चार धूल जमी कुर्सिया, दो-एक टूटी टांग के स्टूल, दो-तीन चीड के बक्से, तथा एक भारी गोल टेबल। अपनी सूनी गृहस्थी मे मा हमेशा इन्ही चीज़ो मे व्यस्त रहती थी। वे अधी होती जा रही थी, किन्तु उन्हे स्पर्श ही से प्रत्येक वस्तु का बोध हो जाता था, प्रत्येक छोटी से छोटी, अजीब से अजीब वस्तु को वे केवल स्पर्श से पहचानकर उसके रूप-रग-आकृति सबका ऐसा वर्णन कर सकती थी कि देखने-सुनने वाले को उनकी चक्षु-हीनता का विश्वास ही नही होता था। और वे दिनभर इधर की वस्तुएं उधर, और उधर की इधर रखने ही मे दिन, माह, वर्ष बिता रही थी। उनका यह कार्यक्रम अब भी अव्यवस्थित नही हुआ था। यह किए बिना उन्हे चैन नही पडती थी। मानो इस स्पर्श के प्रभाव से ही वे अपने वर्तमान जीवन की शून्यता को अतीत के वैभव से भरकर मगन थी। यह उनके जीवन का एक अग हो गया था।

नन्नू के घर आने पर इस स्पर्श-सुख मे एक और वृद्धि हो गई थी। कुछ दिन तो हर वस्तु से नन्नू का परिचय कराने मे बिताए। नन्नू को अनुभव हुआ कि मां को प्राचीन वस्तुओ की इस धर-पटक मे एक अव्यक्त परितृप्ति अनुभव होती है, तो वे भी मां के इस कार्य मे योग देने लग गए। और भूत से उनका सम्बन्ध इतना गाढ़तर होने लगा कि मा

की कल्पना मे वे एक छोटे शिशु-सा व्यवहार करने लगे। इसी तरह मगन रहकर मा-बेटे दोनो ही नन्नू के गिरते हुए स्वास्थ्य को ठेगा बताने मे व्यस्त थे, और पल-पल की बूदो से समय का तालाव भर-भरकर सप्ताह और सप्ताह से महीना बनता जा रहा था।

उस दिन पलग पर लेटे हुए नन्नू बाबू डाक पढ रहे थे। दो पत्र थे, यद्यपि एक ही लिफाफे मे थे। एक था मिसेज़ भटनागर का, दूसरा कमलनयन का। इस बार तो मिसेज़ भटनागर का पत्र भी काफी लम्बा था, और कमलनयन का पत्र भी महत्वपूर्ण था। रेलवे के विलीनीकरण से उत्पन्न कर्मचारियो की, विभिन्न वेतन-स्तरो मे नई प्रस्थापनाओ (फिक्शेसन) का वर्णन था, काफी महत्वपूर्ण सूचना थी। इसीको पहले पढना चाहिए, जाने कैसी प्रिय-अप्रिय सूचना उनके स्वय के बारे मे हो। कमला का पत्र बाद मे पढने से अच्छा रहेगा। यदि कमल का पत्र अच्छी सूचना लिए होगा तो कमला का पत्र उसमे मिठास की वृद्धि करेगा, यदि कमल का पत्र कड़ुवा हुआ, तो कमला के पत्र से वह कड़ुवाहट कम ही होगी।

कमल ने लिखा था कि प्रस्थापनाए प्राय उसी रूप मे स्वीकृत हो गई है, जिस रूप मे यहा से उनको प्रस्तावित किया था, कम से कम वर्तमान के प्राप्तव्य वेतन मे किसी भाति का तूल-अरज नही किया गया था। जिस वेतन-स्तर मे किसीको प्रस्थापित किया गया है, यदि उसका प्राप्तव्य वेतन उससे अधिक है, तो अतिरिक्त वेतन को उसके व्यक्तिगत वेतन के रूप मे स्वीकार कर लिया गया है। यही नही, प्रकारान्तर मे दोनो प्रकार के वेतन-स्तरो को स्वीकार करके यह विकल्प स्वीकार कर लिया गया है कि कोई कर्मचारी चाहे तो अपने पुराने वेतन-स्तर को कायम रख सकता है, किन्तु उस अवस्था मे नियुक्ति की पुरानी शर्तें ही उसके लिए लागू होगी। उन्नति के अवसर पर उसे नये वेतन-स्तर को ही स्वीकार करना पडेगा। यदि नये वेतन-स्तर को वह स्वीकार न करे, तो उसे तरक्की नही मिलेगी, और दो बार इस प्रकार इनकार कर देने पर

भविष्य मे उसकी तरक्की के सब अवसर रुद्ध हो जाएगे।

अटनागर को प्रधान लेखक के वेतन-स्तर मे स्वीकार कर लिया गया ह। सहज ही वे अपने कई धुरीणो से और प्रतिद्वद्वियो से धुरीण बन गए है। कमलनयन को तृतीय श्रेणी से उबारकर द्वितीय श्रेणी मे ला बिठाया गया है, जो मि० अटनागर तथा मि० धर्मप्रकाश की कृपा के कारण ही सभव हुआ है, इसके लिए कमल ने अनेक प्रकार से अपना आभार भी प्रदर्शित किया है। नन्नू के अधरो पर अनजाने ही चाटुकारिता का सहज सतोष व्याप्त हो गया। अकेले थे, फिर भी उनके अधर १८०° के कोण पर फैल ही गए।

अटनागर आगे पढने लगे। समाचार अवश्य ही आनन्द देने वाले थे। राधावल्लभ ५६ वर्ष के हो चुके थे। रियासत की नौकरी मे साठ साल तक काम करने का रिवाज़ था। ५६वा वर्ष पूरे करने को उन्हे सात महीने शेष थे। उन्हे एक वर्ष का विस्तार स्वीकृत किया गया, जिसका तात्पर्य यह है कि सात महीने के बाद वे अवकाशस्थ हो जाएगे। ऐसे व्यक्ति की प्रस्थापना का कोई महत्व नही है।

कृपानारायण जोशी—के० एन० जोशी ने कैलेण्डर का दसवा पत्ता भी तोड लिया है। उसकी बीवी पीहर है, डिलीवरी वही हुई है, सिन्धी लडकी से उसकी दोस्ती का गुल भी खिलने वाला है। यह परेशानी तो है ही, उधर प्रस्थापना की परेशानी भी उसपर सवार हो गई है, उसे तृतीय श्रेणी के स्तर मे प्रस्थापित किया गया है। उसकी शिकायत है कि उसके और मेरे (कमल के) नामो के प्रथमाक्षरो की समता के कारण दोनो मे फेर-बदल हो गया है।—पढकर नन्नू बाबू को काफी रस प्राप्त हुआ, यही सोचकर तो उन्होने कमलनयन जोशी के नाम को भी के० एन० जोशी ही लिखा था।

व्यवसाय-विभाग से नानकचन्द को स्टेशन पर माल बाबू की जगह बदल दिया गया है। धर्मप्रकाश बाबू की स्थायी प्रस्थापना तो हुई है कार्यालय-सवीक्षक (आफिस-सुपरिन्टेन्डेन्ट) के पद पर, किन्तु अस्थायी रूप

से उन्हे अधिकारी के पद पर कार्य करने का अधिकार दे दिया गया है।—पढकर नन्नू बाबू विचारमग्न हो गए। मिस्टर धर्मप्रकाश को अवश्य अपना केस रिप्रेजेण्ट करना चाहिए। और भी अन्य लेखको की प्रस्थापनाओ के बारे मे पढकर नन्नू ने पत्र रख दिया। शायद दूसरे विभागो की प्रस्थापनाए अलग से आई होगी। कुछ क्षणो तक सारी परिस्थिति का चित्र कल्पना की आखो मे उतारकर वे फिर मुस्कराए, राधावल्लभ, कृपानारायण आदि की मुखमुद्राओ की कल्पना करके। कधे उछालता हुआ, कूल्हे मटकाता हुआ वह कृपानारायण, मु ह मे तम्बाकू का थूक भरे हुए वह भगेडी, जोरू का गुलाम कहने वाला राधावल्लभ, अच्छा हुआ! नन्नू को इतना शीघ्र उनके किए का फल पाने की आशा नही थी।

उसने कमला का पत्र उठाया।

दुपहर हो चुकी थी। चौका-बरतन करने वाली महरी से कुछ झडप कर लेने के बाद मा एक ट्रक लिए बैठी थी। धूप निकल जाने से उन्होने सोचा कि ट्रक के कपडो को यदि धूप दिखा दी जाए तो कैसा हो? नन्नू को आवाज दी, 'बेटा?'

नन्नू ने उत्तर दिया, 'क्या है मा?—खाना निबट गया?'

'खाना तो क्या निबटेगा। तूने यह महरी लाकर मेरी तो मुश्किल कर दी। इसमे कोई काम भी होता है?—या तो दिनभर बैठे रहना या कोई काम हो तो चीटी की चाल से करना। इस महीने के कितने दिन और बाकी है?—अगले महीने से इसे छुट्टी दे दे।'

हसकर नन्नू बाबू ने कहा, 'ठीक है मा!—पहली तारीख को अब भी २६ दिन है। तब तक तो काम चलाओ। न होगा, तब तक दूसरी महरी तलाश कर लूगा।'

'नही, नही; महरी की जरूरत क्या है? महरी से कोई गृहस्थी का काम चलता है बेटा! क्या कह रहा है तू?—जरा धूप निकल गई है। ये कपडे धूप मे फैला दू, अगर तू जरा इधर आ जाए।'

'मा, दो-चार चिट्ठिया देख लू—और एकाध का जवाब भी देना है।

न हो तो आज रहने दो मां !—कुछ-कुछ बादल भी दिखाई दे रहे है, अगर कही बरसात हो गई।'

'सुनो इसकी बात !—बरसात हो जाएगी। अरे पगले, बरसात यो ही थोडे हो जाती है। पर रह तू !—मैं खुद ही कर लूगी।' और मा ने ट्रक को खीचना शुरू किया।

नन्नू के हाथ मे कमला का पत्र, कानो मे ट्रक के घसीटने की आवाज, ाखें दरवाज़े की ओर—कमला ने लिखा है, 'माइ डियर लव—' ज़रूर ।।ज वह अच्छे मूड मे होगी—किन्तु मा यह क्या कर रही है ? कही ठोकर लग गई तो ? कमला के पत्र को हाथ मे रखे हुए ही नन्नू अपने आपको रोक न सके, उठ बैठे और चाहा कि मा को मदद करने के लिए जाए। सामने से घूमर काकी ने प्रवेश कर पूछा, 'जीजी ! जीजी कहा है ?'

नन्नू बाबू पुन पलग पर बैठ गए और उन्होने पीछे चौक की ओर इशारा कर दिया। घूमर काकी चौक मे चली गईं।

कमला का पत्र यद्यपि बडे उत्साह के साथ प्रारम्भ हुआ प्रतीत होता था किन्तु वाद मे उसमे कोई विशेष बात न आ सकी। यदि इस पत्र को प्रस्तावित 'कमलाज़ लव लेटर्स' मे सम्मिलित किया जाए तो भटनागर को काफी परिश्रम करना पडेगा। सम्भव है खत का मजमून ही एकदम बदल जाए। कमला मजे मे है सो तो ठीक है किन्तु यदि बीमार होती —कम से कम बीमार होने का बहाना तो करना ही चाहिए था—आखिर प्रेम की परीक्षा के लिए और रोमान्स को दोबाला करने के लिए उसे यह तो लिखना ही चाहिए था कि जब से आप गए हैं मेरा मन नही लगता, जी बेचैन-सा रहता है, खाना नही रुचता, रात को नीद नही आती— तो और अधिक ठीक होता !

पगली कही की ! धर्मप्रकाश और कमल के बारे मे लिखा सो तो माफ किया जा सकता है किन्तु प्रेम-पत्र मे दादू के उल्लेख की क्या है। ठीक है, नौकर है तो काम तो करना ही चाहिए; और

अच्छा काम करता है तो उसमे आश्चर्य क्या है ? हर नौकर को काम तो अच्छा ही करना चाहिए। जो नही करता वह नमकहराम है।—कमल के द्वारा उसने धर्मप्रकाश से कहलवाया है कि उसे एक पेशगी तरक्की दी जाए। खूब कमला ! तुम तो सचमुच एक कारवरदार अमला हो गई हो ! सिफारिश करना भी सीख गई। यो मैं खुद भी आकर सिफारिश कर सकता था। और कमल ? उसे द्वितीय श्रेणी मे बैठाने का श्रेय किसे है ? यदि वह कमला के सुख का ध्यान न रखेगा तो रखेगा कौन ? इसे कहते है एडमिनिस्ट्रेशन—शासन, क्या खाकर कोई जानेगा इन हथकडों को ? उनकी तो यह पैतृक विशेषता है। कायस्थ, चित्रगुप्त की सन्तान के अतिरिक्त यह श्रेय किसीको कभी मिला है क्या ? धर्मप्रकाश भी मेरी मुट्ठी मे आ गया ! जादू वह जो सिर पर चढकर बोले।—मिस्टर भटनागर ही नही, मिसेज़ भटनागर को भी खुश रखना होगा मिस्टर धर्मप्रकाश, यदि यह चाहो कि तुम्हारे काले कारनामो को समुचित सहारा मिल जाए !—और तुम इसे खूब समझते हो, इसकी मुझे खुशी है। मुझे काम पर आ जाने दो, तुम्हे आफिसर ग्रेड मे यदि कन्फर्म न करवा दू तो मेरा नाम ! ये जो तीन-चार आफिसर है, वे तो नये भरती हुए है, उन्हे क्या मालूम उनकी सर्विस-फाइलो मे क्या लिखा है।

और मैं ?—देखते जाओ। तेल देखो तेल की धार देखो ! कई धुरीण लेखको को लाघकर जब अनायास ही प्रधान लेखक बन सका हू, अपने बूते पर—तो भविष्य तो मेरा है ही। कुछ अच्छी बैक ग्राउण्ड नही थी वरना इस धर्मप्रकाश ही मे क्या योग्यता है ? बी० ए० का सर्टी-फिकेट ही तो है। पाकिस्तान से लौटे हुए कई साक्षरो के डिग्री-सर्टि-फिकेट पाकिस्तान मे ही रह गए। यूनिवर्सिटियो का रेकार्ड नष्ट हो गया। वे क्या करे बेचारे ? तो क्या उनकी डिग्रियो को कोई इनकार करता है ?—और मैं तो पढा-लिखा—चाहे टेस्ट ले लो और अनुभव ? दिन आने दो—देखता हू—और वह भी देखे कि कितनी जल्दी मैं गजेटेड रैंक मे प्रविष्ट करता हू।

उधर मा घूमर काकी से कह रही थी, 'क्या बताऊ बहू ! नन्नू के बिना उसके दफ्तर का काम कहा चलता है ?—देखो न, तबियत खराब है, छुट्टी लेकर बैठा है पर रोज सरकारी कागज वहा से डाक से आ जाते है। कहता है, बडे साहब तब तक कागज पर दस्तखत नही करते जब तक नन्नू अपने दस्तखत न कर दे। साहब का ही तो काम करता है।'

'और क्यो जीजी, नन्नू बाबू को तो रेल मे बैठने का टिकट नही लगता होगा ?'

'उसका क्या, मेरा भी नही लगता। और सजन किलास मे बैठते है हम लोग !'

'सजन किलास क्या और लोगो से जल्दी पहुचता है जीजी ?'

मालूम पडा मा घूमर काकी के अज्ञान पर हस दी और बोली, 'सजन किलास आगे कैसे जा सकता है, वह तो उसी रेलगाडी का ही एक हिस्सा होता है !'

'अच्छा !—तो उसमे क्या बडी बात होती है ?'

'उसमे किराया ज्यादा लगता है ! · '

'पर तुम्हे तो देना ही नही पडता न !'

'सो तो इसलिए कि नन्नू रेल मे बडा बाबू है, साहब है। उसमे बिछौना बिछा रहता है, काच लगा रहता, पखे होते हैं। तीसरे दर्जे मे यह थोडे ही होता है !'

'नन्नू बाबू की तब तो बहुत बड़ी नौकरी है जीजी ! तुम तीरथ जात्रा कर आओ न ! तुम्हे तो रेल का किराया कुछ लगेगा नही।'

'क्या कहू बहू ! फुरसत ही नही मिलती। मैं चली जाऊ तो बाप-दादो के इस झोपडे की देख-रेख कौन करे। चोर-उचक्के कल यह सामान यहा से गायब कर दे। नन्नू को तो इसकी कोई परवा ही नही है। उसे तो जानती हो, वहा सरकारी बगला मिला हुआ है, बगला। चार-चार कुर्सिया हैं, टेबल हैं, जाजमे हैं, परदे है और मकान मे बिजली जलती है, बिजली। पास मे दो नौकर हैं जो घर का काम करते हैं। राजा है मेरा

बेटा राजा !—अपने हुकम से चलती रेलगाडी को रोक सकता है ।'

अपनी मां के मुह से अपनी तारीफ सुनकर नन्नू बाबू पलग पर लेटे-लेटे ही गद्गद हो गए । भूल गया कमला का पत्र, भूल गया दफ्तर का कमरा और उसके कर्मचारी तथा अपने भविष्य का सुनहरा प्रकाश । रह गई केवल मा की ममताभरी वह स्वर्ग-सृष्टि, जिसमे बेटा राजा होकर मानो अनन्त ऐश्वर्य का उपभोग कर रहा है ।

नन्नू बाबू मानो तन्द्रा से जागकर इधर-उधर देखने लगे । हाथ मे तब भी कमला का पत्र था । शेष मे लिखा था कि पाच दिन बाद उसकी परीक्षा प्रारम्भ हो रही है । परीक्षा २१ दिन चलेगी । बीच मे अवश्य कई गैप्स हैं, किन्तु वह चाहती है कि मनोयोगपूर्वक अध्ययन करे । इस लिए अब शायद एक माह तक वह पत्र नही लिख सकेगी । नन्नू बाबू उसके लिए चिन्ता न करें । कमल हैं ही, यदि किसी बात की आवश्यकता हुई । घर पर दादू मुस्तैद है । और इतने पर भी कोई बात हुई ही तो वह जरूर नन्नू बाबू को खत लिखेगी ।

घूमर काकी को घर लौटना था । राजा जैसे नन्नू का वैभव वह सुन चुकी थी, इस पृष्ठ-भूमि मे नन्नू बाबू को एक बार और देख लेना उसके लिए आवश्यक हो गया । लौटने से पहले वह नन्नू के कमरे मे आकर बोली, 'नन्नू बाबू, मजे मे तो हो ?'

नन्नू बाबू कल्पना की आखो से कमला की छवि को निरख रहे थे । मैट्रिक का रिजल्ट आउट होने पर उसके चेहरे पर जैसा उल्लास होगा, वह तो ठीक है, पर उनके स्वय के चेहरे पर कितनी दीप्ति होगी, वह बिना काच के ही स्पष्ट देख रहे थे ।

चौंककर उन्होने कहा, 'अ ! कौन ? ओ घूमर काकी !—मेरा ध्यान कही दूसरी तरफ था····'

न देखकर भी सब कुछ देखते हुए पीछे से मा बोली, 'कहा न था मैंने बहू !—उसे सरकारी काम से फुरसत ही नही मिलती । बिल्कुल अपने बाप को गया है । देखती थी न, आधी-आधी रात तक किसान-

पटेलो के साथ कागज काले करते रहते थे। दिन भर खाने को फुरसत नही मिलती थी, और न रात को सोने की। —मेहनत ने ही तो उनको इतनी जल्दी आधी उमर मे ही भगवान के घर भेज दिया ! और यह भी, मेरी कोई सुनता थोडे है। कहती हू, राज का काम है तो क्या हुआ। जान है तो जहान है, कोई सोने के कडे तो नही पहना देगा। —कैसा मुह सूख गया है। …'

और मा ने आगे बढकर इशारे ही इशारे से नन्नू का मुह अपनी बाहो मे भर लेना चाहा। नन्नू का कमरा कुछ अन्धेरे मे था, और फिर मा बाहर प्रकाश मे आई हुई थी, अपनी कच्ची आखो से शायद कुछ देख न सकी, और आगे बढने के प्रयास मे पलग के पास से ठोकर खा गई।

नन्नू ने मा को गलत दिशा मे बढते हुए देख लिया था, अत उसे निवारण करने के लिए खुद भी शीघ्रता मे उठे। पलग से नीचे पैर दिया, पैर मे एकाएक झुनझुनी-सी अनुभव हुई। रक्त-प्रवाह के बन्द हो जाने से पैर सो गया था, अत जागे हुए और शीघ्रता मे लपककर मा को बचाने वाले बेटे का वजन न सह सका। इधर मा पलग से भिडी, और उधर नन्नू बाबू जमीन पर लुढक गए। कुछ सम्हल गए, इसलिए सिर को अधिक चोट न लगी, किन्तु पसलियों मे गहरा आघात लगा। घूमर काकी एकाएक घबरा उठी। —पहले किधर सम्हाले—मा मच्छर-दानी के डण्डे से सिर टकरा बैठी, उनके कान पर टिका हुआ दलदार काच का चश्मा, टुकडे-टुकडे होकर कुछ फर्श पर और कुछ पलग पर बिखर गया था। गिरते-गिरते भी नन्नू बाबू यह देख चुके थे। अत: घूमर काकी को परेशान होते देखकर बोले—'काकी, मा को सम्हालो पहले—कही काच आख-वाख मे तो नही लग गया।'

मा ने आवाज से अनुभव किया कि नन्नू गिर पडा है, बोली, 'नही-नहीं, मुझे कोई चोट नही लगी। पर नन्नू को क्या हुआ ? —कैसे गिर पडा वह बहू ! चोट कहा लगी नन्नू ?'

कोशिश करके नन्नू बाबू उठे, किन्तु इसके साथ ही उन्हे एकाएक खासी का दौरा पड गया। छाती को दवाकर खासते-खासते जब कुछ गले मे बलगम-सा अटका मालूम दिया, तो पलग के नीचे पडी पीकदानी उठाकर उसमे थूक दिया। यद्यपि और किसीने नही देखा, किन्तु नन्नू की आखो से छिपा न रहा कि उनके बलगम मे लाल रंग का चिकना पदार्थ कम मात्रा मे नही था।

नन्नू को मालूम न हुआ कि कब से मा उनकी पीठ पर हाथ रखे बैठी हुई है। जब उनका हाफना कुछ मन्द हुआ तो मुडकर उन्होने मा के चेहरे पर दृष्टि डाली। पुत्र के कष्ट की सीमाहीन दुश्चिन्ता से उनका सुन्दर चेहरा एकदम से रक्त-शून्य और विश्री हो उठा था। चेहरे पर सदैव बना रहने वाला चश्मा भी अब गायब हो चुका था। नन्नू के हृदय को बडी पीडा पहुची। मुस्कराने की चेष्टा करते हुए बोले, 'मा, तुम इतनी व्याकुल क्यो हो गईं ? —अरे, एकदम जो उठा, तो ध्यान ही नही था कि पैर सोया हुआ है। इसलिए गिर पडा—पर गिरते ही उठ भी तो गया।'

'और यह खासी ?'

'खासी तो—खैर शरीर है मा—हो ही जाती है। इसमे फिकर क्या करना है ?'

'पर, जैसे कुछ कफ भी गिरा हो ?'

'हा—हा, कफ तो था मा ! —रात को ज़रा ज़ुकाम हो गया था। सो ठीक हो जाएगा मा—इसमे इतना फिकर करने की क्या बात है। रात को सोने से पहले जरा गरम दूध पी लूगा, एक बार पसीना आया कि बस—देख, कुछ भी तो नही हुआ मुझे ! अरे तू ऐसे मुह बनाए जा रही है, जैसे मुझे कुछ · '

मा ने शब्द पूरे न होने दिए, बेटे के मुह पर हाथ रखकर बोली, 'कुछ हो तेरे दुश्मन को मेरे लाल· ' और दोनो हाथो से उसके सिर को पकड़कर अपने वक्ष मे छिपा लिया। आखो मे आसू भरकर बोली,

'इन जली आखो को अब ही मुझसे बैर करना था। देख भी नही सकती कि तुझे कहां चोट लगी है···'

नन्नू ने कहा, 'चिन्ता न करो मा ! आज ही तार देकर तुम्हारे लिए दूसरा चश्मा मगवाए देता हू। बस तीन-चार दिन मे आया समझो। बल्कि दो मगवाए देता हू, ताकि कभी ऐसी मुसीबत न हो पाए··'

सिर को पाश से मुक्त कर मा ने कहा—'ना ना ना बेटा ! चश्मा-वश्मा मत मगा। चश्मा होने पर भी मुझे उतना ही दिखाई देता है, जितना चश्मा न होने पर। तू तो देख रहा था जब तेरे पास आ रही थी तो चश्मा तो लगा ही हुआ था। ना ना, चश्मा क्या करेगा मेरे लाल। तू ही तो मेरी आखो का सबसे बडा चश्मा है !' और फिर मा ने बेटे को वक्ष से लगा लिया।

सामने देखकर लजाते हुऐ नन्नू ने कहा, 'अरे मा ! तुम घूमर काकी को तो भूल ही गईं। यह जो सामने खड़ी हैं। बैठो न काकी ! तुम तो मेरी मा को जानती ही हो। इनकी जैसे सारी दुनिया ही मै हू। मैं कहता हू काकी, क्या बूढे बेटे से इतनी माया रखना अच्छा है ? कल से कुछ न भी हो, तो भी कमाने के लिए तो मुझे फिर शहर लौटना ही होगा, तब !'

काकी ने कहा, 'बेटा ! बेटा चाहे बूढा हो या बच्चा, मा-बाप के लिए तो वह सदैव ही बच्चा रहता है।'

मा ने हुलसकर कहा, 'और लो। बडा हुआ ही कहा ? कल तक तो मैं हाथ से खिलाती थी, तब तो खाता था—मालूम नही बहू तुम्हे ? · कितनी रातें जाग-जागकर बिताई तेरे लिए नन्नू। अब तो भगवान ! मुझे उठा ले तो समझू कि जन्म सफल हुआ। आखो से अन्धा बना ही दिया। कान दिन-दिन ऊचे होते जा ही रहे हैं। अब क्या और दु:ख देखना बाकी है ?' मा की आंखें आर्द्र हो उठी।

नन्नू ने दोनों हाथो को मां के गले मे डालकर कहा, 'अच्छा मा ! दु:ख की बात क्यो करती हो ? सुख की करो न ! भगवान ने तुम्हे दु:ख

दिया था, तो क्या सुख नहीं दिया ?'

'क्यों नही बेटा, जिस दिन तुमने कन्हैया बनकर मेरी कोख मे अवतार लिया तब से यह कैदखाना, क्या कैदखाना रह गया ? सब दु ख क्या मेरे सुख नही हो गए ?'

काकी ने देखा कि मा–बेटे मगन है, तो उठकर बोली, 'जीजी, अबेर हो रही है, मै चलू । फिर आऊगी । लो देखो, महरी भी आ गई।'

'महरी आ गई ? अच्छा बहू, मै भी उठू, महरी से कपडे उठवा दू ।'

अत दोनो ही जब नन्नू के कमरे से बाहर हो गईं, तो नन्नू का चेहरा एक बार और राख मे पुत गया । उन्होने पलग के नीचे से पीक-दानी निकाली, और उसकी गहराई मे अपने जीवन का भविष्य देखने लगे, किन्तु अन्धकार के सिवा उन्हे कुछ भी स्पष्ट नही दिखाई दिया ।

९

वर्षाकाल की निविड सध्या को सघन होते देर नही लगती । नीचे कर्दम-भूमि, ऊपर सघन मेघमण्डल की स्तूपमान छाया और चारो ओर हरित वृक्ष-राशि का श्यामल परिच्छद सूर्यास्त के पहले ही अन्धकार कर देता है । ऐसी ही घनी सध्या की बात है । ऊपर नीड को लौटते हुए पक्षियो का आकुल कोलाहल, नीचे सिक्त मिट्टी के क्रोड को फोडकर क्रीडा-कुल दादुरो की टर्र-टर्र सारे वातावरण को मुखर कर रही थी ।

भीतर कमरे मे बिजली का प्रकाश था । सामने दरवाजे के पट बन्द थे, अत. बाहर का शोर भीतर सुनाई नही देता था । एक पलंग पर अधलेटी कमला, पास ही कुर्सी पर कमल आराम की मुद्रा मे, दोनो

हथेलिया सिर के नीचे कुर्सी की पीठ पर टिकी हुई, पैर फैले हुए पलग पर आधारित !

कमल ने कहा, 'रिजल्ट इसी सप्ताह आउट समझो ! पास तुम हो ही जाओगी। क्या इनाम दोगी ?'

'रिजल्ट तो आउट होने दो। अगर पास हो गई, तो कहोगे तुमने मेहनत करके पढाया है और फेल हो गई तो कह दोगे अभ्यास नही किया। —तब इनाम मैं क्यो दू ?'

'तो क्या चाहती हो, मै दू ?'

'न्याय तो यही होगा !'

'और जिस पुरस्कार को पाने की मैने कामना की थी वही तुम्हे दू ?'

'यह भी उचित ही है। क्या पाने की कामना थी ?'

'एक चुम्बन !—मेरी ओर से तुम अभी ले सकती हो।'

'बडे धूर्त हो। यह तो दोनो ही तरह तुम्हारा ही इनाम हुआ।'

'यह तुम्हारी ज्यादती है कमला। यदि लेना नही चाहती तो देना पडेगा और दूना।'

'रहो अभी, फिर ले लेना, दूना वसूल कर लेना। परन्तु कमल·· ' और छत की ओर देखते-देखते कमला चुप हो गई।

'कहो न···'

'कमला ने कोई जवाब नही दिया। वह उसी तरह छत की ओर देखती रही।

कमल सीधा होकर बैठ गया और कमला के हाथ को अपने दोनो हाथों मे बन्द करके बोला :

'कहो कमला, रुक क्यों गई ? क्या कहना चाहती हो ?'

कमला ने दृष्टि को कमल की ओर फिराया। मानो उसकी अर्थभरी आखों ने कमल को अनेक कथाएं सुना दी, फिर भी कमल समझ न सका कि वे क्या कह रही हैं।

कुछ देर दोनो एक दूसरे की ओर भावभरी दृष्टि से देखते रहे। कमल ने कहा—'कहो न ?'

'इस एकाध सप्ताह से मेरा जी जाने कैसा हो रहा है।'

'कैस' हो रहा है ?'

'कुछ समझ मे नही आता। जिस चीज को देखती हू, मानो वह मेरी आखो से भागी जा रही है। दृष्टि किसी पर ठहरती नही। मन मे कुछ का कुछ होने लगता है। कोई बात सोच नही सकती। मानो किसी घोडे पर बैठकर भागी जा रही होऊ और मानो इतनी अवश होकर मैं उसपर बैठी हू कि वह कहा किसी खड्ड मे न मुझे गिरा दे। ऐसा क्यो होता है ?'

कमल ने हसकर कहा, 'मालूम देता है तुम्हे इम्तिहान की चिन्ता है। तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। जैसा तुम कहती हो यदि अपने परचे तुमने वैसे ही किए हैं तो तुम जरूर पास हो जाओगी।'

'नही-नही, यह परीक्षा की चिन्ता नही है कमल ! मेरा जी जैसे रेत मे धसता जा रहा है। कभी-कभी खाते-खाते मैं एकाएक विस्मृत हो उठती हू। मुह का कौर मुह मे ही फिरता रहता है, उसे गले मे उतारने की भी मुझे सुध नही रहती। एकाएक ही सारे बदन मे पसीना हो उठता है, जी मचलाने लगता है।'

'यह सब मानसिक रोग के लक्षण हैं कमला !'

'नही कमल ! मेरी कभी तो ऐसी दशा नहीं हुई।'

'तो कल डॉक्टर को बुलवा दू ?'

'डॉक्टर आ जाएगा ?'

'क्यो नही आएगा।'

'किन्तु...'

'किन्तु क्या ?'

'अभी रहने दो कमल। क्या मालूम, मन का वहम ही हो...'

'वहम क्या ?'

कमला मुस्कराकर बोली, 'वहम, कहा क्या मैंने ?—यही लो—तुमने कहा न कि मानसिक रोग के लक्षण हैं। सचमुच यदि वही हो तो डॉक्टर को बुलाने से मज़ाक ही तो होगा। नही, अभी डॉक्टर को दिखाने की ज़रूरत नही है।'...'

'हा !—मेरा तो यही कहना है कि सदैव प्रसन्न रहो ! चिन्ता ही क्या है तुम्हे ?'

'चिन्ता नही मुझे ?—लो, सुने कोई तुम्हारी बात ! जिसका स्वामी बीमार हो, उसे वैसे ही क्या कम चिन्ता है ? फिर परीक्षा ' और वह कुछ मुस्करा दी। फिर बोली 'सच कमल, आज भी सिर इतना दर्द कर रहा है कि घर-दरवाज़े बन्द करके एकदम सो जाऊ ! और अभी शायद आठ भी नही बजे होगे।'—और उसने एक जमुहाई भी ले डाली।

कमल ने हाथ पर बधी घडी को देखकर कहा, 'आठ तो बज गए है, दस मिनट ऊपर हो गए। वर्षा शुरू हो गई तो क्या हुआ। इन दिनो सूर्य भी तो काफी देर से अस्त होता है। तो फिर तुम सोओ।'—और कमल ने उठने का उपक्रम किया।

'मन तो करता है कि तुम्हे जाने ही न दू।'

'तो रोक लो।'

'देखती हू, कब तक रुके रहते हो। जहा घर पहुचे कि ' अच्छा कमल, यह बताओ शादी कब कर रहे हो ?'

कमल उठ खडा हुआ, 'यह खबर पाकर खुश होओगी ?'

'खबर मेरी खुशी-नाखुशी की परवाह करेगी क्या ?'

'अगर करे तो क्या मेरे साथ अन्याय न होगा ?'

'क्यो ?'

'तुम क्या किसी दूसरे की नही हो ?'

'पर इसमे मेरा क्या दोष ?—मेरे जीवन मे तुम आए ही कब ?—और तब तुम्हें आना ही क्यो चाहिए था ?'

'तुम्हारी आंखों की पुकार को अनसुना कैसे कर देता ?'

'लेकिन अब कर दोगे क्यो ? आखो को कसूरवार बनाकर।'

कमल ने लम्बी सास ली। कहा, 'तुम्हारी आखे छुट्टी देगी तो शादी करूगा—वरना मेरी कामना शेष ही क्या है ?—लो चला मैं—तुम्हे सोने मे, देखता हू, देर हो रही है।'—कमला एक बार और जमुहाई ले चुकी थी।

कमला ने कहा, 'चले जा रहे हो ?—अपना पुरस्कार लिए बिना ही ?' और वह शरारत मे मुस्करा दी।

कमल ने कहा, 'यदि दाता कृपणता न करे, तो भिखारी के भाग्य ही जग गए।' और उसने अधलेटी कमला के अधरो पर अपने अधर रख दिए।

कमल के जाते ही कमला ने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया और फिर अपने ब्लाउज़ मे से एक कागज का टुकडा निकालकर पढा, 'आज रात को ९ बजे—डी।' तीसरे पहर चार बजे बडे बाबू उर्फ छोटे साहब का चपरासी रामू जब डाक देने आया था, तो यह स्लिप पकड़ा गया था। अभी साढे आठ बजे है। आध घण्टे तक प्रतीक्षा करनी है। इसी बीच यदि कमल अपने कमरे मे जागता रहे तो उसे प्रतीति करानी है कि वह सो गई। दादू सात बजे ही छुट्टी लेकर चला गया है। रामू ही आकर कह गया था कि आज सभी चपरासी सेकण्ड शो देखने जा रहे हैं, इसलिए देर से लौटेंगे। सिनेमा दिखाने का आयोजन रामू ही ने किया था। सबके पैसे वही देगा। रामू बडा समझदार है, बडे बाबू का अपना आदमी जो ठहरा। बडे बाबू की इच्छा के बिना कोई काम नहीं करता।

'अच्छा तो कमल, मेरे कमरे की ओर देखो ··' यह कहकर उसने सामने वाली खिडकी खोल दी। गीली हवा का एक मादक झोका उसके बदन को झकझोरता हुआ निकल गया। मिट्टी की भीनी महक, मेढको का समवेत स्वर, झिल्ली की झकार और बाहर रात्रि का सन्नाटा एक विचित्र प्रभाव पैदा कर रहे थे। खिडकी मे से कमला ने देखा, कमल

अपने कपडे बदल रहा है, और रह-रहकर इस ओर देख लेता है। उसने हाथ हिलाया, कमला ने उत्तर दिया, फिर अपनी ही हथेली को अधरो से चूमकर अपने चुम्बन को कमल तक पहुचाने के लिए हवा मे उडा दिया।

प्रकाश बन्द करते हुए उसने फिर कहा, 'लो कमल, तुम्हारे लिए तो मैं सो ही जाती हूं। मेरे बारे मे कुछ उल्टा-सीधा सोचकर दु ख न पाना।'

धर्मप्रकाश के प्रस्ताव के अनुसार रेलवे डॉक्टर की अपेक्षा कमला ने अपने आपकी एक लेडी डॉक्टर से परीक्षा कराना ही उचित समझा। लेडी डॉक्टर को घर पर बुलाने की भी धर्मप्रकाश की राय न थी। कोलोनी मे कोई बात छिपी तो रहती नही फिर लोग-बाग जाने क्या अन्दाज लगाएं। धर्मप्रकाश ने एक लेडी डॉक्टर का पता भी दे दिया। यही नही, लेडी डॉक्टर शायद उनकी जान-पहचान की थी, अत एक व्यक्तिगत पत्र भी उन्होने लिखकर कमला को दे दिया था, ताकि उसे सब तरह की सहूलियत हो। इस बात का पता कमल को भी नही था।

जब से वह हॉस्पीटल से लौटी, तब से बडी बेचैन हो गई है। समझ मे नही आता क्या करे? अभी तो बारह ही बजे है। कमल पाच से पहले आ नही सकता, और धर्मप्रकाश? सलाह उनसे भी लेना उचित है, किन्तु उनसे भेंट किस तरह हो? दादू को स्लिप देकर भेज दू?—नहीं, पहले कमल से सलाह मिला लेना अच्छा होगा। धर्मप्रकाश चालाक चाहे जितना हो, विश्वास तो वह कमल ही का कर सकती है। धर्मप्रकाश एक छाता है, जो वर्षा मे भीगने से बचाने की चेष्टा करता है, उसकी छाया मे वर्षा की क्रीड़ा से एक दुस्साहसपूर्ण सम्पर्क स्थापित करने का आनन्द भी प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु सर्वथा निर्भर रहकर, सारी बरसात तो उसके नीचे काटी नही जा सकती। कमल है दृढ छत और दीवारों से घिरा एक कक्ष, जो न केवल वर्षा से प्रत्युत् जीवन के अन्य गम्भीर खतरों और सकटो से भी रक्षा करता है।

दादू ने आकर कहा, 'बीबीजी, खाना बन गया है।'

'मिसरानी से कह दे, रखकर चली जाए। अभी मुझे भूख नही है।' —और फिर वह अपनी चिन्ता मे खो गई।

हॉस्पीटल दादू भी साथ गया था। वह बाहर ही राह देखता रहा। भीतर क्या हुआ, डॉक्टरनी बाई ने कैसे जाच की, क्या पाया, यह वह कुछ नही जानता। ऊपर से देखने मे बीबी जी को कुछ खास बीमारी भी नही मालूम देती। फिर एकाएक ही इतनी अन्यमनस्क कैसे हो गई?—खाना भी नही खाना चाहती। कुछ देर सोचते रहने के बाद उसने फिर पुकारा, 'बीवीजी!'

चौककर कमला ने कहा, 'अरे! अभी तक तू खडा है?—कह न दिया मैने कि भूख नही है। मिसरानी से कह दे कि चौका उठाकर चल दे। जब भूख लगेगी तो खा लूगी।'

'मगर · '

'सिर मत चाट! कह दिया न तुझसे। जो कहती हू, सो किया कर! जा '

दादू बाहर चला गया, किन्तु थोडी ही देर बाद फिर लौट आया, और अपनी पहली जगह पर खडा हो गया। कमला खिडकी के बाहर कुछ देखती रही ·

दादू ने कहा, 'डॉक्टरनी बाई ने कुछ बताया '

बीच ही मे टोककर कमला ने कहा, 'फिर तू परेशान करने के लिए आ मरा?—वैसे ही मेरा सिर कम नही दुख रहा है· '

'बाम लगाकर दबा दू '

'दादू, तेरे हाथ जोडती हू। तू जा—सिर मत खा मेरा!—मैं भली-चगी हू। मुझे कुछ नही हुआ है·· ·'

'फिर आप खाना क्यो नही खाती?—थोडा-बहुत, जो कुछ भाए '

'मगर कुछ भाए तब न?'

'बाजार से कुछ फल-फूल ला दू—अगर हुकुम दे।'

'फल-फूल ला दू!—रुपये-पैसे का जैसे बाग ही तो लगा हुआ है, कि

जब चाहे, जितना चाहे तोड ला । जा भाग जा, मेरे पास पैसे-वैसे नही फल-फूल लाने के लिए ।'

कमला ने समझा था कि इसी बहाने इस आफत से पीछा छूट जाएगा । कमला उसे झिडक भी सकती थी, किन्तु दादू उसकी इतनी परवाह करता है, इतनी सेवा करता है, दिन को दिन और रात को रात नही समझता कि नाराज़ होना चाहकर भी कमला उसपर नाराज़ नही हो सकती । हा, उसकी बेवकूफी पर गाहे-ब-गाहे झल्ला अवश्य उठती है ।

किन्तु दादू ने ज़रा चमककर कहा, 'पैसे की आप चिन्ता न करें बीबी जी, अभी मेरी तनख्वाह के सभी पैसे तो बचे हुए है ।'—और कहता-कहता वह बाहर हो लिया ।

सध्या को लगभग साढे पाच बजे कमल ने दरवाजे पर आकर दादू को आवाज दी । कमला कान बिछाए हुए ही बैठी थी । उठकर दरवाज़ा खोलते हुए उसने कहा :

'ओह ! याद पड गई मेरी ?—मै तो समझी थी कि दफ्तर का सारा काम आज ही शेष कर दोगे ।

'काम तो कुछ अधिक था ही । अभी भी शेष है, बहुत कुछ करने को । साहब तो अभी तक बैठे है । कर्मचारियो की स्थापना के सम्बन्ध मे बडा असन्तोष फैला हुआ है । कई अपीले आई है और कई कर्मचारी स्वय ही अपनी शिकायते लेकर आ जमे थे । तुम तो जानती ही हो मि० भटनागर की अनुपस्थिति मे मुझे ही तो सबके कागज निकालकर खडे रहना पडता है ।'

'तो तुम सबके भाग्य की डोर पकडे हुए हो ?'—और उसने पुनः दरवाजा बन्द कर दिया ।

एक कुर्सी खीचकर बैठते हुए कमल ने कहा, 'थक गया भाभी ! चाय के लिए पानी चढाने को कह दो न !—और लो—यह भाई साहब का प्रेम-पत्र !'

'मैं चाय की कहकर आई।—तुम जितने पत्र खोलो।'

कमल ने चारो ओर दृष्टि दौड़ाई।—कोई खास बात नही दिखाई दी। पैर फैलाकर आखे बन्द करके वह बैठा रहा, तब तक कमला भी लौट आई। पास ही कोच पर बैठते हुए बोली

'क्या लिखा है पत्र मे ?'

'तुम्ही पढो भाभी! मै तो थक गया हू। बहुत फाइले पढी है आज!—आज तो भैया के पत्र पर अपनी ही नजरो का सौभाग्य होने दो।—न हो एक कप चाय ज्यादा पी लेना।'

कमला ने कमल की ओर देखा, वह उसी तरह आखे बन्द किए हुए पडा था। थकावट उसके सारे चेहरे पर पुती हुई थी। हाथ मे उसके वह पत्र तब भी उसी तरह झूल रहा था।

कमला ने पत्र ले लिया और लिफाफा फाड उसमे से पत्र निकालकर वह पढने लगी—'माइ डियर कमला·· 'शुरू तो उसने जोर से पढकर ही किया किन्तु सम्बोधन के बाद ही वह मन ही मन पढने लगी। कमल उसी तरह आखे बन्द किए पडा रहा।

पत्र समाप्त कर जब कमला ने पुकारा 'कमल!' तब कमल ने आखे खोली, कहा 'क्या लिखते है तुम्हारे नागर?—रात को नीद आती है या नही? · '

कमला के चेहरे की ओर जैसे ही उसकी दृष्टि गई, उसने पूछा, 'क्या हुआ? कुशल तो है?'

'नही कमल! लिखा है, तबियत अधिक खराब हो गई!·· ' और उसने पत्र कमल की ओर बढा दिया। कमल एक ही सास मे पत्र पढ गया।

'हू! पर इसमे तो मैं एकदम तुम्हारे इतना चिन्तित होने की बात नहीं देखता!—यदि कोई टी० बी० का बीमार भारी काम करने उठे तो उसका गिर पड़ना बिल्कुल स्वाभाविक है और गिर पड़ने पर चोट लगना भी कोई अस्वाभाविक बात नही। फिर उन्होने लिखा भी है कि चोट

ठीक होते ही वे बम्बई जाने का इरादा कर रहे हैं। वे अवश्य अच्छे हो जाएगे कमला। तुम्हे इतना अधिक अधीर होने की मैं तो कोई जरूरत नही देखता।'

'नही कमल, मेरी अधीरता को तुम नही समझ सकते।' और कमल ने देखा कि उसकी आखे डबडवा आई हैं।

कमल ने कहा—'छिः यह क्या ?—यदि अटनागर बाबू को कुछ हुआ...'

कमला ने बिना पूरी बात सुने कहा, 'मैं कही की नही रहूगी कमल, कही की नही!'

'उस बुढिया से डर रही हो ?'

'नही कमल—तुम नही जानते।'

'कुछ कहोगी तभी तो जानूगा।'

'आज सवेरे मैं हास्पिटल गई थी।'

'हास्पिटल! कब ?—शायद दस के बाद गई होगी! क्या बात थी ? मुझे क्यो नही कहला भेजा। मैं डॉक्टर को बुलवा देता।'

'मैं लेडी डॉक्टर से मिलना चाहती थी।'

'फिर क्या कहा उसने ?'

'उसने बताया कि मुझे गर्भ है।'—और उसने अपने दोनो हाथो से मुह छिपा लिया।

यह अप्रत्याशित सम्वाद सुनकर कमल भी कुछ सोचने लग गया।

जब काफी समय बीत गया तो कमल ने मुस्कराकर कहा, 'कहो तो अटनागर साहब को अभिनन्दन का तार भेज दू ?—सुनकर खुशी ही होगी उन्हे। वे स्वय ही इस अवस्था मे लिख देगे कि तुम्हारा यही रहना ठीक होगा!....न होगा तो बम्बई मे एक नर्स का प्रबन्ध कर लेगे।—मेरा ख्याल है कि सरकार उनकी बीमारी का सब खर्चा अपने ऊपर ले लेगी।'

'तुम नहीं समझे कमल!'

'क्या नही समझा ?'

'कुछ नही समझे। जानते हो भटनागर को यहा से गए चार माह हो गए है।'

'तो फिर ?'

'और इस हालत मे मुझे बस यह दूसरा महीना है।'

तभी मिसरानी भीतर से चाय का सामान रख गई। साथ मे एक तश्तरी मे फल-फूल भी। देखकर कमल ने कहा, 'यह फल-फूल···'

'हा, दुपहर को दादू नही माना—वही ले आया। पैसे भी नही लिए।'

'क्यो ?'

'माना ही नही। हास्पिटल से जब लौटी तो इसी चिन्ता से खाने को कुछ मन नही कर रहा था। वह समझा कि बीमारी की वजह से खाना नही चाहती। बोला कि कुछ फल ही ले आऊ। मैंने कहा कि पैसे कहा है इतने कि रोज-रोज फल खाऊ! बस फिर क्या मानता है वह ?—कहता है कि नौकरी भी तो आप ही की दी हुई है।'

'आदमी बडा भला है। एक और तरक्की इसे अगले माह से मिल जाएगी। खैर महीने के आखिर मे कुछ दे देना बेचारे को !'

कमल के चाय पीते-पीते ही बातचीत चलने लगी।

कमला बोली, 'मुझे तो जीवन मे बस अब अधेरा ही अधेरा नज़र आ रहा है कमल! क्या करू मैं ?'

'घबराने से तो काम नही चलेगा भाभी!—भटनागर बाबू का कुछ बीमा तो है न ?'

'हा, पाच हजार का है।'

'पाचेक हज़ार उनके प्रोविडेण्ट फण्ड (निर्वाह-निधि) के हो जाएगे।'

कमला मानो सुनकर भी न सुन रही थी।

कमल ने कहा, 'अच्छा, यह तो बताओ, उन्होने अपनी पॉलिसी वगैरा सब कुछ तुम्हारे नाम तो कर दिया है न ?'

'कहते तो थे।'

'लो, तुम तो चाय भी नही पीती ?—मेरी कसम तुम्हे !'—और उठकर उसने स्वय ही कमला के लिए कप मे चाय उडेली।

कमला ने कहा, 'नही रहने दो कमल ! मुझे कुछ अच्छा नही लग रहा है।'

'अरे ! इस तरह तुम्हारे चिन्ता करने से क्या भविष्य टल जाएगा ? —लो, नही पियोगी तो मुझे मरा देखोगी। क्या पढी-लिखी होकर तुम भी ··।'

कमला ने कप अपने हाथ मे ले लिया, बोली, 'मैं अगर जल्दी ही उनके पास चली जाऊ, तो ?'

'लेकिन वे तो शीघ्र ही बम्बई जाने की सोच रहे हैं। क्या तुम भी उनके साथ बम्बई जाओगी ?—मेरी राय नही है कि तुम अपना भी जीवन खतरे मे डालो !—जमाना आगे बढ चुका है भाभी ! तुम खुद इतना तो पढ-लिख गई हो कि अपना जीवन स्वतत्र रूप से निर्वाह कर सको ! और जहा तक भावना का सम्बन्ध है—खैर इस बारे मे मै कह ही क्या सकता हू।—किन्तु इतना जरूर कहूगा कि डूबते हुए को बचाना अवश्य हमारा कर्तव्य है, पर डूबते हुए के साथ डूब जाना कभी व्यावहारिक नही।'

'मैं सब समझती हू कमल ! यह भी सही है कि विवाह होने पर भी और चाह कर भी मैं इस व्यक्ति को हृदय से प्यार नही कर सकी। फिर भी इसके ऊपर दया तो मुझे आती ही है। कितने आदर के साथ, कितनी साध के साथ इसने मुझको अपना बनाने की चेष्टा की है। क्या उसका कोई मूल्य नही ?'

'क्यो नही ?—मैंने यह तो नही कहा कि तुम उन्हे किसी तरह दुःख पहुचाओ। स्वयं ही उन्होंने पत्र में लिखा है कि तुम्हे मेरे पास नही आना चाहिए। बीमारी के सक्रमण का भय है। मैं तुम्हारी भावना को यहां पड़े-पड़े भी समझ सकता हूं। मेरा ख्याल है उनका उपदेश ठीक ही है,

और तुम्हे मानना चाहिए। कम से कम जिस अवस्था मे तुम हो, उसमे तो....'

'इसी अवस्था के कारण भी मुझे वहा जाना ही चाहिए। उन्हे यदि कुछ भी सन्देह हो गया तो उनके हृदय को बहुत बडी ठेस लगेगी कमल! और फिर, यह भी तो सोचो, दुनिया क्या कहेगी ?'

कमल ने मुस्कराकर कहा, 'दुनिया गणित का हिसाब लगाने नही बैठती कमला!—किन्तु एक बात बताओगी ?'

'क्या ?'

'जब से यह खबर सुनी है, मेरे हृदय मे बडी उथल-पुथल मच गई है। सच-सच कहोगी ?'

'उथल-पुथल तो मचना ही चाहिए! बिना विवाह किए ही बाप जो बनने जा रहे हो। पर सच-सच क्या कहना होगा ?—तुमसे क्या कभी मैंने झूठ कहा है ?'

कमल को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया, किन्तु वह निर्भ्रान्त होना चाहता था। प्रश्न पूछे किन्तु कैसे ?—धर्मप्रकाश की बात कमल जानता है, यह तो कमला को विदित नही।

'क्या सोच रहे हो ?—क्या पूछना चाहते थे, पूछो!'

बात बदलकर कमल ने कहा, 'यही कि मा बनने जा रही हो, इसकी तुम्हे प्रसन्नता नही है ?'

'प्रसन्नता तो है, किन्तु जब प्रसन्नता को मिल बाटने वाला कोई न हो, तो वह प्रसन्नता, बडी दु खदाई भी ता हो जाती है।—तुम्हारा क्या ?—भुगतना तो मुझ ही को पडेगा। बदनामी जो होगी सो मेरी। सोचती हू, क्या कोई उपाय नही किया जा सकता ?'

'क्या कहती हो कमला ?'

कमला की आखो मे आसू आ गए, 'क्या करू, मै कुछ समझ ही नही पाती।'

कमल ने कुछ सोचकर कहा, 'अच्छा तो कुछ दिन के लिए वहा चली जाओ।'

'और सब कुछ जानकर यदि उन्होने दुत्कार दिया तो? नही-नही, कमल, यह मैं कैसे सह सकू गी?—मेरी क्या गति होगी!'—और उसने फिर दोनो हाथो से अपना मुह छिपा लिया।

कमल ने कहा, 'कमला! मेरे ऊपर निर्भर कर सकती हो?'

'क्या करने को कहते हो।'

'चलो, हम दोनो किसी दूर बस्ती मे जा बसे, जहा हमे कोई नही जानता हो।'

कमला ने कमल की ओर देखा और बोली, 'और तुम्हारा घर-द्वार, माता-पिता, यह नौकरी?—प्रतिष्ठा?'

'तुम्हारे त्याग से कुछ भी बडा नही है कमला!—तुम यह भी परीक्षा करके देख लो!'

तभी मिसरानी चाय के बर्तन उठाने आई। कमला ने कहा, 'खाना ढंककर चौका उठा देना। मैं देर से खाऊगी। और जाओ तब दादू से कह देना, कि पीछे का दरवाज़ा बन्द कर ले।'

वर्षा काल की सध्या, और बस्ती से दूर इस अचल मे और भी जल्दी घनी हो जाती है। किन्तु कमरे के भीतर विद्युत के प्रकाश मे घह-राती हुई साझ कब निविड रात्रि हो उठती है, यह जानने का कोई उपाय नही है।

लम्बी सास लेकर कमला ने कहा, 'परीक्षा का अवसर आएगा तो परीक्षा भी देनी होगी, किन्तु अभी नही! मैं तुम्हारा जीवन नष्ट नही करूगी कमल। इतनी ओछी मैं नही हू। मुसीबत जो होगी, सहूगी। मेरी भूल का प्रायश्चित तुम क्यो करोगे? तुम मुझपर दया करते हो, यही क्या कम है, अपनी जवानी का दण्ड तो सभी को सहन करना पडता है! तुम मेरे वहा जाने का प्रबन्ध कर दो। उन्हे किसी तरह अभी पता

न होने दूगी। देखू जहा तक छल का प्रयोजन सफल हो सकता है, उसका प्रयोग करूंगी !'

'तो क्या उनके साथ बम्बई भी जाओगी ?'

'यह तो वहा जाने पर ही निश्चय कर सकूगी, अभी नही ! पर उनपर यह भेद खुले उसके पहले ही मैं उनसे दूर भी हट जाना चाहती हू ताकि पत्र के द्वारा ही एक शुभ समाचार के रूप मे उन्हे यह सदेश दे सकू।'

'आइडिया तो ठीक है !...'

तभी बाहर दरवाज़े पर थपथपाहट हुई।

कमल ने कमला की ओर देखा। कमला का हृदय धडकने लगा, किन्तु तभी उसने कमल को कहा, इस तरह कि बाहर वाला भी सुन ले—'देखिए कमल बाबू, बाहर कोई दरवाजा खटखटा रहा है क्या ?' और वह मुस्कराकर उठ खडी हुई।

कमल कुछ न समझा, किन्तु कमला ने आख के इशारे से कमल को दरवाज़े की ओर जाने के लिए कहा, और वह स्वय भीतर के दरवाज़े की देहली पर खडी हो गई।

कमल ने दरवाज़ा खोला, देखा तो सामने धर्मप्रकाश खडे है।

कमला आड़ मे हो गई।

'ओह, आप !'

धर्मप्रकाश को आशा न थी कि कमल यहा पर अब तक भी मौजूद होगा। बाहर कृष्ण पक्ष की रात्रि का घनान्धकार छाया हुआ था। बिजली की बत्ती दूर हट कर थी। घर पर ही एक इमली का पेड सघन छाया किए हुए था।

किन्तु जब सामना पड ही गया, तो धर्मप्रकाश ने मुस्कराकर कमल की ओर देखा। आखिर एक दूसरे का रहस्य तो किसीसे छिपा नही है। आज सामना ही हो गया। फिर भी चोरी खुलकर नही की जा सकती।

अच्छा लो, अपराध हुआ हो तो माफी मागता हू ।' और उसने हाथ जोड़ लिए ।

कमला ने ध्यान नही दिया । बोली, 'कमल बाबू अपने मन मे क्या समझेंगे । और उन्हे चला क्यो जाने दिया ?'

'चला तो वह खुद ही गया । मैं क्या करता । रहा सवाल सोचने का, सो—तुमपर केवल उसीका अधिकार क्यो हो ?' और वह मुस्करा उठा ।

'यानी ?' कमला ने सरोष पूछा ।

'यानी यही कि जो अपने बारे मे नही सोच सकता, उसे दूसरो के बारे मे सोचने का क्या हक है ? अच्छा डीयर, गुस्सा तो बहुत कर चुकी हो । यह बताओ, हास्पिटल से क्या खबर लाईं ?'

कमला को विश्वास न था कि यह व्यक्ति इतना मुहफट भी होगा, उसे एकदम विरक्ति हो गई । वह बोली, 'डाक्टरनी ने कहा है कि मुझे मर जाना चाहिए ।'

'मतलब ?'

'मतलब पत्थर !—करो तुम और भरू मैं ! हे भगवान, तूने इस स्त्री-जाति को बनाया ही क्यो ?' और वह भीतर जाने के लिए दरवाजे की ओर मुडी ।

'कमला !—यदि तुम चाहती हो, तो मैं चला जाता हू ! किन्तु कमल से यदि तुम डरती हो तो यह तुम्हारी भूल है । वह हमारी बात कही भी नही कहेगा । उसकी चोटी जो मेरी चुटकी मे है । उसको मैंने बनाया है, चाहू तो उसे अभी मसल सकता हू, यह बात वह जानता है ।'

कमला ठिठकी ! यदि कमल का अहित हुआ तो ? मुडकर उसने कहा :

'कमल को यदि तुमने बनाया है तो मेरे कारण तो नही, फिर उसे मेरे कारण मसलोगे क्यो ?—उस बेचारे का क्या दोष है ?—आकर दो बात सुख-दुःख की कर जाता है ...'

धर्मप्रकाश ने दरवाजे पर जाकर कहा, 'मैं चला। कमल की ओर से तुम्हे चिन्ता नही करनी होगी। और डॉक्टरनी की रिपोर्ट, मुझे भी उसने पत्र लिखकर सब हाल बता दिया है। मैं कहने आया था कि यदि किसी तरह की मेरी सहायता की आवश्यकता हो, तो सकोच न करना। मैं उसीसे कहकर यदि चाहो तो अबोर्शन का प्रबन्ध भी करवा दूगा, और खर्चे वगैरा के लिए तुम्हे कोई चिन्ता नही करनी पडेगी।'

'क्या कहा, अबोर्शन ?'

'हा, यदि छुटकारा पाना चाहो !'

'पर तुम्हे क्या··· ' वह आगे नही कह सकी।

धर्मप्रकाश ने मुस्कराकर कहा, 'मैं पहले ही चार बच्चो का बाप हू ! इस बेगार को अच्छी तरह समझता हू।'

कमला ने कोई उत्तर नही दिया। दरवाजे पर खडे धर्मप्रकाश ने सोचा कि कमला शायद वापस बुला ले पर कुछ क्षण के पश्चात् जब कमला ने देखा कि वे खडे ही है, तो बोली, 'बाहर से दरवाजा भिडा दीजिएगा !'—और वह आड मे हो गई।

धर्मप्रकाश के जाते ही कमला को ध्यान आया पहली बार कि कही वह धर्मप्रकाश की सन्तान की मा तो नही बनने जा रही है ?

१०

माल खरीदने के सम्बन्ध मे महा व्यवस्थापक महोदय की स्वीकृति की आवश्यकता थी, कारखाने मे माल के लिए कार्य रुका पडा था। लाल फीताशाही का जमाना ठहरा, लिखा-पढ़ी से देर होने की आशंका थी, अतः खुद ही प्रधान कार्यालय पहुच गया। भाडार-विभाग मे काम करते-करते मुझे छः महीने होने आए थे।

पैरगाडी पर चढकर चला था, दुपहर हो गई थी। रास्ते में एक रेस्टरा मे बैठकर सुस्ताया, चाय पी, और जब दफ्तर पहुचा तो साढे बारह बज गए। साढे बारह बजे महा व्यवस्थापक महोदय लच पर चले जाते हैं। अत दफ्तर मे अपने पुराने कमरे मे चला गया।

कमरे मे घुसते ही सभी लोग बोल उठे, 'माइ लॉर्ड, माई लॉर्ड !' (यह मेरा आफिस के बाबुओ द्वारा दिया हुआ नाम था) बहुत दिनो बाद आए। भई कैसे हो ?—यार खबर ही नही लेते। इधर आओ, इधर—अरे भाई किशन—जरा गद्दीदार कुर्सी लाना—' सबसे पहले आकर कृपानारायण जोशी ने हाथ पकड लिया, और साफा बधे हुए मस्तक को पूरा घुमाकर बोला, 'यार माइ लॉर्ड ! हमारी तो मिट्टी पलीद हो गई। चल-चल, यहा बैठ।'

मैंने पूछा, 'क्यो ? क्या बात है ?'

'प्रस्थापना की रिपोर्ट नही पढी क्या ?'

एक बार चारो ओर नज़र डाली। सब लोगो ने काम छोड दिया है, मानो आफिस मे कोई बन्दर नचाने वाला मदारी आ गया था।

नटनागर की कुर्सी खाली थी। पास ही कमलनयन जोशी हाथ मे कलम लिए अभी-अभी कागजो के पहाड को खोदकर इस तरह देख रहा था जैसे चूहा निकाला हो। आखें चार होते ही उसने मुस्कराकर तथा हाथ उठाकर नमस्कार किया।

मैंने कहा, 'कहो जोशी ! कुशलपूर्वक तो हो ?'

जोशी अपनी बैठक पर से उठकर स्वय ही मानो अपने कुशल का उत्तर देने के लिए मेरे पास आकर खडा हो गया। बोला, 'मैं तो आपकी दया से अच्छी तरह हू। आप अच्छे तो है ?—भाई साहब, आप तो कभी दर्शन ही नही देते।'

'अरे भाई, दर्शन क्या दें !—अटाले से फुर्सत मिले तब न !—सेकण्ड ग्रेड मे कन्फर्म हो गए इसके लिए बधाइ !'

'धन्यवाद, यह सब आप ही की कृपा और आशीर्वाद का फल है !'

कृपानारायण सहन करने वाला जीव नही है, तपाक से बोला, 'इनकी कृपा और आशीर्वाद क्या, अपनी चोट्टेबाजी क्यो नहीं कहते ?'

जूनियर जोशी ने कहा, 'यार जोशी, तू बेकार हमे दोष देता है ! विश्वास कर, सबसे ज्यादा यदि किसीको अफसोस है तो वह मुझे है कि तुझे थर्ड ग्रेड मे उन लोगों ने स्थापित किया ।'

'वे लोग क्या करे ?—करने वाले तो तुम लोग हो, यहां जो यमराज की तरह डटे हुए हो ।'

'अच्छा जोशी, तुम साबित कर सकते हो कि यह काम मैंने किया है ?'

'साबित क्या करना है ?—जो आइने की तरह साफ है !'

'मैं साहब के सामने चलकर सब कागज पटक देता हू—चल तू भी—और सीना ठोककर खडा हो जा । देखे ··'

कृपानारायण मे बात करने की शक्ति खूब है, पर यही तक—वह यह भी शायद जानता है कि साहब-सलामत तक पहुंच उसकी नही है । बिल्कुल उदासीनता का भाव दिखाकर बोला, 'देखना क्या है । चोर-चोर मौसेरे भाई !—तुम लोगो का राज जो ठहरा ।'

मैंने देखा कि बात बढने से मन-मुटाव की नौबत आ सकती है तो बोला, 'अरे यह फ्रट चला गया तो क्या हुआ ?—मैंने सुना है कि कैलेण्डर का दसवा पत्ता भी तूने फाड दिया है ! सच ?'

एक ही सेकण्ड में उसके मुह पर रगीनी छा गई । स्वीकृति-सूचक सिर हिलाते हुए मस्ती के साथ बोला, 'और इसके एन्-क्यूब साहब बीवी की लपेट मे कहा हैं, जरा पूछो न ?'

'बीवी की लपेट क्या ?' मैंने पूछा ।

'बीवी की लपेट ही तो ! टी० बी० का तो नाम है, नाम !'

कमल ने कहा, 'अरे, बेचारा अधिक बीमार हो गया दीखता है, बम्बई गया है ।'

'अच्छा ?—क्या वास्तव मे टी० बी० ही थी ?' मैंने पूछा ।

'मालूम तो ऐसा ही देता है ।'

कृपानारायण ने कहा, 'और, ये लोग यहा गुलछर्रे उडा रहे हैं बेटे ! उस बेचारे की बीवी, मेरा मतलब है टी० बी०, इन लोगो के भाग से मानो छीका टूट गया !—और क्यो ' उधर से नानकचन्द आ टपका, बोलता हुआ, 'कहो जोशी ! क्या चुप-चुप बातें हो रही हैं ?' और फिर मुझे देखकर बोला, 'अरे यार माई लॉर्ड ! आप हैं ।—बहुत दिनो के बाद दिखाई दिए ।'

मैंने हसकर कहा, 'जानते तो हो । गेंती-फावडो से बचकर निकलू तो जान बचे !—अच्छे तो हो ?'

'अच्छे क्या हो ?—यह कृपानारायण जोरू का जमादार चैन लेने दे तब न !—सुना है आपने ? कैलेण्डर का दसवां पत्ता फाडकर भी पैदा की छोकरी ! और देखो उधर राधावल्लभ बाबू को । छप्पन बरस की धूप-बरसात खाकर भी बसन्ती जवान बने हुए हैं ! बुढापे मे और एक बेटे के बाप बन गए हैं ।'

उस कोने मे बैठे राधावल्लभ बाबू की ओर जैसे ही नजर उठाई तो उन्होने मुह ऊचा करके तमाकू के थूक को जीभ के नीचे दबाते हुए कहा, 'नमस्ते माई लार्ड !' और आगे के सम्भाषण के लिए उठकर बाहर चले गए ताकि वाक्यत्र को पीक-मुक्त कर सके ।

उनके लौटते ही मैंने खडे होकर कहा, 'मुजरा अर्ज हो बाबू साहब, कहिए कृपा तो है न ?'—बाबू राधावल्लभ एक तो बुजुर्ग, दूसरे स्थानीय सभ्यता मे रगे हुए, अत उनके साथ 'नमस्ते'-'नमस्कार' चलाना मुझे छिछोरापन मालूम देता था ।

राधावल्लभ बाबू ने मुझे कधे से पकडकर पुन अपनी कुर्सी पर बिठाते हुए कहा, 'अरे माई लार्ड, आप तो नम्रता की हद कर रहे हैं ! उमर मे छोटे हो तो क्या हुआ, पद मे तो ऊपर हो !—हमे आप शर्माते हैं ।'

'यह कैसे हो सकता है बाबू साहिब, पद का सम्बन्ध तो घट-बढ़

सकता है, पर उमर का सम्बन्ध तो शाश्वत है, बल्कि आपका आशीर्वाद हो तो पद तो और भी बढ सकता है ।'

'जीते रहो माई लार्ड ! और खूब फलो-फूलो !—' फिर कमल की ओर देखकर कहा, 'देखा छोकरे ! बडप्पन इसे कहते हैं ! पढे-लिखे तो कौडी के तीन क्लॉक टॉवर के नीचे मिल जाते है, मगर असलियत तो तलाश करने पर ही मिलती है !'

'और क्या हाल-चाल हैं बाबू साहिब ?'

'हाल-चाल क्या हैं भाई !—राज है इन उठाइगीरो का, अधेरगर्दी है। सैंया भए कोतवाल, अब डर काहे का । कोई पूछने वाला नही । अपना क्या ? एकाध साल का एक्स्टेन्शन (विस्तार) मिल जाता, वह नही मिलेगा । हर-भजन करेंगे । पर इन लोगो ने कुछ करने मे कसर नही रखी ।'

नानकचन्द ने चुटकी ली, 'बाबूजी, आपका गुस्सा जिसपर है, वह तो बेचारा यहा था भी नही ।'

'कौन वह जोरू का गुलाम ?—अरे वह नही तो क्या हुआ—उनकी जोरू के गुलाम भी तो है न !'

इशारा किधर था यह छिपा न रहा ।

नानक ने कहा, 'कमल ?'

'क्या ?'

'जवाब क्यो नही देता ?'

'मैं क्यो दू ?'

'चोर की दाढी मे तिनका !—देखना है, अमानत मे खयानत करके कब तक बचे रहता है ?—कब तक आ रहे हैं तेरे आका ?'

'क्या पता ? अभी तो बेचारा बम्बई गया हुआ है ।"

राधावल्लभ ने कहा, 'बम्बई क्यों ?'

'तबियत अधिक खराब हो गई बताते हैं ।'

'तो तुम्हारे तो पौ बारह हैं !' -नानकचन्द ने उसकी पीठ ठोकी ।

'देखो नानकचन्द, तुम बेकार बातें मत करो। जानते भी हो कुछ, या यो ही बेलगाम हाके जा रहे हो ?'

'जानना क्या है, बता क्यो नही देते ?'

'उनकी बीवी भी यहा नही है।··'

'कहा चली गई ?' नानक ने पूछा।

'अरे यार, जोशी तभी आजकल खोया-खोया-सा दिखाई देता है।' कृपानारायण बोला।

'जाएगी कहा ?—अपने पति के पास।' कमल ने उत्तर दिया।

'तोड दिया न दिल तुम लोगो ने ?' राधावल्लभ बाबू बोले 'बडे बाबू ने कुछ सहारा नही दिया ?—अरे हमी से कहा होता।' और उन्होने गढो मे धसे गालो पर से दाढी तक हाथ फिराकर ताम्र-रस-रजित पीले दातो को फैला दिया।

नानक ने कहा, 'और यह भी तो बेचारा के० एन० जोशी है!—रस्सा तुडा रहा है, इसीकी थोडी पैरवी कर दी होती तो एक पन्थ दो काज होते। उस सिन्धी लडकी की खैर रह जाती!'

मैंने कृपानारायण से मुस्कराकर पूछा, 'हा रे जोशी, तू कुछ इस बारे मे कहना चाहता था न।'

राधावल्लभ ने कहा, 'कहे क्या ?—मुर्गी कुडक हो गई बेचारी की। सिन्धियो ने वह ताव दिखाया कि सिट्टी गुम हो गई मिया की। कितने खर्च हुए रे ?'

कृपानारायण ने कहा, 'यार बाबूजी, पूछो मत कुछ। उसमे तो बुरी तरह फसा था। सालभर का किराया तो खोया ही, ऊपर से पाच सौ के नीचे आ गया, तब जाकर पीछा छोडा।'

मैंने पूछा, 'बात क्या हो गई थी ?'

कृपानारायण एकदम मानो अपने भूत मे खो गया, 'बस माई लार्ड!—जान बची लाखो पाए, यही समझो!'

'पहेलिया ही बुझाता रहेगा या कुछ कहेगा भी ?'

नानकचन्द ने जवाब दिया, 'होगा क्या, हज़रत की इश्कबाज़ी का पता लग गया उस लडकी की मा को। बस, सारे मुहल्ले के सिन्धी उबल पडे। यह तो खैर हुई कि रुपयो ने बात पर पानी डाल दिया! क्यो, अब कहा रहते हैं वे ?'

कृपानारायण ने मानो प्रश्न नही सुना, उसने नानकचन्द से कहा, 'गए हफ्ते उस लडकी से शाम को मुलाकात हुई थी।'

'अच्छा ?—मुलाकात कैसे हुई ?'

'दफ्तर मे उस दिन सात बज गए थे। थक इतना गया था कि साइकल पर चढने की बनिस्बत पैदल जाना ही भला मालूम दे रहा था। देखता क्या हू कि नारी-शाला से आप चली आ रही हैं।'

'नारी-शाला ?'

'वही है न, जहा शरणार्थी महिलाओ को कताई, बुनाई, कशीदाकारी आदि के कार्य जुटाए जाते हैं, ताकि उनका भरण-पोषण हो सके।—वह भी वहा जाने लग गई है।'

'अच्छा फिर ?'

'बोली कि उसे बडा अफसोस है। बेचारी कुछ कर नही सकी। उसने मा को बहुत समझाया पर वह एक ही खब्बीस है, क्यो मानने लगी ?'

मैंने घडी की तरफ देखा। दो बज रहे थे, साहब लोगो के लंच से लौटने का समय हो रहा था। मैंने कहा, 'वडे बाबू शायद आने वाले होंगे।'

राधावल्लभ ने अपनी बैठक की ओर पैर बढाते हुए कहा, 'बडे बाबू नहीं भाई, छोटे साहब कहो उन्हें! आजकल पारा ज़रा चढाव पर है! खिसियानी बिल्ली चूहे पर जो रौब गाठती है न! काम अपने से होता नहीं, मुश्किल में जान दूसरो की।'

मैंने नानकचन्द से पूछा, 'क्या मतलब है इसका ?'

'मतलब क्या है, एकीकरण की वजह से दफ्तर को समेटने का आदेश

जो मिला है, सो सब काम क्लर्कों पर ! बेचारे पहले ही तो बोझ से लदे हैं, और ऊपर से यह और बोझ । आदमी बढा नही सकते । अब तो हर काम के लिए स्वीकृति प्रेसिडेण्ट की लेनी पडती है । और काम है कि द्रौपदी का चीर बना हुआ है !'

मैंने हसकर कहा, 'अफसर बन गए हैं कृष्ण !—क्लर्क बेचारे दु:शासन होकर भी कहा तक मदद कर सकते हैं !'

कृपानारायण ने कहा, 'बिल्कुल ठीक कह रहे हो माइ लार्ड ! अफसरो को तो सिर्फ हुकुम देना आता है ! और समझता कौन है यहा ?—रेलवे बोर्ड से नित्य नये-नये आर्डर्स आते है, ये अक मागते हैं, वह सूचना मागते हैं, डेली रिपोर्ट अलग भेजनी पडती है । और वे मांगते क्या है हम भेजते क्या हैं, लताड़ जब आती है ऊपर से तो गुस्सा निकलता है निरीह क्लर्कों पर !'

नानकचन्द ने कहा, 'बस हुकुम मिल जाता है, सब काम छोड दो, यह स्टेटमेट बनाओ । किसी तरह स्टेटमेट बना, तो पूछा, अपना औसत काम क्यो नही हुआ ?'

कमल ने कहा, 'और स्टेटमेट भी पूरा कहा होता है ?—इस तरह नही जमा, उस तरह करो। बस उनको कहने मे दो मिनट नही लगते, यहा दो दिन तक खाना-पीना-नीद हराम !'

नानक ने कहा, 'और क्यो (सीनियर) जोशी, तू कैसे चरका देता है ?'

कृपानारायण ने उसी तरह साफा-मण्डित सारे चेहरे को गोल चक्कर मे घुमाते हुए कहा, 'बस यार, पूछे मत ! वह राज है, सबको बता दिया जाए तो मजा ही क्या रह जाए ?'

कमल ने कहा, 'रहने दे, रहने दे । राज-वाज हम भी जानते है ।'

मैंने पूछा, 'क्या करते हो जोशी ?'

कृपानारायण बोला, 'करता क्या हू माई लार्ड ! बस इन बेवकूफो की बेवकूफी का फायदा उठाता हूं । काम मे तो हैं सब गोल। भगवान जाने ये

तमाम के तमाम अफसर बन कैसे गए ? साहब ने कहा, स्टेटमेट बनाओ, बस पाच मिनट मे स्टेटमेट तैयार है।—अगर कही पूछ ले यह अंक कहा से आए, तो बस, ले जाकर पटक दो एक दर्जन ये मोटे-मोटे रजिस्टर। बस फिर उनकी शकल देखकर ही उन्हे कहना पडता है—एक बार और जांच लेना जोशी, भेजने के पहले यू एपीअर टु बी क्वाइट स्मार्ट—तुम काफी चतुर हो।—और बस, एक सेकण्ड मे दस्तखत हो जाते है।'

नानकचन्द ने कहा, 'और कभी अगर ऊपर वाले ने पूछ लिया ?'

'अरे वहा कौन पूछता है ? जो तुमने कह दिया सो लकीर ! जहा सौ दफ्तरो से बडी-बडी अको की तालिकाए आती हैं, वहा एक तुम्हारे छोटे-से दफ्तर के फिगर्स की जाच होगी।'

एक बात याद पड गई। दक्षिण अफ्रीका के प्रमुख को ससद मे किसी सूचना के सम्बन्ध मे कुछ फिगर्स देने थे। अपने सेक्रेटरी को बुलाकर हुकम दिया कि कल की बैठक के लिए मुझे अमुक सूचना तमाम अको सहित आज शाम के पहले ही मिल जानी चाहिए। घबराया सेक्रेटरी, बोला, 'सर, यह तमाम सूचना सग्रह करने मे तो १० माह लग जाएगे। प्रमुख ने क्रुद्ध होकर सेक्रेटरी को लौटा दिया। दूसरे दिन प्रमुख ने सभा मे आवश्यक सूचना समस्त अको के साथ उपस्थित कर दी। सेक्रेटरी भी मौजूद था। बडा डरा, सचमुच ही उसे उस समस्त सूचना को सग्रह करने मे दस माह से कम न लगते। डरते-डरते पहुचा प्रमुख महोदय के पास, और बोला, 'सर, आपने यह सारी सूचना इतनी शीघ्र कैसे सग्रह कर ली ? सचमुच मुझे दस माह से कम न लगते। देखता हूं कि मैं एकदम से इस पोस्ट के लिए अयोग्य हू।'

प्रमुख ने हसकर कहा, 'डरो मत। मैं तुम्हारी बात का विश्वास करता हू। मैंने जो रुपये, आने, पाई तक सूचना दी है वह एकदम अललटप्पू है।'

'लेकिन अगर वे इस सूचना को चुनौती दे।'

'देने दो ! यदि सच्ची सूचना संग्रह करने मे दस माह लगते हैं, तो

अन्य किसी सूचना को असत्य साबित करने मे पन्द्रह मास से कम नही लगेंगे ।' और तब तक कौन प्रमुख रहता है, और कौन सेक्रेटरी ? दफ्तर तो समेटने के आदेश मिल ही गए हैं ।'

ढाई बजने आ रहे थे । मैंने कहा, 'ढाई बज गए । आज क्या बात है ? कोई अफसर ही नही टपक रहा ?'

नानक ने कहा, 'टपककर भी अफसर करेंगे क्या ? उनके कमरे मे तो मारने को मक्खिया भी नही हैं । एक मजमा तो जूनियर अफसरो का आजकल लगता है सहायक इजीनियर के कमरे मे । उनको अपनी ही प्रस्थापना की फिकर जो पडी हुई है ।'

'असिस्टैण्ट इजीनियर के कमरे मे ! अरे वह मूजी चाय तक के लिए तो दूसरो के कमरे मे लपक जाता था ।' मैंने कहा ।

'आजकल बाजार ज़रा मन्दा है ! नया काम तो कोई शुरू हो नही सकता । ठेकेदार अब पीछे नही लगे रहते । और नियुक्ति बेचारे की थी अस्थायी । अब तो, सुनते हैं, वह अपना शिल्प जूनियर अफसरो का एक सघ बनाने मे खर्च कर रहा है ।'

कृपानारायण ने कहा, 'चाय तब भी वह अपने पैसो की नही पिलाता होगा ।'

'क्यो ? इस समय तो गरज ही उसकी है ।'

'हो ले, पर वह इजीनियर ही क्या, जो चाय अपने घर की पिए ।'

जूनियर जोशी ने कहा, 'चाय तो आती है सहायक ट्राफिक अफसर के यहा से ! किन्तु कमरा तो उसीका बडा है न ?'

असिस्टैण्ट इजीनियर से, आशा है, आप पहले मिल चुके हैं । इन्हे काम तो कभी अधिक न था । काम के पीछे वे थे भी नही पर फुरसत उन्हे सचमुच ही बिलकुल न थी । काम कराने वाले ठेकेदार सदैव ही उनके पीछे लगे रहते थे । इसके अलावा अस्थायी होते हुए भी, सभी को खयाल था कि उनके श्रीचरण काफी दृढ है । उन्होने पैर रखे भी ठोस जमीन पर ही थे । महा व्यवस्थापक का जब निज का बगला बना था,

तब इनकी देख-रेख ही नही, सूझ-बूझ का भी पर्याप्त लाभ उसे मिला था।

सहायक ट्राफिक अफसर एक भला नवयुवक था। अपना शिक्षण अभी ही समाप्त कर नियुक्त हुआ था। कागजो का ढेर इसकी टेबल पर भी लग जाता था, किन्तु विलक्षण फुर्ती से काम को निपटा देना उसका एक सहज गुण था। हा, सिगरेट तथा चाय उसके कमरे मे सदैव ही धुआ छोडती देखी जा सकती थीं। उनके आसन के बारे मे लोगो को शका थी। नये अफसर और सभी कोई देखता था कि उन्हे फुरसत का अभाव नही है। ऐसे अफसरो को लम्बी फुरसत मिलते देर नही लगती। पर यह हजरत किसीकी मानो चिन्ता ही नही करते थे। अपने छोटे-से कमरे में, जो आता उसे चाय और सिगरेट पिलाकर मीठी बातो से मोह लेते थे। लोकप्रिय हो चले थे, इसलिए कुछ लोगो का उनपर जलन होना स्वाभाविक ही था। वे लच खाने अपने बगले ही जाते थे। कुछ समय तक मेरे सहयोगी भी रह चुके थे, किन्तु अभी तक लौटे न थे।

मैंने कहा, 'तो जोशी, जरा सहायक इजीनियर साहब से ही मिल आऊ। देखू कुछ काम की बात ही मिल जाए।'

तभी नानकचन्द ने मेरे हाथ पर हाथ रखा, उसकी दृष्टि का अनुसरण करके देखा कि राधावल्लभ की टेबल के पास एक बाहर के सज्जन खड़े हुए हैं। उसने फिर आख का इशारा किया और अपनी सीट पर जा बैठा! तब तक कमलनयन भी अपनी सीट पर जा चुका था।

मैंने जोशी से कहा, 'मैं नानकचन्द के इशारे का मतलब नही समझा!'

'अरे यार माई लार्ड, नही समझे, तभी तक भला है! अब पुराने जमाने क्या लद गए, लोगों का पुराना दिल भी लद गया। यह कोई रिजर्वेशन का उम्मीदवार दीखता है। यह फाइल लो, और इसमे आंखें गड़ाकर कान उस ओर खडे कर दो। सब कुछ यहा से सुनाई देगा।'

कुतूहल बढा। सहायक इजीनियर को भूलकर जोशी की आज्ञाओ का पालन किया।

ग्राहक कह रहा था, 'बाबू साहब, बाल-बच्चे साथ है, पूरे कम्पार्टमेट के बिना काम नही चलेगा।'

राधावल्लभ, 'नीचे के दो बर्थ (शायिकाए) तो रिजर्व हो चुके है। ऊपर के दो बर्थ ले लीजिए, वे भी यो तो प्रोवीजनली रिजर्व हो चुके हैं, परन्तु ...'

'बाबू साहब, आप निश्चित रहिए, आपको खुश रखा जाएगा।'

'सो तो ठीक है सेठ साहब, इसलिए तो ये दो ऊपर की बर्थ मैं आपके नाम किए देता हू। शेष को आप गाडी के दूसरे सामान्य डिब्बे मे बिठा दीजिए।'

'किन्तु, देखिए, मैं तो खैर ऊपर की बर्थ पर चढ लूगा, किन्तु मेरे बूढे पिता और महिलाए तो ऊपर नही चढ सकती। फिर सामान्य डिब्बे मे तो आधी रात को गाडी बदलना पडेगा।'

'यदि सीधे डिब्बे मे जगह न हो तो क्या किया जाए ? दस रोज तक और कोई खाली जगह ही नही है। दस दिन के बाद का आरक्षण करा लीजिए।'

'लेकिन मुझे तो परसो बम्बई पहुचना आवश्यक है।'

'तो क्या करे ? बताइए ! मेरे कन्धे पर चढकर तो जा नही सकते। यो भी चार कन्धो की जरूरत होती है।' मुझे हसी आ गई।

ग्राहक ने गिडगिडाकर कहा, 'क्या किसी भी तरह कोई काम नही हो सकता ? यदि आप कहे तो मैं बडे ऊपरी अधिकारी से मिलू।'

'यदि आप समझते हो कि बडे अफसर के कन्धे इतने मजबूत है तो जरूर जाइए ! पर यह ध्यान रखिएगा कि इस रजिस्टर के लिखे को तो वे भी नही काट सकते। और फिर उनके सामने जाने पर ये जो दो ऊपर के बर्थ आपको दे रहा हू, इन्हे भी रद्द समझिए। शौक से आप जा सकते हैं।'

कनखियो से देखा कि इसके बाद ही उन्होने नाक पर अपने चश्मे को ठीक किया तथा, जेब से डिबिया निकालकर हथेली पर तम्बाकू उडेल ली। सेठ साहब क्या करें, क्या न करे की हालत मे मायूसी भरा चेहरा लिए इधर-उधर ताक रहे थे।

बाबू राधावल्लभ ने अपने सहायक से कहा, 'वह वेटिग लिस्ट देना तो ?'

सहायक ने जब वह कागज पकडा दिया, तो ग्राहक से बोले, 'देखते हैं यह लिस्ट ? इतने व्यक्ति उम्मीदवारो की कतार मे खडे है।' फिर एक व्यक्ति के नाम के स्थान पर अगुली रखकर कहा, 'यह आदमी एक बर्थ के दस रुपये दे रहा है। समझे आप ?' फिर सहायक की ओर मुख फेरकर बोले, 'इस व्यक्ति के नाम ये दोनो ऊपर के बर्थ लिख दो !'

और इसके बाद ही जूते निकालकर अपने दोनो पैरो को उठा उन्होने कुर्सी पर ही रख लिया, तथा निहायत इतमीनान से तम्बाकू और चूना, एक प्राण करने लगे। बेचारा उम्मीदवार देखने लगा कि हथेली पर तम्बाकू की जगह सरसो किस तरह जम सकती है।

आखिर जब सहायक ये रजिस्टर उठा लिया, तो मुह तक जाती हुई हथेली को रोककर उन्होने कहा, 'देख लीजिए, एक दफा इस रजिस्टर पर नाम लिखा गया, कि फिर ब्रह्मा भी इसमे हेर-फेर नही कर सकेगा। आखिरी बार ··', और फिर उन्होने तम्बाकू मुख-निगर्त्त में निपतित करके समाधि साध ली।

'जरा ठहरिए !' सहायक को यह आदेश देकर ग्राहक ने राधावल्लभ बाबू से कहा, 'देखिए, अगर चार बर्थ का पूना कम्पार्टमेट मुझे दे दें तो····' और मैंने कनखियों से देखा कि उसने कुछ नोट बाबू साहिब के सामने टेबल पर कुछ इस तरह दिखाए कि उनके सिवा कोई देख न सके।

'कितने हैं ?'—राधावल्लभ थूथनी को ऊपर उठाकर कहा, पीक के कुछ बारीक कण हवा में उडे, यह सामने खडे अतिथि की भाव-भगी से प्रकट हो गया। पर गरज बडी शैतान है, सब कुछ करा लेती है !

उसने कहा, 'चार'

'अच्छा, क्या करें ?—आप लोग तो इस तरह रस्सी तुडाकर पीछे पड जाते हैं ।' फिर सहायक की ओर मुडकर बोले—'दे दो चारो बर्थ इनको, और स्टेशन मास्टर को तार लिख दो ।'

मैंने जोशी से कहा, 'यह इस दफ्तर मे कब से चलने लगा ?'

'कब से ?—अरे रोज़ की बात है ! मोहनलाल तो दिन-दहाडे डाका डालता है, जैसे डॉक्टरो की फीस बधी हुई है न, उसी तरह !'

'और ये अधिकारी गण ?'

'पुराने तो, मेरा ख्याल है, अभी पाक-साफ हैं, लेकिन इन बाहर से आए हुओ की बात मत पूछो माई लार्ड ! वह जो नया स्टेशनो का लेखा-निरीक्षक आया है न—हा, माथुर—सुनते है, स्टेशन-मास्टरो से उसने महीना बाध लिया है । यही नही, घी-तेल, लकडी सब वही से आते हैं । बेचारे फिर स्टेशन वाले क्या करे । तेल तो तिलो से ही निकलता है ।'

'क्या गुप-चुप चल रही है माई लार्ड !' कहते हुए पुन राधावल्लभ ने मेरे कन्धे पर हाथ रखा । मैं चौक उठा ! बोले, 'घबराओ नही ।—तुम्हारे लिए बनी हुई तम्बाकू की कुर्बानी कर दी है । फिर बना लूगा, तुम क्या रोज-रोज आते हो भाई ?'

मैं आश्वस्त हुआ । उनकी जबान की छीटाकशी से अधिक डरना चाहिए, या मुह की छीटाकशी से, यह कोई नही कह सकता । पर जब दोनो ही का भय उपस्थित हो जाए तो भगवान ही रक्षक होता है । इस समय अब केवल जबान की छीटाकशी ही का डर रह गया था ।

जोशी ने कहा, 'बाबू जी, मुर्गी कुडक तो नही हो गई ?'

'कुडक हो तेरी । चालीस लिए हैं ।'

'चालीस ?—खूब मोटा हाथ मारा यार !'

'मोटा क्या जोशी ! दो-चार महीने रह गए हैं । वह भी कोई काम करने दे या नही, कह नही सकता । माई लार्ड का जमाना तो कड़की का था । भला हो बेवकूफो का, कि कुछ सास तो ले लेते हैं । उधर मोहन-

लाल को देखा नही ?—मालगाडी के डिब्बो मे माल के बोरे भरकर ही लोग सौ-पचास बिना मुश्किल के दे जाते हैं, जैसे उनका बाप ही लगता हो। मैं सेकण्ड क्लास मे गद्देदार बैठको पर इन लोगो को ऐसे आराम से बिठाता हू, कि जिसे अनिद्रा का रोग हो, वह भी मीठी नीद सो जाए।'

'पर चालीस तो काफी मोटी रकम है। हमारी ग्रेड वालो की १५ दिन की तनख्वाह—रोज आठ घटे कलम-घिसाई करे तब।'

'चालीस तो क्या मुझे अकेले ही को मिलेंगे ?—मेरा बाबू, स्टेशन-मास्टर, वहा का टिकट-कलेक्टर, रिजर्वेशन-क्लर्क—सभी तो है!—और कभी-कदाक फसती है ऐसी मुर्गी तो।' फिर मेरी पीठ पर हाथ रखकर बोले, 'माई लार्ड! आपको तो बुरा लगा ही होगा। आप पढे-लिखे धर्मात्मा जीव ठहरे। आपको तो बहुत कुछ करने का हौसला है। मगर हमारी तो नाव किनारे लग गई। तीन धीगरी छोकरियो के हाथ पीले करने है। एक लडका इस साल फिर मैट्रिक मे फेल हो गया। और बाल सफेद हो गए, सरकारी तौर पर बूढे करार दे दिए गए, लेकिन परमात्मा है कि मज़ाक करना नही छोडता। भला बताओ, इस उमर मे अब सतान पाकर कोई क्या करेगा ?—ज़माने को अभी तक देखा नही था, किस्मत ने यह मर्जर (विलयन) का मर्ज लगाकर वह भी दिखा दिया। गई बार छुट्टियो मे नियुक्ति-विभाग के हेड क्लर्क से मिला था, बोला कि सेवा मे एक साल का विस्तार पाना हो तो दो सौ रुपये खर्च करने पडेंगे। डॉक्टर का प्रमाण-पत्र लाना हो तो दस रुपये, झूठा प्रमाण-पत्र पचीस रुपये, और यदि सेवा-काल मे विस्तार के लिए उमर का झूठा प्रमाण-पत्र लेना हो तो सौ रुपये। लडका यदि मैट्रिक पास हो गया तो नई नियुक्ति के लिए ढाई सौ रुपये!—अब भला बताओ माई लार्ड!—इस धकम-पेल में यदि तुम भी धक्का-मुक्की न करो तो क्या भीड़ तुम्हे अपने पैरो पर खड़े रहने देगी, कुचले नहीं जाओगे तुम ?'

जोशी ने मुस्कराकर कहा, 'इसलिए हम भी धक्का देकर आगे बढते जाए ?'

'और नही तो क्या ?'

—और मैं सोचने लगा कि इस बेचारे निरीह क्लर्क ही को क्या दोष दिया जाए, यह तो सम्पूर्णत: विषचक्र की एक चापमात्र है ! सच-मुच यह एक धकम-पेल है, पीछे से धक्का आता है, इच्छा न रहने पर भी आगे धक्का दिए बिना निस्तार नही है !

जोशी कहने लगा, 'अच्छा बाबू जी, जिस आदमी की जगह इसे आपने रिजर्वेशन दिया है, उसका क्या होगा ?'

'वह आदमी तो बना लिया गया था छाया के रूप मे, खाली रजिस्टर मे नाम लिखने के लिए ! अग्रेजी मे कहते हो न घोस्ट—राशनिग की दुनिया मे घोस्ट कार्ड नाम नही सुना ?'

'और अगर वह अफसर के पास पहुच जाता ?'

'तो रजिस्टर तो खाली था नही। उसमे किसीका नाम तो दर्ज था ही ! अफसर क्या करता ? यह कहने से तो रहा कि उसका नाम काटकर इनको दे दो।'

तीन बजकर बीस मिनट हो चुके थे। तभी महा व्यवस्थापक का चपरासी दिखाई दिया। मैंने उठकर कहा :

'ज़रा रेगिस्तान की हवा खा आऊ। यदि तब भी सास चलती रही तो मिलूगा।'

और मैं बाहर हो लिया।

११

बम्बई नगर के टी० बी० अस्पताल के एक जनरल वार्ड मे श्री नटनागर को एक पलंग पर लेटे हुए देखकर सहानुभूति तो होती ही है, दया भी कम नही आती। लगभग दो माह होने को आए, अभी तक उनकी अवस्था मे इतना सुधार नही हुआ कि ऑपरेशन किया जा सके। उनके फेफडो मे पानी भर गया था। फेफडे दोनो ही काफी खराब हो गए थे। एक फेफडे की अवस्था अधिक खराब थी। ख्याल था कि पानी निकाल देने के बाद भी शायद इस फेफडे को निकाल डालना पडेगा। दूसरे फेफडे मे भी कुछ छेद होने का अनुमान था। विशेषज्ञ डॉक्टर की राय थी कि चादी की चन्द गोलिया डालकर उसे उपयोग योग्य बनाया जा सकेगा। सचमुच क्या करना होगा, यह तो ऑपरेशन के बाद ही निर्धारित किया जाएगा। ऑपरेशन काफी गम्भीर है। इसके लिए साधारण स्वास्थ्य को एक स्तर पर पहुचने के लिए उपचार चालू था। शरीर का भार ९० पौण्ड से भी नीचे पहुच गया था, तापमान लगभग सदैव ही १०० और ९९ के बीच मे रहता था, अब वह ९९ से ऊपर नही जाता, पर ९८ पर भी स्थिर नही रहता। वजन यदि आठ-दस पौण्ड बढ जाए, और तापमान ९८ पर भी स्थिर हो जाए, तो ऑपरेशन किया जा सकेगा। चिकित्सा चालू है। स्ट्रेप्टोमाइसिन के इजेक्शन लग रहे हैं। यीस्ट पाउडर, विटेमिन्स, फल-फूल, दूध-अण्डा आदि डॉक्टरो की राय के अनुसार अनुपान भी चल रहा है। आशा है, अधिक से अधिक एक माह के भीतर ऑपरेशन की अवस्था के अनुकूल स्वास्थ्य हो जाएगा।

चिन्ता के अन्य कारण भी कम महत्व के नही। सबसे अधिक महत्व का है आर्थिक। नटनागर बाबू के सम्मान का एक स्टैण्डर्ड है। उस स्टैण्डर्ड के मुताबिक उन्हें अस्पताल के इस वार्ड मे भी अपनी पोजीशन बनाए रखने का खयाल है। बम्बई जैसे शहर मे और अस्पताल की चार दीवारी के लिए

नौकर मिलना सहज नही। किन्तु वार्ड-बॉय को वे इतनी रकम देना अपना कर्तव्य समझते थे, जितना कि बम्बई के इस वातावरण मे अपने स्टैण्डर्ड के अनुकूल देना उनके लिए उचित था। अत वार्ड-बॉय उनसे खुश ही था; वह उन्हे साहब कहकर सम्बोधन करता था, जिससे नटनागर साहब की आत्मा को गहरा सन्तोष और परितृप्ति अनुभव होती थी। साहब लोगो की आदत के समान ही उनकी चाय, दूध, नाश्ता, फल-फूल आदि मे बैरा का ही हिस्सा अधिक रहता। तात्पर्य यह कि नौकर न होने पर भी नौकर का पूरा खर्चा उनको था ही। इधर उनका आधिकारिक अवकाश कभी का समाप्त हो चुका था, गत तीन माह से वे अर्द्ध वेतन पर रुग्णावकाश मे थे। अस्पताल रेलवे का न था, किन्तु रेलवे की सिफारिश से दाखिल हो गए थे, अत जनरल वार्ड मे एक बिस्तर पा लेने का तो कोई किराया न था, किन्तु औषधि, इजेक्शन आदि का पैसा तो पास से देना ही पडता था। सम्भव है रेलवे औषधियो की कीमत तथा ऑपरेशन के खर्चे की व्यवस्था कर दे, पर अभी तो पैसा चुकाना ही पड रहा है। और फिर नटनागर की साहिबी आदत ठहरी, डॉक्टर, कम्पाउण्डर, नर्स सभी को यदि विशेष रूप से खुश रखना हो तो विशेष रूप से उन सबकी पूजा भी करनी पडती है।

अस्त्रोपचार के बाद भी, कम से कम छ मास तक नटनागर बाबू को एक सेनेटोरियम मे रहना आवश्यक था। इसी बीच मे अर्द्ध वेतन की सुविधा भी कदाचित् न रहे, और सेनेटोरियम का व्यय साधारण व्यय से अधिक होगा ही, तब खर्चे की व्यवस्था कहा से होगी।

किन्तु इन सब चिन्ताओ के ऊपर जो सन्तोष है, वह है कमला का वह पत्र, जो इन्होने तकिए के नीचे छिपा रखा है, और जिसे वे दिन मे कम से कम एक बार अवश्य पढ लिया करते हैं। दिन भर मे तीन बार ली जाने वाली औषधि की मात्रा उतना प्रभाव नही उत्पन्न करती, जितना वह पत्र करता है। यो, प्रेरणा पाने पर एक बार से अधिक भी उस पत्र का वे पारायण कर लेते हैं। यहा इस अस्पताल मे आने के बाद ही उन्हे

वह पत्र घर से रि-डाइरेक्ट होकर मिला था। अपनी बीमारी का सकेत देकर बम्बई आने की सम्भावना पर जो पत्र घर से उन्होने कमला को लिखा था, उसीका यह उत्तर है। प्रेम, स्फूर्ति और आशा से भरा हुआ यह पत्र निश्चय ही उनकी प्रस्तावित पुस्तक 'कमलाज़ लव लेटर्स' मे स्थान पाने योग्य है।

पति की बीमारी का सम्वाद पाकर कमला इतनी उद्विग्न हो उठी है कि संक्रमण की आशका से अपने स्वास्थ्य को खतरे मे न डालने के पति के समस्त उपदेशो की तनिक भी चिन्ता न करके, वह इसी सप्ताह नटनागर की सेवा के लिए अपनी ससुराल पहुच रही है। यद्यपि इस पत्र के बाद उन्हे दूसरा कोई पत्र कमला से नही मिला, किन्तु कोई पत्र न मिलना ही इस बात का प्रमाण है, कि कमला नटनागर को घर पर ही समझकर वहा पहुच गई है। कमला और सास मे अधिक बनती नही, यह नटनागर जानते हैं, तभी तो कमला के त्याग की महिमा उनकी दृष्टि मे इतनी ऊची उठ सकी है। अवश्य ही घर से पत्र लिखने का सुयोग कमला को एकाएक नही मिल सकता। पति के लिए कमला की कल्याण-कामना नटनागर की सतोष और सुख की थाती है।

पर, यह है केवल आत्मप्रसाद की भावना! गर्व की भावना को दृढ़तर करने के जो सम्वाद है, वे ये है कि कमला प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक मे उत्तीर्ण हो गई है। प्राइवेट कैण्डिडेट, और प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण होने का सौभाग्य और किसीको नही केवल उन्हीकी पत्नी को मिला है, क्या यह गर्व करने की बात नही? और इस सम्वाद को वार्ड की जितनी भी नर्से हैं, सब एकाधिक बार कई रूप से नटनागर से सुन चुकी हैं और जानती हैं कि कई बार उन्हें और भी इस सम्वाद को सुनना होगा। किन्तु नटनागर को खुश रखने मे उनका लाभ है, इसलिए हर बार वे मि० नटनागर को काग्रेचुलेशन देने से थकती नही। यद्यपि अपने पत्र में कमला ने अपनी उपलब्धि का पर्याप्त श्रेय कमल की शिक्षा-पद्धति को दिया है, किन्तु नटनागर कमल को विशेष महत्व नही देते। पहले

तो यो कि कमल के निर्माण मे वे अपना भी हाथ समझते हैं, अतः कमला के लिए कमल का परिश्रम उनका प्राप्य ही है, दूसरे जब तक शिक्षार्थी का मन ग्रहणशील न हो तो अध्यापक, उसका परिश्रम और उसकी पद्धति कर ही क्या सकती है ?

इसके अलावा कमला ने लिखा है कि उसकी इच्छा रेलवे की कन्या-पाठशाला मे ही अध्यापिका बनने की है। इससे जहा आर्थिक सुविधा होगी, वहा उसका मानसिक धरातल भी ऊचा उठ सकेगा। श्री धर्मप्रकाश ने कमल बाबू के द्वारा सकेत दिया था कि यदि वह अध्यापिका बनना चाहे तो वहा से उनके स्थानान्तर के पूर्व वे इसकी व्यवस्था कर देंगे। नटनागर की स्वीकृति की आशा मे कमला ने प्रार्थनापत्र भी दे दिया है।—सो अच्छा ही है, पगली! नटनागर स्वीकृति न देंगे ?—इससे बढकर खुशी की बात उनके लिए हो ही क्या सकती है ?—सरलता से वह आगे भी पढ सकती है, एफ० ए०, बी० ए०, क्या हुआ स्वय यदि नटनागर बी० ए० न हो। उनका अग्रेजी का नौलेज, अच्छे-अच्छे बी० ए० पास लिख तो ले उनके बराबर अग्रेज़ी! और फिर आर्थिक सुविधा! —जो तनख्वाह नटनागर को मिलती थी, उसमे गृहस्थी का गुजारा कहा ठीक तरह चल पाता था। यद्यपि आगे उन्हे तरक्की की काफी आशा है, एक न एक दिन वे छोटे-मोटे अफसर बनकर ही रहेंगे—अभी तो उनके कार्यकाल का प्रारम्भ ही है—किन्तु फिर भी कमला का इण्डिपेण्डेण्ट स्टेटस (स्वतत्र-सम्मान) उनके स्वय के स्टेटस को अवश्य ऊचा उठाएगा।

आफिस के भी वहा से उठ जाने के निश्चय की खबर कमला ने दी थी। कुछ अफसर चले गए थे, स्टोर्स भी शायद अब तक चला गया होगा। धर्मप्रकाश के किसी डिविजन आफिस मे जाने की बात थी, पता नही, अभी तक वही है या चला गया। उसके वहा रहने से कमला की सर्विस सम्बन्धी कार्यवाही मे सहायता मिलती। यो नटनागर ने धर्मप्रकाश के लिए भी कुछ कम नही किया है। किस प्रकार कागजो को रातो रात बदल कर उन्होंने धर्मप्रकाश को महा व्यवस्थापक के कोप से बचाया था।

उनकी सहायता के बिना शायद धर्मप्रकाश रास्ते की धूल फाकते होते। अब जरूर उनका सितारा बुलन्द हो गया है, तो क्या वे प्रकाश पाने के हकदार भी नहीं ? कितना अच्छा होता यदि वे इस समय वहा होते !—इस भाग-दौड में खुद अपने लिए कुछ छीन-झपट लेना उनके लिए असभव नही होता। कम से कम अपनी सर्विस फाइल मे अपनी शिक्षा के विषय मे तो वे पुराने इन्द्राज बदलकर ग्रेजुएट लिख ही सकते थे, ताकि भविष्य मे उन्नति के रास्ते मे उपाधि का रोडा तो न रहता। और सच-झूठ का पता लगाने ही कौन बैठता है ! किन्तु, भाग्य की मार को कोई क्या करे।

इस प्रकार कई दिन पूर्व आए कमला के पत्र का मानसिक पारायण कर चुकने के बाद नटनागर ने अनजाने ही तकिए के नीचे हाथ सरकाया और हल्के नीले रग का लिफाफा बाहर खीच निकाला। लिफाफे पर कमला के हाथो उनका लिखा हुआ नाम वे गौर से पढने लगे। अग्रेज़ी मे लिखा था 'श्री एन्० एन्० एन्० अटनागर'—ना, यह उपयुक्त नही है। 'श्री' की प्रशस्ति अत्यन्त सामान्य प्रशस्ति है, इससे किसीकी शिक्षा, सस्कृति और अवस्था पर पर्याप्त प्रकाश नही पडता। कमला को समझाना होगा कि वह भविष्य मे लिखा करे 'एन्० एन्० एन्० अटनागर एस्क्वायर' यदि 'मिस्टर एन्० एन्० एन्० अटनागर' लिखा होता तो भी इतना अधिक असगत न होता। अक्षरो की बनावट निस्सन्देह अच्छी है, यद्यपि उनके हस्ताक्षरो के समान गोल-गोल तथा बाकी नही ! गोलाई और बाकापन यदि किसीके हस्ताक्षरो मे हो तो इससे उसके चरित्र के बाके-पन का प्रभाव पडे बिना नही रहता।

नीचे का लिखा हुआ पता गाव के पोस्ट-मास्टर ने काटकर पास ही लाल स्याही मे बम्बई का पता लिखा था। पोस्ट-मास्टर के हस्ताक्षर भी क्या अजीब हैं। सीधी रेखा मे कुछ मोड़ और एकाध जगह गाठ, हा पहले का अक्षर पढ़ा जा सकता है। बम्बई शब्द का केवल बी, उसके बाद एक वक्र रेखा, फिर एक खड़ी रेखा, एक गाठ, और दूसरी खडी रेखा सतह से नीचे लटकती हुई ! क्या खूब—नटनागर को सदैव ही पोस्ट-मास्टर

के हस्ताक्षर तथा डाक्टर के किसी नुस्खे पर प्रयुक्त हस्ताक्षरो को देखकर अपार कुतूहल हुआ करता था। उनके ओठ अनायास ही १८०° की सीधा रेखा पर फैल गए।

लेटे-लेटे ही उन्होने पत्र को अनावृत किया। दो शीटो मे लिखा हुआ था। प्रारम्भ से लगाकर अन्त तक वे समग्र चित्त और ध्यान से उसे पढ गए। मन्द हास्य उनके चेहरे पर बराबर बना रहा। तभी सुनाई दिया

'गुड आफ्टर नून मि० नटनागर।'

दृष्टि उठाकर नटनागर ने देखा कि आग्ल-भारतीय नर्स मिस पेट्रीशिया ओषधि का ग्लास लिए मुस्करा रही है। उन्होने उत्तर दिया, 'गुड आफ्टर नून सिस्टर' और मुस्कराकर बोले, 'सिस्टर, अगर तुम्हारी मुस्कान का मीठापन न हो तो इस कडवी दवा को कोई पीना नही चाहेगा।'—बैठकर उन्होने दवा का पात्र हाथ मे ले लिया।

पेट्रीशिया ने हसकर कहा, 'अनादर स्वीट लेटर फ्रॉम मिसेस अटनागर ?' (क्या श्रीमती अटनागर का दूसरा मधुर पत्र ?') और उसने शरारत भरी आखो से नटनागर के हाथ वाली चिट्ठी की ओर देखा। —नटनागर कुछ लजा गए। एक ही पत्र को बार-बार पढते रहने की चोरी उनकी कई बार पकडी गई है, लज्जा की बात यह है कि वह पत्र नवीन सस्करण बनकर प्रतिदिन डाक के द्वारा उन्हे क्यो नही मिलता ? ये लोग क्या सोचते होगे ! क्या एक पत्र लिखकर ही जवान कमला बूढी हो गई ?—उन्होने मानो उत्तर को ओषधि के पान द्वारा पेट की गहराई मे उतार दिया।

जब तक नटनागर ओषधि पीते रहे तब तक पेट्रीशिया ने उनके पलग पर लगे हुए चार्ट को देखा, और बोली, 'आज तो आपका टेम्परेचर नार्मल हो गया दीखता है—काग्रेचुलेशन्स।'

'थैंक्यू सिस्टर ! यह आपकी ही मेहरबानी का फल है।'

'प्रे यू रिकवर सून ! (प्रार्थना है कि आप शीघ्र स्वस्थ हो जाए।)

—और देखिए, अब अधिक न पढिए। लेटकर डे-ड्रीम (दिवा-स्वप्न) मे मिसेस नटनागर से बाते करने मे कोई खास आवजेक्शन (आपत्ति) नही है।'—और वह हाथ हिलाकर आगे वाले बिस्तर पर पहुच गई।

ब्यूटीफुल—नटनागर ने सोचा, और एक लम्बी सास के साथ पेट्रीशिया के ऊपर से नजरे हटा ली। जीवन इसे कहते है; इस अहेतुक-मुस्कान की विश्व मे क्या कोई कीमत है ?—एक छोटे सरल शिशु के अधरो पर अनायास ही फूट उठने वाली मधुर-पोपली हसी का मूल्य क्या कोई आक सकता है ? और फिर गुलाब की पखुडियो से फूटी हुई पेट्रीशिया की मुस्कान तो बीमार व्यक्तियो के मानस पर मरहम लगाने के निमित्त है, इसकी तुलना कहा मिल सकेगी ?—नटनागर ने एक बार और आखें चुराकर उस ओर देख लिया, फिर कमला की छवि को छत पर आकने लगे।

तभी वार्ड के बॉय ने आकर डाक से आया हुआ एक पोस्टकार्ड उनके हाथ मे थमा दिया। जिस स्वप्न को नटनागर देख रहे थे, उसे वे मिटाना नही चाहते थे। अत पोस्टकार्ड को कुछ क्षणो तक उनके हाथ मे अटके रहना पडा।

अजीब अक्षरो मे किसी नौसिखिए के हाथ का लिखा हुआ पोस्टकार्ड। पोस्ट आफिस वाले भी लिखे हुए पते तक का पूरा उद्धार न कर सके, जिसका नतीजा यह हुआ कि तीन पैसे की लागत मे ही कई तीर्थों की यात्रा और प्रमाणस्वरूप पोस्टल डिपार्टमेट की तिलक-छापो से समस्त शरीर की चर्चा। लडखडाते हुए अक्षर तिलक-छापो के इस जाल में और भी निर्जीव हो उठे थे। सब कुछ होने पर भी नटनागर ने देखा कि पता उन्हींके नाम का है, और अक्षरो के इस दुरछेद्य व्यूह मे उन्हे घुसने के सिवा कोई चारा नही है। जो कुछ नटनागर पढ सके, वह कुछ इस प्रकार है .

जोग पत्री लिखी शुभसुथानेक ओपमांलायक श्री नन्नू बाबू को तुम्हारी मातोश्री का आसरीबाद पहो मान से। अपरच यहा सब भला, आपकी

खुसी का समीचार श्री जी महाराज से सदा नैक चाहिजै। चिट्ठी आपकी इन दिनों नही सो दिरावसी। बहू यहा पर दो महीना से आई है, पग भारी है। सास बहू मे एक छिन भी नही वनै। सारा गाव मे बदनामी फैल गई है दाई का मुह कौन पकडे। सो इसका कुछ इन्तजाम करो। थोडी लिखी बहुत समझो। सोना की छुरी पेट मे नही भोकी जाए। पत्री का जवाब जल्दी देवो। इन्तिजार।—आदि-आदि आगे कुछ समझ मे नही आया। छापो के पेट मे समा गया।—एक जगह अस्पष्ट रूप मे घूमर काकी का नाम भी पढा जा सका।

पर जो कुछ पढा, वह भी विशेष रूप से नटनागर की समझ मे आ सका हो, सो दिखाई नही देता। जो कुछ स्पष्ट हो सका वह इतना ही है, जैसा कि कमला ने लिखा था—नटनागर की खोज मे वह अपनी गाव की सुसराल मे पहुच गई है। सास-बहू मे पहले भी कभी नही बनी, यह नटनागर जानते थे, इसमे भी विशेष कुछ नही है। सारे गाव मे बदनामी किस बात की फैल गई?—समझ नही पडता। सास-बहू मे लडाई तो हिन्दू गृहस्थी मे बहुत सामान्य बात है। किस गृहस्थी मे यह नहीं होता?—फिर भी बदनामी जैसा इसमे कुछ हो सो तो दिखाई नही देता। पर दाई का मुह कौन पकडे और पग भारी है का क्या मतलब? —क्या कमला का घर मे पैर नही टिकता?—यह तो उसकी आदत· नही·—फिर घूमर काकी के नाम का इस पत्र मे उल्लेख क्यो?—यह ठीक है कि पत्र मा ने किसी अध-पढे देहाती से लिखाया है, किन्तु घूमर काकी कोई इनकी आत्मीय तो नही कि ऐसे पत्र मे भी उनका उल्लेख हो ही। हो सकता है, पडोसिन है, शायद पत्र लिखवाते समय पास मौजूद हो! किन्तु, फिर भी जैसे मा का लिखाया यह पत्र नही मालूम पडता।

मां पुराने ज़माने की ठहरी, लिखना-पढना नही जानती। इसके ऊपर इस समय एक तरह से अधी ही समझो। पत्र अवश्य ही बहू से छिपाकर लिखाया गया है। घर की बात ठहरी, इसलिए किसी बालक ही से लिखाया है। मा के लिखाए हुए पत्र और भी पहले नटनागर को मिले

हैं। उन्हे भी कोई बहुत अच्छी साहित्यिक भाषा मे लिखा नही कहा जा सकता। लिखने वाले अन्य पुरुष को लिखाने वाले प्रथम पुरुष से अलग करके देखा जा सकता था, फिर भी आवरण बाहर का होते हुए भी पत्र के भीतर से मा के वात्सल्य की धारा उमड ही पडती थी। भाषा का बन्धन उसे कभी मान्य नही था। इस थोडे-से लिखे को बहुत समझना तो दरकिनार रहा, इस इतने बडे लिखे का कण भर भी उनकी समझ मे नही आया।

पुत्र को पत्र लिखाते समय मा अपने आपको सदैव ही भूल जाती है। फिर नटनागर की मा, जिसकी दुनिया मे अब 'नन्नू' के सिवा और कोई है ही नही। और इस समय वही नन्नू प्राणान्तक बीमारी की डोली पर सवाँर, उसको पत्र लिखाते समय मा को यह पूछना भी ध्यान न रहे कि वह किस तरह है? उसकी चिकित्सा मृत्यु के द्वार से उसे कहा तक बचा पाई है?—और बहू से लडाई के सामान्य काड ही मे समस्त पत्र का प्रयोजन नष्ट कर दे? क्या सास-बहू का युद्ध इस सीमा को पहुच गया कि मा की सामान्य मर्यादा भी उसके सामने क्षुण्ण हो उठी।

जो हो, कमला का वहा अधिक रहना अच्छा नही है—मा के लिए भी और स्वय उसके लिए भी। उसे अवश्य लौट जाना चाहिए। यहा तो वह क्यो आए? मैं ऐसी बीमारी मे किसी अपने को पास बुलाकर उसके स्वास्थ्य को जोखिम मे डालना क्यो चाहूंगा!—उधर यद्यपि ग्रीष्मावकाश अभी समाप्त नही हुआ है, फिर भी वहा पहुचकर कमला स्कूल मे सर्विस के सम्बन्ध मे कुछ अधिक जागरूक हो जकेगी। नटनागर को अपने अर्थाभाव की भी अलक्ष्य मे चिन्ता है। तार दे दिया जाए? नहीं, नही—इस समय तार नही। तार का नाम सुनते ही उन लोगो की परेशानी का अनुमान किया जा सकता है; फिर इससे सारी परिस्थिति बड़ी विद्रूप हो उठेगी। तार की बात देहात मे छिपी नही रहती, तार की जल्दी को भी मात करके वह हवा के साथ सारे गाव मे फैल जाती है। यदि पहले ही सास-बहू की बात को लेकर गाव मे बदनामी फैली

हुई है, तो तार उसमे चार चाद लगा देगा। इससे तो बेहतर है कमला के नाम एक पत्र लिख दिया जाए, हा, उन्हे पढने-लिखने की मनाई है, किन्तु छोटा-सा पत्र लिखने मे कोई खास आपत्ति न होगी। आज की डाक से चला जाए तो परसो तक वह कमला के हाथ मे होगा। एकाध दिन ठहरे भी, तो भी वह इस सप्ताह के अन्त तक वह वहा पहुच जाएगी। वहा पहुचते ही वह पत्र लिखेगी—उसका पत्र नटनागर के लिए एक टॉनिक के समान है, यह भी उसे लिखकर बता देना होगा, और तब यह पोस्टकार्ड उसके पास भेज देना होगा, ताकि वह इसकी समस्त बातो पर प्रकाश डाल सके। इसके सिवा पत्र के समस्त मर्म को समझने का नटनागर के पास और कोई उपाय नही है।

सध्या के पहले-पहले नटनागर बाबू ने कमला को पत्र पोस्ट करवा दिया।—उसके बाद उन्होने शाति की सास ली, किन्तु पत्र का भार उनकी चेतना पर से उठा नही। कमला के पत्र के पास तकिए के नीचे ही वह पोस्टकार्ड भी आसीन हो गया, और अन्य रोगियो के साथ अस्पताल के स्टाफ ने भी देखा कि इस पोस्टकार्ड का पारायण भी उनके लिए एक नियमित कार्य हो गया है।

दो-एक दिन के बाद अनायास ही स्त्रियो के पैर भारी होने का तात्पर्य नटनागर को हृदयगम हो गया, जबकि उनके पलग के पास वाले रोगी के सम्बन्धियो मे बातचीत के दौरान मे उनकी गर्भवती कन्या की चर्चा चल रही थी? और एक ही क्षण मे उनका हृदय बासो उछलकर मिट्टी मे गिर पडा जब उन्हे उसके साथ ही सारे गाव मे बदनामी की बात लिखी हुई ध्यान हुई। वे पिता बनने जा रहे है! इस मनुष्य जीवन मे पुरुष के भाग्य मे जब पहले पहल पिता बनने का अवसर उपस्थित होता है, तो जमीन पर उसके पैर नही रहते, मस्तक आकाश को भेदकर कहा उठ जाना चाहता है सो समझाया नही जा सकता। मन नाम का पदार्थ इतना हलका होकर उडने लग जाता है कि शरीर की सीमाए टुकर-टुकर देखती ही रह जाती है। नटनागर इसको अनुभव न करे, यह हो नही

सकता, बिस्तर पर पडे-पडे ही मन के पखो पर सवार होकर वे जाने कहा-कहा की सैर कर आना चाहते हैं, परन्तु मानो बदनामी की वह कथा पखों को खोलने नही देती। बदनामी—बदनामी किस बात की ?—और वह भी एक कमला जैसी सुशिक्षिता महिला के लिए एक फूहड गाव मे ?

मा बनने मे क्या बदनामी है ?—बाप बीमार हो तो क्या हुआ, और अस्पताल मे हो तो क्या हुआ ?—मर जाने पर भी बाप तो बाप रहता ही है, अधिक से अधिक सन्तान को 'पोस्थमस' का विशेषण लग सकता है; इसमे दैव के आगे मनुष्य की विवशता हो सकती है दुर्भाग्य ही कहा जाना चाहिए इसे, पर लज्जा का इसमे ऐसा क्या है ?—और यदि लज्जा नही है तो बदनामी का प्रश्न कैसा ?

तो यह बदनामी इस बात की है। नटनागर ने अच्छा ही किया कि कमला को शीघ्रातिशीघ्र घर लौटे जाने की सलाह दे दी। कितनी कठिनाइयो मे पड गई होगी बेचारी ! ऊपर से सास से अनबन। जहा उसे लाड-प्यार और सम्मान मिलना चाहिए था, वहा उसे मिली लाछना, भर्त्सना और अपमान ! और यह सब हुआ नटनागर के लिए ! यदि नटनागर के अस्वास्थ्य के सम्वाद उसे न मिले होते, और नटनागर के लिए उसके हृदय मे इतना प्यार और चिन्ता न होती, तो क्या वह गाव जाना चाहती ? नटनागर के हृदय मे अपने लिए ग्लानि और कमला के लिए कृतज्ञता का भाव छा गया। उन्हे प्रसन्नता थी तो इस बात की, कि उनके पत्र के आदेशानुसार कमला अवश्य लौट गई होगी। अब यदि उनका सम्वाद आ जाए तो नटनागर को कमला के प्रति अपना समस्त प्यार, समस्त श्रद्धा, सब खुशी और उनके लिए उठाए हुए इतने दुःख के लिए उनकी कृतज्ञता अपने पत्र मे वे उडेल सकें।

१२

प्रथम श्रेणी के सभी अधिकारी यहा से स्थानान्तरित हो गए थे। वास्तव मे विलीनीकरण का उद्देश्य ही यह था कि छोटे-छोटे टुकडो के स्वतन्त्र प्रशासन का जो अत्यन्त भार है, उसे कम किया जाए। पाच रेलवे प्रणालियो को एक मे मिला देने का तात्पर्य था, पाच महा व्यवस्थापको की जगह केवल एक महा व्यवस्थापक रहे। अधिकारियो के स्थानान्तरण के पूर्व ही उनकी प्रस्थापनाए घोषित कर दी गई थीं। सन्तोष किसीको न था। महा व्यवस्थापक को नव निर्मित रेलवे मे विभागीय अध्यक्ष भी नही बनाया गया, विभागीय अध्यक्षो को जूनियर अधिकारी का पद प्राप्त हुआ। केवल दो विभागीय अध्यक्ष सीनियर स्केल मे नियुक्त किए गए। एक तीसरे ऐसे ही दावेदार को विशेष कार्य का अधिकारी बनाकर भेज दिया गया। जो जूनियर अधिकारी थे उनको तीसरी श्रेणी मे ला पटका गया! जो अस्थायी अधिकारी थे, उनकी लुटिया डूबने-उतराने के बीच ढुलमुल होने लगी। और इसी मन स्थिति मे आज्ञा आ गई उनके स्थान-परिवर्तन की।

जहा महा व्यवस्थापक के बिना काम नही चला करता था, वहा जवाबदार बने द्वितीय श्रेणी के वे जूनियर अफसर जो अब तीसरी श्रेणी मे प्रतिष्ठित किए गए थे। अधिकारी लोग जाने लगे। विदाई-समारोहो का ताता लग गया। जाने वाले सब अधिकारी थे, अतः विदाई-समारोह का आयोजन निश्चय ही कर्मचारियो के सिर पडा। सौभाग्य या दुर्भाग्य से मैं कई विभागो मे काम कर चुका था, कम-अधिक रूप मे अधिकारियो की दृष्टि का लक्ष्य भी रह ही चुका था, अतः समारोहो मे मेरे पाकेट और पेट दोनो ही की पूजा होने लगी। इधर एक और घटना हो गई जिससे मेरा महत्व कुछ बढता ही दिखाई देने लग गया।

जिस विभाग मे मैं काम करता था, वह विभाग कुली-मजदूरो का

विभाग है। रेलवे द्वारा प्रयोग की हुई सब ऐसी वस्तुए, जो अब बेकाम हो चुकी हैं, इसी विभाग मे आती थी। कुलियो को छोडकर शेष दूसरे कर्मचारी-अधिकारी भी जो यहा आते थे, वे ऐसे ही, जिनके बारे मे प्रशासन की धारणा थी कि वे और अन्य किसी काम के नही है, तथा जिनको इच्छा होने पर भी छुटकारा नही दिया जा सकता था। दूसरे कचरे के साथ ये अफसर भी एक कोने मे पडे रहने के लिए फेक दिए जाते थे, ऐसी ही सबकी धारणा थी। मैं तो ऐसा ही गलगुट्ट था यह सब जानते ही हैं, जिस अधिकारी के नीचे मै कार्य करता था, उसके लिए भी लोगो का ऐसा ही अनुमान था।

खैर, अधिकारियो के स्थानान्तरण की आज्ञा के साथ ही, एक बात तो यह हुई कि हमारा विभाग, जो अब तक यहा के महा व्यवस्थापक के अधिकार मे था, अब नई रेलवे के महा भडारक (कट्रोलर ऑफ स्टोर्स) के अधिकार मे चला गया, एक तरह से सर्वतंत्र स्वतत्र। मेरे अधिकारी के भी स्थानातरण की घोषणा होने वाली थी, अतः सम्भवत यहां का चार्ज मेरे ही सुपुर्द हो जाए। दूसरे यह भी सभावना थी कि मैं भी कही तबदील हो जाऊ। सचमुच तो मेरे नये अधिकारी ने एकदम से मुझे अपने पास बुला लेने की सभावना का सकेत भी कर दिया था। लगे हाथ लोगों मे मेरे बाहर चले जाने का प्रवाद फैल गया।

स्वाभाविक था कि इस परिस्थिति मे मैं व्यग्र हो उठू। सचमुच इस जगह मेरा मन रम गया था। जीवन कुछ-कुछ आलस्यमय तो हो गया था, किन्तु जीवन मे आराम कौन नही चाहता ?—काम करने वाले मजदूरो मे मैं काफी लोकप्रिय साबित हुआ, अतः मेरे न चाहने पर भी मेरे लिए काम करने वाले अनायास ही कई व्यक्ति जुट गए। मेरे मातहत लेखको की भी यही अवस्था थी। दूसरे, रहने के मकान का भी मेरे लिए बडा अच्छा प्रबन्ध था। एक अनिश्चित स्थान और नये वातावरण की आशा मे इस प्राप्त सुख को छोडना चाहता न था। किन्तु तब भी विदाई-समारोहों के उत्तरार्द्ध में मेरे बारे में यह आसका उग्रतर होती गई, और

उसी अनुपात मे उग्रतर होता गया साथियो का मेरे प्रति आदर-सत्कार।

इसके पश्चात् फोटोबाजी, और फिर प्रतिदिन ही सध्या को स्टेशन पर अधिकारियो की विदाई। पुष्प-वर्षण से लगाकर अश्रु-वर्षण तक का दृश्य, कर्मचारी और अधिकारियो के जीवन का मानो एक नया मोड ही था। जाने के दिनो के साथ ही अधिकारियो मे से कुछ ने छुट्टिया ली; और छोटे पद पर उपस्थित होने के अवसर को बचाया। इसी बीच अपीले भी शुरू हुई। नये-नये गुल खिलने लगे!

महा व्यवस्थापक महोदय ने चार मास का साधिकार अवकाश प्राप्त किया, किन्तु तब भी उनकी अपील का फैसला नही हुआ था। तब उन्होने रुग्णावकाश की शरण ली। किन्तु वे जानते थे बकरी की मा के लिए कितने शनिवार टालना संभव था!—अपनी प्रापर्टी की व्यवस्था, अपने घर की व्यवस्था, अपने रिश्तेदारो की व्यवस्था, अपने कारिन्दो की व्यवस्था—और छुट्टी के बढाते रहने पर भी, सरकारी आवास मे बने रहने के लिए तिकडम की व्यवस्था—सचमुच तो महा व्यवस्थापक पद की सार्थकता उनके जीवन मे यदि कभी हुई तो वह तब, जब कि और महा व्यवस्थापक वे न रह सके।

सवेतन, अर्द्धवेतन और अवेतन की जितनी भी छुट्टिया ले सकते थे, ले चुके। किन्तु न तो उनकी अपील की सुनवाई हुई और न इस बीच उनके ऊपर का कोई अधिकारी अवकाश या महावकाश को प्राप्त हुआ कि उनकी अवस्थिति मे किसी तरह का चढाव-उतार सम्भव होता। इधर अब तक तो वे अपने उसी सरकारी मकान मे निवास कर सके थे क्योकि यहा का इचार्ज अधिकारी इनके मातहत कार्य कर चुका था, किन्तु अब उनका भी स्थानान्तर हो चुका था और वे भी प्रयाण करने वाले थे। जो इनकी जगह आ रहा था वह इन भूतपूर्व महा व्यवस्थापक के लिए क्यो किसी प्रकार की भक्ति प्रदर्शित करने लगा? अपने नव-निर्मित निजीभवन को महा व्यवस्थापक महोदय किसी स्कूल के लिए

किराए दे चुके थे जिससे काफी अच्छी आय हो जाती थी। उधर प्रधान कार्यालय मे उनके पूर्व के मातहत अधिकारी उनके विरुद्ध प्रचार करने लग गए थे। जब जाकर ड्यूटी पर उपस्थित होने के सिवा उनके पास कोई चारा नही रहा तो उन्होने भी ड्यूटी पर उपस्थित हो जाना ही उचित समझा।

विदाई के समारोहो की उज्ज्वलता किसी अधिकारी की लोकप्रियता का एक पैमाना मानी जाती रही है। जाने वाले सभी अधिकारी जा चुके थे; जिन कर्मचारियो का यहा इस 'छोटे' आफिस मे प्रयोजन न था, वे भी चले गए थे। इन्हीके ऊपर व्यवस्थापक महोदय को अपनी लोकप्रियता का भरोसा था। इन्हीकी कृपा से उनके वेतनो का विकास हुआ था। जो लोग रह गए थे वे इनके प्रायः विरोधी ही थे। तो क्या उनका विदाई-समारोह फीका ही रह जाना था?—प्रधान कार्यालय से प्रति सप्ताह अब तक एक गजट भी निकलता है, जिसमे ऐसे समारोहो मे लिए गए चित्र भी प्रकाशित होते है।

धर्मप्रकाश अब भी कही तबदील नही हुए थे। यो उन्हे एक दूसरे मण्डल मे नियुक्त कर दिया गया था, किन्तु इस क्षेत्र के नियुक्तियो के सभी खाते जब तक पूर्ण नही हो जाते उन्हे यही रहने का आदेश मिला था। सो एक ओर से तो इस समारोह की व्यवस्था करने का भार उनके ऊपर दिया गया, दूसरा पार्श्व स्वय उन्होने अपने हाथ मे लिया।

सभी अधिकारी प्रायः सध्या की गाडी से रवाना होते थे। इससे न केवल दिन का सफर बच जाता था बल्कि एक पूरे दिन की उपलब्धि हो जाती थी, जिसमे वे अन्य कार्य निपटा लेते थे। भूतपूर्व महा व्यवस्थापक महोदय को ऐसे दिनो का अभाव नही था, अत उन्होने प्रात काल साढे नौ बजे की ट्रेन से प्रस्थान करना उचित समझा। एक सुविधा यह थी कि तब पहुचाने के लिए अनेक बन्धु-बान्धवो को आने मे सुविधा रहती है, फोटो के लिए भी काफी प्रकाश रहता है, सैलून से, बाहर से, गरज यह कि हर कोण से फोटो लिया जा सकता है।

ज्योतिषी से मुहूर्त्त निकलवाया गया। वह बेचारा समारोह की सुविधा क्या समझे ? प्रात काल प्रथम मुहूर्त्त था, सूर्योदय के पूर्व ब्राह्म-मुहूर्त्त, उसके बाद साढे दस बजे, फिर तीन बजे, फिर—पर और मुहूर्त्तों से क्या ब्राह्ममुहूर्त्त के बाद लगभग नौ बजे से पहले और कोई मुहूर्त हो सकता था क्या ? बेचारा ब्राह्मण—उसे आधी ही दक्षिणा मिली।

जिन रिश्तेदारो को तैयार किया गया, वे बेचारे चार बजे ही बगले पर पहुंचाए गए। स्टेशन पर भी उनको बाकायदा लॉरी से पहुचा दिया गया। पर वहा नौ बजे तक बैठकर सब करे क्या ?—महिलाओ को घर का सारा काम पडा था। छोटे बच्चे चाय पीकर ही सबर करना नही चाहते थे। पुरुषो को अपने काम-धन्धे पर जाना था। अतः चाय पी-पीकर एक-एक कर सभी खिसकने लगे, अपनी गिरह से सवारी का दाम चुकाते हुए। जाते समय उन्होने आख मिलाने तक मे खतरा समझा।

आठ बजे कारखाना खुल जाता है अत मेरा विभाग भी आठ बजे ही खुल जाता है। मैं यदि आठ बजे न जाऊं, तो क्लर्कों-मजदूरो का आलस ही दूर न हो। आदमी मूलत भला और ईमानदार तो होता है, किन्तु समाज का गठन कुछ ऐसा विचित्र और विरोधाभासो से पूर्ण है कि इस भलाई और ईमानदारी को बनाए रखने के लिए चौकीदार की आवश्यकता है। सो मैं आठ बजे ही नही, आठ से भी जल्दी पहुच जाता हू। सब लोगो को काम पर लगाकर नौ बजे तक पुनः घर लौट जाता हूं। तब चाय-जलपान, स्नान-सध्या से निबटकर ग्यारह के पहले-पहले पुनः दफ्तर पहुच जाता हूं।—और घर से दफ्तर जाने के लिए मुझे स्टेशन होकर जाना पडता है। तब साढ़े सात बजकर दस मिनट हुए थे। तब तक मेहमान विदा नही हुए थे। चाय का दौर चल रहा था। पर बच्चो की चिल्ल-पो से प्रतीक्षालय मुखरित था। उधर सामने यार्ड मे पडे सैलून (अधिकारी के विशेष डिब्बे) पर आम्रपल्लवो की बन्दनवारे सज रही थी। बीच-बीच में पुष्प-स्तवकों के संभार से डिब्बे के पृष्ठ का खुला द्वार बडा जगमगा रहा था। स्टेशन

के सभी कर्मचारी व्यस्त दिखाई पड रहे थे। गाडियो के विभाग (कैरेज डिपार्टमेट) के एक कर्मी से पूछने पर पता लगा कि इस आयोजन का निमित्त क्या है ?

दफ्तर मे पहुंचा तो आठ बज रहे थे। उपस्थिति-पत्रक भर कर तथा सब क्लर्कों को अपने-अपने कार्य पर जाने का आदेश देकर मैं बाहर मजदूर वर्ग को आवश्यक हिदायते देने के लिए यार्ड मे चला गया। मेट से मैं बात कर ही रहा था कि चपरासी ने दौडे हुए आकर कहा कि दफ्तर मे बडे साहब आए है और मुझे सलाम बोल रहे हैं।

मुस्कराता हुआ जैसे ही मैं दफ्तर की ओर मुडा कि देखता क्या हू कि बड़े साहब यानी भूतपूर्व महा व्यवस्थापक महोदय मेरी ही ओर चले आ रहे हैं।

हाथ जोडकर मैंने कहा, 'आपने क्यो कष्ट किया ?—मैं स्वयं ही उपस्थित हो रहा था।'

'नही, कोई बात नही ! मैंने सोचा कि आज जब जा रहा हू, सबसे मिलता चलू ! आइ ऐम ग्लैड, दैट यू आर ऑन ड्यूटी सो अर्ली ! शायद तुम जानते थे कि मैं इसी मौर्निंग ट्रेन से जा रहा हू।'

यानी, इसलिए मैं यहा आज जल्दी आया हू कि हुजूर तशरीफ ले जाने वाले हैं और कही ड्यूटी पर से मुझे अनुपस्थित न पाए। मेरे स्वाभिमान को चोट लगी। बोला मैं, 'आप जा रहे हैं, यह तो मुझे अभी ही मालूम हुआ है, सैलून की सजधज देखकर। किन्तु आठ बजे से पहले यहा आने की तो मेरी नित्य की आदत है। यों शायद आपको विदित नहीं है, स्टोर्स विभाग के दफ्तर का आफिशियल कार्य-समय दस से पाच तक का है। यह नये प्रशासन का नियम है, किन्तु मैंने अपने दफ्तर का कार्यक्रम वही रखा है। स्थानीय अवस्थाओ के अनुकूल अपना कार्यक्रम निश्चित करने की स्वतन्त्रता मुझे सम्बन्धित अधिकारियो ने दे रखी है।'

'आई सी ! दैट्स गुड ! इसी तरह काम करते रहोगे तो एक दिन अफसरो की निगाह मे आ जाओगे।—अब तो इस आरगनाइजेशन मे

काम के सिवा और कुछ 'पे' नहीं करता।'

मैंने कहा, 'जी हा, यही तो हम लोगों की आशा है, वरना पहले के आरगनाइजेशन मे बुराई ही क्या थी !'

आघात को साहब समझ गए। माथे पर बल पड गए, बोले—'क्या मतलब ?'

मैंने मुस्कराकर उत्तर दिया, 'आपकी नजर थी न यहा पर अब तक ! जिन लोगो का उद्धार हो गया, वे ज़िन्दगी भर आपको नही भूलेगे !'

'मैंने हमेशा काम को ही....'

'जी हां, हमे स्वीकार करना चाहिए, आदमी से ऊपर नही माना। काम से सहानुभूति रखने के लिए तो सभी अफसर हैं, आदमी से सहानुभूति रखने वाला अफसर आप जैसा कोई-कोई ही मिलता है। व्यक्ति के इण्डिविजुअल राइट्स को स्वीकार करने वाले निश्चय ही सबकी श्रद्धा के पात्र है।'

जिस बात को महा व्यवस्थापक महोदय अपना अपमान मानने को तैयार हो रहे थे, वही हो गई उनकी स्तुति ! किन्तु वे जानते थे मुझे शब्दो के साथ खिलवाड करने का अभ्यास है ! मेरी निन्दा और स्तुति को वे सन्देह के सिवा और किसी नज़र देख नही सकते थे।

हाथ की घडी की ओर देखकर बोले, 'ज़रा कारखाने मे भी सबको गुडबाई कह आऊ ! चाहता तो था कि यहा पर भी आप सब लोगो को जाते समय कुछ दो शब्द कह जाऊ, लेकिन स्टेशन पर बहुत व्यक्ति इकट्ठे हो गए हैं। मैकेनिकल डिपार्टमेट के सभी आदमी वहा इकट्ठे होने को कह रहे हैं। मैं कहता हूं इस दिखावे की ज़रूरत क्या है !—यही से क्यो न विदा ले लू ! पर वे मानते ही नही। आफिस से भी सभी व्यक्ति आ रहे हैं। इसलिए जो कुछ कहना होगा, वही स्टेशन पर ही कहूगा। वैसे काम मे कोई खास हर्ज न हो—बात सिर्फ पाच ही मिनट की है। सब लोगों को साथ लेकर अगर स्टेशन आ जाओ !—बात यह है कि इतने

दिन साथ रहे—जाते समय एक बार सबको एक नजर देख तो लू…'

मैंने झुककर कहा, 'विद प्लेज़र ! पाच-दस मिनट का कुछ खास नुकसान नही होता। न हुआ प्रधान कार्यालय को एक सूचना भेजने से कार्य चल जाएगा…'

'ना-ना—वहा सूचना भेजने की क्या जरूरत है। यो तो, मैं खुद अभी ऐसा आर्डर दे सकता हू—मगर…'

मैंने हसकर कहा, 'जी हा ! आपकी आज्ञा का मैंने कभी उल्लघन किया है, कि आज शासन बदल जाने मात्र से करूगा ! आपकी आज्ञा का हवाला देने से मेरा दायित्व और भी कम हो जाएगा।'

महा व्यवस्थापक महोदय घबराकर बोले—जाते-जाते—'नो-नो—डोण्ट बॉदर—वर्क फॉर ह्विच वी आर पेड, इज़ ग्रेटर दैन एनीथिंग एल्स—' और वे कारखाने मे चले गए।

अपने सब साथियो को लिए सवा नौ बजे ही हम स्टेशन पर पहुंच गए। कमलनयन जोशी से भेंट हुई; अन्य कोई क्लर्क उपस्थित न था, यद्यपि उस दिन महाव्यवस्थापक की विदाई के उपलक्ष्य मे छुट्टी कर दी गई थी। धर्मप्रकाश साहब से भी सलाम-दुआ हुई। कारखाने से कोई भी नही आया। फोटोग्राफर ने सजे हुए खाली सैलून के दो फोटो लिए। एक फोटो व्यवस्थापक महोदय का। मेरे विभाग के बीसों आदमियों को सैलून के पास खडा करके, दो-चार फोटो और लिए गए, जिसमे गाड़ी के यात्रियो का एक समूह भी आ जाता था।

इतने ही मे किसीने खबर दी कि एक दल काले झण्डे लिए चला आ रहा है। प्लेटफार्म पर कोलाहल सुनाई देने लगा। महा व्यवस्थापक महोदय जो सैलून मे घुसकर बन्द हुए, सो तब भी बाहर नहीं हुए जब कि गाड़ी चलने लग गई। उनके शेष दर्शन का लाभ या शेष उपदेश का लाभ उपस्थित समुदाय में किसीको नही हो सका।

गाडी जाने के बाद भी फोटोग्राफरो को अवकाश नही मिला। काले झण्डे वालों की पार्टी को बीच मे करके एक और फोटो लिया गया। एक

और दिखाया गया कि एक व्यक्ति एक डण्डे पर करीने से एक माला सजाए हुए स्वागत के लिए खडा है, उसमे फूलो के गुच्छों के बीच जगह-जगह पर फटे-पुराने जूते भी शोभा पा रहे हैं। और फोटोग्राफी की कला को दाद देनी पड़ेगी कि वाम पार्टी के एक साप्ताहिक में जो इस अवसर का चित्र प्रकाशित हुआ, उसमे न केवल काले झण्डों का दल और जूतो की माला का दृश्य था, बल्कि सैलून सहित उस गाडी का दृश्य था जिसमे महा व्यवस्थापक महोदय बरामदे मे खडे सभी से नमस्कार करते हुए दिखाई दे रहे थे। देखकर, जो जानते थे, उनमे से कुछ को क्रोध, कुछ को हसी आई, हसी अधिक को आई, प्रतिवाद किसीने नहीं किया।

कमलनयन जोशी स्टेशन पर महा व्यवस्थापक महोदय को विदा देने उपस्थित हुआ था। देखकर मेरे साथ हो लिया। दफ्तर की तो उस दिन छुट्टी थी ही।

मेरी चाय तब भी बाकी थी, लोगों को काम पर जाने का आदेश देकर मैं अपने दफ्तर मे चला गया। चाय वहीं पर मगा ली। रह गए दफ्तर में कमल और मैं!

भूतपूर्व प्रधान कार्यालय के हालचाल मालूम किए। बाबू राधावल्लभ रिटायर हो गए, और सुना है कि रिटायर होने के तीसरे दिन ही बीमार पड़ गए। पहले तो कभी उन्हे दिल का दौरा हुआ सुना नही किन्तु इस बार तो हालत एकदम चिन्ताजनक हो उठी थी, शायद अब कुछ ठीक हैं, पर हैं अभी अस्पताल मे ही। छोटे-छोटे बच्चे हैं; लडकी की शादी सिर पर है, बच्चो की पढाई का भी प्रश्न है। एक बच्चा तो अभी-अभी कुछ ही माह पहले हुआ है। बेचारा बच्चो के भाग्य ही से बच जाए तो अच्छा हो।

नानकचन्द की प्रस्थापना हुई थी स्टेशन पर माल बाबू की जगह। दफ्तर में व्यापारियों के दावे सम्बन्धी कागज़-पत्रो की देखभाल करता था। स्थानीय व्यापारियो के दावे जब तक शेष न हो जाए तब तक उसे यही काम करना था, परन्तु उसकी बैठक कागजो के साथ स्टेशन आजाने

के भाव मालूम होने लग गए बेचारे को !

हां, नटनागर की प्रस्थापना तो प्रथम ग्रेड के क्लर्कों मे हुई है, किन्तु उनकी नियुक्ति का कोई आदेश नही है । क्षेत्रीय कार्यालय के सिवा और कहीं तो यह पोस्ट रहती नही । अभी बीमार हैं ! उपस्थित तो नियम से उन्हे यही होना चाहिए, पर प्रधान कार्यालय मे भी हो सकते हैं; वही से उन्हे पोस्टिग के आदेश मिल जाएगे। सचमुच इस छीना-झपटी में यदि किसीको प्राप्त हुआ है तो उन्हीको, लकी चैप रीयली—लेकिन—क्या पता इस सौभाग्य का उपभोग करने के लिए बेचारा स्वस्थ कब तक होगा। उनकी पत्नी पहले तो सुसराल ही पहुची पर तब तक नटनागर उपचार के लिए बम्बई पहुच गए थे। अभी उस दिन कमल को वहा से पत्र मिला था, जिसमे उनके उपयोग के लिए पास की माग की गई थी। उनका अपने रोगी पति के पास सेवा के लिए बम्बई जाना स्वाभाविक ही है। पास कमल ने कल ही भिजवा दिए है। शायद इसी सप्ताह चली जाए। और नटनागर के स्वास्थ्य के नये सम्वाद तो कमल को इधर कोई मिले नही।

बहुत कुछ दूसरी बातो के बाद जोशी ने कहा, 'भाई साहिब, आप भी एक अपील क्यो नही कर देते ! मैंने सुना है कि हेड आफिस से उप-महा व्यवस्थापक सभी अपीलो की जाच करने के लिए यहा आने वाले हैं। आपका केस तो बडा स्ट्राग है।'

'अपील किसके खिलाफ करू ? इस वर्तमान पद के खिलाफ ? अरे भाई, ऐसी जगह है किसके भाग्य मे ! देखते नही, राज्य कर रहा हू, कोई सिर पर कहने वाला नही। अच्छा-खासा मकान मिला हुआ है, काम विशेष कुछ है नही, खाली आदमियो पर निगरानी रखना, और उन आदमियो पर जो केवल विश्वास चाहते हैं, और विश्वास पाने पर अपने आप आवश्यकता से अधिक काम करते चले जाते हैं ! इनकी महत्वाकांक्षा ही क्या है ? केवल यह कह दो कि वह काम तुम्ही कर सकते हो, और बस काम हो गया।'

'पर पहले तो आपके स्टोर्स के आदमियो की बहुत ही शिकायतें थी !'

'थीं, पर अब नही हैं। पहले अफसर उनके साथ कुलियो जैसा व्यवहार करते थे। मैं तो अफसर हू नही; उन्हीमे का एक कुली हू। और मजे की बात यह है कि उन्होने मुझे अफसर से अधिक सम्मान दे रखा है। यदि उनसे पूछो कि मेरा यहा से तबादला हो गया है, तो जानते हो इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी ?'

'क्या ?'

'वे कहेगे कि यदि मैं स्वेच्छा से यहा से जाना नही चाहता, तो मुझे कोई यहां से तबदील नही कर सकेगा। इसके लिए वे सत्याग्रह तक करने को तैयार हो जाएगे।'

जोशी ने हसकर कहा, 'हा, सत्याग्रह वे अवश्य कर सकते हैं। उस साल जो उन्होने सारे प्रशासन को आतकित और आशकित कर दिया था।'

'पर इस बार वे आतकित नही करेगे। वे अब शाति और सौहार्द्र के पाठ को सीख चुके हैं।'

'कुछ भी हो भाई साहिब, यह पोस्ट आपके योग्य नही है। आपके क्वालिफिकेशन्स....'

'वे मेरे पास ही हे। उन्हे कोई छीनता नही, छीन ही नहीं सकता।'

'लेकिन आपका भविष्य ?'

'भविष्य !' मैंने हंसकर कहा, 'सो तो है ही ! यहा हू तब भी, और दूसरी जगह चला गया तब भी ! वह मिटाया तो जा सकता नही।'

'पर बनाया तो जा सकता है। आदमी अवसर की तलाश में रहता ही है, और उसका लाभ भी उसे उठाना चाहिए।'

मैंने हसकर उठते हुए कहा, 'कमल ! मैं निश्चय कर चुका हू कि कि जैसे ही यह स्टोर्स यहा से चला जाए, मैं त्यागपत्र दे दू। सच तो, मैं अपना मतव्य प्रशासन को प्रकट भी कर चुका हू। पर यह बात तुम्ही

तक रहे।'

जोशी ने उठकर कहा, 'क्या सचमुच माइ लार्ड !'

'हा भाई, प्रशासन के हथकडों से जी भर गया है। जब इन अनपढ मजदूरो को देखता हू तो समझता हूं, अगर भागती-भागती मनुष्यता कही रह गई है, तो वह इन्ही पसीना बहाकर दो मुट्ठी अन्न जुटाने वाले लोगो मे ! अब तक खुशामद, झूठ, जाल, फरेब का छोटा चक्कर था—किसी तरह दिन काट लिए। अब देखता हू तो बडा चक्कर सामने है। इसमे बचकर कौन माई का लाल रह सकता है ? क्लर्क का ससार ही क्या ? कागज और कलम, पर उसी पर तो आज की सारी सभ्यता का लेखा-जोखा अकित है। कागज की इन नावो को चलाते-चलाते आदमी कितना कागजी होता जा रहा है। पर फिर कभी—अभी तो मेरा नहाना भी बाकी है। फिर मिलोगे तो ?'

और शेष नमस्कार के बाद आफिस से बाहर आकर हमने हाथ मिलाए।

१३

नटनागर के आश्चर्य और हर्ष की सीमा न रही, जब उनकी समस्त आशाओ के विपरीत एक सुनहरे प्रभात मे कमला ने वार्ड के भीतर प्रवेश किया ! कमला की काति पहले से अनेक गुनी बढ गई थी। मैट्रिक पास करने का उल्लास ही कम न था, फिर मातृत्व के सभार ने जो एक अभूतपूर्व गरिमा उसके चेहरे पर छा दी थी, वह तज्जनित उद्वेग तथा मार्ग की क्लाति से भी किसी तरह पदस्थ नही हो पाई थी। फिर स्वयं नटनागर का बीसवी शताब्दी के स्वप्न-लोक-वासी विरही यक्ष का आतुर-आकुल मन ! किन्तु नटनागर के स्वास्थ्य तथा उनके चारो ओर का

वातावरण शीघ्र ही कमला के उफनते हुए उत्साह पर पानी के छींटे मारने लगा।

जनरल वार्ड का यह विभाग एक बहुत लम्बे-चौडे हाल मे स्थापित है, जिसमे आमने-सामने दो कतारो मे ४० बिस्तर लगे हुए हैं। लोहे की नलियो का छल्लो वाला पलग, जिसके पैताने स्टैंड पर चार-पांच तख्तिया लगी हुई हैं, इनमे रोगी की बीमारी का चढाव-उतार उसकी निज की अवस्था आदि का दैनिक ब्यौरा लिखा जाता या अकित किया जाता था, एक जाली के पल्ले वाली छोटी-सी आलमारी जिसमे रोगी के लिए फल-फूल, खाद्य-सामग्री या छोटे-बडे कुछ कपडे रखे जा सकते थे, ऊपर औषधियो की कुछ शीशिया, एक स्टूल जिसपर कभी डॉक्टर, कभी नर्स और कभी कोई अतिथि बैठकर रोगी का परीक्षण, परिचर्या या परिचर्चा किया करते हैं, और इन समस्त उपस्करो की परिसीमा के बाद ही दूसरे बीमार का यही ससार, फिर तीसरे का, फिर चौथे का—२० एक के बाद एक, और इतने ही सामने की दीवार से सटे हुए संसार, बीच मे आवश्यकतानुसार रोगियो, उपचारको तथा अभ्यागतो के आवागमन के लिए पर्याप्त जगह छूटी हुई।

हर दो रोगियो के बीच मे एक खिडकी, हर चार रोगियों—दो इधर, दो उधर—के बीच छत से लटकता हुआ एक पंखा, और एक लाइट, अतिथियो के लिए कुछ अतिरिक्त स्टूल और कुर्सियां इधर से उधर और उधर से इधर घिसटती-फिरती हुई। जब डॉक्टर नर्स का प्रवेश हो, तो शातिमय उत्सुकता और उनके चले जाने पर उत्सुकतामय अशाति, कोलाहल। अतिथियो के मिलने का समय होते ही फिर दौड-धूप, चिल्ल-पो, बच्चो की भगदड और लोगो की ताक-झाक। पुराने बीमार इस अवसर की आशा से प्रतीक्षा करते हैं, नये बीमार इससे कतराते हैं। और एक रोगी जाता है, दूसरा उसकी जगह आ जाता है। इस जगह पर आकर मालूम देता है, मानो जीवन का अर्थ ही बीमार होना है, और जनरल वार्ड मे आए बिना उसकी सार्थकता नही होगी।

सो, स्टूल पर बैठे-बैठे कुशल-मगल के औपचारिक प्रारम्भिक संभाषण ही मे कमला के मन पर विचारो का एक तूफान खेल गया। नटनागर ने सभी नर्सों से और डाक्टरो से हसकर कमला का परिचय कराया। अन्य बीमार पास मे बिस्तर पर पडे हुए टुकर-टुकर देखते भर रहे। उनका सामाजिक स्तर तो नटनागर को मालूम नही कि उनसे भी कमला का परिचय कराया जाता। पर कमला इस जनरल वार्ड मे आखिर दिन यदि बिता भी लेगी, तो रात कैसे बिताएगी ?

नटनागर ने बताया कि एक तो प्राइवेट रूम कोई खा ी नहीं, दूसरे उसमे जाने के लिए व्यर्थ मे किराए का भार क्यो उठाया जाए ? आखिर कई दिन से वे अर्द्ध वेतन पर ही तो बसर कर रहे हैं। कमला ने नटनागर की दलील नही मानी। उसने कहा कि प्राइवेट रूम तो खाली रहते हैं, बल्कि एक नर्स से बात करके उसने मालूम कर लिया था, कि एक अच्छा कमरा तो तब भी खाली था ही, और उसने सुपरिंटेन्डेन्ड से बात करने के लिए कह भी दिया था। रहा सवाल किराए के भार का, सो रेलवे-प्रशासन का यह दायित्व होना चाहिए कि अपने कर्मचारियो के लिए यदि उचित व्यवस्था न कर सके तो व्यवस्था के व्यय का भार वहन करे। वह नटनागर की ओर से इसके लिए उचित प्रार्थना पत्र प्रेषित करेगी। इसके बावजूद यदि प्रशासन इस भार को स्वीकार न करे, तो भी प्रशासन के ऊपर तो किसीके जीवन की जोखिम को छोडा नही जा सकता। अब तो कमला स्वय कही पर नौकरी करके खर्चे के लायक कमा सकती है, वह इसके लिए प्रयत्न तो करेगी ही।—और कुछ भी हो, इस जनरल वार्ड मे वह स्वय कैसे रह सकती है ?—क्या रात्रि को बाहर बरामदे मे इन गवार बीमारो के रिश्तेदारो के बीच वह करवट बदलती रह सकती है ? और फिर दादू जो उसके साथ ही छुट्टी लेकर आया है।

'पर तुम्हे यहा रहने के लिए तो मैं नही कहता !'

'तुम नही कहते, क्या इसीलिए मैं चली जाऊगी ?'

'किन्तु डीयर, यह तो तुम जानती ही हो, मैं कैसी छूतैली बीमारी मे फंसा हुआ हू।'

'सो क्या इसीलिए हिन्दू पत्नी पति को छोडकर आराम से रहने के लिए घर चली जाती है?'

नटनागर के मन मे गर्व की एक लहर दौड गई। ऐसी पतिव्रता पत्नी को पाकर उन्हे निश्चय ही अपने आप को धन्य समझना चाहिए। वे बोले, 'मैं तुम्हारी भावना को समझता हू, कमला! किन्तु भावुकता से तो काम नही लेना चाहिए, तुम तो पढी-लिखी हो; फिर जिस कोमल अवस्था मे तुम हो, उसमे जब तक तुम अपनी ओर विशेष ध्यान नहीं देती...'

'नहीं-नही, यह मैं कुछ नही सुनूगी। पति की सेवा ही नारी का धर्म है!—मेरी मूर्खता थी कि तुम्हारे स्वास्थ्य का कुछ भी ख्याल न करके अपने ही स्वार्थ मे परीक्षा को लेकर व्यस्त रही; मुझे इसका प्रायश्चित करना ही पडेगा।'

मुस्कराकर नटनागर ने कहा, 'परीक्षा पास करना तुम्हारा स्वार्थ कैसे हो गया?—क्या तुम्हारी सफलता या उपलब्धि मे मेरा हिस्सा नहीं है?'

'इसीलिए तुम्हारी बीमारी मे भी मेरा हिस्सा होना चाहिए!—ईश्वर ने वह सुविधा तो व्यक्ति के हाथ मे रखी नही, इसलिए तुम्हारे दुःख का भाग तो मुझे कम करना चाहिए। मैं तुम्हारी बहुत कुछ सुन चुकी हूं, उसीका यह परिणाम है कि तुम्हारी सोने की देह मिट्टी मे मिलती चली जा रही है। अगर अपने धन की रक्षा करने के लिए मैं कटिबद्ध हो उठूं तो मुझे रोकने का तुम्हे कोई हक नहीं।'

सचमुच नटनागर को कोई हक नहीं! और कमला के प्रयत्न को क्या कहा जाए, उसी सध्या को नटनागर को पास ही मे एक प्रायवेट रूम मिल गया; यही नही, नटनागर और कमला की पोजीशन के अनुरूप

अतिरिक्त फर्नीचर, बेड आदि की व्यवस्था होने मे भी विलम्ब नहीं लगा।

उस दिन रात्रि को विशेष बात नहीं हुई, किन्तु कमला यह लक्ष्य किए बिना नहीं रह सकी कि उसकी उपस्थिति से नटनागर की हार्दिक प्रसन्नता हुई है, जिसके फलस्वरूप उनके स्वास्थ्य मे आश्चर्यजनक सुधार दिखाई दिया है। दूसरे दिन प्रातःकाल ही यह सूचना नर्स ने दी कि उनका तापमान एकदम नार्मल हो गया है, और वजन मे दो पौण्ड की वृद्धि हुई है। यदि कम से कम एक सप्ताह तक इसी तरह उनका स्वास्थ्य रहा तो अधिक राह देखने की आवश्यकता न होगी, अगले सप्ताह ही किसी दिन उनका ऑपरेशन हो सकेगा।

कमला के हृदय पर एक मीठा आघात-सा लगा। इस निरीह व्यक्ति को सचमुच उससे प्रेम है! कमला के सुख मे ही वह अपना सुख मानता है! क्या ऐसे व्यक्ति को धोखा देना उसके लिए उपयुक्त है? पर इसके सिवा चारा ही क्या है? कमला नटनागर को प्यार करना तो चाहती है, पर इस मन को क्या कहा जाए? मन क्या उसके वश मे है?—उसके ही क्या, मन क्या कभी किसी के वश मे रहा है?—

वह हिन्दू स्त्री है। दुर्भाग्य ने प्रारभ ही से ऐसी परिस्थितियो मे डाल दिया उसे, कि वह समझ पाए, सम्भल पाए इसके पहले ही बह गई। नटनागर की जिम्मेदारी कम तो अवश्य नही। उन्हे भी तो नये फैशन का भूत सता रहा था, वह क्या करती?—अनुभव उसे था नही, समझ उसकी सच्ची थी। फिसलती नही, तो बढ ही कहा सकती थी?—क्या उसका बीता हुआ जीवन वापिस नही हो सकता? यदि उसे फिर से प्रारम्भ करने का अवसर मिले!—नटनागर को समझ तो वह अब पाई है!

नटनागर प्रसन्न हैं कि कमला उन्हीकी सन्तान की माता होने वाली है!—यदि नटनागर जरा भी सोचें, तो कमला की पोल सरलता से खुल जाएगी!—तब क्या नटनागर उसे माफ कर सकेंगे? यदि माफ न करें

तो ?—घर से त्याग देंगे—कमला का क्या होगा !—क्या होगा, वह मुक्त स्वतन्त्र हो जाएगी ! वह चाहे तो दूसरा विवाह कर सकती है ! पेट भरने का ही तो सवाल नारी को नर से बाधे रखता है। यदि नारी आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बिनी हो, तो नैतिकता का मापदण्ड ही दूसरा होगा।—तो क्या नटनागर केवल इसलिए कमला को माफ नही करेंगे कि वह इस समय भी अपने भरण-पोषण के लिए नटनागर पर निर्भर करती है ?—यदि किसीके प्रेम का आधार इतना कच्चा हो, तो वह जितना शीघ्र टूट जाए अच्छा है। वह बता देगी कि वह परमुखापेक्षी नही है !

देखना है, नटनागर कमला को चाहते है या कमला के शरीर की पवित्रता को ही। जो उसे क्षण भर का मोह हो गया है, वह कहा तक खरा है, यह अनायास ही कमला को मालूम हो सकता है। यह नटनागर के प्रेम की परीक्षा है, और परीक्षा लेगी उनकी पत्नी स्वय कमला !

रात्रि को कमला ने पूछा, 'तुमने मुझे सुसराल से घर लौट जाने को क्यों लिखा ?'

'इसलिए कि मा के साथ तुम्हारी कभी बनती नही।'

'सो तो कोई नई बात नही। हमेशा ही तो नही बनती !'

किन्तु तुम जिस कोमल अवस्था मे हो·· '

'मेरी इस कोमल अवस्था का पता तुम्हे कैसे लगा ?—पहले तो मैने कभी कहा नही !'

हंसकर नटनागर ने कहा, 'समझ लो, जादू जानता हू।'

'जादू जानते हो, तो फिर क्या यह नही जानते थे कि घर न लौटकर मैं यहा दौडी चली आऊगी ?'

'समझ लो, यह भी जानता था।'

'ओह, तो फिर मुझे बुलाने का ही तुम्हारा यह छल था। किन्तु क्या यदि तुम सहज ही मुझे बुलाने के लिए ही लिख देते, तो क्या मैं न आती ?—जानते तो हो, मैं खुद आने के लिए कितनी व्यग्र थी ?'

'अब इसका उत्तर क्या दू ?—तुम्ही कहो।'

'यह कहो कि तुम मुझे परास्त करना चाहते थे।'

'किन्तु सचमुच परास्त क्या तुम हुई हो ?—परास्त तो मैं हुआ हूं। मेरे न बुलाने पर भी जो तुम आ गई हो, वह क्या तुम्हारा मुझपर अनुग्रह नही प्रकट होना ?'

'बात तो अनुग्रह की नही, हार-जीत की है! पर सच कहो, मेरी इस अवस्था का ज्ञान तुम्हे कैसे हुआ ?—मेरी सौगन्ध, सच कहो।'

'सच कहू ?—तो लो, यह पोस्टकार्ड पढ लो!'—यह कहकर तकिए के नीचे से उन्होने वह पुराना अनबूझ पोस्टकार्ड निकालकर कमला के हाथो मे थमा दिया, कहत-कहते—'चाहता था कि इसे तुम्हारे पास भेज दू, किन्तु तब जब तुम घर लौट जाओ। इसे पढकर मैं विशेष कुछ समझ नहीं सका, पर जितना समझ सका, वह तो ठीक ही समझा!'

कमला पोस्टकार्ड को पढती रही। कितना वह समझी, कितना समझना शेष रहा, यह तो वही जाने, किन्तु यदि नटनागर सीधे छत की ओर न देखते रहकर कमला के मुखमण्डल के चढाव-उतार को देखते, तो उन्हे आश्चर्य हुए बिना न रहता। पत्र को पूरा पढकर कमला ने नटनागर की ओर देखा, देखा कि छत की ओर देख रहे है, तो एक बार और उसने उस पत्र पर अपनी आखे गडा दी।

नटनागर ही ने पुकारा, 'पढ लिया ? ··'

कमला ने केवल नटनागर की ओर मुह उठाकर देख लिया।

'क्या यह पत्र मा ने लिखवाया था ?'

'सो मैं क्या जानू!—पर तुम तो जानते हो, मा को विशेष कुछ तो दिखाई नही देता!'

'तो क्या मा को अभी तक तुम्हारी इस अवस्था का पता नही है ?'

'होगा क्यो नही ?—जबकि इस पत्र मे उन्होने उल्लेख भी किया है।'

'फिर भी मुझे विश्वास नही होता कि यह मा का लिखाया हुआ है।'

'क्यो विश्वास नही होता सो तुम्ही जानो!—पर मेरे बारे मे इतना

विष तुम्हारी मा को छोडकर और कौन उगलेगा ?'

'पर कमला, यह पत्र तुम्हे तो नही लिखा गया, लिखा गया मुझे है !'

'सो ही तो, विष का प्याला यदि तुम्हारे हाथो मुझे दिया जाए, तो देखने वाले के हाड जुडाने को और भी अच्छा अवसर होता है, यह क्या तुम नही समझ सकते ?—खैर तुम्हारी मा हैं, उनकी भक्ति करके अच्छा पुण्य कमाओगे। मैं जहर का प्याला भी पी लूगी !'—और एक ऐसी गहरी सास कमला के मुह से निकली कि उसकी लीक नटनागर के हृदय पर खिच गई।

कुछ देर दोनो ही चुप रहे—नटनागर छत की ओर देखते हुए, कमला फर्श की ओर।

नटनागर ने कहा, 'अच्छा, यह बदनामी वाली बात क्या है ?—बता सकती हो ?'

कमला का हृदय धडक ही रहा था, वह उछलने लगा, किन्तु उसी नतदृष्टि से उसने कहा .

'मैं मा जो बनने वाली हू।'

'किन्तु इसमे बदनामी की क्या बात है ?'

'शायद तुम्हारी मा, कभी मा नही बनी हो !' कमला ने व्यग्य कसा।

नटनागर को आगे कोई प्रश्न नही सूझा।—कुछ देर तक दातो से ओठो को काटने के बाद बोले—'तुमने शायद पत्र मे देखा होगा कमला, एक स्थान पर घूमर काकी का उल्लेख आया है।'

'कहा ?—मैंने तो नहीं देखा ?'

'पत्र में है। पूरा वाक्य मैं पढ नहीं पाया। दो पत्र, मैं बतलाता हू।'

कमला पत्र लेकर उठी और उसने पत्र नटनागर के हाथ मे थमा दिया। नटनागर ने पत्र पर एक जगह अंगुली रखकर बताया, 'देखो—पढ़ो यह क्या है ?'

कमला पढ़ने के लिए नटनागर के वक्ष पर झुकी, बोली, 'साफ़ तो मालूम नही पड़ता किन्तु ...'

'कोई चिन्ता नही—' कहकर नटनागर ने पीछे से कमला की पीठ पर हाथ बढ़ाकर उसके मस्तक को अपने वक्ष से सटा दिया, फिर बोले, 'घूमर काकी को मरने दो डीयर, पर यह कहो तुमने यह कैसे कह दिया कि मेरे हाथो तुम्हे विष दिया जाएगा ?'

'तुम्हारा यह पत्र क्या कहता है ?'

कमला के बालो मे अपनी अगुलिया चलाते हुए नटनागर ने कहा, 'यह पत्र मेरा नही है !'

'तुम्हे जन्म देने वाली का तो है। और मैं जानती हू तुम्हारे लिए उस अंधी मा का देखा हुआ वह भी अधिक सच्चा है, जो दूसरों को शायद दिखाई ही न दे।'—और यह कहकर कमला उनके वक्ष पर से उठ खड़ी हुई!

कुछ सोचकर नटनागर ने कहा, 'क्या यह सम्भव नही है कि यह पत्र किसी दुरभिसन्धि से घूमर काकी ने किसीसे लिखाया हो, और मा को इसका पता ही न हो?'

'घूमर काकी ने लिखाया हो, तो भी तुम्हारी मा कोई दूध की धोई हुई नही है कि मुझे बख्श देगी।'

जिस ढग से कमला बात कर रही थी, उससे नटनागर को विश्वास होता जा रहा था कि कोई ऐसी बात है अवश्य, जिसने कमला को बडा आघात पहुचाया है, और फिर भी वह प्रकट नही कर पा रही है। अवश्य ही वह उनकी मा से भी सम्बन्ध रखती है किन्तु—क्या इस तथा-कथित बदनामी से तो उसका कोई सम्बन्ध नही ?—और बदनामी ! कुछ समझ में नही आता, कमला कहती है कि बदनामी की बात है उसकी मा बनने की सम्भावना होना—किन्तु प्रत्येक स्त्री ही तो मां बनती है ! इसमे बदनामी क्या है ? कमला साफ-साफ क्यो नही कहती ? और नटनागर किस तरह से इसका उत्तर प्राप्त करे ?

कुछ देर तक नटनागर सोचते रहे। कमला ने टेबल के लाइट को जलाकर उसका मुह दीवार की ओर कर दिया ताकि उसका प्रकाश सीधे न तो बीमार की शैया पर, न फर्श पर और न उसके स्वय के बिस्तर पर पडे फिर छत के प्रकाश को बुझाकर वह अपने बिस्तर पर लेट गई।

नटनागर ने कहा, 'नीद तो नही आ रही कमला ?'

'नही !'

फिर चुप ! कमला ने कहा, 'कहो क्या कहना चाहते हो ?'

'कह नही सकता कि मुझे जन्म देने की तैयारी मे मेरी मा को किन-किन दशाओ मे गुजरना पडा ! किन्तु घूमर काकी या मा—या और कोई तुम्हारा दुश्मन, किसीको भी इसमे बदनाम करने को क्या मसाला मिला, मैं नही समझ पाया। मा बनना यदि किसीके लिए शर्म की बात हो, तो सृष्टि का अन्त ही समझो !'

कमला उठ बैठी, यह दूसरी ओर दृष्टि करके लेटे हुए नटनागर उस अ्यायाधकार मे भी जान गए। कमला ने कहा 'वे कहते है कि मैं समय से पहले मा बन जाऊगी !'

नटनागर कुछ नही समझ सके, बोले, 'यानी ?'

कमला ने नटनागर की ओर देखा, एक क्षण के लिए रुकी, बोली, 'मुझे यह सातवा महीना है !'

'तो ?'

झल्ला कर कमला ने कहा, 'यही कि मेरे गर्भ की सतान तुम्हारी सतान नही है !'

'कमला !'—और नटनागर आवेश मे अपने पलग पर बैठ गए ! उस अधकार में भी दोनो की दृष्टिया चार हो गई।

सिर नीचा करके कमला ने कहा, 'वे कहते हैं कि गत दस माह से तुम बाहर हो !'

नटनागर का हृदय उछलने लगा, सास की गति क्षिप्र हो गई; वे कभी इधर कभी उधर देखने लगे। हृदय पर दबाव बढ़ा, उन्हे खांसी

का दौर होने लगा; सामने अधकार मे उन्हे काले-पीले दिखाई देने लगे, सारा कमरा मानो घूमने लगा, वे फिर बिस्तर पर लुढक गए। कमला बैठी रही, उसी तरह नीची दृष्टि किए हुए।

नटनागर को शायद अव्यक्त मे ऐसी ही कुछ आशका थी। बडी अप्रिय बात है इसलिए उनके मन का चोर उसे अचेतन मे दबाए बैठा था; कमला ने साहूकार को जगा दिया, चोर को भागना पडा। चैतन्य मे उस बात के आते ही नटनागर चौंक जरूर गए, किन्तु दबे हुए मन पर से मानो एक शिला भी हट गई! एक लबी सास लेकर बोले:

'तो क्या यह सब सच है कमला ?'

कमला ने कहा, 'तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नही है। इस अप्रिय चर्चा को अब न बढने दो। सो जाओ! मुझे भी नीद आ रही है।'—और वह लेट गई।

'कह नही सकता, तुम्हे नीद आ जाएगी या नही!—पर क्या सोचती हो, मुझे भी नीद आ जाएगी ?'

'पर तुम्हारा स्वास्थ्य जो खराब है!'

'सो अच्छा ही है कमला, जीने के लिए जब कोई आश्वासन न हो, तो तिनके का सहारा जितनी जल्दी छूट जाए उतना ही अच्छा!'

'परन्तु यदि अपराध मैंने किया है, तो उसका दण्ड तुम क्यो भोगोगे ?'

नटनागर चुप हो गए। उत्तर दे सकते थे कि तुम जो मेरी हो।—किन्तु मानो इस वाक्य का स्पष्ट अर्थ आज के पहले उन्हे कभी हृदयगम नही हुआ। सच ही तो है! अपराध कमला ने किया है उसका दण्ड नटनागर क्यो भोगे ?

नटनागर ने कहा, 'सामाजिक दृष्टि से मैं तुम्हारा पति हू, क्या तुम समझती हो अपमान का बोध मुझमे नही है ?'

'सामाजिक दृष्टि से!—और वैयक्तिक दृष्टि से ?'—दीर्घ आखों को कमला ने नटनागर की दृष्टि मे गडाकर कहा। सामने की दीवार से

टकराए हुए प्रकाश की नील तारिका उसकी आखो मे झलक उठी ।

नटनागर ने क्षीण हसी हसकर कहा, 'कोयल के बच्चो को पालने की मूर्खता कौआ ही करता है कमला, मनुष्य उससे ऊपर का प्राणी है ।'

कमला ने कहा, 'तब भी कौआ कोयल के बच्चो को अपनी ही सतान समझकर पोषण करता है; यह प्रवचना और आत्मसतोष मनुष्य ही को मुबारक हो कि अपनी शक्ति पर जब विश्वास न रहे, तब भी वह दूसरो के बच्चो को गोद लेकर बाप का नाटक खेल ले ।'

'तुम्हारा मतलब ?'

'कुछ नही ।'

'कमला, तुम मेरी पत्नी हो · '

बीच ही मे कमला ने कहा, 'सामाजिक दृष्टि से ही तो !—इस दावे को समाज के सामने ही पेश करना, अभी तो हम दोनो ही अकेले हैं ।'

नटनागर क्या उत्तर देते ?—किन्तु उनकी आत्मा उत्तरोत्तर अधिक कष्ट पाती रही, जैसे-जैसे वे अधिक सोचते रहे ।

कुछ देर के बाद नटनागर ने कहा, 'मै शरीर से क्षीण होता जा रहा हू । यह मेरा दुर्भाग्य हो सकता है कमला, पर मेरा अपराध तो नहीं ।'

अन्धकार मे भी कमला मुस्करा उठी, किन्तु लेटे ही लेटे बोली, 'दुर्भाग्य और अपराध मे कितना अन्तर है, यह मैं नही जानती । एक कारण है और दूसरा कार्य, यह भी नही कहा जा सकता । किन्तु शरीर के क्षीण होने ही की कथा हो, तो मेरा ही पलड़ा क्यो भारी मान लिया जाएगा ?—इसीलिए न कि मैं स्त्री हू !—पुरुष उच्छृखल हो तो वह बहादुर है, स्त्री यदि कभी विवशता से हो जाए तो वह बेहया है ।'

'नही-नही कमला, मुझे इतनी कठोरता से मत परखो ।'

कमला पुनः अपने बिस्तर पर बैठ गई । बोली, 'मैं ? मैं परखूगी तुम्हें ? किसलिए ?'

'तुमने कहा न कि मनुष्य को जब अपनी शक्ति पर विश्वास न रहे...'

लम्बी सास लेकर कमला उठ खडी हुई। उठकर धीर पदो से वह सामने की दीवार तक गई जहा से प्रकाश की किरणें टकराकर परावर्तित हो रही थी। नटनागर को केवल कमला छाया-मूर्ति ही प्रतीत हो रही थी।

हाथ के नाखूनो से कुछ देर तक खेलकर उसी मुद्रा मे खडी हुई कमला ने पूछा :

'मुझे क्या करने को कहते हो ?'

सारा कमरा अवरुद्ध प्रकाश के गर्भ मे मायामुग्ध-सा दिखाई दे रहा था। कही कोई शब्द नही था, केवल टेबल पर रखी हुई घडी टिक-टिक शब्द करके सारे वातावरण को बोझिल बना रही थी। पास की अर्द्धनिमीलित खिड़की से मन्द पवन के झोके कभी-कभी अवश्य सारे कमरे की स्तब्धता को भग कर देते थे। नटनागर मानो स्वप्नराज्य मे किसी विभीषिका से जूझ रहे थे। स्वय कमला भी अपने आपको किसी नई दुनिया मे अनुभव कर रही थी। हृदय दोनो के मानो बहुत देर तक धड़क-धडककर अब थक चुके थे, उनकी सास भी शिथिल हो गई थी।

बहुत सोच-विचार के बाद मानो अपने आपको तैयार करके नटनागर ने कहा .

'क्या इसे अभी गिराया नही जा सकता ?'

कमला ने मुडकर पलग की ओर दृष्टि डाली। नटनागर को तब भी कुछ स्पष्ट दिखाई नही दिया, किन्तु कमला को मानो भविष्य की समस्त सीमा दिखाई दे गई। उसने हाथ बढाकर दीपक के स्विच पर रखा। एक निमिष मे निविड अन्धकार मे दोनो की समस्त अनुभूति खो गई।

कुछ देर के बाद कमला के बिस्तर पर से आवाज आई। 'गिराया तो क्यो नही जा सकता ! किन्तु इतने दिन बाद—क्या तुम सोचते हो इसमे

प्राणो का कोई खतरा नही है ?'

'कोई चतुर डॉक्टर हो, तो नही है।'

'चतुर डॉक्टर ऐसा काम करने के लिए मिल जाएगा शायद !—किन्तु सात माह मे और नौ-साढे नौ माह मे ऐसा क्या अन्तर पड जाता है कि इस छोटी-सी जान पर सकट का पहाड डाल दिया जाए ?'

'ओह ! तुम गर्भ की बात कह रही हो। मैं तुम्हारी स्वय की बात सोच रहा था।'

'तो दो हत्याओ का खतरा लेने के लिए मुझे कह रहे हो ?'

'आने वाले को तो न आने देने के लिए ही यह सब कुछ है, परन्तु तुम्हे क्या भय होगा ? किसी अच्छे डॉक्टर से बात करने से ही काम चल जाएगा।'

कुछ सोचकर कमला ने कहा, 'मैं मरने से नही डरती, पर मारने से तो इस युग मे सभी को डरना चाहिए, चाहे वह अपनी स्त्री ही हो ! मैं अपनी सन्तान को नही मारना चाहती। मुझसे यह नही होगा।'

'किन्तु इस तीसरे बाहरी उपद्रव के हमारे बीच मे रहने से हमारा ससार कैसे चलेगा ?'

'जैसे अब तक चलता आया है।'

'नही, यह नही हो सकता। मैं उस पिल्ले का मुह कैसे देख सकूगा, जो मेरा नही है और जिसकी कल्पनामात्र मेरे पौरुष की सदैव लाछना करती रहेगी।'

'वह मेरी सन्तान तो होगा, तुम्हारी न सही ! मेरी साडी तो तुम्हारे किसी उपयोग की नही। उसे मैंने खरीदा है, अपनी पसन्द के अनुसार, इसे तुम कैसे सहन कर लेते हो ?'

'साडी और पुत्र एक बात नही है, यह तुम खूब अच्छी तरह समझती हो कमला !'

'किन्तु ममत्व की भावना तो वही है, अन्तर उसमे अंशों का हो सकता है, प्रकार का नहीं !'

फिर अनेक क्षणो तक चुप्पी ! दोनो मानो अपने शस्त्रास्त्र तौल रहे थे।

नटनागर ने थूक निगलकर पूछा, 'अच्छा कमला, एक बात बता सकती हो ?'

'पूछो !'

'यह सन्तान किसकी है ?'

कुछ देर चुप रहकर कमला ने उत्तर दिया, 'मेरी।'

'उसके पिता का नाम नही बताओगी ?'

फिर कुछ देर चुप रहकर कमला ने कहा, 'क्या प्रयोजन है ?'

'प्रयोजन है कमला ! क्या तुम समझती हो कि तुम मेरी पत्नी होकर अपनी इच्छानुसार अपने चरित्र के साथ खिलवाड करो और मैं उस छली का नाम भी न जान सकू जिसने मेरे सोने के ससार को राख कर देना चाहा है ?'

'धीरे बोलो ! पास भी कोई रोगी रहते हैं, और बहुत सम्भव है कि कोई नर्स आकर तुम्हे सो जाने के लिए बाध्य करे !'

'तुम्हे मेरी बात का उत्तर देना होगा।'

'ज़रूर दूगी, पूछो !'

'इस गर्भस्थ शिशु का बाप कौन है ?'

'कोई नही, यदि तुम बनना चाहो तो ठीक है, नही तो जो भी बनना चाहे !'

'कौन बनना चाहेगा ऐसी जारज सतान का बाप ?'

'बाप कोई न बने। किन्तु मा तो बनाई नही जाती।'

निष्फल क्रोध मे अपने ओठो को काटकर नटनागर ने जब कमला की ओर अपनी दृष्टि फिराई तो उसमे आसू भरे हुए थे किन्तु अधकार मे उन्हे देखता ही कौन ?

नटनागर ने कहा, 'कमला, तुम मेरा दु:ख नही समझ सकती, मुझे अपने ऊपर आज कितनी ग्लानि हो रही है, इसकी कोई कल्पना नही

कर सकता। अब तक मैं अपनी बीमारी से लडता आ रहा था, जीवित रहने की मुझे बडी साध थी, किन्तु अब ?—समझ नही पडता क्या करू मैं ?'

कमला ने कहा, 'मै देखती हू कि तुममे पिता बनने की योग्यता नही है, कम से कम मेरी सतान के तो अवश्य नही, तुम मुझसे घृणा जो करने लग गए हो। मैं नही जानती कि माता होना क्या चीज़ है। स्त्रीत्व के लिए उसकी क्या सार्थकता है यह मैंने कभी सोच नही देखा, और पढा चाहे जितना हो, उससे समझा तो कुछ जा नही सकता। यदि इस लाछना का पता होता, और मा बनने की सभावना को टाल सकती, तो इसके लिए मैं कभी आग्रह न करती। फिर भी अनचाहे और अनजाने ही जब माँ बनने की सभावना का अभिशाप मुझे मिल गया है, तो अचानक ही मा के सस्कार मुझमे जाग गए हैं, भावना इसमे बिल्कुल नही है, यह मैं जानती हू, फिर भी अपने ही अश को मैं नष्ट कैसे होता देख सकती हू ?—स्त्री आश्रय चाहती है, वह तुमने नही दिया, न सही, किन्तु वह मेरा दुःख है, तुम्हारा क्या ?'

कई क्षण चुप्पी और अधकार मे कट गए।

कमला ने कहा, लम्बी सास लेकर, 'सचमुच तुम्हारे पौरुष के लिए सकट उपस्थित हो गया है। एक काम तो कर सकते हो ?'

'क्या ?'

'मुझे तलाक दे दो। चरित्र-हीनता का अपराध मैं स्वीकार कर लूगी।'

अपने आपको सयत करने मे नटनागर को काफी समय लग गया, और जब वे बोलने लगे तो उनका स्वर रोरुद्धमान था यह छिपा न रह सका ··

'कमला·····'

उत्तर मे कमला केवल उद्ग्रीव हो गई।

'क्या सचमुच ही तुमने कभी एक क्षण के लिए भी मुझे प्यार नहीं

किया ? जिस मोह के साथ मैं उलझा रहा, मैंने अपने जीवन के ताने-बाने जिस सुनहरे प्रकाश मे बुनने चाहे, क्या वास्तव मे उसमे कोई सचाई न थी ?—क्या आज तक का हमारे-तुम्हारे बीच का यह सब आदान-प्रदान एक मिथ्या के सिवा कुछ न था ? जिस नीव पर हमने गृहस्थी का यह भव्य प्रासाद खडा करना चाहा, क्या वह रेत ही की बनी हुई है कि एक झटके के साथ ही उसे ढह जाना पडेगा ?—कमला, कमला—कितनी कठोर हो तुम, कैसे सहज भाव से तुम उस प्रस्ताव को रख सकी हो !'

'नीव यदि रेती की हो, तो प्रासाद जितनी जल्दी ढह जाए, उतना ही अच्छा है। रहा सवाल मेरी कठोरता का, सो क्या तुम सोचते हो मेरा कुछ नष्ट न होगा ?—तुम पुरुष हो, समाज मे तुम्हारा कुछ बिगडेगा नही। बल्कि कुमारी कन्याओ मे तुम्हारी साख बढ ही जाएगी, मुझसे भी किसी अच्छी, सुन्दर, पढी-लिखी लडकी का तुम वरण कर सकोगे, और दो दिन बाद ही जीवन की रगीनी मे तुम्हारा यह सारा पुराना अधकार धुल-पुछ जाएगा, कमला नाम की किसी हत-भागिनी की तुम्हे स्मृति भी नही रहेगी। किन्तु मै ?—मैं स्त्री-जाति की हू, जिसको भगवान ने दण्ड ग्रहण करने ही के लिए बनाया है। यदि वह कभी दण्ड देने की स्पर्द्धा करे, तो भी वह उसीकी पीठ पर पडता है, और फिर भी समाज यही समझता है कि दण्ड देने वाली वही है। स्त्री का अतीत उसकी स्मृति मे नही, उसकी प्रकृति मे, उसके शरीर मे भिद जाता है, वह यदि उसे भुलाना चाहे, तो उसके शरीर की कोटि-कोटि शिराए रक्त के प्रबल उच्छ्वास से फटकर, रोम-कूपो से अगणित हाथ उठाकर उसे कचोट-कचोटकर याद दिलाती रहती है; और यदि चरित्र-हीनता का भार उसके मस्तक पर लाद दिया जाए, तो जानते हो, दुनिया की गन्दगी मे से वह ऊपर उठ ही नही सकती, वह गले मे पत्थर बाधकर तैरने की चेष्टा होगी, पर उसे डूबने के सिवा और कोई गति नही है। मुझ अभागिनी को तो एक जारज सतान का हाथ भी पकडकर अपने ही को नही, दुनिया को भी हर क्षण जताते रहना है कि मै कौन हू, कहा से आई हू,

और किस दिशा मे मेरा मार्ग है ! फिर भी सोचते हो, इस सौदे मे तुम्ही ठगे गए हो ?'

लेटे हुए नटनागर उठकर कब अपने पलग पर बैठ गए थे, यह कमला को मालूम न था। कमरे मे इस समय प्रकाश न था, किन्तु सामने की खिडकी मे बाहर निरभ्र आकाश की तारिकाए अपनी झलक से कमरे को एकदम अछूता भी नही रख सकी थी।

नटनागर ने कहा, 'नही कमला, मै तुम्हे तलाक नही दे सकता !—तुम्हारे बिना मै जीवित नही रह सकता !—इतनी कठोर तुम मत बनो।' और सचमुच ही नटनागर का कण्ठ गद्गद हो उठा, आगे वे बोल नही सके।

'कठोर तो मैं ही कहलाऊगी। समाज का यही तो नियम है, जो सबसे अधिक निर्बल है, उसके ऊपर बल-प्रयोग के समान निरापद और वस्तु ही क्या है। रहा सवाल जीवित रहने का, सो यह बात तो कोई भी नही मानेगा कि जिससे घृणा की जाती है, वही जीवन का अवलबन कैसे हो सकता है। खैर, तुम्हारे पौरुष को आच न आने पाए इसका एक और उपाय है।'

'क्या ?'

'अस्पताल मे किसी नर्स से कहकर कुछ सखिया की व्यवस्था कर सकते हो ?—मुझसे और मेरी होने वाली सतान दोनो से ही तुम्हे मुक्ति मिल जाएगी, तुम्हारे ऊपर कोई अगुली भी न उठाएगा।'

'कमला ! ...'

'पर और उपाय ही क्या है ?'

'तुम मुझे गलत समझ रही हो कमला, मैं इसके सिवा और कुछ नहीं कह सकता !—यदि हृदय चीरकर दिखाना सम्भव होता, तो मैं तुम्हे बतलाता कि उसमे रक्त के बदले केवल तुम्हारी अनुभूति का प्रवाह बह रहा है !—' और यह कहते-कहते मानो वे बहुत अधिक थककर, पुनः अपने बिस्तर पर लेट गए, और धीरे-धीरे तौल-तौलकर कहने लगे,

'गलत समझ रही हो!—मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, व्यक्तिगत जीवन तो है, उसकी आशा-निराशा, हर्ष-अमर्ष, सुख-दु ख, हानि-लाभ—यह सब तो है ही; किन्तु समाज की मान्यता भी उसके लिए उतनी ही आवश्यक है। वह अपने चरित्र से, आचरण से समाज की धाराओ को भी आलोडित करता रहता है, इसीलिए समाज के विधि-निषध उसे मानने ही पडते है। मेरे आज ही के व्यवहार को ध्रुव समझकर तुम मुझपर क्रोध कर सकती हो, मुझे मझधार मे डूबना-उतराता छोडकर तुम जा सकती हो, मेरा क्या है? क्षय की निविड गलियो मे फस ही चुका हू, इससे बच निकलने का ही कोई रास्ता नही दिखाई दता, अब यदि बच निकलने की साध भी न रहे, तो भी ठीक ही है। किन्तु तुम समझोगी इस तथ्य को तव जव समाज तुमसे और तुम्हारी होने वाली सतान से उसके पितृत्व की कैफियत मागेगा। उस कैफियत से समाज का कुछ बनता-बिगडता नही, यह मैं जानता हू, किन्तु अपने भविष्य की गतिविधि तो उसे सयमित रखनी होती है, वह दो प्राणो की कुर्बानी की ओर नही देखता। और तब अपनी सतान के अभिशाप को तुम अपनी आखो देख नही सकोगी! तुम्हे मृत्यु से अधिक यत्रणा मिलेगी! तुम मरना चाहोगी, किन्तु तुम्हारी सतान तुम्हारे लिए मरने की सुविधा नही रखेगी। मै उसीकी चिन्ता से तुम्हे और, यदि जीवित रह सकू, तो जरूर ही अपने आपको भी बचाना चाहता था। तुमने मुझे गलत समझा कमला, गलत समझा! मैं तुम्हे तलाक नही दे सकता, मै तुम्हे जहर नही दे सकता! मैं केवल तुम्हे सुख देना चाहता हू, केवल सुख, मरकर भी यदि यह सम्भव हो—और कमला, विश्वास मानो, मेरे द्वारा यदि तुम्हे तनिक भी दु ख पहुचा, तो वह मेरे जीवन का सबसे बडा अभिशाप होगा।' और नटनागर ने अपने मुह पर चादर डाल ली।

कमला की आखे डबडबा आई पहली बार—उसने अपनी सिक्त-दृष्टि को उठाया, किन्तु सिवा निविडतम अधकार के उसे कुछ नही दिखाई दिया!—भविष्य की उस सूनी दिशा मे कुछ देर तक निष्प्रयोजन ताकते रहने के बाद, कमला ने अपना हाथ बढाकर नटनागर के हृदय पर रख

दिया, नटनागर ने चादर के भीतर से अपना हाथ बाहर निकाला, अचेतन ही मे दोनो हाथ एक दूसरे मे गुथ गए ! कई क्षण और भी इसी निर्वाक् सभाषण मे बीत गए !

जब कमला ने मुह खोला, तो उसकी वाणी भीगी हुई थी, शब्द कठिनाई से उसके गले से बाहर हो रहे थे, 'तुम जो कुछ कहोगे, मैं करने के लिए तैयार हू, पर मेरी सतान की हत्या के लिए तुम मुझसे न कहना, वह मुझमे नही होगी, कभी नही होगी !'—और उसने पास सरककर नटनागर के वक्ष पर अपना मस्तक रख दिया। उसकी आखो से आसुओं की धाराए बहने लगी, जैसे-जैसे नटनागर की अगुलिया उसके मस्तक के बालो मे घूम-घूमकर उसे आश्वस्त करने का प्रयत्न करने लगी !

बहुत देर तक सोचते रहकर नटनागर ने कहा, 'मैं तो अब केवल एक ही मार्ग देखता हू कमला !'

'कहो ?'

'सतान की आसक्ति तो तुम्हे छोडनी ही होगी।'

'सतान-सुख की मुझे कल्पना नही है, उसकी याचना भी नही करूगी !'

'तो प्रसव के बाद ही उसे या तो किसी अनाथालय मे या किसी मिशनरी-सस्था में दे देना होगा !'

कापते ओठो से कमला ने कहा, 'मिशन वाले उसे ले लेगे ?'

'प्रयास तो करना ही पडेगा, शायद कुछ अर्थ की व्यवस्था भी करनी पड़े।'

'वह कैसे हो सकेगी ?'

'गाव के घर को बेचकर !'

'घर बेचकर ?'

कुछ मुस्कराकर नटनागर ने कहा, 'काफी बडा घर है ! हम लोग तो वहां रहते नहीं। कभी रहने की आशा भी नहीं है। मा जब तक जिन्दा है, यदि हमारे साथ नही रह सकती, तो गांव में एक छोटा घर

किराए लेकर भी गुजर कर सकती है।'

'पर मा इसके लिए राजी हो जाएगी ?'

'राजी तो उसे होना ही पड़ेगा कमला ! आखिर उसके लड़के के जीवन से उसका घर बड़ा नही है।'

'और भविष्य ?'

'मेरा भविष्य तुम जो हो !...'

'नही, नही, घर बेचने की आवश्यकता नही होगी। यदि अर्थ की व्यवस्था ही करनी पड़ी तो उसका भार मेरे सिर पर रहेगा ! मेरे पास मेरी मा के दिए हुए गहने हैं, वे किस दिन काम आएगे; और भविष्य में मेरी निज की भी तो सर्विस हो जाएगी ?—लेकिन...'

'क्या ?'

'मिशन मे भेजने की...'

'मैं यही पर तुम्हारे प्रसव की व्यवस्था करवा दूगा, रेलवे मेटर्निटी होम मे। यहा जो नर्स मुझे देखती है उसकी छोटी बहन वहा पर वार्डन है, सच तो तुम्हारे प्रसव के बारे मे मैंने एक तरह से व्यवस्था कर ही दी थी। केवल सी० एम० ओ० को लिखकर एक रूम रिजर्व करवाने की कार्यवाही ही करना शेष है ! किन्तु उस बच्चे को मिशन मे भेजने की दिशा मे क्या करना होगा, सो मैं समझ नही पा रहा हू।'

कमला ने लम्बी सास लेकर कहा, 'अब अधिक न सोचो तुम। रात तीन पहर बीत चुकी है ! यदि कुछ नीद ले सको तो अच्छा है ! अभी काफी समय है, न होगा मैं ही कोई व्यवस्था करूगी !'

और उठकर कमला ने अपना मुह पोछा, नटनागर के बिस्तर की चादर को ठीक किया, ठण्डी हवा के झोके आने शुरू हो गए थे, उसने खिड़की को बन्द किया, फिर दूसरी चादर से नटनागर के शरीर को भली भाति ढंककर, वह पास ही सिरहाने बैठकर उनके मस्तक को सहलाने लगी।

कहा नही जा सकता कि कब नटनागर सोचने-सोचते सो गए, किन्तु

कमला की आखो मे उस रात सिवा भविष्य की धूमिल कल्पना-रेखा के और कुछ न था। कई बातो के साथ उसने निश्चय किया कि सहायता के लिए वह एक पत्र धर्मप्रकाश को भी लिखेगी। आखिर उसके सर्वनाश मे उसका ही तो सबसे बडा दायित्व है!

१४

उस रात को बीते दो माह हो गए। कमला रेलवे के मेटर्निटी हास्पिटल मे भरती हो गई है। नटनागर का ऑपरेशन हो गया है। उस रात के दूसरे दिन ही डॉक्टरो ने देखा कि नटनागर की तबियत एकाएक ही गिर गई है। उसके पहले तक उन्होने एकाएक ही अप्रत्याशित सुधार का परिचय दिया था, अत उनके स्वास्थ्य की आकस्मिक गिरावट को डॉक्टर समझ न सके, और बीमारी को अधिक अवसर देना उन्होने उचित नही समझा। स्वय नटनागर का भी आग्रह रहा, क्योकि इस ऑपरेशन के बाद ही मिसेज नटनागर को अपने कन्फाइनमेट की तैयारी करनी थी।

ऑपरेशन सफलतापूर्वक हो गया। कमला ने बडे मनोयोग से नटनागर की सेवा की, अब उन्हे सेनेटोरियम मे भेज दिया गया है, जहा कम से कम छः मास उन्हे बिताने पडेगे। कमला उन्हीके साथ रहना चाहती थी, पर मजबूरी थी, वैसे सेनेटोरियम मे सब प्रकार की बडी उत्तम व्यवस्था थी, और कमला के उद्विग्न होने का कोई कारण नही था।

मेटर्निटी हास्पिटल की चीफ वार्डन थी नटनागर के अस्पताल की नर्स पेट्रीशिया की छोटी बहिन पोर्शिया। कमला पोर्शिया के नाम पेट्रीशिया से एक पत्र लेकर आई थी। पोर्शिया ने उसके साथ बहुत ही सुन्दर व्यवहार किया। अस्पताल रेलवे का था, वार्डन कमला पर मेहरबान थी

ही, उसे एक सुन्दर कमरा अपने लिए मिल गया। अभी प्रसव में देर थी, किन्तु बम्बई मे कमला को और कही ठहरने की व्यवस्था न थी। नटनागर की बीमारी और विशेष प्रार्थना से कमला को अस्पताल ही मे ठहरने की अनुमति मिल गई थी।

पोशिया कमला की समवयस्क थी। अभी-अभी ही कॉलेज छोडा था। यहा पर उसे छः माह बिताने हैं, यह उसकी प्रैक्टिकल ट्रेनिंग का एक भाग था, इसके बाद उसे कही हाउस-सर्जन का काम करना था, बाद मे फिर किसी अच्छे डॉक्टर के साथ कुछ अनुभव प्राप्त करेगी। उसके बाद तै करेगी कि उसे कही सर्विस करना है, या जमकर स्वतन्त्र व्यवसाय।

कमला का कमरा पोशिया के कमरे के पास ही है। प्राय ही कमला पोशिया के कमरे मे देखी जा सकती है, कभी-कभी पोशिया भी कमला के कमरे मे चली आती है, दोनो मे सौहार्द्र और सख्य बढता जा रहा है। समवयस्क होने पर भी पोशिया अविवाहित है, कुमारी है, कमला विवाहित ही नही, मा बनने की तैयारी कर रही है। दोनो पढी-लिखी हैं, किन्तु दोनो के सस्कार बिल्कुल पृथक्-पृथक् हैं। दोनो भारतीय हैं, किन्तु दोनो का धर्म जुदा, सामाजिक पृष्ठभूमि जुदी, आशा-विश्वास जुदे, और भविष्य जुदा—दोनो अपने-अपने अनुभवो का आदान-प्रदान करने लगी।

वार्ड की अन्य नर्सों के साथ पोशिया का सम्बन्ध बराबरी का न था, पोशिया थी उनकी सरदार, अत. उनसे घुल-मिलकर बात करने का प्रश्न ही न था। अन्य डाक्टर सदैव वार्ड मे रहती न थी, शेष मे अन्य महिलाएं, जो वहा प्रसव के लिए ठहरी हुई थी, इतनी पढी-लिखी न थी कि पोशिया उनके साथ अपना मन खोलकर बात कर सकती थी। फिर किसी अन्य महिला को इतना अवसर भी न था। प्रसव-काल के समीप होने पर वे उपस्थित होतीं, और उसके बाद उन्हे अधिक समय न मिलता।

जरा स्वस्थ होते ही वे घर लौट जाती । कमला की परिस्थितिया बिल्कुल ही दूसरी थी ।

उस दिन पोर्शिया के कमरे मे ही दोनो सखिया बैठी हुई थी ।

बातचीत के दौरान मे पोर्शिया ने कहा, 'मा बनने की सम्भावना तुम्हे कैसी लगती है कमला ?'

'बड़ा डर लगता है पर्सी !'

'डर ?'

'सो ही तो ! क्या जाने क्या होगा ? कहते है, यह स्त्री का नया जन्म ही होता है ।'

'तो नये जन्म से डर कैसा ?'

'इस जन्म की क्या वह मृत्यु नही होती ?'

'एकदम तो मृत्यु नही । और फिर नारी के जीवन मे यह घटना तो बहुत ही सामान्य है । प्रत्येक नारी ही तो मा बनती है । फिर डर कैसा ? बायोलोजिकली यही घटना तो नारी-जीवन के व्यक्तित्व का चरम विकास है ।'

कमला ने हसकर कहा, 'तुम भी शीघ्र ही विवाह करके क्यो नही अपने व्यक्तित्व का विकास लाभ करती ।'

'मेरी बात अलग है । मै मा बनने की अपेक्षा नारी को मा बनने मे सहायक होना अधिक अच्छा समझती हू ।'

'पर इससे स्वय मा बनने मे क्या बाधा उपस्थित होती है ?'

'वाह ? प्रसव मात्र से तो मा बनने की क्रिया सम्पन्न नहीं हो जाती । शिशु का लालन-पालन, उसको बडा करना, मनुष्य बनाना, अपने प्रेम का उसपर अभिषेक करना, यह सब किए बिना तो मां नही बना जा सकता । और इतनी सारी जिम्मेदारियो के बाद क्या सोच सकती हो कि मैं यह धन्धा जारी रख सकती हू ? नही, इसी लिए मैने निश्चय किया है, कि मैं विवाह ही नही करूगी ।'

'फिर तुम्हारे व्यक्तित्व का विकास कैसे होगा ?'

हसकर पोर्शिया ने कहा, 'मै माताओ की माता जो बनने जा रही हू, यही मेरे व्यक्तित्व का विकास है। प्रसव की पीडा मुझे नही अनुभव करनी पडेगी, किन्तु माताओं को ठीक माता बनाना क्या कम दायित्व का काम है ?'

'अच्छा पर्सी, एक बात बताओगी !'

'क्या ?'

'क्या सन्तान के ऊपर माता-पिता का कुछ प्रभाव पडता है—यानी एथिकल (आचरण-सम्बन्धी) और बायोलोजिकल—दोनो !'

'इसका तो एक अलग शास्त्र ही है, जेनेटिक्स, वशानुक्रम—अवश्य बच्चा कई बातो मे माता-पिता का प्रभाव प्राप्त करता है, वह उनका अश ही तो है। इसीलिए तो देखती हो, बच्चों की शक्ल, रूप, गुण माता-पिताओ के अनुकूल होते है।'

'यदि माता-पिता मे कुछ दोष हो ?'

'तो सन्तान भी उसकी भागीदार हो सकती है। बहुतेरी बीमारिया होती हैं, जो सन्तान को उत्तराधिकार मे मिल सकती हैं।'

'क्या यह सच है !' कमला ने मानो भय का नाट्य करते हुए कहा।

'सच क्यो नही। यह तो बहुत सामान्य बात है। अन्य देशो मे तो इसीलिए विवाह के पूर्व डाक्टरी प्रमाण-पत्र लेना पडता है। ताकि उनकी सन्तान किसी प्रकार के ऐसे रोग का शिकार न हो।'

'ऐसे माता-पिता यदि सन्तान पैदा करे, तो क्या वह समाज के प्रति अविचार न होगा !'

'अवश्य होगा। भारतवर्ष मे भी ऐसा कानून बनना चाहिए।'

'पर्सी'

'क्या ?'

'तुम जानती हो, मेरे पति बीमार हैं ?'

'अच्छा, यह तो तुमने कभी बताया नही। पेट्रीशिया ने भी अपने पत्र मे ऐसा कुछ लिखा तो था, किन्तु क्या अभी तक वे बीमार हैं ?'

'हा, अभी वे आरोग्य लाभ कर रहे है। जानती हो उन्हे क्या बीमारी है ?'

'नहीं तो !'

'उन्हे फेफडो की टी० बी० है !'

'अरे ?' दोनो कुछ देर तक चुप रही।

कमला ने पूछा, 'क्या उत्तराधिकार मे इस रोग को भी उस शिशु को पाना होगा ?'

पर्सी को आघात-सा लगा, उसकी प्यारी सखी की आशका निर्मूल तो नही है, बोली, 'हो भी सकता है, नही भी !'

कमला ने मुस्कराकर कहा, 'यह तो कोई उत्तर नही हुआ। अच्छा, इसका कुछ उपचार भी है ?'

'उपचार है क्यो नही।—बी० सी० जी०....'

'वह बात रहने दो ! बी० सी० जी० का टीका मैंने भी लिया है। उन्होंने भी लिया था !'

'यह भी तो हो सकता है कि उस शिशु को यह रोग हो ही नही ! फिर, भविष्य की पीढियो का इतनी सूक्ष्मता से विचार कौन करता है कमला, कि तुम्हीको करना पडेगा।'

'बात यह है पर्सी, कि मैं इसी आशका से डरी हुई हू। मै नही जानती कि मां होना कैसा होता है, सन्तान के प्रति उसकी कैसी आसक्ति रहती है ! मेरी मा मेरे बचपन मे ही मर गई। पिता दूसरा विवाह कर लाए, सो अनुभव तो मुझे विमाता का ही है ! इस अनुभूति के बल पर मैं कह सकती हूं कि एक बीमार शिशु की मा बनकर, जीवन भर उसके भार को ढोते रहकर, एक दिन अकस्मात् ही उसके अनावश्यक और अकर्मण्य अस्तित्व के अभाव मे धारासार आसू बहाते रहने की अपेक्षा, मा न बनना ही बहुत उत्तम है !'

'कहती क्या हो ?'

'सच कहती हूं पर्सी, मा बनने की मुझे कोई साध नहीं। अभी मेरी

उमर ही क्या है ? तुम्हे देखकर मुझे बडी जलन होती है । कितनी मुक्त हो तुम, और मा बनने के बाद मैं !' कमला ने एक पत्र निकालकर पोर्शिया को दिया और कहा, 'देखो, मैंने रेलवे स्कूल मे अध्यापिका की जगह के लिए आवेदन किया था, मेरी प्रार्थना स्वीकृत हो गई है, क्या तुम सोचती हो उस शिशु को लेकर मैं सर्विस कर सकूगी ?'

'पर यह तो तुम्हे विवाह के पहले ही सोचना चाहिए था कमला।'

'था की बात जाने दो, अब क्या हो सकता है सो बताओ। और फिर इस बीमारी की सम्भावना से ग्रस्त सन्तान की मा बनना ! पर्सी मुझे बचा लो, ममता की अनुभूति के जागृत होने के पहले ही यदि मैं इस आफत से बच सकू।'

'क्या अबोर्शन की कहती हो ?—किन्तु इस स्टेज पर·····'

'नही, नही—अबोर्शन की नही ! किन्तु—क्या कोई रास्ता तुम नही सुझा सकती ! मै प्रसव की पीडा से नही डरती, किन्तु मा बनने की मेरी कतई साध नही है।'

पोर्शिया विचारमग्न हो गई !

कमला ने कहा, मानो अपनी भावना को छिपाने के लिए, 'एक और कठिनाई देख रही हू पर्सी, मिस्टर नटनागर पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी ?—'

'यस कमला, यह पक्ष तो मैं भूल ही गई थी ! यो, आफ्टर डिलीवरी अगर कुछ पैसे की व्यवस्था हो जाए, तो हम किसी कान्वेण्ट मे उस शिशु को भेज सकते हैं। लेकिन एक तो वह ईसाई बना दिया जाएगा, दूसरे मुझे उसका परिचय छिपाने के लिए कुछ कहानी गढ़नी ही पडेगी। कान्वेण्ट वाले जब तक उनकी दिलजमई नही हो जाए, सरलता से ऐसा कोई भार नही लेते ! यो, तुम्हारे मत के कुछ अनाथाश्रम भी तो हैं, उनका भी मेरे मन मे ध्यान आया था, लेकिन जानती हो तुम तो, उनकी बडी बदनामी भी है ! देखकर तो मक्खी नहीं निगली जा सकती। जो हो, मि० नटनागर का पक्ष तो सोचना ही पडेगा। उस कठिनाई को

तुम कैसे पार करोगी ?'

कमला ने कहा, 'तुम से क्या छिपाऊं पर्सी । यह बीमारी के उत्तराधिकार की सम्भावना उन्हे भी है ! और वे इसके लिए बडे चिंतित है । अपने आपको बडा अपराधी अनुभव करते हैं ।'

'किन्तु वे सन्तान के बिछोह को कैसे सहन कर सकेंगे ?'

'यही मैं भी सोच रही हू । अच्छा बहन, एक बात नही हो सकती ?'

'क्या ?'

'यदि उनसे यह कह दिया जाए, कि डिलीवरी अब्नार्मल (असामान्य प्रसव) हुई, और बच्चा इसी प्रोसेस मे मर गया ।'

'कमला !'

'एक मिथ्या का आश्रय तो होगा !···' और उसने दृष्टि नीची कर ली, फिर धीरे-धीरे बोली, 'शायद इस दु ख को सहन करना उसके लिए कठिन न होगा ? अपराध की भावना जो उनमे है, सम्भव है वह इससे, अव्यक्त मन ही से सही, अपनी मुक्ति भी समझे !···'

पोर्शिया कमला की ओर देखती रही, उसने देखा कि कमला की आखे भर आई हैं ।

पोर्शिया ने अपने हाथो से कमला के आसू पोछकर कहा, 'अच्छा, सोच देखूगी कि क्या किया जा सकता है । यहा आई हू अनुभव प्राप्त करने के लिए, एक अनुभव यह भी सही !'

वह जानती थी कि अब उसे कोई भय नही है अतः रात्रि को लेटते ही कमला को नीद आ गई । किन्तु आधी रात के बाद ही एक दु स्वप्न की विभीषिका ने उसे जगा दिया । भीषण स्वप्न था : वह एक बकरी के बच्चे का मानो गला दबा रही थी, गला दबाने मे उसे मानो पैशाचिक संतोष प्राप्त हो रहा था, एक ओर उस बच्चे की मा टुकर-टुकर निहार रही थी, देखते ही देखते मानो उस मा का मुह एकाएक विकृत होने लगा, वह बकरी का मुंह न था, किन्तु मानो एक भयानक बकरे का मुह था, उसकी आखों से आग बरस रही थी, अपनी लटकती हुई दाढी को

हिलाकर उसने अपने मस्तक को हिलाया, दो नुकीले टेढे सीग, कमला की ओर प्रवृत्त हुए, उसने उस बच्चे का गला छोड दिया, और हाथों को बकरे के मस्तक की दिशा मे आगे बढा दिए। एक ओर झाडी मे से तभी एक भयानक गर्जन सुनाई दी, फिर हसी, अट्टहास—मालूम दिया वे कई पुरुषो की आवाज थी, उनम धर्मप्रकाश, कमल तथा नटनागर की आवाज भी पहचानी जा सकती थी। तभी एक भेडिया भी उसकी ओर लपका, उसके धड पर मुह था, धर्मप्रकाश का—वह भय के मारे चीख उठी, और उसकी नीद उचट गई।

अपने बदन का पसीना पोछकर उसने सोचा कि आज दिन मे जो काड हो चुके है, उन्हीकी प्रतिक्रिया उसके मन पर छाई हुई है। धर्मप्रकाश को लिखे हुए पत्र का उत्तर भी उसे मिल गया है। समाचार हर्ष और अमर्ष दोनो पैदा करते है। उसकी सर्विस की अर्जी मजूर हो गई है, नियुक्ति-पत्र भी धर्मप्रकाश ने भेज दिया है। भविष्य की एक आर्थिक चिन्ता तो मानो उसकी मिट गई।

उसने धर्मप्रकाश को लिखा था कि वह नैतिक रूप से कमला की होने वाली सतान का पिता है इसलिए उसे उसका उत्तरदायित्व लेना चाहिए। जहा तक उसका स्वय का—माता का दायित्व है, वह उसे जन्म दे लेगी, किन्तु वाद मे उसकी रक्षा, भरण-पोषण आदि का भार पिता को लेना पडता है। वह उस सन्तान को उसके बाप के मत्थे मढकर दोनो के जीवन को कष्ट मे नही डालना चाहती। केवल यह चाहती है कि उसके जीवन-निर्वाह की व्यवस्था हो जाए। वह बच्चे को अपने पास नही रख सकेगी, क्योकि वह किसी दूसरे पुरुष की पत्नी है, जो किसी दूसरे के बच्चे का पालन-पोषण करने के लिए बाध्य नही किया जा सकता। उसे आशा थी कि धर्मप्रकाश बाबू उस सतान के निमित्त कुछ पैसा अभी भेज देंगे, और कुछ माहवार भेजते रहेंगे, ताकि किसी कान्वेंट मे उसकी व्यवस्था हो सके।

धर्मप्रकाश का पत्र इतना विचित्र था कि कमला समझ भी नही

सकी। शायद उनके मन मे यह आशका थी कि कमला कही उस पत्र का कानूनी व्यवहार कर बैठेगी। अत. उन्होने अपने आपको बडा बचाकर पत्र लिखा है। यहा तक पत्र के नीचे उनके हस्ताक्षर तक नही हैं।

उन्होने लिखा है कि मा की व्यवस्था के लिए एक नियुक्ति-पत्र साथ मे है। इससे अब मा का उनके ऊपर कोई भार नही रहेगा। जहा तक सतान का प्रश्न है, यदि कोई पुरुष उसकी मा का पति न हो, तो उसके लिए यह बात प्रमाणित होनी आवश्यक है कि वही उसका पिता है। इस प्रमाण के अभाव मे कोई भी कोई दावा स्वीकार नही कर सकता। शेष मे उन्होने यह भी लिखा कि उनका स्थानान्तर हो गया है, और इसी सप्ताह वे अपना नया कार्य सभालने के लिए जा रहे हैं, अतः भविष्य मे वे किसी प्रकार के पत्र-व्यवहार की आशा नही करते—आदि-आदि! कहा उनका स्थानान्तर हुआ है, यह उन्होने नही लिखा—मतलब यह कि बडी सावधानी से पत्र लिखा गया है, ताकि यह कभी प्रमाणित न हो कि यह पत्र उन्होने लिखा है। पत्र हाथ से नही टाइप किया हुआ था।

कमला को क्रोध और हसी दोनो ही एक साथ आए—बेवकूफ, वह उसके पत्र का किसी तरह का उपयोग करना ही कब चाहती थी। वह विवाहिता है, उसका पति उसे प्यार करता है, उसके आशा है, विश्वास है, प्रतिष्ठा है और भविष्य है। हा, एक बात अवश्य हुई, उसे भ्रम था कि शायद धर्मप्रकाश के मन मे उसके लिए कुछ स्थान था, वह भ्रम दूर हो गया! कायर कहीं का, एक स्त्री के समान भी साहस नही दिखा सका। कमला ने कही उस संतान को अस्वीकार नहीं किया। भाग्य की विडम्बना ही थी कि कमला को ऐसे अपदार्थ के प्रति मोह हो गया था। उसे अलक्ष्य में एक और सतोष हुआ कि त्यागकर वह धर्मप्रकाश की निष्ठुरता का बदला उसकी सतान से ले सकेगी।

इसी तरह दिन बीतने लगे। एक दिन उसे मालूम हुआ कि उसके पास ही के कमरे मे बड़े जोर-शोर से सफाई हो रही है, कुछ अतिरिक्त

फर्नीचर आ-जा रहा है, हास्पिटल ही के नही, बाहर के भी कुछ चपरासी सामान ला-ले जा रहे हैं। मालूम देता है, कोई बडा ग्राहक आ रहा है।

पोर्शिया ने कहा, 'हा कमला, एक सहायक इजीनियर की पत्नी का केस है। केस वैसे कुछ विचित्र ही है। समझो बुढापे मे औलाद हो रही है। मिसेज कपूर यो उमर मे मिस्टर कपूर से दस-बारह वर्ष छोटी होगी ही, लगभग पैंतीस की समझ लो। पहली डिलीवरी है, और मिसेज़ कपूर कुछ अब्नॉर्मल बताई जाती हैं। हा, पहले उनको काफी हिस्टीरिया के दौरे पडते थे, कहते हैं कुछ-कुछ पागल थी, शुरू से ही शायद ऐसी रही हो। किन्तु कन्सेप्शन के बाद से उनकी मानसिक और शारीरिक दशा में काफी अन्तर हुआ है। मिस्टर कपूर बडे परेशान-से थे, कल आए थे। यहा बेचारे का टेम्परेरी पोस्टिंग हुआ है, छुट्टी लेकर जा सकते नही; रहने का कोई ठिकाना ही नही, कहते हैं अभी स्टेशन पर किसी 'सैलून' मे ही रहते थे। इसीलिए उन्होने उत्तम समझा कि यहा शिफ्ट कर देने से कम से कम खतरा रहेगा। आज शाम ही को शिफ्ट हो रही हैं मिसेज़ कपूर। हा, मेरा ख्याल है उसका डिलीवरी पीरियड तुम्हारे समय के आसपास ही समझो! वे चाहते थे कि मिसेज़ कपूर अनवरत मेरी दृष्टि मे रहे, मेरे पास का यह कमरा तो तुम लिए हुए हो अतः पास ही का कमरा उनको देना पड़ा।

उसी सध्या को मिसेज कपूर भी आ गईं। कमला ने अपने ही कक्ष के द्वार से देखा कि मिसेज़ कपूर ठीक उसी तरह की हैं, जैसा कि पोर्शिया ने बताया था। पोर्शिया भी साथ ही थी। रग गोरा, देखने मे काफी सुन्दर, किन्तु चेहरे पर थकान, चिन्ता तथा भय के चिह्न। सचमुच उमर पैंतीस से भी अधिक दिखाई देती थी। सच ही बेचारी को मा बनने के लिए बहुत प्रतीक्षा करनी पडी है, निराशा की स्थिति मे उसने स्वास्थ्य और सतुलन खो दिया हो, तो कोई आश्चर्य की बात नही।

पीछे-पीछे मि० कपूर भी चले आ रहे थे। साधारण तौर पर सुदर्शन, क्लीन शेव्ड चेहरा कुछ खिचा हुआ लम्बा, पतले ओठ, जिनमें

से दात दिखाई देते हुए, उमर अवश्य ही ४५ और ५० के बीच, किन्तु इतने लगते न थे। सिर खुला हुआ था, बाल खिचडी हो रहे थे, और इस तरह सवारे हुए थे कि पीछे की बढती जा रही चाद को छिपा ले।

दूसरे दिन मिस्टर कपूर से अकस्मात् ही भेंट हो गई। कमला पोर्शिया के कमरे मे बैठी हुई थी। उसके दिन नजदीक चले आ रहे थे, उद्वेग तो उसे था ही। उसकी भी वह पहली डिलीवरी थी, किन्तु तत्सम्बन्धी साहित्य पढकर उसने अपने आपको सम्पूर्णतया आने वाली परिस्थिति के लिए तैयार कर लिया था। चिन्ता थी केवल नवजात शिशु के भविष्य की, पोर्शिया ने एक फ्रेंच कॉन्वेण्ट से बातचीत करके सब कुछ निश्चित कर लिया था। यह निश्चय कर लिया गया था कि प्रसव के बाद ही शिशु कमला से अलग कर दिया जाएगा। कमला शिशु को नही देख सकेगी, जिससे कि उसपर उसके राग-आसक्ति आदि की छाया का स्पर्श न हो। कॉन्वेण्ट से एक सिस्टर शिशु का भार सम्हालने के लिए ठीक समय पर उपस्थित हो सकेगी, यदि सभव हुआ तो शिशु को एक सप्ताह से अधिक यहा नही रखा जाएगा। और कमला भी एक सप्ताह के बाद ही यहा से प्रस्थान कर सकेगी, किन्तु यदि उसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होगा तो वह कुछ दिन तक पोर्शिया के साथ ठहर सकेगी।

नटनागर को आवश्यक खबर दे दी जाएगी। वार्ड के रजिस्टर मे भी परिवर्तन करने पडेगे। इसमे कठिनाई अवश्य होगी, निवास की व्यवस्था कमला के नाम से हुई है, अत उसका नाम परिवर्तित नही किया जा सकता, फिर शिशु के जन्म सम्बन्धी सूचनाए भी दर्ज करनी पड़ेगी, किन्तु बाद मे इन रजिस्टरो को कौन पूछता है?—कभी आवश्यकता ही नही पडती। किसीको इस सम्बन्ध मे चिन्ता करने की आवश्यकता नही है।

बातें हो ही रही थी कि मिस्टर कपूर ने दरवाजे का पर्दा हटाकर पूछा:

'क्या मैं भीतर आ सकता हू सिस्टर ?'

'यस-यस—शूअर—मि० कपूर—मीट मिसेज कमला—माई फ्रेण्ड ऐण्ड पेशट—यही मिसेज कपूर के पास कमरे मे जो हैं !—और आप है मिस्टर कपूर एक्जीक्यूटिव इजीनियर· ·'

कमला ने उठकर हाथ जोडे और मिस्टर कपूर ने कहा, 'मिलकर प्रसन्नता हुई कमला देवी ! मुझे विश्वास है कि योर कम्पनी टु माइ वाइफ विल बी ए ग्रेट सैटिसफेक्शन टु हर' (आपकी सगति मेरी पत्नी के लिए बडी सतोषजनक होगी ।)

'थैंक्यू मिस्टर कपूर' और पोर्शिया की ओर देखकर उसने कहा, 'तो मैं चलू सिस्टर !'

मिस्टर कपूर ने कहा, 'यदि चले जाना आवश्यक न हो, तो बैठिए! मैं सिस्टर से अपनी वाइफ के सम्बन्ध ही मे कुछ परामर्श करना चाहता था । यू आर ए हैपी नेबरर टू हर (आप उसके पडोस ही मे हैं) आप भी यदि चाहे तो मुझे बहुत कुछ सहायता कर सकती है—मेरा मतलब है मिसेज कपूर कुछ एब्नार्मल टाइप की है । मै उनके बारे मे बडा चिन्तित हू । उन्हे एक विशेष व्यवहार और वातावरण की आवश्यकता है ।'

पोर्शिया ने कहा—'बैठो न कमला ।'

कमला बैठ गई ।

पोर्शिया ने कहा, 'मिस्टर कपूर, आपने कमरे की सारी व्यवस्था तो देख ही ली होगी, मैं आशा करती हू आपको कोई शिकायत नही है ।'

'मैं आपके प्रति कृतज्ञ हू कि आपने इतनी सुन्दर व्यवस्था कर दी है । मैं तो मिसेज कपूर को आपके भरोसे छोड चुका हू । मुझे विश्वास है, कि आप इस केस को बडी चतुराई से हैण्डल कर सकेंगी । वे बडी व्यग्र और चिन्तातुर है । क्वाइट नेचरल—इतनी उमर के बाद, जब कि उनकी मा बनने की सब आशाए नष्ट हो गई थी, वे मा बनने जा रही हैं । उनके लिए विश्वास करना भी कठिन हो रहा है कि वे सचमुच कभी

मा बन सकेंगी इसलिए दिन-रात सोचती रहती हैं कि कही कुछ हो न जाए ।'

'बिल्कुल स्वाभाविक है मिस्टर कपूर, उनको समझाने का हम प्रयत्न करेगी कि वे बिल्कुल चिन्ता न करे—और आप तो स्वय समझदार हैं हम अपनी चेष्टा मे कोई कमी न रखेंगी, ताकि उनका यहा का निवास सुविधापूर्ण हो, और स्वस्थ होकर अपनी सतान के साथ विदा हो।'

'यही आशा है सिस्टर, किन्तु मैं अपना फर्ज समझता हू कि आपको उनके स्वभाव से परिचित करा दू ताकि गलतफहमी से बचने के साथ ही साथ आप उनकी वास्तविक सहायता भी कर सके ।'

'यस-यस—दिस इज वेरी नेसेसरी !'

'और इसी सम्बन्ध मे यदि मुझे अपना कुछ गत इतिहास बताना पडे, तो आशा है आप मुझे क्षमा कर देगी ।'

'ज़रूर-ज़रूर ।'

मिस्टर कपूर ने कहना शुरू किया

मेरी पत्नी के माता-पिता और मेरे माता-पिता दोनो एक ही गाव के रहने वाले थे और उनमे गहरी दोस्ती भी थी। मेरी ससुराल वाले पहले काफी धनवान थे, मेरी पत्नी उनकी इकलौती सतान है। वह पाच-छः साल की थी तभी हमारा वाग्दान हो गया था । मैं तब पन्द्रह-सोलह का था । पढ़ने के लिए मुझे बाहर शहर चले जाना पडा। इधर मेरे ससुराल वालो की माली अवस्था गिरने लगी, और जब छ वर्ष बाद मैं घर लौटा तो मेरे पिता का इरादा मेरा विवाह कही अन्यत्र कर देने का हो गया था। शायद इसका आभास मेरे पिता ने इनके पिता-माता पर प्रकट भी कर दिया था। उसकी बेचारी मा पर इसका इतना बुरा प्रभाव पड़ा कि वह दो-तीन माह मे ही स्वर्ग सिधार गई। किन्तु मेरी माता इसी कन्या के पक्ष मे थी, और उन्होने मेरे ससुर को सात्वना दी, कि वे किसी तरह मेरे पिता को राजी कर लेंगी। कठिनाई सबसे अधिक मेरी हुई, मुझे अपनी ससुराल वालो के प्रति सहानुभूति हो गई थी। मा ने एक

बार छल से लडकी को भी दिखा दिया था, तब वह किशोरावस्था में ही थी, किन्तु मेरे मन को भा गई थी। परन्तु पिताजी से मैं कुछ कह नही सकता था।

पिताजी विवाह के लिए मुझे परेशान करने लगे, तो मैंने बाहर गांव मे एक अध्यापक की नौकरी करके घर मे पीछा छुडाया। साल-डेढ साल वहा बिताया, पर मन न लगा; घर लौट आना पडा। पिताजी ने इसी बीच किसी दूसरे धनी घराने से मेरे विवाह की बातचीत पक्की कर ली। घर पर मा ने कहा कि बेचारी लडकी अपने भविष्य की चिन्ता और पिता के दुःख मे बीमार हो गई है। मैंने मा को कहा कि मै उनकी आज्ञानुसार उसी लडकी से विवाह करने को तैयार हू। मा ने पिता जी को बहुत समझाया, पर वे नही माने।

दूसरी जगह विवाह करने से बचने का मैंने एक उपाय निकाला। मैंने इजिनियरिंग की उच्च शिक्षा के लिए इग्लैंड जाने की इच्छा व्यक्त की। अपने पहले के प्रोफेसरो से पिता जी पर प्रभाव डलवाया, और वे इसके लिए राजी हो गए। विवाह टल गया।

पाच वर्ष विलायत मे बिताकर घर लौटा, तो पिता भी वृद्ध हो चुके थे, किन्तु यह कन्या तब भी पार्वती की तरह मानो मेरे ही लिए तपस्या किए बैठी रही। लडकी का रूप तब और भी निखर चुका था, यद्यपि उसके मन को मर जाने के यथेष्ट कारण थे। खैर, किसी तरह पिताजी भी अब अधिक बाधा न दे सके, और लम्बी प्रतीक्षा के बाद हम दोनो का विवाह हो गया।

इस सारी खीचतान का इतिहास व्यक्त करने का यही उद्देश्य है कि आप इसके मानसिक सघर्ष को समझ सके। कह चुका हू, अनायास ही इस लडकी से मेरा बहुत अधिक प्रेम हो गया था। जब हम शादी के सूत्र मे बधे तब इसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नही था। मन पर यह अनेक बाधाए झेल चुकी थी। इसे हिस्टीरिया के दौरे पडने लग गए थे। विवाह के कुछ दिन बाद, इसकी अवस्था मे बहुत कुछ सुधार हुआ।

की परीक्षा तो अभी शेष है ही ! मिसेज़ कपूर बडी नर्वस टाइप की है, परिस्थितियो ने उनकी नर्व्स को बिल्कुल ही तोड दिया है । अगर उसकी विशेष परवाह न की गई, तो वह अपने आपको निग्लेक्टेड महसूस कर सकती है, और फिर उसकी खामखयालिया हममे कोई ट्रेजिडी न कर दें । मैं आपको यह सारी बैकग्राउण्ड बता देना अपना फर्ज़ समझता था । हालाकि, अवश्य ही आपको इसमे कोई दिलचस्पी लेने की आवश्यकता न थी ।

पोर्शिया और कमला दोनो ही बडी उत्सुकता से मिस्टर कपूर की कहानी सुन रही थी । कमला कुछ नही बोली, किन्तु उसकी मुखमुद्रा से स्पष्ट था कि उसे मिस्टर कपूर के लिए घनी सहानुभूति हो गई थी ।

पोर्शिया ने कहा, 'वेल मिस्टर कपूर, मैं मनोवैज्ञानिक तो नही हूं, किन्तु जो बैकग्राउण्ड आपने मिसेज़ कपूर की बतलाई है, वह किसी भी नारी को इस हालत मे पहुचा देने के लिए काफी है। यह बडा अच्छा हुआ कि आपने केस का सारा इतिहास हमे बता दिया । इससे हमें मिसेज़ कपूर के साथ व्यवहार करने मे काफी सरलता होगी। जहा तक हमारा वश है, हम मिसेज कपूर को किसी तरह का कष्ट न होने देगे, और मेरा अनुमान है कि इस प्रसव के बाद उनको अपने अभावो की पूर्ति हो गई अनुभव होगी। आइ सपोज़, यूकैन लुक फॉरवार्ड टू ए ब्राइट ऐण्ड हैपी लाइफ देअरापटर' (मैं कल्पना करती हू कि आप उसके बाद एक चमकीले और प्रसन्न जीवन की आशा कर सकते हैं।)

'थैंक्यू वेरी मच, अगर ऐसा कभी सम्भव हुआ, तो वह केवल आपकी कृपा होगी।' और फिर मिस्टर कपूर कमला की ओर मुखातिब हुए, और कहने लगे, 'माफ कीजिएगा कमलादेवी ! आप उनके पडोस मे ही हैं । आप पढी-लिखी और बडी समझदार हैं, आपने इस परिस्थिति को, मालूम देता है, बडे ही सहज भाव से स्वीकार कर लिया है। यह बडी ही खुशी की बात है । आप भी चाहे तो मुझे कृतज्ञ कर सकती हैं । मेरा मतलब है आपको विशेष कष्ट नही दिया जाएगा, खाली आप अपनी

उपस्थिति से ही मिसेज़ कपूर के चारो ओर एक सहानुभूति और साहस के वातावरण का निर्माण कर सकती हैं ।'

कमला ने मुस्कराते हुए कहा, 'मिसेज़ कपूर को हम बहन मानकर सब तरह की सहायता देंगी, आप निश्चित रहिए ! किन्तु मिस्टर कपूर, बुरा न मानें तो एक बात कह दूं ?'

'कहिए न, अवश्य कहिए, बुरा क्यो मानूगा ?'

'मिसेज़ कपूर की अपेक्षा मुझे तो आप ही अधिक चिन्तित दिखाई देते हैं !'

मिस्टर कपूर कुछ लजा-से गए; पोर्शिया हस दी, बोली, 'कमला, मिसेज़ कपूर को चिन्ता है केवल शिशु की, किन्तु मिस्टर कपूर को तो दोनो की चिन्ता है !'

मिस्टर कपूर ने मुस्कराकर शर्माते हुए-से कहा, 'देखिए सिस्टर मुझे मिसेज़ कपूर ही की बहुत चिन्ता है, शिशु का अगर मुझे कुछ ख्याल हुआ भी, तो वह है मिसेज़ कपूर के लिए ! इसलिए कि मिसेज़ कपूर की वह आवश्यकता है ।'

कमला ने आखे नीची करके कहा, 'मिसेज़ कपूर को आप बहुत चाहते हैं ।' और यह कहने के साथ ही पोर्शिया ने देखा कि मिस्टर कपूर की लज्जा तो बढी ही, कमला के चेहरे पर भी सुर्खी दौड गई ।

जवाब पोर्शिया ने दिया, 'बिलकुल स्वाभाविक है कमला ! आखिर विवाह की सार्थकता यही तो है ।'

मिस्टर कपूर ने उठकर कहा, 'मैं चल दिया, मुझे काम पर भी जाना है ।'

और दोनो नारियो को मिस्टर और मिसेज़ कपूर के बारे मे बातें करने के लिए स्वतत्र छोडकर, मिस्टर कपूर बाहर चले गए ।

आखिर वह दिन आ पहुचा, जब कमला ने पुत्र प्रसव किया; कोई विशेष घटना नहीं हुई; सभी बातें सामान्य तौर से निपट गईं । कमला ने अपने आपको आश्चर्यजनक रूप से दृढ रखा, उसने संतान का मुख भी

नही देखा, पोशिया ने कह दिया कि मा के स्वास्थ्य के कारण बच्चे को ऊपर ही का दूध पिलाया जाए, मा की मनोवैज्ञानिक स्थिति को सतुलित और दृढ़ रखने के लिए कम से कम बच्चे को एक-दो दिन मा से बिल्कुल अलग रखा जाए, जब मा की मानसिक स्थिति दृढ़ हो जाएगी, बच्चा मा के पास पहुचा दिया जाएगा! भीतरी व्यवस्था यह थी कि एक-दो दिन देखकर ही बच्चा कॉन्वेण्ट की सिस्टर के सिपुर्द कर दिया जाएगा।

उसी दिन रात्रि को कुछ समय बाद ही मिसेज कपूर के प्रसव की घडी भी आ गई। और मिसेज कपूर ने वह हगामा उपस्थित किया कि सारा आसमान सिर पर आ लगा। प्रसव-पूर्व के दर्द से वे इतनी बेचैन और आशकित-आतकित हो उठीं कि नर्सों को उन्हे सम्हालना भारी पड़ गया! वे कमरे मे पागलो जैसी दौडने लगी, दर्द भी शुरू हुआ था दुपहर के पूर्व। पोशिया को भी चिन्ता हो गई थी, वह हर पाच मिनट मे आकर उन्हे देख जाती—तीन बार डॉक्टर को बुला भेजा था। यद्यपि डॉक्टर ने कह दिया था कि घबराने जैसी कोई बात नही है, किन्तु मिसेज़ कपूर के व्यवहार ने सबको हैरान कर डाला था। मिस्टर कपूर को बुला भेजा गया। वे भी आकर कुछ न कर सके।

एकाएक मिसेज़ कपूर का पैर फर्श पर से फिसल गया, और वे फर्श पर बुरी तरह गिर पडी! डॉक्टर को बुलाया गया। मिसेज़ कपूर बेहोश हो गई थी। ९ घण्टे के अनवरत परिश्रम के बावजूद प्रसव के आसार दिखाई नही देते थे। बडे डॉक्टर को बुलाया गया, परीक्षा के बाद देखा गया कि किसी कारण से गर्भस्थ शिशु की स्वय की कोई क्रिया नही हो रही है। यदि यही अवस्था रही तो गर्भिणी की जान को खतरा है। अतः बडी दुविधा के बाद अस्त्रोपचार द्वारा प्रसव की व्यवस्था की गई। गर्भिणी की जान बच गई, किन्तु गर्भस्थ शिशु को नही बचाया जा सका। कदाचित् वह गर्भिणी के गिरने से ही शेष हो गया था।

डॉक्टर अपना काम करके चले गए, पीछे रह गई पोशिया, और उसकी साथी अन्य नर्सें। मिसेज़ कपूर तब भी अचेत थी, और मिस्टर

कपूर समस्त ससार की निराशा को अपने चेहरे पर पोते हुए एक कोने मे बैठे मिसेज़ कपूर के चेत मे आने की प्रतीक्षा कर रहे थे ।

पोर्शिया ने कहा, 'मिस्टर कपूर ! हमे बडा खेद है, लेकिन शायद हमारे वश मे कुछ नही था ! आपको साहस से काम लेना चाहिए । आइ मीन, इन ए वे, यू आर लकी दैट ऐट लीस्ट द मदर कुड बी सेव्ड्' (आप एक तरह से भाग्यशाली हैं कि कम से कम मा की रक्षा तो की जा सकी ।)

'मैं आप लोगो का कृतज्ञ हू सिस्टर, किन्तु मेरी चिन्ता तो भविष्य के सम्बन्ध मे है । आइ नो, ह्वाट द लॉस आफ द बेबी वुड मीन टु द गर्ल ह्वेन शी कम्स टु हरसेल्फ !' (मैं जानता हू कि उस बच्चे की हानि का उसपर, जब उसे चेत होगा, क्या प्रभाव पडेगा !)

'वाट कैन वी डू ?··'

'कुछ नही !—सोचता हू कि इससे तो उसका स्वय का मर जाना ही बेहतर होता । मैं जानता हू गई बार के मिसकैरेज (गर्भपात) का उसपर क्या मानसिक प्रभाव पडा था ।'

—इतने ही मे एक नर्स ने दौडे आकर कहा कि मिसेज़ कपूर को होश आने लगा है । खबर सुनते ही मिस्टर कपूर का चेहरा और भी लटक गया; किन्तु पोर्शिया भीतर गई ।

मिसेज़ कपूर को वास्तव मे होश आ रहा था, बडे धीमे स्वर म बोली, 'मेरा बच्चा !'

पोर्शिया ने कहा, 'अपने आपको सम्हालिए मिसेज़ कपूर, बच्चा आपका तन्दुरुस्त है, वह अभी नहलाया जा रहा है । तुम उसे कुछ देर बाद देख सकोगी ।'

मिसेज़ कपूर ने आंखें बन्द कर ली, बोली, 'बच्चे के बाप हैं ?'

हैं !'

'उन्हें कुछ कहना चाहती हूं ।'

पोर्शिया बाहर आई, बोली, 'मिसेज़ कपूर आपसे कुछ कहना चाहती

हैं । देखिए, हमने उनसे कहा है कि बच्चा अच्छी तरह है, थोडी देर बाद उसे वे देख सकेंगी । उनकी अवस्था ऐसी नहीं है कि उन्हें शीघ्र ही वह समाचार दे दिया जाए । आप उनसे यही मानकर बात कीजिएगा । आइए, वे अब स्वस्थ होती जा रही हैं ।'

मिस्टर कपूर ने कहा, 'झूठी आशा से क्या लाभ होगा सिस्टर !—इसी बीच वह कितने सोने के काल्पनिक ससार न बना लेगी, और जब उसे उन्हे ही तोड डालना होगा, तो क्या उसका वह दु:ख और भी अधिक भयानक न हो उठेगा ?'

'मिस्टर कपूर, हम लोग निकट के खतरे मे ही पहले जूझना उचित समझते हैं । बाद मे क्या खतरा होगा, होगा या नहीं—यह हमें अधिक कायर बना देता है । आप जाइए, और इसी बात को मन में रखकर उनसे बातचीत कीजिएगा ।'

मिस्टर कपूर बडे अनमने मन से भीतर गए । पलग पर पडी हुई मिसेज़ कपूर के माथे पर उन्होने हाथ रखा, हाथ रखते ही मिसेज़ कपूर ने आखें खोल दी ।

धीरे से वे बोली, 'सुनते हो ?'

'कहो !—कैसी हो तुम ?'

'ठीक ही हू ।—साफ दिखाई नहीं देता, किन्तु तुम्हारा चेहरा इतना उदास क्यो है ?'

'ठीक तो हू ।—तुम्हारी चिन्ता जो है ।'

'मेरी चिन्ता छोड़ो !—मेरा क्या है ?—मेरा कर्तव्य तो पूरा हो गया ! मैं समझती हू मैं बचूगी नहीं...'

'यह क्या कहती हो ?'

'सच ही कहती हू—जैसे कोई मेरे प्राण खीचे जा रहा है । ओह, बड़ी पीडा है ।'

'तुम सो जाओ, अधिक बोलो मत, सोचो मत !'

'नही बोलूगी, नही सोचूगी—परन्तु—मुन्ने को देखा है ?'

'हा देखा है।

'तुम्हारे जैसा ही है न ?'

मिस्टर कपूर चुप !

'देखो, अगर अब मैं मर भी जाऊ तो मुझे अफसोस नही होगा। तुम्हारे प्रेम का प्रतिदान देना चाहती थी, तुम्हारे प्रेम के उपयुक्त होना चाहती थी ...'

'तुम आराम करो न !'

'करूगी—लेकिन यदि मुझे कुछ हो गया तो मेरे मुन्ने की देखभाल करोगे न ?'

कपूर की आखो मे आसू आ गए।

'एक बार नर्स से कहकर ले आओ न मुन्ने को।—यदि मर ही गई तो साध तो बाकी न रहेगी।'

'अच्छा, तुम आराम करो—मैं नर्स से कहता हू।'

और मिस्टर कपूर कमरे से बाहर चले आए।

इधर पोर्शिया का मन बडी तेजी से काम कर रहा था। मिस्टर कपूर के पीठ फेरते ही वह कमला के कमरे मे पहुच गई। थकी हुई कमला कई तरह के काल्पनिक चित्र देखकर, इस समय गहरी नीद मे सो रही थी। पोर्शिया ने आकर उसको जगाना चाहा, परन्तु रुक गई। कुछ देर तक उसने खडी होकर कमला की ओर देखा, एक लम्बी सास ली, और बाहर आ खडी हुई।

मिस्टर कपूर ने पूछा, 'सिस्टर, जिसकी आशका थी, वही हुआ। वह बच्चे को देखना चाहती है। अब क्या होगा ?'

पोर्शिया ने मि० कपूर को कुछ उत्तर नहीं दिया, उसने एक नर्स को इशारा किया। वह एक दूसरे कमरे में गई, और कमला के पुत्र को उठा लाई। पोर्शिया ने कहा '

'ले जाइए; नर्स, यह लड़का मिसेज कपूर के पास लिटा दो।'

'किन्तु यह मिथ्या—इसकी मा''''' मिस्टर कपूर ने तुतलाते-तुतलाते कहा।

'वह मैं देख लूगी।'

'और यदि वह बच्चे को छोडना न चाहे ?'

'तो इसे उनके पास रहने देना।'

'और यदि वह इसे अपना दूध पिलाना चाहे ?'

'आप इसकी चिन्ता न कीजिए मिस्टर कपूर—नर्स जानती है कि उसे क्या करना है ?'

सवेरे जब कमला नींद से उठी, तो उसने निश्चय कर लिया था कि कुछ भी हो जाए, वह अपनी सन्तान को छोड नही सकती ! उसने सबसे पहले पोर्शिया को बुलाने के लिए कहा :

पोर्शिया बेचारी रातभर की जागी हुई किसी तरह आखें बन्द कर अपने कमरे मे आराम कुर्सी पर ही नीद ले रही थी। उसे जगा दिया गया।

पोर्शिया के भीतर आते ही कमला ने कहा, 'मेरा बच्चा कहा है पर्सी, मैं उसे नही छोड सकती, नही छोड सकती।'

पोर्शिया ने कहा, 'कहती क्या है कमला ! तूने उस बच्चे को ...'

'मैंने कुछ भी कहा हो, तब मैं मा का मन नही जानती थी, अब मैं मा हू—पोर्शिया, तुम मेरी भावना को नही समझ सकती। मेरा बच्चा ...'

पोर्शिया ने दृढ कठ से कहा, 'मैंने उसकी व्यवस्था कर दी है।'

'व्यवस्था—क्या व्यवस्था कर दी है ?'—और वह अपने पलग पर उठ बैठी।

पोर्शिया ने कहा, 'कमला तुम्हे उत्तेजित नही होना चाहिए !—सो जाओ—सो जाओ !' और उसने दोनो हाथों से उसके कन्धे पकडकर उसे फिर से लिटा दिया। दूसरी नर्स उसके इशारे से बाहर चली गई।

पोर्शिया ने उसके पास बैठकर उसके सिर पर हाथ फिराते हुए कहा, 'कह कमला, क्या कहना चाहती है अब ?'

'मैं बच्चे के बिना नहीं रह सकती।'

'किन्तु पहले तो तूने कुछ दूसरी ही बात कही थी।'

'मैं पहले खुद ही दूसरी थी, वह मर गई—मैं आज एकदम दूसरी स्त्री हू—मां, केवल मां; मुझे और कुछ नही चाहिए।'

'किन्तु मैंने तो उस लडके की व्यवस्था कर दी है।'

'व्यवस्था ?—क्या व्यवस्था कर दी है ?'

'उसे मैंने एक बहुत अच्छी जगह पहुचा दिया है···'

'कान्वेण्ट मे ही न ?—किन्तु तुमने तो कहा था कि एक सप्ताह तक वह यही तुम्हारी देख-रेख मे रहेगा।'

'मैंने उसकी आवश्यकता नही देखी। फिर एक सुयोग हाथ आ गया—उस समय पीछे हटने से उसे खो देना पडता। उससे बढकर कोई अच्छी व्यवस्था हो नही सकती थी।'

'व्यवस्था ! व्यवस्था! व्यवस्था!—तुम व्यवस्था करने वाली होती कौन हो ?—मैं उसकी मा हू।—मैं चिल्लाऊगी—मेरा बच्चा !—मेरा···'

पोशिया ने कमला के मुह पर हाथ रखकर कहा, 'कमला ! पागल मत बनो !—शांति और धैर्य से काम लो !'

'शांति और धैर्य मुझे नही चाहिए, मुझे मेरा बच्चा चाहिए ! कहा है मेरा बच्चा ?'

'तुम्हारा बच्चा यहीं है, अस्पताल मे है।'

'उसे मगवा दो—उसे मगवा दो बहन—तुम्हारे पाव पडती हू। उसके बिना मैं जिन्दा नहीं रह सकती। वह कहा है ?'—पोशिया ने देखा कि कमला की आखों मे से आंसू बहे चले आ रहे हैं।

पोशिया ने बड़े धैर्य के साथ कहा, 'तुम्हारा बच्चा मिसेज कपूर के कमरे में है। मिस्टर कपूर ने उसे अपना बना लिया है···'

'मिसेज कपूर—वह पगली चुड़ैल—वह मेरे बच्चे को खा जाएगी।' और फिर कमला ने उठ बैठने का प्रयत्न किया, किन्तु पोशिया उसे सम्हाले रही। बोली :

'वह तुम्हारे बच्चे को खाएगी नही कमला, वह उसे अपना बच्चा मानकर बड़ा करेगी···'

'लेकिन ? · '

'तुम नही जानती—उसको एक मृत बच्चा हुआ था। वह पागल हो जाती, उस दुःख से शायद वह मर जाती। मैंने तुम्हारे बच्चे को उसे देकर दो प्राणो की नहीं, तीन प्राणो की रक्षा की है।'

'तीन प्राणो की ?'

'हां—मिसेज़ कपूर की, तुम्हारे बच्चे की, और स्वय तुम्हारी ! ··'

'मेरी ?—मेरी—मुझे मरने दो पोर्शिया—मैं जिन्दा नही रहना चाहती ! मेरे अपराधों की सीमा नही है !'

'मरने से अपराध का प्रायश्चित नहीं होता कमला !'

'लेकिन मेरा बच्चा—मै उसके बिना कैसे जीवित रहूंगी !'

'जैसे अब तक थी !'

'और मा के बिना वह बच्चा कैसे जीवित रहेगा ?'

'मा का अभाव उसे नही होगा। मिसेज़ कपूर कभी नही जानेंगी कि वह बच्चा उनका निज का नही है। इस बात को अभी तक मैं जानती हूं, या मिस्टर कपूर—नही चाहती थी कि तुम भी जानो, किन्तु तुमने मुझे कहने के लिए विवश जो कर दिया है।'

'किन्तु यदि भविष्य मे कभी मिसेज़ कपूर के और संतान हुई ?'

'उसकी आशा नही है कमला !'

कमला बहुत देर तक चुप रही, जाने क्या सोचती रही। आखो से उसकी जल बहता रहा। पोर्शिया ने उसे रोते रहने दिया, शायद उसके मन का भार यो ही कुछ कम हो जाए। बहुत समय जब बीत गया तो कमला ने आखें खोली, और कहा :

'पर्सी, तुम बड़ी निष्ठुर हो।'

'जीवन मे निष्ठुर भी बनना पडता है कमला !—मैं तुम्हारे अन्तर का रहस्य जानना नही चाहती, किन्तु कुछ गहरा सोचोगी, तो पाओगी

कि इस समय की यह क्षणिक निष्ठुरता, कई जीवनो की रक्षा कर सकेगी ! इस समय तुम कमज़ोर हो, उत्तेजना तुम्हारे लिए हितकर नहीं है। पर मैं तुमसे इस बारे में विस्तार के साथ बात कर सकूगी। तुम्हारा लडका यहीं है। एक सप्ताह तक तो यही रहेगा। यदि तुम आखिर सब बातों की विवेचना के बाद भी अपने लडके को छोडना न चाहोगी, तो उसकी व्यवस्था की जा सकेगी। यद्यपि मिसेज़ कपूर की जान का खतरा सामने आ जाएगा, पर कुछ तो करना ही पडेगा ··'

'मिसेज़ कपूर ?'

'हा—अभी उन्हें नही मालूम कि उनकी सतान मरी हुई थी। उनके बचने की आश तब भी नही थी। किन्तु बच्चे ने उनके जीवन मे मानो प्राण फूक दिया है। तुम नही जानती मिस्टर कपूर तुम्हारे निकट कितने कृतज्ञ हैं····'

'मिस्टर कपूर ? वे जानते हैं कि यह मेरा बच्चा है ?'

'जानते हैं कमला—वे खुद आकर अपनी कृतज्ञता जताना चाहते थे !'

'नही पर्सी, नही—मैं उन्हे अपना मुह नही दिखा सकूगी ! वे मन में क्या सोचते होंगे—नहीं-नहीं—उन्हे मेरे पास मत आने देना। मेरा सयम तब बना न रह सकेगा।'

'घबराओ नहीं कमला—जैसा तुम चाहोगी, वही होगा।—हा, तुम्हारे कथन के अनुसार कल ही मैंने मिस्टर नटनागर को खबर भेज दी है कि तुम कुशलपूर्वक हो, किन्तु तुम्हारी सन्तान···'

कमला ने हाथ बढाकर कहा, 'मैं जानती हू पर्सी, उस अमगल शब्द को जीभ पर न लाओ !—और—पर्सी, पर्सी—तुमने क्या किया···'

पोर्शिया भी उसके गले लगकर आंसू बहाने लग गई।

१५

समय कटते देर नहीं लगती। वर्ष-मास-दिन-घटा-मिनट-सेकण्ड आदि के छोटे-छोटे कई विभागो मे हमने उसे काट रखा है। घटा-मिनट-सेकण्ड आदि के परिमाग की प्रतीति व्यक्ति-सापेक्ष्य हो सकती है—व्यक्ति-सापेक्ष्य ही क्यो वह मन-सापेक्ष्य भी हो सकती है, किन्तु तब भी निरपेक्ष समय का प्रवाह प्रत्येक पल आगे बढता ही जाता है, रह जाए पीछे मन, शरीर, सुख, दु ख, गमी, बीमारी, और इन सबसे उत्पन्न मोह कि हमारे दिन नही कटते, या हमे समय ही नहीं मिलता—किन्तु काल के पैर कभी रुकते नही!

कमला को लौटे और अपनी नई नौकरी का कार्य-भार सम्हाले चार माह मे ऊपर हो गए हैं। उसके मन के भी घाव भर चुके हैं; आखिर एक स्वप्न के अलावा वह सब कुछ था ही क्या?—उसकी सार्थकता का प्रमाग ही क्या है?—नटनागर जानते हैं कि कमला को एक मृत सतान उत्पन्न हुई थी, बहुत ही सरल तरीके मे उन्हे छुटकारा मिल गया, कमलनयन को कमला ने विश्वास दिला दिया था कि यहा की लेडी डॉक्टर का निदान ही गलत था। बम्बई जाने पर एक अच्छे अस्पताल मे स्पष्ट हो गया था कि वह सामान्य-सा पेट का एक विकार था—और विकार तो था ही!—कुछ दिनो के पथ्य-सेवन से ही वह मुक्त हो गई थी, और यदि पथ्य-सेवन सफल न होता तो जो एक सामान्य-सा अस्त्रोपचार आवश्यक होता—उसकी भी आवश्यकता न हुई। अविश्वास करने की कमल को आवश्यकता ही क्या थी!—रह गए धर्मप्रकाश!—वे अब यहा से तबदील हो गए हैं, एकदम से थर्ड परसन!—उनके जानने न जानने की कोई कीमत ही नही है। इतने कापुरुष प्रमाणित हो चुके हैं कमला के सम्मुख वे, कि जानकर भी वे अनजाने ही बने रहना पसन्द करेंगे!—रहे हैं सुसराल-पक्ष मे भी कुछ व्यक्ति—एक तो वही अधी

सास जो दूसरो ही की आखो से कुछ देख सकती है, और कुछ घूमर काकी जैसी जो अपनी आखो से दूसरो ही के लिए देखना पसन्द करती है, और वह भी वह जो किसी भी आख वाले को दिखाई न दे। ऐसे प्राणियों की जानकारी और सशय और प्रवाद का मूल्य ही क्या है ?—फिर अब उसे सुसराल जाना ही कहा है ?

क्या वह अपना निज का भी विश्वास कर सकती है ?—क्यो नही कर सकती !--कौन उसकी सतान है ?—उसने आख उठाकर भी तो उसे कभी देखा नही—उसके शरीर का, मन का, भावना का कौन-सा कितना अश वह खोया अनुभव करती है, कि उस अनजाने और अनचाहे अतिथि के ऊपर उसे थोपकर अपने ममत्व का दावा कर सके ! वह पोशिया, वह मिस्टर कपूर, उनकी वह अर्द्धविक्षिप्त, सदारुग्ण पत्नी—स्वय वह सतान सशरीर, किन्तु कौन जानता है ? पोशिया यदि जानती है, तो वह स्वय कानून के निकट दोषी है, मिस्टर कपूर अपनी पत्नी के प्रति उस अपरिचित सतान से भी अधिक सजग हैं, और मिसेज कपूर ?—कमला का ऐश्वर्य चुराकर वह मा बनी मोद मनाती फिरे—कमला का क्या आता जाता है ?—अत· कमला निश्चिन्त है—इस तथ्य को प्रत्येक प्रभात में वह आखें बन्द करके भगवान् की पूजा के बहाने अपने मन मे दुहरा लेती है, और फिर उसका सारा दिन अनवरत कर्म-प्रवाह में निश्चित कट जाता है ।

कटे हाथ का दादू कमला की सेवा मे ही है । कमलनयन ने चेष्टा करके उसकी तैनाती दफ्तर से बदलकर स्कूल मे कर दी है। वह कितना जानता है, कितना नहीं, इसका कमला को पता नहीं । वह कमला के साथ ही बम्बई गया था, किन्तु कमला के प्रसूति-प्रवास के समय वह कटनागर के साथ सेनेटोरियम चला गया था । शरीर के अनुपात मे उसका दिमाग काम नहीं करता । जो दृष्टि में है उसके परे भी कुछ हो सकता है, ऐसी उद्भावना करते उसे देखा नहीं गया । लौटकर जब उसने कमला को अकेले देखा, तो भी उसने कोई प्रश्न नहीं किया

था, फिर भी ऐसा मालूम दिया मानो उसकी आशा को कहीं कुछ आघात लगा है। मालकिन अस्पताल मे जब भरती हुई थी, और उसे सेनेटोरियम के लिए रवाना होना पडा था, तब अवश्य उसने प्रकट किया था कि आकर वह मालकिन से मुहमागा इनाम पाएगा, किन्तु फिर उसने उसकी चर्चा ही नही छेड़ी। मानो कुछ हुआ ही नही था।

उसकी आशा के अनुकूल यदि मालकिन दुःखित दिखाई देती, तो वह भी अवश्य ही बहुत अधिक दुःखित होता, और मालकिन को सुखी देखने के लिए क्या न कर गुजरता; किन्तु जब मालकिन के चेहरे पर ऐसी किसी भी प्रकार की छाया नही दिखाई दी, तो उसे मालकिन पर मानो कुछ क्रोध हो आया, किन्तु एकाध बार ही—उसके मन का प्रवाह ऐसी ढालू जमीन पर बहता है कि न तो कूडे-कर्कट को, न मुक्ता-माणिक्य ही को कही अटके रहकर कुछ प्रभाव पैदा करने का साहस होता है! जो हो, दादू को अब उतना अधिक काम नही करना पड़ता; और सदैव ही मालकिन की सेवा उसे आवश्यकता से अधिक ताज़ा बनाए रखती है।

कमल पुन आकाश का चाद पा गया है। कितने दिन उसे और यहा रहना है, यह तो वह नही जानता, किन्तु अब तक जो वह यहा रह चुका है, वही कम नही है। यही नहीं, इस माह के अन्त मे सारा दफ्तर यहा से चला जा रहा है, लगभग सभी क्लर्क यहा से कागज़-पत्र के साथ ही रवाना हो जाएगे। तब भी, कमल को यहा कुछ अवधि तक रहकर क्षेत्रीय कार्यालय से तालमेल बनाए रखना होगा। और उसके बाद सवेतन, अर्द्धवेतन पर उसका जितना अवकाश बाकी है, वह काफी है, उसका ध्यान करने भर से वह एक तृप्ति का अनुभव करता है। अब तो उसका प्रतिद्वन्द्वी धर्मप्रकाश भी यहा नही है। बस वह है और है कमला। समस्त प्राचीन के सस्कारो को धो-पोछकर! दोनो एक दूसरे में खूब मगन हैं।

किन्तु अन्त किसका नही है?—यदि भावना सुख की हो तो उसके

अन्त की उद्भावना और भी समीप होती है। कमल और कमला के निर्द्वन्द्व स्वच्छ समारोह के दीपक का अवसान भी आया, और श्रीमान् नरवरोत्तम नारायण नटनागर उर्फ एन्-क्यूब भटनागर सेनेटोरियम मे आरोग्य-लाभ का अपना कार्यकाल नि.शेष करके जीवन की क्रूर-कठिन वास्तविकताओ से सघर्ष करने के लिए लगभग डेढ वर्ष की अनुपस्थिति के बाद पुनः एक प्रात काल सशरीर वहा पर उपस्थित हो गए। आने के पहले उन्होने बाकायदा अपने शुभागमन की सूचना का तार प्रेषित कर दिया था, अत आते ही उन्हे किसी नाटकीय दृश्य को देखने का सुयोग नहीं मिला, किन्तु जीवन ही जब नाटक हो तो ऐसे दृश्यो का अभाव ही क्या है ?

भटनागर के जाने के पूर्व जो एक प्रधान कार्यालय था, वह उनके लौटने पर एक सामान्य-सा कार्यालय भी नही रहकर कैसे केवल एक व्यक्ति—कमलनयन जोशी में सिमटकर शून्यवत होना चाह रहा था इसे यदि भटनागर ने आखो से देखे बिना विश्वास न किया हो, तो आश्चर्य की बात नही है। फिर भी कमला के द्वारा उन्हे समस्त वस्तुस्थिति का पता पहले ही लग चुका था। आने के दो-तीन दिन बाद ही एक दिन जब कमला स्कूल चली गई थी, नटनागर ने कमल को घर पर ही बुला भेजा।

नटनागर ने कहा, 'कमल, मैं ड्यूटी जॉइन करना चाहता हू!'

'अभी ?—मेरा तो ख्याल है आप कुछ थोडा यहा रहकर विश्राम कर लेते !'

—वही १८०° डिग्री का कोण बनाकर उनके ओठों ने बिना कारण ही हंसकर कहा, 'विश्राम तो काफी कर चुका हू। अठारह महीने कम नहीं होते। रहा स्वास्थ्य, सो पहले जैसा तो चिर विश्राम के बाद ही बन सकता है, पर वैसे अब विशेष तो कमजोरी मैं अनुभव नहीं करता।'

'सो तो ठीक है—पर घर छोड़कर बाहर रहने जैसी अवस्था....'

'घर छोड़कर बाहर रहना ?—क्या मतलब ?'

'मतलब—यानी आप अभी बाहर—मेरा मतलब है बम्बई अकेले कैसे रहेंगे ?'

'बम्बई क्यों ?—मैं तो यहा जॉइन करूंगा ?'

'यहां ?—समझा नहीं भाई साहब !'

'इसमें समझने की बात ही क्या है !—मैंने अवकाश यहां से लब्ध किया था, अवकाश की समाप्ति पर मुझे यही पर जॉइन करना चाहिए। मैं तुमसे सीनियर हू, अपना चार्ज मुझे दे दो।'

'सीनियर आप जरूर हैं, और देने को वैसे चार्ज है ही क्या ! किन्तु ··'

'किन्तु क्या !—जब तक तुम्हे नया आदेश नहीं मिले, यू विल वर्क अण्डर मी ! (तुम मेरे मातहत काम करोगे !)'

कमल ने मुस्कराकर कहा, 'आपके अण्डर (मातहती) मे तो मैं सदैव ही काम करता रहा हू, पर यहा पर जिस आदमी को उन्होंने तैनात किया है, वह मेरी ही ग्रेड का होना चाहिए। आपकी ग्रेड और पोस्ट तो उन्होने बम्बई बदल दी है !—इसलिए आपको वही जॉइन करना चाहिए।'

'पोस्ट उन्होने ट्रासफर की होगी, मुझे तो उन्होने नही किया !···'

'मेरी समझ मे तो नही आया भाई साहब !'

'इसमे समझने की क्या बात है !—इट्स वेरी क्लीयर (बडी साफ बात है !) मैं तुमसे सीनियर हू ! अपनी रिस्पोन्सीबिलीटीज़ (जिम्मेदारियो) को खूब समझता हू ! यू कैरी आउट व्हॉट आइ से !' (मैं जो कहता हू, उसका पालन करो !)

'माफ कीजिएगा, मैं आपके दृष्टिकोण से सहमत नही हू।'

'इसमे सहमति का प्रश्न ही नही है कमल, उसके औचित्य का भार मुझपर छोड दो, मैं उसके लिए उत्तर दूगा, तुम जो मैं कहता हू वह करो। विशेष कुछ नही—एक रिपोर्ट तो मेरे रिजम्प्शन (कर्त्तव्यभार ग्रहण) की टाइप कर दो, मैं हस्ताक्षर कर दूगा, और एक फॉर्मल

(औपचारिक) पत्र, जिसमें यह लिखा हो, कि हम लोगो ने आज पूर्वाद्ध मे चार्ज सम्हाल लिया और सम्हला दिया है। हम दोनों उसपर हस्ताक्षर कर देंगे !—ऐण्ड यू विल कन्टीन्यू टु वर्क एज ह्विदर्टूफोअर !' (और तुम पूर्ववत् काम करते रहोगे !)

'मुझे माफ कीजिए ! यदि आप मुझे लिखकर दे देंगे, तो मैं उसे अपने नोट के साथ आगे भेज दूगा। बिना प्रधान कार्यालय के आदेश के मैं अपना चार्ज किसीको नही दूगा।'

'किन्तु मैं जब अवकाश पर गया था, तब तो चार्ज तुम्हें ही दे गया था ?'

'जिस आदेश के द्वारा मैंने आपसे वह चार्ज लिया था, उसीके द्वारा वह दूसरो को मैंने सम्हाल दिया है। इस समय मेरे पास जो भार है, वह आपका नहीं है !'

'मैंने प्रधान कार्यालय को यहा आने के पहले ही यह लिख दिया है, कि मैं यहा रिज्यूम करना चाहता हू।'

'वहां से इसका कोई उत्तर मिला आपको ?'

'लिखित उत्तर वे कुछ ही दिनो मे भेजने के लिए कह रहे थे।'

'तो उत्तर आ जाने दीजिए ! किन्तु क्या आप यह लोअर ग्रेड (छोटी ग्रेड) स्वीकार कर लेंगे !'

'नहीं। मैंने स्पेशल कन्सीडरेशन (विशेष विचार) के लिए आवेदन किया है। मेरी पत्नी यहां पर पोस्टेड (मुकीम) है, अपने स्वास्थ्य की इस अवस्था मे मैं बाहर कैसे रह सकता हूं ? इस विषय में मैं इनफार्मली (अनौपचारिक) बातचीत भी कर चुका हूं।'

कुछ देर तक विचारमग्न रहकर कमल ने कहा, 'देखिए, मेरी स्थिति बड़ी नाजुक है। आप नाराज न होइएगा। मैं खुद ही आज सारी परिस्थिति लिख भेजता हूं। दो-चार दिन में कुछ आदेश आ ही जाएगा। फिर मुझे क्या विरोध हो सकता है ? तब तक यदि आप कुछ लिखकर दे दें, तो मुझे रिपोर्ट करने का आधार मिल जाएगा। आप कहें तो मैं

ही आपकी ओर से एक पिटीशन (प्रार्थना-पत्र) लिख दू, आप हस्ताक्षर कर दीजिएगा।'

किन्तु नटनागर ने अपने जूनियर क्लर्क को अपना प्रार्थना-पत्र देना, अपने योग्य न समझा। उन्होंने अपनी अर्जी सीधे प्रधान कार्यालय को भेज दी।

कमल और कमला की मुलाकातें अब संक्षिप्ततर होती जा रही थी, यद्यपि कमला ने आगे इण्टरमीजिएट के अध्ययन के लिए कमल से पुनः पढ़ना प्रारम्भ कर दिया था, किन्तु नटनागर को कोई काम न था, सध्या को वे भी गुरु-शिष्य के पठन-पाठन मे योग देने आ बैठते थे। शायद अनुभव का एक धक्का खाकर वे कमला की गतिविधि भी नियन्त्रित करना चाहते हो। सध्या को पढ़ाते समय कमल ने कागज का एक टुकड़ा नटनागर की दृष्टि बचाकर कमला के हाथ मे थमा दिया—'बहुत आवश्यक चर्चा करनी है, रात्रि को कमल कमला की प्रतीक्षा करेगा।'

एक पद्यांश का भावार्थ लिखते हुए उसने लिखा, 'रात को उन्हे नीद बहुत कम आती है। कल दफ्तर के टाइम मे किसी समय स्कूल मे आकर मिल लेना।'

वाक्य-रचना की त्रुटि बताते हुए उसने लिखा कि कल एक बार दादू को दफ्तर मे भेज देना, वह कुछ व्यवस्था कर देगा।

दूसरे दिन उसने दादू के हाथ एक पुडिया भेजी और लिखा कि पीने के पानी में मिलाकर पिलाने से खूब गहरी नीद आ जाएगी, और पानी का रंग या स्वाद बिल्कुल नही बदलेगा। वह कमला की रात को बारह बजे तक राह देखेगा।

संध्या को कमला ने अपनी नोट-बुक मे लिखा कि गहरी नीद का खतरा कमल चाहे जितना चाहे, वह नही ले सकती। कमल ने अपने प्यार की कसम देकर विश्वास दिलाना चाहा कि वह केवल अनिद्रा की ओषधि है, और सभी डॉक्टर उसका उपयोग करते हैं। कमला ने लिखा कि आज रात वह स्वयं अपने ऊपर परीक्षा करेगी, यदि सफल हुई तो

कल दूसरा भाग भटनागर पर प्रयोग करेगी। एक रात की प्रतीक्षा कमल को खटकी तो पर उसे स्वीकार करने के सिवा कोई चारा न था।

किन्तु कमला ने उसी रात को बारह बजे जाकर जब कमल के दरवाज़े को धीरे से थपथपाया, तो कमल सो रहा था। सामने अपने घर के बरामदे मे दादू लेटा हुआ सोने का बहाना किए आश्चर्य के साथ अपनी मालकिन का नैश विहार देख रहा था। आवाज़ सुनकर कोई जाग न जाए, इसलिए कमला ने बगल की खिडकी पर जाकर धीरे से कमल को आवाज़ दी। कमल जाग गया।

दूसरे दिन कमला जैसे ही चाय लेकर उपस्थित हुई, नटनागर ने उसके चेहरे की ओर देखकर कहा, 'क्या बात है डार्लिंग, चेहरा उतरा हुआ क्यो ? आखे सूखी-सूखी सी''' '

'कहा ?'

'मेरी आखो से देखोगी तो पता लगेगा। अपनी आखो से न अपना रूप देखा जा सकता है न विद्रूप। क्या रात को नीद नही आई ? और उन्होने चाय को अधरो पर लगा लिया।

'वाकई नही आई !'

'पर रात तो तुम जल्दी ही सो गई थी ?'

'शायद इसीलिए हो ! बारह बजे एकाएक कोई सपना देखकर उठ बैठी, बस फिर पाच बजे तक घडी की टिकटिक सुनने के सिवा और कुछ किया ही नही जा सका। इसीलिए तो अभी सोकर उठी हू। हा, चाय दादू ने बनाई है, इसलिए यदि कुछ नुक्स हो तो नाराज़ नहीं हो सकोगे।'

'नाराज़ ? बल्कि कहता हू, चाय तुम्हारा दादू ही क्यों नहीं बनाया करे ! तुम्हें कुछ तो आराम मिलेगा।'

'सो कैसे हो सकता है ? मुझे सुख किसमे मिलता है, यह मैं जानती हू। सुख के सामने आराम की कोई कीमत नहीं है।'

'सो तो है, किन्तु डार्लिंग, एक बात जानती हो ?'

'कहो !'

'तुम रात को ठीक तरह सो नहीं सकी, किन्तु रात को मैं तो खूब सोया। ऐसा सोया कि कभी कोई कह ही नही सकता कि मैं अनिद्रा का शिकार हू। तुमसे कहा नही, सेनेटोरियम मे जब मुझे रात को किसी तरह भी नींद नही आती थी, तो मुझे कुछ हेल की मदिरा पिला दिया करते थे। उससे नींद तो आ जाती थी, किन्तु दिन भर आलस घेरे रहता था। यहा उस आदत को शुरू करना नहीं चाहता था, किन्तु कल मन ऐसा शिथिल हो गया था कि मन हुआ कुछ थोडी ले ही लू। लेकिन रात की नीद से तो ऐसा मालूम पडता है कि अब मुझे उसे छूने की जरूरत हा नही है।'

'यह तो बडा अच्छा है, किन्तु कल मन शिथिल क्यों हो गया था ?'

'शिथिलता तो आज भी अनुभव हो रही है, वैसे ही जैसी कि पूर्व रात्रि मे मदिरापान के बाद ! किन्तु कल की शिथिलता कुछ अलग थी....'

'अलग कैसी ?'

'यो तो विशेष कुछ नही। कल तुम तो स्कूल चली गई थी, मैंने कमल को बुला भेजा था।'

'कमल बाबू को ! क्या मेरे अध्ययन के सम्बन्ध मे ?'

हसकर नटनागर ने कहा, 'नहीं ! अपने ही सम्बन्ध मे। कमल से मुझे यह आशा न थी !'

'क्या ? क्या किया ऐसा उन्होंने !'

'मैं जब छुट्टी पर गया था तो उसे चार्ज देकर गया था, वापस मुझे चार्ज देने से उसने इनकार कर दिया।'

'कारण क्या बतलाया ?'

'कारण क्या, यही कि वह जब तक अधिकारियो का आदेश न पाए, मुझे चार्ज वापस न देगा।'

'शायद उनके पास ऐसे आदेश हो !'

'यानी कि, मुझे चार्ज न दे !'

'हो सकता है ऐसा ही हो कि जब तक उन्हे नया आदेश न मिले, किसी दूसरे को चार्ज न दें। किन्तु डार्लिंग, यह तो छोटे क्लर्क की पोस्ट है, तुम तो प्रधान क्लर्क थे।'

'मेरी ग्रेड और स्टेटस (स्थिति) तो सुरक्षित है। किसी पोस्ट पर काम करने से उनमे कोइ अन्तर नही आ सकता। विशेष कावेनण्ट द्वारा स्टेट के कर्मचारियो को यह आश्वासन दिया गया है!'

'तो अब क्या होगा!'

'होना-हवाना क्या है?—कल मैंने एक एक्सप्रेस लेटर हेड आफिस को भेज दिया है। दो-तीन दिन मे आर्डर्स आ जाएगे।'

'किस तरह के?'

'कि यहा का चार्ज मुझे दे दिया जाए और कमल को बम्बई या और कही क्षेत्रीय कार्यालय मे ट्रान्स्फर कर दिया जाए।'

'यह तो बहुत बुरा होगा।'

'क्यो?'

'कमल बाबू को जाना पडेगा?—मेरी पढ़ाई का क्या होगा?'

नटनागर बाबू ने दोनो गाल फुलाकर हसी का फुव्वारा छोड़ दिया, बोले, 'खूब हो मेरी रानी, तुम भी!—कमल न होगा तो क्या तुम्हारी पढाई रह जाएगी?—अरे, मैं खुद तुम्हें क्या, कमल तक को पढ़ा सकता हू, परीक्षा नहीं दी बस यही तो बात है?—लेकिन फिर भी यदि कमल मेरी बात मान लेता तो सम्भव है कि वह यहीं रह जाता।'

'सो कैसे?'

'मैंने कहा था कि चार्ज मुझे दे दें, और मेरे हाथ नीचे काम करे। मैं रिपोर्ट कर देता और इसके लिए जस्टिफिकेशन भी दे देता कि यहा पर एक सहायक लेखक की जरूरत है ही।'

'तो फिर अब?'

'जो कुछ हो।—रहा तुम्हारे अध्ययन का, सो ऐसे अनेक कमल की व्यवस्था हो सकती है। डोण्ट यू वरी (तुम चिन्ता न करो)—अच्छा,

एक प्याला चाय तो और दो ।'

आठ-दस दिन और जब नटनागर के आवेदन का उत्तर न आया तो उन्होंने एक और स्मरण-पत्र भेज दिया, फिर दूसरा, और जब तीसरा स्मरण-पत्र भेजने की वे तैयारी कर ही रहे थे कि वहा से आदेश मिल गया कि अब यहां पर किसी लेखक को रहने की आवश्यकता नही है। नटनागर बाबू प्रधान कार्यालय मे जाकर ड्यूटी जॉइन करें और कमलनयन जोशी क्षेत्रीय कार्यालय में।

आदेश पाते ही कमलनयन ने सभी सम्बन्धित कागज-पत्रों को उसी दिन डाक द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय में भेज दिया, उसके साथ ही उसने सवेतन अवकाश की अर्जी भी भेज दी। एक तरह से वह खुश ही हुआ, क्योंकि यो भी अब तक उसे वहा से अपना कारोबार समेट लेना था—अब सब झंझट से छुट्टी मिल गई और यदि नटनागर बाबू को अधिक अवकाश पर न रहना हो, तो उन्हे भी कमला को यही छोडना पडेगा—और अधिक अवकाश पर वे रह नही सकते—मेडिकल सर्टीफिकेट की व्यवस्था करनी पडेगी, और यह हो भी जाए तो भी बिना वेतन पाए पलंग तोडते रहने जैसी मनोदशा उनकी नही है।

सच ही कमला को पीछे छोड़कर मिस्टर एन्-क्यूब अटनागर ने जाने का निश्चय कर लिया, और इस निश्चय की सूचना भी यथासाध्य सभी तरफ उन्होंने प्रचारित-प्रसारित कर दी।

विदाई-समारोह सभी अफसरो को दिए गए थे। नटनागर उस समय मौजूद न थे, किन्तु खबर तो उन्हे सब ओर से मिल ही गई थी। अफसर से वे भी कम नहीं, और अब तो प्रधान कार्यालय मे जा रहे हैं। वही से सबके भाग्य की डोर हिलाई जाती है। नटनागर बाबू पर्सनेल (नियुक्ति) विभाग के सदस्य हैं, बहुत सम्भव है कि वहा पर उन्हे मुख्य लेखक का स्थान मिल जाए; कुछ भी हो, उनको अपनी तिकड़म तथा लेखन से लगाकर कर्मचारियों के बिस्तर तक गोल कर देने तथा हर चीज को गोलमाल कर देने की क्षमता पर पूरा विश्वास है, जिसके बल पर वे

प्रधान लेखक ही को नही अधिकारियो तक को गोल कर सकते हैं। अग उन्हे भी विदाई-समारोह तो मिलना ही चाहिए।

किन्तु विदाई-समारोह देने वाले तो पहले ही वहा से गोल हो चुके थे। रह गया केवल कमलनयन जोशी, और स्टोर्स विभाग के जाते हुए नक्शे-कदम को धो-पोछकर साफ कर देने के भार से लैस मै—इसलिए कि मै अपना त्याग-पत्र इसी शर्त पर रोके हुए था कि मुझे यहा से अभी तदबील नही किया जाए। नटनागर के पुनीत इरादे की सूचना मुझे भी मिल चुकी थी, किन्तु किसीको विदाई-समारोह देने जैसा उत्साह मुझमे नही था—विशेषकर नटनागर महाशय मुझे फूटी आखो देखना पसद नही करते थे। यो मै उनके लौटने पर एक बार उनकी मिजाजपुर्सी के बहाने श्रीमती कमला नटनागर का आतिथ्य ग्रहण कर आया था।

सो, ले देकर रह गया कमलनयन जोशी, नटनागर का पुराना शागिर्द। उसने एक दावत आखिर दी ही। मेहमान बने श्रीमान् और श्रीमती नटनागर और श्रीमती-विहीन मै, श्रीमती नटनागर के स्कूल की प्रधान अध्यापिका मिसेज स्मिथ तथा एक मिस्टर शर्मा, फोटोग्राफर। सारी पार्टी निहायत इन्फार्मल, ढग हिन्दुस्तानी—अग्रेजी मिक्सड। स्थान चुना गया रियासत का एक होटल जो पहले केवल रियासती मेहमानो के लिए था, किन्तु अब रियासतो के विलयन के बाद ही से जन-साधारण के लिए सुलभ हो गया था।

टेबल के छोर पर आमने-सामने मैं और मिस्टर शर्मा फोटोग्राफर, मेरी दाहिनी ओर बाजू मे मिसेज भटनागर, उनके बाद कमलनयन जोशी, दूसरे बाजू मे मिस्टर नटनागर, उनके बाद मिसेस स्मिथ।

मिसेज स्मिथ एक हिन्दुस्तानी ईसाई महिला हैं, जिनके पहले पति, एक इजिन ड्राइवर, किसी दुर्घटना मे मारे गए थे। रग जैसा कि होना चाहिए था, वैसा ही था, किन्तु पढ़ी-लिखी सामान्य रूप से अच्छी है। बाइबिल पढ लेती थीं, प्रति रविवार को गिरजा जाती थी, अन्य ईसाइयो मे जिनमें अग्रेज, एग्लो-इडियन आदि भी थे, मेल-मुरव्वत होने से रग का

भी सत्कार होने लग गया था। अतः जब मिस्टर स्मिथ दुर्घटना के शिकार हो गए, तो तत्कालीन अंग्रेज महा व्यवस्थापक ने इन्हें रेलवे स्कूल में अध्यापिका बना दिया था। अब जब स्कूल का विकास किया गया, और मिसेज़ भटनागर की नई नियुक्ति की गई, तो यद्यपि कमला, मिसेज़ स्मिथ से अधिक पढ़ी हुई है, किन्तु वरिष्ठता (सिनिओरिटी) के कारण प्रधान पद मिसेज स्मिथ ही को मिला। मिसेज़ स्मिथ यो उमर मे शायद चालीस के आसपास हो किन्तु दीखती अभी भी पच्चीस के आसपास हैं। कुछ दिनो से उनके चेहरे पर पाउडर और रूज का रग घना होता जाता देखा जा रहा है, परिधान मे भी विशेष सज्जा, गति में अधिक चाचल्य, पैरो मे हलकापन, मन मे छल के द्वारा पकड़ी हुई सरलता जिससे जबर्दस्ती भोलेपन का अभिनय कराया जा रहा हो—सुनते हैं कि मिसेज़ स्मिथ शीघ्र ही मिसेज रॉब्सन होने वाली है। मिस्टर रॉब्सन कारखाने मे फोरमन थे। कारखाना अब क्षेत्रीय कार्यालय के कारखाने से सयुक्त कर दिया गया है। अत: अपने सम्बन्ध को अब वैधानिक रूप देने की उन्हे आवश्यकता पड़ गई है।

मिस्टर शर्मा के परिचय के लिए आप शायद ही उत्सुक हो। फोटोग्राफर कह देने से बहुत कुछ काम परिचय का चल ही जाता है। इससे अधिक फोटोग्राफर के बारे में जानने की उत्सुकता प्राय. नही ही होती। उनके निमत्रित किए जाने की सार्थकता भी उतनी ही स्पष्ट है।

मिसेज़ स्मिथ को निमन्त्रण दिया गया था, मिसेज़ नटनागर के दृष्टिकोण से; मैं प्रतिनिधित्व करता था हमारे भूतपूर्व प्रधान कार्यालय का। कमलनयन था मेज़बान; मेहमान थे ही श्रीमान् नरवरोत्तम नारायण नटनागर! पार्टी का रग जमने लगा। प्रारम्भ हुआ आपानको से। मैं टोमैटो स्क्वैश का गिलास लेकर बैठा, मिस्टर नटनागर तथा शर्मा ने बीयर से प्रारम्भ किया, अन्त कहा किया इसका लेखा-जोखा मैं नही रख सका। कमल को मेहमानदारी मे बीयर तो पीनी ही पड़ी। मिसेज़ स्मिथ मिस्टर शर्मा के आग्रह पर सब कुछ पीने लग गईं, मिसेज़ नटनागर ने

अपने आपको बचाए रखा !

फिर प्रारम्भ हुआ डिनर ! सफेदपोश नौकर चीनी के बरतनो मे एक के बाद एक कई प्रकार की सामग्रिया लाने लगे । मैं, कमल और मिसेज नटनागर निरामिष भोजी, अन्य सभी सामिष भोजी—पार्टी रग लाने लगी !

नटनागर ने मुझसे पूछा कि हमारा विभाग कब गोल हो रहा है ।

मैंने कहा, 'गोल तो हो गया, केवल लादना बाकी है !—वह कब होगा, सो कुछ मेरी सुविधा पर और कुछ मेरे विभाग की सुविधा पर निर्भर करता है ।'

'यानी आपका मतलब है, जब आपको विभागीय आदेश प्राप्त होगा ?'

'अशत ।'

'यानी ?'

'यानी यही कि यदि मै चाहू तो मै भी इसमे जल्दी कर सकता हू ।'

'उनके आदेश की प्रतीक्षा किए बिना ?'

'उनके आदेश की प्रतीक्षा करने का आदेश तो मुझे नही है !' मैंने कुछ मुस्कराकर कहा । मैं देख रहा था कि किस तरह मिस्टर नटनागर मेरे अधिकारो के प्रति तुच्छता का भाव दिखाना चाह रहे थे । टेढी दृष्टि से देखा, कमलनयन भी मुस्करा रहा है ।

मिस्टर नटनागर ने उपदेश देना चाहा, 'आप शायद प्रधान कार्यालय की चालबाजियो को नही जानते—आपको कोई अधिकार अपने हाथ मे नही लेने चाहिए ।'

'अधिकारो को मै हाथ लगाता ही नही, परन्तु जब हाथ नही लगाया जाता, तो वे पैरों के पास पडे रहते हैं, शिकायत यही है कि मैं उनका उपयोग नही करता ।'

नटनागर ने चट से पहलू बदला, 'यही तो, अधिकारो का उपयोग बूमरैंग है, बूमरैंग ! दुतरफा हथियार । यदि सामने उसने किसीको 'हिट'

किया तो वह फेंकने वाले को भी 'हिट' कर सकता है।'

'समझ लीजिए, इसीलिए मैं उसका उपयोग ही नहीं करता।'

'पर तब काम कैसे चलता है?'

'वह भी चल ही जाता है!—लोग यदि कर्तव्य का भी ध्यान रखें तो अधिकारों के प्रयोग की बात न भी उठे।'

'लेकिन योग्यता-अयोग्यता का इम्प्रेशन (प्रभाव) पैदा करने का यही मौका है। यदि भविष्य बनाना हो ··'

कमल ने आखिर बात काटी, और कहा, 'भाई साहिब, इन्होंने तो कंडीशनल रेज़िग्नेशन (सशर्त त्यागपत्र) दे रखा है। यहा से यदि इन्हें बाहर जाना पड़ा, तो वह त्यागपत्र कारगर समझा जाएगा!····'

नटनागर ने कहा, 'और एडमिनिस्ट्रेशन ने इस शर्त को मंजूर कर लिया?'

मैंने कहा, 'क्या करू मिस्टर नटनागर? वे मुझे छोड़ना नहीं चाहते।'

मानो उन्होने मेरी बात नही सुनी, बोले, 'ओह, तो इसलिए आप जान-बूझकर डिस्पेचेस मे देरी कर रहे हैं?'

'देरी तो कर रहा हू, और जानबूझकर भी—पर मजबूर जो हू, उन्होने लिख दिया कि वहा गोदाम मे जगह नही है, और सामान यहां से चला भी गया, तो मुझे तब तक छुट्टी नहीं मिलेगी जब तक कि सामान वहा पुस्तको पर नहीं ले लिया जाता। वहा चौकीदारो का भी प्रबन्ध नहीं है, इसलिए सामान अभी यहा रहने दिया जाए।'

तब कमला ने कहा, 'क्या रेलवे की बातें करने के सिवा और कुछ बात ही नहीं है? यह तो आप लोग जीवनभर ही करते रह सकते हैं। देखिए मिस्टर शर्मा को और मिसेज़ स्मिथ को इन बातों मे कोई रस ही नहीं मिल पा रहा है।'

मैंने मुस्कराकर कहा, 'इससे इन्हे भोजन मे अधिक रस प्राप्त करने का भी तो अवसर मिल गया है।'

उसके बाद कुछ देर जब फोटोग्राफी के बारे मे बात चली तो मिस्टर नटनागर तथा कमल का उत्साह वही तक रह सका, जहा तक उनके फोटोग्राफ लेने की बात थी। शिक्षा तथा शिक्षालय का विषय भी कुछ ही देर चलकर बासी और उत्साहहीन हो गया।

कुछ खयाल न रहा जाने कैसे बातचीत नर-नारी के अनादि और अनन्त विषय पर चल पडी। कमला देवी ने पूछा, 'पुरुष और स्त्री, दोनो में से श्रेष्ठ कौन है ?'

जाने क्यो, सभी लोगो ने समझा कि प्रश्न मुझीसे किया गया है, यद्यपि मैंने यही समझा कि और चाहे जिससे यह प्रश्न किया गया हो, मुझसे नहीं किया गया है, और मैं उत्तर सुनने को कान बिछाए, चक्षु और हाथो को काटे-छुरी और भोज्य-सामग्री पर जुटाए रहा।

कुछ देर की चुप्पी के बाद मिसेज़ नटनागर ने दुहराया, 'कहिए, क्या सोचते हैं आप ?'

मैंने कहा, 'मुझसे कह रही हैं ?'

आंखें मिलते ही कमला देवी ने आखें नीची कर ली, और कहा, 'आपसे भी, और सभी से भी।'

मैंने कहा, 'प्रश्न मैं ठीक तरह से समझा नही ! फिर यदि प्रश्न सभी से है तो उन्हें भी उत्तर देने दीजिए, शायद प्रश्न का आशय समझ जाऊ।'

नटनागर ने शीघ्र ही कहा, 'ऐसा कठिन प्रश्न मे है क्या ?—मैं कहता हू, स्त्री पुरुष की अपेक्षा श्रेष्ठ दीखती है, पर है नहीं।'

मिसेज़ स्मिथ ने कहा, 'इसका कुछ कारण भी तो होगा !'

'हां-हा, एक नहीं, अनेक हैं। पहला तो यही कि उसे प्रसाधन की अपेक्षा रहती है। किसी सुन्दर से सुन्दर महिला को भी देख लीजिए, बिना 'कॉस्मेटिक्स' के किसी समाज मे जा सकती है ?—अपने स्वय में ही अपने सौंदर्य के प्रति उसमे आस्था नहीं !'

मिसेज़ स्मिथ यों लजातीं नहीं, किन्तु आज जाने क्यों उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। बोले मिस्टर शर्मा :

'देखिए, जहा सौंदर्य की बात चली है, चुप रहने की मुझसे आशा नहीं की जानी चाहिए। मैं फोटोग्राफर हू, और सौंदर्य को पकड़ रखना ही मेरा जीवन है। कॉस्मेटिक्स के प्रयोग का जहा तक सवाल है, मैं समझता हू, यह सौंदर्य को बढाने-घटाने के महत्व से कोई सम्बन्ध नहीं रखता, यह तो सिर्फ उसको पेश करने का एक तरीका है। हम किसी गाव की निराभरण किसान कन्या की हवा मे ऊचाई से अनाज साफ करती हुई उभरे वक्ष की श्याम छवि पर भी उसी गहराई से मुग्ध हो जाते हैं, जिस गहराई से किसी रूज-पाउडर-लिपस्टिक-आच्छन्न गौर-मुख काति पर। बल्कि घूघट का जादू भी नारी के चेहरे पर वही करिश्मा करता है जो किसी शो-रूम के प्रकाश-उत्स को ढाक रखने वाले कई तरह के प्रयत्न किया करते हैं। प्रकाश-रश्मि को बाहर से बचाकर वस्तु के प्रकाश को अत्यधिक उज्ज्वल रेखा मे प्रस्तुत करने के लिए मैं कैमरे पर भी काले कपडे के घने घूघट का प्रयोग करता हू—यह तो आप सभी जानते हैं।'

मिसेज नटनागर ने मुस्कराते हुए कहा, 'मिसेज़ स्मिथ, आप कहिए न ?'

'अभी मिस्टर नटनागर का कथन कहा शेष हुआ ?—अनेक कारण उन्होंने कहे थे, अभी तक तो उनके एक ही कारण का उपचार हुआ है।'

मिस्टर नटनागर कच्ची खाने वाले न थे, बोले 'मैं अपने पहले पाइण्ट की भी हार स्वीकार नही करता। सवाल तो नारी की भावना का है, जिससे वह अपने आपको इन समस्त उपकरणो से लादना चाहती है। देखने वाली आख कहा सौंदर्य देखेगी, यह सौंदर्य का पात्र तो नहीं बता सकता। खैर, यह तो एक ही बात हुई। समाज मे हम एक नियम की बात जानते है प्रिफरेन्स फौर द फेअर सेक्स (स्त्रियो अग्रमान्यता) या लेडीज़ फर्स्ट (महिलाए पहले)। क्या इस नियम ही मे नारी के लिए दुर्बलता की भावना नही है ?—वे क्या पुरुषो से सपोर्ट (सहारे) की अपेक्षा नही करती। सपोर्ट चाहने का तात्पर्य ही यह है कि जिसका

सपोर्ट चाहा जाता है, वह सपोर्ट चाहने वाले से अधिक दृढ होता है !'

कमल ने कहा, 'पर भाई साहिब, दृढता मे तो पुरुष से वाजी मार ले जाने वाले अनेक पशु भी होते हैं। शेर, चीते आदि हिंस्र जन्तुओ की बात जाने दें, तब भी बैल ही पुरुष की अपेक्षा दृढ होता है !—तो क्या बैल आदमी से भी श्रेष्ठ है ?'

'पर बैल का सहारा तो कोई चाहता नही।' नटनागर ने कहा, 'मनुष्य ने बैल को साधन अवश्य माना है, उसका सहारा लिया है, किन्तु उससे सहारा चाहा नही।''

टेबल के नीचे मिसेस नटनागर के डोलते हुए पैर मेरे पैरो से टकरा गए। मैं चौंक उठा। सोचा, शायद इशारा इस बाजू मे बैठे हुए मिस्टर नटनागर के लिए हो, क्षणार्ध के लिए उनकी ओर देखा, अपना वक्तव्य समाप्त कर इत्मीनान से विजय-गर्व के साथ वे छुरी से प्लेट पर रखी सामग्री को काटने में दत्तचित्त थे, कि मिसेस नटनागर ने मेरी भ्रांत-चकित दृष्टि को पकडकर कहा, 'आप तो कुछ बोल ही नही रहे हैं ?'

मैंने कहा, 'गुलाब जामुन बहुत अच्छे बने हैं, कमल बाबू का आतिथ्य ठहरा, जरा लोभ लग गया था।'

नटनागर ने कहा, 'गुलाब जामुन मे रस भी बहुत होता है, बातों का रस, सुनते हैं, केवल नारियो ही को बहुत भाता है।'

मैंने कहा 'नारी स्वय रसीली वस्तु जो ठहरी !—परिचय जरा उस रस को फीका कर देता है, वरना पुरुष के लिए तो कोई रस उस रस के सामने नहीं ठहरता।'

नटनागर ने कहा, 'तो आप मेरी बात से सहमत हैं ?'

'आप शायद कह रहे थे कि पुरुष नारी की अपेक्षा अधिक दृढ होता है। कमल बाबू ने कहा कि पशु पुरुष से भी अधिक दृढ़ होता है।··· आप दोनों ही सच हैं, जहां पाशविकता का प्रश्न है वहा पर दृढ़ता ही किसीके गुण का पैमाना होती है; किन्तु मनुष्य का उत्कर्ष यदि पाश-विकता से ऊपर उठना हो तो शायद कहा जाएगा कि कोमलता का

पैमाना ही मनुष्य के गुणों की परख करे। हमारे शास्त्र तो शत-सहस्त्र जिह्वा से कह रहे हैं कि क्षमा दण्ड से अधिक श्रेष्ठ है, त्याग लोभ से आगे है, करुणा को क्रोध कही नही पा सकता। और ये गुण केवल स्त्री ही मे नही, पुरुष मे भी पाए जाते हैं।'

'लेकिन प्रश्न तो यहां स्त्री और पुरुष के बीच श्रेष्ठत्व का है।' नटनागर ने कहा।

मैंने जो बात कही, वह दृढता और कोमलता के बीच की थी—और अपनी बात के प्रमाण के लिए मैं गुलाब जामुन की बालूशाही से तुलना करना चाहूगा। मैं गुलाब जामुन को पसन्द करता हू।'—सब सदस्य हस पडे।

मिस्टर शर्मा ने कहा—'आप नर और नारी के बीच की बात कहिए।'

'वह ब्रह्मा भी नही कह सका, कह सका केवल इतना ही कि स्त्रिया चरित्र और पुरुषस्य भाग्य—दैव भी नही जानते, मनुष्य क्या जानेगा। किन्तु मनुष्य ने यह तो जान लिया है कि ज्यामिति का सिद्धात यहा पर अच्छी तरह लगाया जा सकता है—जो एक ही चीज़ के बराबर हो वे आपस मे भी बराबर होती हैं, अतः नारी का चरित्र और पुरुष का भाग्य दोनों एक ही बात हैं।'

मिस्टर शर्मा ने मुस्कराकर उत्साह के साथ कहा, 'आपकी बात सोलह आने सच है। अगर आप लोग आज्ञा दे तो मैं एक सत्य घटना कह सुनाऊ।'

'अवश्य, अवश्य!' सभी ने कहा।

'मैं एक व्यक्ति को जानता हूं, जो अब तो बुढापे मे कदम रख रहे हैं, लेकिन तब भी ऐसे कोई जवान न थे। लगभग चालीस के रहे होंगे—चार-पाच बच्चो के बाप, घर मे मजे की नाक-नक्शे से दुरुस्त सुघड बीवी—आराम से जिन्दगी बसर कर रहे थे कि, उनके जीवन मे एक धूमकेतु उदय हो गया। उनके पडोस मे एक नये पंजाबी सज्जन आए

किराये से मकान लेकर अपनी अठारह-उन्नीस बरस की एक कुमारी सुन्दर कन्या के साथ रहने के लिए। रोज खिडकियो से देखा-देखी हो जाती थी, कोई खास बात न थी, था केवल कुतूहल ! पति-पत्नी मे चर्चा भी होती रहती, कि इतना बडा हिया इन बाहरी लोगों ही का हो सकता है कि इतनी बडी धीगरी लडकी के घर पर रहते हुए भी चैन की नीद ले सकते हैं। यही नही, लडकी मजे से खिडकी पर खडी रहकर न केवल बाहर वालो को देखती ही रह सकती है, बल्कि अपने आपको दिखाती भी रह सकती है, और उनके कान पर जू नही रेगती। इसी तरह दिन बीतने लगे।

रोज की बात ठहरी, चर्चा के बावजूद हजरत पत्नी से डरते, कि कही उनका खुद का खिडकी पर खडे होकर ताकना पत्नी देख न ले, अतः उस शुद्ध कुतूहल से भरी ताक-झाक मे आ मिली लुका-छिपी—और लुका-छिपी ने पैदा कर दिया रस '

और मिस्टर शर्मा ने मेरी ओर देखकर आशा की कि मैं इसी बात पर कुछ कहू।

मैंने कहा, 'लुका-छिपी मे रस होता है, इसमे सन्देह नही। बच्चे भी इस बात को जानते हैं, यद्यपि सेक्स से उनका कोई चेतन परिचय नही होता। आपकी कथा मे भी बडा रस आ रहा है, आगे कहिए ! मिस्टर कमल आपको धन्यवाद देंगे कि उनका गुलाब जामुन का बिल अधिक नही बढेगा।'

कमल ने कहा, 'उसकी चिन्ता न कीजिए ! ठेके की बात है, उसमे अब न बढ़ सकता है, न घट ही, परन्तु मिस्टर शर्मा, इसमे सन्देह नहीं कि आपकी बात बडी मजेदार है।'

मिस्टर शर्मा ने कहना शुरू किया—'ताक-झाक और लुका-छिपी, आप जानते ही हैं, छिपी नहीं रहती। उस लकडी ने भी इसे पहचाना, और पास-पडोस के अन्य उसके समवयस्क साथी सहेलियो ने भी जाना। और इस प्रौढ़ व्यक्ति की समझ पर उनको तरस भी जल्दी ही आ गया !

योजनाए बनने-बिगडने लगीं। एक दिन एक युवक ने इन प्रौढ व्यक्ति से कहा :

'आपसे एक ज़रूरी बात करनी है।'

'कहिए।'

'सामने वाली मिस ने आपको सलाम भिजवाया है।'

'कहते क्या हैं आप ?'

'बिल्कुल ठीक कहता हू ! कहा है कि आप पत्र लिखिए।'

'और पत्र पहुचाएगा कौन ?

'मैं।'

'मगर···'

'नही, डरिए नही, कोई बात नही। आपको उत्तर मिलेगा।'

फस गए हजरत जाल मे। फसने के सिवा कोई चारा ही नही था। बडी सूझ-बूझ से पत्र लिखा। लडकी ने इशारे से जताया कि उसे पत्र मिल गया है। फिर क्या था, महाशय की बाछे खिल गईं। दो दिन के बाद उत्तर भी आ गया। फला सध्या को अमुक उद्यान मे वह उनकी प्रतीक्षा करेगी। और इशारे से भी उसने पूछ लिया कि उन्हे पत्र मिला या नही। इशारे ही इशारे मे बहुतेरी बाते हो गई, जिनको शायद भाषा कभी व्यक्त न कर सके। फला सध्या को अमुक उद्यान मे बडी आशा, बडा विश्वास और धडकता हुआ हृदय लेकर पहुचे हजरत।'—और फिर शर्मा ने एक और दृष्टि सबकी ओर डालकर अपनी प्लेट से काटे से उठाकर रसगुल्ले एक टुकडा मुह मे डाला।

मिसेज़ स्मिथ हाथ रोके, और सास रोके हुए बडी उत्सुकता से कहानी सुन रही थी, बोली .

'फिर क्या हुआ ?'

'आप ही कहिए ? '

मिसेज़ नटनागर ने कहा, 'होना क्या चाहिए। आप यही तो कहेगे, कि उससे भी बडी आशा और बडे विश्वास के साथ उस लडकी ने इन

महाशय का स्वागत किया। रही दिल की धडकन, वह जब इन महाशय की सयत हुई तो उस लडकी की बढ गई ! प्रेम करने का अभिशाप जो उसकी तकदीर मे बदा है।'

नटनागर महाशय ने कहा, 'प्रेम करने का अभिशाप ?—इसे प्रेम करने का, मौज करने का, आनन्द मनाने का अवसर क्यो न कहना चाहिए !' —क्यों मिस्टर शर्मा ! जब वे महाशय उद्यान के उस निभृत कुज मे गए तो सूखे हाथो तो नही गए होगे। मधुर बातों से कान को ही तृप्ति होती है। नारी खाली पेट और खाली मन लिए कही भी किसी भी अवसर पर जा सकती है, प्रेम करने के अवसर पर तो अवश्य ही, किन्तु पुरुष तो खाली पॉकेट घर के बाहर निकल भी नही सकता। प्रेम करने का अवसर हो, तब तो वह विलोम अनुपात ही मे भरा रहना चाहिए।—कम से कम नियम तो यही है !—पर क्या हुआ सो तो मिस्टर शर्मा ही कह सकते हैं !—कहानी सचमुच मजेदार है इसमे सदेह नही।'

मिस्टर शर्मा ने मेरी ओर देखा, लोगों की उत्सुकता को शायद वे बढ़ने देना चाहते थे। पूछा :

'आप क्या सोचते हैं !'

'जब आप कह ही रहे हैं तो मुझे सोचने की ज़रूरत ही क्या है ?'

'मगर आप लेखक जो हैं।'

'तो क्या हुआ ?'

'आप ऐसी सिचुएशन को कैसे हैण्डल करेंगे ?'

'आपकी कहानी कहानी तो है नहीं; आप कह चुके हैं, वह है सच्ची घटना ! सच्ची घटना कहानी से अधिक मजेदार होती है। घटना को मजेदार बनाने के लिए मैं फलां सध्या को अमुक उद्यान मे उस लडकी को ले ही नहीं जाता !'

'गुड—वेरी गुड—दिस इज़ ह्वाट एग्जैक्टली हैपन्ड देअर !—(ठीक बिल्कुल ठीक; ठीक यही वहां पर हुआ !)—अच्छा, आगे बताइए आगे क्या करेंगे आप ?'

मैंने कहा, 'एक रसगुल्ला और खाऊंगा । बस…'

'और कहानी ?'

'वह आप कहते चलिए । अब नहीं कहूंगा । मेरी तो केवल कल्पना होगी, और नाराज हो उठेंगी मिसेस नटनागर…'

मिस्टर नटनागर ने एक कडी निगाह से मेरी ओर देखा । लेकिन शर्मा जी ने कहानी शुरू की :

'सचमुच उस उद्यान मे वह लडकी न थी, बल्कि था छिपा हुआ लडको का गिरोह । महाशय जी समझे शायद आने मे देर हो गई हो । कुछ बैठकर प्रतीक्षा कर ली जाए ! तभी वही लडका जिसने पत्र-व्यवहार का दौत्य स्वीकार किया था, सामने आया और बोला कि उन्हे कुछ असुविधा हो गई है, वे थोडी देर राह देखें, वे आती ही होगी । जब अंधेरा होने आया, तो उस लडकी का बडा भाई वहां पर उन महाशय का पत्र हाथ म लेकर आ पहुचा ।'

कहानी एक दूसरे मोड पर पहुच गई । मिसेस स्मिथ ने कहा, 'ओह ! तब तो हजरत बडे घबराए होगे ?'

'घबराए क्या—बडी मुश्किल मे फस गए ! यार लोगो ने बडी गत बनाई, सारा पॉकिट खाली करवा लिया । बुढापे मे इश्क करने की स्पर्द्धा पर तरस खाया, और जब हार मानकर महाशय ने मुह मे तिनका धर-कर दया की भीख मागी, तो कहीं जाकर छुटकारा मिला । घर पर बीवी से कहा कि बस पर चढते समय दुर्घटना से पैर फिसल गया था । मरहम-पट्टी की गई । तीन-चार दिन की छुट्टी लेनी पडी । महाशय जी ने कसम खाई कि प्रेम की गली मे अब कभी पैर न रखेगे !'

मिसेज़ स्मिथ मुस्करा रही थी । बोली, 'बडा अच्छा सबक दिया ब्रूसट को !—बुढापे में बीवी और बच्चो के होते हुए इश्कबाजी करने वालों को सबक मिलना ही चाहिए । इसमे नारी का सम्मान बढेगा ही । आइ मस्ट काग्रेचुलेट दैट ब्रेव गर्ल !' (मुझे उस बहादुर लडकी का अभि-नन्दन करना चाहिए ।')

मिस्टर नटनागर ने कहा, 'आपकी कहानी सच हो सकती है मिस्टर शर्मा ! लेकिन इससे स्त्री जाति की शरारत ही प्रमाणित होगी । यह तो आप कह ही चुके है कि प्रारम्भ मे तो बेचारा बिल्कुल कुतूहल से ही देखता था । और यदि वह लडकी सुन्दर थी, तो इसमे उस पुरुष को दोष नहीं दिया जा सकता । वह लडकी ही खिडकी पर क्यो खडी हुआ करती थी ? और उस बूढे को फसाने के लिए जब जाल बिछाया गया, तो जाल मे फसाने वाले को दोष न देकर फसने वाले को दोष देना तो भद्रता नही कही जा सकती । इसीलिए मैंने कहा था कि स्त्री पुरुष की अपेक्षा श्रेष्ठ दीखती तो है, पर होती नही ।'

मिसेज़ नटनागर ने कहा, 'खिडकी पर दोनो ही खड़े थे, तब बेचारी लडकी ही को दोष क्यो ? लडकी के पास तो उमर का सम्बल भी न था ! क्यो मास्टर साहब, आपका क्या ख्याल है ? पर आप तो पुरुष का पक्ष लेंगे ।'

कमल ने कहा, 'स्त्रियो के बारे मे राय देने के लिए जितना नजदीक से उन्हे जानना आवश्यक है, वह तो मेरे लिए सभव हुआ नही है ! फिर भी हमारा सस्कार तो नारी के प्रति सहानुभूति का ही रहा है । कोमलता गुण हो या अवगुण—हमीने तो उनको ऐसा बनाया है ! यो नारी यदि कुसुमादपि मृदु कही गई है, तो वज्रादपि कठोर भी उसीके लिए प्रयुक्त हुआ है । यदि मूल प्रश्न के ऊपर मुझसे बोलने को कहा जाए तो मैं कहूगा कि प्रश्न ही गलत है । एक गाडी के दो पहियो मे एक को दूसरे से श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता !'

मिस्टर शर्मा ने देखा कि उनकी बात जिस ढग से जमी थी, उसी ढंग से उखड़ी जा रही है, तो उन्होंने कहा, 'आप लोगों ने केवल पूर्वार्द्ध सुनकर ही मेरी कहानी पर फतवा दे दिया । यदि मैं भूलता नहीं तो जिस सवाल पर मेरी कहानी चली थी, वह था स्त्री-चरित्र और पुरुष का भाग्य !'

नटनागर ने मुस्कराकर कहा, 'स्त्री-चरित्र की व्याख्या तो आपने कर

दी, अब क्या पुरुष के भाग्य की कथा कहना चाहते हैं ?—पर उसका भी तो वर्णन आपने कर दिया है। हीरो चाहे आपकी कहानी का हतभाग्य न बन पाया हो !'

'पर पूर्वार्द्ध ही !'

'तो उत्तरार्द्ध भी कह दीजिए।' मिसेज़ स्मिथ बोली। 'जरूर वह भी मजेदार बात ही होगी।'

'निश्चय ही।—हुआ यह कि लडकी को जहा अपनी करतूत पर बहुत अधिक आनन्द आया, वहा पर अपने किए पर लज्जा भी !...'

नटनागर ने बीच ही मे कहा, 'लज्जा नारी का भूषण जो कहा जाता है।'

शर्मा जी ने मेरी ओर देखकर कहा, 'यही पर, आप अनुभव करेंगे, कहानी और सत्य घटना मे अतर प्रारम्भ होता है !....'

मैंने कहा, 'मै सुन रहा हू—आप सत्य घटना ही की बात कहिए, कहानी की बात मैं जानता हू। जो कुछ लडकी ने किया वह उसकी आसक्ति ही का एक प्रकार था। वह आप सब लोगो की भर्त्सना-आलोचना की परवाह न करके उस खूसट को सचमुच ही चाहने लग गई थी। यदि ऐसा न होता तो वह रास्ते से हट जाती। रास्ते मे रोड़ा अटकाने वाले वे ही होते हैं जो रास्ते का अधिकार मागते हैं—अबाध अधिकार मिस्टर शर्मा ! पर यह मेरी कहानी की बात है आप सत्य घटना कहिए।'

मालूम पडा, शर्माजी अप्रतिभ हो गए ! 'नही, आप लोगो को मजा नही आएगा।'

'क्यो-क्यो ?' दोनो देवियो ने एक साथ कहा।

'जो कुछ होना था, वह तो इन्होने कह ही दिया है। बात केवल समय और सुविधा की थी ! लडकी ने आत्मसमर्पण किया—यही नही, दोनों का विवाह होकर रहा।'

'अरे ?—और उस पहले वाली बीवी तथा बच्चो का....?'

'पहले वाली बीवी कुछ दिनो तक जीवित रही। बीमार वह पहले से ही रहती थी, इतनी कि स्वय उसे पता न था, पर एकाएक ही उसकी बीमारी उभर आई, और एक दिन शाति से पति के चरणो मे ही उसने परलोक-लाभ किया। बच्चे बडे हो गए थे, अपने-अपने धन्धे लगे। हा, वही नटखट लडकी इतनी सुशील निकली कि न तो उस पहले वाली पत्नी को सौत का कष्ट उठाना पडा, न बच्चो को सौतेली मा का। है न अद्भुत चरित्र स्त्री का और भाग्य पुरुष का ?'

कमला ने कहा, 'शर्मा जी, आपकी बात का विश्वास करना बडा कठिन है। क्या वे लोग यही के रहने वाले हैं ? कब की बात है यह ?'

शर्माजी ने मुस्कराकर कहा—'विश्वास करने के लिए आपको कहता नहीं ! मन हो, विश्वास कीजिए, न हो न कीजिए, पर बात मेरी सच है। यदि कभी आप मेरे घर तशरीफ लाए तो आप अपनी आखो से देख लेंगे।'

'कहते क्या हैं ?—आपके मकान ही में रहते हैं ?' कमल ने पूछा।

'मेरे मकान ही मे नही, मेरी गृहस्थी में ही।'

'आपके रिश्तेदार ''' मिसेज नटनागर ने पूछा।

'मैं मिसेज शर्मा से आपका परिचय करवा दूगा। वे मिलकर प्रसन्न होंगी आपसे।'

'मिस्टर शर्मा !' नटनागर ने पहली बार शायद अपने १८० डिग्री के ओठों को वर्तुलाकार बनाकर कहा। 'वी हैव मिस्ड ए ग्रेट पर्सनेज।' (हम एक बडे व्यक्तित्व से नहीं मिले।)

काफी देर तक शाति बनी रही। नारिया दृष्टि चुराकर शर्मा जी की ओर देख रही थीं; किन्तु शर्मा जी निश्चिन्त भाव से अपने सामने की प्लेट साफ कर रहे थे। उमर यही पचास के आसपास, खिचडी बाल, निष्कलुष, भरा हुआ मुंह, आंखें कोटरो मे छिपी हुई किन्तु सतेज मानो शिकार की खोज में हों, पृथुल भाल, पृथुल कण्ठ, वृषभ-स्कन्ध, औसत शरीर-भार—किन्तु सुपुष्ट—मानो किसी शिल्पी ने आवश्यकता के अनु-

सार ही लम्बाई-चौडाई का अनुपात स्थिर किया है !—पहले इस शरीर मे कुछ भी आकर्षक न था, सभी कुछ सामान्य, औसत, किन्तु रोमान्स का घेरा उनके चारो ओर क्या छाया, उनके शरीर की एकदम काया-पलट हो गई ।

कमल ने नटनागर से कहा, 'भाई साहब, गरम पुलाव थोडा और लीजिए । ऐ बॉय....'

कमला ने कहा, 'बहस जहा से शुरू हुई, वहीं समाप्त भी हो गई । पर यह निर्णय नहीं हो सका '

नटनागर ने बात काटकर कहा, 'निर्णय क्या बाकी है ?—जो कुछ मैंने कहा था, उसीका समर्थन तो अब तक होता आ रहा है ।'

मिसेज नटनागर ने टेबल के नीचे पुनः मेरे घुटनो मे अपने घुटने छुआते हुए कहा, 'आपने तो कुछ कहा ही नही ।'

'कुछ नही कहा ?—लो, शर्मा जी की सारी सत्य घटना को कहानी बनाकर मैंने कहा, और इनाम यह कि मैंने कुछ कहा ही नहीं ?'

नटनागर ने कहा, 'और अभी ही क्या !—इस समस्त बातचीत को यदि कागज पर लिख डालो, तो एक अच्छी कहानी का यश भी आपको मिल ही जाएगा । नही क्या ?'

मैंने कहा, 'यश का प्रश्न हो तो उसके पात्र शर्मा जी हैं, जिन्होने कागज पर नही, अपने जीवन के रगीन पट पर अनुभूति की लेखनी से प्रयोग की स्याही मे डुबोकर उस कथा को अमिट कर दिया है । कागज पर उतारने के लिए, यदि मुझे आवश्यकता हुई, तो शर्मा जी ही का नही, आपका इतिहास भी कम रुचिकर नही होगा मिस्टर नटनागर !'

कमल ने कहा, 'तो फिर जिसे मौलिकता कहते हैं, वह क्या आप लेखकों की ऐसी ही परवशता है ? यदि शर्मा जी के साथ में अन्य तरह की घटना घटी होती तो ?'

मैंने कहा, 'जोशी, तुम तो साहित्य के विद्यार्थी रह चुके हो । तुम्हें तो इस बात को जानना चाहिए था । शर्मा जी के साथ चाहे जो घटना घटे

आप लोगो को अपेक्षा ही न थी। मैं जरा मोटी भावना का आदमी हू, मोटी चीज ही को देख सका होऊ, तो इसमे मेरा क्या दोष है ?'

कमल ने कहा, 'भाई साहब, इस शब्द-जाल मे उलझने की अपेक्षा हमे आप मूल प्रश्न के ऊपर ही अपनी राय बता दें·· '

मिसेज स्मिथ ने कहा, 'बात तो वाकई ठीक है।—विषय बडा दिल-चस्प है, और नर और नारी दोनो के समुदाय मे यह विषय बडा ही मौजू है।'

मैंने कहा, 'सो तो है।—लेकिन मेरा मतामत—देखिए कमल बाबू ने जो कहा, उसमे मेरा बहुत कुछ इत्तिफाक है। सही बात तो यह है कि यह प्रश्न ही अनावश्यक है। आप यदि किसी व्यक्ति से यह पूछें कि उसका दाया हाथ श्रेष्ठ है या बाया तो इसमे तो कुछ तथ्य देखा जा सकता है, (यद्यपि बाया हाथ प्रयोग करने वाले व्यक्ति के सामने वह उत्तर बिल्कुल भ्रामक होगा।) किन्तु यदि दाईं और बाईं आंख में आप किसी प्रकार की चढा-उतरी स्थापित करेंगे तो कौन आपके प्रयत्न पर हसेगा नही ?—नर और नारी एक दूसरे के पूरक हैं। नर के अभाव को नारी पूरा करती है, नारी के अभाव को नर !'

कमल ने कहा, 'मेरा मत तो अवश्य यही था, पर एक जगह कही पढा याद आता है कि नारी नर से इसलिए श्रेष्ठ है कि वह देती है, और नर सदैव ग्रहण करता है। नर को उपमा दी गई थी एक जमीन के टीले से, दूह से, जिसका प्रयत्न सदैव ऊपर उठते रहना हो, किन्तु नारी को एक नदी बताया गया था जो अपने तटो को आप्यायित करती हुई बढ़ती चली जाती है—सागर से मिलने वह प्यासो की प्यास बुझाती है, रेगिस्तानो को हरा करती है, दर्शक को मोह लेती है।'

'मेरे मित्र ! इस उपमा के जाल मे मत आओ ! यह केवल शब्दो का छल है। नारी यदि नदी है, तो उसके तट, जिनको वह आप्यायित करती है, रेगिस्तान जिनको वह हराभरा करती है, दर्शक जिनको मोह लेती है, वे क्या हैं ?—वे क्या नर नही ?—और यदि वे नर हैं तो नदी

का यह धर्म या कर्तव्य क्या नर को सतुष्ट करने ही के लिए, उसकी सेवा करने ही के लिए नही समझा जाएगा ?—तब कहो, कहा रही नारी श्रेष्ठ ?— सेवा करने वाला उत्तम हो सकता है, पर श्रेष्ठ भी हो सकेगा क्या ?'

मिसेज स्मिथ ने कहा, 'तो आपका मतलब है कि नर श्रेष्ठ है ?'

'यह मैंने कब कहा ?—यह तो उस उपमा का करिश्मा है, जो कमल बाबू ने दी थी ! '

कमल ने कहा, 'नही मैंने नही दी; मैं तो केवल दूसरे की बात कर रहा था।'

'बात वही है। शब्दो का छल इसीको कहते हैं। हो सकता है कि उपमा देने वाले का यह इरादा न रहा हो, पर इस प्रकार की उपमा का नतीजा तो वही हो सकता है, जो अब तक नारी को भुगतना पडा है।'

कमला ने कहा, 'किन्तु यदि एक का काम सदैव देना ही हो, और दूसरे का लेना, तो दोनों बराबर कैसे हुए ?'

'इसलिए कि जो देता है, वह इसलिए नहीं कि दूसरा उसमे वसूल करता है, बल्कि इसलिए कि उसके पास इसका प्राचुर्य है ! जो लेता है वह भी इसीलिए हाथ पसारकर नहीं लेता। वह बदले मे आश्रय देता है, और फिर जब दोनो दिशाओं से समर्पण की क्रिया पूर्ण हो जाती है, तो फिर लेन-देन कहा ? फिर कहा अभाव और प्राचुर्य ? तब हम उन्हे एक-एक कर—अलग-अलग कर देख सकते हैं क्या ?'

'पर यह क्या सदैव सम्भव है ?'

'न हो; पर होना तो यही चाहिए। प्रकृति तो यही चाहती है।'

'यदि ऐसा नहीं होता, तो क्यो नही होता ?' कमला ने पूछा। कमला, मालूम दिया, विषय मे तल्लीन हो गई थी, शायद प्रश्न की गम्भीरता में अपनी ही किसी समस्या का समाधान खोजती हो।

मैंने कहा, 'और ऐसा नहीं होता, इसीलिए ऐसे प्रश्न पैदा होते हैं कि वह श्रेष्ठ है या वह श्रेष्ठ है। जब व्यक्ति की प्रकृत इच्छा के ऊपर

समाज का या और किसी का विधि-निषेध काम करने लग जाए तो वह व्यक्तिगत रूप से विद्रोह करना चाहता है, यह स्वाभाविक ही है। प्रकृति ने दोनो की शरीर-रचना ऐसी की है, कि पुरुष का विद्रोह तो सरलता से छिपाया जा सकता है, किन्तु नारी का नही। पुरुष बच जाता है, किन्तु नारी नहीं बच पाती और समाज उसे दण्ड का भागी बना देता है। इससे नारी मे और भी विद्रोह की भावना उत्पन्न होती है, वह प्रतिशोध पर भी उतारू हो सकती है, किन्तु इससे समस्या का हल तो नही होता। यो, विद्रोह और प्रतिशोध की अनन्त कडियो मे गुथती हुई सामाजिक उच्छृखलता फैलती जाती है, और हानि उठाता है समाज भी, और जन-जीवन भी।'

पता नही, किसको कितनी दिलचस्पी मेरे कथन मे रही। मैं महसूस कर रहा था कि कही मेरा पडिताऊपन मजाक न बन जाए, इसलिए एका-एक चुप हो गया, देखने के लिए कि लगभग सभी खाने से हाथ खीच चुके थे। मिस्टर नटनागर को स्पष्ट ही कोई रस नही आ रहा था, प्रत्युत् उन्हे शायद कुछ कडवाहट ही अनुभव हो रही थी। मिस्टर शर्मा यद्यपि देख मेरी ओर रहे थे, पर मन उनका कही अन्यत्र ही था। मिसेज़ स्मिथ टेबल के ऊपर देखकर शायद कान मेरी ओर किए हुए सुनने का बहाना कर रही थी। कमल की दृष्टि लुक-छिपकर कमला की दृष्टि का अनुसधान करना चाह रही थी, किन्तु कमला मानो मेरे उत्तर मे खोई जा रही थी। जब कि मैं ही मेरे उत्तर के गुरुडम से ऊब रहा था, कमला ने पूछा

'उच्छृंखलता तो अपराध है ही, और इसका दड भी मिलना ही चाहिए। आप क्या सोचते हैं?'

'उच्छृखलता अपराध हो सकता है, किन्तु किसका? साकल की जब कोई कडी गतिमान हो उठती है, तो यह देखना होगा कि धक्का कहा से लगा है। जो कुछ दिखाई देता है वही तो ध्रुव सत्य नही होता। और फिर दड? यह अपराध स्वय क्या कम दण्ड नही? फूल यदि देवता के

सिर पर चढाने के लिए हो, और वह धूल मे ही चू पडे तो क्या यही उसका कम दण्ड नही हो जाता—यद्यपि अपराध ही उसका क्या है ? क्या उसे तब भी पैरों से कुचलने की जरूरत रह जाती है ?....'

मिसेज स्मिथ ने एकाएक कहा, 'पैरो से कुचला तो जाता है।'

'इसीलिए वह फूल भी यह कामना करने लग जाता है कि देवता के सिर पर चढने ही मे कौन-सी कविता है ! यदि शूल ही होता, तो पैरों से कुचलने पर रस के स्थान पर विष ही की सृष्टि कर सकता, और तब वही मेरी सार्थक सृष्टि होती।'

नटनागर ने कहा, 'आप जानते हैं कि इससे समाज मे कैसा भ्रष्टाचार फैल जाएगा ?'

'एक दल के किए तो भ्रष्टाचार नहीं फैलता। एक हाथ से कभी ताली बजी है ?'

'दोषी कोई हो—पर दोष तो होता ही है। समाज को तो दोष का निराकरण करना है।'

'बिल्कुल सच, पर वस्तुत दोष का निराकरण न करके वह निराकरण दोषी ही का करता है। इसका फल भी साफ है, व्यक्ति विद्रोही होता चला जाता है, दोष बढता जाता है, और जीवन की पूर्णता नष्ट होती चली जाती है। समाज को यदि अपने जीवन के स्वास्थ्य को लौटा लाना है, तो उसे अपने दृष्टिकोण मे अन्तर लाना ही पडेगा।'

नटनागर जाने क्यो उत्तेजित होते जा रहे थे, बोले, 'पति के सर्वस्व-अर्पण करने पर भी यदि पत्नी कुलटा हो जाए तो आप क्या करेंगे ?'

मैंने कहा, 'माफ कीजिएगा, मैं दूसरा प्रश्न करूगा, यदि पत्नी के सर्वस्व अर्पण करने पर भी पति स्वैर हो जाए, तो आप क्या करेंगे ? मेरे इस प्रश्न का उद्देश्य यह है कि हम लोग स्त्री ही के अपराध को मन में लाने के आदी हैं, पुरुष के नहीं, और वह इसलिए कि पुरुष के पक्ष में वह अपराध इतनी कसरत से होता है कि वह उसकी एक सामान्य आदत-सी बन गई है। धर्म और कानून तक कल तक उसे अपराध नहीं मानते

थे। शरीयत के अनुसार आदमी चार विवाह कर सकता है आज भी, और भारतवर्ष मे तो श्रीकृष्ण की सोलह हजार आठ रानिया थी। जहां कहीं इतिहास ने द्रौपदी जैसी स्त्री का नाम गिना दिया तो, वहा प्रत्येक रात्रि को अग्नि-परीक्षा आदि के समस्त सभव-असभव खुराफातो के विधान के द्वारा स्त्री के लिए एक पतिव्रत का विधान बनाए ही रखा। राम-राज्य मे भी धोबी अपनी पत्नी को राम का नाम लेकर ताना दे सकता है, पर रजक-पत्नी तीन रानियो वाले दशरथ का नाम नही ले सकती। कहिए, मेरे प्रश्न का आपके पास क्या उत्तर है?'

'यदि पति स्वैर हो जाए तो छोड दे पत्नी उसे।'

'और जाए कहा वह? आर्थिक परिस्थितियों को अपने हाथ में लेकर अंधेरे मे उसे ढकेलने के लिए पुरुष तैयार सरलता से हो सकता है, वह जानता है कि स्त्री जा नही सकती। स्त्री यह भी तो सोचने को बाध्य होती है कि कई भेडियो की लोलुप जीभ की अपेक्षा एक भेडिया ही क्या बुरा है? इसलिए शायद अपने प्रश्न का यह उत्तर भी आपने सरलता से सोच लिया हो कि कुलटा हो जाने पर पत्नी को पति त्याग दे।'

'और इतने पर भी यदि वह नही त्याग देता, तो क्या वह नारी की अपेक्षा श्रेष्ठ नही है?'

—कि कमला खाने पर से उठ गई। मैंने कहा—

'और यह जानकर भी कि पति की भावना उसके प्रति ऐसी है, जो नारी उस पति की उसी तरह सेवा करती जाए, वह क्या उससे भी श्रेष्ठ नही? पर देखिए', और मैंने भी उठकर कहा, 'अब नारी अपने महत्व को समझने लग गई है। श्रेष्ठत्व का दावा वह चाहे न करे, किन्तु अपना उचित अधिकारी तो वह चाहने ही लगी है! मिसेज़ भटनागर को आपने क्रुद्ध तो कर दिया है किन्तु फिर भी आप देखेगे कि उनके मन पर कुछ भी मैल नही है। अभी तो आप पुरुष समाज का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं पर जैसे ही आप केवल मिस्टर भटनागर रह जाएगे, आप देखेगे कि आप दोनो मे पार्थक्य की भावना ही नही है।'

श्रीमती नटनागर ने शायद सुना नही। वे बेसिन पर जाकर अपने हाथ धो रही थी।

उसके बाद कमलनयन के धन्यवाद-दान के बाद पार्टी का समारोह सानन्द समाप्त हो गया। जब सब अपने-अपने घर लौटे, तो रात आधी आ रही थी।

१६

गत तीन-चार दिन से श्री नटनागर पुन: अपने आपको अस्वस्थ अनुभव करने लगे हैं। कमल की दावत वाली पार्टी के बाद से ही कमला अनमनी देखी जाने लगी है। इधर नटनागर को व्यस्त भी काफी रहना पड़ा है, कल सवेरे वे यहां से रवाना हो रहे हैं। सामान की व्यवस्था, लेन-देन का हिसाब, यार-दोस्तों से विदा, इनमे व्यस्त रहने से भी थकावट हो आना स्वाभाविक है। यह अस्वास्थ्य शायद इसीका परिणाम है। यहा से चले जाने पर उन्हें शायद अधिक आराम मिल सकेगा। अब जाना अधिक स्थगित नहीं किया जा सकता। बिना वेतन उनकी आर्थिक स्थिति दुर्बल होती जा रही है, और यद्यपि कमला कमाने लग गई है, किन्तु वह होता ही कितना-सा है, फिर नटनागर पुरुष हैं, वे स्त्री की कमाई पर जीवित नहीं रहते।

कमला को आज रात का निमत्रण है। थकी हुई वह भी है, अतः सन्ध्या को सिर-दर्द का बहाना करके वह साढे सात बजे ही लेट गई है। नटनागर से भी उसने कह दिया है कि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, वे अधिक जागते न रहें। जल उसने उनके बिस्तर के पास स्टूल पर रख दिया है, किताब से ढककर—उस समय वे कोई पत्र लिख रहे थे। शायद

अपनी मा को लिख रहे थे, कमला ने उत्सुकता प्रकट न करके अच्छा ही किया।

पत्र समाप्त करके उन्होने अगडाई ली। जल पीने के लिए गिलास उठाया, यह ऊपर से किताब उन्होने कब उठा ली थी ?—अच्छा, पत्र के नीचे रखने के लिए, परन्तु गिलास को और किसी वस्तु से ढक देना चाहिए था—बल्कि पानी में कुछ गिरा हुआ भी दिखाई देता है। नही यह पानी वह नही पी सकेगे। कमला—पर शायद सो गई है, क्यो उठाया जाए उसे, कही पत्र के बारे मे पूछ ले तो।

नटनागर स्वय ही उठे। बाहर जाकर गिलास का पानी फेक दिया। फिर मटके मे से दूसरा पानी पीकर लेट रहे। गिलास का पानी न पीने से उन्हे कोशिश करने पर भी नीद नही आई। बन्द आखो की पलको पर वे निद्रा के स्वप्नो से भी अधिक प्रखर रूप वाले भले-बुरे कई तरह के दिवा-स्वप्न देखने लगे।

रात बीतने लगी, पूर्व की खिडकी खुली हुई थी, ठण्डी हवा का वेग बढ़ना चाह रहा था कि नटनागर को अनुभव हुआ, मानो अधेरे मे कमला जाग उठी है।—उस समय वे सोच रहे थे कि बम्बई के प्रधान कार्यालय में कई लडकिया भी नौकर हैं। वे प्रधान क्लर्क की जगह न भी गए तब भी उपप्रधान के पद पर तो नियुक्त होगे ही। अवश्य ही एकाध लडकी उनके हाथ नीचे भी होगी। कैसी होगी वह लडकी ?—सुमित्रानन्दन पत की 'भावी पत्नी के प्रति' कविता की पक्तिया उनके मानस-पटल पर चमकने लगी; तभी उन्हे मालूम दिया कि कमला जाग उठी है।—कमला शायद उस कविता को जानती है, उससे कहा जाए कि वह उन पक्तियो को गुनगुनाए, किन्तु क्या उस लडकी को कमला सहन कर सकेगी ?—नही-नही—कमला रहे, अभी उस लडकी की कल्पना से नटनागर यदि खेल सकें, तो क्या बुरा है ?

कमला ने उठकर पलग के पास आकर देखा कि नटनागर की आखे बद हैं। ग्लास टेबल पर पडी हुई है, उसने उठाकर देखा—देखा कि

खाली है, जरूर ही पानी नटनागर पी चुके हैं, इसीलिए सो भी गए हैं। खिडकी से ठण्डी हवा का झोका आ रहा है, उसने पैरो के नीचे पडी हुई चादर को इत्मीनान से उठाया और नटनागर के शरीर को ढक दिया। नटनागर का मन कृतज्ञता और हर्ष से भर गया। वे चादर के भीतर से आखें खोलकर कमला की गतिविधि का अनुसरण करने लगे। कमरे में प्रकाश न था, किन्तु कृष्ण पक्ष की सप्तमी का चाद बाहर अपनी क्षीण चादनी फैला चुका था, कमरे मे क्या हो रहा था, यह बाहर से नहीं, किन्तु भीतर से देखा जा सकता था।

नटनागर ने देखा कि पुन. अपने बिस्तर पर जाकर लेट जाने के स्थान पर कमला दूसरे कमरे मे गई, शायद कुछ देखने गई हो, किन्तु पाच-सात मिनट के बाद जब वह लौटी तो उसने कपडे बदल रखे थे, और कपडो पर एक गहरे रग की चादर डाल रखी थी, यह क्या ? ...

कमला ने दरवाजा खोला। बाहर बरामदे में दादू लेटा हुआ था। उसे कुछ भी आहट न हो, इस तरीके से कमला ने दरवाजा भिडा दिया। नटनागर ने आश्चर्य से देखा कि दादू जो पहले बिल्कुल नीरव, शान्त सोया हुआ था किन्तु जैसे ही घर का दरवाजा खुला, उसकी नाक खर्राटे भरने लगी, और कुछ ही देर बाद पुन" बन्द हो गई। नटनागर ने चादर उतार दी। पलग पर उठ बैठे। खिडकी मे से देखा कि बाहर बरामदे में लेटा हुआ दादू अपने बिस्तर पर उठ बैठा है और सामने की ओर देख रहा है। उसकी दृष्टि का अनुसरण करने पर नटनागर ने देखा कि चादर मे अपने सारे शरीर को लपेटे एक छायामूर्ति वृक्षों की छाया में अपने को यथासाध्य छिपाती हुई सामने क्वार्टरो की ओर चली जा रही है!—तभी मानो अधेरे में ही सामने के क्वार्टर का दरवाजा खुला। वह क्वार्टर शायद कमल का है, अधेरे में कुछ स्पष्ट नही हो सका। क्षीण-सी आहट से मालूम दिया शायद दरवाजा बन्द हो गया। तभी ऊपर से रोशनदान में एक क्षीण-सी रोशनी फैल गई। कमरे मे प्रकाश कर दिया गया होगा।

तो यह है कमला ! और कमल है वह छोकरा, जिसकी सन्तान को नौ मास तक उठाए रहकर उसने नटनागर की शाति को नष्ट कर दिया था। आशा तो यह थी कि उसके बाद ही वह अपने चरित्र की ओर ध्यान देगी, किन्तु—और यह अपदार्थ कमल, जो उन्हीकी कृपा से इस योग्य हो सका, आज जिस पत्तल मे खाया उसीमे छेद कर रहा है ! एक क्षण के लिए भी उन्होंने नही सोचा था कि नटनागर का मुह काला करने वाला छोकरा यह कमल होगा ! कितना विश्वास किया था उन्होने उसका !—अपनी अनुपस्थिति मे घर की सारी जिम्मेदारी उसपर छोड दी थी, घर ही की नही घर की मालकिन की भी—उसीका तो यह फल है !—और अब भी उसे पढाने के बहाने यह यही तो डटा हुआ है। खूब पढाया दोस्त ! तूने !

लेकिन नही, अब यह सब नही चलने का !—कमला को यहां छोड-कर उसे अपनी मर्जी का मालिक और कमल की अकशायिनी नही रहने दिया जा सकता। नौकरी—नही, उसकी भी क्या आवश्यकता है ! नटनागर स्वय जब कमा रहे है, तो कमला को इस नाटक की आड लेने का अवसर भी नही दिया जाना चाहिए।—कमला को वे साथ ही ले जाएगे। यदि जरूरत हुई तो कल जाना स्थगित किया जा सकता है !—कमला काफी स्वतन्त्रता का उपभोग कर चुकी।

किन्तु अभी ?—अभी क्या करना चाहिए ?—क्या अपने पलग पर पडे-पडे उसके लौट आने की राह देखते रहेगे ? और जब वह आए, वे चुपचाप पुन नीद का बहाना करके पडे रहे ?—न जाने कितनी रात्रियो से यह अभिसार चलता आ रहा है !—बन्द कमरे मे दोनो व्यक्ति नटनागर की अबाध्य निद्रा की मजाक उडा रहे होगे। नही, कमला से ही नही, कमल से भी उन्हे प्रतिशोध लेना है। वे इस दृश्य को कल्पना की आखो भी नही देख सकते।

नटनागर की आखो के सामने जाने कैसे दृश्य घूम गए ?—उस टेबल की ड्राबर मे छुरा रखा है, नतीजा क्या होगा ?—जान से वे नही मारना

चाहते। पर किसी ढग से यदि दोनो की नाक यह छुरा काट ले ?—कमल काफी ताकतवर है, और नटनागर टी० बी० के बीमार, कमजोर, थके हुए—और क्या भरोसा कि कमला भी उसीका साथ न देवे ? किन्तु—हा, पकडे जाने पर दोनो ही चोर—चोर का हौसला ही क्या ?—कम से कम दोनो को जब रगे हाथो पकड लिया जाए तो मुह तो नही खोल सकेंगे—इज्जत, प्रतिष्ठा—पर वह रही ही कहा है ?—नटनागर स्वय इतने मूर्ख नही हैं कि हल्ला मचाकर वहा भीड इकट्ठी कर देंगे। कम से कम कमला को साथ लिए जाने का एक अच्छा कारण तो हाथ में हो ही जाएगा।—पर छुरे का व्यवहार—यदि पुलिस बीच में पड गई ?—बडा कठिन है। कमल कह देगा, वह तो किसीके घर गया नही—हा, यदि कोई खुद चलकर उसके घर चला आए तो वह क्या कर सकता है, इसमे उसका क्या कसूर है !—कानून कमल का कुछ नहीं बिगाड सकता और नटनागर एक ऐसे जाल में फंस जाएंगे कि उनका बम्बई जाना भी अनिश्चित काल के लिए स्थगित हो सकता है। हो सकता है, पुलिस उन्हें हिरासत मे भी ले ले। तब फिर क्या करना चाहिए ?—कायर की तरह यहां बैठे-बैठे उसके लौट आने की प्रतीक्षा करें।

नही, छुरे का प्रयोग वे नहीं करेंगे, किन्तु हाथ मे रहने से उनकी मर्दानगी का इजहार जरूर हो जाएगा। कमल समझ लेगा कि बदला लेने की प्रवृत्ति नटनागर में भी है, और काफी उग्र रूप से; अगर वह बच गया है, तो केवल भाग्य से ही, और स्वय नटनागर की महान उदारता के कारण !

नटनागर उठे, और अंधेरे मे ही टटोलकर उन्होंने ड्रावर मे से छुरा निकाल लिया। छुरा कोई खास छुरा नहीं था, विभाजन के दिनो में हिन्दू-मुसलमानों के झगडे को ध्यान मे रखकर, उन्होने एक दिन बाजार से यो ही मजाक में खरीद लिया था। दो-चार बार उससे पेंसिल बनवाई गई, एकाध बार चाकू न मिलने पर कमला ने उससे सब्जी काटने का काम भी लिया था। उससे कभी प्रतिहिंसा की प्यास बुझाने की चेष्टा

की जाएगी यह किसीने सोचा भी नही था ।—अब तो जगह-जगह पर जंग भी लग गया है उसमे !

ड्रावर खोलने की आवाज़से बाहर दादू को सदेह हुआ, और वह चौकन्ना हो उठा । एक अतर्कित भय से उसका लम्बा-चौडा शरीर आक्रात हो उठा । एक बार खिडकी पर आकर उसने झाककर देखना चाहा कि भीतर क्या हो रहा है, किन्तु अन्धकार के कारण उसे कुछ नही दिखाई दिया । फिर भी न जाने क्यो उसके मन ने कह दिया कि भीतर साहब जाग रहे है, और उसीकी तरह वे भी मेम साहब का बाहर जाना देख चुके हैं ।

मेम साहब के इस नीरव अभिसार को वह कई बार देख चुका है, किन्तु मालकिन के कामों की आलोचना करना उसे कभी प्रिय नहीं लगा । अवश्य वह कमला की इस हरकत को पसन्द नही करता, इतनी बुद्धि उसमे है, किन्तु वह कौन है कि उसका प्रतिविधान करे ?—जो भक्त भगवान की भक्ति के साथ पूजा करता है वह उनके कार्यों की आलोचना नही करता, कर नही सकता । यदि मालकिन कुछ ऐसा काम करती है, जिसके लिए उसका मन गवाही न दे, तो वह आखे बन्द करके न देखने का बहाना कर लेता है, फिर भी जागता वह रहता है । कब मालकिन गईं, कब वे लौटी, कुछ भी उससे छिपा नही, फिर भी इस तरह वह रहता है मानो वह कुछ जानता ही नही । वह जानने की चिन्ता करता है तो केवल इसलिए कि मालकिन का यह काम भयानक है, इसमें खतरा है और यदि वह जानता रहे, तो खतरा उपस्थित होने पर वह अपनी भक्ति प्रमाणित कर सके । कितना वह चाहता रहा है कि ऐसा अवसर आए, ताकि वह अपनी भक्ति प्रमाणित करने के साथ ही साथ मालकिन को यह भी बता दे कि ऐसा काम अच्छा नही है । आज जब अनायास ही ऐसा अवसर उपस्थित हो गया है, तो वह आतंकित हो गया है । कारण कि खतरा जिधर से उपस्थित हुआ है, वह भी उसकी भक्ति के आधार का दूसरा सिरा ही है । यहा खतरे से केवल कार्य की बुराई

ही नही प्रमाणित होगी, बल्कि सर्वनाश ही प्रमाणित हो जाएगा। इस खतरे का सामना कैसे करे ?

—दादू के अधपके मन मे यह सारी विचार-शृखला जब प्रतिफलित हो ही रही थी, तभी कमरे का दरवाजा खुला, और ड्रेसिंग गाउन मे छिपे हुए नटनागर साहब अधेरे कमरे से बाहर निकले। दादू किंकर्तव्य-विमूढ दरवाजे के पास ही खडा पाया गया।

नटनागर ने धीरे से कहा, 'कौन दादू ?'

'जी हा !'

'क्या कर रहा है यहा ?'—दादू की उपस्थिति का नाटनागर को ख्याल ही नही रह गया था। सारी योजना पर वे ठीक-ठीक विचार कर चुके थे, किन्तु दादू की भूमिका भी उपस्थित हो सकती है, यह उन्होंने सोचा भी न था। और बिना विचारे ही शीघ्रातिशीघ्र उन्हे इस क्षेपक से पार पाना है।

दादू ने क्या उत्तर दिया, यह उन्होंने नहीं सुना। वे बोले :

'तू घर का ख्याल रखना, मैं आता हूं।'

'कहा जा रहे हैं आप ?'

'जहन्नुम मे !—टोक मत !'—और किवाड भिडाकर वे आगे बढने लगे।

दादू ने सामने आकर कहा, 'आप मत जाइए।'

'क्यो ?'

'आप बीमार हैं। आपको आराम करना चाहिए।'

'हट एक ओर ! तू नहीं जानता कि कितना जरूरी काम है मुझे !'

'जी मैं जानता हू, इसीलिए मैं आपको नही जाने दूगा।'

'जानता है और फिर भी नही जाने देगा ?—मालूम पडता है तू भी इस साजिश मे मिला हुआ है। तुझे मैं फिर समझूगा। अभी मैं दूसरों को देखता हू।'

और नटनागर हाथ से उसे हटाते हुए आगे जाने का प्रयत्न करने लगे।

दादू ने कहा, 'देखिए शोर-गुल हो जाएगा—मैं आपको जाने न दूगा।'

'कैसे नही जा सकता हू !' और उन्होने दादू को जोर से धक्का दिया। दादू को इसकी आशा न थी, वह गिरते-गिरते बचा। नटनागर बरामदे की सीढियो से नीचे कूद पडे।

दोनो ही जानते थे कि शोर-गुल मचाना ठीक न होगा। अत. मनोभावो की चरम सीमा पर पहुचे हुए आवेश के ये क्षण भी नितान्त फुसफुसाहट मे चले जा रहे थे। नटनागर साहब जैसे लपकने को हुए कि दादू ने उन्हे अपनी भुजाओ मे लपेटकर कस लिया। वे बेकाबू हो गए।

दादू ने कहा, 'भीतर चलिए। जो आप सजा देंगे मैं भुगत लूगा।' और वह प्राय जबरदस्ती नटनागर को घसीटता हुआ ही कमरे के भीतर लेता चला गया। दादू के पहाड जैसे शरीर मे टी० बी० ग्रस्त नटनागर की देह के नीरव शात होते एक निमिष भी न लगा।—भीतर जाकर दादू ने फिर से दरवाजा बन्द कर लिया। नटनागर को उसने एहतियात से पलग पर लाकर सुला दिया, और हाथ जोडकर बोला—'साहब, मुझे माफ कर दीजिएगा। मैंने जो कुछ किया आपके भले ही के लिए किया है।'

'मेरे भले के बच्चे !—जानता हू कि तू भी इसमे मिला हुआ है। जब वह रण्डी यहा से चली जाती है, तो तू पहरा देता है कि उसके अभिसार मे कोई बाधा न दे।—देखता हू, तेरी नौकरी कैसे रह पाती है।'

दादू ने कहा, 'मैं इसमे मिला हुआ नही हू मालिक! मेरी बात का आप यकीन कीजिए !'

'चुप रह कमीने, कुत्ते—निकल जा मेरी आखो के सामने से !'

नटनागर को बहुत क्रोध हो आया था। यद्यपि वे अपनी आवाज

को बहुत दवा-दबाकर बोल रहे, फिर भी अब वह पहले जैसी शाति न थी, वे व्यग्र हो रहे थे कि किस तरह बाहर जाए। और यह कमीना, कुत्ता, उनके द्वारा दिए हुए टुकडे पर पला हुआ, उन्हीके सामने आज गुर्रा रहा है।

दादू कुछ अधिक बोल न सका, वह मुड गया और दरवाजे के बाहर जाने लगा, कि नटनागर ने उठकर कहा—'देख कुत्ते, मेरे पास छुरा है, यदि तूने मुझे नही जाने दिया तो मै तेरा खून कर दूगा।'

'कर दीजिए मालिक, पर आप जा नही सकेगे।'

'क्या कहा ?'—और अबकी बार छुरा तानकर नटनागर दादू के ऊपर लपके। बाहर दरवाजा खुल चुका था। दादू सामना करने के लिए तैयार था, पर अधेरे मे उसे कुछ भी पता न था कि किस हाथ मे उनके छुरा है और वह कहा है ?—बल्कि शायद उसने यह भी सोचा हो कि नटनागर खाली उसे भय दिखाने के लिए ही यह कह रहे हो ! पहले जब वह उन्हे पकडकर लाया था, तब तो किसी ऐसे छुरे का उनके पास होना जाहिर नही हुआ था। जो हो दोनो हाथ आगे बढाकर वह खडा हो गया, कि नटनागर उसके फैले हुए हाथ से टकरा गए। शीघ्र ही उन्होने छुरे का वार किया—दादू ने बचाने की कोशिश की किन्तु कटे हुए हाथ की कोहनी से ऊपर हिस्सा उसका शिकार हो ही गया। दादू ने एकाएक उसकी चिन्ता न की, नटनागर का छुरेवाला हाथ अब उसकी मुट्ठी मे था।

—शोर विशेष हुआ न था, फिर भी जितना कुछ हुआ था वह चौकन्ने चोर प्रणयियो को सावधान करने के लिए पर्याप्त था। कमला ने देखा कि शोर तो उसके घर की दिशा से ही आ रहा है तो वह घबराई—क्या करे ?

उसे विश्वास था कि नटनागर ने ओषधि जल के द्वारा ले ही ली थी। अत. सवेरे सात बजे से पहले उनका जाग जाना सभव न था। मालूम पड़ता है दादू किसीसे उलझ गया है। कही कोई चोर-उचक्का

हो। और शोरगुल सुनकर नटनागर जागे, इसके पहले ही उसे घर चले जाना है, अतः वह शीघ्र ही दरवाज़े पर आ पहुची, जब कि दादू ने पुन नटनागर को अपनी भुजाओ मे लपेटकर पलग पर लिटा दिया। यह आश्चर्य की बात है कि इतना होने पर भी उसे क्रोध नही आया था। क्रोध आने पर वह क्या कर गुज़रता, जबकि छुरी वह चाहे जब छीन सकता था, यह सोचने मात्र से नटनागर काप उठे। कमला बिना कुछ बोले कमरे मे घुस आई, दोनो को शायद मालूम ही तब पडा, जब अपने कमरे में जाने के लिए उसने दरवाज़े को धक्का दिया !—कमरे मे अधेरा तब भी वैसा ही था।

दादू ने चौककर कहा—'कौन ?'

कमला ने कहा, 'मैं हू, यह क्या उपद्रव मचा हुआ है ?'

नटनागर ने दात भीचकर कहा—'अभिसार खत्म हो गया तुम्हारा ?'

दादू ने कहा—'जी !'

कमला नही जानती थी कि दादू जख्मी हो गया है, इधर कमला समझ गई कि सारा काण्ड नटनागर ने उसीको लेकर रच डाला है। उसने कहा, 'दादू ! तुम बाहर जाओ।'

दादू ने कहा, 'जी ' और वह बिना कुछ बोले बाहर होने के लिए मुडा, कि नटनागर ने कहा :

'बच गया तू ! बेहतर यही है कि अब कभी मुझे अपनी सूरत न दिखाना, नही तो इसी छुरे से कत्ल कर दूगा।' और जब उन्होने छुरे को हवा मे ताना, तो अधकार मे भी कमला उसको बखूबी देख गई।

दादू ने कहा, 'कोशिश तो आप कर ही चुके हैं, यदि हाथ सामने न आ गया होता, तो आपकी इच्छा पूरी हो ही जाती ! तब भी यह हाथ उसकी याद दिलाता रहेगा !—रहा चले जाने का सवाल, सो अगर मालिक की मर्जी नही हुई, तो कौन नौकर रह सकता है ?'

कमला ने कहा, 'क्या कहा दादू—क्या तुम्हे कही चोट लगी है ?'

'कुछ नही मेम सा'ब, एकाध दिन मे ठीक हो जाएगा !'

'नही—ठहरो—' और उसने सामने बाहर खुलने वाली खिडकी को बन्द कर दिया ताकि कोई देखे नही ; फिर उसने स्विच ऑन करके प्रकाश कर दिया ।

दादू के बाएं हाथ का बाजू खून से लथपथ था । कमला घबरा गई, उसने कहा

'ओह ! दादू !' फिर उसने एक जहरीली दृष्टि नटनागर की ओर डाली—उनका नशा हिरन हो चुका था, और आवेश के दौर के समाप्त होते ही, उनके रुग्ण शरीर की क्लाति इस बुरी तरह उनपर सवार हो गई थी कि सिर को हाथो मे थामे उन्हे पलग पर बैठ जाने के अलावा कोई चारा न था ।

कमला ने कहा, 'जानते हो ?—पुलिस मे यदि रिपोर्ट हो गई, तो हाथो मे कडे पहने हुए फासी का इन्तज़ार करना पडेगा ! बडे तीसमारखां बने हुए हो···'

नटनागर ने कहा, कापती आवाज़ मे—'वही कर दो कमला !—इस तिल-तिल की जलन से वही क्या बुरा होगा ?'

दादू ने कहा—एक नजर उसने कमला की ओर भी डाल ली—

'नमक खाया है आपका । जान से मार दीजिए, उफ न करूगा—मगर ··' और वह पुनः दरवाज़े की ओर जाने लगा ।

'नही—' कमला ने आगे बढकर कहा, 'ठहरो—मै तुम्हे पट्टी बाध देती हू । फर्स्ट एड पडा है, उसका कुछ लाभ तो हो—सवेरे फिर अस्पताल ले चलूगी !'

कमला ने अपेक्षा न की । वह दादू का दूसरा हाथ पकड़े अपने कमरे मे खीच ले गई । नटनागर केवल देखते रहे, और तभी लेट गए, बैठने जितनी शक्ति उनमे नही रही !—लेटकर वे क्या सोचते रहे, यह कहना कठिन है ?—पुलिस मे जाकर दादू यदि रिपोर्ट कर दे ?—हत्या के प्रयत्न में नटनागर को जेल जाना पड़ेगा, इसमे सन्देह नही । घाव उसको गहरा लगा है, छुरा उनके पास है—उन्होने हाथ उठाकर

देखा छुरा तब भी उनके हाथ मे था, रक्त के दाग उसपर सूखते जा रहे थे। कैसे मुक्ति पाए वे इस छुरे से ?—फेंक दे ?—पर कहा ?—बाहर भागकर जाने इतनी शक्ति उनमे है नही। फिर क्या करे ?—कहा छिपा दें उसे ?—छिपाने से लाभ ही क्या होगा ?—कमला तो सभी कुछ जानती है, यदि वही उनके विरोध मे गवाही दे तो उनकी रक्षा कहा है ?—फिर उनकी प्रतिष्ठा, उनकी नौकरी, उनकी अधी मा—आज सवेरे ही तो उनका जाने का कार्यक्रम है ?—क्या किया जाए ?—क्या मूर्खता कर डाली नटनागर ने। आज की यह रात्रि कमला की कोई पहली रात्रि न थी कि नटनागर को इस तरह आसमान सिर पर उठा लेना चाहिए था !—क्या करे वे ?

दस-बारह मिनट बाद ही कमला और दादू बाहर निकले। दादू का हाथ पट्टी से ठीक तरह बाध दिया गया था। प्राथमिक चिकित्सा कमला बम्बई मे सीख चुकी थी। दादू के चेहरे पर एकदम दीनता तथा निरीहता छाई हुई थी। हिंसा का कोई भाव वहा पर नही था। आखो मे दीनता ही नही, आर्द्रता भी छाई हुई थी। उसके पृथुल ओठ एक दूसरे से अलग, जिनके बीच पीले गन्दे दातो की क्षीण आभा और उनके भीतर मोटी जीभ, थके हुए कुत्ते की जीभ के समान—उसे एक अजीब शकल दे रहे थे, किन्तु तब भी इस बदसूरत चेहरे के नीचे से उसके विशाल निश्छल हृदय की छाया आखों के गवाक्षो से किसी छिपी हुई प्रेमिका की तरह झाककर अपने अस्तित्व का परिचय दे रही थी।

दादू कुछ कहना चाह रहा था, किन्तु कुछ कह न सका, झुककर उसने दूसरे हाथ से सलाम किया और बाहर हो लिया। कमला ने दरवाज़ा बन्द कर लिया। प्रकाश जलता रहा।

और तब वह पलग के पास आकर खडी हो गई, चेहरा उसका तब भी तमतमाया हुआ था। शरीर पर वही अभिसार की साडी, प्रकाश मे जगमग-जगमग कर रही थी। मस्तक का जूडा कुछ शिथिल हो गया था, किन्तु स्पष्ट था कि अभिसार के पूर्व उसे भी मालकिन का प्यार-

प्रतीक्षा भरा प्रयप्न प्राप्त हुआ था। आखो की कोर से देखकर नटनागर ने पुन आखो को बन्द कर लिया। कमला ने घृणा से ओठ सिकोड लिए।

एकाध मिनट तक कमला ने नटनागर के बोलने की राह देखी, किन्तु नटनागर हिले भी नही। थूक निगलकर कमला ने कहा, 'सो रहे हो ?'

'नही।'

'सो मैं जानती थी !—जब तुमसे सोने की आशा की थी, तब भी यदि नही सो सके, तो इस समय कैसे सो सकोगे !—तब तो,—शायद मुझे आखे खोलकर देखना भी नही चाहते ?'

नटनागर ने आखे खोल दी, उनमे भरी हुई बूदे साथे प्रकाश की किरणो मे व्यथा का एक सिन्धु उद्‌भासित कर रही थी, कमला उस प्रवाह को सह नही सकी, उसने दृष्टि नीची कर ली। नटनागर ने गिरी हुई आवाज को यथासाध्य उठाकर कहा :

'कहो, क्या कहना चाहती हो ?'

'तुम कुछ कहना नही चाहते ?'

कमला ने आखो को कुछ उठाया, दृष्टिया चार हुई, नटनागर कुछ न बोले केवल आख का बिन्दु गाल पर आ लगा।

कमला ही ने कहा, 'मुझसे घृणा करते हो, यही न ? करना ही चाहिए !—'वह और पास चली आई 'हाथ के पास छुरा अभी भी रखा हुआ है ! जिस इरादे को लेकर दादू से झगड़ बैठे, मै खडी हू, वह अभी पूरा कर लो। कोई बाधा नही देगा !'

नटनागर तब भी चुप—आसू की बूदे आखो की कोटरो मे इकट्ठी होने लगी, फिर कनपटियो की राह एक-एक कर नीचे तकिये का अभिषेक करने लगी। दृष्टिया तब भी दोनो की एक दूसरे से मिली हुई—नटनागर की दृष्टि जिन्हे शिकार करने के लिए आवाहन किया जा रहा था, भीत मृग की तरह आकुल, और जिसका शिकार होना था, उस

कमला की आखे क्रुद्धा दर्पिता बाघिन की तरह चमत्कृत !

कमला ही ने कहा, 'डर रहे हो ?—हाथ काप जाएगा ?—जीवित रहने के लिए हृदय कठोर हो सकता है, किन्तु मृत्यु के लिए यह काफी कोमल होगा, कापते हुए हाथो भी इसे बडी सरलता से विच्छिन्न कर सकोगे ।'—और तब झुककर उसने पास पडे हुए छुरे को उठाना चाहा —नटनागर ने हाथ पकड लिया । कमला कहती रही .

'नही, चीखूगी भी नही; मैंने अपने आपको इतना मजबूत बना लिया है !' वह नटनागर के शरीर पर झुक चुकी थी ।

नटनागर के मुह से निकला, 'कमला !'

'जीभ को पवित्र करना पडेगा । उस दिन दावत मे कहा तो था कि स्वैर स्त्री को त्याग दिया जाना चाहिए !—लेकिन—यह क्या ? तुम्हे तो ज्वर हो रहा है ?'—और तभी उसके मुह का भाव एकदम बदल गया । वह उठी, और शीघ्र ही टेबल की दराज मे से थर्मामीटर निकाल लाई ।

नटनागर ने कहा, 'इस अभिनय की क्या जरूरत है । यह छुरा मैंने इसलिए पास रख छोडा है कि प्रात काल के पहले दादू पुलिस मे जाकर रिपोर्ट करे, तुम उसके बयान की गवाही दो, और मै कहू कि इस छुरे से मैंने आक्रमण किया था ।—एक क्षण के लिए आत्महत्या करने को भी जी चाहा था, किन्तु दुनिया तो देखे कि जिस स्त्री को वह देवी, आदि माता, कोमलता की अवतार, न जाने क्या-क्या कहती आ रही है, और जिसकी भक्ति करते फूली नही समाती, प्रकृत रूप मे वह कैसी खूखार, हिंसा की मूर्ति और छल तथा प्रतारणा की अवतार है !—मेरे हाथो मे हथकडिया हो, पैरो मे बेडिया, गले मे फासी का फन्दा—और तुम उस कमल के गले मे हाथ डालकर स्फीत अधरो से मेरे उस महाप्रस्थान के दृश्य को देखो....'

वे कहते रहे—कहते-कहते थक गए, उनसे अधिक बोला न जा सका, किन्तु मानो कमला ने कुछ न सुना । उसने प्राय: जबर्दस्ती ही थर्मामीटर

लगाकर देखा, तापमान १०५ डिग्री था। सिर पर हाथ रखा, वह तवे की तरह जल रहा था। उसने अपेक्षा न की, शीघ्र ही अपने कमरे मे से यूडीकॉलोन की पट्टी भिगोकर नटनागर के माथे पर रख दी। फिर उसने उनके हाथ मे से छुरे को लेकर एक तरफ दूर रख दिया। इस बार नटनागर ने आखे नही खोली। इसके बाद ही कमला ने चादर से पुन उनके शरीर को ढाक दिया। तब वह भीतर जाकर एक गिलास मे थोडी ब्राडी पानी मे मिलाकर ले आई। नटनागर ने इनकार नही किया, एक निरीह शिशु की तरह वह उसे गले मे उतार गए।

दूसरे दिन नटनागर का जाना नही हो सका। घर पर डाक्टर आया, उसने नटनागर का उपचार किया, और दादू का उपचार भी किया गया। रात को दादू लघुशंका करने उठा, एक तीखे पत्थर से टकरा कर गिर जाने से उसके हाथ मे गहरी चोट आई, चोट विशेष भयानक नही थी। दस-पन्द्रह दिन मे ठीक हो जाएगी। यह कहानी स्वय दादू ने कही। रात को उसकी मालकिन ने मरहम-पट्टी करके उसका उद्धार ही कर दिया था। कमल दिन भर कही नजर नही आया ! शायद वह उस दिन बाहर गाव चला गया।

कही सध्या को जाकर नटनागर का तापमान औसत हुआ। कल की सारी रात और आज दिन भर कमला नटनागर की सुश्रूषा मे लगी रही, उसने एक क्षरण के लिए भी विश्राम नही किया, स्कूल भी वह उस दिन नही गई। दादू आधा बीमार तो था ही, पर न जाने एक कैसी वितृष्णा उसके मन पर सवार हो गई थी कि शरीर के इस अवसाद को कुछ न समझते हुए भी, उसने घर के किसी कामकाज मे दिलचस्पी नही ली। कमला ने उससे पूछा अवश्य था, खाना उसने भी उस दिन नही खाया, किन्तु दूध की व्यवस्था कमला ने उसके लिए भी कर दी थी। दादू अपनी कोठरी में ही सारा दिन पडा रहा।

शाम को सात बजे कमला ने देखा कि नटनागर का तापमान अब ठीक हो गया है, और वे नीद मे लेटे हुए हैं, तो वह भी वही पास मे नीचे

एक दरी बिछाकर घर के खिडकी-दरवाजे बन्द करके पड रही। थकी हुई थी ही, लेटते ही सो गई। और रात के दो बजे तक बराबर सोती रही। एक बार भी नही उठी।

उठते ही कमला ने देखा कि अंधेरा हो रहा है, तो उसने बत्ती लगाकर घडी देखी। दो बज चुके थे। उसने नटनागर के पलग के पास जाकर उनके माथे पर हाथ रखा। तापमान औसत ही था। उसने पुन. उन्हे अच्छी तरह उढा दिया। पुनः प्रकाश बन्द करके वह उसी दरी पर लेट गई, कि तभी नटनागर ने कहा :

'कमला !'

कमला चौक उठी, पर बोली नही।

'मैं जाग रहा हूं, और जानता हू कि जो कुछ मैं कह रहा हू तुम उसे सुन रही हो।'

'कहो, क्या कहना चाहते हो।'

'कल तो मैं नही जा सका, आज मैं चला जाना चाहता हू। तबियत भी अब तो ठीक ही मालूम दे रही है।'

'एकाध दिन यदि और विश्राम कर लोगे, तो क्या बहुत हानि हो जाएगी ?'

'मेरी तो केवल तनख्वाह की हानि है, किन्तु तुम्हारे अध्ययन की हानि जो होगी।'

कमला कुछ न बोली। कुछ देर रुककर पुन: नटनागर ने कहा, 'देखता हू, वह छोकरा भी कही मुह छिपाए बैठा है। शर्म के मारे बाहर से लौटा भी नही। दिन भर ही उसके दरवाजे ताला लगा देखा है। बडा शर्मीला है। लेकिन यदि वह तुम्हे देख लेता, तो शर्म करने की उसे आवश्यकता ही क्या थी ?...' नटनागर एक क्षण के लिए रुक गए !

कमला ने कहा, 'झूठी शर्म से बेशर्म होना अच्छा।'

'यदि झूठी न हो तो शर्म ही क्या हुई ?—और यह शर्म, यह मिथ्या

ही तो स्त्री का भूषण है ! और तुम हो स्त्री जाति की रत्न !'

कमला ताने को सह नही सकी, बोली, 'तुम जो पुरुष जाति के रत्न हो ।'

'मैं रत्न होता तो तुम्हारे गले मे होता, तुम हो इसलिए मेरी कामना के गले मे फासी लगाते हुए भी छोडी नही जा सकती ! किन्तु तुम्हारे साहस का मुझे लोहा मान लेना पडेगा । उस दिन शाम को स्त्री-चरित्र पर शर्मा ने जो कहानी कही थी, याद है न तुम्हे ?'

कमला ने कोई उत्तर नही दिया ! नटनागर कहते रहे

'शर्मा की उस कहानी मे मनोविज्ञान रहा हो । किन्तु जो अभिनय तुम गत चौबीस घटो मे कर गुजरी हो, उसे किस विज्ञान का नाम दिया जाए ?'

कमला अधिक न सुन सकी, वह उठी और अधेरे ही मे दरवाजा खोलकर अपने कमरे मे चली गई । नटनागर का क्रोध तार सप्तक पर जा पहुचा । चिल्लाकर बोले—'उस कमरे मे चले जाने मात्र से समस्या का हल नही हो जाता कमला ! खैर, तुम आराम करो, किन्तु मेरा निश्चय सुन लो—देख-सुनकर कोई मक्खी नही निगल सकता । तुम्हे मैं अपने साथ बम्बई लिए चल रहा हू । तुम्हे तैयारी करने मे यदि समय की जरूरत हो तो मै एक दिन और ठहर लूगा । आज ही अपना चार्ज देकर चौबीस घटे का नोटिस तुम्हें देना है । सुन रही हो न ?'

उत्तर मे कमला स्वय कमरे मे आ उपस्थित हुई । इस बार उसने अधेरे की अपेक्षा न की । स्विच दबाकर कमरे मे उसने प्रकाश कर दिया । देखा कि खिडकी बन्द थी ही । पास रखे हुए स्टूल को उसने ठीक नटनागर के मुह के सामने खीच लिया और उसपर बैठते हुए अपने तमतमाते हुए चेहरे को ठीक प्रकाश के सामने करके कहा :

'अब सुनाइए जो कुछ सुनाना चाहते है । दासी सुनेगी !'

'सुना नही ?—तुम्हे मेरे साथ बम्बई चलना है !'

'और यदि मैं इनकार कर दू !'

'मैं तुम्हारा पति हू कमला ! पचो के सामने मैने तुम्हारा हाथ पकडा है, अग्नि के सामने हमने कसम खाई है ।'

'कसम क्या आपने खाई थी ? मैने खाई तो याद पडती नही—शायद हमारी ओर से पुरोहित ही ने खाई थी । फिर कसम का क्या ? उसके पहले भी मैने बहुतेरी कसमे खाई थी, बाद मे भी खाई है—और जरूरत पडने पर अब भी खा सकती हू !'

'लेकिन पच !'

'वे बेचारे नही जानते कि जिसे उन्होने पति करार दिया है, उसकी योग्यता क्या है !'

'कमला ! तुम मेरी बीमारी का मजाक उडाना चाहती हो, अपनी वासना को छिपाकर !'

'और मेरे नारीत्व का मजाक खूब हसकर उडाया जा सकता है !' फिर कुछ क्षण चुप रहकर कमला ने दृष्टि नीची करके कहा, 'नारी को जब कोई गलत समझता है, तो कितने बडे अभिशाप से उसे ढक देता है, यह कौन जानेगा !' और वह स्टूल पर से उठ खडी हुई । उधर एक कोने मे फूलदान के लिए एक ऊचा स्टूल रखा हुआ था । महरी शाम को बासी फूल फेककर फूलदान को साफ करने के लिए उठा ले गई थी । कमला ने जाकर उसका सहारा ले लिया और अपने सिर को उसपर छिपाकर मानो अपने ही आपसे कहने लगी ।

'स्त्री की वासना को सबने धिक्कारा, उस पुरुष ने जो अपनी निज की वासना पर नियन्त्रण नही कर सका—उस पुरुष ने भी, जो नारी की उस वासना को सतुष्ट न कर सका । वह जाए तो कहा, करे तो क्या ! उसे नारी बनाया, उसे रूप की आग दी, स्नेह की प्यास दी, उसे ममता का शून्य दिया, उसे यौवन की फिसलन दी, उसे कोमलता का आयुध दिया—और फेक दिया उसे सूखे घास के ढेर मे, भूखे भेडियो के बीच ! मुझे जब रूप की आग मिली, तो तुमने उसे वासना का पवन दिया, स्नेह की वृष्टि नही; यौवन के फिसलते मार्ग पर जब मैं खड़ी हुई तो

तुमने मुझे धक्का दिया, हाथ नही थामा, जब मुझे स्नेह की प्यास मिली, तो तुमने मुझे फैशन की आग पिलाई, करुणा के आसू न दिए; जब मुझे मां की ममता मिली, मेरे पुत्र को तुम खा गए, मुझे रक्षा का वरदान नही दिया, जब मुझे सहानुभूति की प्रेरणा मिली, तुमने मुझे मार्ग नही दिखाया, बल्कि ईर्ष्या से तुम उबल पडे—और आज मेरे विचारक बनकर मुझे दण्ड देना चाहते हो ?—दो ! मै मरना चाहती हू, किन्तु मुझे तिल-तिलकर न मारो—मेरा कण-कण विद्रोही होना चाहता है—मैं घृणा करना चाहती हू, अपने आपको—पर कैसे करू ! यदि मैं अपने आप से घृणा करना सीख जाऊ तो यह सारी मनुष्य जाति मेरे लिए घृणा की वस्तु हो जाएगी ! तब—क्या मै प्रलय की आग बनकर इसे भस्म करने मे प्रवृत्त हो जाऊ ! नही, नही—मै किसीसे घृणा नही कर सकती । मुझे प्यार का दण्ड मिला हुआ है, यह दण्ड मुझे मरने भी नहीं देता—लो, तुम्ही मुझे मार डालो—मार डालो—यदि मेरे पति हो तो इतना ही करो—मुझे क्यो इतना दु ख दे रहे हो ?'

और यह कहती-कहती कमला वही पर अचेत होकर फर्श पर गिर पडी । नटनागर उठकर दौडे । उसे उठाया, वह तब भी बेहोश थी । सिर पत्थर से टकरा गया था । नटनागर ने हथेली से उसे दबाने की चेष्टा की, पर वह फूलता जा रहा था । नटनागर ने देखा कि कमला तब से ज़ार-जार हो रही थी। उसका सारा चेहरा विषण्ण हो उठा था !

नटनागर ने अपने रुग्ण और कमज़ोर शरीर से ही चेष्टा करके कमला को उठाया, और अपने पलग पर ले जाकर लिटा दिया । अपने दोनों हाथो मे चेहरे को दबाकर वह देर तक उस ओर देखते रहे । उसके बालो को उन्होने ठीक किया, और एकाएक ही उन्होने उसके अधरो पर अपने अधर रख दिए ! धीरे-धीरे प्रभात की ठण्डी पवन उसके शरीर से लगने लगी, और वह चेत मे आ गई, किन्तु नटनागर ने कहा, 'कमला, बोलने की चेष्टा न करो । आंखें बन्द करके सो रहो ।'

दू सरे दिन नटनागर अपना बोरिया-बसना बाधकर बम्बई चले गए ।

१७

बडे-बडे दार्शनिक जो कह गए हैं कि जगत का यह जीवन एक अनवरत प्रवाह है, सो सत्य ही है, किन्तु यह प्रवाह किसी ढालू जमीन पर नही है, यह प्रवाह है वस्तुत उर्ध्वोन्मुख, आरोही। यदि ऐसा न होता और जीवन केवल प्रवाह मे ही बहता रहता, तो उसकी कोई निज की गति न रह पाती, और न ही उसका उत्थान हो पाता।

इसीलिए जब मास और वर्ष बनकर दिन बीतने लगे, तो परिवर्तन ने किसीको अछूता न छोडा। मिसेज़ नटनागर आगे पढती रही, मेधावी थी ही, ग्रेजुएट हो गईं, इधर पाठशाला भी बढकर हाई स्कूल होना चाहती थी। मिसेज स्मिथ का इसी बीच विवाह हो गया था, वे अब मिसेज राब्सन हो गई हैं। चूकि मिस्टर राब्सन क्षेत्रीय कार्यालय के कारखाने से सम्बद्ध था, मिसेज़ रॉब्सन का तबादला हो गया, और मिसेज़ कमला नटनागर वहा की प्रधानाध्यापिका बन गईं।

श्री नटनागर के बम्बई चले जाने के उपरान्त लगभग तीन माह तक कमलनयन जोशी छुट्टी पर रहा। जब सब प्रकार की सवेतन, अर्द्ध वेतन वाली छुट्टी शेष हो गई, तो उसे क्षेत्रीय कार्यालय मे उपस्थिति देनी पडी, दो-चार महीने तक उसने जी-तोड़ परिश्रम किया। अधिकारियो की जल, पत्र-पुष्प से पूजा-अर्चना भी की, और यद्यपि उसकी ग्रेड कम हो गई, किन्तु वह अपना पुन तबादला करवाने मे समर्थ हो गया। परमानेण्ट बे-इन्स्पेक्टर, पी. डब्लू आई (परमान्त पथ निरीक्षक) का आवास (हेड क्वार्टर) वही था, उसके छोटे-से दफ्तर मे एक क्लर्क-कम-टाइम कीपर की आवश्यकता रहती थी। कमलनयन की वही नियुक्ति हो गई। कमला के अध्यापन मे किसी प्रकार की हानि नही हुई। कमल के त्याग को कमला बराबर समझती है, उसने केवल कमला के लिए ही यहा अपना तबादला करवाया, इसके लिए लोगो की खुशामद की, रुपया खर्च किया, और वह तो यहा तक कहता है कि यदि उसका तबादला न होता,

तो वह त्याग-पत्र ही दे देता। बहरहाल उसने उन्नति के सभी अवसर तथा अच्छी ग्रेड का त्याग तो स्पष्ट रूप से किया ही था।

श्री नटनागर बम्बई के जीवन मे लहरो के साथ जूझने वाले सूखे पत्ते की तरह कभी इधर-कभी उधर ढकेले जाने लगे। छोटे गाव और छोटे आफिस मे उनकी पूछ थी, नाई की बरात मे अपने आपको ठाकुर समझते थे, किन्तु बम्बई मे कुछ ही दिन के बाद उनका मध्यवित्त समाज के क्लर्क के साहिबी दिमाग का पारा एकदम नीचे उतर गया। कहते हैं, वहा पर काम को नही पूछा जाता, पूछी जाती है केवल तिकडम की ताकत, और छक्के-पजे की कुशलता। नटनागर छक्के-पजे की कला मे तो निष्णात थे, बाबूगिरी उनके बाप-दादो की विरासत मे पाया हुआ पेशा था, किन्तु तिकडम लड़ाने की ताकत उनमे न थी। इसके उपरांत भी अपने छक्के-पजे का ज़ोर वे तभी आजमा सकते थे, जब करने को उन्हे महत्वपूर्ण काम मिलता। फिर उनकी महत्वाकाक्षा ने शीघ्र ही उन्हे अपने समाज मे दुश्मन बना दिया।

इसके अतिरिक्त रहने को उन्हे मकान नही मिला। एक तम्बू मे अन्य कई क्लर्को के साथ पडे हुए थे। मकान की खोज बम्बई जैसे शहर मे ? कलियुग मे भगवान की खोज सरल है, किन्तु मकान की खोज कठिन! यदि कही एकाध मकान उनकी रुचि का मिला तो उसका किराया उनकी तनख्वाह के बराबर। अतः उनका जर्जर स्वास्थ्य जर्जर आवास और जर्जर परिस्थितियो मे उनकी भावना का साथ न दे सका हो, तो कोई आश्चर्य नही। किन्तु उन्होने अपनी परिस्थितियो का जिक्र किसीसे नही किया। अब वे कमला को लव लेटर्स नही लिखते—कमला के पत्र का उत्तर वे अवश्य देते हैं, किन्तु केवल औपचारिक उत्तर। 'लव लेटर्स फ्रॉम कमला' की अभ्र-भेदी कल्पना उनकी धूलिसात् हो चुकी है, मानो वे कमला ही से नही, समस्त ससार से अपना अस्तित्व समेट लेने की चिन्ता मे हो। शायद इस लम्बे-चौडे शहर मे ही नही, इस समस्त मुक्त आकाश के नीचे वे अपने आपको नितान्त अकेला, निस्सहाय और

परित्यक्त अनुभव करते थे और अपने सुख-दु ख मे वे अब किसीको साझीदार नही बनाना चाहते थे ।

नटनागर का यह अध्ययन मेरा व्यक्तिगत है। मेरे त्याग-पत्र को स्वीकृत हुए दो साल होने आए थे, किन्तु मेरा हिसाब-किताब अब भी तै नही हुआ था। इसी सम्बन्ध मे मुझे बम्बई जाना पडा। तब श्री नटनागर ने उपनगर मे एक सस्ते-से मकान की व्यवस्था कर ली थी, साथ मे उनके एक और बाबू था, दोनो मिलकर किराया चुकाते थे। भोजन का प्रबन्ध एक मेस मे था।

विभागीय अध्यक्ष से मिलने के बाद, चक्कर लगाता हुआ मै नटनागर से अनायास ही मिल गया। एक बडे भारी हॉल मे पक्तिवार डेस्के लगी हुई, जिनके बीच मे कागज़ रखने के लिए 'रेक' बने हुए थे। दोनो ओर क्लर्कों की पक्तिया थी। प्रत्येक क्लर्क फाइलो के अम्बार मे सिर नीचा किए अपने आप मे खोया हुआ-सा लग रहा था। यो, नटनागर को उस पक्ति मे से ढूढ निकालना सरल न था, और खासकर तब, जबकि मैं उन्हे खोज भी नही रहा था, किन्तु जिस समय मै गुज़र रहा था, उसी समय सयोग से उन्होने चपरासी को बुलाने के लिए सिर उठाया, और चपरासी की जगह मै उनकी दृष्टि को पकडा गया। मै अपने ही ध्यान में चला जा रहा था, कि कधे पर पीछे से किसीने हाथ रखा, और चौककर पीछे मुडकर देखता हू तो नटनागर थे। इतनी नैसर्गिकता उनके व्यवहार मे पहले मैने कभी नही देखी थी। अभिभूत हो गया।

सध्या का खाना उन्हीके साथ उनके मेस मे खाना पडा, फिर पकड-कर अपने घर ले गए। मै एक होटल मे ठहरा था, इसलिए कठिनाई कुछ न हुई, केवल मैनेजर को कह भर देना पडा। एक पूरा दिन और पूरी रात बिताई उनके साथ मैने।

कमरा काफी बडा था। पार्टीशन के बाद भी कमरे मे दो खाट इतनी जगह थी। एक छोटी-सी टेबल और दो कुर्सियां, जो दोनो व्यक्तियो के पारस्परिक उपयोग की थी, पार्टीशन के दूसरे बाजू मे

भिजवा दी गई थी। दूसरे दिन मालूम पडा कि मि० नटनागर ने दूसरी खाट अपने साथी से एक रात के लिए ले ली थी—यानी उनको उस रात फर्श पर ही सोना पड़ा। मुझे इसके लिए लज्जा रही ही, जो उनसे क्षमा मागने पर भी नही जा सकी। उत्तम तो यह होता कि नटनागर और मै उस रात फर्श पर ही सो रहते।

कमरे मे पखा न था। खिडकिया खोल देने के बाद भी राहत नही थी। नटनागर से कहकर सवेरे का अखबार मागा, उसीसे पखे की ज़रूरत पूरी की। फिर मच्छरो ने अपना सगीत सुनाना आरभ किया, लाचार एक पतली चादर से बदन को ढकना पडा। जब रात के दस-ग्यारह बजने को आरभ हुए तो खाट मानो सजीव हो उठी, बिस्तर के नीचे से जाने कहा से खटमलो ने हमला बोल दिया। परेशान देखकर नटनागर हस दिए, वही मुक्त हसी १८० डिग्री की, और बोले :

'भाई, यह बम्बई है, यही तो यहा का तोहफा है। यही नही, घर भी ले जाना होगा, और बच्चे वगैरा सब बम्बई के इस तोहफे को कई दिन तक याद रखेगे।'

'लेकिन· '

'तुम्हारे होटल मे इससे भी अधिक कसरत से होगे। वहा तो इनका अखूट राज्य है! जिस खाट मे ये रहते हैं, बस 'मेन मे कम, मेन मे गो, बट आइ गो ऑन फॉर एवर !'

—किन्तु इस समस्त परेशानी के बावजूद कहना चाहिए, रात बहुत अच्छी तरह कटी। नटनागर का एक नया परिचय मिला!—नीद का अभाव भी बिल्कुल नही खला।

मैने उनको घर के हाल सुनाए। मिसेज़ नटनागर की लोकप्रियता, उन्नति, बुद्धिमत्ता आदि का अतिरजित वर्णन किया, किन्तु मि० नटनागर उदासीन भाव से सुनते रहे। उसके अध्यापन-अध्ययन की बातो मे भी उन्होने उत्साह नही दिखाया, तो मैने विषय बदलकर मित्रो की चर्चा आरम्भ कर दी। जिनके बारे मे मै जानता था, मैने कहा; जिनके बारे

मे नटनागर जानते थे नटनागर कहते रहे। बात चल पडी श्री धर्मप्रकाश के सम्बन्ध मे।

नटनागर ने कहा, 'ग्रोह मि० धर्मप्रकाश !—वे मज़े तो अब कहा है !—पहले तो तीन-चार नौकर सदा ही सेवा मे रहा करते थे, अब तो रामू को भी अपने पास से तनख्वाह देनी पडती है !'

मैने कहा, 'भाई, नौकर की बात जाने दो, नौकरी के क्या हाल-चाल है ?'

'नौकरी के क्या हाल होगे ! जो हमारे है, वे सभी के है।'

'लेकिन वे तो अधिकारी ··'

'अधिकारी हो या कर्मचारी ! प्रादेशिकता की भावना सभी जगह काम करती है। उन्हे प्रस्थापित तो किया था तृतीय श्रेणी मे। यहां एक साल तो वे अधिकारी पद पर जैसे-तैसे काम करते रहे, रहने को मकान तक न था। सैलून (निरीक्षण-गाडी) के एक प्रकोष्ठ मे बेचारे बच्चो-कच्चो सहित किसी तरह दिन गुजार रहे थे, कि उन्हे तीसरी श्रेणी के क्लर्कों में काम करने का आदेश मिल गया। चार माह तक की छुट्टी रहे, बहुत दौड-धूप की, तब कही जाकर पुनः उन्हे द्वितीय श्रेणी मे 'आफिशिएटिंग चास' मिला है !—और अब तो उनको वहां से भी कारखाने मे बदल दिया गया है।'

'कारखाने मे ?'

'हा, सहायक नियुक्ति-अधिकारी की जगह पर !'

'चलो अच्छा है ! सच तो यह है भाई नटनागर, कि अपमान की अपेक्षा अपमान का अनुमान ही अधिक खतरनाक है !—रहा प्रश्न हानि-लाभ का, सो तो साफ है। राजनीति का खेल है, नाम लिया जाता है, जनता का; काम होता है नेता का। इस विलीनीकरण से भी लाभ तो शिखर-स्तरीय अधिकारियो का ही हुआ है, और राष्ट्रीय व्यय मे कोई बचत भी नही हुई। इधर प्रशासनिक प्रवणता का भी दिवाला निकलता चला जा रहा है। बहरहाल बाते काफी बड़ी-बडी हो रही हैं।'

नटनागर ने कहा, 'कुछ अशो तक तुम्हारा कहना सही है, किन्तु सदैव तो यह पोल चलने की है नही ! जानते हो तुम्हारे महा व्यवस्थापक का क्या हुआ है ?'

'नही तो !'

जितना पैसा उन्हे रियासत की नौकरी का अधिक मिला था, वह सब वसूल हो गया, और उधर वरिष्ठता (सीनिओरिटी) से भी गए। कई ठेकेदारों ने भी समय देखकर अपनी दरखास्ते पेश कर दी। बदनामी के मारे मुह दिखाना भारी हो रहा है। अभी छ माह बाकी है, पर हो सकता है, पहले ही अवकाश (रिटायरमेट) माग ले।—तुमने गलती की, अगर उस समय अपनी जगह का दावा कर देते, और त्यागपत्र न देते, तो तुम्हे भी अवसर मिल जाता।'

मैने नटनागर को धन्यवाद दिया, और कहा, 'यही न कि तुम्हारी तरह या धर्मप्रकाश की तरह मै भी इस तम्बू से उस तम्बू मे बिस्तर उठाता फिरता ?'

'पर तुम्हे क्या है ?—तुम अकेले जीव ठहरे—या कही अटक बैठे ?' और वे वही १८० डिग्री का हास अधरो पर बिखेरने लगे।

मैने कहा, 'अटका हुआ होता तो कम से कम झटका न खाता। लेकिन अकेला हू, इसीलिए इच्छा होते ही त्यागपत्र दे सका, और अब लिखता हू, पढता हू। मन हुआ बम्बई चला आया, जब तक मन रहेगा यही रह सकता हू। किसीकी चिन्ता नही, फिकर नही। कोई पूछने वाला नही ! क्या यह जीवन बेहतर नही है नटनागर ?'

नटनागर ने मानो अलक्ष्य मे एक लम्बी सांस छोडी और बोला, 'सो तो ठीक है, किन्तु फिर भी—अच्छा एक बात बताओ।'

'पूछो।'

'तुम्हे यह सब कुछ लिखने के लिए प्रेरणा कहा से मिल जाती है ?'

मैने हंसकर कहा, 'प्रेरणा ?—प्रेरणा वास्तव मे किसे कहते हैं, यह मैं नही जानता—तुम्हारा तात्पर्य 'अर्ज' से है या 'इन्स्पिरेशन' से ?

'अर्ज' का प्रश्न हो, तो कहूगा कि यह एक आदत हो गई है। जब तक कुछ लिख नही लिया जाता, खोया-खोया-सा महसूस करता हू। फिर अब तो नौकरी भी नही रही। इसी तरह कुछ पैसे मिल जाते है, तो शरीर की आवश्यकताए जुट जाती है।—बस उसी तरह जैसे तुम्हे विवश होकर दस बजते ही दफ्तर जाना पडता है—पर फिर भी दोनो बातो मे अन्तर तो है ही। तभी तो दफ्तर जाने की विवशता को स्वेच्छा से त्यागकर लिखने की विवशता ही को मैंने स्वीकार किया। वह केवल इसलिए कि इसमे मन रम जाता है। मन इसमे अधिक क्यो रमता है, इसे भी समझने की कोशिश करता हू। बचपन ही से शायद मैं सपनो के महल बनाता रहा हू, उन दिवा-स्वप्नो के लिए भी सोचता हूं, मेरा वातावरण जिम्मेदार है, जिसकी मनोवैज्ञानिक ऊहापोह करने की शायद जरूरत नही है। बस, फिर शिक्षा का प्रसाद मिला, शब्दो ने सहायता की, और मै चिन्दिया लेकर बन बैठा बजाज। बस यही सब कुछ तो है।'

नटनागर ने कहा, 'हिन्दी मे दोनो के लिए एक ही शब्द है शायद 'प्रेरणा'—पर तुमने उसका एक पहलू तो स्पष्ट कर दिया है, दूसरे पहलू के बारे मे क्या कहते हो?—पर देखो—डॉण्ट बी सो मच एकेडेमिक ऐण्ड सौफिस्टीकेटेड इन योर रिप्लाई।—(अपने उत्तर मे इतने शास्त्रीय और ढके मत रहना।)

'मतलब?'

नटनागर ने हंसकर कहा, 'रोज ही तो सुनते है कि 'रमणी' के बिना रमणीय भावो का विकास सम्भव ही नही है। रमणी या तो मर-कर प्रेरणा बनती है या कलाकार को मारकर—तुलसीदास, सूरदास और उधर सुकरात, अब्राहम लिंकन, कार्ल मार्क्स—सभी नाम तो तुमने सुने है?'

मै भी हस दिया, बोला, 'जो लोग 'रमणी' के बिना रमणीय भावो का दर्शन नही कर सकते, वे भी है तो साहित्यिक ही, क्योकि उनके लिए

अभी तक और कोई नाम ईजाद नही हुआ। किन्तु 'रमणी' के प्राप्त होते ही वे 'चुक' जाते है, और रमणी के अभाव मे कुछ ही दूर चलकर उन्हे रुक जाना पडता है। उनका साहित्य 'सेक्सीय' ही नही वस्तुतः बरसाती भी होता है। किन्तु तुमने तुलसीदास, सुकरात जैसे नाम भी गिना दिए है! भाई, मै तो यह मानता हू कि 'रमणी' इनके जीवन मे इन्स्पीरेशन नही थी, वह केवल उनकी सामर्थ्य के लिए टर्निग पॉइण्ट (मोड का बिन्दु) साबित हुई। शक्ति के ऊपर शायद नारी का रूप या उसकी सहानुभूति छाए हुए थे, उसके हटते ही उन्हे अपने मूल स्वरूप के प्रवाह मे बह जाना पडा।—अपने लिए शायद यह कहू, कि सामर्थ्य का प्रवाह तो मुझमे कभी है नही, पर हा, हृदय का गीलापन तो है ही—वह धीरे-धीरे सदा से ही बूद-बूदकर टपकता रहता है! यही मेरे लिए काफी है।'

नटनागर ने कहा, 'लो मज़ाक ही मजाक मे तुमने तो अपनी सृष्टि-रचना का विश्लेषण ही कर दिया। सचमुच साहित्यिक हो भाई। मै भी कभी लिखने की सोचता था, पर अब मन ही नही होता।'

'सच ?—क्या लिखना चाहते थे ?'

'विशेष कुछ नही। केवल पत्रो के रूप मे कुछ हृदय के गुबार उडाना चाहता था, पर हिन्दी मे नही, अग्रेजी मे।—हिन्दी की शायद मुझे आदत ही न हो।'

मैंने कहा, 'आदत तो डालने से होती है··'

'जब से स्कूल छोडा, हिन्दी लिखने का अवसर ही नही आया। प्रभाकर की परीक्षा मे लिखना पड़ा था पर आदत न होने ही से डिवीजन खो बैठा।'

'भाषा का प्रश्न तो खैर बाद का है।'

बीच ही मे नटनागर ने कहा, 'नहीं बाद का भी नही। बात यह है, माफ करना, अग्रेजी की कुछ छटा ही अजीब है। बहुतेरी ऐसी बाते है कि हिन्दी मे उन्हें ठीक तरह लिखा ही नही जा सकता।'

'ठीक कहते हो, उसी तरह जिस तरह कई बातो को अग्रेजी मे नही लिखा जा सकता, किन्तु हिन्दी मे बखूबी लिखा जा सकता है।—सवाल भाषा का ही नही, सवाल यह भी है कि हम किसके लिए लिख रहे हैं?—यदि हम भारतीयो के लिए लिख रहे है तो हमें भारतीय भाषा ही में लिखना चाहिए क्योकि भाषा केवल भावो ही का वहन नही करती, वह सस्कृति का भी वहन करती है।'

नटनागर ने हसकर कहा, 'अब तो वह इरादा ही नही रहा।—भाषा का तो प्रश्न ही गौण है।'

मैंने भी हसकर कहा, 'क्यो ?—क्या अब प्रेरणा-स्रोत सूख गया है ?'

जाने क्यो नटनागर के मुह पर एक छाया-सी पुत गई, यह उस समय मै नही समझ सका किन्तु रात्रि के प्रायान्धकार के बावजूद मैं उसे भाप गया। फिर भी मानो उन्होने अपने को सम्हाल लिया और बोले—'उमर, स्वास्थ्य, परिस्थितिया—ये सभी कुछ भी तो कुछ प्रभाव डालती ही है।'

मैंने कहा, 'किन्तु रमणी की माया के आगे इनमे से किसीकी नही चलती। यह मैं खूब जानता हू और तुम भी जानते होगे!—कहो, क्या बम्बई मे सिर्फ सूखा जीवन ही बिता रहे हो ?'

'सूखा और गीला किसे कहते है, यह क्या मुझे समझना है ?—यही मेरे बारे मे तुम्हारी धारणा है ?' ...

नटनागर को चोट पहुचाने का मेरा इरादा न था, बात बिल्कुल ही मज़ाक मे थी। मैंने कहा :

'तीन बरस होने को आए तुम्हे यहा!—किसीने कहा था, किसी लडकी की ट्यूशन-व्यूशन भी करते हो!'

'ट्यूशन ?—लडकी की ?—किसने कहा ?'

'यही रास्ते चलते ही सुना था किसीसे!'

'ट्यूशन तो खैर करता हू, सवेरे ही जाऊंगा। बम्बई मे कुछ तो

करना ही पडता है भाई, नही तो पेट कैसे भरे।—पर लडकी की करता हूं, यह किसने कह दिया।'

'खैर, किसीने कहा हो। जो झूठ बात है, उसके लिए दर्देसर की ज़रूरत नही। पर तुम्हे इतनी मेहनत नही करनी चाहिए नटनागर!—खासकर अपने इस स्वास्थ्य मे—अब तुम्हे चिन्ता ही क्या है?—खर्चा तो तुम्हे अपना ही निकालना है। मिसेज नटनागर अपना बोझ आप सम्हाल ही लेती है।'

'हा, सो तो ठीक है, पर बम्बई के खर्चे का अभी तुम्हे शायद अनुमान नही है!—फिर शायद तुम नही जानते, मुझे बूढी मा को भी कुछ खर्चा भेजना पडता है।'—और यह कहकर उन्होने उठती हुई एक लम्बी सास को दबा लिया। फिर बोले—'तुम उसे नही जानते!—हर मा अपने बेटे को चाहती ही है, उसमे नया कुछ नही किन्तु मेरी मा के लिए मैं क्या हू, यह मै ही अनुभव कर सकता हू। और मैं उसे कभी सुख नही पहुचा सका। अब तो वह प्राय अन्धी ही हो गई है फिर भी कैसी विवशता है कि मै उसकी कोई सेवा नही कर सका।'—और मानो दु ख के आवेग में वे अभिभूत हो गए।

मैने कहा, 'यदि उन्हे दिखाई नही देता, तो वहा अकेले उन्हे असुविधा नही होती होगी?'

'क्यो नही होती?—और इसे बीसवी शताब्दि का अभिशाप कहना चाहिए कि यौवन के आरम्भ मे मनुष्य की आखो मे जो रंगीनी छा जाती है वह मा की वेदना को समझने ही नही देती।—वह किसी वस्तु की कीमत उसे खोकर ही समझ सकते है। या जब हमे वास्तविक वस्तु के बदले नकली वस्तु मिल जाए।'

'तुम्हारा मतलब मैं नही समझा।'

नटनागर किनारा काट गए। बोले, 'इस ट्यूशन मे मैं एक और सिद्धि की आशा कर रहा हू क्योंकि यह ट्यूशन है यहा के उपप्रधान इजीनियर के लड़के की।'

'उपप्रधान इजीनियर ?'

'हा, मिस्टर कपूर; जो पहले एक्जीक्यूटिव इजीनियर थे—काफी सीनियर आदमी है—क्षेत्रीय कार्यालय मे नेक्स्ट चान्स उन्हीका है !—मैंने सोचा कि यदि इनसे कुछ पर्सनल सम्बन्ध हो जाए तो किसी छोटे कस्बे मे तबादला करवा लूगा, जहा मकान की भी सुविधा हो ! तब मैं मा को वही बुलवाकर अपने पास रख सकूगा ।'

मैंने कहा, 'तब शायद मिसेज़ अटनागर भी वही तबदील होकर आ सकती है ।'

नटनागर ने कहा, 'खैर, वह बात मेरे दिमाग मे नही है। आ भी सकती है, नही भी आ सकती । क्या पता, जहा मैं तबादला करवा सकूगा, वहा कोई गर्ल्स स्कूल हो भी या नही ।'

निश्चय ही नटनागर के भविष्य-चिन्तन मे मिसेज़ नटनागर के लिए गौण स्थान था ।

मैंने कहा, 'योजना वास्तव मे तुम्हारी ठीक है भई !—मैं तो इस-लिए कहता था कि आखिर ट्यूशन के लिए कुछ तैयारी तो करनी ही पडती है, और फिर तुम अपने इस स्वास्थ्य ...'

नटनागर ने बात पूरी नही होने दी, हंसकर कहा, 'तैयारी कुछ नही करनी पडती । लडका है सिर्फ चार-पाच बरस का—नर्सरी स्कूल मे जाता है, मैं उसे ए बी सी डी बतला देता हू—किंडर गार्टन का बक्स है, दुनिया भर के खेल-खिलौने है, तस्वीरे है—सच तो यह है कि सवेरे एकाध घण्टे के लिए मनोरंजन हो जाता है ।'

'लडका बडा दुलार का दीखता है ।'

'इकलौता है, और समझो बुढापे का !—बीवी कुछ तो पागल जैसी दिखाई देती है, और सदैव ही बीमार । बाप चाहता है, कि कही मा की छूत न लग जाए, और मा उसे एक क्षण के लिए आखो की ओट करना नही चाहती । बस, ट्यूशन क्या है, नाम भर है, जाने-आने का समय ज़रूर लगता है, पर एक तो तीस रुपया कुछ न करने का मिल जाता है

फिर अफसरो की निगाह मे आते रहने का भी लाभ है ही।'

—उस दिन रात को बहुत देर तक बहुत तरह की बाते होती रही। उन्होंने कहा :

'मिस्टर ओझा !—एक बात तो कह ही देनी चाहिए !—मैं तुम्हे अब तक गलत समझता था, इसके लिए तुम्हे क्षमा कर देना होगा।'

'गलत !—क्यो ?'

'अब उन पुरानी बातो को छेडने से कोई लाभ नही है। उससे लज्जा ही बढती है, और अब तो तुम रेलवे से अपने सम्बन्ध छोड ही चुके हो। —जैसा कुछ हो, एक क्लक का जीवन तो तुम जानते ही हो—उसकी आकाक्षाए, उसके साधन, उसके राग-द्वेष, सभी तो विदित है ! किसीने चाहा कि तुम्हे नीचा दिखाया जाए, इससे उसका लाभ और स्वार्थ तो था ही—मुझे बनाया गया साधन; लोभ भी दिया गया, और झूठ न कहूगा, उस समय तक तो कुछ पाया भी उस कारण से—किन्तु इस पाने की कीमत ही क्या है ?—सच तो, मालूम देता है जैसे उसीकी कीमत चुकानी पड रही है·· '

मैंने कहा, 'नटनागर, मुझे किसीके प्रति कोई क्रोध नही है, मैं भी उन पुरानी बातों को नही सोचता, रहा सवाल क्षमा करने का—सो मैंने उस अपराध को कभी मन मे लिया ही नही ! किसीके अपराध को मन मे लेने से अपने ही मन को बडा छोटा बना देना होता है। मैं इससे सदैव ही बचने की चेष्टा करता रहा हूं।—मैं प्रारम्भ ही से सारी बात जानता हू। धर्मप्रकाश को ठीक तरह से समझने इतनी बुद्धि मुझमे है, किन्तु उनके गलत कारनामों पर आंखें न डालने की क्षमता भी मुझमे है ! अपनी हानि का पहले ही आभास पाकर प्रतिविधान भी मै कर सकता था, किन्तु वह मेरा मार्ग ही नहीं है। मै मुक्त पछी हू—क्यो अपने को इन उपसर्गों मे बांधू ?'

नटनागर कुछ क्षणो तक चुपचाप पडे सोचते रहे ! मै भी सोचता रहा, दुःख वह रसायन है, जो व्यक्ति के समस्त कलुष धो-पोछ देता है !

सहन करना ही शायद मानवता का चरम श्रेय है, इसीलिए सहकर ही नटनागर की आत्मा आज कचन हो गई है ।

रात बहुत बीत चुकी थी । हम लोगो ने नीद के लिए प्रयत्न किया ।

१८

बम्बई से लौटकर मैने देखा कि श्री नटनागर मेरे अच्छे मित्रो मे बन गए हैं । श्रीमती कमला नटनागर को वह कब, कितने और कैसे पत्र लिखते हैं, यह तो मुझे मालूम नही, किन्तु अब तो जब-तब ही मुझे उनका पत्र मिल जाता है, कारण कोई न भी हो, और मै चाहे उन्हे उत्तर देने मे उनकी गति से मेल न मिला सकू, तब भी उनके पत्र आते रहते है । 'कमलाज लव लेटर्स' का उनका इरादा चाहे समाप्त हो गया हो, किन्तु मुझे पत्र लिखकर क्या कोई नया मनसूबा तो वे नही बाध रहे है ! जो हो, मालूम देता है, और एक बार पत्र मे उन्होने इसका आभास भी मुझे दिया था कि ये पत्र लिखकर, वे अपने को हलका महसूस करते हैं, मानो उनपर से एक भार उतर गया है ।

कपूर साहब से उनकी घनिष्ठता बढती जा रही है। घनिष्ठता का माध्यम है वही उनका पुत्र सोमदत्त ! अपनी नियुक्ति के सिलसिले मे कपूर साहब को प्राय ही बाहर रहना पडता है, मिसेज कपूर दिन के बारह घण्टो मे भी आठ घण्टे पलग पर बिताने को मजबूर है—उनका अब मनोवैज्ञानिक उपचार चल रहा है, शेष चार घण्टे मे उसका भाग आधे से अधिक खो जाता हे—और फिर नित्य नैमित्तिक कार्य, पथ्य सेवन आदि-आदि के बाद उन्हे सोम के लिए कितना-सा समय मिल पाता है, फिर भी आश्चर्य यह है कि शरीर से पास न रहने पर भी, वे मन से सदैव ही सोम के पास मडराया करती है, बल्कि डॉक्टरो का कथन है कि शायद

सोम की चिन्ता ही उनकी बीमारी का कारण है। वे उसे एक क्षण के लिए भी अपने से विलग करना नही चाहती, किन्तु पिता को उसके भविष्य का भी ख्याल है, बीमार पत्नी और उज्ज्वल भविष्य वाले स्वस्थ सतान मे से उन्हे चुनाव करना पडा है। श्री नटनागर दोनो ही को श्रद्धा करते है, और दोनो ही की कामना के केन्द्र सोमदत्त को वे अनायास ही प्यार करने लग गए है—लडका बडा मेधावी है, उसने कपूर साहब की बुद्धि पाई है—नटनागर सर्वान्त करण से उसका भविष्य बनाने के लिए कपूर साहब के बताए मार्ग मे उत्साह के साथ बढे चले जा रहे हैं! कपूर साहब को अब एक बढिया फ्लैट मिल गया है, और श्री नटनागर वही एक कमरे मे रहने लग गए है। दोनो दलो को इससे लाभ ही हुआ है! बम्बई का अब उनका जीवन शिकायत लायक नही रहा। केवल उन्हे चिंता रह गई है तो मा की! सो उसे अब पहले से कुछ अधिक रुपया वे भेज देते है। मा को कई बार लिख चुके है कि वह एक नौकर रख ले, किंतु मा है कि बात ही नही मानती। यह तो समझो कि गाव मे पडोसी, लडता-झगडता, जलता-भुनता भी, अपने पडोसी धर्म को धार्मिक कृत्य समझकर उन्हे विशेष कोई कष्ट नही होने देता। और फिर जैसे ही कपूर साहब का तबादला हुआ कि वह भी उनके साथ जाएगे ही। तब अवश्य वह मा को अपने पास बुला लेगे! कपूर साहब काफी सीनियर अफसर है, तबादला उनका हो भी गया होता, किन्तु मिसेज कपूर की चिकित्सा से वे उसे टालते जा रहे है, पर अब दीखता है कि शायद अधिक टाला नही जा सकेगा, और तब नटनागर को किसी तरह का कष्ट नही होगा। यह सब मुझको उनके पत्रो से बराबर यथासमय विदित होता रहता था।

इधर श्रीमती कमला नटनागर का जीवन भी शिकायतो से ऊपर उठता जा रहा था।—अपने हाई स्कूल की प्रधान और इसी बीच कई अन्य प्रवृत्तिया चलाकर यहा के नागरिक जीवन मे वह काफी लोकप्रिय होती जा रही थी। बम्बई से लौटने के बाद देखा गया कि उसकी भी कुछ मुझपर कृपा होनी शुरू हो गई। कमल अभी यही है, अब दोनो

के बीच गुरु-शिष्य के सम्बन्ध की स्थिति नही रही। कमला स्वय ग्रेज्यूएट हो गई है, और जहा उचित वातावरण में उसका सहज उत्सुक मन श्रद्धा के साथ नये भाव ग्रहण करता हुआ विकसित होता जा रहा है, वहा रेलवे के दमघोटू सकीर्ण वातावरण तथा सामान्य क्लर्क की अनुभूति मे कमल का मन स्थिर रहकर सिकुडता जा रहा है, अब तो नए भावो के ग्रहण की क्षमता भी उसमे नही रह गई है! फिर भी दोनो मे एक दूसरे के प्रति आसक्ति मे कुछ भी कमी नही आने पाई है।

बम्बई से जब लौटा था, तो नटनागर ने समाचार ही नही, एक छोटा-सा पैकेट भी श्रीमती कमला नटनागर के लिए साथ भिजवाया था। शायद उसमे एकाध साडी थी, भेजने का कोई उत्साह उनमे था नही, सिर्फ मैंने ही कहा था कि भई नटनागर, मिसेज़ के लिए बम्बई का क्या तोहफा भेज रहे हो ?—यदि मुझसे कभी आपके बारे मे पूछा गया, तो क्या कहूगा ?

यह प्रश्न करके मै खुद भी लजा गया था—नटनागर ने मेरी ओर देखा, मानो यह पूछने के लिए कि क्या मिसेज़ नटनागर की मुझसे भी रब्त-जब्त है कि बम्बई से लौटते ही वह मुझसे बातचीत—चाहे वह उनके ही बारे मे हो—करने के लिए व्यग्र हो उठेगी ?—उनके शकालु मन को समझने का मेरे पास कोई कारण न था, फिर भी उस दृष्टि को मै पकड गया, और कैफियत के तौर पर बोला, 'मेरा वहा जाना छिपा तो रह नही सकता! अपने केस का सारा कॉरेस्पोण्डैन्स होता है कमल के दफ्तर के थ्रू! यहा आने से पहले कमल ही ने आपके बारे मे कहा था ...'

नटनागर ने कहा, व्यग्य की कुछ मुस्कराहट भी थी, 'तोहफा भेजना तो चाहिए—पर क्या भेजा जाए ?'

'सो मैं क्या जानू ?'

'अच्छा, आज दफ्तर से लौटते समय बाजार होता आऊगा।'

मैंने फिर कुछ खिसियाते हुए-से कहा, 'भिजवाना तो कमल ही के

हाथ पडेगा, इसलिए कमल के लिए भी कुछ पत्र-वत्र ’

नटनागर फिर मुस्करा दिए, ‘जब तुम खुद ही जा रहे हो तो पत्र-वत्र की जरूरत है ही कहा ? मिसेज नटनागर के लिए भी नही । समाचार सब जबानी, और खाली यह पैकेट ’

—सो घर लौटने पर अपने ही नौकर के हाथ पैकेट श्रीमती नटनागर को भिजवा दिया था—समाचार कुछ थे ही कहा ?—किन्तु दूसरे ही दिन श्री कमलनयन जोशी और श्रीमती कमला नटनागर दोनो ही सध्या के समय ज़बानी समाचार जानने के लिए उत्सुक—मेरे घर पर तशरीफ ले आए। जितना मुझे मालूम था, वह सब उन्हे बताकर, तथा चाय पिलाकर मै उन्हे विदा कर देना चाहता था, किन्तु कमला जी ने साहित्य-चर्चा छेड दी ।

पूछा, ‘आजकल क्या लिख रहे है ?’

‘अभी तो बम्बई से लौटा ही हू, और आज तक उसकी थकावट दूर की है। कल क्या करूगा इसका क्या ठीक है ?’

कमल ने कहा, ‘भाई साहब, आप भी खूब है !—ठीक तो है, शब्दो के मालिक जो ठहरे—उनके साथ आप ही खिलवाड न करेगे तो करेगा कौन ?’

‘मालिक ? ···’ मैने हसकर कहा, ‘तुम कौन से कम हो कमल ? शब्दो का मालिक ?—शब्द क्या किसीकी बपौती होते हैं ?—शब्द अगर किसीकी मिल्कियत बने तो वह नष्ट हो जाता है, बल्कि मिल्कियत जताने वाले को खुद शब्दो को आश्रय देकर नि स्व हो जाना पडता है ।’

‘कैसे ?’ मिसेज नटनागर ने पूछा ।

‘नही जानती ?—नये शब्दो का इतिहास यदि आप खोजेगी मिसेज नटनागर तो ’

‘क्षमा कीजिए एक प्रार्थना कर सकती हू ?’ बीच ही मे उन्होने टोककर कहा ।

‘कहिए !’

'मैं आपसे उमर मे, ज्ञान मे, पद मे सभी तरह छोटी हू, जब आप मुझे 'मिसेज नटनागर' या 'आप' कहकर पुकारते है, तो मुझे बड़ा सकोच होता है; बल्कि आप जब मेरे गुरु (कमल की ओर इशारा करके) तक को 'तुम' कहकर पुकारते है, तो मैने ही कौन-सा अपराध किया है ?'

'अपराध तो मेरा ही समझिए—किन्तु फिर क्या कहकर पुकारू आपको ?'

'मेरा नाम है 'कमला', और 'आप' की जगह 'तुम' का प्रयोग !'

मैंने हसकर कहा, 'नाम तो आपका खैर मुझे मालूम है, पर 'आप' की जगह 'तुम' का प्रयोग—मालिक नही, तो भी शब्दो का व्यवसायी तो मैं हू ही !—अभी फिलहाल 'आप' की जगह 'तुम' का प्रयोग आपके लिए मुझसे नही हो सकेगा।'

कमल ने कहा, 'फिलहाल—यानी क्या ?'

'भाई ! 'आप' और 'तुम' मे परिचय तथा सम्बन्ध की प्रगाढता का अन्तर रहता है, यह तो तुम जानते ही हो।'

'जरूर !'

'हमारे समाज मे नारी से एकाएक प्रगाढता का दावा नही किया जा सकता !'

कमला जी एक क्षण के लिए उदास दिखाई दी, किन्तु बात बदलने के लिए उन्होने कहा, 'आप कह रहे थे शब्दो के मालिक की नि.स्व हो जाने की बात !'

'यह भी एक उसीका उदाहरण है कमला जी !—जब हम किसीको 'तुम' कहकर पुकारते हैं, तो उसपर अपनी मिल्कियत का आभास देते हैं, चाहे वह उसकी हीनता के कारण हो, अथवा आत्मीयता के कारण ! यदि हीनता के कारण हो, तो हम उस व्यक्ति को पा नही सकते, यदि 'आत्मीयता' के कारण हो, तो हमे अपने आपको ही खो देना पडता है उसके लिए। दोनो ही दशाओ मे नि स्व होना पडता है उसको !'

कमल ने मुस्कराते हुए कहा, 'यह तो शब्द के प्रयोग की बात हुई।'

'प्रयोग करने के लिए वस्तु की उपलब्धि तो आवश्यक है ही !— किन्तु मैं दूसरा स्थूल उदाहरण दूगा ! आविष्कार की दुनिया मे नई वस्तु के नामकरण की प्रवृत्ति पर कभी ध्यान दिया है ? आविष्कारक को महत्व देने के लिए उस आविष्कार का नाम ही उसके नाम के आधार पर कर दिया जाता है। जैसे माउण्ट 'एवरेस्ट', किसी एवरेस्ट नामक अग्रेज व्यक्ति के नाम के आधार पर; आज माउण्ट एवरेस्ट को कौन नही जानता, किन्तु उस सर्वेयर एवरेस्ट को कौन जानता है ?—यही नही सर्वेयर की कुछ फुटो की सीमित ऊचाई मे एवरेस्ट शब्द की सज्ञा का जो बोध था, वह क्या 'माउण्ट एवरेस्ट' ने छीनकर अपनी अभ्रभेदिनी महानता मे नही छिपा लिया ?—और सर्वेयर एवरेस्ट ने माउण्ट एवरेस्ट के साथ जोडकर मानो अपने नाम का पेटेण्ट 'मिल्कियत' सुरक्षित करनी चाही थी।'

'मिल्कियत', 'प्रगाढता', 'घनिष्ठता', 'आत्मीयता' आदि शब्दो को लेकर नारी के मनोवैज्ञानिक जगत मे जो एक सूक्ष्म-अव्यक्त-अबूझ छाया-नाटिका चल पडी थी उसका भार पलको पर लेकर थकी हुई—ऊबी हुई-सी कमला ने कहा, 'कहा से कहा, बातो ही बातो मे उलझ जाता है आदमी ! खैर, आपको कष्ट दिया।—इसी बीच एक प्रार्थना और कर लू, यदि आज्ञा दे।'

'आप हुक्म दीजिए।'

हसकर उन्होने कहा, 'हमारे स्कूल मे यदा-कदा कुछ साहित्यिक-सास्कृतिक कार्यक्रम हुआ करते हैं। सोचती हू, यदि कभी आप कुछ समय दे, तो हमारे लिए ज्ञान के साथ ही साथ प्रेरणा का बडा अमूल्य अवसर मिल सकेगा। यो आपका बहुमूल्य समय ··'

मैंने हसकर कहा, 'समय तो अवश्य ही बहुमूल्य होता है, पर मैं एकदम निर्मूल्य हू—नौकरी से भी इस्तीफा दिए बैठा हू—एकदम बहुमूल्य हाथी पर बैठे भिखारी के समान—उसका उपयोग भी नही जानता, भीख मागने के लिए वह क्या उपयुक्त वाहन है ? यदि आप उस बहुमूल्य

वस्तु को लेकर किसी समारोह मे जोत देगी, तो मेरा भी कुछ सार्थकता हो जाएगी ! हाथी अपना है, महावत का काम तो कर ही सकूगा ।'

और उस दिन वे विदा हो गए ।

—सो एकाध बार उनके स्कूल के समारोहो मे जाना पडा—अवश्य ही सभापति की हैसियत से! परिचय दिया था कमला जी ने स्वय, और जैसा परिचय उन्होने दिया था, उसके लिए मुझे उनका अनुगृहीत ही होना चाहिए। उनकी कृपा से मैं नगर के महिला-विभाग मे भी ख्याति प्राप्त करने लगा।

उस बार पड गया एकाएक बीमार, वही मलेरिया—एक दिन तो चिन्ता न की और बिस्तर पर लेटा रहा, किन्तु दूसरे दिन बुखार की तेज़ी बढ गई, तो नौकर को डॉक्टर के लिए भेजना पडा। उधर स्थानीय साप्ताहिक के सम्पादक जी किसी लेख के लिए आ बैठे। बीमारी की बात सुनकर चिन्ता तो प्रकट की ही, साथ ही मे भले आदमी ने एक कॉलम मे इस खबर को प्रकाशित भी कर दिया। गत सप्ताह आगामी अक के प्रस्तावित लेखको मे मेरा नाम भी था, अत: मेरे लेख के अभाव के लिए क्षमा-प्रार्थना करना उनके लिए आवश्यक था। जिस दिन पत्र प्रकाशित हुआ, उसी दिन सध्या को श्रीमती कमला नटनागर केवल दादू को लेकर आ उपस्थित हुई।

मैं लेटा हुआ कोई पुस्तक देख रहा था। आते ही कहा, 'वाह ! आप बीमार है, और खबर भी न दी ?'

मुह फेरकर किताब छाती पर रखते हुए मै बोला, 'कौन ? कमला जी! आइए, आइए !—आखिर मै बीमार हू, यह कहा किसने आपको ?'

'सो तो आपकी शकल ही कह रही है।'

'लेकिन देखने के बाद ही तो ! मेरा मतलब है देखने की प्रेरणा से ! बैठिए न। नौकर इस समय घर चला गया है। कुर्सी वह रखी है। दिन भर ही तो बेचारा यही पिस रहा था। जब खाना बनाने की बेगार

नही है तो उसे आराम ही क्यो न करने दू ।'

कुर्सी मेरे पलग के पास ही खीचकर बैठते हुए बोली—'खाना क्यो नही ?'

मैने पलग पर तकिए के सहारे बैठते हुए कहा, मुस्करा कर, 'यदि खाने की इच्छा रहती, तो बुखार ही को शरीर मे कौन घुसने देता ?'

कमला जी ने एकाएक ही मेरे हाथ को मुट्ठी मे लेकर कहा—'देखू, ऐसा क्या बुखार है ?' और मेरे सारे शरीर मे काटे उग आए, स्वय ही उन्होने इसे लक्ष्य कर लिया। मैंने मुस्कराते हुए कहा—'ठण्ड देकर आया है न।'

—पर हाथ को एक क्षण भर के लिए ही मुट्ठी मे रखकर जैसे वै सहम उठी, और बोली—'अरे ! बुखार तो आपको इस समय भी बडा तेज़ है।'

'तेज हो या मन्द, बुखार है तो बुखार ही ! आखिर हम ओषधि ही का तो उपचार कर सकते है, शाम को डॉक्टर ने देखकर कहा था कि एक सौ चार डिग्री है ! मैने पूछा, मरने के लिए कितने अश और चाहिए, तो हसकर बोले, मौत का क्या है, वह एक सौ पांच या छ तक भी न हो, और हो तो बिल्कुल नार्मल साढे सत्तानवे पर भी हो जाए ! सो चिन्ता किस बात की है ?' और मैने अपना हाथ खीच लिया।

'ओषधि क्या ले रहे है आप ?'

'वह देखिए न, उस स्टूल पर रखी है, लाल-लाल-सी, पर इससे आगे उसके नाम-धाम आदि के बारे मे विशेष कुछ जानता होऊ सो बात नही है।'

'आपने ओषधि ले ली ?'

'ओषधि तो ले ही रहा हू, चाहे अच्छा होना सम्भव हो या नहीं।'

'वाह ! अच्छे क्यो न होगे ? ऐसी बात मुह से नही निकालते। डॉक्टर क्या कह रहा है ?'

मैंने मुस्कराकर कहा, 'डॉक्टर क्या कहेगा ? उनकी तो वही नपी-

तुली, रटी-रटाई बाते है। पास मे किताब पडी देखी, तो कह दिया, पढो मत। एक मित्र बैठे थे, कह दिया, अधिक बातचीत न करो—पूरा विश्राम करो। लो पूरा विश्राम ! उस डॉक्टर को क्या यह भी समझाना पडेगा कि पूरा विश्राम किस बला का नाम है ? और जब पूरा विश्राम करना ही है तो उसके पहले की चेतना की यह घडिया' ’

कमला मानो व्यतिव्यस्त हो उठी, बोली—‘नही, नही, आप लेट जाइए। लेट जाइए। और तब भी जब मैं बैठा ही रहा, तो उन्होने कुर्सी से उठकर मेरे सिर के पीछे हाथ लगाकर मुझे मानो जबर्दस्ती ही लिटा दिया। मैं शर्म और सकोच से गड गया, किन्तु अव्यक्त मे एक अभूतपूर्व सतोष की व्याप्ति भी मेरे मन को आपूर्यमान कर गई। उसके बाद ही कमला जी ने मुझे लिहाफ डालकर अच्छी तरह से उढा दिया।

पुनः कुर्सी पर बैठते हुए वे बोली, ‘नौकर को घर भेजकर आपने अच्छा नही किया। अच्छा, कुछ पथ्य—डॉक्टर ने कुछ कहा है ?’

मैने कहा, ‘डाक्टर नें कहा कि सिवा वायु-भक्षण के और कोई वस्तु मुह मे न जाए।’

‘नही, यह आप मजाक कर रहे है ! सच कहिए, साबूदाना या दलिया, बार्ली—मै अभी बना देती हू। यो दादू बाहर हैं, बाजार से भी कुछ मगाया जा सकता है।’

मैंने कहा, ‘डाक्टर ने यदि कुछ गुजायश रखी होती, तो नौकर ही को क्यो छुट्टी दे देता। आप तो व्यर्थ ही परेशान हो रही है।’

‘परेशान होने की बात ही है। आप क्या जाने स्त्री का दिल कैसा होता है ? अच्छा घर पर किसीको खबर कर दी है ?’

‘घर पर—किसे ?’

‘घर पर किसे ? ‘आपके घर पर ? आपकी वाइफ, बच्चे वगैरा…’

मै उस अवस्था मे भी हसे बिना नही रह सका ! ‘वाइफ़—बच्चे वगैरा, खूब ! आप भी खूब है कमला जी।’

'क्यो ? क्या पुरुषो के वाइफ-बच्चे वगैरा नही होते ?'

'क्यो नही होते—बल्कि एक-एक से अधिक भी। पर मेरे भी यह सब झंझट होगा इसकी खबर आपको किसने दी।'

'झझट ? आप भी झझट कहते है इसे ?'

'झझट न सही, सुविधा ही सही ! नाम कोई भी दे लो !'

कमला जी कुछ अप्रतिभ हो गईं, बोली, 'क्या आपका विवाह नही हुआ ?' और मानो एक ही क्षण मे अपनी इस अहेतुक प्रश्न से उठी हुई लज्जा को दबाकर उन्होने कहा— 'क्षमा कीजिए, व्यक्तिगत बातों मे अधिक दिलचस्पी नही ली जानी चाहिए ! आपकी मा-बहन · '

मैंने एक क्षण कुछ रुककर कहा 'विवाह भी हुआ था, और मा-बहन भी थी ही। पर लम्बी कथा है। आज तो सभी को अपने महसूस कर रहा हू। इसमे शिकवा-शिकायत ही क्या ? यदि ये सब आज यहा होते, तो क्या आपकी यह नि स्वार्थ सहानुभूति कभी मुझे मिल पाती ?'

'फिर भी इस अवस्था मे आपकी देख-रेख···'

'गालिब की वह गज़ल नही सुनी आपने ?—पडिए गर बीमार, न हो कोई तीमारदार—और गर मर जाइए, नोहाख्वा कोई न हो।—दिल मुझे ऐसी ही जगह तो ले आया है।'

'आपका जीवन तो रहस्यमय दिखाई देता है। यदि कुछ आपत्ति न हो तो···'

'आपत्ति तो क्या होगी। साहित्यकार का अपने कहने को रहता ही क्या है ? किन्तु कमला जी ! आपको अधिक समय हो गया होगा। आज तो कमल भी साथ नही हैं। वह क्या हुआ ?'

'क्या हुआ ? उन्हे साथ नही ला सकी। अखबार मे आपके अस्वास्थ्य के हाल पढकर रुक न सकी। उन्हें खबर करने का भी धैर्य न रहा।'

'धन्यवाद ! आपको बहुत कष्ट हुआ। सच मानिए, आपके आने से मेरा आधा दुःख गायब हो गया।'

'और आधा ?'

'वह तो सहते ही बनेगा। किताब से कुछ सहायता लेने की चेष्टा करूगा। यदि भूल सका और नीद लग गई तो गनीमत है, वरना सिर-दर्द तो है।'

'सिर-दर्द !'

'जी ! बुखार मे सबसे पहले सत्याग्रह करता है सिर ! उसे मनाना सरल भी नही है। पर किया क्या जाए।'

'मै दबा दू।'

'अरे वाह ! आप यह कष्ट क्यो करेगी ? बल्कि आप जाइए, मै कुछ लेटने ही की चेष्टा करूगा।'

'नीद आ जाएगी ?'

'यो आती नही है, पर प्रयत्न तो इसीके लिए करना पडेगा।'

'तो एक काम कीजिए। मै आपका सिर दबाती हू, आप सोने का प्रयत्न कीजिए।'

'और यदि मै सो ही गया तो दरवाजा कौन बन्द करेगा।'

कमला लजाकर चुप हो गई, लेकिन उसका वरद हस्त मेरे माथे पर आ जमा और बिना कुछ बोले ही धीरे-धीरे वे उसे सहलाने लगी।

मेरी आखे जाने क्यो आसुओ से गीली हो गईं, जिसे उन्होने लक्ष्य कर लिया, बोली, 'साहस रखिए, अच्छे हो जाएगे आप।'

'अच्छा तो हूगा ही कमला जी ! पर किसलिए ?'

'जगत के लिए !—जीवन के लिए !—जीवन और जगत क्या सामान्य-सी बात है ?'

'पर मेरे जैसे का जीवन ?'

'वह जगत का तो है—ऐसे ही जीवनो की इकाइयो से तो जगत बना है।—अच्छा आप सोने का प्रयत्न करे।'

मैंने कहा, 'वह ताला रखा है, बाहर लगा जाइएगा, सवेरे दादू के साथ ताली भेजकर खुलवा दीजिएगा।'

'मै सब प्रबन्ध कर लूगी। आप सोइए।'

आधी रात को जब नींद उड़ी तो मेरी तबियत कुछ हल्की हो गई थी। सोचा, दवा की रात्रि की खुराक भी ले लू। बैठकर टेबल लैम्प का स्विच दबाया ! मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, श्रीमती कमला नटनागर पास ही नीचे फर्श पर एक चटाई पर लेटी हुई थी।

जीवन के ऊपर पीछे नज़र डालने से मै बचना चाहता हू, उसकी स्मृति सिवा दुख के और दे ही क्या सकती है ?—भविष्य को उससे क्या बल मिलता है, यह देखना तो शेष रहता ही है, वर्तमान को हम अवश्य बोझिल बना देते हैं। जिस क्षण मे हम रहते है, उससे बढकर मूल्यवान और कोई क्षण होता हो, यह मैंने कभी नही पाया। बीता हुआ क्षण सुख का हो या दुख का, उसकी गहराई आज हमारे पास नही, गहराई का आभास भी आज की अवस्था के मापदण्ड से ही आकने को रह जाता है।

किन्तु श्रीमती नटनागर के गम्भीर रात्रि के उस व्यापार ने मुझे जीवन मे पीछे की ओर देखने को उत्प्रेरित किया ही।—इस कथा मे ही क्या, किसी भी कथा मे किसी पात्र के साथ मैंने लगाव अनुभव किया हो किन्तु कही पर नायक या नायक जैसी ही किसी भूमिका की लब्धि की न मैंने कभी कामना ही की न उसके लिए किसी प्रकार की अपने में योग्यता का ही अनुभव किया। सदैव परदे के पीछे ही रहना चाहा है, आज अनायास ही किसने इस आसन पर मुझे बैठा दिया है ?—जिस दिन मैंने प्रारम्भ मे नटनागर की दावत मे मिसेज़ कमला नटनागर का दर्शन किया था, उसी दिन से इस रमणी के प्रति कुछ उत्सुकता चाहे जगी हो, पर किसी प्रकार की आसक्ति का मैंने कभी अनुभव नही किया, न ही इस उपसर्ग को लेकर मेरे चैतन्य मे मैंने किसी ऐसे व्यवहार की अवतारणा की, जिससे दूसरे को मेरे प्रति किसी तरह की आसक्ति का बोध हो !—और फिर एकदम से सामान्य पुरुष मैं ! भाग्य की विडम्बना के सिवा इसे और क्या कहू ?

उस बात को लगभग पन्द्रह दिन बीतने को आए थे। पीड़ा के

कटीले कगार तक पहुचकर मै पुन. जीवन और स्वास्थ्य की हरियाली पर लौट आया था—कह नही सकता कि मेरा आयुर्बल मुझे खीच लाया या किसी नारी के कल्याण-कामी वरद-हस्त का चन्दन-विनिंदित अनवरत शीतल स्पर्श, किन्तु अब मै स्वस्थ था ।

सध्या घनी होती जा रही थी । शुभ आकाश मे पूर्व की ओर शुक्ल-पक्ष का चाद अभी दूध मे नहाया न था, पश्चिम मे एकवसना सध्या की साडी खिची जा रही थी, मध्य आकाश में नीड को लौटते हुए पक्षियों के फैले हुए पखो के बीच कही-कही एकाध नक्षत्र बुझ-बुझकर चमक उठता था ।

मकान की छत पर कपडे की आरामकुर्सी पर पड़ा हुआ मैं इन्ही नक्षत्रो को गिन रहा था, किन्तु गिनती पूरी नही हो पा रही थी, जहा भी दृष्टि को निविष्ट करता वही पर कुछ झिलमिल करने लग जाता, दृष्टि-दोष को मिटाने के लिए वहा से दृष्टि हटाते ही फिर उसी स्थान को पाना सम्भव नही है—समुद्र मे एक स्थान पर जल का स्पर्श करके दुबारा उसी स्थान का स्पर्श करना कभी निश्चित नही हो सकता—और किसी भी दूसरे स्थान पर देखने से उसी दोष की सम्भावना हो जाती ! तब भी इस खेल मे काफी आनन्द था । तारो की सख्या जैसे-जैसे बढती जाती, मन मे उस अनन्त सीमाहीन के विस्तार की कल्पना सजग होती जाती, हृदय उछलने लगता, ये समस्त पार्थिव सम्बन्ध विस्मृति के किसी गहरे अन्धकार मे छिप जाते, और समस्त स्थूल शरीर सूक्ष्म मन के निराकारशून्य मे सिमिटकर ऊपर-ऊपर अनन्त की अगम्य-अकल्प्य ऊचाइयो को छूने लग जाता । चाद की शुभ्र चादनी घन-नीलिमा के आचल का एक काढा हुआ फूल मात्र बनकर प्रतीत होती, और उस अन्त-हीन दिगन्त के सितारो जडे नीलाभ नयन मे यह ब्रह्माण्ड एक अश्रु की व्याप्ति लेकर मानो लुढक पडना चाहता !

—कि किसीने पीछे से आकर इस इन्द्रजाल की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रस्तोता मेरी शीर्षा आखो पर अपनी कोमल हथेलिया ढक दी । स्वप्न-

भग हो गया, कविता अधूरी रह गई। किन्तु जब टटोलकर, हाथो को पहचानने का प्रयत्न किया, तो हृदय मे एक दूसरी कविता का स्फुरण हो आना स्वाभाविक था। रस-परिपाक के लिए पहचानकर भी नही पहचान सका।

'मालूम पडता है, किसी गहरी कल्पना मे खोए हुए है।'—और घूमकर सामने श्रीमती कमला नटनागर आ उपस्थित हुई।

मैंने कहा, 'अरे आप ?'

'फिर वही आप ?'—पास पडी हुई एक कुरसी उसने खीचकर दखल कर ली !

इसी बीच 'तुम' और 'आप' का व्यवधान समाप्त हो चुका था। मरणान्तक पीडा के समुद्र से उबारने वाले के प्रति प्राणो का समर्पण ही नही, आत्मा का समर्पण भी करना ही पडता है। मैंने हसकर कहा, 'परिचय की घनिष्ठता की अवधि की अपेक्षा परिचय की दूरी का समय भी तो अभी तक बलवत्तर है।'

कमला ने कुर्सी और पास खीच ली, 'लेकिन मै ऐसा नही समझती।'

'क्या समझती हो फिर ?'

'तुम हो कवि, लेखक, साहित्यकार।—नही जानते कि घनिष्ठता का एक क्षण इतना ठोस, कठोर होता है कि अपरिचय के युगो के युग उसमे सिमटकर समाहित हो सकते है ?'

'सुनता तो हूं, किन्तु इसकी प्रतीति तो कभी हुई नही।'

'कभी नही हुई ?'—और वह खिलखिलाकर हस पडी। दोनो हाथ उसने कुर्सी के पटिए पर रख दिए और पृष्ठ भाग का सहारा लेकर चेहरे को ऊपर आकाश की ओर करके वह उछल पडी। तभी उसकी रूप-सज्जा पर ध्यान चला गया अकस्मात् ही।

सध्या का झुटपुटा फैल रहा था, पर उधर दुग्ध-धवल चन्द्रमा अपनी श्री विकीर्ण करने लग गया था। छत पर शुभ्र चादनी अलस भाव से फैली पड़ी थी, मन्द्र वायु मानो उसके शरीर को अपनी बाहुओ मे भर-

कर गुदगुदा रहा था। ठीक आखो के सामने कमला अपने सहज रूप आदि वैभव मे बैठी हुई उस अनिन्द्य उत्फुल्लता मे मेरी आखो मे रूप का एक अभूतपूर्व समारोह सजा रही थी, इसे मैं उसकी सज्जा की अपेक्षा अपनी आखो ही का कसूर कहूगा।

महीन सूत की एक सफेद साडी, चौडे गले का सफेद कसा हुआ ब्लाउज़, जिसके भीतर की शरीर से चिपकी हुई अगिया इस शीतल पाण्डु प्रकाश मे भी आभासित हो रही थी।

सिर के बाल बीच से विभाजित पीछे एक जूडे मे बाधे हुए थे, जिसके चारो ओर सफेद केवडे का गजरा गूथा हुआ था, रह-रहकर जिससे भीनी-भीनी मीठी सुगध नासा-रन्ध्र पर आघात कर रही थी। शरीर पहले से काफी भरा हुआ था, सुन्दर स्वास्थ्य और निश्चितता से रग मे भी काफी निखार आ गया था, जिससे कि अब उसे सावले की अपेक्षा गौर रग कहना ही अधिक समीचीन मालूम होता है, परिचय के पहले ही दिन उसके चेहरे पर जो सूक्ष्म रोमावलि दिखाई दी थी, वह अब नही दिखाई देती, बैठे हुए कपोल अब भर गए है, इससे अधरो के बीच पहले जिस दतपक्ति के बडे होने का भ्रम होता था, वह अब काफी सुन्दर और सुडौल दिखाई देती है। उस समय के सूखे-से ओठ अब रस-प्रपुष्ट द्राक्षा-पक्ति से प्रतीत होते थे, पतली-सीधी नोक पर उठी हुई नाक देखने वाले की दृष्टि को मानो आखो से लड जाने से रोक रही थी—और इन सबसे ऊपर थी वे भावमयी अगाध आखे, जिनकी बरौनियो से आवेष्टित कज्जल-पक-तट-भूमि पर किसी नयनात्पर सजल बोध की तरगें क्षरण-क्षरण मे उठती-गिरती, निश्चेष्ट समर्पण मे अपने आपको प्रणिपात करती हुई किसी अलक्ष्य-अव्यक्त भाव को अनुरजित कर रही थी। घनीभूत चन्द्रिका-स्नात सध्या की इस निविड सरसी मे, चाहे वे रमणी की आखे ही क्यो न हो, किसी एक का एकाधिकार महत्तत्व की इस सीमाभूमि मे किसी युक्ति को स्पर्श नही कर पा रहा था!—उसकी शीतलता मे केवल एक ही व्यक्ति का साझा हो, और शेष मे वह समस्त

शीतलता, जो सारे ससार के ताप का शमन कर सकती है, व्यर्थ हो जाए, इतनी बडी स्वार्थपरता की कल्पना समाज के किस निठल्ले ने कर डाली, उसके ऊपर रोष ही होना उचित है ।

प्रश्न के उत्तर मे मेरा केवल इस प्रकार ताकना शायद वह सह न सकी, और कह उठी, 'मेरी ओर इस तरह घूर क्या रहे हो ?'

'रूप के इस उत्सव को आंखो के सामने पाकर भी, क्या चाहती हो, आखे बन्द कर लू ?'

साडी के पल्ले को हाथ से सम्हालते हुए, आखो को आधा बन्द करके, तथा सीने को थोडा उभार देते हुए उसने कहा, 'चलो हटो !'— और उस रात्रि के ढके हुए प्रकाश मे भी देखा गया कि कमला के गालो पर लाली दौड गई । मैं मुस्कराकर रह गया ।

फिर उसने अपनी दोनो हथेलियो को परस्पर गूथकर घुटनो को आवेष्टित करके कहा .

'पुरुष सभी एक ही तरह के होते है, कवि हो, लेखक हो, या विचारक हो—उनमे आपस मे विशेष कोई अन्तर नही होता ।'

'कैसे ?—समझाकर कहो ।'

'यही, किसी नारी को देखा और पागल हो गए !'

'तो मजूर करती हो कि वह पागल कर देती है, कर सकती है !— तब फिर मैं ही कसूरवार क्यो हू ?'

'इसलिए कि तुम तो एक बहुत बड़े चिन्तक होने का भी दावा करते हो !'

'ऐसा दावा मैंने कभी किया, याद तो नही पडता ! किन्तु फिर भी सौदर्य देखने की वस्तु ही तो है—क्या इसके लिए भी किसीको पागल कहलवाना होगा ?' मैं कुछ गभीर हो उठा ।

'नहीं—पर नाराज़ क्यो होते हो ?—अभी तुमने नही कहा था कि सुख के क्षणो को ठोस होने की तुम्हे कभी प्रतीति ही नही हुई ?'

'सो क्या मिथ्या कहा था ?'

'अवश्य—इस बात को तुम नही समझते, इसे मैं कदापि नही मानती। मैंने तुम्हारी रचनाए पढी है। अनुभूति की तीव्रता के अभाव मे ऐसी प्रौढ अभिव्यक्ति हो ही नही सकती।'

'पर उस सम्बन्ध मे इससे तुम्हारा निष्कर्ष क्या निकला, सो तो मैं अब भी नही समझा।'

कमला ने एक क्षण के लिए आखे नीची कर ली, मालूम दिया, मानो अपनी कुर्सी पर वह एकाएक निरवलम्ब होकर शिथिल हो गई है, उसने उसी दृष्टि से धीरे-धीरे कहा

'तुम तो जानते हो, पुरुष की भाति नारी भी पुरुष की मोहिनी मे अवश हो जाती है। निमन्त्रण कभी एकतरफा नही होता, किन्तु जो कोमल है उसे लज्जा की ढाल रखनी पडती है, शायद प्रकृति ने ही उसे रक्षा का यह साधन थमा दिया है!—अगर ऐसी ही मादक चादनी रात हो, नीले निभृत आकाश के नीचे केवल दो प्राणियो का मुक्त स्वच्छन्द स्पन्दन मनोराज्य की समस्त प्राणवायु का नियन्त्रण करता हो, तो क्या उस रमणीय क्षण की प्रतीति का लोभ नही जाग उठता। गोद मे पड़ी हुई मुक्त कुन्तला नारी का सुरभित स्पदन, पुरुष के धडकते हुए हृदय की दीवार से लगे हुए उसके कान, और अधरो पर अधरो का स्पर्श—' और दूसरे ही क्षण तनकर कुर्सी पर बैठते हुए वह एकाएक ही खिलखिलाकर हंस पडी और बोली—'कहोगे, यह कविता किसी प्यासे मन की निर्लज्जता के अलावा क्या होगी!—पर सच कहो—क्या ऐसी अनुभूति तुम्हारे जीवन मे कभी नही हुई?'

एक लम्बी सास लेकर मैंने कमला की ओर देखा—आखों मे वही लालसादग्ध शिथिल मूक आह्वान, अधरो पर प्यास—और जैसे ही मैं आखे निवारित करना चाहता था, पहली बार मैंने लक्ष्य किया कि चौडे गले की ब्लाउज का ऊपर का हिस्सा, स्कन्ध पर से साडी के नीचे खिसक पडने के कारण अनावृत हो चुका है, जिसका कदाचित कमला को ध्यान ही नही है। अगिया के कसे हुए बधन मे भी उनकी उन्नतोदर सीमा

साफ परिलक्षित हो रही है, बल्कि कसे हुए होने के कारण मुहज़ोर घोड़े की तरह उनका उभार शायद बढ गया है, उनके ऊपर ब्लाउज़ का साम्राज्य है, किन्तु मानो दुर्दान्त दस्यु की तरह दर्शक का मन चुराकर वे इस राज्य के नियत्रण से निकल भागना चाहते है, उन्मुक्त निर्बाध शासनहीन शरीर की मूल-भूमि मे !—और दोनो के बीच की गहरी उपत्यका मे यदि दर्शक का मन-माणिक छिपा दिया जाए तो किसीको पता भी नही लगेगा !

एक ही क्षण मे यह सब कुछ मैने देख लिया, और दूर दिगन्तहीन रात्रि की नीलिमा मे आखे गडाकर मैंने कहा—एक लम्बी सास भी साथ ही मेरे मु ह से निकल गई—

'शब्दो की प्रतीति मुझे हो सकती है—किन्तु प्रकृत अनुभूति से मेरा परिचय शायद नही ही है ।'

'लेकिन तुमने तो कहा था, कि विवाह हुआ था ?'

'तुम भाग्यवान हो, और भाग्यवान है नटनागर, किन्तु तुम्हे यह भी जान रखना चाहिए कि विवाह हो जाने मात्र से सुख की अनुभूति से परिचय नही हो जाता !'

कमला का उत्साह मन्द पडता दिखाई दिया, किन्तु एक क्षण के लिए ही, और वह बोली—'हमारे भाग्य की कथा यदि सुनोगे तो सुनाऊगी किसी दिन, किन्तु अपने बारे मे क्या कभी कुछ सुनाओगे नही ?'

'सुनाने लायक है ही क्या कमला ?—आज तो वह सब कुछ याद भी नही है !—उस सबसे एक सबक सीखा था, वही याद है, और उसीको याद रखना चाहता हू ।'

'वह क्या ?'

'वह भी सुन लेना चाहती हो ?—बहुत बडा सबक नही है, किन्तु मेरे जीवन का तो वही भाष्य है !—वह सबक है, अभिनेता बनने की अपेक्षा दर्शक बनना बहुत सुखकर है ! लेकिन दर्शक बनना सरल नहीं

है, बहुत कठिन है वह।'

'कैसे ?'

'आसक्ति का परित्याग किए बिना कोई दर्शक—सच्चा दर्शक नही हो सकता। व्यक्ति का 'ईगो', उसका अहम् उसे चुप बैठने कहा देता है ?—अभिनेता ही नही, वह तो नायक, महा नायक तक की भूमिका खेल जाना चाहता है। पाता कुछ न हो, यह बात नही है; पर कीमत भी उसे कम नही चुकानी पडती ! उसके अहम् को तृप्ति तो कभी मिलती ही नही, सफलाओ को वह सरलता से भूल जाता है, और असफलताओ की वितृष्णा मे उसे प्राचीन सफलताओ के सतोष का पता ही नही मिलता !—अभिनेता बनने मे दु ख के सिवा और कुछ मिलता हो, यह तो देखा नही गया।'

'तब फिर लोग अभिनेता बनते क्यो है ?'

'अपने अहम् की बेगार ढोने के लिए !—इसीलिए वह शादी करता है, ब्याह करता है, बाप बनता है, नौकरी करता है, स्वामी बनता है, पैसा कमाता है, स्वार्थ-परमार्थ-अनर्थ सभी कुछ करता है। चलता रहता है आखे बन्द करके तेली के बैल की तरह, और जब यात्रा के अन्त मे, जीवन की सध्या मे जूआ उतारे जाने पर आख खोलकर देखता है तो पाता है कि वह है वही पर जहा से चला था—और रास्ते भर कितनी ठोकरे, कितने चाबुक, कितने मान-अपमान वह सहता रहा है !—किसलिए ?'

'किन्तु सभी यदि तुम्हारी तरह हो जाए ?'

'हो नही सकते, यह मै जानता हू—प्रकृति के साथ बिना कडा सघर्ष ठाने यह सुविधा प्राप्त नही हो सकती—और भी साधना करनी पड़ती है, दुनिया के दु'ख-सुख, राग-द्वेष, यश-अपयश, लाभ-हानि सभी मे एक अनासक्त भाव को सजोए रखना पडता है।'

'यानी हिमालय की निर्जन कन्दरा मे जाकर तपस्या करना ?'

'पता नही, उस तपस्या मे क्या मिलता है, क्या मिलने के लिए वह

तपस्या की जाती है। कहते है, शायद अपने को पाने की ही उनकी चेष्टा रहती है—जो ईश्वर को पाना चाहते है, वे निज को शायद उसीका रूप समझकर, उसीकी व्याप्ति मे खो जाना चाहते हैं, मैं उस साधना की बात अभी नही सोच पाया हू, किन्तु तब भी मै सोचता हू उस पाने की अपेक्षा इस तरह अपने आपको समग्र रूप से खो देना क्या अधिक अच्छा नही है ?—ईश्वर है तो हुआ करे, जब मै ही न रहू तो मुझे क्या चिन्ता है, कि मै ईश्वरमय होता हू, या शैतानमय।—मेरे न रहने पर मै तो यह भी चिन्ता नही करूगा कि ईश्वर है या नही।'

पता नही किस आवेश मे आकर मै अपना वह सब दर्शन उस समय उस लडकी के सामने बघार गया। शायद यह मेरे मन की प्रतिक्रिया थी। आज जब सोचता हू तो अपने ऊपर मुझे क्रोध ही आता है। न जाने किस भावना से कमला उस निविड सध्या मे मेरी स्वास्थ्य-कामना का उपलक्ष्य लेकर मेरे सामने बैठी थी। जैसा भी हो मेरा अतीत, नारी ने मुझे कभी प्रतारणा तो नही दी थी। सुख न दिया हो, यह आखिर मेरी ही तो शिकायत है।—सुख होने ही से तो काम नही चल जाता, उसे पाने की पात्रता भी तो हो। बिना पात्र के कुए से पानी कैसे निकाला जा सकता है। तब फिर जो मै उसे अपना यह सारा अनबूझ दर्शन सुना गया, सो ही क्या मेरे 'अहम्' का एक प्रकार का प्रदर्शन नही है ?—और चाहता था कि मैं केवल 'दर्शक' मात्र रहू—कर्ता दर किनार, कर्म भी नही—केवल मात्र अपादान, बहुत हुआ तो सम्बोधन !

किन्तु कमला कुछ क्षण स्थिर नीरव बैठी रही, शायद मेरे वक्तव्य को तोलना-समझना चाह रही थी, पर शायद मेरी प्रतिक्रिया का कारण तलाश कर रही थी—और मैं उसी झोक मे बहकता चला गया··

'दर्शक होना भी सरल नही है, कहा न मैंने !—पहले तो मन की अनासक्ति, यानी केवल टुकर-टुकर देखना, उपयोग का समस्त लोभ छोड़कर—बहती गगा मे सभी सुविधा के साथ हाथ धो रहे हैं देखकर भी तट पर बैठे रहना, निष्क्रिय, निर्विकार !—फिर सुविधा—कितनी

बडी है यह दुनिया, कितने प्राणी भरे हुए हैं इसमे। केवल मनुष्यो ही को लिया जाए, तो कोई दो मनुष्य एक जैसे नही!—और यह वैविध्य भी कितनी-सी सीमा मे?—वही दो आख, दो कान, एक नाक, दो ओठो के बीच दातो की पक्ति, दो हाथ, दो पैर—और अधिक से अधिक लम्बाई आठ फुट। फिर भी कही समानता नही, सबका व्यक्तित्व जुदा, सबके नाम अलग, सबकी पहचान अपनी निज की!—सब अपनी-अपनी परिस्थितियो, समस्याओ मे व्यस्त, समस्या के समान होने पर भी हल जुदा—पर इन सबका दर्शक होना, तटस्थ दर्शक होना आनन्ददायक तो है, किन्तु सुविधाजनक नही। देश-देशान्तरो, नगर-प्रान्तर, वन-उपवन-जल-स्थल-नभ, गिरि-कन्दरा सब ओर इच्छानुसार घूमने की सुविधा हो, वायु के समान सर्वत्र प्रवेश का अधिकार हो, पेट की चिन्ता से मुक्ति—कहा है ये सब मानव के भाग्य मे?—इसीलिए मै लेखक हू, अपनी इच्छा से भाति-भाति के पात्र गढता हू—विभिन्न परिस्थितियो के वात्याचक्र मे फेककर तमाशा देखता हू, छोड देता हू उन्हे अपने तौर पर हाथ-पैर हिलाने के लिए मुक्त!—उनके सुख मे हसता हू, उनके दुःख मे रोता हू—पर रुकता कही नही—उनसे काम हुआ, कि आगे बढ चलता हू अपना पीछे का सबकुछ वही छोडकर। फिर नई अनुभूति, नई समस्या, नया हल, नये राग-द्वेष—किन्तु · '

देखा कि कमला तब भी भावावेश मे अचेत-सी मेरी ओर देख रही है, अकस्मात् ही मुझे धक्का लगा—क्या कमला मुझे पागल तो नही समझ रही है?—मै एकदम रुक गया!

कमला ने मानो निन्द्रा से चौककर कहा—'कहिए, रुक क्यो गए?'

मैंने हसकर कहा, 'वाह! इतने ही मे मै 'आप' हो गया?'

एक लम्बी सास लेकर कमला ने कहा, और तभी वह कुर्सी पर से उठकर मानो बैठने की अपनी थकावट दूर करना चाहती थी, इसलिए थोडी चहल-कदमी भी करने लगी। मैंने उठने की चेष्टा नही की।

'मेरी धृष्टता के सिवा और क्या कहा जा सकता है इसे !—कहां आप, और कहां मैं !'

मैंने कहा, 'यदि तुम्हें मुझसे बात करना हो कमला, तो मैं कभी इस 'आप' को बीच में न आने दूंगा।'

कमला मेरी कुर्सी का पृष्ठ पकडकर खडी हो गई, और मुस्कराकर बोली—'अधिकार तो दे रहे हो, पर अधिकार को पाने की पात्रता भी तो होती है। फिर तुम ठहरे दर्शकमात्र, कही रुकोगे नही; आखे बन्द की और चल दिए ! फिर इस 'आप' या 'तुम' का अन्तर ही क्या किसी को बाध सकता है ?'

'किन्तु मेरे शरीर को तो मृत्यु के मुख से लौटा लाकर तुमने बाध ही लिया है कमला !'

'नारी की भूख क्या इस शरीर इतनी ही है ?'

'सो तो मैंने कभी कहा नही !...'

'तुम लेखक हो—किन्तु अभिधा और व्यजना के अन्तर को मैं भी समझती हू !'

'पर मैंने यह तो कभी नही कहा, कि मेरे शरीर पर मेरे मन का अकुश नही है !...'

—कमला एकाएक ही मेरे पैरो को पकडकर बैठ गई, और मैं उसका मन्तव्य समझकर उसे निवारण करू उसके पहले ही बोल उठी—'तो मैं जी गई मेरे देवता...'

'यह—यह क्या ?'—और मैने उसे उसकी मासल और गौर बाहुओ से पकडकर उठाने का प्रयत्न किया।

वह बोली—'आसक्ति के किसी भाव से बांधकर तुम्हे छोटा नही करूगी—तुम बंध ही नही सकते ! किन्तु इस दुनिया में मै अकेली हूं, नितान्त अकेली...'

'अकेली ?—मिस्टर नटनागर...'

'सुनोगे मेरी कथा ?—विवाह तो तुम्हारा भी हुआ था, कहते हो।

फिर तुम क्यों अकेले हो ?'

मैंने उसे उठाकर, कुर्सी पर बिठाते हुए कहा—'मैंने कब कहा बहन, कि मैं अकेला हू ?'—और स्पष्ट मैंने अनुभव किया कि 'बहन' सम्बोधन मात्र से उसके अग मे एक सिहरन छूट गई,—'मेरे तुम हो, मिस्टर नटनागर हैं, यह है, वह है—सारी दुनियां मेरी है! मैं हिमालय की निर्जन कन्दरा मे कहा हू ?—मै हू इस जगत मे, इस इन्द्रधनुषी जीवन के बीच—सबकी तरह क्षुत्पिपासा से त्रस्त, आशा-निराशा से मण्डित, मित्रो के बीच हसी-मजाक मे व्यस्त—कहा हू मैं अकेला ?'

'तुमने मुझे बहन कहा है—तुम्हे अधिकार है कि तुम मेरे जीवन-चरित्र को जानो, उसपर भी यदि तुम्हे मुझसे घृणा न हो, तभी मै बहन का अधिकार रख सकूगी।'

'पर मैं तो उसे सुनना नही चाहता—मुझे किसीसे घृणा नही करनी है।'

'किन्तु वह न्याय तो नही होगा।'

'न्याय करने वाला कमला! मै ही कौन होता हू ? मै ही कौन दूध का धुला हुआ हू ?—जिसे लम्बी पहाड की यात्रा करनी है, यदि वह कभी फिसल जाए, या गढे मे भी पड जाए, तो उसे कोई घृणा करे, इससे अधिक अन्याय की बात क्या हो सकती है!—और खासकर इस दुनिया मे जहा एक दूसरे का हाथ पकडकर सहायता देने की अपेक्षा, धकेलना अधिक उत्तम समझा जाता है, वहा कौन किसका न्याय करेगा ?'

कमला ने फिर एक लम्बी सास ली और कहा, 'तब भी, सभी तो न्याय करने के लिए तुले बैठे है। और इन कौओ की जमात मे आलोचना का शिकार होकर यदि कभी हस का भी आत्मविश्वास खो जाए, और वह अपनी श्वेतता ही को दुर्गुण समझने लगे ?'

'बिल्कुल सम्भव है!—किन्तु तब भी दो बाते तो हमे पहले ही देख लेनी हैं—पहले तो यह कि गुण और दुर्गुण की कसौटी क्या है, और हमारी मान्यता उस कसौटी पर कैसी उतरती है! बहुमत अवश्य ही एक

कसौटी है, पर भेडिया धसान को बहुमत प्राप्त होने पर भी गुण नही कहा जा सकता । उस समय बहुमत ही नही, बहुकाल का आश्रय भी हमे लेना पडेगा !—फिर जब ऐसी कसौटी निश्चित हो जाए, और हमारी मान्यता उसपर खरी उतरे, तो सब आपदाओ-विरोधो के बावजूद उस-पर स्थिर रहने का सकल्प हम मे हो—तभी कल्याण की दिशा स्पष्ट हो सकेगी ।'

'सो ही तो, इसीलिए तो मै तुम्हे अपना किस्सा सुनाना चाहती हू । यह जानती हू कि जो कुछ मैने किया, उसके लिए मै विवश थी, यदि कभी मैंने बुरा किया हो, तो केवल अपना ही, दूसरो का कभी नही, फिर भी मन मे एक कचोट, एक फास जो अटकी प्रतीत होती है, जिससे रात को एकाएक गहरी नीद मे से मै उछल पडती हू, वह क्या है ?—क्या वास्तव मे मै बुरी हू ?—मै इसीलिए सुनाना चाहती हू तुम्हे अपनी आत्मकथा—हो सकता है, वह नारी की लज्जा की कहानी हो, पर वह तो उसकी कमजोरी है, कमजोरी के ऊपर कोई दया न दिखाए तो हसे क्यो ?—रहे तुम—सो तुम्हारे सामने मुझे लज्जा न होगी ! सुनो तुम उसे, अपने लिए नही, मेरे लिए—ताकि मै कम से कम तुम्हारे सामने तो अपना मस्तक ऊचा रख सकू !'

'यदि सोचती हो कि इससे तुम्हे शाति मिलेगी तो सुनाओ, मै सुनूगा ! पर नारी की लज्जा, या उसके पतन के किस्सो मे मुझे कोई अभिरुचि नहीं है, जो अभिरुचि लेते है, उन्हें मैं दया के पात्र समझता हू कमला ! फिर भी यदि तुम नही मानती तो कहो !'

शुक्ल पक्ष की अष्टमी का चाद हमारी बातो के लिए अपेक्षा नही कर सका, वह पश्चिम की गोद मे चला जाना चाह रहा था । मेरा मुंह उसी ओर था, किन्तु कमला उस ओर पीठ किए बैठी थी—डूबते हुए चाद की ज्योति का प्रसाद भी उसके चेहरे पर न था । धीरे-धीरे वसती वायु के मन्द-हलके हिलोरो मे जूडे मे से एक-एक दो-दो बन-कर निकल उड़ने वाले रुपहले बालो के समान उसके मन की दुविधा भी

धीरे-धीरे समाप्त-सी होने लगी, और वह अपनी कथा कहने लगी, तभी से जब श्री नटनागर के साथ उसका विवाह हुआ था।

प्रारम्भ मे कुछ झिझक-सी थी, किन्तु जैसे-जैसे कथा का विकास होता गया, वह अपने आप मे मानो खोने लगी, और उसने अपनी समस्त कथा, कैसे वह कमलनयन जोशी, धर्मप्रकाश आदि के सपर्क मे आई, किस तरह दादू का निरीह मन उसके प्रभावुक मन को छू गया, किस तरह नटनागर के बौडम स्वभाव ने उसके निर्मल मन पर आकाक्षाओ की आडी-तिरछी रेखाओ के नाना प्रकार के सुन्दर-असुन्दर चित्र बना दिए, किस प्रकार कमल का साहचर्य पाकर उसकी ज्ञान की भूख बढती गई, और अन्त मे जाकर उसने बम्बई मे अपने प्रसव की कथा, सन्तान-त्याग की कथा, सब अकुतोभयभाव से मुझे सुना दी।

मुझे उसने क्या समझा था, यह कहना कठिन है। नारी का मेरा अधिक प्रत्यक्ष परिचय नही है यह मै स्वीकार करता हूं, जो कुछ है वह दूसरो के अनुभव का उधारमात्र! नारी के प्रति एक आकर्षण अनुभव करता हू, पर अपने मन का स्वामी होना मैने सीखना चाहा है, सफलता चाहे न मिली हो, पर प्रयत्न मैंने अवश्य किया है। प्रयत्न करने पर कुछ न मिलता हो, ऐसा मै नही मानता।

—सो यह नारी है, जिसे दान की प्रतिमूर्ति कहा जाता है, जो सदैव देती है, समर्पण करती है, बदले मे कुछ नही मागती; कुछ नही चाहती। विधाता ने, प्रकृति ने उसके लिए एक विधान रच दिया है कि वह दान ही मे अपने को नि स्व कर दे—वह स्वय प्रकृति का एक मनोहारी रूप—स्रष्टा, सर्जक है, समय पाकर वह ऋतुमती हो, फलवती हो, और अपने दान के भार से भारावनत एक दिन झड जाए! देने के लिए दया का प्रवाह उसकी नस-नस मे बहता है, दाक्षिण्य, सहानुभूति, स्नेह, और इन सबके ऊपर उन्मत्त मन को बाध लेने वाला शीतल नयनरंजक सौदर्य—उसके ऐश्वर्य है—और इस रमणी ने, इस निर्बल नारी ने क्या नही दिया?—जिसने भी इसके आगे हाथ पसारा, निराश नही लौटा!—

नटनागर ने क्या नही पाया इससे ?—और जब यह किसी दूसरे याचक को निराश नही कर सकी, तो वह क्रुद्ध हो गए ?—कमलनयन, धर्मप्रकाश, और अन्त मे जाकर जिस सतान के लिए उसने नटनागर का क्रोध सहा, उसीका क्या उसने एक सन्तान-वत्सला पीडिता मा को दान नही दे दिया ?

मैं जानता हू, मेरे मन का चोर रह-रहकर उठता है, और मुझे कहता है कि शब्दो के धोखे मे मत आ बेवकूफ !—कमला ने दिया हो, पर क्या वह देने के ही लिए देना था ?—और यौवन के उच्छृखल प्रवाह की तटभूमि छोडकर किसी सूखी घाटी को आप्लावित कर देने के महत्व मे, समाज-व्यवस्था की हरी-भरी खेती को अपनी प्रबल बाढ मे नष्ट-भ्रष्ट कर देना क्या सरलता से भुलाया जा सकता है ? मै सोच रहा था और कमला कहे चली जा रही थी, तभी मानो उसने मेरे मन के चोर को पकड लिया हो, और वह बोली :

'नर और नारी एक दूसरे के पूरक हैं, यह तुमने उस दिन कहा था, कौन किससे श्रेष्ठ है, यह प्रश्न तो तब उठे जब नर एक वस्तु हो और नारी एक अलग !—फिर प्रत्येक नर और प्रत्येक नारी किसी मशीन का स्टैण्डर्ड पुर्जा भी नही, कि सब जगह समान रूप से 'फिट' हो जाएगा।—तब भी उनके पारस्परिक सबधो की चरम सार्थकता तो यही 'फिट' हो जाने ही मे है। ठीक फिट न होने की अवस्था मे मशीन की गति कुण्ठित हो जाए, सघर्ष पैदा हो, अवरोध बढते जाएं, तो किसे आश्चर्य होगा ?—तब क्या एक ही पुर्जे के व्यक्तित्व को इधर-उधर मनचाहे ढग से तराशकर, 'फिट' करना ही समाज के पास शेष उपाय है ?—खासकर तब जबकि सभी आकार-प्रकार के कई-कई पुर्जे उसके पास मौजूद हो ?'

'तो क्या तुम प्रयोग की बात कहती हो कमला ?'

'वह कहू भी तो कौन उसे युक्तिहीन कह देगा ?—पर वह भी नही

भैया ! तुम्हारी फिलासफी को मै नही पहुच पाऊगी, किन्तु मेरा भी तो एक मन्तव्य है ही ।'

'अवश्य, और मैं उसकी इज्जत करूगा बहन ।'

'सो मै जानती हू !—पर '

'कहो न ।'

मूखी हसी हसकर उसने कहा, 'सामान्य मापदण्डो मे तो मुझे स्वैर—व्यभिचारिणी—पर-पुरुषगामिनी, वेश्या इन्ही शब्दो मे समाज अभिषिक्त करेगा--कुछ और प्रगतिशील विचारक मनोवैज्ञानिक मेरे स्खलन को जस्टिफाई करने के लिए मेरी वकालत के लिए कहेगे 'बेचारी इस सोशल आर्डर मे—सामाजिक विधान मे 'फिट' नही हो सकी !— किन्तु मै इसे भी अपनी ढाल नही बनाऊगी । मै यह स्वीकार करती हू कि नर और नारी एक दूसरे के पूरक हो, पर वह तो व्यक्तित्व का केवल एक ही पहलू है, एकमात्र पहलू नही—केवल शरीर सम्बन्धी, सिर्फ बायो-लॉजिकल, किन्तु इसके आगे तो हर व्यक्ति का चाहे पुरुष हो या स्त्री, उसका एक निज का व्यक्तित्व है, जो किसी कल विशेष का प्रमापित, स्टैण्डराइज्ड, पुर्जा नही है, जहा पर हर व्यक्ति पुरुष या स्त्री, एक सतह पर अपने-अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए समान अधिकारी है ! नही क्या ?'

'तुम ठीक कहती हो ।'

'सच तो यह है कि, जो स्टैण्डराइज्ड है, वह जड है, वहा व्यक्तित्व के लिए कोई चुनाव, स्वेच्छा नही, वहा वही जडतापूर्ण 'फिटनेस' समायोजन की अपेक्षा है, निरी भावहीन, यान्त्रिक—किन्तु जो कुछ उसके परे है वही है शुद्ध चैतन्य, मनोरम, भावपूर्ण, सतत विकासोन्मुख !— अधिक साफ कहने दो तो कहूगी कि नर-नारी के बीच का यौन सम्बन्ध एक यान्त्रिक, जड, पाशविक सम्बन्धमात्र है, और समाज इतना जड, यान्त्रिक और पाशविक हो उठा है कि इस सम्बन्ध को ही शाश्वत मान-कर व्यक्तित्व के परवर्ती विकास को भुला बैठा है, बल्कि कहना चाहिए,

दूसरे सम्बन्ध की महत्ता को पहले की महत्ता पर बलिदान कर दिया है, जिसे कहते हैं मोहरे लुटे और कोयलो पर कलम ।'

अपने मनोराज्य मे कमला की एक और नई मूर्ति के दर्शन मुझे हो रहे थे । अब तक प्राचीन मापदण्डो से ही मै कमला को परखने की चेष्टा कर रहा था, उसकी दीखने वाली उच्छृखलता को भी मै औचित्य के दायरे मे अपने ही तरीके से देखने की चेष्टा कर रहा था—किन्तु नही, उसका स्वय का एक विवेकपूर्ण, सुस्पष्ट और सशक्त दर्शन है—वह उचित या अनुचित उच्छृखलता नही, किन्तु एक सत्य का विकारहीन अनुभव है ।

वह कह रही थी और मै सुन रहा था, 'फिर भी भैया ! जड भाव ही सही, कहना चाहिए यौन सम्बन्ध का यह पहलू ही नारी के दुर्ग का सबसे कमज़ोर मोर्चा है, जड है, प्रकृति ने इसे स्टैण्डराइज्ड कर दिया है, इसलिए पुष्ट व्यक्तित्व के बावजूद इस कमज़ोरी से मुक्ति नही मिलती । तब एक ही उपाय रह जाता है, कि किसी दृढ दुर्गपाल, प्रहरी के हाथो इस भाग का समर्पण कर दिया जाए । शायद कभी प्राचीन काल मे समाज की विवाह-सस्था ने इसी उद्देश्य को सिद्ध किया हो ! पर यदि प्रहरी ही कमजोर हो तो क्या किया जाए ?'

मैंने कहा ज़रा हसकर, 'उससे स्तीफा लेकर किसी उपयुक्त प्रहरी को नियुक्त कर दिया जाए !'

उसने भी हसकर कहा, 'यह उपाय है तो—पर समाज इसे स्वीकार कहां करता है ?—फिर स्तीफा ?—वह तो प्रहरी का पद पाकर मालिक जो हो जाता है ।—उसे पदस्थ करना ..'

मैंने कहा, 'पुरुषो का समाज स्वीकार नही करेगा ।'

'मैं अपनी ही बात कहूगी भैया !—यह जड भाव वास्तव मे, इस समय तो, व्यक्तित्व की एक बहुत बडी बाधा है ! मनोविज्ञान की बात, कि सेक्सीय प्रेरणाए—सेक्सुअल अर्जेस—ही मनुष्य की क्रियात्मकता का उदय है, न भी मानी जाए, तो भी शरीर के साधारण नियम से ही सरलता से

दिखाई दे जाता है कि इस बाधा को पार किए बिना नर और नारी अपने स्वस्थ सबध के स्तर पर आ ही नही पाते, चाहे जितनी सदाचार की शिक्षा दो, पाप-पुण्य का भय दिखाओ, समाज-व्यवस्था के द्वारा दण्ड का विधान करो। व्यक्ति को इस सकीर्ण छोटे दरवाजे मे अपने को नीचा-छोटा करके निकलना ही पडता है, किन्तु एक बार इस बाधा को पार किया कि फिर विकास का एक राजमार्ग सामने आ जाता है। मै नही समझती कि इस व्यर्थ की पगु किन्तु अनिवार्य वस्तु को व्यर्थ का महत्व देकर समाज ने क्या पाया है ?'

'व्यक्ति को भोग-लिप्सा तो मिली है।'

'गरीब अश्वत्थामा की वह कथा नही सुनी कि आटा मिले पानी को दूध के भ्रम मे पीकर वह उसे ही दूध का शाश्वत आनन्द समझे बैठा था। आज का व्यक्ति भी इतना ही गरीब है, वह दूध के स्वाद को जानता ही नही ! मेरा अपराध है भैया, तो इतना ही कि मैंने जीवन के प्राकृत तत्व को पाने की चेष्टा की है।—तुमने अब तक शायद अपने आपको खोने की दिशा मे काफी सफलता प्राप्त कर ली हो—तुम्हारी उस शाति के सतोष का अनुभव मैं भी करती हू। मैने प्रयत्न किया है दूसरी प्रकार का—अपने आपको पाने का ! नही कहती कि मैं उसमे सफल हुई हू। किन्तु प्रयत्न तो है ही। प्रयत्न का आनन्द तो है ही भैया !'

मैंने जैसे निद्रा से उठकर एक लम्बी सास लेकर कहा, 'तुम्हारी ही बात सच हो शायद। समाज को तुम एक नई दिशा दे सकोगी या नही—किन्तु तुम्हारी स्वय की तो एक नई दिशा है ही, और देखता हू कि किसीको उसकी आलोचना करने का अधिकार तो नही ही है, आलोचना करने का साहस भी उसे नही होना चाहिए।'

'क्यो—क्या यह मेरा व्यक्तिगत मामला है इसलिए ?—पर यह छूट तो मैं नही चाहती।'

'इसलिए नही कमला !—यह सच है कि समाज तुम्हे विद्रोहिणी कहे !—तुमने समाज के जर्जर सस्कारो को तोड फेकना चाहा है—

समाज के धनी-मानी इसे सहन नही करेंगे—आलोचना करने पर उन्हे अपने ही पक्ष की कमजोरी दिखाई देगी, इसलिए वे इस मार्ग को पसन्द नही करते किन्तु उनके हाथ मे चाबुक है, वे सीधे उसीका प्रयोग करते है ।'

'मै उसकी चिन्ता नही करती ।'

'तो तुम्हे सफलता मिलेगी । किन्तु बहन ! एक बात का बडा भय लगता है ।'

'क्या ?'

'नारी के समस्त सस्कारो से जूझना—कल्पना करो एक अपरिचित नई जगह मे एकाकिनी की, जिसे अपने हाथो अपना मार्ग बनाना होगा, अपने आशा-विश्वासो से जूझना होगा—अपने आशा-विश्वासो से और शर्त यह है कि तुम नारी बनी हो उस भूमि मे जहा उसका गठन बिल्कुल भिन्न प्रकार का है, उसकी आकाक्षाए · '

'ठहरो भाई !—तुम कहना क्या चाहते हो ? साफ कहो न ? नही कह सकते ? मै ही कहती हू । जिस यौन सम्बन्ध को मैने बाधा कहा है, 'सुविधा' कहना चाहते हो न तुम उसे ?· ' और वह मुस्करा दी—'यह दुर्बल मोर्चा है न—नारी ही का नही पुरुष का भी महाशय !—पुरुषवादी समाज मे अब तक विजेता पुरुष ही रहा है, इसलिए अपनी दुर्बलता की बात वह बिल्कुल ही भूल बैठा और नारी के उस दुर्बल मोर्चे को लेकर सदैव ही आक्रमणकारी का दम भरता रहा ।—और उसकी क्षुद्रता देखो—वही पर उसकी विजय की इतिश्री हो गई ! उस कमजोर मोर्चे को हथिया कर बस दरवाज़े पर ही थककर वह बेहोश हो गया—उसके मनोराज्य पर उसने कभी विजय पाने की चेष्टा न की ।···'

'वह भूमिका तुम ग्रहण करना चाहती हो ?'

कमला मुक्त कठ से हस पडी, 'नही, वह हीन, पशु-सुलभ जय-लिप्सा मुझमे नही है भाई ! उस जड़ भाव को अगीकार करके मैं जड होना नही चाहती । मैं उसे कोई महत्व दूं ही क्यों ?'

'किन्तु उस जड भाव का लाभ तो तुम्हे मिलता है। तुम ऐसा सोचती तो हो ही।'—और फिर क्षीण भाव से मुस्कराकर मैंने उसके कठ-प्रदेश के नीचे के अनावृत भाग पर एक भावपूर्ण दृष्टि निक्षिप्त की। डूबती हुई चादनी मे भी मालूम दिया, कमला को मेरी दृष्टि का तात्पर्य समझ मे आ गया और उसने शीघ्र ही साडी के पल्ले को उठाकर अपने स्कन्ध पर डाल लिया, पर हसी नही रोक सकी वह, और बोली

'पर तुम तो मुफ्त ही मे मेरे भाई बन गए हो।'

'भाई बनने के लिए इससे अधिक पूजी की अपेक्षा भी नही है क्या ?'

'तुम्हारे पास है ही क्या ?—नि स्व जो हो चुके हो !'

'ठीक तरह से देख लिया है ?'

'यही तो देखा है आज ?'—और फिर मानो किसी दूसरी ओर देखकर उसने कहा, 'सध्या को मेरे मन की स्थिति क्या थी, कहूगी नही ! दादू ने कहा था, बीबी जी, मैं भी चलू ?· मैंने सोचा, अपने प्रयोग मे मुझे अकेली रहना ही रुचता है, और उसे छुट्टी दे आई। पर किसे पता था कि आज की सध्या मेरे प्रयोग की असफलता की सूचक ही नही होगी, बल्कि उसे एक नया मोड ही मिल जाएगा।'

'क्यो ?· यदि प्रहरी मन के उपयुक्त न हो तो दूसरे को क्यो नही नियुक्त कर लेती।'

'मन के उपयुक्त न हो, पर अशक्त तो नही है। वह दुर्बल मोर्चा इस सरक्षण को पाकर स्वय जो सशक्त हो उठा है और सबसे बडा सतोष, यह केवल प्रहरी है, अपनी कोई कीमत नही मागता, कोई स्वामित्व नही चाहता, सर्वस्वान्त होकर जो आ बैठा है · '

मेरे सारे बदन मे कपकपी छूट गई, 'पर मैं ···'

'हा हा · मैं ! · मैं !! मै !!! पर डरो मत, मै तुम्हे घेरूगी नही —तुम्हारे अनासक्त मन को बाधने जैसी शक्ति मुझमे नही है, तुम रहोगे केवल मेरे वायवीय मन का आधार—दिगन्तहीन तूफानी समुद्र मे

जहाज़ के कोने मे पडा हुआ एक दृढ लगर, जिसकी आवश्यकता शायद कभी न हो ! पर आधी रात से अधिक हो गई है । सोओगे नही ?—बीमारी से उठे हो !'

मैंने उठने की कोई चेष्टा नही दिखाई। शायद उसने क्या कहा यही नही सुना ! बोला :

'कमला ! एक बात बताओगी ?'

'क्यो नही बताऊगी ?'

'अपनी सन्तान से बिछुडते समय क्या तुम्हारे मन मे मा बनकर कोई नही बोली ?'

कमला हस दी, बोली, 'यही प्रश्न मैंने भी अपने आप से असख्य बार किया है।—तुम्हे आश्चर्य होगा, मैंने उस सन्तान का कभी मुह तक नही देखा । फिर भी दो-चार दिनो तक मै उद्भ्रान्त अवश्य रही थी । दुर्भाग्य से यदि मेरे पति ने मेरे साथ उस सम्बन्ध मे असहयोग नही किया होता, तो शायद मेरे मातृत्व की भावना का कुछ दूसरी ही दिशा मे विकास होता । सम्भव है, मुझे अपने दुर्ग के एक और कमजोर मोर्चे की जिल्लत उठानी पडती । पर परिस्थितियो ने उसे सम्हाल लिया ! और उसके बाद मै उस बात को एक तरह से भूल ही गई हू, एक स्वप्न की भ्रान्ति की तरह ही—अच्छा या बुरा स्वप्न !'

'और तुम्हे यह नही मालूम कि वह सन्तान अब कहा हे, कैसी है ?'

'बिल्कुल नही—कभी जानने की इच्छा ही नही होने दी । जीवित भी है या मृत, यह भी नही जानती ।'

'क्या तुम जानती हो कि वह सन्तान किसको दी गई थी ? या यह भी नही जानती ?'

'तुमसे झूठ नही बोलूगी । अब तक तो मै एक तरह से इस बात को बिल्कुल ही भूल चुकी थी, पर अब याद पडता है, वह कोई रेलवे ही के अधिकारी थे !'

'रेलवे के अधिकारी ?'

'हा !'

'नाम ?'

'नाम तो याद नही रहा भाई ! शायद कुमार—या, हा, एक इजीनियर थे !'

'उन्हे देखा था ?

'देखा था ! वैसे अच्छे ही व्यक्ति थे, बेचारे दुखित थे तो अपनी पत्नी के कारण—पत्नी एब्नार्मल, हिस्टीरिया से ग्रस्त, अर्ध विक्षिप्त, बिल्कुल नर्वस !—प्रौढावस्था मे डिलीवरी का अवसर प्राप्त हो रहा था, और दुर्भाग्य बेचारी का—'स्टिल डिलीवरी' का केस हो गया, उसकी जान बच गई, पर बच्चे को वह नही पा सकी ।'

'आदमी कैसा था ?' धडकते मन से मैने पूछा ।

'तब यही ४५-५० की उमर होगी उनकी, साधारण तौर पर सुदर्शन, क्लीन शेव्ड, चेहरा कुछ लम्बा खिचा हुआ, पतले अधर, दांत उनके बीच से कुछ-कुछ दिखाई देते हुए—अपनी उमर जितने लगते न थे । सिर पर चाद, किन्तु खिचडी बाल इस तरह कढे हुए कि चाद को ढक ले ।'

मैंने कहा, 'क्या मिस्टर कपूर तो नही ?'

'हा—हा—यही, तुम जानते हो क्या ?'

मेरा दिल जोर से धडक उठा, एकाएक मै कोई उत्तर नही दे सका ।

कमला ने हसकर कहा, 'तुम जानते भी होगे उन्हे, तो निश्चय जान लो मै उस लडके का दावा करने कभी न जाऊगी ।'

मै क्या कहता ! सयोग कहू इसे या भाग्य कि श्री नटनागर जिस अजात शिशु को प्राणपण से घृणा करना चाहते थे, और जिसके लिए उन्होने अपनी एकमात्र सभ्य पत्नी तक को खो दिया था, उसीकी माया मे एक अपरिचित शिक्षक होकर यो विवश हो जाएगे ?—कमला से कहू या नही ?—नही, अभी नही—

कि कमला ने कहा, 'लो, बहुत बाते हो चुकी । देख रहे हो पूर्व की ओर ?—अगर कुछ हो गया तो भुगतना मुझे ही तो पडेगा । चलो सोओ ।' और उसने मेरा हाथ पकडकर उठा लिया जबर्दस्ती ही ।

मैंने उठते हुए कहा, 'अच्छा, यदि कभी अपनी सन्तान को अपने सामने पा जाओ ?'

'तो पहचान नही सकूगी । कभी देखा ही नही ।' और वह फिर हस दी ।—इतनी अनासक्त, इतनी अहेतुक !—क्या यह नारी है ?—मा है ?

मैंने कहा, 'और यदि कभी परीक्षा लू ?'

'चुनौती देते हो ?—देखती हू, तुममे भी कुछ ईर्ष्या घर कर रही है !' और वह फिर हस दी, निर्बाध-निर्मुक्त, मेघमुक्त चन्द्रमा की तरह !

'ईर्ष्या ही सही !—आखिर मनुष्य ही तो हू ।'

'मनुष्य नही, बच्चे हो तुम—और तुम्हे ईर्ष्या मुझसे नही, उस बच्चे से है !'—शायद उसने अपनी आखो के भाव को छिपा लिया, या मै ही नही समझ सका, पर उसने सचमुच ही मेरे हाथ को इस तरह पकड लिया, जैसे कोई मा अपने बूढे बीमार बच्चे को एहतियात से मना कर सहारा दे रही हो ।

१९

किन्तु अब कमलनयन का काम पहले जैसा चलना नही चाहता । एक साधारण पी० डबल्यू० आई० के आफिस में साधारण क्लर्क की बिसात ही क्या ?—इसी बीच अकस्मात् उसके पिता का देहांत हो गया, और आ पड़ा उसके कन्धे पर भार उसकी बूढी मा तथा एक सम्प्रदानोत्सुक बहन का । बाप की स्थिति कोई विशेष अच्छी न थी । बेटे से बहुत कु

आशाए थी, एडी-चोटी का पसीना एक करके और किसी तरह आधा पेट भर के उसे बी० ए० तक पढाया था। जब उसे क्लर्क की नौकरी मिल गई, तो उन्होने अपने परिश्रम को सार्थक भी समझ लिया था, किन्तु कालान्तर मे जब देखा कि वही ढाक के तीन पात है, तो वे लोग निराशा-ग्रस्त हो गए थे। विवाह की बात भी चली थी, पर लडके ने जब इन्कार कर दिया, तो वे ही क्या कर सकते थे—फिर आर्थिक सुविधा का भी प्रश्न था ही। लडका तो फिर भी ठहर सकता है, पर यह लडकी जो उमर के बन्धन को तोडकर होली की तरह बढती जा रही है, वह तो ठहर नही सकती। उसके हाथ तो पीले करने ही पडेगे—इसी चिन्ता मे ही मानो बूढा बाप घुल गया। कमल की रूमानी ज़िन्दगी पर पाला पड़ गया। विधवा बूढी मा और जवान कुवारी बहन, इधर भविष्य की सब आशाओ मे हीन छोटी-सी नौकरी ! क्या आश्चर्य कि कमलनयन जोशी का मिज़ाज अपनी जगह छोड बैठे।

कमला, सतत प्रगतिमान, अनिरुद्ध जल-प्रवाह की भाति शुद्ध, स्वच्छ, अत. अब आज के कमल जैसे स्थिर-जडीभूत व्यक्तित्व से उसका मेल बैठना कठिन है। जड वस्तु उस प्रवाह को रोकना चाहती है, यदि प्रवाह मार्ग बनाकर निकल भी जाए, तो भी वहा पडी वह जड वस्तु बहते हुए कचरे को रोककर इकट्ठा करने की प्रवृत्ति को रोक नही सकती।

उस दिन सन्ध्या के समय जब कमलनयन जोशी श्रीमती कमला नट-नागर के घर पर आए, तो उन्होने सोचा था कि कमला घर पर बैठी हुई उन्हीकी प्रतीक्षा कर रही होगी, और चूकि गत कई दिनो से वे जा नही सके हैं, इसलिए उनसे कैफियत तलब की जाएगी। उत्तर मे वे क्या-क्या कहेगे, और फिर किस तरह अपनी शिकायतो का अम्बार लगा देगे, यह भी वे सोच चुके थे, पर देखा गया कि घर पर घर का मालिक नही है, है सिर्फ नौकर दादू।

इसी बीच यह भी कह देना उचित होगा, कि जिस घर पर कमल

आया है, यह वह पहले वाला वर नही। कमला भी अब वह पहले वाली नही है। उसके उपयुक्त पहले वाला घर हो भी नही सकता। यह एक छोटा-मोटा बगला ही समझिए। हाई स्कूल की प्रधानाध्यापिका जो ठहरी। स्कूल की सीमा मे ही है यह बगला! छोटा-सा किन्तु सुन्दर—स्कूल के माली द्वारा लगाया हुआ एक छोटा-सा बगीचा चारो ओर—सुरुचिपूर्ण सजाया हुआ। कोई नया अतिथि बिना सभ्रम के न जाता।

किन्तु कमलनयन नये अतिथि नही। दादू उन्हे पहचानता है, अत. उन्हे वह ड्राइग रूम में ले जाकर बैठा आया।

कमल ने पूछा, 'कहा गई है ?'

'पता नही! मगर कह गई है, जल्दी ही लौटेगी!'

कमल बाबू का अधिकार भी दादू समझता है, वह आगे हुक्म की राह देखने लगा, तो कमल ने कहा, 'तब तक चाय ही बना ला एक कप !'

दादू कमल को उसी कमरे मे छोडकर चला गया।

कमरा भी रुचि के साथ सजाया हुआ, दीवारे हलके नीले डिस्टेम्पर से पुती हुईं, प्रवेश-द्वार के साथ ही एक खिडकी, सामने की दीवार मे भी उसी तरह एक दरवाजा तथा खिडकी, जिनपर दीवार ही के रग के पर्दे, बगल की दोनो दीवारो से जडी हुई दो अलमारिया, जिनमे पुस्तके सजी हुईं! नीचे फर्श पर सुन्दर कालीन, कोने मे एक ऊचे स्टूल पर फूलो का एक ताजा स्तवक, पीतल के पॉलिश किए हुए गमले मे सजा हुआ। प्रवेश द्वार के ऊपर महात्मा गाधी का आवक्ष चित्र, दूसरे कोने मे वैसे ही एक स्टूल पर बुद्ध की आवक्ष मृण्मूर्ति बाजू की दीवार से अलमारी के साथ सटी हुई एक सेक्रेटेरियट टेबल, जिसपर लिखने का सामान सजा हुआ। कमरे के ठीक बीच मे काले काच की एक गोल टेबल, सामने की ओर सोफा सेट का कोच, बगल मे दोनो ओर सेट की शेष कुर्सिया—इसके अलावा भी चार इज़ीचेयर्स—सोफा सेट के पास काले काच के छोटे स्टूल जिनपर इनेमल की सुन्दर राखदानी ! शीर्ष पर बिजली का

पखा जो इस समय मथर गति से चल रहा है, और कमरे मे प्राण फूक रहा है। प्रकाश के लिए दीवार मे दोनो ओर दो सुन्दर शेड लगे हुए है, जिनसे रोशनी आखो पर सीधी नही पडती। टेबल पर एक स्टैण्ड के साथ एक छोटी ट्यूब लाइट लगी हुई है जिससे लिखते समय काम लिया जा सकता है। इस समय प्रवेश-द्वार के पास वाली हलकी बत्ती जल रही है। कमरे को देखकर उपभोक्ता की सुरुचि की सराहना करने को जी चाहता है।

पर कमल की दृष्टि इस ओर नही थी—वह अपने अन्तर मे भविष्य को देखना चाह रहा था। कमला आज काफी ऊचाई पर चढ गई है, क्या इसमे उसका निज का कोई श्रेय नही?—जितना वह बढ पाई है, उतना कमल नही, किन्तु फिर भी बिना उसकी सहायता के क्या वह इतनी आगे बढ सकती थी? नीव का महत्व तो उसे ही मिलना चाहिए। भले ही नीव नज़र न आए, पर जितना ऊचा चढना हो, उतनी ही गहरी क्या नीव न होगी?—फिर उसका त्याग?—उसीके लिए उसने भविष्य के सब सपने नष्ट नही कर दिए?—उसकी जैसी योग्यता थी ही किन क्लर्कों मे?—स्वय नटनागर केवल इण्टर पास—यदि चेष्टा करता, तो क्या उनसे कमल बाज़ी नही मार ले जाता?—उसके बाद भी जब उसे क्षेत्रीय कार्यालय मे तबदील कर दिया गया, तब भी उसने उन्नति के समस्त दावे छोडकर जो यहा रहना पसन्द किया, वह किसके लिए?—यदि वह तव वहा चला जाता तो आज अपर डिविजन की ग्रेड मे मिलता!—मा-बाप छोडे, अभी तक विवाह नहीं किया—सब आखिर क्यो? ··

वही कमला क्या ठाठ से रहती है!—ऐसा शानदार बगला, मानो सारी रेलवे की जनरल मैनेजर ही हो!—और एक वह है पचपन-तीन-अस्सी की दीवारो मे कैद, फटीचर, टूटे हुए कन्धे पर विधवा मा और विवाह के लायक बहन!—क्या यह उचित नही है कि कमला अपने ऐश्वर्य मे भी कमल को भागीदार बनाए?—भागीदार न भी बनाए,

तब भी कमला उसे कुछ सहायता अवश्य देगी। आखिर दोनो मे इतना गाढा सम्बन्ध रहा है—वे दोनो एक दूसरे को कितना चाहते रहे हैं !—बिना त्याग किए क्या किसीको चाहा जा सकता है ?—कमल ने अपना पार्ट कर दिया, अब कमला की बारी है।

चाहा तो है, पर क्या वह प्रेम भी था ?—सम्बन्ध के उस प्रभात मे शायद कमला जानती भी न थी कि कहा चली जा रही है वह ?—फिर कमला की जगह कोई 'एक्स' उस अधेरे मे उसका हाथ पकडकर खीच ले जाता, तो क्या वह नही जाती ?—ऐसे किसी 'एक्स' को वह न जानता हो, तो भी एक धर्मप्रकाश को तो वह जानता ही है। तब उसे कैसे कहे वह कि यह सब कुछ प्रेम के कारण था ?—लेकिन एक बात तो साफ है—धर्मप्रकाश के बाद भी उसका परित्याग न हुआ, और उसने जो त्याग किया है, वह तो है ही।

विवाह वह अब भी कर सकता है, उमर ही वैसी कौन बहुत बडी हो गई है ?—उसकी जाति मे उस जैसे लडके मिलते ही कहा हैं ?—पर जाति की लडकिया·· नही, वे कमला जैसी नही होती—प्रारम्भ मे कमला भी ऐसी नही थी, पर अब एक और कच्चे मसाले से मूर्ति गढने का धैर्य और सामर्थ्य कमल मे नही है। अब वह विवाह करेगा, तो कमला जैसी गढी-गढाई मूर्ति ही से करेगा। और लडकिया उसे मिल जाएगी। ऐसा बुरा भी तो वह नही है। यदि सकल्प वह कर ही ले तो अब भी अपना भविष्य बना सकता है।—कमला भी तब उसे देखेगी—किन्तु—नही-नहीं, अभी तो उसे बहन के विवाह की बात सोचनी है, बहन के विवाह की—नही तो उसकी दुखिया मा को चैन नही मिलेगी। किसी तरह इस दायित्व से छुटकारा पा ही लेना है।

लडका है ही, बात केवल रुपयो की है ! मा भी क्या सोचे बैठी थी कि मैं इतने दिनो से टनों पैसा इकट्ठा करता रहा हूं !—कुछ नहीं तो भी चार-पाच सौ तो पिता के श्राद्ध मे ही श्राद्ध हो गए !—वह भी क्रेडिट सोसाइटी से उधार मिल गया, आखिर इतना पैसा प्रॉविडेण्ट फड

मे मिल ही जाएगा !—पर अब ?

इन्ही चिन्ताओ से व्यस्त था कि पीछे से आवाज़ आई, 'कौन कमल बाबू ? माफ करना भाई !—कब से बैठे हो ?'

'तुम्हारी बला से !—शाम से बैठा हू, साढे छ से, गई कहा थी ?'

कमला ने हाथ का बैग राइटिंग टेबल पर फेककर कहा, 'तुम तो हो गए हो अब ईद के चाद। कितने दिनो से खबर ली है ?'—और वह बिजली के पखे को थोडा तेज़ करके कमल के सोफे के बाज़ू पर ही बैठ गई—'क्या नाराज हो गए ?—कुछ सुस्त भी दिखाई देते हो !'

कमल ने मुस्कराकर कमला की आखो मे आखे गडाकर कहा, 'उस दिन कहा तो था मा और बहन आ गई है, घर से निकलना अब उतना आसान कहा रहा ?—फिर दिन भर उनका वही रोना, बहन क्या हुई, आफत हो गई !'

कमला ने हसकर कहा, 'लडकी होते तो मालूम पडता।'

'तुम भी तो हो !—कहा से लौट रही हो ?'

'क्या बताऊ।—अकेले तबीयत ही नही लग रही थी, ज़रा पिक्चर चली गई थी।'

'वहा दुकेला कौन हो गया।'

'दुकेला क्यो ?—वहा तो कई थे।—तो बहन को अगर आफत समझते हो, तो पीले क्यो नही कर देते उसके हाथ ?'

कमल अपनी आफत की बात भूल ही गया। कमला के पूर्वार्द्ध से ही सूत्र पकडकर उसने कहा :

'तुम तो कभी अकेली जाती नही हो ?'

'सो अकेली थी कहा ?—कह तो रही हू—पर्दे पर, जिन्हे देखने गई थी, वे भी कई थे और उन्हे देखने वालो का भी अभाव नही था।' स्पष्ट ही कमला साफ कहना नही चाहती थी।

कमल ने कुछ खीझते हुए-से कहा, 'कोई नया दोस्त फासा है क्या ?'

कमला कुछ चौक उठी, नाराज भी हुई, बोली, 'तुम्हारा मतलब ?'

कमल सम्हल गया, उससे सचमुच गलती हो गई। ईर्ष्या का कोई कारण तो उसके पास नही है। हसकर उसने कमला के फैली हुई गौर बाहु पर अपना हाथ भी रख दिया, और बोला

'लो, तुम नाराज हो गई! मार्कट्वेन ने कहा है न, दु ख तुम्हे अकेले ही सहना पडता है, पर सुख के क्षण मे जब तक कोई साथी न हो, उसका उपभोग हो ही नही सकता।—यह तो तुम खुद ही कई बार कह चुकी हो।'

कमला भी हस दी, क्रोध करने का कोई कारण सचमुच नही था, बोली, 'आदमी का मन भी तो बडा लोभी अथवा क्षुद्र है।—मत्र, ब्राह्मण और अग्नि की पूजी जिसकी स्मृति मे हो, वह तो किसी भी क्षण नारी के ऊपर अपने अधिकार को चरितार्थ कर ही डालता है, पर बिना ऐसी पूजी के भी वहुतेरे इस लोभ मे भटकते फिरते है। फिर भी कमल, यू आर ए प्रेटी इनोसेण्ट बॉय—भोले बालक हो!'—और यह कहकर अपनी सुगन्धित साडी के पल्ले से प्राय कमल को ढाकती हुई वह उठ खडी हुई और हसकर कहती रही—'तुम्हारे मित्र 'माई लॉर्ड' मेरे साथ थे।'

'माई लार्ड—वे कहा मिल गए तुम्हे ?'

'मिलते कहा ?—पहले से निश्चय था, वे यहा आ गए थे।'

'तव हमारी याद क्यो आने लगी। अच्छा, तुम्हारे पहले ही एक बार चाय पी चुका हू। समय भी बहुत हुआ, यदि आज्ञा दो तो चलू। तुम्हे भी आराम करना ही होगा।'

कमला फिर हस दी। आज, मालूम देता है, वह बडी प्रसन्न है। बोली, 'अरे! क्या उस पत्थर के आदमी से भी तुम्हे ईर्ष्या होने लग गई ?'

'पत्थर के ?'

'पत्थर के नही तो क्या ?—उसके क्या कुछ भावना है ?

गुलाबजामुन तो वह पसन्द करता है, पर शेष मे तो वह कोरा शून्य है, क्या तुम नही जानते ?—आखिर उनसे परिचय तो तुम्हीने करवाया था मेरा !'· ·

'पर देखता हू कि मुझसे अधिक तुम्ही उन्हे जानती हो। इतने नज़दीक से देखना स्त्री ही को तो आता है।'

'सो तुम्हे भी तो कम नज़दीक से नही देखा है।' और पास आकर उसने अगुली से कमल के गाल को छू लिया, फिर जरा क्रोध का नाट्य करके बोली, 'अरे !—तुमने तो आज शेव भी नही की। यदि अगुली मे खून निकल आता तो ?'

'अच्छा ही होता, खून के अपराध मे फासी पा जाता, छुटकारा मिल जाता।'

'छुटकारा चाहते हो ?—सचमुच, चाहते हो ?'—और उसने कमल की आखो को अपनी आखो से पकड लिया।

नीची निगाह करके कमल ने एक लम्बी सास ली, और कहा, 'तुम ही यदि छुटकारा देने पर आमादा हो जाओगी तो मेरा रह ही क्या जाएगा।'

'दार्शनिक बनते जा रहे हो।—मालूम होता है, दिल पर चोट खा गए हो।—धडक रहा है न दिल ? देखू और अनायास ही कमला ने नीचे झुककर बैठे हुए कमल के सीने से अपने कान लगा लिए। कमल ने आखे बन्द कर ली, धीरे-धीरे उसकी बाहुओ ने कमला को घेर लिया।

कमला ने कहा, 'चोट कैसे लगी, कहोगे नही ?'

'लाभ क्या ?'

'लाभ ?—स्त्री से नही कहोगे तो कहोगे किससे ?—नारी सब आघातो का मरहम जो है।'

'इस समय तो दूसरा ही आघात है।'

'दूसरा कौन-सा ?—कोई अन्य नारी ?'—और वह पास से छूटकर हसती हुई कहने लगी, 'नही, मैं तुम्हारी तरह ईर्ष्या नही करूगी ·'

'ईर्ष्या तुम नही करोगी, यह मैं जानता हू। मेरी समस्या—है तो नारी ही, पर · '

'कहो न!—'

'वह मेरी बहन है।'

कमला एक दूसरे सोफे पर बैठ गई और बोली, 'क्या उमर हो गई उसकी ?'

'यही सोलह-सत्रह।'

'अच्छा। कोई लडका-वडका देखा है ?'

'लडका तो है—पर लडकी के विवाह मे · '

'क्यो ? क्या दहेज मागता है ?'

'दहेज मागे, वहा मै कभी शादी नही करूगा, किन्तु फिर भी कुछ अपनी ओर से तो करना ही पडेगा। मा जो पुराने विचारो की ठहरी।'

'सो तो करना ही चाहिए।'

'करना तो चाहिए पर—कुछ रुपया प्रॉविडेण्ट फण्ड मे जमा किया था, वह पिताजी के श्राद्ध मे समाप्त हो गया—अब कोई किनारा ही नजर नही आता।'

'मा के पास क्या कुछ जेवर वगैरा नही है ?'

कमल ने कमला की ओर देखा। यह स्त्री जो मा के जेवर का सुझाव दे रही है, उसे कुछ सहायता देगी ?—मा का जेवर—वह है ही कहा उसके पास ?—मा का जेवर तो वह स्वय था, पर आज उसकी ही क्या कीमत है।

हसकर बोला, 'जेवर तो मा के पास था, बहुमूल्य, पर वह तो पहले ही बन्धक हो गया है।'

'तो उसे बेच दो।' कमला ने निर्भ्रान्ति मन से कहा।

'अब उसकी कीमत ही क्या रही ?—जहां गिरवी रखा था, वही उसे खा गई।'

'कहते क्या हो ?—क्या वह कोई स्त्री थी ?'

कमल ने एक क्षण के लिए आखे उठाकर कमला की ओर देखा, और फिर नीचे झुका ली, यही उसका उत्तर था।

कमला ने कहा, 'समझी ! अच्छा कितना रुपया होने से काम चल जाएगा ?'

'कम से कम एक हजार तो चाहिएगा ही।'

कमला पुन स्वस्थ हो गई थी, बोली—'लडका कैसा है ?'

'मजे का है, जैसी हम लोगो की हैसियत है। घर की जमीन है, खेती करता है, परिवार वाला है, खाता-पीता, स्वस्थ, सुन्दर और कुछ पढा-लिखा भी है। हमारे समाज मे इससे अधिक की कामना नही की जा सकती।'

'लडकी को पसन्द है ?'

कमल ने हसकर कहा, 'हमारे समाज की लडकी के पसन्द भी कुछ होती है ?—पसन्द दर किनार, उसके जीभ भी नही होती।'

कमला ने भी हसकर कहा, 'यानी मै तुम्हारे समाज की नही हू। अच्छा, तुम प्रबन्ध करो।—पैसे तुम्हे कब चाहिए ?'

'इन्ही दस-पन्द्रह दिनो मे मिल जाएं, तो अगले माह उसका विवाह हो जाएगा। मा कहती है, बाद मे इस वर्ष लग्न नही आते।'

'तो कल तक का समय मुझे और दो, मै खोज लू।'

'खोज लू ?'

'मेरे पास तो है नही।—तुम तो जानते हो, बम्बई मे मुझे उन्हे भी खर्च भेजना पडता है। बचाना चाहती हू, पर बच ही नही पाता।'

'फिर !'

'उधार मागूगी।'

'यदि नही मिला तो ?'

कमला ने हसकर कहा, 'मिल जरूर जाएगा ! मुझे विश्वास है। न हुआ कुछ ब्याज की चढ़ी रकम देनी पडे। बस।'

'किन्तु' '' और वह आगे नही कह सका।

कमला ने हसकर कहा, 'कमल !—मैं तुम्हे खा नही गई। तुम्हे क्या, किसी भी पुरुष को अपने घेरे से परिव्याप्त करके, उसे पगु बना देने का मेरा कभी इंरादा न रहा। लेकिन इस लोलुप पुरुष का मै क्या करू ? वह जीवन के पर्वत पर चढना चाहता है, धीरे-धीरे न जाकर रास्ते की शिलाओ को पदस्थ करके उसके शिखर को पाना चाहता है, पर वही पर थककर वह बैठ जाए, अपने पैर तुडा ले, और फिर कहे कि नारी की यह चट्टान उसे खा गई, तो नारी क्या करे !—खैर, मैं तुम्हे रास्ता दूगी—मुझे अपनी भूमि तो छोडनी ही पडेगी....'

कमल ने कहा, 'नही कमला, यदि तुम्हे कष्ट . '

बीच ही मे हसकर कमला ने कहा, 'कष्ट नही, प्रसन्नता होगी !'

'पर तुम जो चढी हुई ब्याज की दर कह रही हो—तुम्हारा मतलब मैं नही समझा !'

हसकर कमला ने कहा, 'मै नारी जो हू।'

कल्पना करके कमल सिहर उठा, 'नही कमला, मै तुम्हे किसी ऐसे काम मे प्रवृत्त नही होने दूगा . '

कमला ने हंसकर कहा, 'घबराओ नही, मैं तुम्हारे ऋण से मुक्त होने के लिए नही कर रही हू।'

'फिर भी तुम्हे मैं कोई ऐसी दर के लिए कभी बाध्य नही करूगा जिससे तुम किसी पुरुष की दृष्टि मे छोटी हो जाओ।'

'पुरुष की दृष्टि मे ?—मैं कभी छोटी नही हुई हू !'

'पर पुरुष तो समझेगा, आखिर वह इसी समझ से तो तुम्हे उधार देगा।'

'उसकी समझ से मेरा क्या जाता है ?'

कमल निर्वाक् हो गया; कुछ देर रुककर मूढ की भाति पूछ बैठा, 'आखिर तुम्हे पुरुष मे ऐसा क्या मिल जाता है, तुम उसकी इतनी भक्ति क्यो करती हो ?'

'उसमें कुछ न भी हो, तो भी नारी विवश है कमल बाबू।'

'जो तुम्हे इतना सताए, क्या इसमे भी नारी का कोई स्वार्थ है ?'

'है !'

'वह कहोगी नही क्या ?'

'सुनकर खुश न होओगे कमल ।'

'तब भी कहो न। पुरुष की खुशी-नाखुशी की तुम्हे तो अपेक्षा नही है ।'

'नही कैसे नही है ! फिर भी तुम सुनना चाहते हो ?'

'हा ।'—कमला उठ खडी हुई और बोली

'तो इसलिए कि प्रत्येक नारी यह सोचती है, कि पुरुष उसके गर्भ से उपन्न हुआ है !' और वह पास के दरवाजे का परदा ढकेलकर दूसरे कमरे मे चली गई ।

नटनागर के पत्र बराबर आते रहे । वे कमला को भी पत्र लिखते ही रहते थे, किन्तु औपचारिकता के सिवा उनमे कुछ नही रहता था । मुझे जो पत्र लिखे जाते थे, प्रतीत होता था उनके द्वारा वे अपने भार हलका करना चाहते है। जहा कही मिस्टर कपूर या सोमदत्त की बात होती, उसे बचाकर शेष सब सम्वाद मैं कमला को बता देता था । अभी वर्तमान मे सोमदत्त या उससे सम्बन्धित वातावरण से कमला को सूचित करने मे कोई सार्थकता न थी—शायद प्राचीन स्मृति को उभाड़कर कही वही उसके दु ख का कारण न बन जाए, इसलिए भी ये सूचनाए उससे बचाई जानी आवश्यक थी ।

एक दिन उन्होने सूचना दी कि मिस्टर कपूर क्षेत्रीय दफ्तर मे सुपरिं-टेडेट बनकर जा रहे है । उनका स्वय का ट्रान्सफर कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया है—क्योकि मिस्टर कपूर अभी इसी समय अपने लडके सोमदत्त को वहा से नही हटा सकते । एक माह के बाद जब उसकी परीक्षा हो जाए वे उसे लेकर ही वहा जा सकेगे । मिसेज कपूर स्वय तो जाना नही चाहती, किन्तु डॉक्टर ने राय दी है कि उनको जलवायु बद-लना आवश्यक है, यह एक अच्छा अवसर है। अतः नटनागर और सोमदत्त

दोनो ही इसी फ्लैट मे रहेगे। नटनागर के ऊपर कपूर साहब का कितना विश्वास है, यह भी उन्होने लिखा !—बस, इसी माह की बात है, फिर वे भी क्षेत्रीय दफ्तर चले जाएगे। वहा बडा अच्छा मकान उन्हें मिल रहा है। उन्होने मुझे लिखा है कि इस समय उनकी पत्नी को भी ग्रीष्मावकाश मिल जाएगा, अत यदि मै भी कुछ दिन के लिए तब वहां जाकर उनका आतिथ्य ग्रहण कर सकू, तो उनका अहोभाग्य होगा—आदि-आदि।

पत्र ऐसा ही कमला को भी गया, जिसमे उन्होने कहा है कि यदि कमला को असुविधा न हो तो ग्रीष्मावकाश वे इकट्ठे ही बिताए !—न होगा तो मा को वे गरमियो के बाद बुलवा लेगे, ताकि कमला को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

मैने तो शीघ्र ही उत्तर दे दिया कि गई बार की बीमारी का ऋण परिशोध करना है, डॉक्टरो ने राय दी है कि किसी पहाड पर जाऊ। रेलवे से पैसा मिल ही गया है, कुछ पैसा तो दोस्तो ने उधार मार लिया, जो बचा है यदि उसे भी जल्दी ही ठिकाने नही लगा देता, तो सकट की स्थिति उपस्थित हो सकती है। पहाड पर यो कभी जाने का सौभाग्य या सुविधा भविष्य मे कभी हो, इसमे सशय ही है, इसलिए अवसर का लाभ उठा लेना चाहता हू।—रहा प्रश्न उनके आतिथ्य का, उसके लिए मुझे तो कभी तिथि देखने की आवश्यकता है नही। किसी भी दिन बिना तिथि देखे ही टपक पडना मेरे लिए कठिन न होगा तब मैं भी वास्तविक अतिथि बन सकूगा।

पत्र पोस्ट करने के पूर्व मैने कमला को बताते हुए कहा, 'मुझे आशा करनी चाहिए कि तुम दोनों के बीच की खाई इस बार बिलकुल पट जाए!'

'खाई दिखाई देती है क्या ?'

'पर है तो सही !—दिखाई न दे तो और भी बुरा है।'

'तो इसीलिए पहाड पर जाने का बहाना कर रहे हो ?'

'क्यो ? क्या मैं बीमार नही था ?—गरीब हूं तो क्या इसीलिए पहाड़ पर जाने का हक नही है ?'

'गरीब तो तुम हो नही, पर—मेरी बात जाने भी दो, उन्हीको क्या मिल जाएगा।'

'आकाश का चाद !—कमला, तुमने नटनागर को भीतर से नही पहचाना, उस कठोर-शुष्क छिलके के नीचे कितना मधुर रस है'

कमला ने हसकर कहा, 'मैं गुठली तक पहुच चुकी हू महाराज !'

'वही योग तो सुझा रहा हू जहा आम के आम और गुठली भी के दाम हो !'

कमला ने सिर झुका लिया, कुछ सोच मे पड गई, फिर बोली, 'यह मेरी बदनामी क्यो करते फिरते हो तुम ?'

'बदनामी ?' मै नही समझा।

'नही तो क्या ?—पैसा दोस्तो ने उधार मार लिया, सो क्या मेरी लज्जा की बात नही है ?—मैंने तुमसे पैसा तो नही चाहा था, चाहा था केवल उपदेश—सो ही तुमने न दिया, और दे दिया पैसा !—मैं तो ब्याज भी देने के लिए तैयार हू, तुम लोगे ?'

'क्यो नही लूगा ?—मै क्या कोई महात्मा हू ?—नही पैसा कोई मुफ्त का मुझे मिला है ! पर ब्याज की मेरी धारणा सभी पुरुषो के समान हो यह तो कोई बात नही !'

कमला हस दी, 'किन्तु तुम्हारी धारणा के अनुकूल ही यदि मुझे ब्याज चुकाना होगा, तो यह बात उधार देने से पहले ही क्यों न बता दी ?'

'बता देने से शायद सौदा न पटता !'

'और यदि मै अब तुम्हारी शर्तें न मानू ?'

'तो और भी अच्छा है—समझ लो, मेरी शर्त पूरी हुई।'

'तुम यो ही शब्दों मे छला करते हो ! अच्छा, अगर यह रुपया तुम से मै नही ले लेती, तो क्या होता ?'

'कोई दूसरा लेता—लक्ष्मी तो आखिर चचला है, वह कही रुकी रहती है ?'

'फिर भी सुनू, तुमने भी तो कुछ सोचा ही होगा ?'

'चचल को अचल करने के बारे मे ? नही, असाध्य चिंतन मैं नही करता ।'

'अच्छा तो एक मिनट मे अभी सोचकर उत्तर दो ।'

'क्यो ?'

'प्रयोजन है !'

मैने हसकर कहा, 'अभी अकेला ही पहाड जाने की सोच सका हू, तब तुम दोनो को भी ले चलता ?'

'दोनो को ?'

'हां—नटनागर-दम्पति को । उनके स्वास्थ्य का मुझे ख्याल होता है—मै साथ मे रहकर उनके मानसिक स्वास्थ्य का भी प्रबन्ध करता !'

'यानी, हम दोनो मे घटक-वृत्ति करते !'—और वह हस दी । फिर उसने जैसे बात उडाते हुए कहा, 'कमल रुपये लौटा नही सकेगा । मैंने उसे इसलिए दिया भी नही है ! आखिर उसने मेरे लिए कम भी नही किया है ।—गुरु-दक्षिणा ही की बात सोचू, तो भी यह कितनी-सी रकम है । पूरी रकम चुकाने मे कुछ समय भी तो लगेगा, किन्तु मै प्रयत्न करूगी कि शीघ्र ही तुम्हे यह रकम मिल जाए ।'

'धन्यवाद !' कहकर मैं मुस्करा उठा । बोला, 'जल्दी न चुकाओ सो ही अच्छा है। दुनियां मे मेरा कोई कर्जदार नही, अगर एक कोई अपने आप को समझे, तो दिल को तसल्ली रहेगी । दूसरे इसी तरह कुछ ब्याज ही मिल जाएगा ।—हां, पति के साथ ग्रीष्मावकाश बिताने के लिए यदि कुछ और अपेक्षित हो, तो मेरा वजन हल्का हो जाएगा । पहाड पर सरलता से चढ़ सकू गा ।'

उत्तर मे कमला भी हंसकर रह गई ।

नटनागर के पत्र आते रहे । मेरे पहाड़ पर जाने के प्रस्ताव पर

उन्होने प्रसन्नता व्यक्त की, यद्यपि इससे उन्हे मेरी सगति के आनन्द से वंचित होना पडेगा।—उनके दिन अच्छी तरह कट रहे है, केवल एक बात विशेष हो गई है। कपूर-दम्पति के चले जाने के बाद सोमदत्त के मन पर माता-पिता की अनुपस्थिति का प्रभाव पडा दिखाई देता है। लडका बडा भावुक है, बाहर से उसे व्यक्त नही होने देता, किन्तु अभी उमर ही क्या है— कहा तक छिपा सकता ?—उस दिन सध्या को एकाएक बाध टूट गया, तो नटनागर के गले झूमकर बहुत रोया, और रोते-रोते ही सो गया। नटनागर पर, मालूम देता है, लडके की माया व्याप्त हो गई है।—सोचकर, कभी-कभी मुझे भय होता, कभी एक छिपी प्रसन्नता भी। प्रकट मे मैं किसी भी भाव का कारण खोज पाने मे असमर्थ रहता—कारण खोज पाना चाहता भी नही। मनोविज्ञान का विद्यार्थी रह चुका हू, और सोमदत्त के गुप्त रहस्य से भी अवगत हू। दर्शक हू, तो चाहता हू कि दर्शक ही बना रहू।

दूसरे पत्र मे लिखा कि सोमदत्त अब पहले जैसी व्याकुलता प्रकट नहीं करता।—पढने मे बहुत अधिक मन लगाता है, मानो अपने पास समय रहने ही नही देना चाहता।—दस-बारह दिन बाद परीक्षा शुरू हो जाएगी, छः-सात दिन उसमे लग जाएगे। बस—यो उनके ट्रासफर का आदेश जारी हो गया है।—जल्दी से वहा पहुचकर लडके को भली-चगी हालत मे उसके मा-बाप को सौप दे, एक तो यही सबसे बडी चिन्ता है। इस डर से कि वे कहीं चिन्ता न करे, नटनागर उन्हे वस्तुस्थिति से भी अवगत नहीं करा सकते।

पत्र मे उन्होने एक और कठिनाई का उल्लेख किया। उनके घर से पत्र आया है कि मकान की एक दीवार गिरने जैसी हो रही है, यदि बरसात से पहले उसका उद्धार न कर लिया गया, वह इस बरसात मे बचेगी नही। इसलिए उन्हे एक बार घर जाना ही पडेगा। एक बार शिफ्ट हो ले, बस। छुट्टी उन्हे मिल ही जाएगी। अपनी पत्नी को वे घर ले जाने की आवश्यकता नही समझते। वहा उसकी कोई उपयोगिता

नही होगी। व्यर्थ गर्मी मे उसे गवई गाव मे कष्ट देने से क्या लाभ। उन्होने पत्नी को लिखा था—कि न हो तो गरमी वह वही बिता ले। किन्तु उनकी पत्नी ने कहा है कि पाठशाला की छात्राए कुछ बाहर का कार्यक्रम रखना चाहती है, सो यह एक तरह से सुविधाजनक ही होगा।

मैंने कमला से पूछा, 'गरमी मे सुसराल नही जा रही हो ?'

'यहा कौन मेरे पिता का घर है ?'

'सुसराल तो पति के घर को कहते हैं।'

कमला हस दी, 'पहले तो पतिगृह जाने की बात थी ही, तुम जानते ही हो, किन्तु उसके बाद तो—पर सुसराल का अर्थ तो पति का भी घर नही होता।'

मैंने मुस्कराकर कहा, 'सास-ससुर का ही घर सही! वही क्यो नही जाती ?—पति भी तो वही जा रहे है।'

'पति का निषेध जो है! हिन्दू स्त्री हू उसकी अवहेलना कैसे कर सकती हू ?'

'तो क्या कही 'कैम्प' मे जा रही हो ?'

'बिलकुल!'

'शिष्याओ के साथ!—कहा ?'

'शिष्याओ के साथ नही, गुरु के साथ—पहाड पर !'

मै चौक उठा, 'कह क्या रही हो कमला ?'

'बिल्कुल ठीक कह रही हू। तुमने वादा किया था ग्रीष्मावकाश व्यतीत करने के लिए अपेक्षित द्रव्य देने का।'

'किन्तु कमला··'

'क्यो डरते हो ?'

'अस्वाभाविक क्या है ?—और फिर नटनागर··'

'वे मेरी सुविधा का ख्याल जो रखते हैं।'—और वह मुस्करा दी।

'किन्तु दुनिया क्या कहेगी ?'

'न हो, एक वक्तव्य देकर प्रतिवाद कर देना। इतनी क्षमता तो तुम मे है ही।'

मैं कुछ देर तक नीरव रहा, फिर बोला, 'पहाड जाने की बात मन मे आई अवश्य थी किन्तु इस निश्चय से उसे नही सोचा था, कि पहाड मुझे जाना ही पडेगा। समझ लो नटनागर के निमत्रण से छुट्टी पाने के लिए ही मैंने इस बहाने का आश्रय लिया हो।'

'तो अब उसे बहाना न रहने देकर सकल्प कर लो।'

और मानो यही बात अन्तिम है, यह जतलाकर वह उठ गई।

दिन बीतने लगे, और कमला मुझे पहाड पर घसीट ले जाने के लिए प्रतिदिन विवश करने लगी, यहा तक कि मुझे निश्चय करना ही पडा। व्यवस्था का समस्त भार लिया कमला ने। मेरे पैसो का श्राद्ध होने लगा, लेकिन कुढने का भी मानो मुझे अधिकार नही रह गया था।

नैनीताल, मसूरी, शिमला—जाने कहा-कहा जाने के प्रस्ताव हुए, किन्तु बहुत विचार-विनिमय के बाद निश्चय हुआ कि माउण्ट आबू चला जाए। वहा कमला की एक छात्रा के पिता की विशाल कोठी है, उसमे ठहरने की व्यवस्था हो सकेगी। वैसे व्यय भी विशेष नही होगा, और दूसरी कई सुविधाए अनायास ही प्राप्त हो जाएगी।

दिन बीतने लगे। स्कूल की परीक्षाए समाप्त हो गई। जाने के लिए सभी व्यवस्था हो गई। कमला ने अपने लिए पास भी मगवा लिया। केवल रह गया रेल मे स्थान-आरक्षण।

कमला ने पूछा तो मैने कहा, 'देखता हू कि तुम्हारे साथ मेरा जाना नही हो सकेगा।'

'क्यो?—आग लगाकर भाग जाना चाहते हो?'

'आग मैंने लगाई नही, और भागना भी मैं नही चाहता।'

'फिर—क्या डरते हो?—ऊखल मे सिर देकर मूसल से?'

'ऊखल मे सिर देने तक तो डर की कोई बात नही है, बात है डरने की वास्तव मे मूसल से। ऊखल मे सिर दे ही दिया है, यदि मूसल की

चोट बचाई जा सकती हो तो क्यो न बचाई जाए !—खासकर तब, जब कि इससे कठिनाई तो कुछ न होगी, किन्तु सुविधा बहुत हो जाएगी।'

'सुविधा क्या हो जाएगी ?'

'मेरा जो नया उपन्यास छप रहा है, उसके चारेक फर्मे और शेष रह गए है, हफ्ते-दस दिन मे वह समाप्त हो जाएगा। इसी बीच तुम वहा पहुचकर सब व्यवस्था ठीक कर लोगी। जिस दिन मै पहुचूगा, तार दे दूगा, तुम स्टेशन पर गाडी भिजवा देना ! इधर लोगो की दृष्टि से भी रक्षा हो जाएगी।'

'और यदि नही आए ?'

'सोचती हो, क्या इतना असाध्य बन जाऊगा ?'

सो यही तय रहा, और एक दिन श्रीमती कमला नटनागर अकेली ही माउण्ड आबू के लिए रवाना हो गई, रवाना होने के पहले उन्होने मुझे अनेक कसमे दिलाकर विश्वास दिला दिया, कि मैं यदि दस दिन के भीतर-भीतर उन्हे अपने वहा पहुचने का तार न दे दूगा, तो वे वहा से पुन लौटकर मुझे क्रीत पशु की तरह गले मे रस्सी बाधकर खीच ले जाएगी !—चलो, दस दिन के लिए तो जान बची !

पर जान बची नही ! नटनागर तबदील होकर अपनी नई पोस्ट पर आ विराजे थे, यह समाचार उन्होने मुझे दे दिया था। दूसरे दिन उनका एक एक्स्प्रेस तार आ धमका। लिखा था—'तुम्हारी सहायता अपेक्षित है। शीघ्र आओ ! पत्र जा रहा है !'

दूसरे दिन पत्र भी आ गया। सोमदत्त को लेकर एक समस्या खडी हो गई। वह मानसिक रूप से बीमार तो हो ही गया था, अब वही बीमारी शारीरिक होकर ऊपर उठ आई थी। इधर मिसेज़ कपूर की अवस्था मे भी नया मोड उपस्थित हो गया। डाक्टरो की राय है कि बच्चे को उसकी मा से अलग रखा जाए। अच्छा हो कि गर्मियो मे उसे कही अच्छी जलवायु वाले स्थान पर भेज दिया जाए।—कपूर साहब स्वय जा नहीं सकते, इसलिए उन्होंने यह भार नटनागर को

पकडा दिया है। नटनागर अब क्या करे ?—मकान की व्यवस्था के लिए मा की ओर से तकाजे पर तकाजे आ रहे है। बडी कठिनाई से उन्होंने कपूर साहब को राजी किया है कि एक उनका अन्यतम मित्र पहाड पर जा रहा है, यदि सोमदत्त को उनके साथ भेज दिया जाए तो वह सोमदत्त को उसी तरह रखेगे, जैसी कि नटनागर से आशा की जा सकती है, बल्कि अधिक ही, क्योकि वे मित्र महोदय एक बडे मनोविज्ञान-वेत्ता तथा शिक्षाविद् है। कपूर साहब ने सब व्यय अपने पास से देना निश्चय किया है। इसलिए नही तो भी कम से कम नटनागर के लिए मुझे उनकी प्रार्थना मान ही लेनी चाहिए। बडी आशा से उन्होने पत्र लिखा है, उन्हे विश्वास है कि मै उन्हे निराश नही करूगा।

पत्र पढकर हसी आ जाना स्वाभाविक है! यदि चला जाता तो ही उत्तम होता। तब कुआ था, तो अब खाई है! सोचा कि जाने के कार्यक्रम को ही क्यो न गोली मार दू! किन्तु दस दिन के बाद यदि सचमुच कमला यहा आ टपकी ?—या इसी बीच नटनागर उस लडके ही को लेकर यहा डट गए ?—तब तो मुसीबत का अन्त न रहेगा।

वाह रे सयोग!—यह भी क्या नाटक है कि दर्शक ही को करना पडता है, उसकी इच्छा-अनिच्छा का कोई प्रश्न ही नहीं! और यह कमला ?—चाहती क्या है मुझसे ? किस चक्रव्यूह मे लिए जा रही है ?—उसके सकेत करने भर पर उसे एक हजार रुपया दे चुका हू—अवश्य ही वह उसे कमल के लिए ले गई है। क्या उससे मैं रुपया वापस लेना चाहूगा ? लेखक को रुपया मिलता ही कहा है कि उसके प्रति इतनी निर्वेदना व्यक्त की जाए ?—और फिर यह पहाड पर जाने का शौक!

नटनागर के इस प्रस्ताव से रुपया तो अवश्य बच जाएगा।—और दर्शक महाराज! तमाशा भी क्या बुरा रहेगा ? वात्सल्य के अपार्थिव गुण की बड़ी विरुदावलि सुनी है। परिचय के अभाव मे या प्रभाव मे भी, उसका स्वाभाविक प्रवाह कैसे होता है, यह अनायास ही देख

सकोगे ! यदि कमला की भूख को ममता का आहार अनुकूल पड जाए, तो शायद तुम्हे मुक्ति ही मिल जाए ! चलो, अच्छा ही है !

मैने तार द्वारा उत्तर दिया, 'कल सध्या की गाडी से आ रहा हूं।'

२०

अफसर मैने बहुत देखे हैं, उनकी मनोवृत्ति का अध्ययन भी किया है। नौकरशाही की मशीन के वे भी एक बडे पुर्जे हैं। मशीन के एजिनघर से इन्हे शक्ति मिलती है, और उसीसे खुद चलकर अपने कई मातहतो को ये चलाते है। चलाने वाली मूल मशीन दूसरी, यद्यपि वह भी पूजीवाद के समस्त तत्र-जाल का ही एक अग है। शक्ति का केन्द्र बिल्कुल दूसरा, किन्तु यह अधिकारी वर्ग केवल उसका विकीरण-विभाजन करते है, ताकि अपनी-अपनी सीमा मे सभी उस पाई हुई शक्ति के द्वारा हिल-डुल सके, किन्तु यह शक्ति किसीकी निज की नही, अत उनमे रस नही, अपनापन नही। उन्हे रस नही मिलता, मिलता है केवलमात्र तेल-मजदूरी, जिससे वे पुर्जे घिसे नही, और सरलता से चलते रह सकें। घिसाई-भगाई (वीयर ऐण्ड टीयर) न हो, सो बात नही, कभी पुर्जों को बराबर तेल भी नही मिलता, तब वे प्राय चर्राते-मर्राते हैं, और यदि शीघ्र ही व्यवस्था नही की जाए, तो अर्रा कर टूट भी जाते है।

किन्तु मनुष्य नाम के ये छोटे-बडे पुर्जे केवल मशीन ही नही होते, जो केवल दूसरो से पाई हुई शक्ति से काम करे। उनकी छाती के भीतर भी निज का एक धडकता हुआ हृदय नाम का यत्र रहता है, पूजीवाद या नौकरशाही अभी यह नही जानती। यदि उसे पर्याप्त मात्रा मे रस मिलने लगे, तो वह उस पुर्जे को अपनी ही गति से गतिमान कर दे ! बाहर से पाई हुई शक्ति तब उसकी बहुत बडी पूरक होगी, और समाज

के कल्याण की दिशा मे एक अभूतपूर्व परिवर्तन सभव होगा, यह तो स्वत. सिद्ध है !

मै बात कर रहा था क्षेत्र-निरीक्षक (डिवीजनल सुपरिन्टेन्डेन्ट) कपूर साहब की ! यद्यपि आज वे एक शक्ति-उत्पादक-जेनरेटर मशीन हैं, पर हैं मशीन ही, तब भी उनकी उदारता की बात मुझे माननी ही पडेगी। उनके मातहत सभी व्यक्ति छोटे से लगाकर बडे तक उनसे बड़े खुश दिखाई दिए। यो, दफ्तर मे बैठकर कुर्सी तोडने वालो मे उन्हे शरीक करना ज्यादती ही होगी। वे इजीनियर—फील्डवर्कर ठहरे—वस्तुत. काम मे लगे रहने वाला व्यक्ति व्यक्तियो से दूर नही हट सकता। पद की कुर्सी उसे चाहे जितना ऊचा उठा ले जाए !

दो दिन तक मुझे उनके यहा ही रहना पडा। सोमदत्त बडा ही मनोज्ञ लगा, सुन्दर, सुशील और सुसस्कृत—जिस बात ने मेरा ध्यान सबसे अधिक आर्काषित किया, वह थी उसकी गम्भीरता, अपनी उमर से कहीं अधिक ! शीघ्र ही मैंने कारण की कल्पना भी कर ली।

कपूर साहब स्वय ही जाना चाहते थे, किन्तु एक तो ठहरी नौकरी की मजबूरी, दूसरे मिसेज़ कपूर का अस्वास्थ्य। मिसेज़ कपूर की अब भी मानसिक चिकित्सा चल रही थी। मेरे सामने भी उन्होने प्रस्ताव रखा कि वे एक नौकर को साथ दे दे, और किसी अच्छे होटल का प्रबन्ध कर दे। मैंने उन्हे आश्वस्त किया कि सोमदत्त को किसी प्रकार का कष्ट न होगा, कि मैंने बहुत अच्छा प्रबन्ध कर लिया है, मेरी एक दूर की बहन भी साथ होगी ; सब सुविधाए वहा पर उपलब्ध होगी, नौकर, कोठी, मोटर—किसी बात की कोई कमी न होगी। लडका मानो घर पर ही अपने मा-बाप के पास जैसा ही महसूस करेगा। तब भी, मेरे मना करने पर भी, कपूर साहब ने चार सौ रुपये का एक चेक काटकर मुझे पकडा दिया। यह भी कहा कि यदि और आवश्यकता हो, तो मुझे झिझकना नही होगा, और उन्हे लिख देना होगा। हसकर मैंने कहा कि शायद इस चेक को भुनाने की भी जरूरत नही पडे। कहना

न होगा कि नटनागर मेरे साथ ही थे, उनके अभाव मे शायद कपूर साहब मुझे इतनी वडी ज़िम्मेदारी न सौपते ।

कपूर साहब, अपने क्षेत्र की अन्तिम सीमा तक सैलून (अधिकारियो का डिब्बा) मे पहुच गए । रात को साढे आठ बजे गाडी आबू रोड पहुचती है, वहा से डेढ-दो घटे का पहाडी रास्ता है । मोटरें जाती है । शायद रेलवे की बसे भी है । आज होगा नवा दिन । मुहलत है मुझे दस दिन की ! तब कमला को तार करने की जरूरत नही है । अकस्मात् वहा पहुचकर उसे चौका देना ही उत्तम होगा । तार देने से बहुत सम्भव है कि वह खुद भी स्टेशन पर पहुच जाए ।

रात को ठीक समय पर स्टेशन पहुच गए । मार्ग मे कोई कष्ट नही हुआ । इस गाडी मे वातानुकूलित (एअरकण्डीशण्ड) डिब्बा नही लगता, किन्तु डिब्बे मे बर्फ रखकर गरमी से बचाव कर लिया गया था । सोमदत्त बडे आदमी का लडका ठहरा—उसके साथ जाने मे यदि जन्मपत्री को ठेंगा बताया जा सकता हो, तो क्यो न कर लिया जाए !—खाना-पीना भी स्टेशन पर रेलवे के रेस्टरा मे सम्पन्न कर लिया गया, और तब बाहर आकर माउण्ट आबू के लिए सवारी की तलाश की ।

रास्ता पहाड का है इसलिए रेलवे की बसे केवल दिन ही को चलती हैं ।—अपनी गाडी हो तो वह रात को किसी भी समय जा सकती है । भूल महसूस हुई, यदि तार दे दिया जाता तो रातभर खराब न होती ।

सोमदत्त साथ था, मुझे अकल कहने लग गया था, बोला, 'अकल, क्या टैक्सी नही मिल सकती ?'

'भई सोम ! बात तो खूब सुझाई ! अच्छा तलाश करते है; पर समय तो देखो साढे दस बज गए है ! तुम्हे जो नौ बजे ही सोने की आदत है ! अगर तुम्हे नीद का ख्याल हो, तो सवेरे चलेंगे, तब एक रात वेटिंग-रूम मे कट जाएगी ! क्या कहते हो ?'

'ट्रेवलिंग मे क्या कोई आदत की सोचता है ?—देखिए, कैसी ब्यूटीफुल मूनलाइट है ?—आपने ही तो कहा था कि पहाडी रास्ता

बड़ा ही सुन्दर है।'

'सुनी हुई बात कही थी सोम ! देखूगा तो तुम्हारे साथ ही !'

'पर अकल, आपने तो कहा था कि आपकी सिस्टर गाडी भेज देंगी?'

'पर उनको तो हमने खबर दी ही नही !'

'दे दी होती, तो अच्छा होता ! क्यो नही दी ?'

अब क्या कहता उससे ?—इतस्तत. करके बोला, 'पहुचते-पहुचते रात के बारह बज जाएगे ! सोचा उन्हे क्यो तकलीफ दी जाए ?'

सोम ने अपनी बडी-बडी आखो से मेरी ओर देखा, 'तो फिर पहुचने पर भी तो उन्हे तकलीफ देनी ही पडेगी। रहिए फिर—सवेरे ही चलेंगे!'

—पर तभी एक युवक ने आकर पूछा, 'साहब, टैक्सी चाहिए ?

सोम ने कहा, 'नो अकल—दिस इज नॉट गुड टाइम टु डिस्टर्ब एनीवन !' (किसीको तग करने का यह समय नही है।)

मैंने मानो उसकी बात को नही सुना, और टैक्सी वाले से तै कर लिया।

टैक्सी मे बैठते ही सोम ने कहा, 'आपकी सिस्टर भी क्या सोचेंगी!—मेरे लिए ही तो आप यह सब इनकन्वीनिएस (असुविधा) खुद भी उठाएगे, और दूसरो को भी देगे।—अच्छा, एक काम कीजिए न ! रात को किसी होटल मे ठहर ले—सवेरे चल देगे वहा ?'

मैंने प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, 'नही सोम !—इतना घबराने की जरूरत नही है ! तुम देखोगे कि वे तो हमारी प्रतीक्षा कर रही होगी !—खबर तो इसलिए नही दी कि एकाएक रात को इस तरह देखकर थोडी चौकें तो ?—मजा रहेगा न ?—कल तक अगर मै नही पहुंच पाता तो जानते हो वे क्या करती ?'

'कहिए !'

'खुद मुझे लेने के लिए वहा से लौट आती।'

'लेकिन आपको वहा कहा से पाती वे ?'

'बिल्कुल ठीक कह रहे हो—इसीलिए तो ज़रा उन्हें डरा देना

चाहिए ।—जानते हो मुश्किल से वहां चार दिन रही होगी कि पाच पत्र एक्सप्रेस डिलीवरी मुझे मिल चुके थे । मेरे वहा से चले आने पर कितने और पहुचे होगे सो क्या पता !'

'और आपने जवाब कितने का दिया ?'

'एक का भी नही ।'

'तब तो वे आपपर बडी नाराज होगी अकल !'

'तुम कैसे जानते हो ?'

लडका कुछ उत्तर नही दे सका—बुद्धि और प्रतिभा उसमे है, किन्तु इस उमर मे यह तो नही जानता कि उसकी बुद्धि और प्रतिभा किस तरह काम करती है !

कुछ समय नीरव ही बीता कि सोमदत्त ने कहा, 'वे आपको बहुत चाहती है न !'

'वे कौन ?'—मैंने शायद कापकर पूछा ।

'आपकी सिस्टर ?'

मै पूछने वाला था, तुमने कैसे जाना ?—पर चुप हो गया—एक क्षण के बाद ही सोमदत्त ने मेरी ओर देखकर कहा, 'नही तो इतनी रात को कोई किस अधिकार से डिस्टर्ब करेगा ।—और कोई दूसरा क्यो परेशान होना पसन्द करेगा !'

'यू आर ए वेरी इण्टेलीजेण्ट बॉय !' (तुम बहुत बुद्धिमान लड़के हो)—कहकर मैं सोचने लगा कि यदि यह लडका इसी सूत्र को पकडकर चलता रहा, तो इसकी कल्पना जाने कहां से कहा चली जाएगी । इसलिए बोला, 'सोम, बाहर का दृश्य देखो···'

सचमुच सोम ने और मैने गाडी के बाहर जो दृष्टि डाली, तो आंखो पर विश्वास नही हुआ । हम पहाड पर चढ रहे थे । पूर्णिमा या उसके आसपास की तिथि रही होगी, चन्द्रमा माथे पर चढ आया था । छाया और चादनी मे होड़ मची हुई थी । जहा छाया थी, वहा कहा नही जा सकता कि झाड थे, चट्टानें थी, या एकदम शून्य, जिसमे नीचे गढे थे, या

नदी थी, या क्या था ?—और दूसरी ओर मानो चादनी की मलमल के नीचे हरियाली अपनी कमनीय सौंदर्य राशि को छिपाकर, आकाश के अधरो को चूमने मचल पडी हो ! ठीक सामने साप के समान बल खाती हुई सडक, जिसपर मोटर की दो आखो का सफेद प्रकाश मानो उसके उठे हुए फन को पकडना चाहता था, और वह भागी जा रही थी—मोटर मे बैठे हुए हमे अपनी गति की अपेक्षा, क्षण-क्षण मे मोड़ो को उपस्थित करने वाली सडक ही चलती हुई प्रतीत हो रही थी। एक अपूर्व दृश्य था। कितनी देर तक अचेत होकर मैं उसे देखता रहा, इसका कुछ ख्याल ही न रहा। ख्याल हुआ तब, जब सामने शायद पुलीस या कस्टम की किसी चौकी पर सडक के पार लगी हुई अर्गला के कारण कार को रुक जाना पडा। देखा कि थका हुआ सोमदत्त गाडी मे मेरी जाघ पर सिर रखकर लेट गया है।

जिस मकान का मैंने पता दिया, मालूम पड़ता है, ड्राइवर उसे खूब जानता है। किन्तु, यह क्या, सारी बस्ती पीछे छूटती जा रही है—एक दूसरी पहाडी का मार्ग—मन मे शका हुई !

मैंने पूछा, 'क्या मकान बडी दूर है ?'

ड्राइवर ने कहा, 'बस अब आ गया सरकार !—इस तालाब के उस पार—वह जो छोटी-सी पहाडी दिखाई देती है। बडी लाजवाब जगह पर बसा हुआ है।'

डेढ बजने मे पाचेक मिनट रहे थे, जब गाडी उस सुन्दर कोठी के फाटक पर आकर खडी हुई, दूर से कोई कुत्ता बडी तेजी से भौंका। मोटर की बत्ती के प्रकाश मे फाटक पर लगा हुआ बोर्ड देखकर जी मे जी आया।

बूढा दरबान और उसके पीछे-पीछे कुत्ता—अलसेशियन कुत्ता दरबान की छाया मे, और दरबान अपनी आखो पर हथेली की आड से मोटर के प्रकाश को बचाता हुआ फाटक खोलने लगा, दुविधा तब भी उसके मुह पर थी।

मैंने मुह बाहर निकालकर कहा, 'श्रीमती कमला नटनागर यहा ठहरी हुई है न ?'

दरबान ने कहा, 'जी हा ! एक मेम साहब आई हुई तो है—हमारी रानी बिटिया की मास्टरनी जी ।'

'हम उनके मेहमान है । खबर कर सकते हो, ओझा साहब आए है ।'—इस ठाठ-बाट को देखकर लज्जित तो हो ही रहा था । इससे अच्छा होता कि तार ही दे देता, तो यह झझट तो न होती । पर तब किसे पता था, कि इस ठाठ-बाट के बीच श्रीमती कमला नटनागर सुप्रतिष्ठित होगी ।

—कि तभी दूर एक अधेरी खिडकी से नारी-कण्ठ की आवाज़ आई ।

'मैं आ रही हूं गोपाल ! फाटक मत खोलना—ओझा साहब पक्के चोर हैं !'—और आवाज़ के शेष होते ही मानो एक गुप्त हास्य का आभास भी हुआ । दरबान गोपाल पीछे की ओर देखने लगा, फाटक खोले या न खोले ।

गाडी का फाटक खोलकर मैं बाहर निकल आया । अरे ! यहा तो सरदी मालूम पड रही है ।—एक स्वेटर बदन पर रखे बिना तो यहां अच्छे होने की अपेक्षा बीमार ही होना पडेगा । पर अभी तो कुछ नही किया जा सकता । ड्राइवर ने रोशनी बन्द कर दी । आकाश से बरसती हुई चादनी स्फीत हो उठी । यह दाहिनी ओर नीचे बडा भारी तालाब, जिसमे चाद झिलमिला रहा है—शात, नीरव पड़ा हुआ मानो अर्धरात्रि के इस व्यापार को समझने के लिए हमारी ओर देख रहा है । सुन्दर-स्वप्नलोक-सी यह भूमि और मध्य रात्रि का यह नीरव वशीकरण—कि तभी सामने से नारी-मूर्ति ने कहा :

'अरे गोपाल ! फाटक भी नही खोला ?—चोरो से इतना डरता है ?—खुद चलकर घर पर चोर आए, और तुम पकड़ भी नही सकोगे—भाग जाने दोगे ?'—खुले हुए फाटक पर खड़ी होकर कमला ने कहा—

'बिना सूचना दिए इस रात्रि को चोर के सिवा आता ही कौन है ?'

मैने कहा, 'यदि गिरफ्तार करना हो, तो आज्ञा दो—इस तालाब मे कूदकर मर जाने के समान सुख और दूसरा नही है।'

कमला ने कहा—अवश्य ही गाडी के ड्राइवर को—'भीतर ले आओ गाडी !—और गोपाल, जा एकाध नौकर और बुला ला, सामान जो पहुचाना पडेगा।'

ड्राइवर ने पुनः बिजली जलाई, और कमला की छवि पहली बार आखो से टकराई। चमकते हुए रेशम का गाउन उसके सारे शरीर को ढके हुए, नीचे जमीन को चूम रहा था—बिजली की लहर उसकी सलवटो मे उलझकर रह गई। मैने आखे बन्द कर ली।

जब गाडी आगे बढी, तो कमला ने पास आकर मेरा हाथ पकड लिया और कहा—

'सूचना भी नही दी ?—और इतनी रात कैसे हो गई ?'

मैने कहा, 'हाथ मत पकडो। गाडी मे एक और छोटा मुसाफिर बैठा हुआ है। देखेगा तो कहेगा कि यह चोरी-चोरी क्या मामला है ?'

'छोटा मुसाफिर ?'

'अभी देखोगी—नाराज नही हो सकोगी लेकिन, बल्कि खुश ही हो जाओगी· ·'

कमला, मालूम दिया, एक क्षण के लिए कही खो गई, पर बोली—'यह तो बताया ही नही इतनी देर कैसे हो गई ?—दो बज रहे होगे।'

'रास्ते मे कोई दुर्घटना नही हुई—अवश्य स्टेशन की एक छोटी-सी को छोडकर।'

'क्या ?'

'यही कि खाना-पीना शेष कर लेने से तुम्हे भी थोडा नाराज करना मिल जाएगा—और जब तुम्हारा आतिथ्य भोगना है तो उसका आनन्द पाने के लिए थोडी स्टेशन के खानसामा की अरुचिकर सामग्री पेट के हवाले कर दी जाए !'

हसकर कमला बोली-—'यह अच्छा ही किया। देखती हूं लेखको मे कुछ अक्ल भी कभी-कभी हो आती है ! पर यह खबर क्यो न भेजी—बेकार टैक्सी का किराया देना पडेगा।'

'सो मैं दे चुका हू, तुम्हे घबराने की जरूरत नही है।'

'चलो, यह भी अच्छा ही किया। हिसाब देने से बच गई।'

'यानी ?' मै नही समझा।

आखिर मुझे देना होता, तो भी पैसा तो तुम्हारा ही है। ऊपर से हिसाब की मुश्किल' '

तभी चलते-चलते हम पोर्टिको मे आ खडे हुए। गोपाल और एक और नौकर मिलकर पीछे से सामान उतार रहे थे। सोमदत्त उठ चुका था, नीचे बरामदे मे उनीदी आखे लिए खड़ा था। मोटर के पीछे आते हुए हम दिखाई न दिए, किन्तु शायद हमारी आवाज़ का कुछ अश वहा तक पहुच गया था।

वही से कुछ आगे बढने का उपक्रम करके उसने कहा—'अकल ! ह्वाइ डिडन्च्यू वेक मी अप ?' (मुझे आपने उठा क्यो न दिया ?)'

कमला ने मेरा हाथ छोडकर कहा, 'कोई अग्रेज बच्चा है क्या ?'—और हम सामने प्रकाश मे आ खडे हुए—अजनबी को देखकर आगे बढता हुआ सोमदत्त एक क्षण को रुक गया और एक बार कमला को देखकर और दूसरी बार मुझे देखकर बोला—'गुड इवनिंग ऑण्टी—ऑर मस्ट आइ से गुड मार्निंग ?—हाउ डू यू डू ?' (मंगल सध्या ऑण्टी—या कहूं मगल प्रभात ? आप कैसी है ?)—फिर एक ही क्षण मे लजाकर बोला—'एक्स्यूज़ मी—मुझे माफ कीजिए—मुझे हिन्दी मे बहुत बात करने की आदत नही है।'

मैं एक ओर खड़ा-खडा तमाशा देखने लगा। कमला ने देखा, उसके मुह पर उल्लास की एक चमक फैल गई !—बडा सुन्दर लडका है, सात-आठ वर्ष से अधिक उमर नही, ऊंचाई ढाई फुट के आसपास, दुबला-पतला शरीर, बड़ी-बडी आंखे नीद के कारण सिकुडी तथा थकी

हुई, पतली नाक, पतले बारीक अधरो मे मुह छिपाहुआ, चौडी पेशानी, जिसपर सिर के बालो की घुघराली लच्छिया फैली हुई—क्लाति और थकावट की झाई से श्यामल रग। नीली बुशशर्ट, और नीचे पूरा पैंट पहने हुए ! कमला ने आगे बढकर हाथ फैला दिए—

'गुड इवनिंग बेबी—' और उसे ऊपर उठाकर उसका मुह चूमते हुए कहा, 'व्हाट इज यूअर नेम ?' (तुम्हारा क्या नाम है ?) फिर मेरी ओर देखकर कहा—'हाउ नाइस ऑफ यू ? बडा सुन्दर लडका है !—क्या नाम है ?'

जवाब सोमदत्त ने दिया—'मुझे सोमदत्त कहते है। आइ एम नॉट ए बेबी (मैं बच्चा नही हू।)—आप उतार दीजिए, आपको तकलीफ होगी।'

सोमदत्त ने इस ढग से कहा, कि कमला को उसे उतारना ही पडा। सोमदत्त ने आकर मेरा हाथ पकड लिया।

भीतर जाकर कमला ने कहा—'सोम !—कुछ खाओगे ?'

'नो प्लीज, थैंक्यू !—लेकिन सोने से पहले मै कपडे जरूर बदलूगा। मेरे अटैची केस मे स्लीपिंग सूट है। सामान कहा रखा है ?—मै निकाल लूगा।'

'चलो मैं बता दू··· ' और कमला तथा सोमदत्त दोनो पुनः दूसरे कमरे मे चले गए। एक लम्बी सास लेकर कुर्सी पर बैठा हुआ मैं कमरे की सज्जा को देखने लगा।

'दस मिनट बाद कमला ने अकेले ही प्रवेश किया तो मैंने पूछा—'सोम कहा है ?'

'उसे सुला आई हू।'

'सो गया ?'

'नही; लेकिन शीघ्र ही लेट जाएगा''''आखे बडी थकी-थकी लगती थी।'

मैं उठ खडा हुआ, बोला, 'कहा सोया है जरा बता दो !'

'क्यों ?····क्या मेरे ऊपर विश्वास नही होता ?'

'तुम्हारे ऊपर विश्वास न होता तो लाता ही क्यो ? ··परन्तु इस लडके के विश्वास के लिए उसे देख लेना चाहती हूं।'

'चलो !' कहकर कमला उत्साह के साथ आगे चलने लगी।

बोली, 'यह कमरा तुम्हारे ही लिए तैयार करवा रखा था। सोम कहता था कि वह अकेले कमरे मे मजे मे रह सकता है। अब तुम्हे इस कमरे मे रहना पडेगा। सब ठीक है; केवल चादर बदलनी पडेगी। कुछ किताबे, जो उस कमरे मे है, सवेरे इस कमरे मे आ जाएगी। मेरा कमरा यह रहा उस साइड मे, अगर सवेरे तुम्हे पसन्द न आए तो मेरा कमरा ले लेना ! मै तुम्हारा ले लूगी।'

कमला ने तीसरे दरवाजे पर हाथ रखा, धीरे से बोली, 'सोम ! क्या सो गए ?'

भीतर से आवाज आई, 'बस सो रहा हू।'

'तो देखो ···ज़रा खोलना ···तुम्हारे अकल 'सेटिसफाई' होना चाहते हैं।'

'ओ के.' और किवाड़ खोलकर मुस्कराते हुए सोमदत्त ने कहा 'डोण्ट यू वरी अकल ! आई एम वेरी-वेरी कम्फर्टेबुल (मै बहुत आराम मे हू), यह तो बहुत सुन्दर कमरा है।'

भीतर जाकर मैंने देखा सारी व्यवस्था बहुत सुन्दर है। मैंने कहा :

'बडी जल्दी 'चेज' करके तैयार हो लिए सोम ! मुझे तो शायद दूना समय लग जाता।'

सोम ने कहा, 'ऑण्टी मानी नही' इन्होने अटैची केस खोलकर जल्दी ही कपडे निकाल दिए।'

मैंने कहा—'ना-ना—इन्हे अटैची केस-वेस मे हाथ न लगाने देना ! —कोई चीज़ कम-ज्यादा हो गई तो मै नही जानता।'

कमला ने कहा, 'क्यो डराते हो बच्चे को, सोने दो ! चलो—देखो सोम, यह पानी रखा है; यह है, तुम्हारे बाथ-रूम का दरवाज़ा !—अच्छा

सवेरे बेड-टी लेते हो ?'

'नही'' मै नही लेता—पर अकल लेते हैं।'

कमला ने कहा, 'वह मै जानती हू !' गुड नाइट'''टाटा।'

और हम पुनः बाहर निकल आए। भीतर से चिटखनी की आवाज़ हुई। सोम सो गया। मुझे सोचते देखकर बोली—'घबराओ मत ! तुम्हारे कमरे मे से एक सीधी खिडकी इस कमरे के लिए है। खुली रखोगे तो लड़का आखो के सामने रहेगा। इतना मोह—खैर, लडका है ही मोह के लायक—पर है किसका ?'

'पूछ नही लिया तुमने ?'

'पूछती कब ? '''और फिर तुम्हारी धरोहर ठहरी, तुमसे बिना पूछे कैसे कोई सवाल कर सकती हू ?'

मैने कहा, 'क्या एक मित्र की सन्तान कहने से काम नहीं चलेगा ?'

'क्यो नही चलेगा ? पर इतना डरते क्यो हो ? यदि कह दोगे तुम्हारी ही सन्तान है, तो मै क्या ईर्ष्या से जल मरूगी ?'

'इससे तो अच्छा है तुम यही समझ लो कि तुम्हारी ही सन्तान है, बेचारे को जितने दिन ठहरेगा कुछ लाभ ही हो जाएगा।'

कमला जोर से ठठाकर हस पडी—रात्रि की नीरवता मे सारा कमरा मानो मुखरित हो गया। बोली—'यह विडम्बना भी तुम मेरे भाग्य मे थोपना चाहते हो ? ''लेकिन महाराज, मै तुम्हारी दुरभि-सन्धि खूब पहचानती हू पर मानती हू कि तुम्हारा छल साधारण नहीं है ! हथेली पर सरसो उठाना चाहते हो महाशय ! पर कह तो चुकी हू, यदि यह मेरी खुद की ही वह परित्यक्त सन्तान भी होता तो भी मुझे पकड़ना सम्भव नही होता—हाऽऽ हाऽऽ हाऽऽ हाऽऽ '''क्या खूब !' और वह स्प्रिंग वाले सोफे की बाहुओ पर हाथो को टेककर मानो हसी मे झूलने लग गई। फिर उसने उठकर कहा—'चलो, अपना कमरा भी देख लो। न हुआ, वही बैठकर बाते कर लेगे। थके हुए तुम भी कम नही दिखाई

देते । आखे ही कैसी लाल हो रही है ।'

मैंने कहा, 'यही बैठो—आखिर कमरे को तैयार तो हो लेने दो ।'

'वह तैयार ही है । केवल एक चादर ही तो बदलनी थी । वह भी हो गई होगी ।'

'वह किसके लिए तैयार करवा रखा था तुमने ?'

'लो, सभी पूछ लोगे ! उठो न ? · ' और उसने मेरा हाथ पकडकर मुझे कुर्सी पर से उठा लिया, फिर बोली—'वह कमरा था मेरे लिए ही । अब मुझे दूसरे कमरे मे जाना पडेगा । खिडकी जो बीच मे है, उससे बडी सुविधा रहती पर खैर—कमरा फिर भी पास ही सटा हुआ है । चलो !'

मैंने कहा, 'यदि अभी सोम सोया न होगा तो मेरे कमरे मे बैठकर बात करना ठीक न होगा, बल्कि यदि चाहती हो कि यहा न बैठे तो चलो तुम्हारे ही कमरे मे चला जाए !'

हाथ छोडकर कमला ने कहा—'नही, वहा नही, अभी वह बिल्कुल ही तैयार नही है । मै तो किसी तरह आखो ही आखो मे रात बिता लूगी । आखिर इतना सो चुकी हू पर अब बाते ही क्यो ? ···उनका क्या कभी अन्त होगा ! चलो तुम्हे सुला आती हू । बाते सवेरे होगी ।'

कमला की सरलता पर मुग्ध होकर मैने कहा, 'मुझे सुला दोगी !—मै क्या कोई सोमदत्त जैसा छोटा बच्चा हू ?'

'उसे तो भी ज्ञान है कि उसका स्लीपिंग सूट कहा रखा है, तुम्हे तो उतनी भी तमीज न होगी । चलो । तग न करो ।'

'स्लीपिग सूट ?· पर कहा होगा यह सवाल तो तब उठता है जब वह कही हो । स्लीपिंग सूट और यह गाउन तुम जैसे बडे लोगो को शोभा देते है । हमारा क्या—यह कुरता खोला कि बस सोने के लिए तैयार ! ··पर ठहरो कमला, सचमुच तुमसे कुछ जरूरी बाते कर लेनी हैं ।'

'बहुत जरूरी ? ··क्या तुम्हारे इस समय सोने की अपेक्षा भी·· ?'

'सचमुच ।'

हंसकर कमला ने कहा—'तो कह डालो 'पर इस मध्य रात्रि की निविड वेला मे, इतनी ज़रूरी बात—प्रणय-निवेदन तो नही है न ?'

'वह तो तुम्हारे लिए बासी चीज़ है कमला ।·· लो बैठो ।' ·· और मैं पुन. बैठ गया ।

'तो बैठना भी पडेगा ?· 'अच्छा लो, बैठ गई ।' ··और वह मेरे ही पास सोफे पर बैठ गई नितान्त सटकर ।

मैंने अधिक भूमिका बाधना उत्तम नही समझा और कहा, 'इस लडके के परिचय के सम्बन्ध मे कुछ कहना है ।'

'तो कह क्यो नही देते ? · '

मैंने यथासाध्य अपने आपको स्वाभाविक बनाकर कहा, 'यह तुम्हारा ही पुत्र है कमला !'

किन्तु कमला ने मानो 'तुम्हारा' शब्द न सुनकर कोई और ही शब्द सुना हो, ऐसा भाव जतलाकर कहा, 'यानी तुम्हारे उन कपूर साहब का । ·· बात जंचती दिखाई देती है । इतना शील, बुद्धि सब बडे घराने मे ही तो मिलते हे । पर इसमे ऐसी जरूरी बात क्या थी ?'

'जरूरी बात कुछ नही ?'

'क्यो ! मैंने तुम्हे पहले ही तो कह दिया था कि मैने एक सन्तान को जन्म दिया था, और वह सन्तान सौप दी गई कपूर-दम्पति को ।· · नाम उनका भूल गई थी, सो उस दिन तुमने याद दिला दिया । पर ले क्यों आए इसे यहा ? सोचा होगा, मुझे कमजोर बनाकर मेरा गर्व तोड़ दोगे ?'

कमला का यह आरोप सुनकर मैने कमला की आरे देखा, किन्तु उसकी दृष्टि तब भी ज़मीन की ओर थी । मैने कहा

'कमला !—क्य तुम मुझे इतना ही ओछा समझती हो ?'

'तो फिर क्यों ले आए तुम इसे, सब कुछ जान-बूझकर ?—क्या तुम यही चाहते हो कि मै सारी मनुष्यता से घृणा करने लग जाऊ, जहा

सारी मनुष्यता की श्रेष्ठतम अनुभूति होती है, उस निश्छल शैशव से विरोध करने लग जाऊ ?—' और आवेश मे दोनो हाथो से अपने मुह को ढापकर उसने अपने चेहरे को मेरे घुटनो पर टिका दिया !

एक क्षण तक चुप रहकर मैने उसके सिर पर अपना हाथ रखा, फिर बोला

'तुम तो व्यर्थ ही उत्तेजित हो जाती हो कमला !—मै क्या चाहकर इसे अपने साथ ले आया ? तमाशा जरूर देखना चाहता हूं, पर एकदम हृदयहीन होकर तो नही ! बल्कि तुम्हारी ही बात सोचकर तो मै चाहता था कि इसके परिचय से तुम्हे अवगत करा दू, ताकि तुम भी सावधान रहो ! और—खैर, जो कुछ हो, पर मै सोचता हू यदि बच्चा यह न समझे कि तुम ही उसके जन्म देने वाली मा हो, तो शायद उसके लिए अच्छा ही होगा। ले क्यो आया उसे साथ-साथ, सो मेरी यह मजबूरी थी—' और मैने उसी तरह पडी हुई कमला के सिर मे हाथ फेरते हुए वह सारी कहानी कह सुनाई, जिस तरह कमला के जाने के बाद नटनागर का तार, मेरा वहा प्रस्थान, मिसेज कपूर का अस्वास्थ्य आदि, जिनके बीच से गुजकर मुझे यहा तक पहुचना पडा।

सिर उठाकर कमला ने एक लम्बी सास ली, और कहा—'सो यह प्रतारणा नटनागर के भाग्य मे भी लिख गई, कि जिस दुर्भाग्य से वे बचना चाहते थे, उसीका सरक्षण उन्हे करना पडा। यदि उन्हे एक निमिष के लिए भी मालूम हो जाए कि यह लडका वास्तव मे कौन है, तो क्या हो ?'

मैंने कहा, 'तुम्हे जब मालूम हुआ, तो तुम्हे कैसा लगा ?'

'विशेष कुछ नही, केवल यही लगा कि तुम मुझे कसौटी पर कसना चाह रहे हो, और इसीलिए मैं उत्तेजित हो उठी थी। लो चलो—बहुत रात गई, उठो, कुछ सो लो—निश्चय समझ लो कि इस परिचय को वह बच्चा ही नही, यह मा भी कभी वास्तविक न समझेगी !'

सवेरे जब दरवाजे पर थपथपाहट हुई तो नीद खुली, जम्हाई लेकर

आखे मसली, एक क्षरण समझने मे लगा कि यह जगह कौन-सी है, फिर दरवाजे की ओर देखकर बोला, 'धक्का दो, दरवाजा खुला हुआ ही है।' —और भीतर प्रवेश किया श्रीमती कमला नटनागर ने, बिल्कुल नये रूप मे; स्नान कर चुकी थी, बिखरे हुए बाल बगाली लडकी की तरह पीठ पर झूल रहे थे, जिनको सिर के पृष्ठ-भाग पर एक लट से बाध रखा था। घनी निविड केश-राशि कमर तक पहुच रही थी। सफेद जॉर्जेट की साडी, जिसके नीचे नीले रग का ब्लाउज—बडी सुन्दर मालूम दे रही थी, आते ही हाथ जोडकर हसते हुए कहा, 'नमस्कार!'

मैंने हसकर कहा, 'तुम्हारा मुह देखा है आज··'

'मैं भी सवेरे से ही सोच रही हू कि महाभारत का सूत्रपात कैसे किया जाए—सारी महाभारत को मन के परदे पर देख गई—नाना निगम, आगम, पुराण, किन्तु कही पर इस घटनावली से मेल नही मिला—' तभी बूढा दरबान गोपाल, उसके पीछे वही अलसेशियन कुत्ता एक ट्रे मे चाय की केतली और एक प्याला तथा प्लेट लिए हुए भीतर आया, कोने मे से एक स्टूल खीचकर बिस्तर के पास उसने ट्रे रख दी। आते ही अलसेशियन सबसे पहले कमला के पैरो को सू घने लगा, फिर मेरी ओर एक बार सरसरी निगाह से देखकर पुन गोपाल के पास जा खडा हुआ।

गोपाल ने कहा, 'मै बाहर ही बैठा हू बीवीजी! आवाज दे दीजिएगा।'—और दोनो ही बाहर चले गए।

कमला ने प्याले मे चाय उडेलकर मुझे देते हुए कहा, 'मालूम है कितने बज गए?'

चाय को मुह लगाकर मैंने कहा, 'तुम्ही बता दो न।'

कमला ने इशारा किया। मैण्टल पीस पर एक सुन्दर चौकोर घडी मे आठ बजने वाले थे।

'जरा जल्दी उठा दिया होता। तुम्हारे ये दरबान वगैरा क्या सोचते होगे?'

'यही कि रात को एक बजे तो आए ही थे, और सोते-सोते दो-तीन

बज जाना कोई ताज्जुब की बात नही !'

तभी मुझे सोम की याद आई। पूछा 'अरे सोम ?'

'वह भी सो रहा होगा !'

'तुमने पता नही लगाया ?'

'उसे डिस्टर्ब करने से क्या लाभ ?—बच्चा है, अपनी मरजी से उठे···'

'जरा देखो—वह तो बहुत जल्दी उठने का आदी है।'

'तुम्ही उठकर देख लो न !—यह जो खिडकी है !'—और कमला उठी, सामने दीवार मे एक खिडकी है, जो इधर से बन्द है, कमला ने दरवाजे के पीछे खडे होकर उसके पल्ले खीच लिए ! उस ओर खिडकी के ऊपर पर्दा फैला हुआ था, इसलिए एकाएक कुछ दिखाई नही दिया।

मैंने कहा, 'पर्दा हटाओ न !'

'न' कमला ने केवल गर्दन हिला दी।

किन्तु मालूम दिया, मेरी आवाज उधर उस कमरे मे पहुच गई थी, इसलिए एक ही क्षरण मे परदे को हटाकर सोम ने अपना मुह खिड़की मे डाला और कहा, 'गुड मार्निंग अकल' और तभी उसे कमला भी दिखाई पड गई, 'ऐण्ड गुड मार्निंग ऑण्टी !····'

मैंने कहा, 'भीतर आ जाओ सोम !—कूद आओ खिडकी से।'

सोम कमरे मे हिचकिचाते हुए एक क्षरण मेरी ओर दूसरे क्षरण कमला की ओर देखते हुए कूदकर इधर आ गया। मानो आखो ही आखो मे कहना चाहता था कि इस तरह खिडकी कूदकर उस कमरे से इस कमरे मे आना बन्दर का काम हो सकता है, किसी सभ्य आदमी का तो नही ? मैंने कह दिया है सो मैं तो ठीक, किन्तु यह नारी मन से सोम को क्या सोचेगी ! पर कमला ही उसके निकट इतनी नई और मैं इतना पुराना हो उठूगा कि इस असमजस के बावजूद उसने मेरा कहना मान लिया।—उसके अभिवादन का हम दोनो ने ही उत्तर दे दिया।

देखा कि सोम न जाने कब से नहा-धोकर कपड़े बदल चुका है, और

जाने क्या कर रहा था !

मैंने पूछा, 'रात को ठीक नीद आई ?'

'बहुत अच्छी ! इट्स ए लवली प्लेस (बडा प्यारा स्थान है) पापा ने कहा था कि इन हिल प्लेसेस (पहाडी स्थानो) पर स्वास्थ्य का पूरा लाभ उठाने के लिए चार बजे ही उठकर घूम आना चाहिए। मुझे आज तो उठने मे कुछ देर हो गई ! यो पाच बजे उठ जाता हू—पर आॅण्टी, एक अलार्म पीस का प्रबन्ध हो सकेगा क्या ?'

'ज़रूर !'

'बस तो कल से अकल, आपको भी चार बजे उठा दूगा !'—फिर वह पश्चिम की ओर खिडकी पर जाकर उसका परदा हटाकर बोला—'देखा आपने इधर क्या है ?'

मैंने सिर हिला दिया 'नही।'

'माइ गॉड ! आपने देखा नही ?—इट्स ए वण्डर फुली प्रेटी साइट (आश्चर्यजनक रूप से सुन्दर दृश्य)—मैंने अपने कमरे की खिडकी से देखा है ! नीचे ही एक बढिया तालाब है—खूब लम्बा-चौडा, उसमे यह पहाडी एक आइलैण्ड जैसी बसी हुई है। आइ से वण्डरफुल ...'

सोम का उत्साह उसकी आखो और चेहरे पर बरस रहा था। मैने खिडकी से बाहर की कौन कहे, कमरे की साज-सज्जा, वनावट-चुनावट किसीपर ध्यान नही दिया था। अब अपने चारो ओर नजर डालकर तथा हाथ के प्याले को स्टूल पर रखकर मै सोम के पास जा खडा हुआ। उसकी सहायता से खिडकी खोली। उसकी ऊचाई खिडकी की ऊचाई के बराबर थी, इसलिए मैंने उसे गोद मे उठा लिया।

पल्ले खोलते ही मानो रुद्ध हवा का एक अप्रतिहत रेला सारे कमरे मे घुस पडा, किसी तीसरे दर्जे का दरवाज़ा खुलते ही जिस तरह यात्रियो की भीड डिब्बे मे पिल पडना चाहती है।—और बाहर तालाब की मनोहारिणी छटा के उसपार सघन वृक्ष-राजि से छाई हुई तटभूमि जो उदय होते हुए सूर्य की इस कोठी को उलाघकर आती हुई किरणो को

झूमने के लिए उदग्र हो रही थी। ऊपर आकाश एकदम से शुभ्रनील नीचे की झील का तरगहीन प्रतिबिम्ब जैसा दिखाई दे रहा था। वास्तव मे अपने बगले के लिए जिसने यह स्थान चुना है, उसकी सूझबूझ को दाद देनी ही पडेगी।

कमला ने पास आकर कहा, 'देखती हू तुमने तो स्नान वगैरा सब कर लिया है।'

'यस आँण्टी—आज नीद ज़रा देर से उडी—छ. बजे, बस उठकर फिर 'प्रेयर'· '

'प्रेयर ?' कमला ने आश्चर्यान्वित होकर पूछा।

मैंने कहा, 'सोम मिशन स्कूल मे पढता है, वहा तो 'प्रेयर' प्रतिदिन करनी पडती है न !'

सोम ने कहा, 'बाइबिल भी पढनी पडती है स्कूल मे तो।—पर हम तो हिन्दू हैं। पापा ने कहा, यो बाइबिल पढने मे भी कोई नुकसान नहीं है, पर प्रेयर से तो आदमी का मन साफ होता है। आप 'प्रेयर' नहीं करती आँण्टी ?'

कमला ने मुस्कराकर कहा, 'मुझे सिखा दोगे ?'

सोम ने लजाते हुए कहा, 'आप तो मज़ाक करती है।'

कमला ने दोनो हाथो को उसके गालो पर लगाकर कहा—'मज़ाक नही, सच कहती हू, प्रेयर-वेयर मुझे नही आती। बोलो—ब्रेकफास्ट मगवा दू ?'

'अभी से ?'—ब्रेकफास्ट हम साढे आठ बजे खाते है। पर अकल जब तक तैयार न हो जाए ! कोई बात नही—नौ बजे तक तो आप तैयार हो जाएंगे न अकल ?'

मैंने कहा—'मैं न भी होऊ, तो तुम्हारी आँण्टी है, साढे आठ बजे तुम ब्रेकफास्ट लगा देने को कह दो कमला।'

'नही-नही, मैं आपके बिना नही खाऊगा।'

'अच्छी बात है, तो मैं ही साढे आठ के पहले तैयार हो लेता हूं।

तुम कमला तैयारी के लिए कह दो।—हा, सोम, तुम भी आण्टी के साथ चले जाओ तब तक। इनसे गप लडाना।'

'वाह! गप लडाकर इनका समय क्यो बरबाद करूगा?—मैं किताब पढता हू, आप अपना काम कीजिए आण्टी! ऐण्ड अकिल यू टू—(और आप भी)'—और सोमदत्त पुन उस खिडकी से कूदकर अपने कमरे मे पहुच गया, खिडकी के किवाड उसने भिडा दिए, शायद फिर परदा भी खीच दिया। हम दोनो एक दूसरे की ओर मुह बाए खडे देखते रहे।

मौन कमला ने ही भग किया, 'देख क्या रहे हो?—यो देखते रहोगे तो साढे आठ क्या सभी कुछ बज जाएगे।'

मैंने कहा, 'तुम्हारी आखो से उसकी आखो मे कितना साम्य है।'

'चलो हटो।'

'अच्छा कमला, क्या एक क्षण को भी तुम्हारी यह कामना नहीं होती, कि यह तुम्हारा पुत्र होता।'

कमला ने मेरे गाल पर एक चिकोटी काटी और झपाटे के साथ कहा, 'तुम जैसा असाध्य शठ जो मेरे मातृत्व को छाए हुए है—देखो देर न हो ...' और वह किवाड बन्द करके बाहर हो ली।

इसी तरह अमन्द उत्साह, निश्चिन्त अवकाश और अशेष सुविधाओ के बीच दिन बीतने लगे। सोम तीसरे-चौथे दिन अपने पिता को चिट्ठी लिख देता था, सप्ताह मे एक बार मैं भी। मिस्टर कपूर की चिट्ठी भी सप्ताह मे एक बार आ पहुंचती थी। पुत्र के पत्रो से उन्हे विश्वास हो गया था कि सोम बहुत ही अच्छे आदमियो के ससर्ग मे आ गया है, और यह सगति उसके शारीरिक तथा मानसिक विकास की दृष्टि से बडा सहायक होगी, मानो इसका भी उन्हे विश्वास हो गया है।

उस दिन देलवाडा विमलशाह के जैन मन्दिर देखने गए। वहा का शिल्प देखकर प्राचीन भारत की समृद्धि की कल्पना की जा सकती है। आज जीवन मे यदि मनुष्य कला का ऐसा चरम रूप नही देख पाता तो हम युग के सघर्ष का बहाना लेकर अपने अभाव से समझौता कर लेते

है। उस युग मे स्वय इन मन्दिरों का निर्माता विमलदेव शाह महमूद गजनवी से सत्रस्त होकर सोमनाथ की पवित्र भूमि से खदेडा जाकर इस प्रान्त मे आ बसा था, और यहा आकर उसने कला के जिस नयनोत्तेजक ससार की अभिराम सृष्टि मे योग दिया, वह क्या केवल यह कहकर भुला दी जा सकती है कि वह केवल मात्र दिमागी ऐयाशी थी ?—या वह केवल श्रमवर्ग का अहेतुक शोषण था ?

सोम का ग्रहणशील मस्तिष्क भी इस सौदर्य-सृष्टि को देखकर बडा प्रभावित हुआ। प्रभावित न हुई केवल कमला। इतिहास वह भी खूब जानती है, बल्कि कहूगा इतिहास का मेरा ज्ञान तो सतही ही है, किन्तु कमला ने उसका विधिपूर्वक अध्ययन किया है, और अध्यापन कर रही है। वह कहती है कला का यह लीला-विलास रचयिता के अभावशील मानस का द्योतक तो है ही, वह उसकी विद्वेष भावना को भी प्रतिपादित करता है। विमलदेव शाह जैन मतावलम्बी था, उन दिनो जैन मत तथा शैव मत मे बनती न थी। सोमनाथ के प्रभूत ऐश्वर्य को नीचा दिखाने के लिए ही विमलदेव शाह ने इन मन्दिरो का निर्माण कराया था, उसके सौभाग्य से महमूद ने पहले ही सोमनाथ को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। अतः ऐश्वर्य के एकाकी अधिकारी होने के नाते इनका खूब प्रचार हुआ। क्या पता शैव मत को पदस्थ देखने की विमलशाह के मन की दबी वासना ही महमूद गजनवी की विजय का कारण न बनी हो ! तब सारे इतिहास को ही दूसरे दृष्टिकोण से देखना पडेगा।

बहस खाने के बाद भी चलती रही। नौ बजे के पहले ही थका हुआ सोम सो गया। मैंने कहा, 'अच्छा, अब इस बहस को बन्द करो। यदि करना ही हो, तो दूसरी बातें करें—वरना इतना थक गया अनुभव करता हूं कि सो जाऊ।'

'तो ठीक है—सोना ही चाहते हो, तो दूध ले आऊ ?'

'भिजवा देना, पी लूगा।'

'मैं लेकर आती हू—' और वह उठकर जाने लगी।

मैंने कहा, 'बैठो ।' कमला बैठ गई तो मैंने कहा, 'मेरे लिए दूध का तुम्हारा इतना आग्रह है, पर सोम के लिए तो तुमने कभी आग्रह नही किया ?'

'वह तुम्हारे जैसा अबाध्य थोडे है ।—वह कुलीन है, अच्छे सस्कारों को लेकर बढ रहा है । वह तुम्हारी तरह छिपाता नही । नही पीना है तो साफ कह देगा—पर जब निश्चित हो गया है तो ठीक समय पर बिना किसीके कहे दूध भी पी लेगा, कपडे भी बदल लेगा, और ठीक समय पर लेट जाएगा—और जानते हो ?—कितना साफ मन है उसका—लेटते ही सो भी जाएगा ।'

'पर कमला ! एक बात कहू ?'

'कहो ।'

'तुम उससे डरती क्यो हो ?'

'मै ?—उस छोटे-से बच्चे से डरती हू ?—कहते क्या हो !'

'सो ही तो ! जब तक मै नही होता, तब तक तुम कभी उसके पास भी नही जाती । यदि कभी उसे किसी छल से तुम्हारे पास भेजता हू तो या तो तुम उसे लौटा देती हो, या खुद ही उसे लेकर मेरे पास टपक पडती हो । या मुझे गवाह बनाए रखना चाहती हो ?'

कमला मानो आश्वस्त होकर मेरे पलग पर पैरो के पास बैठ गई, फिर बोली—'न तो मैं उससे डरती हू, न तुम्हे ही गवाह बनाए रखना चाहती हू ।'

'तो फिर तुम शायद अपने ही से डरती हो !'

'अपने से भी किसलिए ?'

'सो तो तुम्ही जानो ! शायद डरती हो कि दिल के कोने से कही मा न जाग उठे !'

कमला के मुह पर मन्द हसी छा गई, वह बोली, 'एक घटना याद पड गई । हमारे यहा जो दूध दे जाया करता था, उस ग्वाले का बछडा मर गया । गाय बडी दुःखित हुई, और सबसे बडी बात जो उसने की, वह

उसे अपने पैरो खडे रहने की शक्ति यदि जल्दी आ गई है तो यह उसके लिए शुभ ही है। उस दिन सेकण्ड शो देखकर जब देर से लौटे थे, तो सुनोगे उसने क्या कहा था ?'

'कहो।'

' 'उसे बडी जोरो से नीद आ रही थी। कपडे बदलने के लिए जब वह कपडे उतारने लगा तो नीद के मारे उसके हाथ इधर-उधर पड रहे थे। मैंने कहा—'मैं खोल दू।'

उसने कहा, 'नही मैं बदल लूगा, आप तकलीफ न करे।'

मैंने कहा, 'तुम्हे नीद आ रही है, मैं जल्दी खोल दूगी—उसमे हर्ज ही क्या है !'

'हर्ज है ! पापा ने कहा था कि लडकियो के सामने कभी कपडे नही बदलना चाहिए।'

मैंने कहा, 'मा के सामने भी नही ?'

उसने कहा, 'मा के सामने तो खैर बदलने ही पडते है, बल्कि मां होती है, तो वह खुद बदल देती है।'

'सो ही तो, लाओ मैं बदल देती हू।'

'पर आप तो मा नही हैं।'

'अच्छा, यदि मैं तुम्हारी मा होऊ तो ?'

'जब हैं ही नही, तो क्यो उसे मान लिया जाए ?'

'अगर मैं होती तो ?'

सोम हस दिया, और बोला, 'यो तो आप मा के बराबर है ही आँण्टी, लेकिन मा तो आप अपने ही बेटे की हो सकती है, दूसरे के बेटे की नही ! लीजिए मेरी नीद भी उड गई और यह कहकर वह बाथरूम मे चल दिया।'

मैने एक लम्बी सास ली और कहा, 'कह नही सकता, यदि इसे प्रकृत मा मिली होती, तो इसका विकास और कितना अधिक हुआ होता।'

'कुछ न होता महाशय, मैं कहती हू। सोचती हू कि समाज इससे शिक्षा ले ! किसका बीज, कहा अकुरित हुआ, किसने पाला—यदि समाज सभी शिशुओ का दायित्व अपने सिर पर ले ले तो मा-बाप को भी छुट्टी मिले, और बच्चे योग्य नागरिक हो जाए, उसी तरह जिस तरह भ्रम्यमाण (सरक्यूलेटिंग) सिक्के की कीमत बढ जाती है। और फिर मा को छुट्टी मिल जाए तो नारी वास्तव मे स्वतन्त्र हो सकेगी।'

'मैं तुम्हारी इस बात को नही मानता। मातृत्व की भावना पर ही तुम कुल्हाडी चला रही हो। हो सकता है कि यह सामाजिक गुण न हो, पर व्यक्तिगत गुणो में तो इसका खास स्थान मानना ही पडेगा। पर आज अधिक बहस नही। थक गया हू। थक तुम भी गई हो। चलो जाओ, सोओ।'

'ना, सोना अभी नही। मै दूध लेकर आती हू।'

एक दिन रात्रि को खाने के बाद लाउज मे बैठे गपशप करते ही रात बीतने लगी, और एकाएक ही जब घडी ने नौ बजाए, तो सोमदत्त ने उठकर कहा :

'वेल अकल, इट्स टाइम फॉर मी गो टु स्लीप, गुड नाइट टु यू—गुड नाइट टु यू ऑण्टी टू। (यह मेरा सोने का समय है, शुभ रात्रि—आपको और ऑण्टी को भी।)'

कमला ने कहा 'सोम! तुम तो अग्रेजी ऐटीकेट्स जानते हो! सोने के पहले अकल को 'किस' (चुम्बन) नही करते ?'

लडका लजा गया, बडी-बडी आखो को मेरी ओर उठाकर फिर उसने नीचे कर लिया, और बोला :

'मन तो बहुत करता है ऑण्टी लेकिन '

'डर लगता है ?' कमला ने पूछा।

'नही, शरम लगती है।'

'शरम किस बात की ?' कमला ने ही पूछा।

'यही कि मन मे क्या समझेंगे ? वे तो इगलिश एटीकेट मानते नही !'

'न सही, तुमसे गुड नाइट तो करते हैं ! अच्छा मन हो तो उन्हे जरूर 'किस' कर लो। वे खुश ही होगे।'

सोम ने फिर मेरी ओर देखा, हसरत भरी आखों से, मैंने इशारे से हसकर उसे पास बुलाया। और जब वह पास आ गया, तो दोनो बाहुओ मे भरकर मैंने उसे चूम लिया। सोम ने भी सकुचाते हुए मुझे चूमा और जाने के लिए उद्यत हो गया।

कमला की ओर मेरी छिपी दृष्टि थी, मैंने कहा, 'और आण्टी को किस नही करोगे ?'

लडका एकदम खडा हो गया। एकाएक ही मानो उसकी समस्त झिझक काफूर हो गई, और प्रश्न की मुद्रा मे बोला—'ऑण्टी को ? नो-नो-गुड नाइट' और वह प्राय: भागकर ही अपने कमरे मे चला गया।

कमला ने मेरी ओर देखा, मैने उसकी ओर—कही, अति दूर, आखो की अनेक सजल परतो के पीछे कोई प्यास छिपी हो शायद, पर कमला ने कहा, 'क्यो बच्चे को तग करते हो ? अगर अपने ही अधरो की प्यास से हिया जल रहा हो, तो साफ क्यो नही कह देते ! 'अधर पर अधर का मधुर साराधार वर्षण !' तुम्हारी ही लिखी हुई तो कविता है।'

'अपना कथन तो मैं शेष कर चुका हू कमला ! रही मेरे अधरो की प्यास, वह रस ही नही, रक्त भी पी चुके हैं। अब तो केवल आखो के खारे आसुओ का सागरमात्र उलीचना शेष रहा है।'

'क्या आसुओ की बात चलाई है ! चलो उठो, यहा शीत बढ रहा है, तुम्हारे कमरे मे चले।'

यो ही निरालस आनन्द मे दिन बीत रहे थे कि एक दिन मानो अकस्मात् ही लौटने का दिन आ गया। इसी अवधि मे सोम मानो इस सम्पूर्ण दृश्यावलि और वातावरण का एक भाग बन गया था। यद्यपि अपने माता-पिता को देखने की उसकी उत्कट इच्छा थी, किन्तु इसके

बावजूद वह कुछ-कुछ उदास-सा दिखाई दे रहा था। इस जगह रहकर हम सभीने मन का स्वास्थ्य और शान्ति जो पाई थी।

रात को ग्यारह बजे की गाडी से जाना निश्चय हुआ था। सध्या को यहा से लगभग ६ बजे रवाना हो जाएगे, तब तक खाने-पीने से भी निपट लिया जाएगा। सामान सब बध-बधा गया है। सोम बाहर दालान मे कोठी के अलसेशियन कुत्ते के साथ खेल रहा है। मै दिवानिद्रा से उठकर चाहता हू कि यदि एक कप चाय मिल जाए तो सुस्ती उडे, किंतु कमला कही नज़र नही आती। शायद काम मे व्यस्त हो। गोपाल को बुलाया जा सकता है, किन्तु इन कई दिनो मे मानो इस दुनिया मे मेरा कमला के सिवा कोई अपना नही हैं। इसपर जब कभी सोचने की चेष्टा की है, अपने ऊपर हसी ही आई है, और समस्या को वही छोडकर अपने दैनदिन काम मे लग गया हू।

चाय लेकर जब कमला आई तो आज इसी सूत्र को ले बैठा, बोला :

'घर जाने पर मेरी तो बडी मुसीबत हो जाएगी।'

'क्यो ?'

'तुम्हे वहा सदैव निकट कहा पाऊगा ? इतनी आदत खराब हो गई है कि· '

'कहो न ! रुक क्यो गए ? कोई दूसरा सुन तो नही रहा है।'

'तुम जो सुन रही हो।'

'अपनी कमज़ोरी नही पकडाना चाहते ? जाने दो। उपाय मैं बताती हू।'

'क्या ?'

'मुझसे शादी कर लो !'

'तुमसे ? और नटनागर ?'

'उनकी छाप तो मिट गई है।'

'तुम्हारे मन से—पर शरीर से ?'

'तुम शरीर तो चाहते नही ?'

'पाने को बाकी तो वही रह जाता है ! मन तो तुम शायद कभी का दे चुकी हो।'

कमला एकाएक गभीर हो उठी, बोली, 'तो क्या उन्हे तलाक दे दू ? मैंने एक बार प्रस्ताव भी किया था। चरित्र-हीनता का अपराध स्वीकार करके !'

'तुम्हारा साहस तो कम नही है कमला, किन्तु ··'

'किन्तु क्या · '

लम्बी सास खीचकर मैंने कहा, 'पाकर भी क्या तुम्हे पा सकूगा कमला ? तुमसे डर लगता है, जिसको अपनी पेट की सन्तान का मोह न बाध सके, पराये पुरुष की छाया उसे कब तक भुलाए रख सकेगी ? मेरे पास ऐसा है क्या जो तुम्हे दे सकू और जिसे पाकर तुम बधी रह सको ?'

कमला ने मेरे गले मे हाथ डाल दिया और बोली, 'तुम्हारे पास कुछ नही है, इसीलिए तो सोचती हू कि यदि अपने आपको तुम्हे दे सकू तो उसे तुम रख सकोगे। और तो कोई मुझे रखना चाहता नही। नटनागर ने एक तरह से मुझे निकाल ही दिया है। मेरे पुराने प्रेमी कभी से किनारा काट गए है—और तारीफ यह है कि देने लायक मैं अब ही कुछ हुई हू। रूप तो कभी मेरे था नही—' और एक लम्बी सास लेकर उसने अपना हाथ पुन समेट लिया। मानो एक क्षण का सास लेकर फिर बोली, 'फिर भी यदि किसीको दरकार हो, तो उसको प्रस्तुत करने की सज्जा मैंने सीख ली है—उसके बाद यौवन की पूजी भी मेरे पास इस समय तो कम नही ! सम्बन्ध के दूसरे सीमान्त पर देखो, मैं आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर, समाज की दूसरी बौद्धिक प्रस्थापनाओ मे मेरा उचित मान-सम्मान—और यदि कोई इससे भी आगे चाहे तो हृदय की गहराइयो मे भी मैं कजूस नही, यदि इसे कोई आध्यात्मिक मिलन ही कहे तो मेरे जीवन का शेष सम्बल भी उसके चरणाम्बुजो मे उत्सर्ग है ! किन्तु फिर भी मुझे कोई नही चाहता—कोई नही चाहता ! क्यो ?

आज तुम भी कहते हो, तुम मुझसे डरते हो। ऐसा क्या है मुझमे ?' और वह उत्तेजित मेरे सामने आखे फैलाकर खडी हो गई। आखो मे एक आग थी, जो मानो सब कुछ को जलाकर भी शायद शात न होगी।

मैने कहा, 'कमला ! बैठो, उत्तेजित मत होओ। तुममे एक आग है, जिसने तुम्हारे अन्तर के समस्त प्राचीन कूडा-करकट को जला डाला है, किन्तु शेष सृष्टि तो अभी उसी कूडे-कर्कट की बनी हुई है। तुम्हारी लपटो मे जो आएगा, वही जल जाएगा, तब वह बेचारा डरे क्यो नही ?'

'तो क्या मुझे अपनी ही आग मे जल मरना होगा ? दुनिया मे कोई मेरा न हो सकगा ?'

'जो है, उन्हीको अपना बनाने का प्रयत्न करो। अपने भीतर का तुमने सब पवित्र और नया कर लिया है, अब अपने बाहर को उसी आभा से दीप्त करो, उसका शोधन करो और उसे भी पवित्र बनाओ। जलाकर नही, भस्म करके नही—जलाओ तो इस तरह जलाओ कि अशुद्ध सब जल जाए, और शेष केवल स्वर्ण रहे, पहले से अधिक देदीप्यमान उज्ज्वल बनकर ! याद है ? उस दिन दावत की रात को मैने कहा था कि जहा तक कोमलता के गुणो का प्रश्न है, नारी पुरुष से सदैव श्रेष्ठ रहेगी। किसीको वश मे करना हो तो उसे अपने श्रेष्ठत्व से वश मे करो, फिर उसके साथ कदम मिलाकर दुनिया की किसी भी मजिल को पहुचना कठिन न होगा। और कोमलता के गुणो का विकास तो नारी केवल पत्नी बनकर या माता बनकर ही कर सकती है।'

'पर कोई पति और पुत्र तो बने !'

'दोनो ही तो है तुम्हारे ?'

'एक मानसिक सीमा से दूर, दूसरा शारीरिक सीमा से दूर।'

'चेष्टा करोगी कमला, तो दोनो मिलेगे। और···' मैने हसकर कहा, 'तब तक वह पुत्र न सही, मैं तो तुम्हारा पुत्र हू ही ! इस अपाहिज की सेवा करो और दुनिया के काबिल बनाने की चेष्टा करती रहो।'

कमला ने हलके से मेरे गालो पर एक चपत लगाकर कहा, 'बडे शठ हो—दुनिया तो कहती है कि तुम मेरे पति का आसन हडप बैठे हो।'

'कहती है क्या दुनिया?'

'न हुआ, तो अब कहेगी।'

'तो फिर इसी लडके को क्यो नही पकड लेती?'

'पराए धन को? ना-ना—पराई पूजी से व्यवसाय नही चलता।'

'आजकल तो खूब चलता है कमला—सिर्फ ब्याज भर देना पडता है। और मैं क्या पराया धन नही हू?'

'हो सकते हो, किन्तु मेरी आशा तो अब तक यही है।'

मैंने एक लम्बी सास ली, और कहा, 'न जाने किस बुरे मुहूर्त मे तुम्हारे साथ परिचय हुआ था कमला। किन्तु, यदि परम कल्याण को पाना हो, तो चेष्टा करो कि एक भी व्यक्ति तुम्हारी भावना के दरवाजे से तुम्हे कोसता हुआ न जाए, चाहे वह नटनागर ही क्यो न हो, और एक भी बच्चा तुम्हारे वरद मातृत्व से वचित न हो, चाहे वह सोमदत्त ही क्यो न हो?'

और उठकर मैं मुह धोने के लिए बाथ-रूम मे चला गया। कमला निर्जीव प्रस्तर प्रतिमा की तरह, मानो गले से निकालकर फेकी हुई सूखी पुष्पमाला की तरह निस्तेज मेरे पलग पर बैठी रही, शून्य आखे लिए, शून्य मन लिए, शून्य भावना लिए, और कदाचित् अपना शून्य संसार लिए हुए।

२१

इधर लौटे तो देखा कि चाय के कप मे एक तूफान बरपा हो गया है। बात यह थी कि बडी आसानी से पाया हुआ रुपया कमल के कानो मे एक हजार जिह्वाओ से बोलने लग गया था। किसी तरह उसे खबर लग गई थी कि यह रुपया मेरी ही जेब से उसकी जेब मे पहुचा था; यद्यपि इससे उसकी समस्त समस्याए हल हो गई, किन्तु उसके पश्चात् ही कमला की अनुपस्थिति, साथ ही मेरा भी पलायन, फिर जेब मे तत्काल ही रेलवे से पाए हुए शेष रुपयो का बोझ—बहुत बडा साहित्य-कार कमल न था, किन्तु जितना कुछ था, उससे एक कहानी तो गढ ही सकता था, ऐसी कहानी, जो ठल्ले से लगे हुए और निठल्ले दोनो के मनो को उलझाए रखने के लिए पर्याप्त हो। दूसरा काम उसने किया श्री नटनागर से सम्पर्क साधने का। उन दोनो के बीच पहले खाई बन चुकी थी अवश्य, किन्तु अब तो कमल भी अपने आपको अग्राइव्ड (पीडित) अनुभव करता था, इसलिए समानधर्मिता के आधार पर उसने नटनागर को पत्र लिखकर अपनी सूचना ज्ञापित कर दी। दूसरे कमला और उसके सम्बन्ध को लेकर सीधे नटनागर से उसकी कोई बातचीत नही हुई थी इसलिए आख की शर्म का प्रश्न भी न था। अत वह यह लिखना भी न भूला कि श्रीमती कमला नटनागर जब वहा पर उसीके भरोसे अध्ययन के लिए रखी गई थी, तो अब जबकि उसका 'वार्ड' (अभिभूत) उसके आदेश से बाहर जा रहा है, वह उनके लिए उत्तरदायी न होगा।

छुट्टी गए हुए नटनागर को यह पत्र तत्काल तो नही मिला, पर उस समय तक तो मिल ही गया था, जब छुट्टी से लौटने पर कपूर साहब ने सोमदत्त के सर्वांगीण विकास की चर्चा करते हुए नटनागर के निकट उसके मित्र की जी भर कर प्रशसा की, और उन्हे अशेष धन्यवाद दिया।

यथासमय नटनागर ने मेरी और मेरी तथाकथित बहिन का आभार प्रदर्शित करने मे भी कोई सकोच न किया, सब कुछ यथापूर्व होते हुए भी मुझे मानो मालूम हुआ कि उनके मन पर मुझे लेकर पुन एक बोझ आ पड़ा है।

कुछ ही दिनो के बाद कपूर साहब दौरे पर आए, साथ मे सोमदत्त को लिए हुए और चपरासी के साथ मुझे सूचना भिजवाई कि क्या वे मिलने के लिए मेरे घर आ सकते है ?

मै एक छोटा-सा आदमी, कपूर साहब जैसा बडा सीनियर स्केल्ड अधिकारी मेरे घर आए—मै उनकी किस तरह अभ्यर्थना कर सकूगा, आदि सोचकर बोला—'ज़रूरत क्या है भाई ?—उनको जब सुविधा हो, समय पूछ आओ, मै स्वय जाकर उनसे मिल लूगा। इस समय तो देखते ही हो, बडा बेवक्त है। सध्या को पाच-साढे पाच तक शायद उन्हे असुविधा न होगी। मै खुद स्टेशन पर पहुच जाऊगा। वही तो होगे ? या अफसरो के रेस्ट-हाउस मे ?'

'जी हा, सैलून मे ही ठहरे हुए हैं।'

पाच बजे मै जाने की तैयारी कर ही रहा था, कि दरवाजे पर कमल की आवाज सुनाई दी। खिडकी मे से झाककर देखा तो, कमल के पीछे ही कपूर साहब, और उनकी अंगुली पकडे हुए सोमदत्त ! भाग्य से नौकर अभी गया नही था। चाय पी चुका था, किन्तु उसे पुन पानी चढाने के लिए कहा, तथा एक पाच रुपये का नोट उसे देकर बोला कि बाजार से जाकर बढिया नमकीन, मिठाई और ताजे फल-फूल ले आए।

दरवाज़ा खोलकर मैने नमस्ते की। मै कुछ कहू उसके पहले सोमदत्त 'अकल-अकल' कहता हुआ मेरे पैरो से लिपट गया। मैने उसे गोद मे उठाकर कपूर साहब से कहा :

'आपने तो मुझे लज्जित कर दिया कपूर साहब। कहा आप, और कहा मै ? बल्कि मैने तो पियून से कहा भी था कि अगर आपकी सुविधा का समय मालूम हो जाता, तो मै खुद वहा उपस्थित हो जाता।'

'सो मै ही उपस्थित हो गया तो कोई हर्ज है ?—मैं बडा ही सही, पर आप भी क्या कम बडे हैं ?—मुझे मालूम है कि आप कितने बडे 'राइटर' (लेखक) है, फिर मैं आपके निकट कितना कृतज्ञ हू, यह आप कैसे समझ सकते है !'—फिर मेरी पीठ पर हाथ रखते हुए उन्होने सोम को कहा, 'अरे सोम, नीचे उतरो बेटा, अकल को 'इनकन्वीनिएन्स' (असुविधा) होती है !'

मेरे विरोध के बावजूद सोम नीचे उतर गया। मैने कहा, 'सोम से इन्कन्वीनिएन्सड् होने का जितना अधिकार आपका है, उतना न हो तो भी कुछ अधिकार तो आपने मुझे दिया ही है।'

'कुछ क्यो—मेरे अधिकार से भी बहुत अधिक।—बल्कि, ओझा साहब, यदि आप कहने दे तो कहूगा कि ऐसी ही कोई दुरभिसन्धि लेकर मैं आपके पास आया हू।' और वे हसने लगे।

फिर देखकर बोले—'यह आपका ड्राइग रूम है !'

'जी, ड्राइग रूम किसे कहते है, यह गरीब लेखक क्या जाने !—पर शब्द से उसका परिचय अवश्य रहता है, नाम वह कुछ दे ही लेता है।—तशरीफ रखिए !'

तीन-चार कुर्सिया रख छोडी हैं बीच मे—और उनके बीच मे एक तीन पायो का गोल टेबल ! कमला की मेहरबानी से अब इसपर एक सफेद सुन्दर फूलो से कढा हुआ मेज़पोश रहता है। उसने एक फूलदान की व्यवस्था भी कर दी है। उसके स्कूल का माली प्रत्येक प्रात काल उसकी ओर से ताजे फूलो का एक गुलदस्ता इसपर सजा जाता है। कुर्सिया साधारण हैं, उनके ऊपर किसी जमाने मे गद्दियां थी, उसके बाद उन्हे बदलन की सुविधा न रही, और एक दिन उन्हे अधिक प्रयोग के अनुपयुक्त समझकर विदा कर देना पडा। कुछेक साल केन की बैठक का इन्तजाम किया, किन्तु जब वह शीघ्र ही टूटने लगी तो पुन. प्लाईवुड की सीट लगवा दी। तब से अब तक वही ठीक काम दे रही है। उधर खिडकी की ओर एक सामान्य-सा राइटिंग टेबल है, जिसपर मेरे लिखने

का काम होता है। पहले वहा भी ऐसी ही कुर्सी थी, किन्तु अब कमला के अनुरोध के फलस्वरूप एक सुन्दर गद्दी उसपर बिछी हुई है। उसके पास ही, दूसरी खिडकी से लगा हुआ पलग रखा है। उसपर हैण्डलूम की एक गहरे हरे रग की सादी चादर बिछी हुई है। खिडकी और दरवाजे पर भी हरे परदे लगे हुए हैं, पर इन परदो को भी कमला के हाथ ही का वरदान कहना चाहिए। पहले ये भी न थे। एक कोने मे स्टूल पर एक टेबलफैन रखा हुआ है। दीवार पर एक ओर तस्वीर है महात्मा गाधी की, ठीक उसके सामने दो तस्वीरे हैं। एक है कविगुरु रवीन्द्रनाथ की, दूसरी उपन्यास-सम्राट् शरत्चन्द्र की। एक ओर है एक ग्रुप की फोटो, जो रेलवे से अवकाश ग्रहण करते समय मित्रो की विदाई का स्मरण दिलाती है। इतना होने पर भी दीवारे निराभरण नही है। चारो ओर पाच-छ: कैलेण्डर लगे हुए है। यह सब मित्रो की भेट है।

गादी वाली कुर्सी खीचकर मैंने कपूर साहब को बैठने का इशारा किया, हसकर वे दूसरी सादी कुर्सी पर ही बैठे। मैं सामने की दूसरी कुर्सी पर बैठा। सोम बैठा बाईं कुर्सी पर। कमल तब भी खडा ही था, वह बोला, कपूर साहब को लक्ष्य करके ही

'तो सर—मै चलू ?'

मै कुछ कहूं, उसके पहले ही कपूर साहब ने कहा, 'यश जोशी, यू कैन गो। थक्यू फॉर द ट्रबल टु शो मी राउण्ड !' (तुम जा सकते हो ! मुझे मकान दिखाने का कष्ट उठाने के लिए धन्यवाद।)

कमल ने जब मुझे भी नमस्ते किया, तो मैं अपने आपको रोक नही सका, बोला, 'ठहरो, चाय पीकर जाना कमल ! दो मिनट मे तैयार हुई जाती है।'

'नही भाई साहब, मुझे कुछ और काम भी है ! मेरा क्या—किसी भी दिन आकर पी जाऊगा। थैंक्यू वेरी मच ! बाई-बाई !'

और वह उल्टे पैरो दरवाजे का परदा ठेलकर बाहर हो गया।

मैंने महसूस किया कि कपूर साहब और कमल के बीच मे स्वामी-

सेवक का भाव है, और उसे दोनो ही ठीक तरह से बनाए रखना चाहते है ! मै बीच का विसर्ग हू, सन्धि होने पर भी एक विकलाग सयुक्ति दोनो के बीच अवश्य रहेगी। यद्यपि कमल के इस तरह चले जाने से मेरे मन पर एक बोझ-सा अनुभव हो रहा है, पर जहा तक कमल का प्रश्न है, वह इसे बिल्कुल स्वाभाविक समझे था, इसका भी मुझे विश्वास है।

कुछ देर इधर-उधर की बाते होती रही। मि० कपूर ने पूछा, 'मैंने सुना, पहले आप रेलवे मे ही थे ?'

'जी हा, लगभग पन्द्रह-सोलह वर्ष इसी लाइन मे बिता चुका हू।'

'फिर छोड क्यो दिया ?'

'कई कारण थे कपूर साहब ! आप तो जानते ही है, आज के युग मे आदमी के सीधे रहने से काम नही चलता ! सीधी अगुली से घी निकलता भी नही !'

'समझा नही मतलब !'

'कर्मचारियो की सीनियर स्केल मे था। पहले जो अफसर थे उनकी कृपा थी, काम चाहते थे वे सिर्फ, इसलिए खुश थे। तरक्की जल्दी-जल्दी मिली, तो दोस्तो के साथ-साथ दुश्मन भी होते गए। फिर एकाएक ही सिर के अफसर बदल गए। बस, दुश्मनो की बन आई। दूध की मक्खी की तरह पहले तो मुझे स्टोर्स मे बदल दिया, मेरी उन्नति की जगह पर उनका एक चापलूस रिश्तेदार आ जमा। लोगो की पौ बारह हुई, वहा बहुतेरो के सितारे डूब गए। इधर मर्जर (विलयन) निकट आता जा रहा था, ऐसी-ऐसी तबदीलिया हुईं कि क्या कहा जाए ! मैंने सोचा, यहा पर सीधे आदमी का गुजारा नही है, बस त्याग-पत्र देकर अलग हट गया।'

'यह तो कुछ अच्छी बात नही हुई। आपको अपने अधिकार के लिए लडना चाहिए था। मेरा ही केस ले लीजिए। मैं इजीनियर हू, प्रारम्भ से ही यही लाइन है, जब उन्नति का मौका आया, तो एक वरिष्ठ अधिकारी का जमाई मार्ग मे आ गया। सीनियर मैं था, इसलिए मुझे मण्डल

(डिस्ट्रिक्ट) के स्टोर्स विभाग मे भेज दिया, और जमाई महाशय बन गए मण्डल के इजीनियर ! षड्यत्र की समाप्ति यही न थी। स्टोर्स मे मेरा पूर्ववर्ती भी उनका कोई नातेदार ही था, और उस विभाग मे कई हज़ार का गबन कर चुका था। उनकी पोल खुल जाए, उसके पहले ही उन्हे वहा से हटाकर सुरक्षित कर दिया गया। मेरे चार्ज लेने के दो माह मे ही जब पोल खुली तो बन्दर की बला तबेले के सिर ! अठारह महीने तक सस्पेड रहा हू मै मिस्टर ओझा ! किन्तु मैं केस लडता रहा, आवश्यकता पडती तो कोर्ट मे भी जाता; पर अपना अधिकार मैंने नहीं छोडा। शासन को आखिर मेरा दावा स्वीकार करना पडा, और मुझे अपने पूर्व स्थान पर समस्त क्षतिपूर्ति के साथ उन्हे लेना पडा।

मैंने मुस्कराकर कहा, 'अपने अधिकार के लिए लडना चाहिए यह तो ठीक बात है कपूर साहब, किन्तु अधिकार किसका और किसपर ? जिस पोस्ट पर आज आप विराजमान है, उसपर आपका अधिकार है, किन्तु कल जब आप किसी दूसरी उन्नति की पोस्ट पर चले जाएगे, तब क्या इस पोस्ट का अधिकार दूसरे किसीको नही मिल जाएगा ? अधिकारो की इस कहानी को कहा तक खीचे ले जाइएगा ?—फिर रेलवे डिपार्टमेट मे देखा यही कि जो लिख लोढा, पढ पत्थर हैं उनकी खूब चलती है। स्टोर्स डिपार्टमेट मे भी जो प्रधान थे, वे मुझे देखकर खुश हो गए, कहा कि मुझे उन्हीके पास काम करना पडेगा, जाने के लिए तैयारी भी कर ली, क्योकि पदोन्नति कौन नही चाहता ?—पर बस, जाने की तैयारी धरी ही रह गई। बाद मे सुना कि वे भी आखिर भरी-पूरी गृहस्थी वाले थे, कही साले, कही भानजे, कही भतीजे—कहा बेचारे भटकते फिरते ? कम के कम एक की समस्या का तो समाधान हो ही गया। सो कपूर साहब, आप ही कहिए, इस्तीफा देना क्या बुरा रहा ?'

'आप जो कुछ कहते हैं, वह है तो बहुत कुछ सही ! अच्छा, इस फ्री राइटिग मे कितना हो जाता है, एक्स्क्यूज़ मी फॉर दिस डाईरेक्ट

क्वेश्चन (इस सीधे प्रश्न के लिए क्षमा कीजिएगा) मेरी मशा कोई खराब नही है ।'

'वाह, इसमे छिपाने जैसी बात ही क्या है ?—सौ एक रुपया तो मिल जाता है फ्री राइटिग से, और दूसरे सौ-डेढ सौ समझिए रॉयल्टी के मिल जाते हे, यद्यपि उसके लिए भी कम परेशानी नही उठानी पडती । गुजर-बसर किसी तरह चल जाता है । अपने समय का आप मालिक हू, किसीके लेने-देने मे नही पडता । सही बात तो यह है कपूर साहब, कि किसी चक्कर मे न पडना ही अच्छा है । एक मशीन है यह तो, जो आगे करता है, वह पीछे वाले को भी करना पडता है । भीड मे पडने के बाद आप अपने पैरो पर यकीन नही कर सकते । धक्का मिलने पर आपको भी धक्का देना ही होगा, पीछे से रेला आने पर आपको बढना ही होगा, वरना आप कुचल जाएगे ।'

'इन दो सौ-ढाई सौ मे काम चल जाता है आपका ?'

'क्यो नही ?—देखते ही है आप, कोई खास कष्ट तो मुझे है नही ! यो चाहना या तृष्णा का तो अन्त ही कहा है ?'

'किन्तु आपका भविष्य ?—आपके बाल-बच्चे ?'

मैंने हसकर कहा, 'बाल-बच्चो की व्यवस्था भी इससे हो जाती है, दोनो बच्चे अपनी बुआ के पास है अपर प्राइमरी मे है एक और दूसरा है आठवी मे । रहा भविष्य, सो वह मेरा ही क्यो, सारे विश्व का ही तो है ।'

'बच्चे बुआ के पास क्यो ?'

'इसलिए कि उनकी मां नही है ।'

'मा नही है ?'

'जी नही !'

'आपने दूसरा विवाह नही किया ?—उमर तो आपकी विशेष कुछ ऐसी है नही ।'

'जी नही—उस समय तो और भी कम थी—पर आखिर विवाह

किया ही किसलिए जाता है !'

मि० कपूर कुछ क्षणो तक सोचते रहे। इतने मे नौकर चाय-मिठाई-नमकीन-फल-फूल वगैरा ट्रे मे सजा लाया और बीच की टेबल पर रख गया।

'अरे आपने तो बहुत कष्ट कर डाला।'

'कष्ट तो कहा से किया, बैठा तभी से आपके पास हू !—हा, यदि कहेगे तो नौकर को अवश्य धन्यवाद दे लूगा।'

मैंने एक केला सोम की ओर बढाया, बोला :

'सोम !—भूले तो नही ?'

'हाउ कुड आई ?—' (मैं कैसे भूल सकता ?)

कपूर साहब ने कहा, 'यह तो सदैव ही आपको याद किया करता है। ऐसा क्या जादू कर दिया है आपने ?'

'मैंने ?'—फिर सोम से पूछा, 'क्यो सोम ! मैंने जादू किया है ?'

मुस्कराकर सोम ने कहा, 'यस !'

मैंने सोम को कुर्सी पर से उठाकर बाहो मे भर लिया, और कहा : 'क्यो शैतान ?—जादू तूने किया है या मैंने ?—तू तो मुह पर लाकर जब-तब कहता भी फिर सकता है, पर मै किससे कहू ?—कपूर साहब, इस लडके मे बाध लेने की बड़ी शक्ति है !'

कपूर साहब ने हसकर कहा, 'और उस शक्ति मे आपने इजाफा कर दिया है !'

सोम को पुनः कुर्सी पर बैठाते हुए मैंने कहा, 'नई पीढी का यही ऋण तो हमपर राष्ट्र पर शेष है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति का यही तो पैमाना है कि अपनी भावी पीढी के विकास के कैसे साधन वह प्रस्तुत करता है।'

'और हमारी पीढी के लिए क्या राष्ट्र पर कोई ऋण नही है ?'

'हमारी पीढ़ी कम से कम मझधार तक तो आ ही पहुची है, जिस तरह चल-फिरकर लुढक-पुढककर, या डूबती-उतराती यहा तक पहुची

है, उसी तरह किनारे भी लग जाएगी, यही आशा क्या कम है !'

'अच्छा मिस्टर ओझा, आप ही के बारे मे मैं कुछ कहूं, बुरा तो नही मानिएगा ?

'बुरा ?—आप भी खूब है कपूर साहब, मुझ जैसे अपदार्थ के बारे मे कोई कुछ कहे, यही क्या कम बात है ?'

'कम या अधिक, सो तो मैं नही कहता ! पर यदि आप पुनः रेलवे ही मे कोई जॉब ले ले तो कैसा हो ?'

'रेलवे मे फिर से ?'

'क्यो ? क्या आपत्ति है ?—इस युग मे अच्छे आदमी और अच्छा घी मिलता ही कहा है ?—खासकर रेलवे मे तो आप जैसे चरित्रवान, अनुभवी और बुद्धिमान व्यक्ति की बहुत आवश्यकता है।'

'किन्तु अब मुझे पुन. लेगा कौन ?'

'उसकी आप चिन्ता न कीजिए ! आपके अहसान से उऋण होने का कोई मेरा इरादा नही है, किन्तु सोम की भाति मैं भी आप ही के शब्दो मे अनुभव करता हू कि बाध लेने की शक्ति आपमे भी कम नही है। फिर रेलवे-विभाग मे जिस दायित्व को मुझे सौपा गया है, उसके लिए उपयुक्त व्यक्ति को खोज लाने का भार भी मेरा ही है !'

'मुझे आपका कृतज्ञ होना चाहिए कपूर साहब, किन्तु मैंने तो सुना है कि आजकल तो नियुक्ति का प्रश्न ही बडा कठिन हो गया है।'

'सो है ! चुनाव-मडल, आयु की सीमा, योग्यता का मापदड, वह सब हैं, और इनसे ऊपर अलिखित योग्यताओ की सीमाएं भी कम नही, यानी आप किसकी सिफारिश लाए हैं, किसके रिश्तेदार है, और कही-कही आपकी जेब की शक्ति का भी अनुमान अपेक्षित है ! फिर भी आप तो जानते हैं, रास्ता कहां नही है ? तीन सौ-चार सौ की अस्थायी नियुक्ति की व्यवस्था तो मैं स्वय अपने इनीशिएटिव पर कर सकता हू, किन्तु आप जैसे बहुशिक्षित व्यक्ति के लिए मैं किसी अधिकारी के पद के लिए प्रयत्न करूगा। उसकी नियुक्ति यद्यपि रेलवे-मण्डल (बोर्ड) के

तत्वावधान मे है, किन्तु मैं आशा करता हू कि मुझे निराश नहीं होना पडेगा।'

'कह चुका हू आपकी सद्भावना के लिए मै आपका सदैव ऋणी रहूगा। किन्तु मेरे लिए कोई इतना कष्ट उठाए और आउट ऑफ वे (मार्ग से बाहर) जाए, मैं यह नही चाहता। वैसे अपने इसी वर्तमान जीवन से मैं असन्तुष्ट तो नही हू ; फिर इसी बहाने साहित्य-सेवा भी हो जाती है, जो एक तरह से अब मेरे जीवन का पर्याय ही बन गई है।'

'मैं जो कष्ट उठाऊगा यदि उसमे मुझे आनन्द प्राप्त हो तो ?—और मिस्टर ओझा, यह आप ही का स्वार्थ नही, मेरा भी तो स्वार्थ है ?'

'आपका स्वार्थ ? मैं नही समझा !'

'एक तो यही कि मुझे अच्छा सहायक मिल जाएगा, दूसरा स्वार्थ उससे भी भारी है।'

'वह क्या ?'

'मैंने आते ही जो कहा था कि किसी दुरभिसन्धि को लेकर आया हू ?'

'जी हा, और शायद वह सोम के ऊपर अधिकार के सिलसिले मे कोई बात थी।'

'जी।—आपकी स्मृति भी बडी तेज है मिस्टर ओझा !—सचमुच मेरा स्वार्थ सोम को लेकर ही है। सोम के ऊपर आपने अधिकार की बात कही थी, मैं उसे दायित्व कहूंगा। आप उसे स्वीकार करने के लिए बाध्य नही हैं, पर मैं तो हू ही। लेकिन आपने भी सोम के ऊपर अपने कुछ अधिकार की बात कही थी।'

'जी हा, कही थी, और यह भी महसूस करता हू कि अधिकार के साथ ही दायित्व चाहे न हो, कर्तव्य तो है ही।

'सोम के भविष्य के बारे मे मैं बहुत चिन्तित हू मि० ओझा !—रेलवे की नौकरी और फिर मुझ जैसा इजीनियरिंग लाइन का व्यक्ति; मेरा कार्यक्षेत्र दफ्तर नही, किन्तु खुला मैदान—ओपन लाइन—है !—

इधर दूसरी पचवार्षिकी योजना मे प्रत्येक नागरिक पर ही एक दायित्व आ गया है, तब सरकारी कर्मचारी की तो बात ही क्या है! मतलब यह कि जितना समय मै चाहता हू, घर पर सोम के लिए दे नही सकता। मेरे घर की अवस्था और भी विचित्र है। शायद कभी नूटनागर ने आपको बतलाया हो। मिसेज कपूर, सोम की मा ' और इसके साथ ही एक लम्बी सास भी उन्होने ले ली, तब कहा—'वे सदैव ही से अस्वस्थ है, शरीर ही से नही, मन से भी, उनके जीवन का भी कोई ठिकाना नही हे।'

'हा, उनके अस्वास्थ्य के बारे मे सुना था मैने!—अब कैसी तबियत है उनकी?'

'और अधिक खराब हो गई है! सोम को लेकर तो वे ऐसा काण्ड उपस्थित कर देती हैं कि डॉक्टरो की राय है कि सोम उनके सामने ले जाया ही नही जाए· '

मैने सोम की ओर देखा—कपूर साहब ने टेबल पर पड़ी हुई एक पत्रिका उसे पकड़ा दी थी, वह उसीके चित्र देख रहा था। कपूर साहब इस तरह बोल रहे थे कि वह सुन न सके।

'—और सोम है कि बिना अपनी मा के एक घटा भी घर पर नही बिता सकता। इसीलिए दौरे मे भी मुझे उसे साथ ले आना पड़ता है। इससे इसकी पढाई मे तो विघ्न पडता ही है, इसके मन पर भी एक अव्यक्त दबाव पडता जाता है, जो इसके भविष्य जीवन के लिए उत्तम नही कहा जा सकता।'

'आप इसे कही बाहर क्यो नही भेज देते?'

'उसके लिए सोम तैयार नही होता दीखता है!—आप नही जानते, आपके साथ जाने के लिए राजी करने मे भी हमे बड़ी कठिनाई पडी थी।'

'फिर क्या सोचा है आपने!'

'सोचा क्या है?—यदि आप किसी बहाने से मेरे दफ्तर मे आ

जाए, तो मुझे विश्वास है, इसका भविष्य बन जाएगा। जिस तरह से इसने आप लोगो को स्वीकार किया है, वह इसके पहले मैंने नही देखा। आप लोग उसके मन की बनावट, रुझान को पूरी तरह समझ गए दिखाई देते है। आपके ऊपर कोई वज़न डालने का मेरा इरादा नही है। केवल आप इस शहर मे रहेगे। सवेरे-शाम जब आपको सुविधा हो वह आपके पास आ जाएगा, न भी आए तो भी उसे विश्वास तो रहेगा कि आप उससे दूर नही है। आशा तो मैंने इससे भी बहुत अधिक की की थी! अब आपसे क्या छिपाऊ मिस्टर ओझा। सोम जिस उत्साह से अपनी 'आँण्टी' की बात करता है मै गलत समझ बैठा था कि वह शायद मिसेज़ ओझा की बात कर रहा है। यहा आने पर और आपसे बात करने के बाद अब शायद याद पडता है कि आपने अपनी किसी बहन की बात कही थी। शायद ये देवी जी वही हो, पर सोम की बात से मालूम दिया था कि वे भी इसमे उतनी ही अधिक अनुरक्त दिखाई दी, जितने आप दिखाई दिए है। सोचा था कि इस एक ही शस्त्र से दोनो को यदि गिरफ्तार कर सका तो फिर कहना ही क्या है, किन्तु, जो कुछ कर सकने की अब आशा रह गई है, वह भी कम नही है।'

मै बडे ध्यान से कपूर साहब की बात सुन रहा था। आशा मेरे मन मे न हो, या अच्छे पद का लोभ न हो, सो बात नही है, हू तो मनुष्य ही। रेलवे की नौकरी की अन्य सुविधाए भी कम आकर्षण नही रखती, और जैसा किसीने कहा है कि रेलवे का नौकर, फिर और कोई दूसरा काम कर ही नही सकता, करना ही नही चाहता। लाल-हरी झडियो का आकर्षण उसके जीवन की रेल को भी गति या अवरोध देता है, यह बिल्कुल ही सच है।

किन्तु कपूर साहब को यदि केवल अपने पुत्र के लिए ही मेरा आकर्षण हो—और मेरा ही क्यो?—मेरे समान ही कमला का आकर्षण भी तो है! कमला, सोम की प्रकृत मा, और फिर नटनागर से यदि उसकी खाई किसी तरह पाटी जा सके तो यह प्रयत्न क्यो न

किया जाए ?—इन दोनो के बीच शायद सोम ही पुल हो सकता है !—एक क्षण मे मेरे मस्तिष्क मे बिजली कौंध गई। कपूर साहब मेरे उत्तर की प्रतीक्षा कर ही रहे थे।

मैंने कहा, 'आपका कहना बहुत सही है कपूर साहब ! और सामान्य अवस्थाओं मे इसे मुझे स्वीकार कर लेने से बहुत ही सुख होता। किन्तु इससे मेरी साहित्यिक गतिविधि को बडा आघात पहुचेगा। पहले ही रेलवे की नौकरी छोडने के और चाहे जितने कारण मैंने आपको गिनाए हो, मूल मे तो मेरी यही साहित्य की ओर भाग उठने की प्रेरणा थी; क्या अब आप पुन मुझे उसी जगल मे घसीट ले जाना चाहते है ? पैसे के प्रति कोई मेरी वितृष्णा नही है, इस दुनिया का सामान्य मनुष्य यह कर ही नहीं सकता, फिर भी, देखते तो है आप, मेरी आवश्यकताएं ही क्या हैं ?'

'तो फिर—'

मैंने रोककर कहा, 'नही। मै मार्ग भी सुझा रहा हू आपको।—देखता हू कि हम दो मे से किसी एक को पाने से भी आपका काम चल सकता है। यदि मेरी वे बहन सोम को उपलब्ध हो सके तो ?'

'पर वे कैसे हो सकेगी ?'

'चेष्टा मुझे करनी पडेगी। किन्तु उनके राज़ी होते ही आपको कोई कठिनाई न होगी। वे यही आपके रेलवे स्कूल मे प्रधानाध्यापिका हैं। आप उन्हे अपने वहा के स्कूल मे ट्रान्स्फर करवा दीजिएगा। बस।'

'लेकिन, यह हो जाए तो बहुत ही अच्छा हो, लेकिन वे तैयार हो जाएगी ?—ट्रान्स्फर तो उनको वैसे भी किया जा सकता है, किन्तु उनकी इच्छा के खिलाफ, और फिर वे सोम का चार्ज लेने को तत्पर हो सकेगी ?'

'वही बात उनसे करनी होगी। आशा करता हू कि वे तैयार भी हो जाएगी !—क्या आप अपने स्कूल का मुआयना करने भी गए थे !'

'नहीं—इनमे मुझे—अधिक दिलचस्पी नही है मिस्टर ओझा। हां,

आप जैसा सहायक अफसर यदि मुझे मिल जाता तो इस प्रकार की प्रवृत्तियो मे मेरी भी कुछ पहुच होती।'—और कपूर साहब उठ खड़े हुए, घडी देखकर बोले, 'साढे सात बज गए ! आपको बहु कष्ट दिया !— तो फिर आप मुझे अपनी बहन के बारे मे कब लिखेंगे ?'

'उनसे मालूम करके शीघ्र ही लिखूगा ! आप कब जा रहे हैं यहा से ?'

'आज ही रात्रि को सवा दस बजे जो गाडी जाती है न, उसीसे !'

'ओह, आज ही ?—सोम से तो बात ही न हो सकी ! अच्छा ऐसा कीजिए न ! मैं नौ बजे इसे स्टेशन छोड आऊगा, सोने के समय से पहले। खाना वह मेरे साथ ही खा लेगा।'

कपूर साहब ने सोम की ओर देखा। वे राजी हो गए।

कमला को जब सब बाते मैंने बताईं, तो उसने इतना ही कहा :

'जो कुछ तुम्हे अच्छा लगे, करो, तमाशबीन जो ठहरे तुम ! तुम्हारे लिए किसीको तमाशा तो बनना ही पडेगा, पर यह समझ लेना; असाध्य साधन मे प्रवृत्त हो रहे हो ! यदि कुछ अन्यथा हो गया, मैं जिम्मेदार न हूगी !—एक बात और, मेरे श्रीमान जी की मनोवृत्ति से तुम परिचित नही हो। लेखक हो, दोस्त भी हो—पर समझ जितनी पैनी नारी की होती है, उतनी पुरुष की नही।'

—अत· मैंने खाई के दूसरे सिरे पर भी पटाई करना आवश्यक समझकर नटनागर को पत्र लिखा। बडे साहस के साथ मैंने लिखा कि कमल के कहने से मालूम हुआ कि श्रीमती कमला नटनागर का स्वास्थ्य ठीक नही है और उन्होने मुझे बुलाया है। जाने पर मालूम हुआ कि यह बुलावा केवल नटनागर और मेरी मित्रता के कारण है। यो बीमारी विशेष कुछ नही है, किन्तु नारी की सबसे बडी बीमारी, पति का अभाव, कोई सामान्य बीमारी नही होती। श्रीमती नटनागर ने कोई इसकी शिकायत नही की, किन्तु उनका स्वास्थ्य, उनका शरीर, उनकी काति यही

तो बताते है ! फिर जिस तरह उनके प्रत्येक कार्य मे, कार्य की छोटी से छोटी दिशा मे जैसी उनकी पति-भक्ति का परिचय पाया जाता है, उसे देखते हुए उनके इस रोग के आक्रमण का कोई औचित्य ही नही देख सकता। मै नटनागर का मित्र हू, इसलिए मुझे उनको इस बारे मे दोषी ठहराने का अधिकार है, और यह भी सुझाने का अधिकार है कि वे श्रीमती नटनागर को अपने पास किस तरह बुला सकते है। कपूर साहब पर उनका प्रभाव है ही, उसका उपयोग करने से सब काम सरलता से हो जाएगा। आदि-आदि।

कमला को यह पत्र बतला दिया गया था। श्री नटनागर की रूमानी प्रवृत्ति को इससे बढावा मिलेगा, यह मैं जानता था। एक मिथ्याभिमान नटनागर मे था, उसे हटाने की ज़रूरत थी। और कमला को, मुझे प्रतीत होता है, मैं जानता हू ! मिथ्याभिमान तो नही, किन्तु मिथ्या धारणा का आवरण उसपर है, उचित अवसर और परिस्थितियो के उपस्थित होने पर वह भी नष्ट हो जाएगा, तो दोनो मे प्राकृतिक मेल असम्भव न होगा। फिर सोमदत्त दोनो के बीच की कडी बन जाए तो कमला का जीवन कैसा भरा-पूरा हो जाए। रहे कपूर साहब, सो वे भी अव्यक्त मन मे तो जानते हैं कि सोम को लेकर गर्व करने का अधिकार उनका नही है।

नटनागर का उत्तर भी आ गया। मैं डर रहा था, कि कोई कडा उत्तर आएगा। कह चुका हू कि कमल ने उनको हमारी दोनो की आबू-यात्रा सम्बन्धी घटना सूचित कर दी थी। पर नटनागर के पत्र मे उसका कोई उल्लेख न था, मानो उन्होने मेरी ही बात ध्रुव मान ली थी। यदि कमला सचमुच वहां जाना चाहती हो, तो वे कपूर साहब से कह देखेगे बल्कि मैं ही कपूर साहब से कुछ कह दू।—लेकिन, वे सोचते हैं, इससे कमला की असुविधा बढ ही जाएगी, उसको शायद पूर्ववत स्वतत्र रहने का अवसर न मिले। इससे तो अच्छा यह है कि कमला अपने को श्रीमती नटनागर न व्यक्त करके, स्वतत्र रूप मे ही वहा चली आए। तब उसे कोई बंधन

का भय न रहेगा, और श्री नटनागर भी, जो अपनी मा को बुलाने का तय कर चुके है, किसी तरह की कठिनाई से बच जाएगे।

इस पत्र को पढकर आगे क्या किया जा सकता था ?

•

किन्तु, घटनावली इतने सस्ते छोडने वाली न थी !—एक माह के बाद ही खबर आई कि मिसेज कपूर मिस्टर कपूर के समस्त प्रयत्नो को व्यर्थ करके अपनी ऐहिक लीला समाप्त कर गई। कपूर साहब का दर्द भरा पत्र आया। सोम की चिन्ताजनक स्थिति से भी उन्होने अवगत कराया। लिखा कि बच्चे के ऊपर मा की इस मृत्यु का बडा गहरा प्रभाव पडा है। भगवान ही जाने क्या होगा !—यदि मै ही चाहू, तो कुछ कर सकता हू !

किसी बहाने से पत्र मैने कमला को दिखा दिया, यह जानने के लिए कि उसपर क्या प्रतिक्रिया पडती है, किन्तु कमला ने किसी भी विशेष भाव को प्रकट नही होने दिया। हृदय की निधि को सतह फोडकर ऊपर आने के लिए अभी और शक्ति की आवश्यकता है। मेरे किए शायद अधिक कुछ न हो सकेगा।

मैं स्वयं ही एक चक्कर क्षेत्रीय कार्यालय का काट आया। कपूर साहब के अमित आग्रह के बावजूद अतिथि रहा नटनागर का। उन्होने कमला को लेकर एक तटस्थ वृत्ति बना ली थी। आए ठीक है, न आए ठीक है। बीमार है, उसे इलाज कराना चाहिए। पति का अभाव भी कोई रोग है—खाली भावुकता है, जिसे कमला जैसी पढी-लिखी लडकी न छोड सके तो वह शिक्षा ही क्या—? समझ नही पा रहा था, क्या करू ?

सोम की अवस्था बडी शोचनीय हो रही थी। मानो उसके जीवन का समस्त उल्लास कही खो गया था। स्वय स्फूर्ति उसमे कही दिखाई नही देती थी। जब उससे कहा जाए, तभी उठ जाता; जब कहा जाए तभी खा लेता। यदि कोई न कहे तो खाता ही रहता। कपूर साहब की अवस्था देखकर के रोना आता था।

आखिर उनसे यथावश्यक सब हा : मैंने कहा। कहा कि मेरी तथा-कथित बहन और कोई नही, किन्तु उनके आफिस के हेड क्लर्क श्री नटनागर की पत्नी कमला नटनागर ही है। दोनो मे बहुत समय से कुछ मतभेद है, इसलिए दोनो अलग रहते है; अलग-अलग स्थानो की नौकरी ने इस अलगाव को बढाने मे ही मदद दी है। वस्तुत श्रीमती नटनागर यहा पर इसलिए आने को राजी न हुई कि श्री नटनागर उसका गलत अर्थ लगा ले, वरना वे यहा आने के लिए तैयार हैं। हा, यदि कपूर साहब अपना व्यक्तिगत प्रभाव श्री नटनागर के ऊपर डालकर इस प्रस्ताव को ऐसा रूप दे सके कि श्री नटनागर की इच्छा से ही उनका ट्रान्सफर यहा किया जा रहा है, तो वे प्रसन्नता से यहा चली आएगी।—आवश्यकता हुई तो मैं भी वहा कुछ दिन बाद आकर रह जाऊगा, ताकि सोमदत्त अपनी नई परिस्थितियो मे सामजस्य पैदा कर सके। कपूर साहब को मैने खास तौर से कहा कि श्री नटनागर को वे इस सम्बन्ध मे सोम की भूमिका के बारे मे कुछ न कहे।

कपूर साहब ने किस तरह नटनागर को इसके लिए प्रेरित किया, यह तो मै नही जानता, किन्तु कुछ ही दिनो के बाद कमला को नटनागर का पत्र मिला, कि वे कमला को वहा बुलाना चाहते है, और डिविजनल सुपरिन्टेन्डेन्ट से आवेदन कर रहे हैं कि उनकी पत्नी को वही ट्रान्सफर कर दिया जाए, जहा वे स्वय नियुक्त है। प्रशासन का ऐसा नियम है कि जहा तक सम्भव हो पति-पत्नी एक ही स्टेशन पर रखे जाए, इसलिए यह सरलता से सम्पन्न हो सकेगा। अभी फिलहाल मा को वहा बुलाने का इरादा भी उन्होने स्थगित कर दिया है। कमला का पत्र आते ही वे अपना प्रार्थनापत्र भेज देगे।

ऊपर से दोनो मे कोई मतभेद था नही। मेरे कहने से कमला ने स्वीकारोक्ति लिख दी। दूसरे ही हफ्ते कमला के स्थानान्तर की आज्ञा प्रचारित हो गई।

शेष में मेरे लिए कहने लायक कुछ रहा दिखाई नहीं देता।

शेष जो कुछ है, उसे आप जान ही लेंगे, या अनुमान तो कर ही लेंगे। मसलन कमल के द्वारा कमला को दी गई विदाई-पार्टी, जिसमे उसके उल्लास की गहराई का भी अन्दाज़ लगाया जा सकता है। वह अनुभव करता है कि कमला अब उसकी पहुच से बाहर चली गई है, वह उससे कुछ-कुछ भय भी खाता है। इसके उपरान्त उसे क्षतिपूर्ति के तौर पर ही सही, आशानुरूप अर्थलाभ हो चुका है। उसकी बहिन का विवाह हो ही चुका है, अब वह अपने विवाह की बात भी कही चला सकता है। कमला यहा रही, तो यह सम्भव नही होगा। दूसरे मैं, जो कमला को पाकर उसके विश्वास मे अपने आपको अफलातून मान बैठा था, इस ठोकर से पुन. अपनी ठोस जमीन पर आ बैठूगा। उस अवस्था मे वह पुन मुझसे सौहार्द्र स्थापित कर लेगा। उसे लगता है, कि कपूर साहब पर मैंने कुछ जादू कर दिया है। तब वह मुझसे कहकर कपूर साहब की दृष्टि मे आ सकेगा, और पुन अपने बिगडे नौकरी के भाग्य को चमका सकेगा। कहना न होगा कि दावत मे मैं भी नियन्त्रित था। कमल के उद्देश्य मे यह बात पूरक ही थी।

पति-पत्नी के मेल की बात नई नहीं है। श्रीमान और श्रीमती नटनागरो से इतना परिचय पा चुकने पर उनके निज के या सम्मिलित व्यक्तित्व के कैसे भी जगल मे छोड दिए जाने पर आप पार पा सकते है। टूटा हुआ दिल चाहे न जुडे, किन्तु दो अलग दिल तो मिलते ही रहे है, जैसा कि हर विवाह सम्पन्न करता है। और यदि दो नये दिल किसी तरह जुड ही जाते है, तो दो टूटे हुए दिल भी उसी तरह जुड ही जाने चाहिए। इसमे नई बात और कौन-सी है? फिर बात आती है कमला की विदाई की। मै चाहता हू, इस दिशा मे मैं मौन ही रहू तो अच्छा!

मैं मानता हू कि अभी तक कहानी तो समाप्त ही नही हुई। लेकिन दाल-भात मे मूसरचन्द मै क्यो अपनी टाग अडाए बैठा रहू? आपका ध्यान बटाने की मेरी तनिक भी इच्छा नही थी, किन्तु जब कमला ने मुझे बीच ही मे घसीट लिया तो निरुपाय मैं करता ही क्या? खैर, अब

जब कि कमला को पुन: नटनागर से मै मेल करवा सका हू, तो मुझपर ऋण रह ही क्या जाता है ? ऋण किसीका मैं अस्वीकार नही करता, ब्याज सहित, बल्कि चढी दर के ब्याज सहित चुकाने की इच्छा रहती है, इसीलिए कमला और नटनागर के पार्थक्य का कारण न होने पर भी उनका मेल कराने की उत्कट इच्छा मैने अपने मे पाई थी। किंतु अपने बारे मे बस इतना ही।

जीवन की लम्बी-चौडी व्याप्ति मे आपने श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर तथा श्रीमती कमला नटनागर को देखा है। निम्न मध्य वर्ग के दो सामान्य प्राणी !—फिर आधुनिक शिक्षा के द्वारा अपने जीवन के अभावो से ही खेलने वाले, उस कुत्ते की तरह जो अपने मुह के घाव को ही रक्त के लोभ मे बडे चाव से चाटता रहता है, एक क्लर्क के जीवन की व्याप्ति ही क्या है ? कीचड मे फसा हुआ वह आकाश के चाद को छूना चाहता है, उसके प्रयत्न उसे और गहरे उतारते जाते हैं। मत्स्य-न्याय का यह उदाहरण जिसके श्री नटनागर केवल एक कडी भर है, सारे समाज मे ही मे तो छाया हुआ है, जिसमें शोषक-शोषित, मालिक-नौकर, अधिकारी-कर्मचारी आकाश-पाताल की भूमिका निर्वाहित कर रहे है।

नटनागर और कमला को पुनः मिलाकर यह सोचना, कि समाज का कर्तव्य शेष हो गया है, कितनी बडी भ्रांति है यह देखना मुझे शेष है। दो टूटे हुए दिलो को मिलाने की बात मैंने कही है !—दो टूटे हुए दिल मिलकर भी एक निर्दोष दिल नहीं बन सकते। फिर उनके टुकडे कही ऐसे स्थानो पर से हुए हो सकते हैं कि मिलकर एक दूसरे मे अटकने की अपेक्षा, उनकी गांस ही एक दूसरे के व्यक्तित्व को और अधिक विक्षत कर दे सकती है। यदि सहने ही के लिए मनुष्य बना हो, तो क्या आप और हम दर्शक नही बने रह सकते ?

२२

मुझसे विदा लेकर कमला जब अपनी नई कर्म भूमि मे पहुची तो उसके मन मे केवल दो बाते गूज रही थी : एक तो जो अग्नि उसके अन्तर मे प्रज्वलित है, वह समस्त आवर्जना को नष्ट-भ्रष्ट करके उसके भीतर के शुद्ध स्वर्ण को निखार कर चमका दे, और दूसरे अपने जीवन की पूर्णता को प्राप्त करने के लिए किसी भी व्याज से वह अपने पति और पुत्र को पुन प्राप्त करे। मेरे आदेश को इस प्रकार बिना ननु-नच किए वह क्यो माने ले रही है, यह मेरे अन्तर के देवता शायद जानते हों, किन्तु सचमुच मै नही जानता। कितनी बडी बात है यह मैं समझता हू, कमला को अपना समस्त अतीत ही एक तरह से धो-पोंछ डालना होगा, उसे एक नई स्लेट से ही आरम्भ करना होगा।

यह स्कूल पहले से बिल्कुल जुदा है। नई शिक्षा की मान्यताओ के अनुसार रेलवे विभाग ने जो दो-एक महत्वपूर्ण, प्रयोगात्मक स्कूल छोटे बच्चो के लिए खोले है, उनमे से ही एक यह है। खुले हुए अभी एक वर्ष भी नही हुआ। बस्ती से दूर, किन्तु रेलवे कॉलोनी मे ही एक ओर काफी लम्बे-चौडे बिस्तार मे बसा हुआ है। प्रयोगात्मक है इसलिए अभी इस स्कूल मे केवल ५० छात्रो की व्यवस्था है, है केवल तीस छात्र ही इस समय—किन्तु भविष्य मे विस्तार के लिए इसकी योजना मे गुंजायश रखी गई है। यद्यपि स्कूल से सम्बन्धित समस्त इमारते सुन्दर उद्यानों और लताकुंजो से घिरी हुई है, किन्तु फिर भी मध्य मे बच्चो के लिए एक विशेष पार्क है, जहा बच्चो के लिए झूले, फिसलपट्टी, मेरी-गो-राउण्ड आदि खेलो की व्यवस्था है। बीच मे एक फव्वारा, जिसके चारों ओर एक छोटा-सा तालाब, उसमे रग-बिरगी मछलिया! एक ओर एक छोटा-सा अस्पताल। एक डाक्टर तथा एक नर्स की व्यवस्था है। पूर्व की ओर पाठागार, जिसमे एक बडा हॉल, एक पुस्तकालय, एक नर्सरी-भवन,

एक चित्रशाला तथा तीन-चार कक्षाओ की व्यवस्था है। दक्षिण की ओर हटकर पश्चिम मे एक ओर है छात्रावास, उसीसे लगा हुआ है वार्डन का बगला। श्रीमती कमला नटनागर स्कूल की सुपरिन्टेन्डेन्ट, प्रधान, तथा वार्डन भी हैं, इसलिए इसी बगले मे वे रहती हैं। कमला के कारण श्री नरवरोत्तम नारायण नटनागर भी यही रहते है। स्कूल की व्यवस्था मे चाहे उनका कोई हाथ न हो, किन्तु बगले के भीतर वे श्रीमती कमला के स्वामी हैं। घर की व्यवस्था मे उनका पूरा अधिकार है, कमला ने उस अधिकार को अनायास ही नटनागर के हाथ मे स्वेच्छा से छोड दिया है।

सामने की पक्ति मे काफी मैदान छोड़कर कुछ और क्वाटर्स बने हुए हैं। एक ओर एक छोटे-से बगले मे डॉक्टर रहता है, अन्य क्वार्टरो मे अन्य कर्मचारी। कमला के बगले के कुछ ही दूर एक छोटा-सा आउट हाउस या नौकरो का घर है, जिसमे दादू ने अपना डेरा डाल रखा है। कमला उसे अपने साथ ही लेती आई है। नटनागर को यद्यपि दादू से चिढ हो गई है, किन्तु इतनी रुचि कमला की उन्होने स्वीकार कर ली है। घर के काम मे उसका विशेष दखल है भी नही। वह स्कूल का दरबान है, और सुपरिन्टेन्डेन्ट का चपरासी। नटनागर को इसमे क्या आपत्ति हो सकती थी ?

कमला के आने के पूर्व ही कपूर साहब ने सोमदत्त को मिशन स्कूल से हटाकर इस स्कूल मे प्रवेश दिलवा दिया था, ताकि नटनागर को कोई बात अस्वाभाविक न लगे। सोम के इस स्कूल मे प्रवेश के बाद जब कमला के स्थानान्तर का यहा प्रस्ताव हुआ तो कपूर साहब ने कहा था कि इस तरह नटनागर स्कूल की सीमा मे ही रहेगे, तथा आवश्यकता-नुसार सोम के ऊपर देख-रेख रख सकेंगे। नटनागर ने भी इसे एक अच्छा सयोग ही समझा था। यदि कमला इस लड़के पर कुछ अधिक ध्यान दे सके, तो वे अनायास ही कपूर साहब के और अधिक कृपा-पात्र हो सकेंगे। आफिस-सुपरवायजर अवकाश-प्राप्ति की सीमा पर आ लगा

है। नटनागर इतने सीनियर नही है, किन्तु यदि कमला और कपूर साहब सहायता करे तो क्या नही हो सकता है।

कमला सर्वान्त करण से नटनागर की अनुगामिनी बनने का प्रयत्न करने लगी। उसकी इच्छा थी कि वह सोमदत्त का अतिरिक्त ध्यान रखे। कमला के मन मे क्या आशा थी, यह तो कौन कह सकता है, किन्तु सोम के प्रति पुत्र की न हो, तो भी एक लोभनीय शिशु की आसक्ति तो जग ही चुकी थी। उसने नटनागर का यह आदेश अपने मन के अनुकूल ही पाया!

श्री कपूर साहब और कमला के साक्षात्कार का प्रश्न ही नही उठा। नटनागर को वे यह दर्शाना चाहते थे कि जहा तक उनकी पत्नी का प्रश्न है, कपूर साहब को कोई दिलचस्पी नही है। नटनागर की वजह से ही उन्होने मिसेज़ नटनागर का ट्रान्सफर यहा किया है। इसलिए वे कमला से बचना ही चाहते थे, इधर कमला स्वय उनसे बचने का प्रयत्न करती थी। यद्यपि उस भेट को सात-आठ वर्ष बीत चुके है, कमला मे भी बहुत कुछ शारीरिक परिवर्तन हो चुका है, कपूर साहब मे भी। एकाएक पहचानने की सम्भावना न होगी, किन्तु फिर भी सावधानी दोनो ही पक्षो से हो रही है। कपूर साहब पहले से अवश्य कुछ अधिक निश्चिन्त है। सोम अपनी माता के अभाव को भूला तो नही दीखता, पर वह अपने आप को सयत करता जा रहा है। इसी तरह दिन बीत रहे है।

•

उस दिन रात को कमला लगभग साढे ग्यारह बजे अपने राउण्ड से जब कमरे मे लौटी तो नटनागर एक किताब पढ रहे थे। उन्होने पूछा :

'बहुत देर लगा दी ?'

'बहुत देर हो गई ? ध्यान ही नही रहा। सोए नही अभी तक तुम ?'

'नीद ही नही आ रही है। दो डोज़ ले चुका हू। सर भी दर्द कर रहा है।'

'तो किताब छोडकर लेट जाओ! सर दबा दू?

'नही-नही, रहने दो! तुम भी तो थक गई दिखाई देती हो! इतनी देर क्यो हो गई?'

'वही तुम्हारे साहब का लडका पेट की शिकायत कर रहा था। उनसे कहकर जरा एक्जामिन करवा लो न। कही लीवर तो नही बढ गया है।'

'तुम्हारा डॉक्टर क्या कहता है?'

'बडे आदमी का लडका ठहरा! कल से कुछ कम-अधिक हो गया तो उसकी भी मुश्किल है। कहता है, डर तो कुछ नही, पर दिखा लेने मे क्या हर्ज है।'

'हर्ज तो कुछ नही। पर अभी तो दौरे पर गए हुए है। शायद परसो तक लौटे। क्या कल ही दिखाना जरूरी है?'

'नही, वैसे कोई बात नही है। कहा न, बडे आदमी का, और फिर अफसर का लडका ठहरा। उसका ही सवाल नही, खुद की रोजी-रोटी का भी तो सवाल है।'

नटनागर को सीधा व्यग्य नागवार लगा। 'नौकरी करते है, गुलामी तो नही! तनख्वाह लेते है, तो काम भी तो करते है। इतना दर्द-सर किसलिए? कौन-से सोने के कडे पहना देगे!'

कमला ने कहा, 'सोने के कडे तो नही, पर लोहे के कडे तो जरूर पहना सकते है। और हमारा तो सारा कुनवा ही उनका नौकर ठहरा। यहा बुलाकर जब तनख्वा बढा दी है, तो कसकर काम लेगे ही। इतना बढ़िया घर, ये नौकर-चाकर, ये सुविधाए आखिर उसी लडके के लिए तो हैं।'

यह तो नटनागर ने सोचा ही नही था! कपूर साहब ने कहा था निहायत हमदर्दी के साथ कि 'भई नटनागर, अपनी फॉमिली क्यो नहीं साथ रखते?—खासकर तुम्हारे इस स्वास्थ्य की अवस्था मे तुम्हारी देख-रेख के लिए किसीका होना बडा जरूरी है।' नटनागर ने बात टालने

के लिए कह दिया था कि मिसेज़ नटनागर सर्विस कर रही है, इसलिए दोनो का साथ रहना कठिन है ! 'सर्विस ?—कहा ?' निश्चय ही कपूर साहब मिसेज नटनागर के बारे मे कुछ नही जानते थे ! नटनागर ने जब कहा कि वे रेलवे स्कूल की प्रधानाध्यापिका है, तो कपूर साहब ने आश्चर्य ही व्यक्त किया था, और फिर सरलता से उनके यहा स्थानान्तर की सम्भावना पर बातचीत की थी। इसके उपरान्त भी नटनागर ने अपनी इच्छा को कमला के ऊपर थोपने के किसी इरादे को प्रश्रय न देने की बात कही, तो कपूर साहब को उन दोनो के बीच किसी मनोमालिन्य की कल्पना करना स्वाभाविक था। और फिर जिस तरह कपूर साहब ने नटनागर को उपदेश दिया कि गृहस्थी की गाडी के दोनो चक्कों को मिलकर एक गति से समान भूमि बनाकर चलना चाहिए, ताकि जीवन अपनी मज़िल पर सरलता तथा सुख से पहुच जाए, तो उनकी पितृ-तुल्य हितैषणा ने नटनागर को कायल कर दिया था। तब पता न था कि कपूर साहब का उद्देश्य अपने सतान की बेगार बुलवाने से है।

यह ठीक है कि नटनागर स्वय उस लडके को चाहते है, यह भी ठीक है कि स्वयं नटनागर ने कमला को उत्साहित करके इस लडके पर जरा अतिरिक्त ध्यान देकर अपनी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने का सुझाव दिया था। किन्तु यदि इस प्रयत्न की प्रेरणा इन्हीकी ओर से होती तो आपत्ति जैसी इसमे कोई बात न थी। यह जो एक दुरभि सन्धि-सी कपूर साहब ने उपस्थित कर दी है, इसे कौन सहन करेगा ?

नटनागर ने कहा, 'सवाल है अपनी आत्मा के मानने का। जरा उस लडके की ओर ध्यान देने के लिए मैंने कहा जरूर था, लडका वैसे सुशील भी है, मुझे भाता भी है। पर हमने अपने आपको बेच नही दिया है !'

माथे पर हाथ फेरते हुए कमला ने कहा—'अपने को नही, किन्तु अपनी सामर्थ्य को तो बेचा ही है, इससे कैसे इनकार किया जा सकता है ?—ख़ैर, इन विचारो को गोली मारो—यदि दिमाग से कुछ न सोचोगे,

तो दो मिनट मे नीद आ जाएगी ।'

'अगर तुम अपनी सामर्थ्य को बिकी महसूस करती हो, तो मैं राय दूगा कि तुम त्यागपत्र दे दो ।'

'फिर खाएगे क्या ?'

'क्यो ?—अब तो मै स्वस्थ हू ही ! कई सालों से छुट्टी तक नही ली । चार माह का तो अवकाश भी पडा हुआ है ।'

'सो तो ठीक है, किन्तु अफसर की दृष्टि और हाथ बहुत लम्बे होते हैं, यह नही सुना ? खाली काम को ही कौन पूछता है इस जमाने मे ? अफसर चाहे जिस कारण से नाराज हो, दण्ड कर्मचारी ही को भुगतना पडता है !'

'समझा नही तुम्हारी बात !'

'समझना चाहा नही न तुमने !—मैं त्यागपत्र दे दूगी, तो क्या उसमे वे तुम्हारा हाथ न समझेंगे ?—फिर तुम्हारा भविष्य ही नही वर्तमान भी तो उन्हीके हाथ मे है !'

'कैसे ?—यदि मेरा काम ठीक हुआ, तो मुझे किसीसे डरने की जरूरत क्या है ।'

'यदि यही बात होती, तो डरने की जरूरत मुझे ही क्यो होती ?'

नटनागर ने कहा, 'तुम्हारे बारे मे मैं नही कह सकता, किन्तु हम लोगो को इस स्वतन्त्र भारत मे निकाल देना अब कोई हसी-खेल नही है । हमारी यूनियन, हमारा सगठन बडा जोरदार है । लेकिन, एक बात वे जरूर कर सकते है । उन्नति का अवसर अवश्य उनके हाथ मे रहता है ! वह उनके प्रियपात्र ही को मिलता है ।'

कमला ने उत्तर नही दिया, वह उसी तरह नटनागर का मस्तक सहलाती रही ।

नटनागर ने कहा, 'क्या सोच रही हो ?'

'कुछ तो नही ।'

'फिर बोलती क्यों नही ?'

'बोलू क्या ?—और फिर तुम्हे सोना भी तो है ! बोलूगी तो तुम्हे नीद कैसे आएगी ?'

'नीद जब नही ही आ रही है, तो क्यो न हम बाते ही करे !—फिर यह तो स्वाभिमान का प्रश्न है नीद से अधिक महत्वपूर्ण ।'

कमला तब भी न बोली। नटनागर को नीद न आए, वे अनिद्रा के रोगी है, पर कमला को भी तो नीद आ सकती है। उन्हे यह नही सूझ सकता। नटनागर कमला के प्रति केवल अपना औपचारिक कर्तव्य पालन कर रहे है। मन की गूढ विवृत्ति को समझ सकने की प्रेमी की वेदनामयी गम्भीर पैनी दृष्टि अब उनमे नही रही। ठीक ही तो है, कमला को भी अपने कठोर कर्तव्य-मात्र ही का पालन करना है, इसमे वह भावना को अन्तराल पैदा नही करने देगी।

कमला ने कहा, 'पर इसका एक और भी तो पहलू है।'

'क्या ?'

'सोमदत्त का।—उस बेचारे का क्या कसूर है ! वह मातृहीन लडका—क्या उसपर दया नही आती ?'

'आती है। बहुत आती है, पर इतना मोह किसलिए ?—हम उसे अपनी सतान के समान भी प्यार करे तो भी कपूर साहब का समाज क्या समझेगा, कभी सोच देखा है ?'

'नही तो।'

'वह समझेगा कि हम कपूर साहब ही के नौकर नही, उनके लडके के भी, बल्कि उनके पालतू कुत्ते के भी नौकर हैं, और इनकी भक्ति करना ही हमारा एकमात्र कर्तव्य है।'

'ऐसा हो तो भी उस लडके का क्या कसूर है ? मजूर तुम भी कर चुके हो कि लड़का बडा सुहावना है।'

विशिष्ट नारी और नर की चाहना के अभिसम्पात का एक ही बिन्दु है, कि वे एक दूसरे ही को चाहे, उन्हीकी प्रशसा करें, उसीसे आकर्षित हो; जहा दूसरे बिन्दु से स्पर्श हुआ कि वह रेखा फिर उनके व्यक्तित्व की

परिधि को काटने वाली ही होगी। नटनागर स्वय सोम के प्रशसक थे, किन्तु जब कमला ने भी उसकी प्रशसा की, तो नटनागर को सहन नही हो सका। उनके आहत पौरुष को आघात-सा लगा। बोले·

'उसका दोष है उस पिता की सन्तान होना।—हमारी परिचर्या को वे अपने अधिकार मानते है। नही कमला। ऐसा नही होगा। कल से उस लडके के लिए खटने की जरूरत नही है।'

'किन्तु, इस समय तो वह तन और मन दोनो ही से अस्वस्थ है।'

'हुआ करे। मै भी तो वैसा अस्वस्थ हू। मुझे भी पत्नी की वैसी ही अनवरत परिचर्या की आवश्यकता है।' और नटनागर ने अपने मस्तक पर फिरते हुए कमला के हाथ को अपने हाथ मे ले लिया।

कमला के अधरों पर अव्यक्त ही मे एक हसी फूट पडी, पर उसने उसे दबा लिया। इस अवस्था मे भी ईर्ष्या ?

कुछ देर के बाद नटनागर ने पुन· पूछा, 'क्या कहती हो, बोलती क्यो नही ?'

'क्या कहू ?—फिर भी सोचती हू, जो दायित्व अपने ऊपर लिया है, उसे केवल कुछ क्षणो की भावुकता, या कुछ घण्टो के सामान्य परिश्रम के कारण ही कैसे फेक दू ?— इतनी बडी नौकरी का प्रश्न न हो, तब भी प्रतिष्ठा का प्रश्न तो है।'

'प्रतिष्ठा का प्रश्न ही तो। लोग यही तो कहेगे कि नटनागर की पत्नी कपूर साहब के लडके की दाईगीरी करती है।'

'अध्यापिका और नर्स का तो काम ही यही है।'

'तुमसे बेकार बहस कौन करे !—मैने अपने मन की बात कह दी। अब तुम जानो तुम्हारा काम जाने। यह तो मै बहुत पहले से जानता हू कि तुम अपनी मरजी से काम करने वाली स्त्री हो। केवल नेवर डालने से ही पक्षी को उडने से रोका तो नही जा सकता।—अच्छा, अब, जरा सोने दो ! काफी रात बीत गई है।'

नितान्त औदासीन्य मे उठकर कमला अपने कपडे बदलने दूसरे कमरे मे चल दी ।

कमला को रात्रि को घर लौटने मे प्राय ही विलम्ब होने लग गया। नौ बजे तक सभी छात्रो के सोने का विधान था । जूनियर सिस्टर रोज़ यह कार्य समाप्त करके अपने कमरे मे चली जाती। एक परिचारिका कमरो के बाहर सहन मे सोती, जो समय पडने पर बच्चो की आवश्यकताओ को जुटाती। नौ और साढे नौ के बीच कमला का राउण्ड प्रारम्भ होता, यह देखने के लिए कि सब छात्र सो गए है, और सब कुछ यथावत है। छात्रो की अवस्था अभी ऐसी नही कि उन्हे स्वय उनके ऊपर छोडा जा सके। कार्य बडे दायित्व का था; और दायित्व के क्षेत्र मे कमला की सजगता चौगुनी हो उठती थी।

अपने इसी शेष परिक्रमण मे उसे विलम्ब हो जाता। प्रत्येक कमरे मे वह प्रवेश करती, बुलाकर या हाथ लगाकर या कुछ देर खडी रहकर वह सतुष्ट होती कि बालक सो गया है, फिर देखती कि ठीक तरह बिस्तरा हुआ है या नही, चादर ठीक है, पानी ठीक स्थान पर रखा हुआ है, खिडकी खुली हुई है—आदि सभी व्यवस्था स्वय देखकर ही अपने घर लौटती थी। और सब छात्र उसे ठीक प्रकार से सोए हुए मिलते, किन्तु सोम के कमरे मे उसे रुक ही जाना पडता।

कमला को मालूम हो गया था कि मिस रोज़ सोम के चकमे मे आ जाती थी। आखे बन्द करके सोम पड़ा रहता था और उसे सोया समझकर रोज चल देती थी। उसके पीठ फेरते ही, पहले ठीक नौ बजे सो जाने वाला सोम अपने पलग पर उठ बैठता, और अधेरे कमरे की शून्य छत मे अपनी बद आखो को गडाकर नीरव कठ से अपनी मा की स्मृति को रोया करता, कभी-कभी एकाध आसू पलको से टकराकर गालो पर सूख जाते। यदि कभी नीद आ जाती, तो स्वप्नो मे वह उसी चित्र को देखकर पुन आखे मसलता हुआ जाग उठता। वही निद्राहीन रात्रि का नीरव व्यापार

तिल-तिल करके उसकी शिशु-छाती पर जमा होता रहता, किन्तु वह इतना अधिक भावुक और आत्मस्थ हो चुका था कि कभी उसने रोज़, कमला या परिचारिका को अपनी चोरी न पकडने दी। यदि कभी बैठा हुआ दिखाई दे गया, तो कह देता 'प्रेयर (प्रार्थना) कर रहा हू।' और फिर नितात नीरव भाव से लेट जाता, मानो गहरी नीद मे खो गया हो। जब तक पहरेदारी करने वाली दो आंखो की सजग दृष्टि वहा से हट न जाती, वह उसी तरह सास रोके पडा रहता।

उस दिन कमला को किसी अन्य छात्र की उचित व्यवस्था करने मे कुछ देर हो गई। सोम समझा शायद 'ऑण्टी' आज न आ सकेगी। आज वह विशेष रूप से बोझिल अनुभव कर रहा था। दिन को कपूर साहब ने उसके शरीर की समस्त स्वास्थ्य-परीक्षाओ की व्यवस्था की थी। किसी विशेष शारीरिक रोग के चिह्न न थे। मानसिक आघात ही उसके अस्वास्थ्य का कारण बतलाया गया था। कपूर साहब इतने घबरा गए थे कि सोम स्वय डर गया था। फिर इन परीक्षाओ के विचित्र तरीको से वह और भी ऊब गया था, आखिर बच्चा ही तो था। अपने आपको अकेला पाते ही उसका मा का अभाव उसके भविष्य और वर्तमान मे फैले हुए चारो ओर के अन्धकार को उसकी आखो मे और भी कदाकार करने लगा। उसकी शिशु-आत्मा रो उठी।

बैठे-बैठे थककर वह लेटा ही था, कि दरवाजा खुला और अर्द्ध-निमीलित आखो से उसने देखा कि दबे पाव कमला ने भीतर प्रवेश किया है। उसने अपनी आखे बन्द कर ली, चादर भी वह अपने बदन पर नही डाल सका।

एक क्षरण तक कमला नीरव खडी टोह लेती रही। नीरव अन्धकारमय प्रकोष्ठ मे कही कुछ सुनाई नही देता था। यदि सुनने का प्रयत्न करती तो स्वय कमला को अपनी सास की क्षीरण ध्वनि सुनाई दे जाती।

कमला ने देखा कि लडका सो गया है, उसने आहिस्ता से पैताने पडी

हुई चादर को उठाकर गले तक सोम को ओढा दिया। फिर सहज ही उसके मुह की ओर देखने की चेष्टा मे कमला ने पाया कि बालों की लट उसकी आखो पर फैल गई है। सहज ही उस लट को हटाने के लिए उसने सोम के चेहरे पर हाथ रखा—यह गीला-गीला—गाल पर क्या है ? पानी ?

कमला ने आहिस्ता से पुकारा, 'सोम !'

जवाब नदारद।

कमला ने परिचारिका को आदेश दिया, उसने दरवाजे के पास जाकर स्विच दबा दिया। कमरे मे उजाला फैल गया। कमला ने देखा कि सोम के गालो पर आसू की धाराए सूख रही हैं, उनमे उलझे हुए आसू बता रहे हैं कि अभी कुछ देर पूर्व तक वह इन मोतियो को बराबर बिखेरता रहा है। कमला का हृदय अचानक ही धडक उठा।

उसने नौकरानी से पूछा, 'कुछ हुआ था ?'

'कुछ नही बहन जी !·· सिस्टर रोज सभी को ठीक तरह सुलाकर गई हैं। उन्हीसे पूछ लीजिएगा।'

'अच्छा ! तुम बाहर जाओ।'··· नौकरानी बाहर चली गई।

कमला ने भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया और सोम के पलग के पास आकर बैठ गई और पुन बडे प्रेम से बोली, 'सोम !'

सोम फिर भी कुछ न बोला।

उसके सिर पर हाथ फिराते हुए प्राय· उसके ऊपर झुककर मुह के पास मुह लाकर कमला ने कहा, 'आॅण्टी से नही छिपाते सोम ! मैं जानती हू, तुम जाग रहे हो, और यह रो क्यो रहे हो ? अरे '

—क्योकि सात्वना का स्वर पाकर उसका अवरुद्ध शोक एकाएक ही फूट पडा, और मिली हुई पलको को फोडकर वन्य प्रपात की तरह आसुओ मे गालो पर लुढकने लग गया था।

कमला ने कुछ और आगे सरककर उसके सिर को अपनी गोदी मे ले लिया। विद्युत के प्रकाश मे उद्भासित अश्रु की धाराओं मे स्फीत उसके

उसने कमला की ओर मुह फिराया, देखा कि रुका हुआ प्रवाह फिर मुक्त होना चाहता है।

'रुलाई आ जाती है।... क्या ...'

लडका समझ गया, बोला, 'अक्सर आ जाती है ऑण्टी, जब से ममी मर गई, तभी से।'

'क्या इसीलिए नीद भी नही आती ?'

'नही। ' और मानो कमला की इस बात से आश्वस्त होकर वह उठकर कमला के पास ही बैठ लिया।

'ममी तुम्हे बहुत प्यार करती थी सोम ?'

'ममी तो अक्सर बीमार ही रहती थी ऑण्टी ! उनके पास मुझे अधिक रहने ही कहा दिया जाता था ?' फिर उसने मानो शून्य दीवार मे से खोज लाकर अपनी बात रखी, 'मुझे उनकी बहुत याद आती है। ऐसा मालूम पडता है मानो पास के कमरे मे बीमार पड़ी वे मुझे पुकार रही है।'

'सोम !'

'सचमुच ऑण्टी !—अच्छा बताओ, क्या मरा हुआ आदमी वापस कभी नही आता ?'

कमला ने भी उत्तर खोज लाने के लिए उसी शून्य दीवार का सहारा लिया, पर उत्तर कहा था वहा ?

उसे निरुत्तर देख सोम ने पुनः पूछा, 'अच्छा, मरकर आदमी कहा चला जाता है, यह तो बता सकोगी ?'

कमला ने निरतिशय शून्य आखो से सोम की ओर देखा, उसकी तरल आखे उसीकी ओर देख रही थी। वे ही आखे, जिन्हे वह नित्य ही काच मे देखा करती है, काच से बाहर देखने वालो को क्या उनमे भी इसी तरह भावना का समुद्र छलछलाता दिखाई देता है ?

लडके ने आखे नीची कर ली, और धीरे-धीरे बोलने लगा, 'यदि वहा तक जाने का कोई रास्ता बता दे, तरकीब बता दे !'

कापकर कमला ने पूछा, 'तो क्या करोगे ?'

'मैं जाऊगा आँण्टी, मैं सिर के बल भागा जाऊगा ! तुम जानती हो वह रास्ता ?'

'नही सोम ! मै ही क्या, कोई नही जानता !—किन्तु, क्या ममी के सिवा तुम्हे और किसीकी याद नही आती ?'

'जो अपने पास हैं, उनकी कही याद आती है क्या ?'—सचमुच जो प्राप्य है, उन्हे पाना ही क्या !

'पर तुम तो कहते हो सोम, ममी के पास तो तुम्हे अधिक जाने ही नही दिया जाता था !'

'तो क्या हुआ ?—वे बीमार जो थी। पर मुझसे छिपा थोडे है आँण्टी !—मुझे सदैव अपने पास देखने के लिए वे कितनी बेचैन रहती थी। और जब कभी मैं उनके पास होता, उनकी आधी बीमारी भाग गई होती ! मुझे इस तरह से अपने से चिपटाकर सो जाती मानो कोई मुझे उनसे छीन लेगा !'—और सोम ने इस तरह कमला को देखा, मानो मा की छाती पर सिर रखकर सो जाने की उसकी भूख एकाएक ही जाग उठी हो !

'फिर ?'

'उस तरह चिपटकर सोना इतना अच्छा लगता आँण्टी, कि मुझे नीद आ जाती। बाद मे पापा या डॉक्टर आकर देखते तो बडे नाराज होते ममी पर—किन्तु ममी को यह बडा अच्छा लगता और मुझे भी।'

'पर जब ममी बीमार थी तो हमेशा तो तुम उनके पास रह नही सके थे !'

'हमेशा कहा ?—उसके बाद ही तो मुझे मिशन स्कूल मे भेज दिया गया था। जब कभी ममी से मिलता, तो वे बहुत रोती थी। लेकिन इसके पहले तो कभी उनकी गोद से उतरा ही न था।'

'तुम उनके बहुत दुलार के लडके थे सोम !'

सोम ने कमला के हाथ की अगुलियो से मानो खेलते हुए कहा, 'मा

के लिए कोई बिना दुलार का लडका भी होता है क्या आँण्टी ?'

भावपूर्ण दृष्टि से सोम की ओर देखकर कमला ने कहा, 'क्यो नही सोम ! बहुतेरी माताए अपने बच्चो को बिल्कुल प्यार नही करती, ऐसी ही माताओ को सौतेली माता—स्टेप मदर—कहते है !'

'स्टेप मदर ऐसी माता को कहते हैं आँण्टी ? '

'हा .'

'मेरा तो ख्याल कुछ दूसरा ही था ! . '

कमला ने अपने पूर्व कथन का सूत्र ही जारी रखते हुए कहा, 'और बहुतेरी नारिया, मा न होकर भी बच्चो को इससे अधिक प्यार करती है !'

'उसको कौन-सी 'मदर' कहते है आँण्टी ?'—सोम ने सहज भाव से पूछा ।

कमला के मन मे आया, कह दे उसे 'पत्नी' कहते है—पर प्रबोध-शून्य बालक यह उसे क्या समझेगा ! तो उसने कहा :

'उसे 'मदर' ही कहना पडता है । और तो कोई शब्द बनाया नही गया उसके लिए !'

सोम ने पूछा, 'अच्छा, क्या 'पापा' मे भी ऐसे भेद होते हैं ?'

कमला ने कहा, 'पहले यह बताओ, तुम्हे तुम्हारे पापा कैसे लगते है ?'

'बहुत अच्छे !'

'ममी जैसे ?—या उससे भी अच्छे ?'

सोम ने कुछ इतस्तत· करके कहा, 'ममी तो सदैव बीमार ही रहा करती थी । मुझे अधिक उनके पास रहने नही दिया जाता था । शायद इसलिए कि उनको भी 'स्ट्रेन' (जोर) हो, और मै हमेशा उन्हीकी न सोचू ! इसलिए रहना मुझे पापा के पास ही पडता था, लेकिन पापा के पास मैं सदैव ही ममी के पास जाने के लिए जिद किया करता था, वैसे उन्हे भी 'ड्यूटी' पर अक्सर बाहर जाना पड़ता, इसलिए मुझे मिशन मे

भरती करवा दिया गया। ममी के बाद तो पापा ही मेरे सब कुछ है न ऑण्टी ?'

'है तो, पर यह तो तुम उन्हे वैसा मानो तब है!'

'मानूगा क्यो नही ?—तुम कहती हो कि ममी को पाने का अब कोई उपाय ही नही है तब उनके सिवा और किसे मानू ?'

'पर क्या तुम्हारा मन भी उन्हे वैमा ही मानता है ?'

'मानता है ऑण्टी! पापा नही होते, तब भी मन वैसे ही खोया-खोया-सा रहता है। स्कूल जाने से पहले जब ममी के पास मैं नही सो पाता था, और जब मैं उनके पास जाने के लिए मचलकर रो उठता था, तो पापा भी मुझे छाती से लगाकर रोने लग जाते थे। उन्हे मेरी वजह से बडा दु ख होता था ऑण्टी!—तब सहमकर मैं चुप हो जाता, और उनकी छाती पर सिर रखे ही मुझे नीद आ जाती थी। लेकिन अब तो बडा हो गया हू, अब वैसे सोना क्या अच्छा लगता है ?'

'अब भी, अगर पापा तुम्हे अपने पास लेकर सोए, तो क्या तुम्हे नीद आ जाएगी ?'

सोम कुछ फीके भाव से मुस्कराकर बोला, 'नीद तो पापा के बिना भी आ ही जाती थी। स्कूल मे यही तो सीखा था। पर आजकल रात को बिस्तर पर पडता हू तो ऐसा मालूम पडता है कि यह बिस्तर ही कही न काट खाए। बडा डर लगता है ऑण्टी!'

'डर किसका लगता है ?'

'यो तो किसीका नही! पर फिर भी दिल धड़कता है!'

कमला ने मानो समस्त साहस सचित कर इस तरह कहा कि वह स्वय कही उसकी बात न सुन ले, 'अच्छा सोम, अगर कोई तुम्हे कहे कि जो मर गई वह तुम्हारी ममी न थी तो ?'

सोम ने कहा, 'वह यह भी तो कहेगा कि तब मेरी ममी कौन है ?'

'अच्छा, मान लो, वह कहे कि तुम्हारी ममी मैं हू।'

सोम ने ललचाई आखो से कमला की ओर देखा, वही फीकी हसी

फिर उसके अधरो पर फैल गई, बोला, 'सो कैसे हो सकता है ऑण्टी ?'

'क्यो, कैसे नही हो सकता ?'

'तुम अपनी ही सन्तान की तो 'ममी' हो सकती हो ! चाहे जिसकी कैसे हो सकती हो ?'

'चाहे जिसकी क्यो ?—तुम क्या कोई गैर हो ?'

'गैर तो नही—पर तुम्हारी सन्तान कहा हू ऑण्टी ? तुम्हारे दिल मे मेरे लिए वैसी बेचनी कहा होती है ?—ममी तो ममी, मेरे पापा तक मेरी आखो मे आसू नही देख सकते !'—और फिर उस बच्चे की आखे जब छलछला उठी तो उसने लजाकर तकिए मे ही मुह छिपा लिया।

कमला ने बलपूर्वक अपनी आखो के विद्रोह को दबा लिया। तकिए पर औधे पडे हुए उसने सोम को देखा—वह जानती है कि भोले बच्चे का आसुओ पर अधिकार नही रह गया। वह कैसी मा है कि उसको बाहुओ मे भरकर छाती से नही लगा लेती ?—क्यो नही स्पष्ट रूप से कहकर विश्वास दिला देती कि वही उसकी मा है, यदि वह अर्द्ध पागल जन्मरोगिणी औरत मर गई, तो उससे सोम का क्या आता-जाता है, जब तक कमला जीवित है, तब तक उसे क्या डर है ?—किन्तु क्या सचमुच उसे डर नही है ?—सोम भी समझता है कि कमला उसकी ममी नही हो सकती। कैसे हो सकती है वह ?—उसको कपूर साहब जैसा समर्थ और स्नेहिल पिता मिला हुआ है। कहा कपूर साहब और कहा नटनागर ? ईर्ष्या की आग अभी से उनके मन को गरमी पहुचाने लग गई है। यदि उन्हे यह मालूम हो जाए कि यह कमला की वही सन्तान है तो जाने क्या वे कर गुजरें ?—नही, वह यदि अभागिनी है तो है, न वह पति ही को पा सकती है, न पुत्र ही को ! उसे अपने हाहाकारमय निरवधि शून्य हृदय को और ही किसी उपसर्ग से भरना होगा। उसके व्यक्तित्व के इस विहित मार्ग को समाज ने, परिस्थितियो ने रुद्ध कर दिया है, वह उसे नही पा सकती ?

किन्तु यह अबोध बालक ?—जिसकी ममता की प्यास उसके खारे

आसुओ को उलीचकर भी तृप्त नही होना चाहती। इस अर्ध रात्रि के स्पन्दनहीन वक्ष पर चिपटा रहकर कैसे यह आत्मलाभ प्राप्त करे ?—कमला ने हाथ पर लगी हुई घडी को देखा, बारह बजने मे पाच मिनट शेष थे।

कमला ने सोम को बाहुओ मे भरकर उठा लिया। देखा कि उसका सारा मुह आसू की सिक्त-लिपि मे घुल-मिलकर एकाकार हो उठा है। कमला रोक न सकी अपने आपको अधिक। उसकी आखो ने अधिक नियत्रण न माना, और जब सोम ने भी मा के उस छल को देख लिया, तो कमला ने मानो अपनी चोरी को छिपाने के लिए उसके मुह को अपनी छाती पर छिपा लिया। बहुत देर तक इसी तरह अवसन्न बैठे दोनो प्राणी मूक भाव से अपने हृदय का भार कम करते रहे। रात्रि दबे पाव कदम-कदम सरकती रही, कुछ देर बाद सोम ने सिर उठाया और कहा, 'ऑण्टी! तुम जाओ अब! मै सो जाऊगा, सच कहता हू!'

—और उठकर वह एक भले बच्चे की तरह चादर को मुह तक खीचकर लेट गया।

कुछ क्षणो तक कमला नीरव-निस्पन्द बैठी, न जाने किस अन्धकार मे खोई रही, फिर एकाएक ही चादर को उसने मुह पर से हटा दिया—सोम आखे बन्द किए सोने का प्रयत्न कर रहा था।

उसके सिर पर हाथ रखकर कमला ने कहा, 'नीद नही आती ?'

'अब आ जाएगी ऑण्टी। तुम जाओ!'

किन्तु कमला ने जाने की अपेक्षा जो कुछ किया उसकी सोम को भी कल्पना न थी। उसने पुन. सोम को अपने भूखे वक्ष से सटा लिया और वह भी उसके पास ही लेट गई। सोम के नन्हे हाथो को उसने अपने गले पर डाल लिया, उसके नन्हे पैर उसने बलपूर्वक अपनी कमर पर डाल लिए। उसके मुह को उसने अपने दोनो स्तनो के बीच मे छिपा लिया, और उसके कोमल सुनहले बालो के बीच अपनी पतली नाक को टिकाकर आखे बन्द करके अवश भाव से वह लेट गई, मानो विश्व के

समस्त विरोध को उसने उस प्रकोष्ठ के बाहर ढकेल दिया, सोम ने कुछ विरोध न किया। उसकी भटकती हुई आत्मा को मानो नीड मिल गया। उसने मातृ-रूपिणी आॅण्टी को—या आॅण्टी-रूपिणी मा को हाथो और पैरो से ही नही, मानो मन के समस्त अकुशो से कसकर, जकडकर और उसके मसृण मास मे भिदकर बाध लिया। उसी जड भाव मे कुछ ही क्षणो मे उसे नीद आ गई और उसके कसे हुए हाथ-पाव शिथिल हो गए। कमला ने उसे इतना कसकर छाती से लगाया हुआ था, कि सोम के सारे बदन मे पसीना हो गया। तब उसने उठाकर उसका सिर तकिए पर रख लिया। उसके गाल पर अपने गाल रख दिए, उसके गले पर अपने हाथो का बन्धन डाल दिया, और दोनो पृथुल जांघो के बीच उसके नन्हे पैरो को दाबकर वह पुनः लेट गई। जीवन में आज मानो पहली बार उसे तृप्ति का कण प्राप्त हुआ। समय और स्थान की सीमाए उसके लिए नगण्य हो गईं।

आखें बन्द थी, पर नीद उनमे न थी। समय की गति मानो रुक गई थी, काल का समस्त प्रवाह रात्रि से भरे हुए इस नीरव प्रकोष्ठ मे आकर मानो पगु हो गया था। केवल सास की प्रक्रिया दोनो ही प्राणियो मे शेष थी, उसीसे दोनों के वक्ष एक दूसरे पर दबाव डालते, और दूर हो जाते। यह दबाव भी उनकी गभीर निष्ठा को घनीभूत ही करता जा रहा था।

क्या यही क्षण अमर जीवन नही हो जाता ? यदि नही, तो क्यों न यही क्षण अमर मृत्यु हो जाए ? और क्या पाना शेष है कि जिसके लिए जीवित रहने की स्पृहा हो ! पति को वह पा नही सकती। चाहे जैसी गंभीर निष्ठा हो उसमे नटनागर के लिए, वे उसे सहन नही कर सकेंगे, कभी नही ! आज जब वह अनायास ही पुत्र को पा गई है—क्या हुआ यदि वह अपनी मा को न पा सका हो ? यदि उसने पा लिया है तो वही क्या उसे उसकी मा को पाने मे सहायक न होगी। मा—क्या दुनिया मे नारी के लिए इससे आगे कुछ भी नही है ? सचमुच कुछ नही है ?

हो भी, तो भी कमला अब उसकी इच्छा न करेगी। शायद जब तक कोई मा नहीं बन जाती, तभी तक उसकी दृष्टि अन्य अनेक उपलक्ष्यो मे उलझी रहती है। शायद वह प्रेमी या पति की भी खोज इसीलिए करती है कि वह उसे मा बनाने मे सहायक होता है। यदि कमला को मातृत्व प्राप्त हो गया है, तो नटनागर की भी परवाह क्यों करने लगी ?

कितना सुख है इस बच्चे को छाती से लिपटाए सो रहने मे ! इन गुदगुदे गालों का स्पर्श, इन पतले मासल अधरो की यह रस-राशि, रेशम के तार जैसे ये मुलायम कृष्ण-स्वर्ण बाल, ये नन्हे गोरे-गोरे नरम हाथ, ये पैर—शरीर के रूप मे प्रकट यह मा के वात्सल्य का मूर्त जादू—इससे बढकर ससार मे है क्या ? कमला ने सोम के सभी अगो को बारी-बारी से छूआ, और आखें बन्द करके स्पर्श की उस अभूतपूर्व अनुभूति को मानो वह स्मृति की मजूषा मे गहरे आबद्ध करने लगी।

—तभी परिचारिका ने कमला के बाजू पर हाथ रखकर कहा, 'बहन जी।'

स्वप्न-भग हो गया अकस्मात् ! एक तीव्र आघात-सा पाकर मुदी आखो से ही कमला ने कहा कुछ रोष के साथ, 'क्या है ?'

'बड़े साहब !'

'बड़े साहब ?' कहकर शीघ्र ही कमला उठ बैठी, अपनी अस्त-व्यस्त साड़ी को ठीक करने की चेष्टा मे जैसे ही उसने दरवाजे की ओर देखा—मिस्टर कपूर दरवाजे मे ही खड़े थे। बोले :

'एक्स्क्यूज़ मी मैडम। मुझे साढ़े तीन की गाडी से ही बाहर जाना पड़ रहा है—एक दुर्घटना हो गई है। जाने से पहले सोचा कि सोम को देखता चलू। द होल डे द पूअर बॉय हैज बीन इनटेशन (सारे दिन बच्चा परेशानी मे रहा) लेकिन अभी तक आप यहा हैं, क्या कुछ विशेष बात है ?'

कमला ने अपने आपको सम्हाल लिया था। वह उठ खडी हुई। इस परिस्थिति के लिए वह तैयार न थी, किन्तु अब क्या हो सकता था ?

सामने आकर उसने कहा, 'गुड इवनिंग सर !' और दोनों हाथ जोडकर उसने नमस्कार किया।

कपूर साहब ने कमला को देखा, और वे नमस्कार का उत्तर देना भी भूल गए।

'आप ?'

'जी हा··· ' कमला ने स्थिति को हाथ से बाहर न जाने दिया, बोली—'सोम के बारे मे आप चिन्ता न करे। रात को वह सो नही पा रहा था, पर अब वह सो गया है, स्वस्थ है। आइ सपोज़ यू वोण्ट लाइक टु डिस्टर्ब हिम एनी मोर (मैं आशा करती हूं आप उसे किसी तरह परेशान करना नही चाहेगे)'

'जी नही—लेकिन·····'

'तो चलिए—आफिस मे चलिए—लडका जाग न जाए !' फिर परिचारिका की ओर देखकर कहा, 'चादर ठीक कर दो, और वह सामने की खिड़की बन्द कर दो। ठढी हवा आ रही है।'

आगे-आगे कमला, और पीछे-पीछे कपूर साहब, दोनो सुपरिटेंडेंट के दफ्तर मे पहुच गए। कमला ने स्विच लगाकर प्रकाश कर दिया। कमला ने कपूर साहब को अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठने के लिए कहा, तो मिस्टर कपूर ने कहा :

'वह आपका आसन है। मैं यहा बैठता हू।' और वे सामने की कुर्सी पर बैठ गए। कमला अपनी कुर्सी पर।

कमला ने कहा, 'अब कहिए, जो कुछ आप कहना चाहते हैं। वहा शायद लड़का जाग जाता, शायद आप भी न चाहेंगे कि उसपर किसी तरह का 'स्ट्रेन' पडे, कम से कम उसके स्वास्थ्य की इस नाजुक अवस्था मे !'

'आपका कहना ही ठीक है मैडम ! लेकिन यदि मेरी आखें मुझे धोखा नही देती तो आप···'

मिस्टर कपूर कुछ झिझके तो कमला ने कहा, 'जी हा, आप मुझे पहले देख चुके हैं। न आपकी आंखें आपको धोखा दे रही हैं, और शायद

आपकी स्मरण-शक्ति भी नही। डॉक्टर पोर्शिया ने जिसका परिचय आपको अपनी एक मित्र के रूप मे दिया था।'

'और मिसेज़ नटनागर ?'

'जी हा, दोनो एक ही है !'

कुर्सी के बाजू पर कुहनी के सहारे खडे हाथ की हथेली पर अपना मस्तक रखकर मिस्टर कपूर ने एक क्षण के बाद कहा

'वहा से लौट आकर मैं प्राय. भूल ही गया था कि सोम हमारा लडका नही है ...'

'यह आप क्या कह रहे है मिस्टर कपूर ' सोम आप ही का लडका है... '

एक फीकी हसी हसकर कपूर साहब ने कहा, 'वैसा ही सही, किंतु मिसेज कपूर के मरते ही सबने यही समझा, उस लडके ने भी कि उसकी मा अब नही रही। आज अकस्मात् आपको पहचानकर एक आघात लगना स्वाभाविक ही है !'

'आघात ? आघात क्यो कहते है आप इसे ?'

'तो और क्या कहू इसे ?'

'तब तो मेरा बडा दुर्भाग्य है मिस्टर कपूर !'

'आपका नही, मेरा कहिए ! उस घटना को प्राय. भूल ही गया था, कि किसी समय कही सोम का कोई दावेदार उठ खडा होगा। उस समय आपने मेरी 'वाइफ' की प्राणरक्षा की, किन्तु अब वह नही है, फिर भी सोम के दावे की बात तो सोच ही नही सका—हालाकि स्वाभाविक तो यही था।'

कपूर साहब की आवाज मे एक कपकपी, एक दर्द स्पष्ट मालूम दे रहा था। इतना बडा अधिकारी, जिसकी किसी भी प्रकार की विषम परिस्थिति मे भी पराजित न होने की ख्याति थी, आज स्पष्ट ही, अनायास ही मानो एक क्षणभर मे वृद्ध और निर्बल हो उठा था।

कमला ने कहा, 'किन्तु अपने दावे के लिए मैंने आपसे कभी याचना तो नही की।'

मिस्टर कपूर ने एक लम्बी सास ली और कहा, 'याचना नही की, यह तो मैं जानता हूं! पर जो आपका दावा है, उसके लिए याचना कैसी? हम उसके मा-बाप न होकर भी जो बात भूल गए, वह मा बनकर आप ही कैसे भुला देगी।'

'फिर भी मिस्टर कपूर, विश्वास कीजिए कि इसे मैं बिल्कुल ही भूल गई थी?'

'विश्वास करने को कहती है आप, कि बिल्कुल ही भूल गई थी?'

'विश्वास नही होता?'

'कैसे हो मिसेज़ नटनागर? यदि ऐसा न होता, तो आप हमारे पीछे क्यो पडती?'

'पीछे पडी मैं?—ज़रा समझाकर नही कहिएगा?' और उसने टेबल पर रखे हुए पेपरवेट को दोनो हाथो मे घुमाना शुरू कर दिया।

'पता नही किस छल से मिस्टर ओझा को फासकर आप आबू गईं, एक माह तक वहा आपने अपने लडके का पीछा किया! फिर यहा पर अपना ट्रान्स्फर करवाकर...'

कमला को रोष हो आना स्वाभाविक था, कपूर साहब को बीच ही मे रोककर उसने कहा, 'देखिए मिस्टर कपूर! अपने आपको धोखा देने का प्रयत्न मत कीजिए। आप खूब अच्छी तरह जानते हैं कि मेरे आबू जाने का सोम के आबू जाने से कोई सम्बन्ध नही है। आपने खुद मिस्टर ओझा को प्रार्थना करके यहा बुलाया और सोम को उनके साथ कर दिया। आप विश्वास न करेंगे, किन्तु जब तक मैंने सोम को उनके साथ देखा नही, मैं जानती भी न थी कि उनके साथ कोई लड़का भी होगा! रहा मेरे ट्रान्सफर का प्रश्न, उसके बारे मे भी आपसे अधिक और कौन जानता है कि वह मेरी इच्छा का नही अनिच्छा का कारण हुआ है। इसके मूल मे आपकी इच्छा और प्रार्थना का प्रमाण भी पाया जा सकता है, यदि आप

चाहे !—पर यह कैफियत किसलिए दू [मिस्टर कपूर ।—'और उसने आखो को नीचा करके एक हाथ से सिर को पकड लिया, फिर बोली—'मैं जानती हू मेरे दावे को प्रमाणित करने के लिए मेरे पास कोई आधार नही है, यह भी नही जानती कि डाक्टर पोर्शिया आजकल कहा है। इस बाजार मे, जहा दूसरो के अधिकारो को, दावो को, हडप जाना ही धर्म है, कौन एक बार अपना दावा विसर्जन करके पुन. उसके लिए याचना करेगा ?—और कौन उसे स्वीकार करेगा, जबकि उसके पास प्रमाण ही नही है !—आपका मुझे यहा से स्थानातरित करने का या पदच्युत करने का अधिकार भी तो कही गया नही है ?' और उसने कपूर की ओर दृष्टि उठाकर देखा।

मिस्टर कपूर ने हतप्रभ होकर कहा, 'क्या आप मुझे इतना ही ओछा समझती है ?'

कमला की आखो मे रोष तब भी दीप्त था, उसने कहा, 'मेरी यही गलती है मिस्टर कपूर, कि मानव को मैंने कभी ओछा नही समझा। यदि समझ सकती तो मुझे प्राय धोखा न खाना पडता'—और वह अपनी कुर्सी पर से उठ खडी होकर बोली—'आप अपने पुत्र को सम्हालिएगा ! मेरे लिए क्या आदेश है ?'

मिस्टर कपूर ने घडी देखी, फिर उसी धीर भाव से कहा, 'मिसेज़ नटनागर ! आप व्यर्थ ही उत्तेजित हो गई है। बैठिए कुछ देर और ! पता नही आज आप सो सकेगी या नही, पर आपके मन पर जो भार हो, मैं उसे उतार देना चाहता हू। व्यर्थ ही आप कष्ट पाए, यह मुझसे सहन नही होगा।'

कमला पुनः अपनी कुर्सी पर बैठ गई।

इस बार मिस्टर कपूर ने कांच के एक दूसरे पेपरवेट को अपने हाथ मे ले लिया, और उससे खेलते हुए धीरे-धीरे वे कहने लगे :

'देखिए, आपने मुझे एकदम से अपराधी बना दिया। जो बात मैंने स्वप्न मे भी नही सोची थी, वह आपने मुझपर आरोपित कर दी। मै

पचास के उस पार पहुच गया हूं—सारे भविष्य मे अपना कहने को कुछ भी नही है, बिल्कुल एकाकी इस दिगन्तहीन महासागर मे यदि सहारे के लोभ मे किसी तिनके को पकड बैठा, तो क्या मेरी दुर्बलता एकदम ही अक्षम्य हह् जाएगी ?—यह तो कोई भी जानता है कि केवल तिनके का सहारा लेकर कोई महासागर नही तैर लेता; फिर भी उसका मोह ही तो है !—इच्छा या अनिच्छा से गत कुछ महीनो की घटनाओ के आवर्त में जिस तरह आप आ फसी है, उससे यदि मैने यह निष्कर्ष निकाल ही लिया कि मा का आपका दिल आपको विवश बनाता रहा हो तो मैंने क्या अस्वाभाविक सोच लिया ?—फिर भी मैं कहता हू, सोम के ऊपर आपका अधिकार है, आप जब चाहेगी, उसे मैं आपके सुपुर्द कर दूगा। किन्तु····'

'कहिए रुक क्यो गए ?'

'सोचता हू, पूछू या न पूछूं !—आप नाराज़ तो न होगी ?'

'अगर हो भी जाऊ तो आपकी बला से ! आप पूछिए !'

'तो नही पूछू गा ।—देखता हू कि आपका क्रोध अभी तक गया नही है । खैर आपका पुत्र है, आपकी धरोहर है । भविष्य मे उसका क्या होगा, क्या न होगा इसके बारे मे चिन्ता करने का मुझे अधिकार ही क्यो हो ?—पर मुझे आपने बहुत कड़ाई से परखा है मिसेज़ नटनागर !—मुझे इसका बड़ा अफसोस रहेगा !—' और अबकी बार मिस्टर कपूर उठ खडे हुए ।

कमला ने कहा, 'किन्तु अभी तक तो आप ही की बात हुई । मेरी बात तो आपने सुनी ही नही ?'

'उसकी ज़रूरत रह जाती है क्या ?'

'उसकी ज़रूरत कब नही थी—पर क्या आप बैठेंगे भी नही ? अभी तो आपकी गाड़ी को खूब देर है ।

मिस्टर कपूर पुनः बैठ गए और बोले, 'लीजिए मैं बैठ गया !'

कमला ने कहा, 'कपूर साहब, मैंने यदि कडाई के साथ आपको परखा है, तो उससे कम कड़ाई मुझे परखने मे आपने काम मे नही ली ।

पहले की बात जाने दीजिए, जिन कई महीनो से मैं सोम के साथ घटनाओ के आवर्त मे आ घिरी हू, क्या मैंने कभी किसी छल से अपने दावे को, मागना दरकिनार रहा, कभी प्रमाणित करने की भी चेष्टा की है ? किसी डाक्टर पोर्शिया से आपने सुना होगा कि कोई कमला नाम की नारी अपने पुत्र को आपको दे सकती है, और आपने उसे ध्रुव मान लिया, यदि वही डॉक्टर पोर्शिया मुझे कहे कि मेरी सन्तान होते ही मृत हो गई, तो क्यो न मै भी उसे ही ध्रुव मान लू ? आपके मन का चोर आपको मुबारक रहे ! मै किसी भी छल से आपकी सन्तान की मा बनने के लिए तैयार नही हू ।'

मिस्टर कपूर ने कमला की ओर देखा—'मिसेज नटनागर....'

'जी !'

'मै आपके पिता की उमर का नही, तो भी उमर मे आपसे काफी बडा हू । दुनिया भी देखी है, और किस्से भी बहुत सुने हैं। आपकी आखो को देखकर, आपके व्यवहार देखकर भी यदि मै कहूं कि आप उसकी मा नही है, तो मुझ जैसा मूर्ख आपको और कोई न लगेगा। मेरी सन्तान कह रही है !—यानी आपने पुनः उसे मुझे लौटा दिया। उस दिन आपने एक गरीब दुखिया औरत पर दया की थी, आज आप एक सर्वस्वहीन बूढे पर दया कर रही है !—आप उसका भार नही लेना चाहती, तो मेरे कन्धे काफी मज़बूत है ! पर मा न बनी हो, अभिभावक तो आप उसकी बन ही गई है ।'

कमला ने लम्बी सास ली, चेहरे को मानो अपनी ही छाती मे छिपाकर उसने कहा, 'सो भी कपूर साहब, अब कठिन दीखता है। यह बेकार की बेगार ढोते नही बनती ।'—और कपूर साहब को अनुभव हुआ मानो उसकी वाणी गीली हो उठी है ।

कपूर साहब बोले, 'मै आपकी पीड़ा को समझ सकता हूं मिसेज़ नटनागर !—मैं एक प्रश्न और पूछना चाहता था, पर अब न पूछना ही अच्छा होगा । फिर भी मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि सोम

मुझे प्राणो से प्यारा है, उसका अपने जीवन मे तो कोई अनिष्ट न होने दूंगा बल्कि प्रयत्न ऐसी व्यवस्था करने का करूगा कि मेरी मृत्यु के बाद भी उसे किसी तरह का कष्ट न हो। जैसे आप अब तक निश्चित रहती आई है, उसी तरह निश्चिन्त रहने का प्रयत्न कीजिए।'

'पर आप पूछना क्या चाहते थे ?—न पूछने से तो मेरे मन का बोझ हटेगा नही।'

'शायद पूछने से भी न हटे !'

'देखिए, आप ही ने स्वीकार किया है, कि आप मेरे पिता के तुल्य है।'

मिस्टर कपूर कुछ क्षरण चुप रहे, फिर बोले, 'नटनागर मे और आप-मे बनती नही, यह सुना था।—क्या यह लडका ही उसका कारण है ?'

कमला सिर पकडकर चुपचाप बैठी रही। क्या उत्तर दे—किस स्त्री को अपने मुह स्वीकार करना पडा है कि वह पुश्चली है।

मिस्टर कपूर ने उत्तर की अधिक राह न देखी और कहा—'आप उत्तर न दीजिए।—अच्छा शायद नटनागर तो नही जानता कि सोम आपका पुत्र है ?'

कमला ने केवल मस्तक हिला दिया।

कपूर साहब ने हाथ की घडी देखी, और बोले—'नही, अब अधिक नही ठहर सकूगा।—सोम की तरफ से एक तरह से निश्चिन्त हो गया। आपसे बढकर और किन हाथो मे उसे दे सकता था ?—मै तो मात्र अब आपके आदेश का भिखारी रह गया। जो आप आदेश देगी, वही बजा लाना मेरा कर्तव्य रहेगा—' और वे उठ खडे हुए—दरवाजे पर क्षीण पदध्वनि के साथ ही देखा गया कि मिस्टर नटनागर वहा आ खडे हुए हैं। शायद कपूर साहब के आखिरी शब्द भी उन्होने सुन लिए है।

दरवाज़े के भीतर का दृश्य देखते ही नटनागर को काठ मार गया। इतनी रात गए मिस्टर कपूर कमला के आफिस मे। क्यो कमला को देर हो गई ?—और वह सिर झुकाए बैठी हुई है, जब कि कपूर साहब

कह चुके है, 'जो आदेश देगी उन्हे बजा लाना मेरा कर्तव्य रहेगा ।'

कपूर साहब भी इस परिस्थिति के लिए एकाएक तैयार न थे। पर तभी नटनागर ने हाथ उठाकर कहा .

'गुड मार्निंग सर ! ...' और कमला की मूर्च्छा भग हो गई, वह अपनी कुर्सी पर से उठ खड़ी हुई।

'गुडमार्निंग नटनागर ! गुडमार्निंग !—मैं इसी गाड़ी से जा रहा हूं। एक्सीडेंट (दुर्घटना) हो गई है !—यह अच्छा हुआ कि तुमसे भेंट हो गई। सोम को जरा देखने आया था। उसे आज बुखार हो आया...' कमला चौकी क्या यह वृद्ध पुरुष उसके लिए भूठ भी बोल सकता है ?

मिस्टर कपूर कह रहे थे, 'इट वॉज सो नाइस ऑफ मिसेज़ नटनागर टु बी लुकिंग आफ्टर हिम इवन ऐट् दिस लेट अवर ! (मिसेज़ नटनागर की कितनी कृपा है कि वे इतनी रात तक उसका ध्यान रख रही थी)—मैं शायद दो-एक दिन तक बाहर रहू। कोई इम्पोर्टेन्ट पेपर्स (जरूरी कागज) हो तो लाइन पर भिजवा देना। अच्छा बाई-बाई।'—और मानो मुक्ति की सास लेकर कपूर साहब कमरे से बाहर निकल गए।

नटनागर ने कमला की ओर देखा, कमला ने नटनागर की ओर। जब कुछ क्षण बीत गए तो नटनागर ने कहा

'सोम की परिचर्या कर रही थी या मिस्टर कपूर की ? विशेष कोई देर नही हुई, केवल ढाई बजकर दस मिनट हुए हैं।'

कमला ने कमरे से बाहर आकर कहा, 'घर मे प्रवेश करने दोगे, या सारी कैफियत यही पूछ लोगे। जो आदमी रात भर बिना कारण ही सोता नही, वह चाहे जो सोच सकता है, किन्तु नौकरो के सामने मै कोई कैफियत नही दूगी।'

'घर तो तुम्हारा है, मेरा कहा ?—मैं तुम्हे वहा से विरत करने वाला हूं कौन ? बिना कारण रात भर न सोने वाला यदि कुछ कर सकता है तो केवल मात्र सोचना, किन्तु जो सकारण रात भर नहीं सोता, उसके कारणो को जानने की इच्छा पति ही को नहीं, किसी भी

व्यक्ति को हो सकती है। पर चलो, घर पर ही सही।'

और आगे-आगे मिस्टर नटनागर, पीछे-पीछे मिसेज़ नटनागर रात्रि के शेष प्रहर मे अपने सोने के कमरे की ओर चले, अवश्य ही एक नये दिन का प्रारंभ करने के लिए।

२३

शेष रात्रि के उस व्यापार को अक्षरश. लिखने मे विशेष कोई लाभ नही है। मिस्टर नटनागर को आप भी जानते हे, और मिसेज़ नटनागर को भी, बल्कि ऐसे ही नाजुक अवसर भी वे अपनी आखो देख चुके हैं, अतः यहा पर साराश कह देने भर से काम चल जाना चाहिए।

नटनागर को विश्वास हो गया, कि कमला का श्री कपूर से सम्बन्ध है और इस सबध के सूत्रो को मिलाने वाला पाखडी, धूर्त और धोखेबाज है ओझा। उसकी दुरभिसन्धि भी नटनागर जानते है। तब मिस्टर कपूर ही से उन्होंने सुना था कि वे ओझा के लिए एक गजेटेड पोस्ट की भी व्यवस्था कर सकते हैं, यदि ओझा चाहे।—इसी बहाने वह कमला को बहकाकर आबू ले गया था। कमल ने ठीक ही लिखा था, यद्यपि उस समय उन्होंने उसपर पूरा विश्वास नही किया था। और यह सोम बनाया गया कमला और कपूर के बीच एक पुल ?—उपन्यासो मे कथा की सृष्टि करते-करते अब हजरत जीवन मे भी वही कलाबाजिया खाना चाहते हैं! फिर पति-पत्नी को मिलाने के छल से लिखी हुई वह चिट्ठिया, जिनके बहकावे मे आकर स्वयं नटनागर ने कुछ का कुछ समझ लिया था। उधर कपूर का कमला को यहा बुलाने का प्रस्ताव, क्या खूब नाटक रचा गया है! फिर यह लड़के का उपलक्ष्य!—नही, नटनागर समस्त जाल को समझ गए हैं, वे अब बुद्धू बनकर नही रहेगे। निश्चय ही इस पार या उस पार

कुछ करके ही रहेगे। उन्हे और क्या प्रमाण चाहिए ?—आधी रात तक श्रीमती जी घर से गायब हैं, पूछने पर कहा जाता है लडका यो है, वो है—बल्कि शिकायत तक की जाती है कि सन्देह न हो। किन्तु जब देखा जाता है तो लड़का नही, लडके का बाप, एक अलग कमरे मे, श्रीमती जी की अनुनय-विनय करता हुआ—श्रीमती जी की, जो कि उसकी नौकर है। और क्या प्रमाण चाहिए उन्हे प्रमाणित करने को ?

सचमुच कमला अपनी निर्दोषिता का क्या प्रमाण दे ?—दागी आसामी तो वह है ही ! यदि सच बात कह दे तो क्या हो ?—क्या वह कह दे कि सोम उसका वही लडका है जिसे नटनागर पर वह मृत प्रमाणित कर चुकी है ? इसके परिणाम क्या होगे ? यदि सोम को यह सब मालूम हो गया कि वह एक दुश्चरित्रा मा की सतान है, जिसके पिता का कोई ठिकाना नही।—नटनागर कभी उसे स्वीकार नही करेंगे, और यदि कभी स्वीकार कर भी लिया, तो क्या वे उसे उसी भाव से ग्रहण कर सकेंगे, जिस भाव से मिस्टर कपूर ने किया है ? द्वापर युग मे इसी तरह एक मा की सन्तान दूसरी मा को सौंप दी गई थी, कई वर्षो बाद भी श्रीकृष्ण के लिए अपनी प्रकृत मा के निकट लौटने का मार्ग खुला हुआ था, सोम के लिए क्या वह मार्ग खुला हुआ है ?—उसका भविष्य अभी उसके सामने है, क्या मा बनकर केवल अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करने के लिए वह उसका भविष्य नष्ट कर देगी ?—अत· उस रात्रि को घटी सच बात कहकर ही उसने अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करने का प्रयत्न किया, और कहना न होगा कि नटनागर उसे स्वीकार न कर सके !

कमला के यह पूछने पर कि आखिर नटनागर कमला से चाहते क्या हैं, नटनागर ने कहा कि कमला से नटनागर का विवाह हुआ है, और नटनागर ने इस विवाह की कीमत चुकाई है। उन्हे अब इस विवाह से वसूल करने का सामाजिक और नैतिक अधिकार है। उसी अधिकार को काम मे लेकर अब वे अपना प्राप्य वसूल करना चाहते है। वे अब कमला

के ऊपर पूरा नियन्त्रग रखेगे। सर्विस अभी वह जारी रख सकती है, एकाएक ही उसे छोड देने से आर्थिक स्थिति के विषम हो जाने के अलावा समाज मे जिस दुर्वाद के फैल जाने का डर है, वह उन्हे ध्यान मे रखना ही होगा।—पर अन्त मे कमला को यह सर्विस छोडनी ही होगी, शीघ्र ही वे अपनी मा को अपने पास बुला लेना चाहते हैं। कमला ने अपने वैवाहिक जीवन मे सदा ही उनका अपमान किया है। अब उसे अपने पूर्व कृत्यो का प्रायश्चित करना पडेगा।—जब तक वह सर्विस कर रही है, तब तक उसकी स्वतन्त्रता पर अकुश रहेगा। दफ्तर के समय के अतिरिक्त बाहरी किसी व्यक्ति से वह किसी भी तरह का सम्पर्क नही साध सकेगी। नटनागर पाच बजे बाद दफ्तर से लौट आते हैं। सध्या के समय आवश्यकतानुसार वे भी कमला के साथ ही रहेगे, खासकर कमला के रात्रि के नौ बजे वाले राउण्ड पर वे साथ ही रहेगे। आवश्यकता से अधिक घर से बाहर वह नही रह सकेगी। नटनागर कमला के पति तो थे ही, अब स्वेच्छा से उसके चौकीदार भी बन गए। स्वतन्त्र भारतवर्ष मे बीसवी शती के छठे दशक मे एक अत्यन्त बुद्धिमती सुशिक्षिता रमणी ने ये सभी शर्ते सुन ली, एक तरह से मान भी ली—केवल इसलिए कि कुछ ही समय पूर्व उसका हाहाकारमय प्रबल बाढ के अनवरुद्ध प्रवाह वाला मातृत्व उसके समस्त नारीत्व को सिक्त ही नही, डुबो भी गया था, और रह-रहकर उस विनाश मे एक ध्वनि उसे सुनाई दे रही थी, 'पुत्र को नही पा सकी ?—उसीके लिए यदि उसे छोडना ही कल्याणकर हो, तो शेष सम्बल पति ही को क्यो खो देना चाहती है ?'

कपूर साहब के लिए भी नटनागर के मन मे अश्रद्धा उत्पन्न हो गई, यद्यपि उसे प्रकाश करने की सुविधा नही थी। सोम के प्रति अवश्य उनकी विरक्ति सतह पर आने लगी, और उसे कमला ही नही, अति भाव-प्रवण स्वय सोम समझ गया, किन्तु अब वह अपनी आॅण्टी की ओर खिचता जा रहा था, और भाग्य का परिहास देखिए, आॅण्टी अब चाहकर भी उसपर अपने स्नेह का अतिरेक नही व्यय कर सकती थी—दो आखो

की दृष्टि और एक कठोर मानस का ठोस निषेध सदैव ही उसकी पीठ पर खडा उसकी वृत्तियो की रास खीचे रहता था। सबसे अधिक निगरानी थी कमला की डाक पर, कही फिर से उसे धूर्त, पाखडी ओझा के साथ खतो-किताबत न जारी हो जाए !

मिस्टर कपूर भी एक अजीब परिस्थिति मे थे। नटनागर की मनो-स्थिति को वे ताड गए थे। दुनिया देखे हुए थे, यह भी वे समझ गए कि पति-पत्नी के बीच की खाई गहरी ही नही, चौड़ी भी है, और दोनो मे स्थायी तो स्थायी, अस्थायी मेल भी सम्भव नही है ! निश्चय ही इसका सम्बन्ध कमला के चरित्र से भी है, जिसकी कि उपज है सोम ! वह केवल कमला की दया-भावना न थी, किन्तु विवशता थी कि उसे अपने पुत्र का विसर्जन करना पडा। यह तो सयोग था कि मिसेज़ कपूर वहां कमला को सहायता दे सकने की स्थिति में पहुच गई थी।

किन्तु कमला मे यह चारित्रिक स्खलन क्यो हुआ ? अवश्य ही यह उनका आज का पाप नही है, किसी अतीत मे यदि कोई गलती भी उससे हो गई हो, तो कमला जैसी अशेष बुद्धिशालिनी के लिए क्या उसे छिपाए रखना सम्भव न था ? कमला के स्वभाव का जितना कुछ कपूर साहब पर प्रकट हुआ है, उससे वह एकदम से तेजस्विनी, निर्भीक, किसी भी अपराध की भावना से शून्य, स्वस्थ व्यक्तित्व की विशाल भूमि मे अधि-ष्ठित मालूम दी है। पाप करके उसे छिपाए और उसके अभिशाप से तिलतिल अपने व्यक्तित्व का क्षरण करती रहे, ऐसी दुर्बल नारी वह दिखाई नही देती। नटनागर एक क्षुद्र व्यक्तित्व है, सामान्य क्लर्क, उसके चारो ओर लोहे का घेरा डालकर भी क्या उसे बांधे रह सकेगा ?

सोम की वह मा है। भावना की बाढ को वह नियन्त्रित कर सकती है, पर अपत्य की भूख क्या किसी नियत्रण को मान सकती है ?— मातृत्व की बाढ भी क्या अन्य बाढो जैसी साधारण बाढ ही होगी ?— अवश्य यदि वह सोम का कभी दावा करे, तो वह सोम के भविष्य के लिए अहितकर होगा, यह वह जानती भी है; किन्तु पति को खोकर

कभी किसी असहाय क्षरण मे मा का मन यदि अवश हो जाए ?—पति को खोकर यदि वह पुत्र ही को पाना चाहे तो अस्वाभाविक तो न होगा ! वह सोम के पिता हैं, कमला सोम की माता !—एक क्षरण के लिए उनके अधरो पर एक मुस्कान फैल गई। इस अवस्था मे यह प्रवचना भी विचारणीय हो गई। किन्तु यदि कमला को देखा जाए तो इस तरह बिना सोम के भविष्य को अनिष्ट पहुचाए क्या वह उसे माता बनकर सर्वान्त-करण से पा नही सकती ?—जहा तक उनका प्रश्न है स्वय का, वे कमला को अपने हृदय की समस्त साध से, आशा और विश्वास से स्वीकार करेगे। वह अशेष बुद्धिमती, अचचल, शिक्षिता, सस्कृता, स्वरूपा और सबसे बढकर उनके सोम की आदर्श मा बन सकती है। सोम का भविष्य उज्ज्वल कर सकती है।

किन्तु, वाह श्रीमान कपूर साहब, आप भी क्या आखिर अपने मन के चोर के हाथो ही पकडे जाएगे ?—आप एक क्षेत्र के अधिपति, जिम्मेदार अधिकारी, अपने ही किसी क्लर्क की पत्नी को अपने घर मे ला बिठाकर क्या दुनिया के सामने और अपने उसी भाव-प्रवण पुत्र के सामने मुह दिखा सकेगे ?—और ऐसा आपमे है ही क्या कि कमला ही आपको पसन्द कर लेगी ?—पुत्र का लोभ उसे हो सकता है, पर उसके लिए वह आपका अभिशाप क्यो वहन करेगी ?—क्या पुत्र का दावा वह नही कर सकती ? वह तेजस्विनी है, जगत की लाछना का, मनुष्य की भर्त्सना का उसके सम्मुख क्या महत्व है ? और यदि तब सोम भी उसे पहचान कर उसके पास जाने के लिए उन्मुख हो उठे ?—क्या रह जाएगा आपके ससार मे ?—नही, इसका निदान करना ही होगा। मन के चोर को अब अधिक शह नही दी जानी चाहिए। वह देख चुके है कि किस तीव्र आसक्ति से कमला सोम को छाकर उसके मातृत्व के अभाव को पूर देना चाहती है, यह भी वह देख चुके हैं कि किस तरह सोम उसके आचल की छाया में अपने समस्त अभावों को भूलकर विवश हो जाता है। यदि उन्हें अपने पुत्र को बचाना है, तो शीघ्र ही अभी ही

कुछ उपाय करना पडेगा, और वह उपाय है सोम को वहा से हटा देना। यद्यपि अभी किसी अन्य पाठशाला मे वे उसे कही भेज नही सकते, किन्तु उसके अस्वास्थ्य का बहाना तो लिया ही जा सकता है। इससे सचमुच सोम को कदाचित् राहत मिल सके। नटनागर को भी सन्देह के लिए अधिक क्षेत्र न रहेगा। दूसरे सत्र तक अवश्य ही वे उसके लिए कही बाहर व्यवस्था कर लेगे।

अत. लगभग एक सप्ताह के भीतर ही जब सोम उस स्कूल से निकाल लिया गया, तो तीनो ही सम्बद्ध व्यक्तियो को मुक्ति मिली, अवकाश मिला और मिला मानसिक क्लेश। तीनो ही इस चीज़ को चाहते थे, और तीनो ही नही चाहते थे। नटनागर सोम से नफरत करने लग गए थे, फिर भी एक बार उससे सचमुच उन्होने प्यार किया था। कपूर साहब का तो स्वप्न ही था कि कमला सोम को सस्कारशील बनाकर न केवल उसके मातृत्व के अभाव को ही दूर कर दे, प्रत्युत् अपने सुदूर अन्तर की किसी दुर्बोध्य साध को भी सहारा दे दे, किन्तु जब उसकी कोई आशा नही हो, तो सोम को उसकी छाया से भी दूर हटा लेना ही उन्हे सर्वोत्तम लगा। रही कमला, सो चाहकर भी सोम को न चाह सकना ही उसका दुर्भाग्य रहा है।

किन्तु सोम स्वयं इस अभिसन्धि को किसी भी प्रकार सहन नही कर सका, यह स्पष्ट है। अपनी पीडा को मुह पर लाकर समाप्त कर देने की शिक्षा उसे नही मिली। मा के सम्मुख तो वह रो भी नही सकता था, किन्तु इधर कुछ दिनो से कमला उसके मन पर जैसा कुछ अधिकार जमाती जा रही थी, उसका पता ही उसे तब लगा, जब कमला की शीतलतामयी छाया से उसे विरत कर दिया गया। मा के प्यार और सरक्षण की उसके अचेतन मन ने इस तीव्रता से अपेक्षा की कि वह शरीर की सतह पर अपनी अभिव्यक्ति करने लग गई। कपूर साहब के पहले बाहर के दौरे छूटे, धीरे-धीरे दफ्तर छूटने लगा, और अब खान-पान छूटने लगा। बस, जुटने लगे डॉक्टर, और तीमारदारो का ताता! न गए

तो जानकर भी नटनागर, और न जानकर कमला। पर कपूर साहब के लडके की बीमारी ऐसी साधारण बात नही कि उनके ही मातहत कर्मचारी न जान सके। देर-सवेर कमला को भी खबर लगी ही, किन्तु तब भी जाने का कोई उपाय न था।

उस दिन रात्रि को अपने राउण्ड से लौटकर सोने का उपक्रम करते हुए कमला नटनागर सेने पूछा :

'क्या सोम की तबियत बहुत खराब है ?'

'तो तुम्हे क्या ?'

'मुझे नही, तो भी तुम्हे तो कुछ होना चाहिए।'

'क्यो ?'

'सुना है, उनके मातहत सभी व्यक्ति उनसे जाकर उसके बारे मे देख-भाल कर आए है। तुम उनके हेड क्लर्क हो। कुछ दिनो से सुनती हू, दफ्तर भी नही आते ! क्या एक बार देख आना अच्छा न होता ?'

'यह मेरे सोचने की बात है, तुम्हारे सोचने की नहीं। नौकरी उनकी मैं करता हू—और करता हू उनकी, उनके लडके की नही।'

'मैने लडके से मिलने के लिए तो कहा नही। उन्हीसे मिलकर लडके के बारे मे पूछ आने को कहा है।'

'तुमने कहा और मैने सुन लिया। करना न करना मेरे हाथ की बात है ! तुम्हे सिरदर्द करने की ज़रूरत नही।'

'ज़रूरत तो खैर मुझे भी है। उनके मातहत नौकर तुम्ही नही हो, मैं भी हू।'

'यह भी मैं जानता हू। किन्तु इसके आगे की जो बात है, वह तुम्हें भूलनी नही चाहिए कि तुम मातहत नौकर किसीकी हो सकती हो, पर पत्नी तुम मेरी ही हो !'

—सो तो कमला जब से यहा आई है, जानने-मानने का प्रयत्न कर ही रही है। इसमे नई बात क्या है?

पर लेट गई। वह जानती है, नटनागर को अनिद्रा का रोग है। कई रात बीत जाने पर भी उन्हे नीद नही आती। करवटे बदलते रहते हैं, ओषधियो का प्रयोग भी व्यर्थ हो गया है। फिर भी उसका मन न हुआ कि वह अब आगे अधिक बात करे।

कुछ क्षण बीत गए। कमला को अनिद्रा का रोग नही है, तब भी नटनागर जानते थे कि कमला सोई नही है। अतः उन्होने ही कहा .

'नौकरी की चिन्ता करना तुम्हारे लिए बिल्कुल ही अस्वाभाविक है। आखिर विवाह से पहले तो शायद यह तुमने कभी सोचा भी न था। अत. नौकरी के बारे मे, चाहे वह मेरी हो या तुम्हारी चिन्ता करने का अधिकार मेरा है, यह तुम काफी अच्छी तरह जानती हो ! तब सोम के बारे मे तुम्हारे इस दर्देसर का मतलब क्या है ?'

कमला कुछ न बोली, तो नटनागर फिर कहने लगे, 'वैसे जानता तो मैं हू ही ! केवल तुम्हारे मुह से सुनना चाहता था। देखना चाहता था कि कौन-सी नई कहानी गढकर तुम इसका प्रतिवाद करती हो। आखिर दोस्ती भी तो तुमने की थी उस कहानी-लेखक भाड से ! तारीफ तो करनी ही पडेगी उस भाड की कल्पना-शक्ति की ! आखिर किस ठाठ से उसने एक ही ढेले से दो चिडियो का शिकार किया है ! नही उपमा ठीक नही रही। कहना चाहिए चक्रवृद्धि ब्याज वसूल किया— ब्याज पर ब्याज, अपने कौशल से पहले तुम्हे फसाया, फिर तुम्हारे जाल पर कपूर को ! लेकिन, उत्तर क्यो नही देती ? क्या सो गई हो ?'

'उत्तर चाह रहे हो क्या ? सुन तो रही हूं !' और यह कहकर उसने करवट बदलकर, नटनागर की ओर पीठ कर ली।

'उत्तर तुम दोगी ही क्या ? प्रारम्भ से ही तो तुमने धोखा देना सीखा है। ऊफ, विवाह के तुरत बाद के उन दिनो की याद करके आज भी कपकपी छूटती है। किस तरह मुझे भरमाए रखा, मैं सोचता था मेरी कबूतरी बड़ी सीधी है, पर मारना भी नही जानती। मेरे सिवा किसी को पहचानती ही नही। मेरा मुंह देखकर उठती है और मेरा मुह देख-

कर सोती है, कल्पना मे भी पति के सिवा कोई नही, सेवा, आदर, सत्कार, भक्ति मानो पति के लिए कुछ भी अदेय नही है ! मानता हू उस नाटक को, कि मैं पैरों मे सुरक्षा के लिए नेवर भी न डालना चाहू। यदि कभी हाथ से धक्का देकर उठाऊ भी तो दरीबे की छत से फिर आए। लेकिन उसके बाद ? वे चौकडिया भरी जाने लगी कि देखकर हिरन भी अपनी चौकडी भूल जाए ! पति बीमार है, मृत्यु के मुख मे है, और देवी जी मां बनने के लिए उधार चली जा रही है। पति का कलेजा फाडा जा रहा है, और आप एक और छोटे-से गिद्ध को पाप के पेट मे छिपाए उसके कलेजे पर उत्सव मनाने दूर देश तक पीछा नही छोडती।'

नटनागर ने कुछ क्षण की चुप्पी साधी, कि शायद उत्तेजित होकर कमला कुछ उत्तर दे, किन्तु कमला उसी तरह नीरव, निस्पंद, मृतवत पडी रही। यदि निद्रा के देश मे उसका मन खो न गया था, तो वह और किसी अन्य दुर्गम अन्धकार मे गुम हो गया था; इसमे सदेह नही। किंतु नटनागर ने यही समझा कि कमला सब सुन रही है, कहने को उसके पास कुछ है नही। कह ही क्या सकती है वह ? अपराधिनी जो है ! उन्हे उसकी विवशता और तज्जन्य मौन से पैशाचिक उल्लास अनुभव हो रहा था। वे कहने लगे :

'नौकरी का भी क्या बढिया बहाना निकाला। सोचा होगा कि आर्थिक अभाव की परिस्थिति मे चन्द चादी के टुकडो से ही देखने वाली आख को आड की जा सकती है। आखिर पढाई-लिखाई का अन्तर न देखा जाए तो चौक बाजार मे खिड़की की ओट बैठकर राह गुजरने वाले छैलों से आखो ही आखो मे बात करने मे, और दफ्तर की कुर्सी पर बैठकर पुत्र की स्वास्थ्य-कामना के छल से आए हुए अपने ही अफसर को आखो ही आखो मे अटकाए रखने की कला मे और क्या अन्तर देखा जा सकेगा ?'

फिर कमला की ओर से किसी उक्ति की अपेक्षा, किन्तु उत्तर मे वही नीरवता पाकर नटनागर का रेडियो चलने लगा, पूर्ववत् :

'किन्तु कब तक ? काठ की हडिया, दुबारा चूल्हे पर नही चढती,

समझकर भी जो दुराशा पाले रहते है, उन्हे हाथ दो चुटकी राख के सिवा लगता ही क्या है ? बडी सरलता से उस रात्रि को कह दिया, मुझे तलाक दे दो। चरित्रहीनता का अपराध मैं स्वीकार कर लूगी। —सोचती हो मुक्ति इतनी सस्ती मिल जाए तो क्यो न हथिया ली जाए। लेकिन नही। अब तक तुम मेरे साथ खेलती रही हो, अब मेरी बारी है, मेरी बारी ! मैं तुमसे, तुम्हारे जीवन से, तुम्हारे भविष्य से खेलूगा, देखूगा कि तुममे कितनी शक्ति है ? तुम्हारा विष का दात कितना गहरा है ? तुम मेरी पत्नी हो, तुमपर मेरा अधिकार है। देखता हू क्या खाकर तुम मुझे उच्छेदित कर सकती हो। उस जैसे दस सोम आ-जाएं, ओझा जैसे पचास तुक्कड हो, कपूर जैसे पाच सौ आशिक आ जुटे—मै तब भी पति हू, तन-मन और धन का मालिक ! देखता हू कौन मुझे मेरे प्राप्य से विरत करता है।'

तब से नटनागर बिना रुके बके चले जा रहे थे। उत्तर नही पाने से उनका आवेश उठ-उठकर मरता जा रहा था। इससे थकावट ही बढती जा रही थी। बोलते-बोलते कठ सूख गया। आप ही आप थककर चुप रह गए।

कुछ क्षणो तक चुप पडे रहने के बाद उन्हे लगा कि पानी से तर किए बिना कठ सूखा जा रहा है, तो वे उठे, बत्ती जलाकर उन्होने सुराही से उडेलकर जल पिया, एक उडती हुई नज़र कमला के पलग पर डाली। छाती तक चादर डाले वह करवट फेरे उसी तरह अवसन्न पडी थी ! तो क्या सचमुच सो गई ?—जितना कुछ नटनागर बकते रहे, वह सब क्या बट्टे खाते ही गया ? स्विच पर रखे हुए हाथ को उन्होने विरत कर लिया। वे धीरे-धीरे चलकर आगे बढे, जिधर कमला की पीठ थी। जिस बत्ती ने उजेला कर रखा था, वह कमला के मुंह की ही दिशा मे थी, उससे उसके सामने का हिस्सा, मुंह सब साफ दिखाई दे रहे थे। नटनागर आकर उसके सिर के पीछे खडे हो गए।

सिर के बाल दो चोटियो मे गू थे हुए विभाजित थे। ऊपर की चोटी कन्धे के ऊपर से होती हुई उरोजो के सहारे नीचे उतरकर चादर के

भीतर कही खो गई थी, नीचे की चोटी सिर के भार से खिसक-खिसककर शिथिल होती-होती खुल गई थी, और मसृण-स्निग्ध केशो का एक निविड भाग सिर और पीठ के नीचे तकिए के ऊपर फैला हुआ था। पीछे खुले गले के ब्लाउज से गर्दन के नीचे पीठ का काफी भाग अपनी पुष्ट गौर मासलता मे देखने वाली आखो को पकडे रहना चाहता था। एक बाह नीचे कहा रखी हुई थी, दिखाई नही देती, दूसरी अपने यौवन की रक्षा करती हुई उरोजो को घेरकर अवश पडी हुई थी। गहरी सासो से उठती और पडती हुई छाती का उन्नतोवनत भाग समुद्र तट से लगी हुई पार्वत्य उपत्यका मे भूकम्प पैदा कर रहा था। पीठ की ओर खुली खिडकी से ठण्डी हवा आकर उसकी बधी हुई वेणी के बालो की कुण्डलियो मे उलझ-उलझकर बालो के एक-एक, दो-दो गुच्छो को बधन-मुक्त करना चाह रही थी। नटनागर की दृष्टि अटक गई। झुककर उन्होने उसके मुह के भाव को देखना चाहा।

ऐऽ यह क्या आसू ?—नीचे तकिए के ऊपर बालो की एक परत पर अब भी कुछ बूदे चमकती हुई देखी जा सकती है। आख की भीतर वाली कोर से निकलकर एक धारा ठीक नाक के ऊपर तक आकर सूख गई है। काजल का चुराया हुआ कुछ अश अब भी आखो के कोश से कुछ आगे तक फैल गया है। मुदी हुई पलको के भीतर मानो अब भी निविड दृष्टि का वह सोया हुआ उल्लास छलछला पडना चाहता है। उसे देखकर भी कौन अपना पात्र खाली रखना चाहेगा ? और वे अधर ?—जो शायद किसी मूक रुदन के भावोच्छ्वास मे अर्द्धस्फुट होकर ही स्थिर हो गए हैं !—यह कमला, यही कमला, शरीर और मन के समस्त ऐश्वर्य को अपनी सम्पुटि मे भरकर नटनागर के उत्सुक भाव को समर्पित हुई थी ! उनकी पत्नी, अर्द्धांगिनी, जहा उसकी पूजा की जाए, वहा देवताओ का रमण हो। एक लम्बी सास ही नटनागर के मुख से निर्गत हो सकी। बुझती हुई आखो को पुनः खोलकर उन्होने उस ओर देखा, देखा कि पवन के अभिचार से एक लम्बा दुराग्रही केशगुच्छ मुक्त होकर उसकी पलको

का रस पीना चाह रहा है । लालसादग्ध मन से उन्होने अपने हाथ को उठाया और उसके तस-शिथिल कपाल पर से उन्होने बालो के उस गुच्छे को हटा दिया । वह मुह वैसा ही नीरव, निस्पन्द, कठोर, भावशून्य, स्थिर पड़ा रहा ! मालूम पडा न जाने क्या सोचकर नटनागर की थकी आखे भी गीली होना चाहने लगी । नटनागर ने अपने आपको रोकने का प्रयत्न किया, पर रोक न सके । अपने दग्ध अधरो को झुककर उन्होने कमला के कपोल पर रखा, रख दिया—यह क्या ?—वहा पर सूखे आसुओ ने उनके अधर पर नमक मल दिया, और तभी कमला ने मुह फिराकर तकिए मे छिपा लिया ।

एक लम्बी सास लेकर नटनागर ने पुन. लाइट बुझा दी, और अपने पलग पर आकर लेट गए । और कुछ कहने का अब उन्हे उत्साह नही रहा था । शारीरिक और मानसिक थकावट भी कम न थी । इधर रात भी बीत चली थी—धीरे-धीरे नटनागर नीद के गहरे जाल मे घिरते-घिरते सो गए, बेसुध हो गए । अब सवेरे नौ बजे तक उन्हें शाति है, यदि सपने उन्हे न सताए !

कमला सोती रही, इस दुनियां से बहुत दूर खोई हुई । नटनागर की कुछ बाते उसने सुनी थी, किन्तु अधिक सुनने से कोई लाभ न था, इसलिए बलपूर्वक वह उनको बातों को अनसुना करती गई; यहा तक कि नटनागर बकते रहे और वह अपने आप में खोई हुई सचमुच ही नीद मे खो गई । नटनागर द्वारा दिए हुए अपमान को तो वह लेकर सो गई, पर शेष मे दिए हुए उनके सम्मान की उसे खबर भी न लगी ।

किन्तु एक भयानक दुःस्वप्न देखकर वह एकाएक उठ बैठी । छाती पर हाथ रखकर देखा, वह अभी भी बडी तेज़ी से धडक रही थी । ठडी हवा के बावजूद सारे बदन मे पसीना छूट आया था । आंखे मसलकर उसने देखा कि अपने कमरे मे पलग पर वह बैठी हुई है, कमरे मे अधेरा है, पर वैसा नही कि कुछ दीख ही न पडे । खिड़की से तारों की मन्द रोशनी आ रही है । बाहर दूर चौक में जलने वाली बिजली का क्षीण

प्रकाश खिडकी के किवाडो से प्रतिफलित होकर कमरे मे भी छा गया है। उधर सोए पडे है पलग पर नटनागर, निश्चय ही अब वे गहरी नीद मे है। सब कुछ यथापूर्व है, फिर हुआ क्या ?—हा नटनागर कमला को लक्ष्य करके मनमाना कीचड उछाल रहे थे, किन्तु वह तो सोने के पूर्व ही उसके प्रभाव को मन से बलपूर्वक हटा चुकी थी। फिर क्या बात है ? कलेजा अभी मुह को आ लगा है।

—सोम—हा, याद आया, कोई मानो सोम को उसकी गोदी से झपट रहा है, वह उसे अपनी छाती से चिपटाए हुए है, भीत-किंकर्तव्य-विमूढ सोम दोनो हाथो से उसे घेरकर अधिकाधिक सटता जा रहा है, किन्तु उसे झपटने वाला दुष्ट इन अवरोधो की चिन्ता किए बिना उसका पैर पकडकर खीचे चले जा रहा है। यह क्या—एकाएक मानो सोम की टाग उसके शरीर से अलग होकर उस दुष्ट के हाथ मे रह गई। सोम दर्द से चीख उठा, रक्त की धारा बह निकली, उसने दूसरी टाग पकडकर खीचना शुरू किया, वह भी अलग हो गई, फिर एक-एक कर दोनो हाथ ! हाय राम ! सोम अब केवल बिना हाथ-पाव का, मांस का एक पिण्ड मात्र रह गया। कमला उसे देखकर रो रही है, वह दुष्ट उसकी ओर देख-देखकर हंस रहा है। और अब तो वह उसकी गर्दन पकडकर खीच रहा है, यदि उसकी गर्दन अलग हो गई ? नही अब कमला से नही सहा जाएगा। उसने लपककर उस दुष्ट के हाथ को जोर से काट खाया—अब उसने सोम की गर्दन छोड दी, किन्तु कमला की गर्दन को पकडकर वह उसे दबोचने लगा। कमला का दम घुटने लगा, बस अब उसके प्राण आखो मे आ लगे—निकलना ही चाहते है, शेष दृष्टि वह सोम पर डाल ले—कि सोम उसकी गोद से छूटकर निर्जीव होकर जमीन पर गिर पड़ता है, और कमला की आख खुल जाती है। स्वप्न की बात याद आते ही एक बार और उसके बदन में कपकपी छूट गई। फिर से शरीर पसीने मे भीग गया, और हृदय की धडकन पुन. बढ गई। गनीमत है कि वह स्वप्न ही था।

किन्तु सोम बीमार तो है। कल तक तो खबर थी कि उसकी अवस्था उत्तरोत्तर बिगडती जा रही है। क्या करे वह ?—इधर उसका पति उसे उसकी छाया भी स्पर्श नही करने देता ! कैसी विवशता है ?—उसने एक बार और अपने पलग पर बेसुध पडे नटनागर के ऊपर दृष्टि डाली। ओछी प्रवृत्ति का यही आदमी उसका पति है—उसका पति !

कुछ क्षणो तक नीरव बैठी रहकर कमला एकाएक कुछ सकल्प-सा करके नीचे उतरी। अधेरे ही मे जाकर सुराही से गिलास मे जल उडेला —छलछल की आवाज़ हुई, खिडकी मे जाकर उसने जल को मुंह पर छिडका, फिर नटनागर के पलग के पास आकर टोह लेने लगी। सास मे समरस गति थी, गम्भीर निद्रा, जो बडे कष्ट के बाद उन्हे मिली थी, उनकी सचित निधि की तरह सास के तार-तार से लिपटी हुई थी। कमला को विश्वास हो गया कि वे अब काफी देर तक नही उठेंगे। उधर टेबल पर जाकर टाइमपीस को देखा, रेडियम के अको पर रेडियम की सूइया चमक रही थी। दो बजकर दस मिनट हुए थे।

यदि इस समय निकलकर वह सोम से मिल आ सके, केवल उसे देख आ सके तो विशेष कोई कठिनाई नही होगी। कपूर साहब का बगला वह जानती है, सोम के साथ दो बार जा चुकी है। सोम कहा सोता है, कपूर साहब कहां सोते है, नौकर-चाकर कहा सोते है, सब उसे मालूम है, बडे उत्साह से सोम ने सब कुछ उसे बताया था। तब कपूर साहब वहा न थे ! रात को दरबान जागता रहकर पहरा देता है, किन्तु वह प्रायः ही सोता रहता है, उसकी कोठरी ठीक मुख्य फाटक की बगल में है, हां उसका कुत्ता अवश्य जागता रहता है, उससे बचना बडा कठिन है। किन्तु यदि पीछे के 'विकेट गेट' से जाया जाए, और नीर-वता बनाई रखी जा सके तो कोई खतरा नही है। दीवार के पास मेहदी की घनी कटी हुई बाड़ लगी है, उसके सहारे-सहारे पीछे की ओर ठेठ सीधे सोम के कमरे मे पहुचा जा सकता है। उसके दरवाजे पर ही उसका नौकर शिब्बू सोता है। कमरे का दरवाज़ा बन्द तो रहता है पर कुण्डी

नही लगाई जाती। यदि होगी भी तो शिब्बू कमला को जानता है, उससे कहने मे कोई हानि नही है। बस आध घण्टे मे वह वापस लौट आएगी। इसमे कोई खतरा नही है, कोई जान भी नही सकेगा।

दादू को साथ ले चले ?—वह विश्वासी भृत्य है, बडा सहारा रहेगा, बल्कि वही समस्त व्यवस्था कर देगा। किन्तु, नही—मूर्ख भी है वह ! समझकर काम करने की शक्ति उसमे नही है, जितना कहा जाएगा उतना ही कर सकेगा। बनने की अपेक्षा उससे काम बिगडेगा ही। बात ही क्या है ? केवल आध घण्टे-पौन घण्टे मे तो वह लौट ही आती है !

उसने अपने कपडो को ठीक किया, बदलने की ज़रूरत ही क्या है ? अभी ही तो वह चली आ रही है, किसीसे भेट होने का प्रश्न ही नही है, बल्कि ऐसी हर सम्भावना को उसे बचाना है। अतः अलगनी पर पड़ी हुई एक गहरी नीली चादर को उसने अपने ऊपर डाल लिया और धीरे से दरवाजा ठेलकर वह उस गम्भीर मध्य रात्रि मे बारह निकल गई। एक क्षण के लिए झिझककर भी उसने पीछे नही देखा। शीघ्र ही लौट जो आना था उसे। और झिझक क्यो हो ?—वह कोई अभिसार करने तो जा नही रही थी। जा रही थी केवल अपने बीमार पुत्र को देखने के लिए, छिपकर इसलिए कि उसका पति ऐसा नही चाहता था।

शुक्ल पक्ष की चतुर्थी का चादं अस्त हो चुका था। जिन प्राणियो के जागने की सम्भावना हो सकती थी, वे सब भी गम्भीर निद्रा मे सो चुके थे, यहा तक कि जिन्हे रात्रि मे हां कार्यरत रहकर अपनी जीविका जुटानी पडती है, उनके प्रयत्न भी शेष हो चुके थे, और वे भी विश्राम कर रहे थे। रात्रि का तीसरा प्रहर प्रारम्भ हो गया था, अत जैसे ही कमला घर से बाहर निकली, और तो किसीने उसे नही देखा, किन्तु शीतल पवन ने अवश्य उसका स्वागत किया।

लेकिन बरामदे मे दादू सोया हुआ था। कमला की पदध्वनि सुनते ही उसकी आखे खुल गईं। आखे मसलकर जब तक वह परिस्थिति को समझने की चेष्टा करे तब तक कमला बरामदे की सीढिया पार कर

चुकी थी। मालकिन अपने बदन पर एक चादर डाले हुए हैं, निश्चय ही कही जा रही है। कही पर भी बाहर वे उसके बिना साथ के नहीं जाती। फिर आज इस मध्य रात्रि मे बिना उसे कहे धीर पदो से कहा जा रही है वे ? क्या वैसी ही कोई अभिसार-यात्रा है ?—अभी तक उनकी पुरानी आदत गई नही ? जब आज अनायास ही वह जाग गया है, तो क्यो न जाकर देख आए ?—खासकर इस गम्भीर रात्रि मे यदि कोई खतरा ही उपस्थित हो गया तो ? यदि वे उससे छिपकर गई है, तो वह भी छिपकर उनके पीछे-पीछे चला जाएगा—केवल उनपर नज़र रखेगा, इसीमे उसकी उत्सुकता और कर्तव्य दोनो ही निभ जाएगे। कुछ ही क्षणो मे ये सभी विचार उसके दिमाग में कौंघ गए।

शीघ्र ही वह उठा, अपनी गन्दी चादर को उसने भी अपने शरीर पर डाल लिया। अधकार मे आगे जाती हुई छायामूर्ति का अनुसरण कर उसने देखा कि कमला स्कूल के मुख्य फाटक के लगभग पहुचकर बाईं ओर मुड गई है। अवश्य ही मुख्य फाटक को उन्होने बचाना चाहा है। बाईं ओर कुछ दूर हटकर दीवार मे एक 'विकेट गेट' हे, जहा क्रॉस की तरह एक दूसरे को काटती हुई दो लकडिया एक घूमने वाली चर्खी पर लगाकर उस छोटे-से फाटक को बन्द कर दिया गया है। लकडियो की फाक मे फसकर पार करने वाला व्यक्ति लकडियो को ढकेलता है, चर्खी घूमती है, और उस फाक के साथ ही व्यक्ति दीवार के बाहर निकल जाता है। इस फाटक से कोई जानवर भीतर-बाहर नही जा सकता। साधारणतया नौकर इसी फाटक का प्रयोग करते है। अधिकारियो के लिए मुख्य फाटक है, जो रहता तो सदैव बन्द है, किन्तु एक दरबान वहा नियुक्त है, किसी अधिकारी को देखते ही वह फाटक खोल देता है, और पुन बन्द कर देता है। विकेट गेट तथा मुख्य फाटको की यह व्यवस्था सभी कोठियो में है, इसे सभी रेलवे कर्मचारी जानते है, और इनका उचित प्रयोग करते है।

अवश्य ही मालकिन ने दरबान को बचा जाना चाहा है। दादू भी

बाईं ओर मुड गया। विकेट गेट की चर्खी ने साधारण-सा कुछ शोर किया पर किसीका ध्यान आकर्षित करने के लिए वह पर्याप्त न था। बाहर निकलते ही अधेरी रात्रि के क्षीण धुधलके मे दादू ने देखा कि कमला उस ओर बढती जा रही हैं, जिधर बडे साहब की कोठी का विकेट गेट है—बडे साहब की कोठी की तरफ ?—दादू के दिल की धडकन दूनी हो गई ! तो मालकिन इतने बडे अफसर पर डोरे डाल चुकी है ? ज़रूर बड़े साहब पहले इसीलिए स्कूल आते-जाते रहते थे, यह अब वह समझ पाया है। और आजकल वे इसीलिए नही आते कि अब पहाड ही मुहम्मद के घर पहुच जाता है।

पर बड़े साहब के यहा तो एक कुत्ता भी है, यदि वह भौकने लग गया तो ?—शायद इसका बन्दोबस्त पहले ही कर लिया गया हो !—कब से ये यहा आने लगी है ?—कुछ कहा नही जा सकता। जिस ढग से चली जा रही है, उससे तो मालूम देता है, जैसे आज पहली बार जा रही हो—पर चोरी से जाने वाले चाहे पहली बार हो, या हजारवी बार, चोरो की तरह ही जाने के लिए मजबूर है। जो हो, फाटक के भीतर वह नही जा सकेगा। यदि कोई उसे देख ले तो उसकी जान बचेगी नही। चोर कहकर हवालात मे धर दिया जाएगा। नटनागर साहब पहले ही उसपर खार खाए हुए हैं, मालकिन भी मदद नही कर सकेगी। और वह सिखाया हुआ कुत्ता ही अधेरे मे कही उसकी पिण्डली का मास नोच ले ? देख भर ले, तो यहा ठहरने का उसका प्रयोजन ही क्या है ? सीधा लौट आकर अपने बिस्तर पर पड रहेगा। लौट आकर देखे कि हमेशा की माफिक इस बार भी उनकी चोरी पकड़ी नही गई है।

लो, मेम साहब, उस फाटक के भीतर घुस भी गईं। फाटक ने कोई आवाज़ तक नही की। दादू जानता है, ठीक फाटक के भीतर दीवार के साथ-साथ चारो ओर मेहदी की घनी रेलिंग लगी हुई है। इसके अलावा मुख्य भवन तक जाने वाले पथो के दोनो ओर भी ऐसी ही रेलिंग लगी हुई है। इस रेलिंग के सहारे-सहारे यदि कोई सावधानी से इस रात्रि के सुनसान

मे आगे बढता जाए तो वह किसीकी आखों का शिकार न होगा, शायद कुत्ते को भी एकाएक टोह न लगे, और यदि सब इन्तज़ाम पहले ही से हो, तो बाधा ही क्या हो सकती है ? ठीक तो है, मेम साहब भीतर पहुच गई है। विकेट गेट के पास आकर एक वृक्ष की छाया मे पञ्जो पर खडे होकर उसने दीवार के भीतर देखने की चेष्टा की। दूर भवन के पीछे कमरे की दीवार के पास मानो वह छाया-मूर्ति कुछ झिझककर रुकी, मानो डरी हुई-सी दृष्टि से उसने कुछ खोजना-सा चाहा, या केवल आने-जाने वालो की टोह ली ? नही, उस हरकत मे निश्चय की दृढता तो नही दिखाई देती ! आखिर चोर का जो मन ठहरा, और चोरी की जो घटना ठहरी!—एक क्षण भर को आखे बन्द कर दादू ने पुन. उस ओर देखने का प्रयत्न किया तो घनीभूत अधकार के सिवा उसे कुछ दिखाई न पडा। उसके मुह से एक लम्बी सांस निकल गई।

वितृष्णा से मुह बिचकाकर वह पुनः मुडा, किन्तु पुन. रुक गया। पतन के मार्ग मे बडी फिसलन होती है, मानो दादू के अव्यक्त मन मे इसी तथ्य की घोषणा हो गई! लौटते समय भी तो कुछ हगामा हो सकता है ?—तब तो चोर की चोरी भी प्रमाणित हुई होती है। चोरी के पहले तो पकडने वाले की कल्पना का ही प्रमाण है, किन्तु चोरी के बाद ?—नही, मेम साहब चाहे जैसी हो, वे उसके लिए मां के समान साबित हुई है। उसे तो उनसे हमेशा मुहब्बत ही मिली है। दादू इतना कृतघ्न नही हो सकता कि खुद ही उनके कामो की आलोचना करने बैठ जाए, और फैसला सुना दे! उसका फर्ज़ साफ है, वह जान देकर भी उसे पूरा करेगा। आपद-विपद मे जो काम न आए, वह नौकर कैसा ?

दादू मुडा, धीरे-धीरे वृक्ष की छाया ही का अनुसरण करता हुआ विकेट गेट पर पहुचा, धीरे से फाटक की लकडी पर उसने हाथ रखा, चर्खी की चूल मे काफी मात्रा मे तेल पडा हुआ था, इशारा पाते ही बिना किसी प्रकार की आवाज़ किए चर्खी घूम गई, और दूसरे ही क्षण दादू दीवार के भीतर अहाते में था। बस इस रेलिंग की घनी छाया मे

रास्ते से काफी दूर छिपकर वह बैठ जाएगा, और मेम साहब के लौट आने की प्रतीक्षा करेगा। अधिक से अधिक मेम साहब आध घटे मे तो लौट ही आएगी। बस उनके लौटकर आते ही वह भी उनके पीछे-पीछे चल देगा, जैसे आया वैसे ही। मेम साहब को पता भी न लगेगा।

दादू का ही तो दिमाग ठहरा! उसने सोचा कि मेम साहब को पता भी नही लगेगा, और वह उनके पीछे-पीछे लौट जाएगा। इस तरह लौटने पर बरामदे मे पहले मेम साहब ही पहुचेगी, और, वहा दादू तो बिस्तर मे होगा नही ?—पर दादू के सोचने के लिए वही तो जिम्मेदार है।—दादू अपनी योजना के अनुसार छिपकर बैठ गया मेम साहब की प्रतिक्षा मे।

भवन के पीछे तक तो कमला सुरक्षित पहुच गई। अब क्या हो ?···· इधर बरामदे मे ही सोम और कपूर साहब के कमरे के पीछे के दरवाज़े खुलते है। दाहिनी ओर जो दरवाज़ा है, उसीमे सोम की व्यवस्था है, पहले मिसेज़ कपूर की व्यवस्था थी उसी कमरे मे। दाहिनी ओर हटकर बाहर जो दरवाजा खुलता है वह है उसका गुसलखाने का दरवाज़ा। ऐसी ही व्यवस्था बाईं ओर भी है, जो मिस्टर कपूर ने अपने प्रयोग के लिए रख छोडा है। दोनो कमरो के बीच मे दो दरवाजे है, जिनसे एक दूसरे मे आया-जाया जा सकता है। पर यह व्यवस्था तो तब थी जब सोम ने काफी पहले उसे बतलाया था। बीमार है सोम आजकल, काफी चिन्ता-जनक रूप मे। क्या पता अब क्या व्यवस्था है ? बहुत सम्भव है दोनो एक ही कमरे मे हो। वह नही चाहती कि कपूर साहब से उसका साक्षात्कार हो जाए। लेकिन यदि हो ही गया तो घबराने की कोई विशेष बात नही है। आखिर कपूर साहब उसके कमजोर पहलू को जानते ही हैं। सहानुभूति की उसे आशा है ही। हो सके तो वह उनकी नज़र मे नही पडना चाहती। सोम उसे एकाएक देखकर क्या कपूर साहब को जगा न देगा ? सोम को भी वह जगाएगी नही, खाली उसे देखकर, उसके सिर

पर हाथ फिराकर ही सन्तोष कर लेगी। सम्भव हुआ और यदि कपूर साहब दूसरे कमरे मे हुए तो वह पहले दरवाजो को भीतर बन्द कर लेगी। यह तो कपूर साहब भी जानते है कि मुझे मेरे पति से डरने का पर्याप्त कारण है, और इसमे वे मुझे सहयोग देंगे ही।

छाया मे कमला आगे बढी। बरामदे मे यह क्या ?—ओह, वह भूल ही गई थी, शिब्बू सोया हुआ होगा। यदि दरवाजा बन्द हुआ तो उसकी सहायता उसे लेनी ही पडेगी। यो सोम ने कहा था, दरवाजा खाली अटकाया हुआ रहता है, उसके हत्थे को घुमाकर ही खोला जा सकता है। बात यह है कि शिब्बू जरा गहरा सोता है, एकाएक जागता नही, उसे जगाने के लिए कभी-कभी उसके बदन को पकडकर झकझोरना पडता है। सोम ठहरा बालक, अपनी छोट मोटी आवश्यकता आप ही पूरी करने की उसे शिक्षा मिली है, और बडी आवश्यकता पडने पर, सोम ने बताया था, किस तरह उसकी नाक पकडकर वह सरलता से उसे जगा देता है।··· यदि ज़रूरत हुई तो कमला को भी वही उपाय काम मे लाना पडेगा। कमला आगे बढी।

दोनो कमरो के आगे पहले जाली के किवाड है, जिससे कमरे मे मच्छर, मक्खी आदि प्रवेश न कर पाए। कमला ने दबे पाव आगे बढकर दाहिने दरवाजे के चमकते हुए पीतल के हत्थे पर हाथ रखकर धीरे से उसे घुमाया। हत्था कुछ सख्त था, सरलता से उसे फिराए जाने के कारण वह हिला भी नही। कमला एकदम निराशा के खड्डे मे गिर पडी। क्या आखिर इस कुम्भकर्ण को जगाए बिना काम नही चलेगा ? कितनी सरलता से अब तक सारा काम निपट गया है। और इसके उठने के पहले ही यदि भीतर के प्राणी जाग उठे ? ··या और भी कोई, दरबान ही आ टपके ?···कमला का दिल धडकने लगा, बदन पर पसीना हो गया। एक बार वह पीतल के हत्थे की ओर देखती तो एक बार सोए हुए शिब्बू की ओर। शिब्बू को जगाने के सिवा कोई रास्ता नही, अत: समय नष्ट करने की अपेक्षा, जिसे करना ही है उसे करने के लिए कमला ने उधर पैर

बढाया—एक बार ललचाई दृष्टि से उसने पुनः निराश करने वाले हत्थे की ओर देखा—दूसरा पैर बढाने के पहले एक बार और उसके हाथ उस हत्थे पर पहुच गए, जरा दूर हो गई थी इसलिए अनायास ही इस बार पकड जरा मजबूत रही—और अरे ?—यह घूम भी तो गया। हाथ अपनी ओर खीचा तो किवाड का पल्ला भी उसकी ओर बाहर निकल आया। अवश्य ही शिब्बू को जगाने के लाछन से बच गई, किन्तु एकदम मानो बाघ की माद का ही दरवाजा खुल गया। कमला के हृदय की धडकन दूनी हो गई, पसीना और भी तेज़ी से बदन से छूटने लगा। कापते पैरो से उसने भीतर प्रवेश किया, फिर धीरे से खीचकर किवाड के पल्लों को अटका दिया।

दूसरे किवाड खुले हुए हैं, यह तो जाली के किवाडो के खुलते ही मालूम हो गया था। पर उसके आगे ही दरवाज़े पर रेशम का भारी परदा खिचा हुआ है। कमला एक मिनट वही खडी रहकर अपनी दुविधा से लडती रही, फिर समय की कमी का ध्यान आते ही उसने परदे को हाथ से अलग हटाया। कमरे मे बहुत धीमी नीली रोशनी फैली हुई थी। कमरे के ठीक बीचोबीच दो पलग एक दूसरे से सटे हुए पडे थे। सो भीतर कोई है अवश्य, कपूर साहब या सोम, बाईं ओर के कमरे का दरवाजा भी खुला मालूम दे रहा है, यद्यपि वैसा ही रेशम का भारी परदा उसे भी ढाके हुए है। परदे को और थोडा हटाकर कमला कमरे के भीतर बढ़ आई। दो कदम रखने मे उसे मानो बहुत ही परिश्रम करना पडता था। हृदय तो धडक ही रहा था, उसकी सास भी फूलने लग गई थी।

सामने के पलग पर ही उसका लक्ष्य है। चूडान्त थकावट, लज्जा, झिझक आदि के बावजूद उसे और कुछ नही दिखाई दिया। वह कमरा कैसा है, प्रकाश कहा से आ रहा है, कोई कही छिपा हुआ उसे देख तो नही रहा, यदि किसीको आहट हो गई तो वह किस मार्ग से बाहर जा सकेगी, आदि किसी बात की उसे सुधि न रही, और वह सीधे मन-मन के भारी पैरो से चलकर छन भर मे पलंग के पास आ खडी हुई।

उस प्यार की गहराई का कुछ दूरी तक वह स्वय गवाह रह चुकी है। और यो उसमे कपूर को लुभाने लायक था क्या ? सफल हो गया उसका तो जीवन ! पति के नि स्वार्थ सच्चे प्यार के दो क्षण पा जाने के बाद और क्या विशेष साध किसीकी रह सकती है ?—और वह ?·· रात ही को अपने पति से उसके विश्रब्ध आलाप की उसे सुधि हो आई। · कमला ने कपूर की ओर देखा।

कैसी निरीह मुद्रा है। · चिन्ता की छाया है केवल सोम के कारण। सोम जो मिसेज़ कपूर की अन्तिम इच्छा का परिणाम भर है, नही तो वे तो जानते ही है कि वे केवल बेगार ढो रहे है। इस बेगार के लिए ही सही, कमला को उनका कृतज्ञ होना चाहिए। उसके धन की इतनी अधिक सतर्कता से कौन रखवाली करता।·· उस दिन रात्रि को स्कूल मे कितने कातर, कितने विवश हो उठे थे वे। कौन स्त्री ऐसा स्नेह-परवश पति नही चाहेगी ? · वह नटनागर की पत्नी है, क्या सार्थकता हुई उसकी ? उसे न पति का सम्मान मिला, न पुत्र की भक्ति मिली ! मिली केवल आत्मप्रतारणा, छल की निरर्थक साधना और भ्रम की तुष्टि ! यदि इसके विपरीत कही वह मिसेज़ कपूर होती ? क्या अभाव है उसमे ? क्या वह पति को प्यार नही कर सकती ? नटनागर ही को क्या उसने कभी प्यार नही किया था ? · रूप ·· पर रूप को क्या सचमुच पुरुष चाहता है ? · खासकर तब, जब स्त्री की आसक्ति मे वह अपनी आखे ही खुली नही रखता ! रूप की प्यास भी क्या उसकी कभी बुझी है ? · फिर भी कोई ऐसी बदसूरत भी तो नही वह ! मिसेज़ कपूर से तो बीस ही है, पढी-लिखी, सुसस्कृत, सब कुछ न भी हो तो भी अशेष श्रद्धा-भक्तिसमन्वित उसके मन का समस्त सौरभ, जो किसीके चरणो पर उत्सर्ग होने की राह ही देख रहा हो। यदि नारी का जीवन कभी धन्य हो तो वह और कौन-सी परिस्थिति मे होगा ?·· तब उसे पति मिलता, पुत्र मिलता, वह मा के असीम सौभाग्य से अपने पुत्र को अपनी छाती से लगाकर सौ जीवनो की मृत्यु को चुनौती दे सकती थी। किन्तु आज !—आज उसका पुत्र भी उसका नही है।

वह बीमार है, और वह उसे देख भी नही सकती। और यदि वह अपने हृदय की आकुलता पर विजय नही पा सकती, तो यह दस्यु-वृत्ति अगीकार करे! चारा ही क्या है।

पुन उसकी दृष्टि सोम की ओर चली गई। वह उसी तरह कपूर साहब की नाक से नाक मिलाकर सोया हुआ था। साहस करके कमला ने झुककर सोम के कन्धो को धीरे से छुआ, उसके शरीर का वह स्पर्श नही पा सकी। यदि वह उसके कपोल को छुए, और एकाएक जाग उठे तो!—हाथ उसका कपूर साहब के गले मे है। वह यह भी तो नही देख सकती कि कही उसे ज्वर तो नही है।

पीछे ही आड मे खड़ी होकर साहस करके कमला ने सोम के कपोल पर हाथ रखा, उसे ज्वर तो था ही, किन्तु तभी चौककर उसने हाथ को अपने कपोल पर छाई हुई कमला के हाथ की बाधा को हटाना चाहा किन्तु तब तक कमला का हाथ ऊपर उठ गया था। गाल को खुजलाकर सोम ने अपना हाथ पुन कपूर साहब के गले मे डाल दिया। सोम की हरकत से कपूर साहब की नीद भी एकाएक खुल गई किन्तु वे आखे बद किए रहे और जैसे ही सोम ने पुन अपना हाथ उनके गले पर रख दिया, वे सोने की चेष्टा मे लग गए।

बुखार तो है सोम को, यह तो उसकी सास भी बता रही है। स्पर्श मे जितना उसे लग सका उत्ताप भी उसे अनुभव हुआ है। चेहरा इन्ही कुछ दिनो मे कैसा उतर गया है, मानो कही रक्त ही न हो। बाप के गले को इस तरह जकडे हुए है मानो उसे कोई छीने जा रहा हो! बाप के सिवा अब दुनिया मे उसे सहारा ही किसका है? मा है वह, किन्तु वह तो उसके जीवन मे वरदान बन नही सकती, केवल अभिशाप ही बन सकती है! दावा प्रमाणित कर सकती है वह अपना! अभी-अभी ही देश मे कानून बन चुका है, जिसके अनुसार नटनागर को मजबूर होकर सोम का दायित्व लेना ही पडेगा। हा, सोम पाच वर्ष से ऊपर का हो चुका है, सरक्षण का अधिकार चाहे उसे न मिले, किन्तु कपूर साहब किसी भी छल से उसे अपना नही रख सकते। पर क्या यही वह चाहती

है ? माना कि वह मा है, किन्तु क्या अपने मन की किंचित् तुष्टि के लिए ही अपने सन्तान के जीवन मे वह अभिशाप बन जाएगी ?

नया कानून मा के स्वत्व की रक्षा तो करता है, परवश, कातर, निर्बल, पतिव्रतानुगता पत्नी की स्वत्व-रक्षा के बहाने उसकी दासता की भी रक्षा करता है, किन्तु मुक्त नारी की निरपेक्ष भावधारा का सम्मान करना यह समाज कब सीखेगा ?—पति की इच्छा के विपरीत उसे तलाक नही मिल सकता, जिन परिस्थितियो मे वह है, केवल एक ही उपाय है कि कमला अपने व्यभिचार का ढिढोरा पीटे, और नटनागर उससे असहिष्णुता व्यक्त करे, उस असम्मान को सिरपर रखकर इस समाज मे कौन नारी जीवन-यापन कर सकती है ?—तब उसकी जीविका की रक्षा करने वाली यह नौकरी भी रहेगी ? फिर भी जिसके लिए उसका मन शून्य होकर अतल हाहाकार मे क्षत-विक्षत, आहत हो गया है, उसकी रक्षा वह केवल मिसेज कपूर होकर ही कर सकती है ! मिसेज़ कपूर होकर ?—कपूर साहब उसे स्वीकार करेगे, इस समस्त कीचड और लाछना मे भरी हुई, फेकी हुई जूठी पत्तल को अगीकार करके ?

सिरहाने के पटिए के पीछे से सिर निकालकर कमला ने देखा कि घनी शीतल अमराई के सदृश अपने आश्रय की गभीर छाया से कपूर साहव सोम के समस्त भाव को समस्त मन-प्राण से छाए हुए है। उस आश्रय मे मानो स्थान का अभाव नही है। केवल साहस चाहिए।—और सोम कैसा आत्मशून्य होकर नितान्त निर्भरता से उस आश्रय मे सोया हुआ है, मानो जन्म से ही नही, जन्म-जन्मान्तरो से वह इस आश्रय का अधिकारी रहा है, इस आश्रय के सिवा और कुछ नैसर्गिक उसके लिए है ही नही !—उसने एक लम्बी सास ली। जो नही हो सकता, उसके बारे मे विशेष सोचने से वितृष्णा ही बढती है। यही उसका सतोष कम नही है कि सोम इससे उत्तम हाथों मे जा नही सकता था, उसके बाद भी यदि उसे कुछ हो जाए तो उसे भवितव्य के सिवा वह और क्या कहेगी; हा, अपने आपको वह कभी क्षमा नही कर सकेगी, अपने साथ ही

समाज को भी, जो उसके व्यक्तिगत अधिकारो को सदा कुचलता रहा है !

निर्वेद के इस अन्यतम-क्षण मे एक और विचार उसके मस्तिष्क मे आया। सचमुच व्यर्थ ही तो हो गया है उसका जीवन !—और किसलिए इस व्यर्थता को मानकर ही वह पति-भक्ति का या अपत्य स्नेह का नाटक कर रही है ?—दुनिया मे केवल एक व्यक्ति ने उसे समझा था, पर वह भी कठोर अनासक्ति के साथ केवल दर्शक के निरपेक्ष मूल्यमानो के आधार पर !—क्या हुआ यदि वह उसके अन्तरतम के वासी को पा नही सकी, वह क्या किसीको सरलता से पकडाई देता है ?—फिर भी सचमुच ही उसने सदैव ही कमला की एकान्त हितैषणा ही की कामना की है। आज इस गम्भीर कालरात्रि मे यदि अपने उस प्रतारणापूर्ण बन्दी-जीवन का किसी भी बहाने से उच्छेद कर सकने मे वह समर्थ हो सकी है, तो क्या पुन स्वेच्छा से उसी कीचड मे वह लौट जाए ?—नही ! यह नौकरी, यह जीविका, यह नरवरोत्तम नारायण की छाया, यह शिक्षा, सस्कार—क्या करेगी इन्हे चाटकर वह, यदि ये उसकी प्रकृत तृष्णा का एक क्षुद्राश भी नही मिटा सकते ?—और सोम की यह ममता-माया न उसके उपयोग की है, न सोम के ही। तब फिर इस अवास्तविक भ्रम के जाल को मकडी की तरह अपने चारो ओर लपेटे रहने मे, प्रत्युत् और भी अधिक बुनते रहने मे क्या सार्थकता है ?—चले वह, छोड चले इस मायालोक को ! इस समस्त अरक्षणीय अवास्तविक मधु-भार के बाहर भी यदि कही जीवन हो तो उसीका सधान करे।—उसका मार्ग जब तक नारी को नही मिल जाएगा, तब तक वह सदैव ही भटकती रहेगी। मार्ग पाने के लिए आखे बन्द करके उसे सदैव ही अपनी अगुली पति को या पुत्र को थमा देनी पडेगी, और जब वह देखेगी कि वह एक गड्ढे मे गिरने जा रही है तो कोर्ट के सम्मुख कानून की शरण लेकर तलाक की या सरक्षण की भीख मागनी पडेगी। नही यह मार्ग उसकी स्वाधीनता का नही है, उसके कल्याण का नही है। वह उसी व्यक्ति के पास लौट जाएगी, शायद वही उसे मार्ग दिखा सकेगा।

और कमला आड मे से बाहर निकली। एक सतृष्ण दृष्टि से पुनः उसने सोम की ओर देखा, उसी पर-निर्भर भाव से वह सोया हुआ था—नाक कपूर साहब की नाक के पास, दोनो के स्पंदन एक दूसरे मे उलझे हुए, एक का हाथ दूसरे की गर्दन से उलझा हुआ, दूसरे का पहले के शरीर को अपने दृढ आलिगन मे आबद्ध किए हुए।—बस, अन्तिम दृश्य—और उसने आखे बन्द करके दरवाज़े की ओर पैर बढाए!

किन्तु पैर बढा नही! सोम को ज्वर है, कितना है, वह भी नही जान सकी, जीवन मे फिर कभी उसके साथ देखा नही होगा। ओझा से वह प्रार्थना करेगी कि कही अत्यत दूर ले जाकर उसे पटक आए—न हो तो भारतवर्ष की सीमा से बाहर नितान्त आत्म-परिजनहीन किसी देश मे, जहा वह सभी को भूल जाने का प्रयत्न कर सके—सभी को, सोम-ओझा-कपूर सभी को। हृदय उसका सचमुच ही टूट जाएगा पर यह कमज़ोर हृदय टूट ही जाए तो अच्छा, इस तडके दिल को लेकर वह उस कठिन यात्रा पर जा ही कैसे सकती है?

उसने पुन सोम की ओर देखा, उसकी ओर बढी—आखे उसकी सजल, डबडबाई हुई, नीचे झुकी—शेष बार मे क्यो न उसके अधरो की प्यास बुझा ले—कि तभी मानो कमला को सुविधा देने के लिए ही सोम ने अगडाई ली, और कपूर साहब की गर्दन से हाथ निकालकर चित हो गया। कपूर साहब का हाथ तब भी उसकी कमर पर आवेष्टित रहा।

कमला ने सुयोग देखकर अपने अधर उसके अधर पर रख दिए, और शीघ्र ही अपने गालो को उसके कोमल कपोलो पर रख दिया, मानो सोम को नीद ही मे कुछ ऐसी अनुभूति हुई कि इधर करवट वदलकर उसने अपने हाथ को कमला की गर्दन मे आवेष्टित कर दिया। कपूर साहब का हाथ अलग हट गया। कमला उस पाश मे बधकर आधी उस पलग पर हो रही। नीचे फर्श पर घुटने टेककर वह शिथिल हो गई।

हाथ के अलग हटते ही मानो कपूर साहब कोई सपना-सा देखने लगे। सोम की उष्ण सासों का बादल उनके गालो पर छा रहा था, अब

मानो किसीके स्निग्ध स्पद की मुग्ध वाष्प उनके नासाग्र को आपूरित कर रही थी। सोम के सामीप्य की उष्णता मे शैशव की हृदयोन्मेषिणी घनता थी, इस उष्णता मे यौवन की मादक गन्ध है। यह स्वप्न क्या है ? ऐसे स्वप्न वे बीच-बीच मे देखते रहे हैं मिसेज कपूर यदा-कदा स्वप्न मे उनकी मूक वेदना को शाति देने का प्रयत्न करती है, किन्तु जागते ही उनकी वह अतृप्त वेदना शतगुण हो जाती है। यह स्वप्न भी अभी शेष हो जाएगा, तब केवल इसकी अतृप्ति ही उनके पास रह जाएगी। सोम को पुन. कसकर अपने हृदय से लगा लेने स्वप्न मे ही उन्होने हाथ फैलाया, पर उनका हाथ एक बडे मासल-कोमल स्पर्श से एकाएक चौंक उठा—हाथ मे चूडिया जैसी कुछ, मिसेज कपूर—सचमुच स्वप्न ही तो है ! किन्तु उस स्पर्श को पाकर कमला एकदम घबडाकर उठ बैठी, कोई उपाय नही था, पलग की सतह से नीचे वह झुक गई।

मिस्टर कपूर की आखे खुल गईं, स्पष्ट ही मालूम दिया कोई था। धीरे से उनके मुह से निकल भी गया 'कौन ?'

कोई उत्तर नही ! क्या भ्रममात्र था—या स्वप्नमात्र ?—क्या अभी भी वे स्वप्न देख रहे है ?—नही, यह सोम सोया हुआ है। रात को बहुत देर बाद बडी कठिनाई से सो सका था। अभी भी ज्वर है, यद्यपि कम हो गया है। पर यह इसके गाल पर तप्त बूदें कैसी ?—क्या हो रहा था ?—पर मुद्रा वैसी दिखाई नही देती। अभी भी बडी गभीर शाति तथा तृप्ति के साथ सोया दिखाई दे रहा है। गाल का यह भाग अपेक्षा-कृत अधिक गर्म, मानो किसीके स्पर्श का उत्ताप हो !—नही-नही, यह स्वप्न नही है !

कपूर साहब उठ बैठे, मालूम पडा पलग के नीचे किसीकी फूली हुई सास दबाने की चेष्टा में रह-रहकर फूलती जा रही है। कोई चोर तो नही ?—अबकी बार पुन ज़रा कडककर कपूर साहब ने दुहराया 'कौन है ?—पलग के नीचे कौन है ?' और उन्होंने सिरहानें रखे हुए किसी लाइट के स्विच को दबा दिया। कमला ने एकाएक देखा कि कमरे मे

तीव्र प्रकाश फैल गया है। यह सन्तोष की बात है कि चारो ओर परदे पडे हुए है। किन्तु यदि कही कपूर साहब और चिल्लाए तो उसकी कुशल नही है। वह धीरे-धीरे पलग के नीचे से बाहर निकली और साडी के पल्ले की अपने दोनो हाथो से चुन्नट काटती हुई खडी हो गई, नीचे दृष्टि किए हुए, मुह दीवार की ओर, पीठ कपूर साहब की तरफ !

'कौन हो तुम ?'—एकाएक बिना उस ओर देखे कपूर साहब ने कहा।

'मैं हू, सोम को देखने आई थी !'

कपूर साहब ने पुन आखो को मसला, स्वप्न नही है—वही कमरा है, स्विच दबाकर अभी उन्होने प्रकाश किया है। सोम पलग पर सोया हुआ। सोम को देखने के लिए—तो श्रीमती नटनागर है—सोम बीमार है न, इसलिए देखने के लिए आई है ! बीमार—कपूर साहब ने व्यग्रतामयी निष्ठा के साथ सोम के बदन को स्पर्श करके देखा, ज्वर के साथ काफी रात तक उसका सघर्ष चलता रहा है। ज्वर अभी भी है, पर उतना तीव्र नही। कमला नटनागर है बच्चे की मा, स्वाभाविक ही है। चोर की तरह आने की जरूरत क्यो पड गई ? यह भी वे सोच सकते हैं, तभी उधर ही मुह रखे हुए कमला ने कहा, 'कृपा करके इस तेज रोशनी को बन्द कर दीजिए ! कोई देख लेगा—चोरी से आई हू, और जब पकड ली गई हू, तो रक्षा के लिए और किसे कहू !'

कपूर साहब ने यत्रचालित की भाति स्विच दबा दिया, मानो सर्कस के खिलाडी ने इशारे भर से खूखार शेर को पुन· पिंजरे मे बन्द कर दिया। कपूर साहब फिर भी खोए हुए-से सोचना चाह रहे थे कि आखिर यह सब सत्य है तो हो कैसे सका ?

चुप्पी को अस्वाभाविक समझकर कमला ने ही पूछा, 'क्या तबियत बहुत खराब है ?'

'सारी रात परेशान रहा। करीब दो बजे सो पाया है। अभी तो ज्वर भी उतना तेज नही मालूम पडता।'

'डॉक्टर क्या कहता है ? आप तो जानते है, मुझे कितनी चिन्ता हो गई है ।'

कपूर साहब ने परिस्थिति को ठीक तरह से समझ लिया । कमला की बात का उत्तर न देकर उन्होने कहा, 'चिन्ता की बात हो, फिर भी इस तरह चोरो की तरह आने का प्रयोजन तो समझ मे नही आया मेरी ।'

कमला ने मुह फिराया । तीव्र प्रकाश के बन्द हो जाने के बाद प्रकाश पहले जैसा साफ न था, फिर भी एक दूसरे की आकृति तो देखी ही जा सकती थी । कमला ने कहा, 'पति के डर से !'

'यानी पति की इच्छा के विपरीत !'—फिर एक क्षण तक चुप रह-कर उन्होने कहा, 'देखिए बडे स्ट्रगल (सघर्ष) के बाद सोम सो सका है, कही यह जाग न जाए, इसकी सावधानी हमें रखनी होगी । यही पास मे मेरा कमरा है । चलिए, वही बातें की जाएं ।'

'करने को अब बाते ही क्या हैं !—सोम को देख हो चुकी हूं—आज्ञा हो तो जिस तरह आई हू, उसी तरह चल दू ।'

'आने का मार्ग सुगम होने पर क्या जाने का मार्ग भी उतना ही सुगम है कमला देवी ?'

कमला ने पुन कपूर की ओर देखा । कपूर ने कहा, 'पति की इच्छा के विपरीत, चोर की तरह छिपकर, इस शेष रात्रि में आप यहा तक आ सकी हैं, अद्वितीय है साहस आपका । उस कमरे मे जाने से ही आप डर उठेंगी, क्या मैं इसका विश्वास कर लू ?'

'जहा डरने मे भला है, वहा डरना ही चाहिए । किन्तु यहा यदि सोम के जाग उठने का डर हो तो चलिए, आपके कमरे मे ही चलकर कैफियत दे लूं !'

मिस्टर कपूर उठे, चादर से उन्होने सोम को गले तक उढा दिया, बाजुओ मे दोनो ओर तकियो को ठीक किया, कमला सतृष्ण नेत्रो से केवल देखती रही । उसके बाद आगे-आगे कपूर साहब और पीछे कमला

बीच के दरवाजे को पार करके बगल वाले कमरे मे पहुचे। मिस्टर कपूर ने आगे बढकर एक बटन दबाया, वैसा ही हलका नीला प्रकाश इस कमरे में भी फैल गया। एक ही क्षण मे कमला ने देखा कि इस कमरे मे भी सब वैसी ही व्यवस्था है। केवल पलग एक ही है।

कमला ने कहा, 'यदि यह प्रकाश भी बन्द कर दे तो बहुत अच्छा हो, यह परदा हटा देती हू। इससे सोम भी दिखाई देता रहेगा, और आवश्यकतानुसार थोडा प्रकाश भी कमरे मे रहेगा ही।'

'जैसी आपकी इच्छा' कहकर कपूर ने पुन स्विच दबाया। अधकार हो गया, पर धीरे-धीरे उस कमरे के प्रकाश की छाया इस कमरे को भी स्पर्श करने लग गई। कोने मे पडी हुई एक आरामकुर्सी को अपने हाथ । उठाकर पलग के पास रखते हुए मिस्टर कपूर ने कहा, 'बैठिए।'—और वह पलग पर ही पैर लटकाकर बैठ गए।

कुर्सी पर बैठते हुए कमला ने कहा, 'पर अधिक देर तक मुझे रोक न रखिएगा मिस्टर कपूर।'

'मेरे रोकने से आप रुकेगी ?'

'मजाक नही कपूर साहब, आप नही जानते कितनी जोखिम उठाकर मैं यहा आ पाई हू।'

'पर इच्छा करते ही आप इस जोखिम से छुटकारा पा सकती हैं।'

'यानी ?'

कपूर साहब के मुह से अचानक ही उनके मन का भाव प्रकट हो गया था। पर अब तो उसका प्रतिविधान सभव नही है।

कहा उन्होंने, 'आपकी इस अमानत की रक्षा का भार अब मुझसे अकेले नही ढोया जाता।'

कमला ने एक क्षण के लिए कपूर की ओर देखा, जिस तरह कपूर सोम को घेरे हुए उसे दिखाई दिए हैं, क्या यह बात उन्हीके मुह की है ?—यदि है तो क्या उसके ऊपर विश्वास करना चाहिए ? उसने कहा .

'सचमुच नही ढो सकते ?'

'देख तो रही है ! अकेला आदमी—करे तो क्या ?'

'अकेली तो मैं भी हू कपूर साहब !'

'क्यो ? आपके तो पति हैं—जीवन-साथी; मुझ जैसी निस्सग कहा है आप ?'

कमला ने लम्बी सास ली, पर मुस्कराकर कहा, 'ऐसा साथी, जो ऊपर चढते हुए का पैर पकडकर नीचे खीच ले, साथ चलते हुए को धक्का देकर खड्ड मे गिरा दे। तभी तो मुझे इस रात को चोरो की तरह आना पडा है। ऐसे साथी की अपेक्षा निस्सग होना बुरा है ?'

'लेकिन यदि दो अलग-अलग बढने वाले यात्रियो का लक्ष्य एक हो ?'

'फिर भी रास्ते तो अलग-अलग हैं।'

'इसलिए कि वे अलग-अलग खडे हैं। यदि दोनो साथ हो लें ?—मैं जानता हू कमला देवी, सोम आपको प्राणो से प्यारा है—और आप भी उसी तरह जानती है, सोम ही मे मेरे प्राण अटके हुए हैं। आप कहेगी, आप अकेली इस बोझ को उठा सकती हैं, मेरे कन्धे कमजोर हो, किन्तु यह तो मेरे सिर ही का बोझ है। इसे उतारकर मैं ही कैसे रख दू ?'

कमला ने उठकर कहा, 'मुझे विदा दीजिए कपूर साहब, नारी का हृदय बडा कमजोर होता है। मैं चली—आपका बोझ आप जाने !' और वह दरवाजे की ओर बढी। मिस्टर कपूर ने उठकर जाती हुई कमला का हाथ पकड लिया। कमला ने छुडाने का प्रयत्न किया, किन्तु मिस्टर कपूर से वह अधिक पेश न पा सकी।

मिस्टर कपूर ने कहा, 'कुछ देर और बैठिए। बेअदबी मैं नही करूगा। इतना विश्वास यदि आपको न होता, तो इस रात्रि मे आप इस निर्जन कक्ष में नही आती !—चलिए, बैठिए !'—और उन्होने प्राय. जबर्दस्ती ही कमला को अपने पलग पर बैठा दिया, स्वय वे आरामकुर्सी पर बैठे।

कहना मिस्टर कपूर ही ने प्रारम्भ किया . 'अपने लिए मैं कुछ नही कहता आपसे !—मेरे कुछ आशा-विश्वास ही नहीं है, इस सोम को छोडकर। कोई यौवन का उन्माद कहे तो मैं क्या करू, किन्तु सच कहता हू, मिसेज कपूर के साथ ही मेरे हृदय का समस्त रस सूखकर पत्थर हो गया है।'

कमला ने बीच ही मे कहा, 'यदि आप चाहे तो किसी सुन्दर पढी-लिखी लडकी से विवाह कर सकते है। उस पत्थर को फोडकर रस का शीतल झरना बहने लग जाएगा।'

कपूर साहब ने हसकर कहा, 'मुझ बूढे से यदि कोई विवाह कर भी ले, तो मेरे वह किस उपयोग की ?—सोम तो कभी अपनी मा को नही पा सकेगा ?'

'क्यो ?— उस अवस्था मे मैं आपसे प्रार्थना करूगी कि सोम को मुझे लौटा दे।'

'लौटा लेगी आप ?

'उपाय ही क्या है ?'

'क्या नटनागर उसे स्वीकार कर सकेंगे ?'

'न करे ! मैं तो उसे त्याग नही सकूगी।—मा जो हू।'

'और उसका भविष्य ?'

कमला ने लम्बी सास ली—'पुत्र के भविष्य के लिए बहुत बडी कीमत माग रहे है कपूर साहब !—पर सोचिए, जब सोम बडा होगा, और सारी बाते समझ सकेगा, तब मै ही क्या उसे मुह दिखाने लायक रह सकूगी ?'

कपूर साहब ने कहा, 'मेरा दुर्भाग्य है कि आप इसे मेरा स्वार्थ मान रही हैं कमला देवी ! मैं विवाह नही करना चाहता—मरकर भी नही। नारी का मोह मुझे नही है, वह मेरी उमर नही रही। मन तो मेरा कोई क्या समझ सकेगा !—रहा सवाल सोम का—मै जानता हू कि आपका उसपर पूरा अधिकार है। आप प्रमाणित कर सकती है कि वह

आपका पुत्र है। कानून आपका सहायक है। मैं एकदम निरवलम्ब हूं, फिर भी सोम जैसे मेरे हृदय का ही एक अग हो गया है। यदि आप इसे मुझसे छीन लेगी, तो मुझे पगु ही बना देगी।—इतना होने पर भी मैं महसूस करता हू कि उसका जीवन चाहे मैं बना सकू, किन्तु उसका मन और उसकी आत्मा तो मैं नही बना सकता। वह तो मा ही कर सकती है। इसीलिए बच्चे के जीवन मे मा का भी महत्व है, पिता का भी—और वह भी उनका अलग-थलग रह कर नही, एक दूसरे की अन्योन्यता, अनुकूलता, परिपूरकता के साथ। क्या मेरी और क्या आपकी आशाए, कामनाए होगी ? हम तो अपना जीवन जी चुके, जो कुछ करना था, कर चुके, देख चुके, भोग चुके। किन्तु जिस तथ्य मे इस जीवन की सारवत्ता निहित है, जिसमे इस शरीर-क्रम की, नाशवान की धारावाहिकता, अमरता अक्षुण्ण रह सकती है, वह है सन्तान की सत्ता को बल देने की, वही दायित्व आपका भी शेष है, मेरा भी है। उद्देश्य की इस एकता, बल्कि साधन और सिद्धि की इस एकता के कारण ही मैं आपके निकट याचना करता हू कमला देवी। आप मुझे बल देगी, मैं आपको सहारा दूंगा, और हम दोनो आखो ही आखो मे सोम के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। क्या आपने अनुभव नही किया, आपके शरीर के स्पर्श मात्र मे सोम के लिए कैसा अव्यर्थ सजीवन है ? वह कैसी शाति की नीद सो गया है ?'

जाने कबसे कमला की आखे डबडबा आई थी, कमला खुद न जान सकी। रुधे हुए कण्ठ से उसने कहा

'किन्तु समाज क्या कहेगा ?—आपके यश, प्रतिष्ठा ! आपके क्लर्क, नौकर-चाकर सभी तो मुझे पहचानते है। वे क्या मुझसे घृणा न करेंगे और फिर मेरे पति ?'

कुछ क्षण तक सोचते-से रहकर मिस्टर कपूर बोले, 'आपके पति से तो आपकी बनती नही। शायद बनाने के लिए आप चेष्टा भी कर चुकी हैं। वैसे वे अकेले रहने के आदी भी हैं। मैं शीघ्र ही उनका कही दूसरी

जगह ट्रान्स्फर कर दूगा, एक ऊची पोस्ट देकर ताकि यदि वे जान भी ले तो मुह न खोले !—यो, एकाएक उन्हे जानने देने की जरूरत भी न होगी।—रहा सवाल नौकरो का—उन्हे भी एक-एक करके मै सबको बदल दूगा जो हमे पहचानते हो।'

'किन्तु यहा का सारा ही समाज तो मुझे जानता है।'

'उसके लिए भी उपाय किया जा सकता है।'

'क्या !'

दुष्टता की हसी हसकर कपूर ने कहा, 'सबसे पहले तो तुम्हारा ही यहा से ट्रान्सफर करूगा, ताकि सभी समझे कि तुम यहा हो ही नही। वहा से तुम्हे छिपाकर ले आना मेरा काम होगा ! उसी बीच यहा का स्टाफ बदल दिया जाएगा। कुछ दिनो तक तुम बाहर न निकलोगी तो सभी भूल जाएगे !'

'किन्तु सोम क्या समझेगा यह तो आपने सोचा ही नही।'

'वह ठीक ही समझेगा। जिस तरह के सस्कार हम देगे, बडा होने पर वे ही उसके सोचने की क्रिया को सचालित करेगे।'

कमला पलग के सिरहाने के पटिए पर सिर टिकाए जाने किस लोक मे काफी देर तक खोई रही, उसने कपूर साहब की ओर दृष्टि फिराई, वे उसकी दृष्टि की ही प्रतीक्षा कर रहे थे। बडे आकुल कण्ठ से उसने कहा, 'किन्तु मुझे लेकर क्या आप सुखी हो सकेगे ?'

कपूर साहब ने देखा कि उसकी आखो से आसुओ की धारा बह रही है, जिससे उसकी वाणी भी कपित हो उठी है। उठकर वे कमला के पास ही आ बैठे, उसके आसुओ को तकिए के ऊपर पडे हुए नैपकिन से अपने हाथो से पोछकर उसके हाथो को उन्होने अपने हाथ मे ले लिया। कमला ने इस बार कोई बाधा न दी, केवल उसके आसुओ का प्रवाह और भी तीव्र हो उठा।

मिस्टर कपूर ने कहा, 'और मेरे जीवन का एक सबसे बडा सुख यह होगा कि मैं तुम्हे सुखी बना सकू !'···कमला ने कपूर से हाथ छुडा

लिए, और विद्युद्वेग से उठकर उसने कहा, 'नही, नही, मेरा सुख नही—सुख नारी के लिए नही बना, उसे सतोष ही दे सके, यही काफी है। आपने मेरी समस्त शक्ति को नष्ट कर दिया कपूर साहब !—समझ नही पाती, क्या मुख ले जीवित रहूगी ?—क्या लेकर अपने आत्म-परिजनो के बीच खडी रह सकू गी।—मुझे जाने दीजिए।—मरने दीजिए, दु:ख की आग में।—सोम मेरा क्या लगता है ?—वह आपका पुत्र है, आप जाने और वह जाने।—मैं चली। जीवन मे बहुत विडम्बना झेल चुकी हू, अब नही, अब अधिक प्रतारणा-छल नही।—'और कमरे के दरवाजे पर जाकर उसने परदा हटाया। उस कमरे की तरह इसका केवल जाली का दरवाजा ही बन्द नही था, दूसरा आधे काच और आधी लकडी का दरवाजा भी बन्द था। पर जैसे ही परदा हटाया गया—दोनो ने आश्चर्य से देखा कि बाहर उनके अनजाने ही दिन का काफी प्रकाश फैल गया है। शीघ्र ही कमला ने पुन परदा फैला दिया।

कपूर साहब भी तब तक उठकर कमला की ओर ही आ रहे थे। विक्षिप्त-सी कमला उसी रोरुद्यमान मुखमण्डल को लिए हुए कपूर साहब के चरणो मे गिर पडी, बोली—'कपूर साहब मेरी रक्षा कीजिए।'

दोनो हाथ पकडकर कमला को उठाते हुए उन्होने कहा, 'माफ करना जिस आवेश में मैं तुम्हे 'तुम' कहने लग गया हूं, उसे अब लौटा न सकूगा!'

'चूल्हे मे जाए आपका 'आप-तुम' ! अब मैं क्या करू ? मैं कैसे जाऊगी ?'

'शिब्बू को साथ भेज दू ?'

'शिब्बू को ?—पर सारी रात गायब रहकर प्रात.काल आपके घर से आपके नौकर के साथ निकलू ?'

'तो मैं चलू ?'

कमला ने अपने दोनो हाथो को एकाएक ही कपूर साहब के कधे

पर पटककर उनकी आखो मे आखे डालकर कहा—'मेरी लाज आपके हाथ है।—मजाक छोडिए।'

कपूर ने कहा, 'तो ठहरिए! सोम को जगाए देता हू। वही आपको घर पहुचा आएगा।'

'किन्तु मेरे घर पर भी तो नौकर-चाकर है।'

'तो फिर यही ठहरिए!'

'और घर के लोग मुझे न पाकर क्या करेगे?'

'कुछ न कुछ कल्पना कर ही लेगे। पर शायद नटनागर तो नौ बजे से पहले उठते नही?'

'नही।'

'तो फिर, दफ्तर से जब तक वे लौटे नही, तुम्हारा उन्हे खयाल ही नही होगा बल्कि दफ्तर से वे काफी देर से लौटे, इसकी व्यवस्था मैं कर दूगा। अधेरा होने पर शाम को लौट जाना।—इधर सोम यदि तुम्हें देख लेगा, तो उसे बहुत प्रसन्नता होगी। आज यदि परिस्थितियो ने सहायता दी है, तो तुम्ही न क्यो उसका भार लेकर अपने प्रभाव को जाच लेती हो।'

'किन्तु स्कूल का क्या होगा?'

'एक अप्लीकेशन लिख दो, अस्वास्थ्य की, स्वीकृति करके मैं उसे लौटा दूगा, किसीको सन्देह भी न होगी।'

कमला ने एक लम्बी सास ली, बडे ही विवश पैरो से वह पलग पर आकर इस तरह बैठ गई, जैसे उसे अपने ऊपर कोई अधिकार ही न रहा हो। उसने केवल यह कहा:

'किन्तु शिब्बू को छोडकर और किसीको भी मेरा पता नही लगना चाहिए।'

'बल्कि शिब्बू को भी नही। उसे यही कहा जाएगा कि तुम अभी बुलाई गई हो।'

उसी समय पास के कमरे से सोम ने पुकारा 'पापा!'—कपूर साहब

कमला को वही छोडकर सोम के कमरे मे चले गए।

कमला आखे बन्द करके अपने अदृष्ट को देखने लगी।

२४

दादू विकेट गेट से जरा दूर हटकर ही झाडी मे अपने आपको छिपाए कमला की राह देखता बैठा रहा। बहुत समय बीत जाने पर भी जब वह नही लौटी, तो वह उद्विग्न हो उठा। क्या करे ? कही आफत मे फस गई उसकी मालकिन तो ? कितनी अच्छी है उसकी मालकिन, यदि सिर्फ यह कमजोरी उसमे न होती। दादू जानता है कि इसी तरह उसकी आखो के सामने कमला का कमल से अभिसार चलता था, फिर बडे बाबू धर्मप्रकाश से—उसका नौकर रामू तो इसी चर्चा को चलाकर उसके हाथ का प्रसाद भी पा चुका है ! फिर—जाने कौन-कौन और रहे होगे, जिन्हे दादू नही जानता, और यह भी तो वह बन्द आखो तभी देख सका है, जब वह जागता रहता। सचमुच सो जाने पर क्या कुछ होता रहा है, उसे वह कैसे जान सकता है ! और अब आज यह क्या कर बैठी वह ? पूरब मे उधर प्रकाश फैलना चाह रहा है, लोगो की आवाजाही शुरू हो गई है। किसीने अगर उसे वहा इस तरह चोर की भाति दुबका बैठा देख लिया, तो क्या होगा ? उसे पुलिस मे न पकडा देगे लोग ? और तब क्या सारी बात खुल न जाएगी ? लौटकर आती क्यो नही ? ऐसा भी क्या गाफिल हो जाना, कि किसी तरह का होश ही न रहे। क्या करे वह ?

तभी बडे साहब का ग्वाला दूध दुहने के लिए फाटक मे घुसा। चक्कर ने घूमकर कुछ शोर किया, दूर से साहब का कुत्ता भौक उठा, उधर से दरबान ने आवाज लगाई 'कौन ?'

'ग्वाला !' दरबान ने कुत्ते को शायद कुछ कहा, उसका भौंकना बद हो गया। ग्वाला आगे बढ गया।

दादू के पहाड जैसे बदन मे कपकपी छूट गई। जिस समय कमला गई, न तो यह फाटक ही बोला था, न कुत्ता ही। शायद कही सोया पड़ा होगा। दरबान तो कुत्ते के भरोसे खर्राटे लेता रहता ही होगा। पर यदि कुछ जरा-सी भी असावधानी से वैसा कुछ हो गया होता तो ? और तभी, इसके पहले कि दादू उसके फलाफल की कल्पना करे, उसने देखा कि दूर से वह कुत्ता किसीको सूंघता हुआ दरवाजे की ओर ही बढा चला आ रहा है। क्या उसे दादू की गध लग गई है ? यदि वह पास आकर भौके नही और केवल सूघने के बहाने उसका पैर ही पकड ले ? नही, नही, वह अब नही ठहर सकता। और एक क्षण की भी देरी न करके वह उठ खडा हुआ, और कटी हुई झाडी की रेलिंग के सहारे झुका हुआ विकेट गेट पार करके वह अपने घर की ओर चला, अवश्य ही रुक-रुककर पीछे देखते हुए—पता नही मन मे कमला के लौटने की आशा को स्थान देकर या उस कुत्ते के डर को ! और जब स्कूल की चहार-दीवारी के भीतर उसने कदम रखा तो एक लम्बी सास उसकी छाती को दबाकर ऊपर उठ गई। जाने क्या होगा उसकी मेम साहिब का ! भय के मारे वह उनके बगले पर भी नही गया। वह जानता है नटनागर साहब नौ-दस बजे से पहले कभी नही उठते। उसके पहले ही मेम साहब अपना सारा प्रात कालीन कार्य निबटाकर स्कूल पहुच जाती हैं। अभी वहां जाने से उसे कोई भय नही है। फिर भी वह वहा नही जा सका। गया और दूर एक कोने मे बनी हुई अपनी एकान्त कोठरी मे जाकर पड़ रहा। शायद बहुत देर तक करवटे बदलने के बाद, उसकी थकी हुई आखे गम्भीर निद्रा मे मुद गई।

नटनागर सचमुच नौ से पहले नही उठते। रात्रि को वे बारह-एक बजे से पहले कभी सो नही पाते, उन्हे अनिद्रा का रोग है। रात को तो वे और भी क्लान्ति के बाद सोए थे। मिस्टर कपूर को यह विदित था,

अतः उनके लिए एक घटा लेट तक उपस्थित होने की रियायत थी। यो भी आफिस मे अपने विभाग के बडे बाबू थे। शनिवार की रात को छोड़कर प्राय: प्रत्येक रात्रि को नौ बजे का अलार्म भर दिया जाता। नौ बजे जब नटनागर उठते तो कमला स्कूल जा चुकी होती। वह सवेरे पाच बजे ही उठ जाती है। निबटकर अपनी चाय अकेली ही शेष कर लेती है। सात बजे उसे स्कूल पहुचना होता है। वह स्कूल की सुपरिण्टेण्डेण्ट है, समय की उसपर वैसे खास पाबन्दी नही, किन्तु कमला ने एक तरह से नियम बना लिया है। कभी-कभी नौ-साढे नौ बजे तक वापस आ जाती है, तो नटनागर के साथ चायपान कर लेती है, कभी नही आ पाती तो नटनागर स्वयं ही अपनी चाय शेष कर लेते है। साढे दस, पौने ग्यारह तक वे दफ्तर के लिए तैयार हो लेते हैं। जब सवेरे कमला के साथ जलपान नही होता, तो कमला के साथ साक्षात्कार पुनः साढे पाच के पहले नही होता। साढे पाच बजे नटनागर दफ्तर से लौटते है। साथ ही चाय पीते है। कभी कमला स्कूल चली जाती है, बच्चो के खेल का कार्यक्रम देखने, कभी दूसरी व्यवस्था देखने। सात बजे तक लौटकर सध्या का भोजन दोनो साथ करते है। फिर उसके बाद दोनो को अपना-अपना काम।

उस दिन नियत समय पर जब सुपरिण्टेण्डेण्ट स्कूल नही पहुंची तो अध्यापिकाओ ने सतोष की सास ली। आराम से पैर फैलाकर उन्होने चाय-पान किया, फिर छात्रो की प्रार्थना मे योग दिया, खेल-कूद, परेड, हुआ सब कुछ यथाक्रम! न जाने कब वह आ टपके, पर फिर भी वह तनाव नही था, जो उनकी उपस्थिति मे रहा करता है। सुपरिण्टेण्डेण्ट कर्तव्य-क्षेत्र मे बडी अनुशासन-प्रिय और दृढ हैं। जब नौ बजने तक भी नही आई है, तो हो सकता है, सामान्य-सा कही ज्वर वगैरा हो गया हो। या भोजन के बाद दुपहर की कक्षा तक वे आ जाए! खैर जब वे हैं नही, तो आराम से ही सारा काम होना चाहिए। उनके लिए सिर-दर्द की जरूरत ही क्या है?

दुपहर के बाद मे प्रधान कार्यालय से आई हुई डाक मे सुपरिण्टेण्डेण्ट का एक प्रार्थनापत्र है, अस्वास्थ्य के कारण अनुपस्थिति के लिए क्षमा का, और उसपर स्वीकृति के हस्ताक्षर है क्षेत्रीय-निरीक्षक के। चलो आज तो आराम से कटेगा।

कपूर साहब नौ बजे ही दफ्तर पहुच गए। चपरासियो को भी आश्चर्य हुआ। साहब इतनी जल्दी दफ्तर आते नही, वे अभी दफ्तर साफ भी नही कर पाए थे, यद्यपि उनको आठ बजे ही साफ कर रखने की हिदायत थी। एक चपरासी, जो अभी तक आया भी नही था, बरतरफ कर दिया गया, दूसरे पर दो रुपये जुरमाना हो गए, वह रोता ही रहा कि बेचारा अकेला कैसे समय के भीतर सारे दफ्तर की सफाई सम्पन्न कर सकता है। अधिकारी के सामने जीभ हिलाना भी नीति शास्त्र के प्रतिकूल है, अत दो रुपये के साथ उसे तबदील भी कर दिया गया। गुनाह उसने नही किया तो उसकी मा ने तो किया ही था, आज न हो तो कुछ बरस पहले, बहाव के ऊपर नही तो नीचे—पर व्यवस्था भेडिये की जो ठहरी, मेमना बेचारा क्या करे ?

दस बजे तक, जब तक कि आफिस ठीक तरह से शुरू हो, कपूर साहब ने कई केसो को निपटा दिया। आज वे मानो किसी बेलगाम घोडे पर बैठे किसी शून्य मे पैठे उडे जा रहे थे, यह कहना कठिन है कि वह शून्य आकाश की ऊचाई थी, या पाताल का गम्भीर निविड खोखलापन। दस बजे के पहले-पहले सामान्य डाक के साथ कपूर साहब ने कमला की अर्जी भी जेब से निकालकर तथा उसपर आवश्यक आदेश लिखकर स्कूल भिजवा दी। उधर से मुक्ति की सास लेकर उन्होने घटी बजाई, और चपरासी को आदेश दिया कि बडे बाबू को भेज दे। कपूर साहब खूब जानते थे कि नटनागर अभी आए न होगे। यही खबर लौटे आकर चपरासी ने दी। चपरासी को आदेश मिला कि जैसे ही वे आए साहब से मिल ले।

ठीक समय पर नटनागर दफ्तर आ पहुचे, तो चपरासी ने हाथ

उठाकर सलाम किया, और साहब का आदेश सुना दिया। नटनागर पहले अपनी सीट पर गए, और अपने प्रथम सहायक वर्मा से पूछा, बात क्या है।

वर्मा ने कहा, 'बात तो कुछ मालूम नही। पर साहब बड़े नाराज मालूम देते है। नौ बजे से ही दफ्तर मे डटे है, खलासी नेतराम को डिसमिस कर दिया है, और पियून हरीराम को जुर्माने के साथ तबादला!'

'अच्छा!' नटनागर एक बार तो अपनी कुर्सी पर बैठकर सुस्ताने-से लगे। खैर इसमे घबराने की क्या बात है, उन्होने पहले ही अपने हेल्थ के ग्राउण्ड पर लेट अटेण्डेन्स की परवानगी ले रखी है। जरूरत पडने पर पाच के बाद बैठते ही है, और छुट्टियो मे भी अटेण्ड करते हे, कभी ओवर टाइम का दावा नही किया। डरने की क्या बात है? कोई सर थोडे उडा देगे? और वे उठकर दर्प के साथ चले। सभी क्लर्कों ने, चपरासियो ने उनकी भावभगी को देखा और मन ही मन उनके साहस की तारीफ की।

किन्तु साहब के कमरे के सामने आते-आते चाल मे वह हेकडी न रही, न मुह पर वह साहस का भाव रहा। पैरो मे थोडी-थोडी कपकपी भी महसूस की जा सकती थी, दिल की धडकन भी बढ गई थी।

स्प्रिग के दरवाजे को ठेलकर नटनागर कमरे मे पहुचे, और बोले, 'गुड मार्निग सर!'

साहब ने टेबल पर कागजो मे दृष्टि गडाए हुए कहा, 'गुड मार्निग!'

कुछ क्षणो तक नटनागर प्रतीक्षा करते रहे, बडी टेबल के उस किनारे खडे-खडे। चश्मे की छाया के भीतर से फाइल पढते रहने का बहाना करते हुए कपूर साहब ने नटनागर के चेहरे को पढने का प्रयत्न किया। देखा कि पत्नी-विषयक कोई परेशानी उनके चेहरे पर नही है, कमला ने जो कहा था, वही सच है।

कुछ देर तक प्रतीक्षा करते रहने से नटनागर मे कुछ आत्मविश्वास बढ गया। उन्होने साहब का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, 'इट्स मी

सर, नटनागर, यू वाण्टेड मी सर ?' (यह मै नटनागर हूं महाशय, क्या आपने मुझे बुलाया था ?)

'यस !'—और फिर कुछ पल उन्होने सामने रखी हुई फाइल को पढने मे लगा दिए। फिर सिर उठाकर उन्होने कहा, 'तुम दफ्तर प्रायः कब आते हो ?'

'ग्यारह बजे। आपसे मैने इसके लिए परमिशन भी ले ली थी।'

'यस, यस, आई नो दैट !'—(मैं जानता हू) क्या तुम्हारी वह बीमारी अभी भी चल रही है ?

'बल्कि बढ ही गई है सर।'

'सौरी नटनागर !—लेकिन देखते हो न, तुम हो यहा पर हेड-क्लर्क, तुम्हारे समय पर न आने से क्या होता है, सो सोच देखा है ? दफ्तर आठ बजे साफ हो जाना चाहिए। आज नौ बजे तक फर्राश का तो पता ही न था ! समझ नही पाता, ऐसी समस्याओ का हल क्या होगा, यदि हेड क्लर्क ही समय पर न आए।'

नटनागर ने साहस बटोरकर तथा थूक निगलकर कहा, 'मैं मजबूर हू सर, इस बीमारी से। एक्स्ट्रा टाइम (अतिरिक्त समय) भी मै डिवोट (समर्पित) करता ही हू।'

'सो तो है, किन्तु उससे तो समस्या हल नही होती। हेड क्लर्क का पद केवल कागज लिखने इतना ही नही है नटनागर, यह तो तुम जानते ही हो, यह है एक एडमिनिस्ट्रेटिव पोस्ट, जहा इनीशिएटिव (पहल) की आवश्यकता होती है।'

'यस सर !—अगर मेरे ट्रान्स्फर से समस्या का हल निकल सकता हो तो....'

कपूर साहब ने सीधे नटनागर की ओर देखा, नटनागर की आखे नीचे झुक गईं। बलिहारी है इस व्यवस्था की कि चोर शहजोर होकर साहूकार को डाटे, और साहूकार उससे आख भी न मिला सके।

कपूर साहब ने कहा, जरा कडककर, 'ह्वाट डु यू मीन ? (तुम्हारा

मतलब ?) दाए हाथ मे तकलीफ होने पर डॉक्टर उसे बाए हाथ मे भेज देने को समस्या का हल नही मानता। अगर मुझे लगता हो कि मेरे यहां एक बुराई है, तो समझते हो मैं उसे दूसरे दफ्तर मे भेज देने से सतुष्ट हो जाऊगा ? आई नो हाउ टु डील विथ ऐन ईविल' (एक बुराई से पेश पाना मै जानता हू।)

नटनागर के मन के एक पहलू मे रात की कमला की बात का अश बिजली की तरह चमक उठा, और वे चाहने लगे कि कहे, 'यह त्याग-पत्र लीजिए ... ! इसके अधिक आगे शायद आप 'ईविल' को 'डील' करना जानते न हों !' किन्तु उनके मन का दूसरा पहलू एक सामान्य क्लर्क का कायर सस्करणमात्र था; कायर होते हुए भी अपने ही प्रति-द्वन्द्वी मन पर उन्होने उस क्षणाश मे ही विजय पा ली। नटनागर ने कहा, 'मुझे अफसोस है यदि मैंने आपको कष्ट पहुचाया हो, यह मेरा इरादा नही था। मैं सिर्फ अपने एक ऐसी हैण्डीकैप (अभाव) की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता था, जिसके ऊपर मेरा कोई नियत्रण नही है। आपने स्वयं इस दिशा मे मुझसे सहानुभूति दिखाई है, जिसके लिए मै आपका कृतज्ञ हू, और आपकी उसी कृपा के लिए ही फिर प्रार्थना कर सकता हू।'

कपूर साहब ने कहा, 'वेल आई विल ट्राइ टु अकॉमोडेट यू ! (मैं तुम्हारे इस अभाव से आदी होने की चेष्टा करूंगा) अभी तुम अपने सेक्शन क्लर्क से हिदायत कर दो कि उसे यहा साढे नौ बजे उपस्थित हो जाना चाहिए, नही तो उसके हक मे अच्छा न होगा।'

'वेरी वेल सर !' और नटनागर ने जाने के लिए मुह फिराया।

मिस्टर कपूर ने, जैसे ही वे दरवाजे तक पहुचे, कहा, 'ऐण्ड सी ! (और देखो) इन कागजो पर मुझे नोट्स चाहिए। जल्दी से जल्दी कब दे सकते हो ?' नटनागर ने फाइलो के ढेर पर निगाह डाली और कहा :

'सर, मुझे अध्ययन करना पडेगा, फिर भी इसी हफ्ते के भीतर ही भीतर...'

'नो-नो आई वाण्ट इट आल बिफोर टुमारो ! (मैं सब यह कल के पहले चाहता हू ।) परसो बडे सवेरे की गाडी से मुझे बाहर जाना हो सकता है । डू यू अण्डरस्टैण्ड ?' (समझे ?)

'यस सर, आई विल ट्राई !' (मैं चेष्टा करूगा ।)

'नो, आई मस्ट हैव ईट सर्टन बाई टुमारो मौनिंग ।' (मै कल निश्चित चाहता हूं ।)

यानी यदि नटनागर काम मे व्यस्त रहे, तो आज दुपहर का खाना क्या, रात्रि का खाना भी ऑफिस ही मे मगाकर खाना होगा ।

नटनागर ने पीठ मोडी, और मिस्टर कपूर के अधरो पर एक शैतानी-भरा हास्य फैल गया, जिसे तत्काल ही आए हुए चपरासी ने भी लक्ष्य कर लिया, यद्यपि मिस्टर कपूर को उसके आने का ध्यान भी न था ।

जब उसने टेबल पर रखे कागजो को इधर-उधर किया तो कपूर साहब की चेतना जागी । उन्होने हृदय-भेदी दृष्टि से चपरासी की ओर ताका । कागज लेकर वह दरवाज़े से बाहर हो गया ।

कपूर साहब फिर गत रात्रि के व्यापार मे खो गए । कमला की समस्या को किस प्रकार पार लगाया जा सकता है ?—यह तो स्पष्ट है कि वह सोम के लिए सब कुछ छोड सकती है । नटनागर के लिए उसके हृदय मे भय हो सकता हो, पर घृणा भी कम नही है । किन्तु भय किस लिए हो ?—नटनागर एक तुच्छ क्लर्क, वह उससे अधिक शिक्षिता, बुद्धिमती—आर्थिक दृष्टि से सर्वथा स्वतन्त्र, फिर शायद नटनागर की अपेक्षा उसे समाज ही का भय कहना अधिक उत्तम होगा । कमला को यहा सभी पहचानते हैं, यद्यपि उसे आए कुछ ही समय हुआ है । मिसेज़ नटनागर इतनी जल्दी मिसेज़ कपूर बन जाए, यह कमला के लिए ही नही, कपूर साहब के लिए भी एकाएक आश्चर्यकर मालूम देगा । यहा से भागा नही जा सकता । इतनी बडी पोस्ट, इतना दायित्व और यह कर्म ?—यहा रहकर कमला उनके घर नही रह सकती । वह बहुत बड़ी बदनामी होगी । केवल एक ही उपाय है, नटनागर कमला को तलाक

दे दे, और फिर कपूर साहब उससे विधिवत विवाह कर लें, किन्तु यदि दोनो नटनागर तलाक के लिए तत्पर भी हो जाए, तो भी इसमे झमेला बहुत है, और समय की भी बहुत अपेक्षा करनी पड़ेगी। फिर क्या किया जाए ?

नटनागर का यदि यहा से ट्रान्स्फर कर दिया जाए, तो कमला को उनसे मुक्ति मिल सकती है, और तब साधारण तौर पर उनके मिलन मे कोई बाधा नहीं उपस्थित होगी। तब समय की पृष्ठभूमि मे उनके सम्बन्ध को विच्छिन्न करने मे शायद अधिक कठिनाई न हो। इसके सिवा और तो कोई मार्ग दिखाई नही देता। अच्छा उनके ट्रान्स्फर की भूमिका तो तैयार करनी ही होगी। आभास वे स्वय दे गए है, उनका सुझाव ही सही।

एक और उपाय हो सकता है !—पर उसकी क्षुद्रता का ध्यान आते ही उन्हे अपने ही ऊपर घृणा की एक हसी-सी आई। कमला विधवा होकर सरलता से बिना अधिक समय की प्रतीक्षा किए उनकी हो सकती है। नटनागर बीमार तो है, टी० बी० जैसी बीमारी का उनका उपचार हो गया है, किन्तु यदि एकाएक उन्हे कुछ हो जाए तो किसीको सहसा अविश्वास तो नही होगा। उनको अनिद्रा का रोग है, किन्तु यह समाचार किसीने नही दिया कि वे रात्रियो का जागरण शहर के बदनाम मुहल्लो मे व्यतीत करते हो। यदि ऐसा होता, तो गुण्डो की सहायता ली जा सकती थी। अच्छा, क्या कोई व्यक्ति लगाकर उन्हे वहा का रास्ता नही सुझाया जा सकता ?—कौन व्यक्ति है ऐसा ?—उनका क्या ऐसा कभी कोई क्षेत्र रहा है ?—अच्छा क्या ओझा इसमें कुछ सहायता कर सकता है ?—नही-नही, वह इस बात की गन्ध भी पा लेगा, तो विरोधी हो उठेगा।—पर क्यो ?—आखिर कमला से उसका सम्बन्ध और कौन-से अन्य प्रकार का था ?

यों, कई तरह के विष हैं कि पता भी न लगे, और काम समाप्त ! पर विष दे कौन ?—कमला ? वह क्या इसके लिए तत्पर हो सकती है कभी ?—घृणा करने से ही कोई किसीके प्राणों का ग्राहक नही हो

जाता। किन्तु ··

अधरो पर एक क्षीण हसी का अनुभव करके उन्होने अपने आप से कहा—'वाह मिस्टर कपूर ! कमला के जादू-से स्पर्श पाकर ही तुम इतना नीचे सोचने लग गए ? उस समय तो बडे दर्प के साथ कमला के सामने तुमने कहा था, मुझे कुछ नही चाहिए, केवल मेरे इस बीमार लडके के लिए मा की जरूरत है। यह गरज मेरे अकेले की नही, तुम्हारी भी है कमला देवी !—मेरे से अधिक यह तुम्हारी सन्तान है। मैं तो केवल तुम्हारी बेगार ढो रहा हू। क्या इतनी सहायता भी तुम मुझे नही दोगी ?'

किन्तु सोम ?—सचमुच वह बीमार है, उसे निश्चय ही मा चाहिए। कमला से बढकर और कौन उस स्थान को पूर्ण कर सकता है। यदि कमला उन्हे नही मिली तो क्या सोम को वे बचा सकेगे ?—तब क्या होगा ? उसके सन्तान की रक्षा न कर सकने के कारण क्या कमला ही उनसे घृणा नही करने लग जाएगी ?—कौन-सा तथ्य अधिक ओछा, अशोभनीय और असहनीय है ? एक ओर स्वेच्छा से अपनी सन्तान की हत्या करना, दूसरी ओर नटनागर को रास्ते से अलग हटाना।—नही-नही, इतने नीच तो वे कभी न थे। अब भी नही बन सकेगे , और फिर कमला को यदि मालूम हो जाए, तो वह क्या सोचेगी ?· ··

कपूर साहब ने मन लगाने के लिए एक और फाइल सामने रख ली।

चाय पर चाय के प्याले शेष करके, जमुहाई लेते-लेते जब नटनागर ने आखिरी फाइल पर से कलम उठाई तो दफ्तर की घडी साढे नौ बजा रही थी। इतना परिश्रम उन्होने कभी नही किया था। सारा शरीर थककर चूर-चूर हो गया था, और मन उबल-उबल पडकर न केवल इस दफ्तर के अधिकारियों को, प्रत्युत् सारे रेल मत्रालय को, भारत सरकार को—नही सारी इस ऊच-नीच वाली समाज-व्यवस्था को झुलस देना चाहता था। चपरासी दरवाजे के पास दूर एक स्टूल पर ऊघ रहा था,

क्रोध में भरे हुए नटनागर ने उस फाइल को वही से फेंका, कि उसके कागज पानी के टब मे स्नान के लिए उतरी हुई कबूतरी के पख की तरह डोरी के बंधन से हाथ-पैर छुडाकर चारो ओर झाकने लगे, और उन्होने कहा :

'यह लो—करो इससे कपूर साहब के श्राद्ध का तर्पण।'—और वे उठ खडे हुए, घर जाने के लिए।

कमला के ऊपर उनका क्रोध रात्रि को ही नष्ट हो गया था। उसे मान करने का हक था, सवेरे वह उनसे शायद इसलिए जानकर नही मिली। चलो, इतनी देर करके जाने से बदला पूरा हो गया। चिन्तातुरा वह उन्हे दरवाजे पर मिल सकती है। अपना आखिरी राउण्ड उसने शेष कर लिया होगा। अब वे उस राउण्ड मे कमला के साथ नही जाते। सोम वहां से हटा लिया गया है, कमला के वहां अधिक अटके रहने का प्रयोजन ही नही है।

लेकिन घर पर पहुचते ही उन्होने अनुभव किया कि उनकी कल्पना को मानो कभी सच होने का सौभाग्य ही नही है। इस समय तक दादू भी बरामदे मे अपना बिस्तर लगा लेता है, आज उसका भी पता नही। शायद कमला अभी तक अपने राउण्ड से लौटी नही है। रात्रि के शेष राउण्ड के समय दादू उसके साथ पहरेदार की तरह रहता है। खैर, अब आती ही होगी। यदि उनके हाथ-मुह धोने तक भी न आई तो वे स्वय जाकर उसे लिवा लाएगे। नौकरी की इस जिल्लत मे जब तक कमला भी शरीक नही हो जाती, उन्हे खाना रुचेगा नही। यदि कमला उन्हे कुछ थोडा साहस बधा दे, तो वे इस अन्याय को कदापि नही सहेंगे। आवश्यकता पडने पर त्यागपत्र देने के लिए तो वे यो भी तैयार हैं।

भिडे हुए दरवाजे को नटनागर ने धक्का दिया, वह बिना आवाज किए सरलता से खुल गया। उधर रसोईघर से रोशनी आ रही है, रसोईदारिन अवश्य अब तक बैठी होगी। बस शीघ्र ही कपडे बदलकर वे आए।

किन्तु तब तक भी कमला जब न आई, तो कपडे बदलकर जाने के पहले नटनागर ने रसोईघर मे जाकर देख आना आवश्यक समझा। भीतर गए, तो देखा, कि फर्श पर रसोईदारिन लेटी हुई सो गई है। चूल्हे पर खाना बना हुआ पडा है। मालूम देता है अभी किसीने खाया नही—शायद कमला ने भी नही। तो फिर दोनो आज साथ खाएगे।

नटनागर पुनः अपने कमरे में आ गए। उन्हे सब कुछ अजीब-सा, नया-सा लग रहा था। क्या था, यह वे समझ नही पा रहे थे। उन्होंने चारो ओर दृष्टि दौडाई। लगभग बारह घण्टे हुए वे दफ्तर गए थे, तब उन्होने यह घर छोडा था। यद्यपि घर की सफाई आदि हुई है, फिर भी ऐसा मालूम देता है, मानो सभी कुछ बासी हो। किसीने किसी वस्तु को हाथ तक लगाने की आवश्यकता अनुभव नही की है। ऐसा तो प्राय: होता नही। कमला कभी निष्क्रिय बैठी नही रह सकती, कुछ न कुछ करती ही रहती है। इसके अलावा, हर वस्तु को किसी प्रकार से सुरुचिपूर्ण तरीके से स्थान-विशेष पर रखने का उसका ढग है, उसमे भी बासीपना कभी नही रहता। आज इस तरह तो कल उस तरह—नही, मालूम देता है, आज इस घर को वह जादुई स्पर्श जैसे लाभ ही नही हुआ। तो क्या कमला भी उन्हीकी तरह आज दिन भर स्कूल मे व्यस्त रही ?—ऐसी लाचारी किस काम की ?—यदि ऐसा हुआ तो सबसे पहले कमला को ही त्यागपत्र दे देना चाहिए।

चाबुक खाया हुआ नटनागर का उत्पीडित मन आज कमला के लिए सहानुभूति से उमडा पड़ रहा है। वह उनकी पत्नी ही तो है, एक दिन सचमुच ही उन्होने उसे प्यार भी किया था सर्वान्त करण से। प्यार आज भी उनका कम नही हुआ है। केवल कमला की दृष्टि मे कुछ दोष उत्पन्न हो गया है, समय का व्यवधान आप उस दोष को दूर कर देगा। जो भी हो, फिर भी वे पति-पत्नी है। उनकी बात वे ही न समझेंगे, तो समझेगा कौन ?

उन्होने रसोईघर के दरवाजे पर जाकर कुण्डी खटखटाई। रसोई

बनाने वाली मिसरानी हडबडाकर उठ खडी हुई, साहस कर बोली :

'कौन—मेम साहब ?'

'नही—मै हू नन्नू !—क्या मेम साहब अभी तक स्कूल से लौटी नही ?'

मिसरानी ने घूंघट निकालकर सामने आते हुए कहा, 'मेम साहब का तो सवेरे से ही पता नही है ! शाम को वहा से एक बाई आई थी उन्हे पूछने के लिए, वे भी कह रही थी कि मेम साहब वहा नही है।'

'कहती क्या हो ?—पता नही लगाया तुमने उनका ?'

'मैं कहा से लगाती ?—' और फिर मानो अपने ढग से यह बताते हुए कि वह केवल खाने-पकाने जितनी ही नौकरी करती है, पता लगाने की नही, उसने कहा—'मुझे बहुत देर हो गई। घर पर बच्चे रो रहे होगे। खाना चूल्हे पर रखा है।'—और वह कमरे से बाहर होती हुई मकान से बाहर हो गई।

घर और बर्तन साफ करने वाली नौकरानी प्रात और सायकाल आती है। घर मे एक नौकर और है—दादू, उसका इस समय कोई पता नही। अवश्य ही वह कमला के साथ होगा। किससे पूछा जाए ?

नटनागर पुन· अपने कमरे मे आए। मालूम दिया, कमरे का यह विद्युत प्रकाश मानो कही हो, पर उनकी आखो मे नही है। सभी ओर एक भयानक अन्धकार-सा छाता चला आ रहा है। जहा उन्हे कुछ भी दिखाई नही देगा।

नटनागर ने हाथ के इशारे से दरवाजा भिडाया और स्कूल की ओर चल दिए। स्कूल मे नीरव शाति छा रही थी। सुपरिण्टेण्डेण्ट के आफिस के दरवाज़े पर ताला लगा हुआ था। स्कूल की रात की ड्यूटी वाली परिचारिका छात्रो के कमरो के सामने बरामदे मे एक चटाई बिछाकर गभीर निद्रा मे पडी हुई थी। उसकी नाक की आवाज़ बता रही थी कि उसे जगाना सरल काम न होगा।

नटनागर ने 'शिश-शिश' कर उसे जगाने का प्रयत्न किया, किन्तु

वह तो उसके नाक के खर्राटो मे स्वय नटनागर को ही नही सुनाई दिया। तब उन्होने 'ऐ-ऐ' कहकर उठाना चाहा, पर तब भी जब वह न उठी तो उन्हे इतना क्रोध आया कि वे ठोकर मारकर उसे उठाने के लिए व्यग्र हो गए। किन्तु तभी उनकी आवाज सुनकर पास के एक कमरे से सिस्टर रोज बाहर निकली, और नटनागर को देखकर बोली—

'गुड इवनिंग मिस्टर नटनागर! ह्वाट कैन आई डू फॉर यू ? आई होप मिसेज नटनागर इज नाउ ओ. के.' (मैं आपकी क्या सेवा करू ?——मै आशा करती हू श्रीमती नटनागर अब ठीक हैं।)

'आई केम टु इन्क्वायर अबाउट हर' (मै उन्हीके बारे मे पूछने आया हू।)

'क्या, आपका मतलब ?'

'यही कि मिसेज नटनागर घर पर नही है। वह वहा सारे दिन से नही है!'

'लेकिन, वे तो बीमार थी न ?'

'यह आपको किसने कहा ?'

उनकी लीव-अप्लीकेशन ने।' (छुट्टी के आवेदन ने)

'लीव अप्लीकेशन ?'

'जो आज सवेरे आफिस से स्वीकृत होकर आई थी ?'

'आफिस से स्वीकृत होकर ?—मैं उसे देख सकता हूं ?'

'शूअर' (निश्चय ही) कहकर सिस्टर रोज़ ने अपनी जेब में पडी हुई एक चाबी निकाली, और सुपरिण्टेण्डेण्ट के दफ्तर की ओर चली, श्री नटनागर उसके पीछे-पीछे! रोज़ ने दरवाज़ा खोला, भीतर जाकर उसने लाइट लगाया, नटनागर भी भीतर आ गए। सिस्टर रोज़ ने आज के आए हुए कागज़ो की ट्रे मे से एक अप्लीकेशन निकालकर नटनागर के हाथ मे थमा दी। नटनागर ने देखा, पढा कि अप्लीकेशन कमला ही के हाथ की लिखी हुई है, आज ही की तारीख है, लिखा है कि वह बीमार है, जब तक अच्छी न हो जाए तब तक का उसे अवकाश स्वीकृत किया जाए।

अप्लीकेशन की बाईं ओर नीचे कपूर साहब ने लिख रखा है 'स्वीकृत', और नीचे उनके नामाक्षरो के साथ आज की तारीख लिखी हुई है।

नटनागर ने पूछा, 'किस समय यह अप्लीकेशन आपको मिली ?'

'वेल—दस-साढे दस के करीब !'

'कौन लाया इसे ?'

'दफ्तर का चपरासी, सदैव के अनुसार डाक के साथ।'

'आई सी !'—और अप्लीकेशन फॉर्म को वापस ट्रे मे पटकते हुए भावशून्य-से नटनागर दरवाजे की ओर मुडे। रोज ने पूछा, 'क्या आप कुछ टोह पा सके है ?'

'बिल्कुल ठीक तो नही !'

'क्या मै किसी उपयोग मे आ सकती हू ?'

'थैक्यू सिस्टर फॉर योर काइन्डनेस ! (तुम्हारी दयालुता के लिए धन्यवाद)—ऑलराइट गुड नाइट !' और नटनागर स्कूल के लम्बे बरामदे मे धीरे-धीरे आगे बढने लगे। सिस्टर रोज फिर भी कुछ समझ न सकी, उसने आफिस का दफ्तर पुन बद कर दिया, ताला लगाकर उसने पुन बरामदे मे देखा। श्री नटनागर की साढ़े चार फुट ऊची देह दरवाज़े की ऊचाई मे छोटी से छोटी होती हुई अधकार मे अदृश्य हो गई।

सो मिस्टर कपूर कमला के अस्वास्थ्य की खबर जानता है, फिर भी सवेरे जब नटनागर उससे मिले, तो उसने उनसे कोई सहानुभूति नही जताई, उसका उल्लेख तक नही किया, और यही नही अनावश्यक रूप से उनपर इतना बोझ लाद दिया कि रात के नौ बजे तक उन्हे मुक्ति नही मिल सके ! क्या इसमे कुछ रहस्य नही हो सकता ? कपूर साहब पहले तो कभी इस तरह उनसे पेश नही आए थे। लडके की वजह से ही कुछ अहसान तो उन्हे मानना ही चाहिए था।

घर पर आए तो बरामदे मे दादू की खाली जगह ने उन्हे फिर सावधान किया। दादू नही है, कमला नही है— दोनो ही साथ गायब हो गए है ?—अगर वह स्वेच्छा से गायब हुई है, तो दादू को साथ ले जाने का

तो कोई प्रयोजन नही था ।—रात के लगभग बारह बजने वाले थे । स्कूल का दरबान इधर हलचल अनुभव करके भागा हुआ आया । नटनागर को देखकर उसने फर्शी सलाम किया ।

नटनागर ने आदेश दिया, 'देखो ! दादू क्या अपनी कोठरी मे है ?'

'जी सरकार' कहकर दरबान उल्टे पैरो भागा । नटनागर ने एक कुर्सी कमरे से खीची, और बरामदे ही मे बैठ गए, दरबान की राह देखते हुए ।

चन्द्रमा अस्त हो चुका था । सामने भीषण अधकार फैला हुआ था, उससे भी अधिक अधकार था नटनागर की आखो मे ! शून्य आकाश की ओर देखते हुए वे कब तक बैठे रहे, उनको स्वय इसका ज्ञान न रहा, किन्तु तभी दरबान ने दादू के साथ आकर उनकी जडता को झकझोर दिया । देखते ही नटनागर ने कहा .

'दादू ?—कहा था तू तब से ?'

मरे हुए चेहरे को किसी तरह उनके सामने करके दादू ने कहा, 'हजूर, मेरी तबियत ठीक नही है । मैं अपनी कोठरी मे ही पडा हुआ था ।'

'जानता है, मेम साहब कहा हैं ?'

दादू ने नीची आखे करके गर्दन हिला दी, वह नही जानता ।

'नही जानता ?—झूठ बोलता है ?'—कडककर नटनागर ने कहा, उसी क्षण उन्हें चेत आया कि दरबान भी वही खडा हुआ है । उन्होने दरवान को उद्देश्य करके कहा, 'जाओ तुम—खडे-खडे क्या देख रहे हो ?—अपना काम करो !'

दरबान ने फिर वैसा ही फर्शी सलाम किया, और जान बची सोचकर उल्टे पैरो भागा ।

दादू ने नटनागर की ओर देखा, उनकी आखो मे शैतानी नही थी, किन्तु थी एक करुण सजल कठोरता । उसे उस रात का स्मरण हो

आया, जब नटनागर ने छुरे से उसपर हमला किया था। वह शैतानियत वहा नही थी !

नटनागर ने कहा, 'झूठ बोलने से काम नही चलेगा दादू ! मै तेरी सब कारस्तानी जानता हू। तू सब जानता है।'

दादू ने कहा, 'हुजर, सच कहता हू—दुपहर से ही बिस्तर से उठा नही गया। अभी उठकर आ रहा हू।'

'लेकिन दुपहर के पहले ?'

'जी, तब भी घर पर ही था !'

'स्कूल गया था आज सवेरे ?'

'जी नही !'

'क्यो नही ?—तबियत तो तेरी दुपहर के बाद खराब हुई थी।'

'जी—पहले भी कुछ वैसी ही थी।'

'सवेरे यहा से जब तू गया, तो मेम साहब से कहकर गया था ?'

'जी—जी नही—वे स्कूल चली—नही, मै सवेरे बहुत जल्दी घर चला गया था।'

'क्यो ?—रोज तो तू उनके साथ ही स्कूल जाता है।'

'जी—पर आज तबियत ठीक नही थी।'

'हू।'—नटनागर ने देखा कि दादू से सख्ती के द्वारा कोई बात उगलवा लेना कभी सम्भव नही होगा।—और यह भी सत्य है कि वह इस राज़ को पूरा नही, तो भी कुछ-कुछ अवश्य जानता है।

उन्होने अपनी आवाज़ को यथासाध्य मुलायम करके कहा, 'दादू।'

'सरकार !'

'तुझको मेरे साथ कुछ हमदर्दी है ?'

'यह क्या बात करते है हजूर ! मै तो आपका गुलाम हू।'

'कोई किसीका गुलाम नही दादू ! सब अपने-अपने मालिक है ! क्या सचमुच तू मेम साहब के बारे मे कुछ नही जानता ?'

दादू इस स्वर से चौक उठा। सहानुभूति हो आई उसे नटनागर से।

जो कुछ कमला ने किया है, उसे उसका मन भी क्षमा नही कर सका था, शायद उसके मन की प्रतिक्रिया ही उसके शरीर का ज्वर बनकर उसपर छा गई थी !

उसने गर्दन झुकाकर केवल कहा, 'सरकार···'

'कहो दादू !'

लेकिन दादू कुछ न बोला। नटनागर को वह जानता है, कमला ने जो कुछ भी किया हो, इस आदमी के हाथ उसको सौप देना सुरक्षित नही है।

नटनागर ने कहा, 'दादू !—तू अपनी मेम साहब को मुझसे अधिक जानता है। उनपर किसी तरह का अधिकार जताने की मेरी नीयत नही है। मुझे अपनी फिकर भी नही है। आखिर तू जानता ही है, इन कई बरसो तक मैं अकेला ही रहा हू। अकेला रहने की मुझे आदत हो गई है। मुझे चिन्ता है तो केवल उन्हीकी तरफ से है। यह मै जानता हूं कि वे यहा सुखी नही हैं। इस अवस्था मे गृहस्थी मे कुछ कहा-सुनी हो ही जाती है। कही यदि बचपना करके वे कुछ का कुछ कर डाले—मेरा मतलब समझ रहे हो दादू ?—कुछ का कुछ—इन स्त्रियो का मन तो बडा भावुक होता है न।—बात-बात पर कुए-बावडी मे गिर पडना, रस्सी लगाकर छत से लटक जाना, या न हो तो तेल छिडककर जल मरना—सभी कुछ ये औरते बडी सरलता से कर गुजरती हैं।—'

दादू का मन चौंक उठा। तो क्या उस बगले मे जाकर कही उसकी मेम साहब की हत्या तो नही कर दी गई ?—कही उसे जबर्दस्ती रोक तो नही लिया गया ?—ऐसी ही कोई बात हुई हो तो ?—उसकी मेम साहब का तब क्या दोष हो सकता है ? जरूर ऐसी ही कोई बात हुए बिना वे वहा कभी नही ठहरती। यदि ऐसा है तो उसने उनकी खबर न देकर भूल ही की है। नटनागर क्या कह रहे थे, यह उसने नही सुना, उनको बीच ही मे रोककर बोला, 'सरकार··'

'कहो।'

'मेम साहब' रात को...'

'हा-हा, बोलो, डरो मत। जो सच बात हो बता दो। मैं तुमको जमादार बनवा दूंगा—एक साल की तरक्की तुम्हे मिल जाएगी।'

किन्तु दादू ने मानो यह सब नही सुना। वह बोला, 'लेकिन आप...'

'कहो—मैं क्या ?—जल्दी कहो दादू ! अगर किसीने मेम साहब का कुछ किया है, तो मैं उसका खून पी जाऊगा। बोलो—क्या हुआ है ?'

'लेकिन मेम साहब के ऊपर अगर कोई आफत आ गई ?'

'कौन-सी आफत है ?—वही तो जानना चाहता हू। कहो दादू, मैं उसे ज़िन्दा न छोड़ूगा, मुझपर खून सवार है।'

—सचमुच नटनागर पर खून सवार है। वे हाफने लग गए थे, टी० बी० के बीमार—न उनसे इतना दु:ख सहन हो सकता था, न क्रोध ही। यदि अपमान की मात्रा भी मिल जाए तो ?—नटनागर को आखो के सामने रक्त ही नही काले-पीले भी दिखाई दे रहे थे। मारे उत्तेजना के वे कुर्सी पर से उठ खडे हुए, किन्तु तत्काल ही सिर पकडकर उन्हे फिर बैठ जाना पड़ा।

दादू ने कहा—'बडे साहब के यहा...'

'बडे साहब ?—कौन कपूर साहब ?'

—तीर छूट चुका था, दादू ने केवल मस्तक हिला दिया। नटनागर के क्रोध को लक्ष्य तो मिल गया, किन्तु बेध नही मिल सका। मिस्टर कपूर डिवीजनल सुपरिण्टेण्डेण्ट, उनकी रोज़ी और रोटी के मालिक ! —किन्तु वह दुर्बलता केवल एक ही क्षण रही। केवल उनकी शंका ही को तो समाधान मिला है। यह बात तो प्रकारान्तर से उन्हे पहले ही मालूम हो जानी चाहिए थी। कितनी स्पष्ट बात है !—कपूर साहब द्वारा स्वीकृत उसकी छुट्टी का आवेदन, और इसकी पृष्ठभूमि मे सोम-ओझा-कपूर सबका वह ज्वलत नाटक, क्या उनकी आखो को छू नही सका था ? उन्होने दादू से कहा·

'अच्छा जा दादू ! तेरी तबियत खराब है, तू जाकर सो !'—और कुर्सी से उठकर वे शीघ्र ही कमरे मे घुस गए। कुर्सी बाहर पडी रही, बरामदे की बत्ती भी जलती हुई।

दादू किंकर्तव्यविमूढ-सा, क्या करे, क्या न करे, कहकर उसने अच्छा नही किया शायद ! बडे क्रोध मे भरकर नटनागर साहब कमरे मे गए है। कही खुदकशी न कर ले !—खुदकशी ?—दादू ने बाहर बरामदे की लाइट बुझा दी, और कुर्सी उठाकर वह भी कमरे मे दाखिल हो गया।

कुर्सी उसके हाथ मे ही थी। भीतर के कमरे मे घुसते ही दादू ने देखा कि नटनागर साहब पागल की तरह कपबोर्ड की दराजे खोलकर कुछ देख रहे है। क्या देख रहे हैं ? कुछ ज़हर ?—सास रोके कुर्सी हाथ मे लिए दादू दरवाजे मे खडा-खडा देखता रहा।

दादू ने देखा कि एक ड्रावर से नटनागर ने एक छुरा निकाला, शायद वही छुरा, जिसका प्रसाद एक ऐसी ही रात्रि मे पहले भी वह नटनागर के हाथो पा चुका है ! तो क्या करेंगे वे इसे लेकर ?—क्या किसीकी हत्या करना चाहते है ?—किसकी ? जिस हालत मे वे है, क्या इस हालत मे उन्हे छोड देना अच्छा होगा ?—ड्रावर बन्द करके जैसे ही नटनागर उधर मुडे, दादू खिसककर परदे के पीछे हो लिया, कुर्सी तब भी उसके हाथो मे थी, उसे जमीन पर रखना भी शायद वह भूल गया था। फिर उस जैसे स्थूलकाय व्यक्ति के लिए एक कुर्सी का बोझ ही क्या था !

नटनागर ने नीचे ही नीचे का ड्रावर खोला, और उसमे से एक बोतल निकाली। माथे का पसीना पोछकर उन्होने बडी हसरत से बोतल की ओर देखा ! दादू जानता है कि नटनागर कभी-कभी पी लिया करते हैं, किन्तु आज जब कि उनके पास एक छुरा है, और मन मे खूब गुस्सा, गले से उतरकर यह शराब क्या करेगी ?—तभी नटनागर ने उसी ड्रावर से एक गिलास भी निकाला। कार्क खोलकर उसमे उन्होने शराब उडेली,

पास से एक और छोटी बोतल, शायद सोडे की बोतल, उससे सोडा उसमे मिलाया। रात्रि की उस नीरव गम्भीरता मे उस आपानक की छलछल छलछलाहट सारे कमरे मे गम्भीर रूप से व्याप्त हो गई। नटनागर ने आपानक समाप्त भी कर लिया, पर दादू के कान मे उस छलछलाहट का गुंजन कम न हुआ। भय के मारे उसने एक क्षण के लिए आखे बन्द कर ली।

जब नटनागर ने ड्रावर को बन्द किया और पुन. ताला लगा दिया तो दादू की तन्द्रा भग हुई। चोरी ही से वह धीमे पदो पहले कमरे मे चला आया। प्रायः इसी समय भीतर के कमरे की बत्ती बुझाकर नटनागर दरवाजे पर आकर दादू को देखकर चौक उठे।

'अरे! दादू!—तू अभी तक यही है ?'

'सरकार—यह कुर्सी बाहर ही रखी थी। सोचा शायद आप सो गए है, दरवाजा खुला था—'

बीच ही मे नटनागर ने कहा—'हा हा—ठीक है। रख! और जा, अब कुछ काम नही है, सो जा!'

'कुछ काम हो तो बुला लीजिएगा। मैं बाहर ही सोया हुआ हू।'

'ना ना, बाहर क्यो ?—अपने घर जाकर सो रह। बीमार भी तो है।'

बाहर जाते हुए दादू ने कहा, 'जी नही, अब तो बुखार भी नही है!—और दरवाजा भिडाकर दादू बरामदे मे पहुंच गया। ओढी हुई चादर उसने फर्श पर डाल दी, और लेटने का बहाना करके पड रहा।

दस मिनट के बाद ही दरवाज़ा खुला, और नटनागर का सिर दिखाई दिया। एक मिनट खडे रहकर उन्होने आहट ली। देखा कि दादू सो गया है, और बाहर सब कुछ नीरव है, तो वे बाहर आए। दरवाज़े को बन्द किया। बरामदे के किनारे तक आकर फिर दरवाजे पर लौटे। जेब से एक तालियो का गुच्छा निकाला, और जाने क्या सोचकर उन्होने दरवाजे को ताला लगा दिया। छुरा कहा छिपाकर रखा गया, यह दादू

नही देख सका। उनके हाथ मे नही था, पर रहा अवश्य उनके पास ही होगा! वे बरामदे की सीढिया उतर कर चले, दादू ने देखा कि यद्यपि चाल मे कोई अन्तर नही है, किन्तु शराब अवश्य उनपर असर कर रही होगी।

जब नटनागर काफी दूर चले गए, तो दादू उठा, चादर उसने वही कोने मे पटक दी, और वह भी उसी दिशा मे आगे बढ गया। कल रात्रि को ही लगभग इसी समय—इस समय के काफी बाद, वह इसी तरह की जासूसी कर चुका है। कल पत्नी थी, आज पति है। दोनो के मन मे क्या था, उसे वह नही जानता, सोचने की शक्ति उसकी बडी सीमित है! सहज बुद्धि से जितना वह समझ-सोच लेता है, कर लेता है। उसके मन मे केवल कुछ प्रशस्त मार्ग हैं, चक्करदार, टेढी-मेढ़ी अधकार-प्रकाश वाली गलिया नही! वह नौकर है, पति-पत्नी दोनों का ही। दोनो ही की कल्याण-कामना उसके हृदय मे है। नटनागर की अपेक्षा कमला की वह अधिक भक्ति करता है, बस इसी प्रेरणा से वह कल भी रात में अपने बिस्तर मे नही सो सका, और आज भी उसके मन मे शाति नही है! जिनका पीछा वह कर रहा है, या कर चुका है, उनके मन की गलियो से उसे परिचय नही, वे एक दूसरे की पृष्ठपोषक है या विरोधी, यह भी वह नही जानता। फिर भी किसी मार्ग के सहारे जब किसी मजिल पर वह पहुचता है तो, आलोचनात्मक निर्णय करने की शक्ति न रहने पर भी कुछ प्रभाव वह ग्रहण करता ही है। उस प्रभाव मे भी कही मोड़ नही होता, अच्छा या बुरा इसके सिवा वह अन्य कुछ की विवेचना नहीं कर सकता। आज जिसका वह पीछा कर रहा है, वह उसकी भक्ति का पात्र है, या क्रोध का, या घृणा का, वह नही जानता—फिर भी मानो सुदूर भविष्य मे बिना कारण ही उसे कही खतरे के चिह्न दिखाई दे रहे है। इसीलिए वह नटनागर का पीछा करता हुआ चला जा रहा है!—शायद वह भावना यदि उसके अन्तर मे न होती, तो इसी बीमार मन

चले गए !—क्या कही कोई एक्सीडेण्ट हो गया बडे बाबू ?'

'नही, मुझे नही मालूम—'

'मगर इस रात को आप ? ..'

'तब की नही मालूम, पर अभी एक एक्सीडेण्ट की खबर आई थी—अच्छा, क्या साहब बीमार सोम को भी अपने साथ ले गए हैं ?'

'जी नही—सोम बाबू तो यही है, साहब गए तो अकेले ही है। ताज्जुब यही है कि सोम बाबू की तबियत आज कुछ ज्यादा खराब थी, तब भी साहब चले गए।'

हू !—तो मालूम देता है, कमला को ही घर का इन्चार्ज बना गए है। यह तो बडा ही अच्छा अवसर है। यों कपूर की बडी भारी बाधा थी, यद्यपि उस बाधा से ही निबट जाने का उनका सकल्प था।

'तो मै जरा सोम बाबू को ही देख लू ! शिब्बू तो है न ?'

'जी हा ! बाहर बरामदे मे ही पडा होगा !—रामजीवन जानता है कि नटनागर सोम के अभिभावक जैसे रह चुके हैं। सोम बीमार है, यह तो वह जानता है, पर इस बीमारी मे ही साहब किसके भरोसे उसे छोड गए, यह वह नही जानता। रेलवे की कुछ नौकरी ही ऐसी होती है कि इच्छा होने पर भी अपने-परायों के ख्याल को बाला-ए-ताक रख देना पडता है, यह मजबूरी छोटे कर्मचारियो ही की नही, कपूर साहब जैसे बडे अफसरों की भी है !—यही सोचता हुआ वह अपनी फाटक की ओर रवाना हो गया।

सोम की तबियत आज कुछ अधिक ही खराब थी, किन्तु जैसे ही उसे मालूम हुआ कि आँण्टी आज उसके पास रह सकेगी, तो उसे बडा सन्तोष हुआ। कमला भी प्रात:काल ही से बिना नहाए-खाए सोम के पास ही बैठी रही। कपूर साहब ने व्यवस्था कर दी कि सोम की तबियत खराब है, इसलिए कोई भी उसके कमरे में न जाए, जब तक कि किसीकी आवश्यकता न हो। केवल शिब्बू ही वहां पर तैनात था, उसे भी हिदायत दे दी गई थी कि वह कही जाए नही, कोई पूछे तो कह दे रात से ही

सोम की देख-रेख के लिए एक नर्स की व्यवस्था की गई है। उसके खाने-पीने सबकी व्यवस्था सोम ही के कमरे मे कर दी जाए। स्कूल की प्रधान अध्यापिका को सभी पहचानते हैं, यदि शिब्बू उनका सच्चा परिचय किसी-को देगा तो सम्भव है, कोई जान-पहचान वाला नौकर ही उनसे बात करने के लिए पहुच जाए, और इस तरह सोम की निगहबानी मे तथा उसकी शाति मे अड़चन पैदा हो।

कमला ने हाथ-मुह धोकर किसी तरह एक कप चाय तो पी, पर खाना-वाना उससे कुछ भी खाया नही गया। सोम को लेकर आज के दिन उसे अपने समस्त जीवन की साध मिटा लेनी है, फिर सध्या को ही अंधेरा होते ही किसी तरह वह आठ की गाडी पकड लेगी—उसका भविष्य अब उसके हाथ मे नही है।—उसे एक नये जीवन का शिलान्यास करना है।

दिन भर वह उसी कमरे मे कैदी की तरह बैठी रही। सवेरे और शाम डॉक्टर आया, तब वह पास के कमरे मे जा बैठी, औषधि की व्यवस्था के बारे में शिब्बू को समझाकर वे चले गए, तो पुन सोम को छाती से लिपटाकर वह वही सो गई। बुखार मे ग्रस्त सोम मा की उस वात्सल्यमयी अपरिचित छाया को पाकर बडे सतोष में सो गया। शरीर से बीमार रहकर भी मन से वह बडा हल्का-फुल्का हो गया। सवेरे उसने कल्पना भी नही की थी कि अमित विडम्बना से भरा हुआ आज का यह दिन वह किसी तरह बिता सकेगी, किन्तु इसी व्यस्तता मे जब संध्या होने लगी तो उसका हृदय फिर धडकने लग गया; चाहे जितनी क्षणिक रही हो, प्रेम की इस परिव्याप्ति का अनुभव करने के बाद एक निविड अनिश्चय मे उसे अपने आपको प्रवाहित कर देना है, इसके सिवा कोई चारा भी तो नही। सोम बीमार है, पर वह क्या कर सकती है?—कपूर साहब ने जन्म से ही उसका भार सम्हाला है। उसके लिए तो वह बात एक स्वप्न की बात से अधिक नही है, फिर सोम की दुश्चिन्ता करने से उसके लांछन की तो सीमा नही रहेगी। नही, अब अधिक सह सकना

उसके लिए सम्भव नही है ।

सध्या को साढे पाच बजे कपूर साहब लौटे तो देखकर उन्हे आश्चर्य हुआ कि मा-बेटे दोनो गम्भीर निद्रा मे इस दुनिया की सारी चिन्ताओ को भुलाकर बेसुध है । किन्तु कमला के मुह पर एक म्लान छाया भी उनकी दृष्टि से छिपी नही रही । वह उन्ही रात्रि के कपडो ही मे थी, शृगार-प्रसाधन की कौन कहे उसने स्नान भी नही किया था । सवेरे केवल एक कप चाय सोम के अनेक अनुरोधो के कारण अवश्य उसने पेट मे किसी तरह डाल ली थी—उसके इस दिशाहारा रूप को देखकर कपूर साहब का मन भी भर आया । जब उन्होने सोम का ज्वर देखने के लिए उसका हाथ अपने हाथ मे लिया तो उन्हें डर-सा लगा । तभी एक अव्यक्त प्रेरणा-सी पाकर उन्होने अपना हाथ कमला के भाल पर भी रखा—कमला चौककर उठ बैठी ।

'आपने मुझे जगाया नही ?—कब से आए हुए है आप ?'

'घबराओ नही—अभी ही आया हू । देखता हू तबियत तो तुम्हारी भी ठीक नही है ।'

कमला ने उत्तर नही दिया, वह पलग पर से नीचे उतर गई, और दूसरे कमरे की ओर जाते हुए बोली, 'मुझे धोखे मे डालने का कोई प्रयोजन नही है मिस्टर कपूर ।—हा, सोम की तबियत अवश्य खराब है; पर अब आप आ ही गए है—मेरा दायित्व अब शेष हो गया । आप जाने, आपका पुत्र जाने । मैं आज आठ की गाडी से चली जाऊगी—दूर, जहा मेरी किस्मत मुझे ले चली जाए !—' कपूर साहब सोम की ओर सतृष्ण नेत्रो से देखकर उसकी ओर बढे, तो वह बोली, 'नही—मुझे मत छूइए ! मुझे छोड दीजिए—मेरे मार्ग से दूर हट जाइए, मुझसे आप कुछ नही पा सकेगे—कुछ नही !'—और कमला ने उस कमरे मे जाकर भीतर से दरवाजा बंद कर दिया ।

मस्तक को हाथ मे थामकर मिस्टर कपूर सोम के पास आ बैठे । नीद ही मे सोम ने कहा, 'मम्मी !' पर वहा था ही कौन ?—कपूर ने

एक बार सोम की ओर देखा, बद आखो पीडा से हिलते हुए चेहरे को देखा, और दूसरी बार उस कमरे के रुद्ध दरवाजे पर ! उनका दिल भीतर ही भीतर फफक-फफककर रोने लगा, सारी दुपहरी उन्होने कमला के रंजित ऐश्वर्य को अपनी पत्नी के रूप मे पाने की कल्पना की हैं, इस समय वे सोच रहे है, पत्नी न सही, अब इस उतरती अवस्था मे न्हे चढती जवानी का आधार न भी मिले तो क्या ?—किन्तु क्या इस निरीह बच्चे को मा भी नही मिलेगी ?—अवश्य ही कैसी शाति है इसके चेहरे पर मा का आश्रय पा जाने के कारण !—दो घटे और है, फिर जाने कहां होगी वह हतभागिनी, और जाने क्या होगा इस मातृ वत्सल लडके का !—मा का अपराध हो, बाप का हो, पर इस अबोध बालक का क्या अपराध है कि इसे यह दु ख देखना पड रहा है।—क्या करे वे ?

तभी उन्हे एक विचार आया। यदि इस लडके को इसी अवस्था मे कमला के भरोसे छोडकर वे बाहर चले जाए, तो क्या कमला को इसके प्रति कुछ ममता न होगी ? क्या इसी हालत मे इसे छोडकर कमला चल देगी ?—मा है आखिर—बेटा इस तरह घने अस्वास्थ्य मे निस्सहाय-निरुपाय पडा हो, तो राह चलता भी उसे अपने भाग्य पर नही छोड देता। अभी ट्रॉली से वे जा सकते है, फिर यदि कमला चली गई, तो सूचना उन्हे मिल ही जाएगी। किसी भी दूसरी ट्रेन से वे शीघ्र ही लौट आ सकते हैं। इसके सिवा और कोई उपाय उन्हे नही दिखाई देता।

लम्बी सास लेकर कपूर साहब उठे, और रुद्ध दरवाज़े के पास खडे होकर उन्होने कहा :

'तुम्हे मुझसे भय हो रहा है, देखकर बडा दु.ख होता है कमला ! तुम्हारी इच्छा के विपरीत तो मैं कुछ करना चाहता नही हू। तुम जाना ही चाहो, तो तुम्हे कौन रोक सकता है ?—यदि तुम्हारा बीमार पुत्र भी तुम्हे नही रोक सके तो मैं तो एकदम अन्य पुरुष हू ! पर मेरी असहायता को तुम नही जानती शायद ! मैं अभी जा रहा हू, इसी समय—एक भयानक दुर्घटना की सूचना मिली है। जाने के पहले सोम को देख जाना

चाहता था। आशा थी कि तुम्हे उसके निकट पाकर निश्चिन्त होकर कर्तव्य-मार्ग मे जा सकूगा। जाना तो पडेगा ही, मन चाहे निश्चिन्त हो या न हो! सोम के बारे मे चिन्ता करके भी क्या कर सकूगा?—यदि परमात्मा ने उसके भाग्य मे कोई गूढ लेख लिख ही दिया है, तो उसे कौन अन्यथा कर सकता है!—और आज ही का क्या—कई रात्रिया तो उसे शिब्बू के भरोसे ही काटनी पडी है। फिर भी जिस आनन्द और सन्तोष के साथ अभी-अभी वह 'मम्मी' पुकार कर तकिए को छाती से लिपटाए सो गया है, उससे मोह जाग जाना स्वाभाविक है।—यदि रह सको तो आज की रात और किसी तरह रह लेना—मुझे शायद एकाध दिन से अधिक भी लग जाए। पर बाध्य करने का मुझे अधिकार ही क्या है!—अच्छा चलता हूं, पर चलने से पहले तुमसे क्षमा माग लेना शेष रह जाता है! आशाओ को सभी पालते है! मैंने भी पाली थी, इन्ही कुछ घण्टो के लिए! आशाओ के सपने रेत के महल से कम नही होते, उससे केवल बनाने वाले की बुद्धिहीनता का ही परिचय मिलता है!—तो मै जा रहा हू—परमात्मा तुम्हे प्रसन्न रखे!'

दरवाज़े के पास ही खडी-खडी कमला ने सब कुछ सुना, यद्यपि उत्तर उसने कुछ नही दिया—उसने अनुभव किया कि बोलते-बोलते ही कपूर साहब की वाणी बाद मे रह-रहकर कापने लग गई थी। पर उसने अपने मन का दरवाजा और भी शक्ति से बन्द रखा। कपूर शायद चले गए, अब कोई आहट उस कमरे से नही आती। वह वही दरवाज़े पर बैठ गई बल्कि कटे हुए वृक्ष की शाखा के समान निरवलम्ब गिर पडी। आखो मे उसकी अश्रु छलछला आए।

कुछ समय इसी तरह बीता कि सोम ने पुन आवाज लगाई। इस बार वह जाग उठा था, उसने कहा, 'ऑण्टी?' कमला उठ बैठी, पर उसने कोई उत्तर नही दिया। शायद कपूर साहब उसके पास पहुच गए हो। जाने का उन्होंने केवल उसे फुसलाने के लिए कहा है, कौन बाप अपने इकलौते लडके को इस हालत मे छोडकर बाहर चल देगा?—पर,

आश्चर्य क्या है ?—उस जैसी मा उसे छोडकर जाने को बैठी है, तो बाप ही क्यो अपवाद हो ?—पर नही, कोई दुर्बलता उसे नही घेर सकती !—वह तो सब कुछ त्यागे बैठी है।

'पापा ?' फिर सोम की करुण आवाज सुनाई दी—तो क्या सचमुच कपूर साहब चले गये ?—या कही छिपकर उसकी परीक्षा ले रहे है ?—वह क्या इतनी जल्दी हार खा जाएगी ?—नही-नही,—उसने कुछ नही सुना। शायद वह उसके कानो का भ्रममात्र था।

किन्तु तभी मानो सोम पलग से नीचे उतरकर पुकार उठा—'शिब्बू ?'—आवाज़ जरा जोर से दी गई है, किन्तु उससे गले की शक्ति का उपहास ही प्रतिपादित होता है। सचमुच कपूर साहब नही हैं, और लडका पलग से नीचे उतर आया है। वह कमज़ोर, चलने-फिरने की मनाही है उसे, यदि कही गिर पडा ?—और कमला ने मानो सुना सचमुच ही कोई उस कमरे मे फर्श पर गिर पडा है। उसकी कराह भी उसे सुनाई दे गई है। वह उठी—वह नही रोक सकी अपने आपको, उसने दरवाजे की चटखनी खोली।—उधर से भी इसी तरह शिब्बू ने दरवाजा खोला। दोनो ही भागे हुए-से आगे बढे। सचमुच सोम नीचे गिर पडा था, और अपनी हथेली मे मुह को छिपाए अपनी सिसकियो को दबाना चाह रहा था।

कमला ने उसे उठाकर गोद में ले लिया, बोली—'क्या हुआ सोम ? मै हू—आँण्टी !'

'आँण्टी, तुम कहां थी ? मुझे बडा बुरा सपना दिखाई दिया है।'

'घबराओ मत बेटा। सपना तो झूठा हुआ करता है। मैं तुम्हारे पास हू।'—और उसने उसे अपनी छाती से चिपटा लिया। दोनो की आखो मे आसू थे।

शिब्बू केवल खडा देखता रहा।

तभी कमला की दृष्टि उसपर पडी। उसने पूछा—'साहब कहा गए ?'

'कह नही गए आपसे ?—उन्हे तो बहुत जरूरी काम से अभी दौरे

पर जाना पडा है। गाडी का समय नही है, इसलिए ट्रॉली लेकर गए हैं।'

'हू।'—कहकर कमला ने शिब्बू को बाहर जाने का इशारा किया। शिब्बू बाहर चला गया।

—सो, आठ बज गए, और कमला सोए हुए सोम का सिर अपनी गोदी मे लिए बैठी रही, उसे समय का ध्यान भी नही रहा। और फिर नौ भी बजे, दस भी बजे—समय बीतता रहा।—वही फर्श पर उसे कब नीद आ गई, यह भी वह नही जान सकी।

एकाएक किसीके पुकारे जाने की आवाज़ सुनकर वह चौक उठी। कमरे मे पूर्ण अन्धकार छाया हुआ था, कही पर भी रोशनी का नाम नही था। सोम उसके पास ही फर्श पर सोया हुआ था। शायद रात को कभी वह जाग उठा है और आकर उसके गले से चिपटकर लेट गया है। नीचे दरी है और उसपर काफी मोटा गलीचा। बिछौने की ज़रूरत नही है, फिर भी बेचारा सोम नीचे ही सो गया है, देखकर उसे कष्ट हुआ। हाथ बढाकर देखा, पलग अधिक दूर नही है। उसने सोम को बाहो में उठाकर पलग पर लिटा दिया, चाहती थी कि सिरहाने कही स्विच की खोजकर हो सके तो हलका प्रकाश कर दे, किन्तु तभी बाहर से पुन. आवाज आई 'शिब्बू!' आवाज़ ज़रा कठिन थी, कमला का हृदय एकाएक काप उठा—आवाज तो पहचानी हुई है। वह सोम को पलग पर सोया छोडकर, दरवाजे के पास परदे के पीछे जाकर सुनने लगी।

शिब्बू की नीद बडी गहरी है। एकाध आवाज से उसे जगाना सभव नही है। नटनागर को यह भी इष्ट नही था कि हल्ला करके भीड जमा कर ले। इससे उनके उद्देश्य की सिद्धि न होती। शिब्बू सोया हुआ तो है ही यदि केवल वे यह जानते होते कि वह पापिनी कुलटा कहा है, तो शिब्बू की यह गहरी नीद उनके लिए वरदान ही हुई होती।—यो, शायद इन्ही-मे से एक कमरा है, यह वह जानते थे, किन्तु दरवाजा बन्द भी तो होगा। शिब्बू ही तो जागकर दरवाजा खुलवा सकता है। नटनागर ने कन्धो से

पकडकर शिब्बू को जगा दिया। शिब्बू ने आखें मसलते हुए कहा—'कौन ?'

'मैं हू।'

शिब्बू ने अधेरे मे पहचाना नही। बोला—'कौन रामजीवन ?'

'रामजीवन नही, मैं नटनागर· '

'बडे बाबू ?—' और फिर हडबडाकर उठ बैठते हुए बोला—'सलाम बडे बाबू—साहब तो शाम ही को· '

'वह मैं जानता हू। मै सोम को देखने के लिए आया हू।'

'सोम बाबू इस कमरे मे है—और—' शिब्बू को याद आया कि स्कूल की मास्टरनी बाई भी तो यही है। मास्टरनी बाई यानी नटनागर साहब की बीवी !—सो उनका नर्स कहकर परिचय तो दूसरो को देना है, ये तो अपने ही आदमी है।—इनसे क्या छिपाव ? इसलिए उसने कहा, 'और, मेम साहब भी इसी कमरे मे है।'

'हू।'—नटनागर का दिल धडकने लगा, आखे उस अंधेरे मे ही सुर्ख होकर चमकने लगी। उधर परदे के पीछे खडी कमला को पैरो तलों धरती खिसकती मालूम दी।

किन्तु जैसे न जानते हुए नटनागर ने फिर पूछा—'मेम साहब ?'

'जी—आज स्कूल भी नही गई, सवेरे से यही हैं ?'

'सवेरे से ?—या रात···अच्छा, दरवाज़ा खोल !—साहब मुझसे कह गए है कि सोम की खबर लेता रहू।'

दरवाज़ा खोलकर शिब्बू ने कहा, 'ठहरिए जरा, मैं उन्हे जगाकर लाइट लगा देता हू।'

नटनागर दरवाजे पर आकर खडे हो गए, ताकि कोई भीतर से निकलकर बाहर न आ सके। शिब्बू भीतर चला आया, और वही से बोला, 'मेम साहब !'

कमला पीछे हट गई थी, अपने पलग के पास आकर धीरे से उसने कहा, ताकि नटनागर सुन न सके···

'जा हल्की लाइट लगा दे, और उन्हे भीतर आ जाने दे। दरवाजा बन्द कर देना, ठण्डी हवा न लग जाए सोम को। उनसे कह देना शोर न मचाए।'

शिब्बू ने हल्की नीली रोशनी का स्विच दबा दिया। फिर परदे के बाहर जाकर जो कुछ सूचना कमला ने दी थी, उसे उसने नटनागर से कहकर परदे को जरा हटा दिया। नटनागर भीतर प्रविष्ट हुए। शिब्बू ने दरवाजा बन्द किया, तो नटनागर ने चिटखनी भी बन्द कर देनी चाही, पर उसे एकाएक दिखाई नही दिया तो फिर परदे ही को ठीक तरह से खीचकर वे मध्य कमरे तक बढते चले आए।

कमला नीची गर्दन किए हुए सोम के पास बैठी थी, सोम घनी नीद मे बेसुध था।

पास आकर नटनागर ने कहा, 'सो अपने यार का मोह छोडा नही जा सका ! पर आज जब कि पछी ही कही उड गया है, तब भी तुम्हे घर जाने की फुरसत नही ? या अब यही रैन-बसेरा करना है ?'

'तुम मुझे गलत समझ रहे हो।'

'ओह ! शायद कपूर साहब की गोद मे तुम्हे लेटी हुई देखता'

कमला उठ खडी हुई। उसने कहा, 'शिब्बू ने नही कहा कि तुम्हे शोर नही मचाना है ?'

'मैं शिब्बू का नौकर नही हू '

कमला दूसरे कमरे की ओर बढी, नटनागर ने लपककर उसका हाथ पकडते हुए कहा, 'चली कहा ? भाग नही सकेगी मुझसे ...'

'भागना नही चाहती ! उस कमरे मे जा रही हू, तुम्हे जो कुछ पूछना हो वही पूछना।'

'गुण्डो को छिपा रखा है वहा ?'

कमला ने हाथ छुडा लिया, 'वह तो मेरे पीछे ही है।' तभी वह पास के कमरे के दरवाजे पर पहुच गई। दरवाजा बन्द न था, परदे को हटाकर वह भीतर चली गई नटनागर उसके पीछे-पीछे।

नटनागर ने कहा, 'देखता हू कि परसो—या कल ? जिस साडी को पहनकर सोई थी, उसीमे भागी चली आई हो। सिंगार का भी मौका नही मिला ! क्या ऐसी मुरली सुनाई पड गई थी ?'

कमला पलग के ऊपर बैठकर बोली, 'इस कुर्सी पर बैठ जाओ—धीरज के साथ जो कुछ पूछोगे उसका जवाब दूगी।'

'देखता हू—सारे घर की मालकिन बन गई हो।' नटनागर कुर्सी पर नही बैठे। आए और पलग की पीठ का तख्ता पकडकर खडे हो गए ! बिल्कुल कमला के शरीर से सटकर। कमला ने नटनागर के चेहरे की ओर देखा। साढे चार फुट की ऊचाई, कमला पलंग पर बैठी हुई। दोनो की सास आपस मे टकरा गई। कमला ने कहा—'क्या पीकर आए हो ?'

'क्यो नही ? तुम अपने यार की मतवाली आंखों की शराब पियो, और मैं बोतल की शराब भी न पी सकू ?'

'क्या ऊलजलूल बक रहे हो ! होश है तुम्हे, तुम कहा हो ?'

'मुझे बहुत होश है बीवी जान ! मैं हू मेरी बीवी के यार के घर मे ! मै यह जानने के लिए आया हूं कि तुमने इतने दिनो तक मुझे धोखे मे क्यों रखा ?'

'मैंने तुम्हे कभी धोखे मे नही रखा ! जो कुछ तुमने पूछा उसका ठीक जवाब मैंने सदैव ही दिया है। बल्कि यदि याद हो तो मैंने यह भी प्रस्ताव किया था कि यदि तुम तलाक चाहते हो तो मैं हर तरह से तुम्हारी सहायता करूगी, चरित्रहीनता का आरोप स्वीकार करके भी। और क्या चाहते हो मुझसे ?'

'बहुत कुछ ! मैंने तुमसे शादी इसलिए नही की, कि तुम इस तरह मुझे अंगूठा दिखाकर जिसपर मन ललचाया, उसके घर मे बैठ जाओगी। मेरी भी प्रतिष्ठा है, चार आदमी मुझे भी जानते हैं।'

'मैं किसीके घर में नही बैठी।'

'ओह ! तो यह तुम्हारे बाप का घर है शायद।'

'अफसर बाप के बराबर ही होता है।'

'पति से छिपाकर बाप से मिलने के लिए आना होता है ?'

'मैं सोम से मिलने के लिए आई थी।'

'सोम से मिलने के लिए ? भला क्यो ? वह पीहर के पक्ष मे तुम्हारा क्या लगता है ?'

'वह मेरे पुत्र के समान है।'

'पुत्र के समान ! हाऽ हाऽ हाऽ—इसीलिए तो कि वह कपूर साहब का पुत्र है ! है न ? कपूर साहब के पास काफी ऐश्वर्य है, धन है, प्रतिष्ठा है, और अभी-अभी मिसेज कपूर ने मरकर सुविधा भी पैदा कर दी है ! इतना कहने पर भी मुझे विश्वास करने को कहती हो ?'

'सोम मेरा पुत्र है।'

'प्रकारान्तर से वह हुआ है। यह मैं भी कहता हू—मैं तुम्हे दुनिया के सामने चौचन्द करके दिखा दूगा।'

'तुम नही जानते, वह सचमुच मेरा पुत्र है। बम्बई मे मैंने जो कहा था कि मुझे मृत सतान हुई है, वह बात मिथ्या है ! मृत सन्तान हुई थी मिसेज़ कपूर के !'

'और एक मिथ्या का आश्रय लेना चाह रही हो ? मैं अधिक भुलावे से आने वाला नही हू। मैं जानता हू कि तुम कहानी गढने वाले की भी अंकशायिनी रह चुकी हो।'

'तुम्हें लज्जा नही लगती मिथ्यापवाद लगाते हुए—अपनी ही पत्नी के ऊपर ?'

नटनागर हस पडे—'अपनी ही पत्नी के ऊपर ? पत्नी, जो अपने ऊपर निज के सत्यापवाद लगाने में लजाती नही। मुंह पर लगी हुई इस कालिख को अपनी ही आंखो नही देखा जा सकता, तो क्या दूसरो की जबान सुन भी नही सकती ?'

'कह चुकी हूं कि सोम मेरे पेट की संतान है। शायद अपने दोस्त की डॉक्टर बहिन का पता हो तो पूछ सकते हो। इससे अधिक मुझे

कुछ नही कहना है, यदि तुम मुझे चौचन्द करना ही चाहते हो तो वह रास्ता तुम्हारे लिए खुला हुआ है।'

'मेरा रास्ता तो बहुत खुला हुआ है श्रीमती जी! मेरा रास्ता खोलने की स्पर्द्धा तुम्हारी नही हो सकती। पर अगर यह छोकरा सच-मुच ही तुम्हारी सन्तान है! शायद सच ही हो—उसकी आखो मे तुम्हारी आंखों की झलक शायद पकडी भी जा सकती है। लेकिन कपूर की झलक को भी तो वह अपने चेहरे मे छिपाए हुए है! तो क्या तुम्हारे ताल्लुकात इतने पुराने है?'

कमला उठ खडी हुई, बोली 'तुम इतने नीच हो जाओगे, इसकी मैंने कल्पना भी नही की थी। मैं तुमसे बात करना नही चाहती।' और वह वहा से जाने के लिए उद्यत हो उठी।

नटनागर ने उसका हाथ पकड लिया, 'जाती कहा हो परो?'

'छाटो मेरा हाथ, नही तो मैं चिल्लाती हूं।'

'गैर मर्द नही हू। फिर भी हाथ छोड देने से ही क्या होगा। जानती हो, आज मैं अन्तिम फैसला करने के लिए तैयार होकर आया हू।'

'पर अन्तिम फैसला अभी नही हुआ क्या?'

'कहां.....'

'कल ही, जब उस शून्य रात्रि में मैंने उस घर की देहलीज से बाहर पैर रखे।'

'पर मेरे मन की देहलीज के बाहर तो पैर नही रखे।'

'मैं तुमसे नफरत करती हूं।'

'मगर मैं नही...'

तभी मालूम दिया पास के कमरे से आवाज़ आई 'ऑण्टी?'

'आई सोम!' कहकर कमला ने हाथ को झटका दिया, वह छूट गया, और वह आगे बढी, इसी बीच उसकी साडी उसके सिर से खिसक गई थी। नटनागर ने उसे पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया। कमला की वेणी उनके हाथ मे आ गई। कमला रुक गई।

कमला ने दर्प के साथ कहा, 'छोडो मुझे !'

'इधर देखो। फिर कहना मुझसे छोडने के लिए।' कमला ने तनाते हुए वालो को किसी तरह सहकर गर्दन मोडी। पास के कमरे मे से आती हुई हलकी रोशनी के प्रायान्धकार मे कमला ने देखा कि नटनागर के हाथ मे छुरा तना हुआ है। वह घबरा अवश्य उठी पर उसने चेत न खोया। बोली, 'तो यह करना चाहते हो ? लो, इतना समय क्यो व्यर्थ बर्बाद किया ?'

'ऑण्टी ! तुम किससे बाते कर रही हो ?' उस कमरे से सोम ने कहा।

'कुछ नही सोम ! तुम सोए रहो...' फिर नटनागर से कहा, 'लो, अपनी साध पूरी कर लो, शीघ्र, ताकि वह निरीह बच्चा एकाएक समझ न पाए।'

'इतने सस्ते कैसे छूट जाना चाहती हो ?' और कमला ने देखा कि उधर सोम पलग पर से नीचे उतर रहा है, और इधर नटनागर की आखो मे एक शैतानी चमक रही है। वे बोले, 'तुम्हारी आखो के सामने तुम्हारे पाप का यह फल पहले नष्ट होगा, फिर तुम !' और कमला को छोड़कर वे सोम की ओर बढे !

कमला चिल्लाई, 'सोम ! शिब्बू के पास भाग जाओ। मेरे पास न आओ। यह हत्यारा है !' और उसने बढते हुए नटनागर की पैंट को कमर से पकडकर खीचा, साथ ही वह चिल्लाई 'शिब्बू, शिब्बू--बचाओ !'

नटनागर ने रुककर कमला को एक लात मारी, उनका पैंट छूट गया। सोम किंकर्तव्यविमूढ-सा सकते की हालत मे जहा खडा था, वही खडा रहा, पर तभी शिब्बू ने परदा ठेलकर भीतर प्रवेश किया। नटनागर इस कमरे मे आ चुके थे। कमला दरवाजा पकडकर खडी हो गई, चोट उसके कोमल जगह पर लगी, उसे चक्कर आने लग गए थे।

नटनागर ने कहा, शिब्बू को लक्ष्य करके, 'तुम बाहर चले जाओ —यह मिया-बीवी का झगडा है। यदि शोर-गुल किया तो तुम्हारे साहब

की इज़्ज़त मिट्टी मे मिल जाएगी।' छुरे वाला हाथ उन्होने पीठ के पीछे छिपा लिया था।

शिब्बू रुक गया, बात तो सच है, मियां-बीवी की लड़ाई मे उसे बोलना नही चाहिए। और बीवी ऐसी भी क्या कि रात-रात भर दूसरो के घर पडी रहे। पर उसे रुका हुआ देखकर सोम ने कहा, 'नहीं शिब्बू, इन्होंने आॅण्टी को मारा है।'

नटनागर ने कहा, 'तू ठहर कुतिया के पिल्ले!' और वे उसकी ओर लपके, पर तभी पीछे से कमला सम्हलकर आगे बढ़े, उसके पहले ही शिब्बू ने उनका इरादा समझकर नटनागर को पकड़ लिया। दोनो ही आपस मे उलझ गए—सोम भागकर दरवाजे मे आॅण्टी के पास खडा हो गया।

नटनागर ने कहा, 'शिब्बू! मेरे पास छुरा है, मौत के मुंह मे जाना चाहता है? यह देख...' और उन्होने छुरे वाला हाथ ऊपर उठाया, किन्तु तभी सोम को एक ओर धकेलकर कमला आगे बढ़ी, सोम चिल्लाया लेकिन शिब्बू और कमला दोनो ही जानते थे कि चिल्लाने की आवाज़ से कोई लाभ नहीं है। बगले के कुछ नौकर साहब के ट्राॅलीमैन थे। चूंकि साहब ट्राॅली से गए थे, इसलिए शिब्बू और रामजीवन को छोड़ कोठी मे और कोई न था। रामजीवन को भी सिवा उसके कुत्ते के कोई नही जगा सकता, यदि वह सोया हुआ हो। अभी वह सोया नही है, पर वह और दादू दोनो ही उसकी कोठरी में बैठे बातें कर रहे हैं। आगे बढ़ने के प्रयत्न में इस बार दादू कुत्ते की पहुंच से न बच सका। रामजीवन उसे जानता था, बोला, 'क्या बड़े बाबू के साथ आए हो?'

'हा!' के सिवा दादू कह ही क्या सकता था?

'वे सोम बाबा को देखने गए हैं! लो आओ, यहीं बैठें!'

दादू नटनागर का पीछा करना चाहता था, पर अब क्या बहाना करे? उसने कहा:

'उधर कोई है?'

'शिब्बू है न ! वही तो बावा की देखरेख करता है।'

—तो कोई है जरूर ! यदि कुछ बात हुई तो शिब्बू सहायता करेगा ही। फिर रामजीवन शायद कुछ जानता हो, उससे बातें करके दादू कुछ कमला के बारे मे मालूम कर सकेगा। इसके सिवा और दादू के लिए चारा ही क्या है ? कम से कम, रामजीवन की बात से उसे यदि खतरे जैसा कुछ लगा तो वे एक से दो तो है ही !

कमला ने सोम से कहा, 'सोम ! तू उस कमरे में चला जा !' पर सोम गया नही, वह देखता रहा उसी ओर सास रोके। पर कमला ने आगे बढकर नटनागर का छुरे वाला हाथ पकड लिया था।

छुरे की बात सुनकर शिब्बू का डर जाना स्वाभाविक था। प्राणो का मोह किसे नही होता ! और फिर नटनागर ठहरे बडे बाबू ! कुछ झिझक उसके मन मे पहले ही थी। कमला ने जैसे ही नटनागर का हाथ पकडा, नटनागर का क्रोध और भी बढ गया, 'बोले, ओह ! तो यह रण्डी भी अब चण्डी बनना चाह रही है !'

उन्होने हाथ को झटका दिया पर कमला ने हाथ नहीं छोडा। शिब्बू को ढीला पडा देखकर नटनागर ने कसकर उसके एक लात मारी, नटनागर को लिए शिब्बू जमीन पर आ रहा, पर तभी उनके छुरे वाले हाथ को कमला ने जोर से काट खाया। कलाई पर दात गडने से खून उभर आया। छुरा छूट गया—नटनागर शिब्बू से छूटकर उठे, उसके पहले छुरा लेकर कमला दूर हट गई, शीघ्रता से उसने छुरे को पास ही अन्धेरे में पड़ी हुई एक अलमारी के नीचे छिपा दिया।

शिब्बू को छोडकर नटनागर कमला पर दौडे, कहते हुए 'अपने यार को बचाने का मजा चख ! जो जिन्दगी मे कभी नही किया, वही आज करूंगा, तू भी समझ ले कि आदमी यदि माफ कर सकता है, तो वह बदला भी ले सकता है।'

कमला ने आशा नही की थी कि नटनागर, टी० बी० से आक्रान्त, साढे चार फुट का आदमी, इतना खूंखार हो सकता है। जाने कहां से

आज उनमे शैतान की ताकत आ गई थी। मालूम पडता था मानो सारी सृष्टि को शेष करके वे स्वय भी शेष हो जाएगे। इसी बीच आगे बढकर विमूढ खडी कमला के मुह पर ढीले हाथ का एक भयानक तमाचे का आघात लगा। उसे चक्कर आने लगे, केवल उसने यही सुना :

'कहा है छुरा हरामजादी ?'

फर्श पर गिरती हुई कमला का हाथ पकडकर उन्होने अपनी ओर खीचा, कमला उनके वक्ष से जा टकराई। 'कहा छिपाया ? बोलती है या नही ?' कहकर उन्होने उसकी ओर देखा, उसके चेहरे पर जो भी कुछ हो, नटनागर को मालूम दिया कि वह बोलेगी नही, तो उन्होने उसे धक्का दिया, वह फर्श पर आ गिरी। यदि फर्श पर गलीचा और दरी बिछे हुए न होते तो उसका सिर फूट जाता।

'क्यो रे शैतान ! तू जरूर जानता है बता—' कहकर नटनागर सोम की ओर दौडे।

'अकिल, डोण्ट हिट मी (मुझे मत मारिए) मैं बीमार हू।' और वह रोने लगा।

इसी बीच शिब्बू उठ बैठा, उसने देखा और समझा कि बडे बाबू होश मे तो अवश्य नही ही है, पर हत्या करने पर भी तुले हुए है, और यदि उसने शीघ्र ही कुछ नही किया तो अभी किसीका खून हो जाएगा। सारी बात तो वह समझ नही सका, मिया-बीवी का झगडा भी हो, तो भी साहब के लडके, इस बीमार सोम का क्या कसूर है ? तभी उसने देखा कि कमला को जमीन पर गिराकर नटनागर सोम की ओर बढ रहे हैं, वह उठा, और उस ओर बढ़ा।

'बता, कहा रखा है तेरी चुडैल मां ने छुरा ?' और उन्होंने एक तमाचा कसकर उस बीमार निरीह बालक के मुह पर भी जड दिया, फिर दोनो बाजुओं से डरे हुए उस बच्चे को पकडकर उन्होंने ऊपर उठा लिया। शायद उसे नीचे गिरा देने का उनका तात्पर्य रहा हो, शिब्बू ने पीछे से जाकर उनकी टागो को इस तरह खीचा कि वे गिरते-गिरते

बचे। सोम उनके हाथ से छूटकर फर्श पर गिर पडा—गिरते ही बेहोश हो गया।

शिब्बू और नटनागर पुन उलझ गए। शिब्बू नौकर था, किन्तु केवल बच्चे की देखरेख भर के लिए था, लडने-झगडने के लिए नही। नटनागर बीमार थे, तब भी इस समय उनपर शैतान सवार था। वे मरने के लिए ही घर से बाहर निकले थे, पर मरने के पहले सब कुछ शेष कर देना चाहते थे। प्रारम्भ मे उनका लक्ष्य था कि चोर की तरह भीतर घुसकर कपूर तथा कमला दोनो ही को नीद ही नीद मे खत्म करके स्वय भी वही आत्महत्या कर लेगे। यहा आने पर कपूर साहब गैरहाजिर मिले, तो कमला ही सही—और भीतर जाने पर यह रहस्य भी जब उन्हे मालूम दिया कि यह सोम और कोई नही, कमला ही का वह पुत्र है, जो गर्भावस्था से ही उन दोनो के बीच मे आ गया था, तो उनकी पु जीभूत घृणा उसीके ऊपर उमड पडी। एक बार जिसको उन्होने सचमुच प्यार किया था, आज उसीके प्राणो का ग्राहक होते उन्हे एक क्षण को भी असमजस नही हुआ। जो सिर को कन्धे पर से उतारकर हथेली पर लिए घूमता है, उसके कन्धे काफी मजबूत हो जाते हैं, वह किसी भी दूसरे के कन्धे का बोझ हलका कर सकता है। नटनागर मे आज अशेष शक्ति है।

कमला अर्ध बेहोशी मे पडी थी। उसने यह भी देखा कि नटनागर ने सोम को उठाकर फर्श पर पटक दिया है, उसे जब होश आया तो सबसे पहले उसे अनुभव हुआ कि सोम मर गया—वह उठी, विक्षिप्त-सी वह सोम की लाश के पास पहुची और उसे अपनी गोद मे उठा लिया। इसी बेहोशी मे सोम ने अपने हाथो को कमला के गले मे डालकर कहा—'ममी !'

तो सोम जीवित है ! हे भगवान् ! अब कमला को कोई भी चाहे तो मार सकता है, वह तैयार है। अभी उठकर वह नटनागर से कहेगी कि उसे मार डाला जाए ! यदि वह नही मारते, तो वह स्वय उस छुरे

को लेकर अपने सीने मे भोक लेगी। यदि उनका बदला समाप्त हो जाए तो वह सोम को छोड़ देंगे।

कमला को अब अधिक देर नही करनी चाहिए। यदि नटनागर की दृष्टि इधर पड गई तो बडा कठिन होगा। उसने सोम को नीचे सुला दिया, और उठी, अलमारी के नीचे छुपाए हुए छुरे को उसने उठाया, और एक हसरतभरी दृष्टि सोम के ऊपर डालकर वह उधर बढी, जिधर नटनागर और शिब्बू मल्लयुद्ध मे उलझे हुए थे। जीवन की विडम्बना तो देखो, कमला आत्महत्या को सबसे बडी कापुरुषता समझती थी, वही आज आत्महत्या करने जा रही है।

'गों-गों—SS'—यह क्या ?—कमला ने देखा कि शिब्बू नीचे पडा हुआ है, और नटनागर उसकी छाती पर पडे हुए उसके गले को दोनो हाथो से दबाए जा रहे हैं, शिब्बू का दम घुट रहा है, उसकी आखे फट गई हैं, जिनमे तारें ऊपर चढे चले जा रहे हैं। खुले हुए मुह से जीभ कुत्ते की जीभ की तरह बाहर निकलती जा रही है। और शिब्बू की शिथिल पडती जा रही देह को लक्ष्य करके नटनागर कह रहे हैं :

'मर तू—कुत्ते की मौत।—देखता हू अब कौन उस छोकरे को बचाता है।—छुरा न सही, यही तरीका क्या बुरा है।—देखे वह चुड़ैल—उसके पाप की सन्तान किस तरह कुत्ते की मौत मरती है और फिर मैं देखूगा किस तरह सन्तान की हत्या को देखकर कांपे-सहमे हुए उस चुडैल के चेहरे से प्राण की आखिरी रोशनी बुझती है—मर तू···'

एक बार और गो-गो की ध्वनि-सी हुई, किन्तु नटनागर के मुह से तभी—'ओह !' की ध्वनि हुई, और उनका हाथ शिब्बू के गले पर शिथिल हो गया—वे पीछे मुड़कर देख भी न सके, गिर पड़े फर्श पर, उनकी पीठ में छुरा और गहरे घुस गया—सीधे हृद्-यन्त्र को छेदकर—कराहने का अवकाश भी उन्हें नही मिला। उनकी निर्जीव देह मात्र रह गई।

कमला ने देखा—यह क्या हुआ ?—उसके हाथ का छुरा कहां गया ?—उनकी पीठ पर, क्या यह उसीने किया है ?—उसीने उसके

पति की पीठ मे छुरा भोक दिया है ?—नही-नही, वह तो अपने ही सीने मे छुरा भोकना चाहती थी—फिर यह क्या हो गया ?—क्या हो गया ?—और वह भी बेहोश होकर नीचे गिर पडी, नटनागर की लाश के पास ही !

दादू ने कहा, 'रामजीवन !—बहुत देर हो गई बडे बाबू को, ज़रा देख आएं न ?'

'अरे देर क्या हो गई, छोकरा बीमार जो है। सवेरे से एक नर्स बैठी हुई है।'

'नर्स ?—देखी है तूने ?'

'देखी किसने—वही शिब्बू कह रहा था।—बडे साहब तो हैं नही, बड़े बाबू रात शायद यही रहे।'

'तो मैं पूछ आऊ ?'

'सो रह न, यही पर !—आएगे तब जगा दूगा ?'

'नही, मेरा मन नही मानता !....'

'तो जा देख आ—मैं यही बैठा हू।—या मैं भी चलू ?'

'क्या करेगा तू चलकर ?—मैं अभी आया। ...'

—कहकर दादू उठा—और जैसे ही कमरे के आगे बढ़ा, उसके पैर कापने लगे। सब कुछ शून्य मालूम दे रहा है। कही कोई हरकत नही मालूम देती। रात मानो स्वय सोकर मृत्यु का वेश धारण कर चुकी है। कही साहब ने सब कुछ खतम तो नही कर दिया ? छुरा शायद वे वही रख आए थे। हाथ मे तो उसने देखा नही था। फिर क्या हुआ ? इतनी मनहूसियत क्यो छाई हुई है ?'

बाईं ओर के दरवाज़े की सेंध मे से हल्का-सा प्रकाश आ रहा है। ऊपर हवादान से भी मालूम दे रहा है कि रोशनी इसी कमरे मे है। उसने दरवाज़े पर कान लगाकर आहट लेनी चाही। फिर उसने दरवाज़े को ज़रा-सा खोला, वह सरलता से खुल गया। भीतर परदा ढका हुआ था। कुछ और आगे बढकर दादू ने परदे को हटाया। भीतर बहुत हल्की

रोशनी थी। एकाएक दूर से दिखाई दिया कि फर्श पर सभी सोए हुए हैं। पर इस तरह बेतरतीबी से—उधर दूर—वह तो हिल रहा है—अरे कोई प्राणी, शायद साहब का लडका—दादू पर्दे को ठेलकर आगे बढा—अरे खून!—यह क्या?—नटनागर साहब—यह पीठ मे—आह वही छुरा है जिसे लेकर वे घर से निकले थे!—वह उसे खूब पहचानता है। अपने इकलौते हाथ को उठाकर उसने देखा, इसी छुरे की पहचान तो इस हाथ पर भी लिखी हुई है। इसीसे मारे गए! दूसरो के लिए कुआ खोदकर खुद ही उसमे गिर पडे। लेकिन मारा किसने?—यह—यह तो शिब्बू है—क्या यह भी मर गया?—दादू ने उसके नाक पर हाथ रखा—सास चल रही है।—और—यह मेम साहब?—ऐं—क्या ये भी मर गईं?—मालूम देता है इन्होने सबको मारकर—पर पीठ मे उनकी छुरा, यह खुद वे कैसे मार सकते थे?

दादू ने मेम साहब के नाक पर हाथ रखा। उनकी सास भी ठीक तरह चल रही थी। तो क्या मेम साहब ने नटनागर को खत्म कर दिया? क्यो?—छुरा उनके पास कैसे पहुचा?

दादू ने आगे बढकर सोम को देखा, वह फर्श में मुह छिपाए जाग रहा मालूम देता था। दादू ने देखा कि जीवित वह भी है, पर होश में नही है।

—एकाएक दादू को मानो होश आया! यदि कोई अभी यहां आ जाए तो सिवा उसके किसे हत्यारा समझेगा?—वह निर्दोष है, पर कौन सुनेगा उसकी बात?—फासी पर लटका देगे उसे सहज ही!—नही, बड़े लोगो की बडी बातें ठहरी। कोई आए, उसके पहले ही उसे भाग जाना चाहिए। आग जाने, लुहार जाने—और दादू मानो भागा—भागकर शीघ्र ही वह कमरे से बाहर निकल जाएगा। रामजीवन से कुछ कहने की जरूरत ही क्या है?—यदि मौका मिला तो चोर-फाटक से वह बाहर निकल जाएगा—जल्दी मे जैसे ही वह चला, रास्ते में नटनागर का शव और पास ही शव बनी कमला की देह पड़ी हुई थी।

दादू उन्हे उलाघ कर निकल जाता, पर उसका पैर छाती पर पडे हुए कमला के हाथ से टकरा गया। शायद कमला जाग भी रही थी। उसने धीरे से कहा·

'दादू !'

—दादू के बढते हुए पैर रुक गए, इस प्रकार की वह उपेक्षा नही कर सकता था।

'डरे मत दादू ! खून मैंने किया है ! पर देख तो—मेरा बच्चा—वह सोम …'

'वह ज़िन्दा है मेम साहब।'

'जिन्दा है ?—सोम मेरा !—दादू ज़रा मुझे सहारा देकर उठा दे। एक बार उसे देख लू, फिर पुलीस को खबर कर दे ! खून मैने किया है। और वह शिब्बू ?'

दादू ने कमला को हाथ का सहारा देकर बिठा दिया, और बोला 'सास उसकी भी चल रही है।'

'तो डॉक्टर को भी बुलाता ला। · '

'मगर—आप जानती है !—अच्छा, मेरे कन्धे पर बैठ जाइए, अभी तो वहुत अधेरा है।'

'भाग जाऊ ?—मगर किसलिए—किसलिए दादू ?—मुझे सोम के पास ले चल ! फिर पुलीस को खबर कर दे। देर मत कर।'

'लेकिन पुलीस वाले…'

'हा; फासी की सजा देगे।—मैंने खून जो किया है।'

दादू ने कमला के बढाए हुए हाथ को पकडा, किन्तु कमला ने कुछ सोचकर पुनः अपना हाथ छुडा लिया। नटनागर की ओर देखकर उसने आखें बन्द कर लीं, मानो उसके हृदय के भीतर से एक ज्वालामुखी फूट पडना चाहता था !

वह सरकती हुई आगे बढी। नटनागर के सिर को अपनी दोनो बाहुओं मे भरकर भावाबिद्ध-सी वह उस चेहरे की ओर देखती रही। उससे

अपने गालो को सटाकर वह शून्य मे जाने क्या देखती रही। फिर उसने उस सिर को अपनी गोद मे कर लिया। अनायास ही उसका हाथ पीठ मे घुसा हुआ छुरा को लग गया, दादू सब कुछ देख रहा था, उसने शीघ्रता की। भावावेश मे मेम साहब कही आत्महत्या न कर ले। उसने आगे बढकर छुरा उनकी पीठ मे से खीच लिया। रक्त पहले ही सारे फर्श पर आसपास फैला हुआ था, छुरे के निकलते ही, रक्त का एक और फव्वारा छूट पड़ा—दादू के हाथ और वस्त्र भी रक्ताक्त हो उठे!

उठकर दादू ने कहा—'मेम साहब, हत्या आपने नही का; हत्या मैंने की है। छुरा देखती नही?—छुरा भी मेरे पास है।'—और वह एक दीप्त उल्लास से छुरा हाथ में लिए दरवाज़े की ओर बढ़ा—कमला कहती ही रही, 'दादू—दादू यह क्या करते हो? कुछ सुनो तो?—कुछ सुनो तो?'—पर कौन सुनता उसकी बात वहा पर?—दादू बाहर निकल चुका था।

२५

संध्या हो गई थी, अपने कमरे मे बैठे-बैठे जी उकता रहा था। नये उपन्यास का अन्तिम परिच्छेद किसी तरह समाप्त होना नही चाहता। उधर प्रकाशक ने पेशगी क्या दे दी है, पुलिस पीछे लगा दी है। कहता हूं, तुम छापना तो शुरू करो, जब तक तुम इस अंश तक पहुंच पाते हो, तब तक तो मैं ऐसे दो दर्जन उपन्यास समाप्त कर दूंगा—पर प्रकाशक पर किस लेखक का बस चला है, खासकर जब कि वह पेशगी भी दे चुका है। बहरहाल, किसी उपन्यास का अन्त उसके प्रारम्भ से भी अधिक कठिन है, इसमें कोई संशय नहीं। 'ऑल एण्ड्स वेल, दैट एण्ड्स वेल' अंग्रेजी की कहावत के अनुसार यदि सब अच्छाई-बुराई समाप्ति पर ही

निर्भर करती हो, तो समाप्ति के लिए लेखक को सावधान भी होना चाहिए, कम से कम उसे पाठको और आलोचको से कितनी गाली या कितना यश मिलेगा यह उस पुस्तक के अन्त पर ही निर्भर करता है। खैर जब यही बात है, तो जल्दी मे नही लिखूगा, जब मन स्वस्थ हो ले—आज नही कल, कल नही परसो !—

ऊपर छत पर दरी डालकर चाहता था कि उदय होते हुए तारो का सगीत सुनूगा कि नीचे से आवाज आई, कोई आ रहा है। कौन है ?—नौकर समझदार है, जरूरत पडने पर वह यह भी कह सकता है, 'पडित जी बाहर गए हुए है।—यानी जैसे कभी कोई किराया मागने वाला हो, या फिर कभी ऐसा दोस्त भी हो, जिसके आते ही उसे चाय बनानी होगी, बाजार जाकर नाश्ता, सिगरेट आदि लाना होगा, तो वह निस्सकोच कह देगा कि मैं घर पर नही हू ! एक बार तो एक मित्र को भी, जिन्हे मैंने मिलने का समय दे रखा था, वह इसी तरह टालना चाहता था। मित्र ने जब कहा कि 'अजीब हजरत है, समय देकर बाहर चले जाते है,' तो आप कहने लगे—'जरा ठहरिए, कही ऊपर कमरे मे बैठे लिख ही रहे हो ! कहा मुझसे उन्होने यही था कि बाहर जा रहे है।'

खैर—सो आकाश मे देख रहा था कि कब सबसे पहला तारा कहा उदय होता है, कि अपने पुराने मित्र कमलनयन जोशी और कृपानारायण जोशी यानी जूनियर और सीनियर दोनो ही आ टपके !

सीनियर जोशी ने कहा उसी तरह कन्धे उछालते हुए, 'अरे यार माई लॉर्ड ! कहा छिपे बैठे हो ? कैसे हो ? बडी अजीब खबर है, कुछ सुना है ?'

सीनियर जोशी का भी तबादला हो गया था। दरी पर सबके लिए जगह करके बैठने का इशारा करते हुए मैंने कहा—'बहुत बरसो बाद दिखाई दिए हो जोशी ! कब आए हो ?'

सिर को अपनी गर्दन की धुरी से बिल्कुल बाहर करके मोटे साफे के साथ घुमाते हुए उसने कहा, 'गोली मार यार आने को ! आया परसो

ही तो हू—पर यह कमल जोशी क्या खबर लाया है कुछ सुना है ?'

मैंने देखा कि खबर सुनाने को दोनो ही का पेट फटा जा रहा है ! कमल के हाथ मे शायद आज का दैनिक समाचारपत्र है ।—कृपानारायण अपने झोले जैसे कोट की जेब मे से कुछ निकालने का प्रयत्न करने लगा, तो मैंने उसकी ओर देखा—चेहरा वैसा ही पतला-पतला-सा, कुछ आगे निकले हुए दातो के ऊपर फैले हुए मूखे ओठो को छिपाने वाली मूछो के बाल सफेद होना शुरू हो गए थे; बगल का ऊपर का एक दात शायद टूट चुका था, उनके ऊपर पानो की पीक जमी हुई थी । पैंट पहने हुए था, किन्तु वह भी उतना ही ढीला कि सरलता मे बैठने मे कोई कष्ट न हो, लखनऊ के गरारे जैसा ही ।—दो दिन की बढी हुई दाढी के बाल भी यत्र-तत्र सफेद हो चले थे, जो सींक जैसे अलग ही मुंह निकाले दिखाई दे रहे थे ।

कमल मे सुरुचि शिक्षा के मान से अधिक ही है । वह मलमल का कुरता तथा ढीला पाजामा पहने हुए है । प्रतिदिन श्मश्रुनिरसन के द्वारा चहरे को चिकना-सुथरा रखने के पक्ष मे है । गाहे-बगाहे सिगरेट का शौक भी कर लेता है । सिर के बालो मे कघी प्रायः घण्टे में एक बार दौड़ लगा आती है—और अब तो कुछ ही दिनों मे उसका विवाह भी होने वाला सुना गया है । अतः उसकी सज्जा, उसका उल्लास, और आने वाले जीवन की ताजगी की साक्षी भी उसके शरीर और मन पर देखी जा सकती है ।

मैंने कहा, 'कमल की खबर तो मैं जानता हू ! तुमने शायद अपने एक कलैंडर के सब पत्ते गिन डाले हैं न ?—कमल को तुमसे ईर्ष्या हो, और वह भी किसी ऐसे ही साहस के कार्य में प्रवृत्त होना चाहे तो क्या बुराई है !—तुम अपनी कहो ।'

'अपनी क्या है माई लॉर्ड !—अब तो सन्यासी होने की इच्छा हो रही है ! सरकार के तो आखें हैं नही । रूस मे सुनते हैं कि हर बच्चे का अलाउन्स मिलता है, और यहां पाकिट की गिरह कटती चली जाती है ।

बीवी ने भी अब तो जवाब दे दिया है !'

'जवाब दे दिया ?'

'अरे माई लार्ड ! पहले कम से कम प्रसूति का खर्चा तो मत्थे नही पडता था, अब श्रीमती जी ने कह दिया, कि पीहर नही जाएगी। उनकी छोटी वहन ने पहले ही वहा अड्डा जमा रखा है।'

कमल ने कहा, 'और इसीलिए डिलीवरी के ब्याज के साथ ही साथ चक्रवृद्धि ब्याज भी चुकाना पड रहा है ! है न ?'

मैंने कहा, 'और वह तुम्हारा शरणार्थी परिन्दा क्या हुआ ?'

जोशी ने उसी तरह पेच खाकर घूमते हुए लड्डू की तरह सिर को हिलाकर कहा—'अरे यार !—वह बात मत पूछ, माई लार्ड। वह परिन्दा उड गया बम्बई उसका एक दूर का बहनोई रहता है—सो बहन के साथ उसे भी घसीट ले गया। कहता था फिल्म कम्पनी मे काम दिलवा देगा।'

'तब तो उसे परदे पर देखकर आखे तृप्त कर सकोगे।—अच्छा किराए का क्या हुआ ?'

'क्या होगा ?—वह भी तब तक माफ था—'कमल ने कहा—'अब चढी दर से वसूल करने का नोटिस जा चुका है।'

'क्यो जोशी ?' मैंने पूछा।

'अरे यार—तुम भी क्या बेकार बातो मे फसे हो।—आज का अखबार पढा या नही ?—तुम्हारे नटनागर चन्दा मामा के देश पहुच गए ..'

'क्या मतलब ?...'

'और पहुचाया भी किसने ?—उनकी उसी छबीली ने !—क्या माई लार्ड ! इस बीसवी शताब्दि मे भी तुम अखबार नही पढ़ते ?—देखो न ..'

और उसने कमल के पास से अखबार छीनकर एक पेज मेरे सामने पटक दिया !

अखबार हिन्दी का था, पर था आज का ही। मैं ऊपर की हेड-लाइन पढकर ही उस सम्वाद को तलाश करना चाहता था किन्तु जोशी को इतना धैर्य कहां ?—उसने हाथ के इशारे से एक कॉलम पर मेरी दृष्टि को निबद्ध कर दिया।

'रेलवे अधिकारी के घर मे लोमहर्षक हत्याकाड।—डिविजनल-सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री कपूर....' और मैं सारे वातावरण को भूलकर उस सम्वाद को पढने लगा। 'अर्धरात्रि को जब कि सुपरिण्टेण्डेण्ट महोदय बाहर दौरे पर गए हुए थे, उनके बगले पर उनके हेड क्लर्क श्री एन० एन० नटनागर की मृत देह पाई गई। इस सम्बन्ध में दो व्यक्तियो को गिरफ्तार किया गया है, जिनमे एक है इनकी पत्नी ! विस्तृत समाचारों की प्रतीक्षा है।'

एक आघात-सा लगा।—कमला को मैंने वहा इसलिए पहुंचाया था कि वह पति और पुत्र दोनों को पास के !—कई दिनो से वहा के कोई सम्वाद नही पाए है। पहले तो कमला प्रति तीसरे दिन पत्र दे दिया करती थी, किन्तु एक पत्र में उसने सकेत कर दिया था कि श्री नटनागर अब उसका किसी को पत्र लिखना बर्दाश्त नही करते ! नटनागर का भी कोई पत्र कई दिनो से नही मिला था। इधर कपूर साहब के जो एकाध पत्र मिले थे, वे केवल सोम के अस्वास्थ्य के सम्बन्ध में ही थे—कमला का जिक्र केवल स्कूल की पृष्ठभूमि में ही कुछ आया था।—किन्तु इससे क्या हुआ ?—अपने मन में कोई विशेष भाव न था। यदि अपनी व्यस्तता लेकर वे मुझे याद न करें तो इसका मुझे आक्रोश क्यो हो ?—वे अपना मार्ग पा गए हैं, बस यही तो चाहिए !—अत मैंने भी उनका विशेष सम्वाद जानने की अपने मे कभी उत्सुकता नही पाई और इसीलिए उस दिशा मे कभी कोई प्रत्यन भी नहीं किया।

जोशी ने कहा, 'सोचने क्या लग गए माई लार्ड।—यह औरतों की जात ही ऐसी होती है। तुम तो साधू आदमी हो, मगर हम जैसे भुक्त-

भोगी से पूछो तो बताए !—इसकी परवाजी के लिए यह आकाश भी नाकाफी है।'

मैंने कहा, 'अपनी प्रेमिका की बात कह रहे हो, पर अपनी बीवी की बात भूलकर !—ठीक है न ?—उस बेचारी साध्वी महिला मे कभी तुम्हे कोई शिकायत के लायक बात मिली है ?'

कमल ने हसकर कहा, 'भाई साहब, आपसे यह खुलकर नही कहेगा ! पर दो शिकायते तो यह कर ही चुका है !'

'कौन-सी ?'

'एक तो यही कि दर्जन की सख्या भाभी ने छोटी साबित कर दी, कौडी की ओर शायद उनकी दृष्टि हो ! दूसरे अब वे पिता के ऊपर अपने पति की करतूत का बोझ नही डालना चाहती।'

जोशी ने कहा, 'देखता हू कमल, तू कहा तक बचता है। ओखल मे एक बार सिर तो दे ले।'

सोच रहा था कि शायद कमल का दिल तो चुटीला हो गया होगा, किन्तु विषयान्तर होते ही इतनी शीघ्र वह चोट उसे भूल जाएगी कि उसे चोट कहना उचित न होगा।

मैंने कहा, 'और सुनाओ जोशी।—कैसा चल रहा है आजकल ?—कडकी का बाजार कैसा है ?'

'अपनी क्या है माई लॉर्ड ! खीचे जा रहे है किसी तरह। एक तरफ खचडा है, दूसरी तरफ हम जैसे खचेड़ू, अब तो कभी-कभी आशा बध चलती है, कि शायद एकाध पिल्ला पीछे से धक्का भी दे दे।'

'अच्छा ! फसल इस काबिल हो गई ?'

'बडा लडका अगले साल मैट्रिक दे लेगा। माई लॉर्ड ! मैंने सुना है, कपूर साहब पर तुमने कोई जादू कर रखा है।'

कमल ने मेरी ओर भावपूर्ण दृष्टि से देखा, जैसे यह कहना चाहता हो कि इस जादू करने की घटना को वह जानता हो। किन्तु मैंने उस

ओर ध्यान नही दिया। बोला, 'हा, यदि भूले न होगे, तो जानना ही पडेगा।'

'बस ज़रा इस लडके की सिफारिश कर दोगे, तो यह खचडा रस्ते लग जाएगा। देख ही रहे हो, मै तो दो साल बाद रिटायर हो रहा हू। बडी लडकी के लिए हलदी तैयार करनी है, सो प्राविडेण्ट फण्ड के पैसे के बिना सम्भव नही होगा, यदि तब तक भी लडके का कुछ सहारा नही लगा, तो इस सारी फौज-पल्टन के साथ फाकामस्ती के सिवा कोई चारा न रह जाएगा।'—और सचमुच ही उसकी आखो की रंगीनी क्षण भर में ही ऐसे गायब हो गई, मानो वह कभी आई ही न थी।

मैंने कहा, 'यानी फिर उस गरीब छोकरे पर सारे कुनबे का बोझ लाद दोगे ?'

'चारा ही क्या है ?'

'उसे आगे पढाओगे नही ?'

'कहा से पढाऊ ?—और भी तो सात लडके, सभी उमर के हैं, उनका भी तो खर्च होता ही है!—पाच लड़किया तब और बच रहेगी!—हिसाब लगाओ माई लॉर्ड! प्राविडेण्ट फण्ड का ज्यादा से ज्यादा पांच हज़ार समझ लो, पर जैसा कि कह चुका हूं, वह एक लडकी की हल्दी के लिए ही पूरा हो जाएगा।'

'तो बच्चे पैदा करने के पहले यह सब क्यो नही सोच लिया ?'

'लो! अब क्या सभी तुम्हारी तरह साधू हो जाए ?—पर माई-लॉर्ड, सच कहो, क्या यह साधूपना निभ जाता है ?'

'तुम क्या सोचते हो ?'

'भई! हमे तो भरोसा नहीं होता।—तुम तो अभी काफी जवान हो, लोग-बाग जो कहते हैं, वही शायद सही हो!'

'लोग-बाग क्या कहते हैं ?'

'बुरा तो नहीं मानोगे न ?'

'कभी नही।'

'कहते तो यही हैं, कि इस नाटक से परदे के भीतर को छिपाने में बडी सरलता मिलती है।'

'परदे के भीतर यदि कुछ हो तो नाटक से वह छिपता ही है।'

जोशी को जैसे मेरे कथन से अपने मतव्य मे बल मिला, उल्लसित होकर वह बोला ·

'अच्छा माई लॉर्ड, एक बात बताओ। यह जो सुना जाता है कि मिसेज नटनागर से तुम्हारा भी रब्त-जब्त था, बडे छिपे रुस्तम निकले यार! लेकिन मानता हू दोस्त!· ' और मेरी जघा पर जोर का हाथ मारकर फिर उसने मुस्कराते चेहरे से अपने सारे सर को अपने तरीके से घुमाकर कहा, 'किसीको कानोकान खबर भी नही हो पाई। यह तो वे लोग हैं, जो खत को देखकर ही मजमून को भाप लेते है।'

मैं केवल सोचता रहा क्लर्क के जीवन की उस प्रतारणा को जो अपने सर्वनाशमय दुर्भाग्य को समझकर भी दूसरे के दुर्भाग्य को आनन्दोपयोगी करने का अवसर नही खोती। शायद इतने बडे बोझ को अपने ऊपर उठाकर उसके चलते रहने की असम्भव दिशा की हृदय का ऐसा ही हल्कापन सम्भव कर पाता है। अभी ही जो जोशी अपने भविष्य को निविड निराशा की भयानक किन्तु वास्तविक छाया देखकर अर्धमृत हो उठा था, वही रोमास की इस वीभत्सतामय भद्दे मजाक के एक क्षण का उपभोग करने मे तनिक भी नही हिचकिचाया। कोई परवाह नही, यदि उसे मनुष्यता के बडे नीचे स्तर पर उतरना पडा हो! मुझे जोशी पर क्रोध नही आया। उसीने तब कहा :

'हा, माई लॉर्ड! इस खबर को सुनकर इस तरह खो जाना स्वाभाविक ही है।—कुछ भी हो, मजूर करोगे उस्ताद कि जिसे किसी भी बहाने कुछ भी दिल दिया जाता है, लौट आने पर भी दिल चुटीला तो हो ही जाता है। हमारी परी भी जब बम्बई के लिए उड गई थी, तो वहा उस पराए गाव मे भी खबर सुनकर दो दिन तक खाना नही खाया जा सका था!'

कमल ने कहा, 'भाई साहब, आपको वहा जाना तो चाहिए ।'

'तुम्हे नही जाना चाहिए ?'

'यहा से जाने के पहले ही मुझसे तो उनकी बोलचाल भी लगभग बन्द हो चुकी थी ।'

'अच्छा ?—किन्तु एक बार तो उन्होने मुझसे तुम्हारे बारे मे बातचीत की थी ।'

'बातचीत ?—वह क्या भाई साहब ?'—और उसके मुंह पर उद्विग्नता स्पष्ट हो उठी ।

'कुछ याद नही रहा । शायद कुछ अर्थ सम्बन्धी बातचीत थी ।'

कमल ने मेरे चेहरे की ओर देखा, शायद जानना चाहा कि मैं कितना कुछ जानता हू उसके ऋण के सम्बन्ध मे । साहूकार तो अब है सीखचों मे बन्द । वह क्या कह सकती है, उसके कथन की प्रामाणिकता पर कितने व्यक्ति विश्वास करेंगे ? सब बाते मानो एक क्षण भर मे ही उसने सोच ली और कहा :

'अच्छा ! जाने से पहले मुझसे कुछ ऋण चाहती थी । आप तो जानते ही हैं, नटनागर से उनकी बनती न थी, तब भी खर्चे के लिए उन्हे हर माह अपनी ओर से कुछ भेजना पड़ता था ।'

'ओह !—मुझे साफ उन्होने कुछ कहा नही । फिर कुछ तुमने उन्हे दिया तो नही कमल ?'

हसकर कमल ने कहा, 'अब क्या उसका ढिंढोरा पीटता फिरूंगा भाई साहब !—नही, इतना ओछा मैं नही हू ।'

मैंने मुस्कराकर कहा, 'ओछेपन का प्रश्न तो तब हो कमल, कि जब उनका तुममें पाना हो, और इस समय का लाभ उठाकर तुम उन्हें लौटाओ नही । यह तो तुम्हारी उदारता है ।'

कमल ने केवल मुस्करा भर दिया—पर मैंने स्पष्ट देखा कि उसके चेहरे पर एक झीनी-सी परत कालिख की छा गई है । अपने आपको इतना अस्वस्थ अनुभव करने लगा कि वह जोशी से बोला, 'जोशी ! तुम्हें

नानकचन्द के यहा भी तो जाना था?'

मैने पूछा, 'नानकचन्द ?'

'हा वही, जो अपने साथ था। भूल गए ? उसने अपने बच्चो के लिए कुछ सामान भेजा है। तो फिर माई लॉर्ड, आज छुट्टी दो ! जाने से पहले एक बार और मिलूगा। कपूर साहब के लिए एक चिट्ठी ले जाऊगा तुमसे।'—और जोशी जब उठा तो कमल भी उसके पीछे खडा हो गया।

मैंने कहा, 'अरे अभी क्या जाते हो ?—चाय पी के जाना।'

जोशी सीनियर ने ही कहा, 'नही माई लॉर्ड ! आज की चाय उधार—ब्याज सहित वसूल कर लेंगे !'

'छुट्टी कितने दिन की है तुम्हारी ?'

'पन्द्रह दिन की, जिसमे पाच दिन तो हो ही गए। दस दिन और हैं।'

मैं भी उठ खडा हुआ—'ये दस दिन तो यहा बिता रहे हो न ?'

'बिल्कुल यही।'

'तो शाम को आ जाया करो। कुछ गपशप हो जाया करेगी। कितने बरसो बाद मिल रहे हैं।'

'लेकिन तुम तो ठहरे कामकाजी आदमी।'

'अरे काम कोई तुमसे बढकर है ?'

'अपना क्या है ?—चाय-वाय का अगर मुफ्त मे ही इन्तजाम हो जाए तो जरूर शाम को यही रहा करेगी।'

'तो तै रहा !—और कमल तुम भी !'

'चेष्टा करूगा भाई साहब, पर वादा नही कर सकता। जोशी को तो छुट्टी है, और आप हैं अपने समय के मालिक ! लेकिन मैं तो पराए बस मे हू। फिर भी अवसर मिलते ही जरूर आऊगा।'—और दोनो रवाना हो गए।

मनुष्य की कमजोरियों पर मुझे आश्चर्य नही होता—जब बिना

कारण ही वह कमल के समान कृतघ्न भी हो उठता है, तो क्रोध भी नही होता, किन्तु मन पर एक आघात अवश्य लगता है। सीनियर जोशी ने जब कमला और मुझे लेकर एक अपवाद की ओर सकेत किया, तो हसकर उसे टाल दिया, उसका प्रतिवाद करने की भी जरूरत नही समझी। आदमी को सोचने की और मत बनाने की स्वतन्त्रता , वह घटनाओं का और प्रसगो का मनमाना अर्थ लगाए तो उसे कौन रोकेगा ? अर्थ की प्रेरणा देने वाले उसके सस्कार, उसका वातावरण, उसकी परिस्थितिया—किनके लिए वह उतरदायी है ? किन्तु अपने ही व्यक्तित्व की परिधि में किसीके त्याग को खीच लेकर और उसे न केवल अस्वीकार करके, प्रत्युत् अपने लोभ को मिथ्या के साथ त्याग के रूप मे प्रचारित करने की इस घृणित प्रवृत्ति की क्या कैफियत दी जाए ?—यह केवल मेरी जेब से गए हुए एक हजार रुपयो का आक्रोश नही है, क्योकि तब भी तो मैं कमल पर क्रोध नही कर मका। दु.ख हुआ है तो मुझे केवल मनुष्यता के पतन पर !

किन्तु समाचारपत्र की जिस खबर की ओर ये दोनों क्लर्क अभी निर्देश कर गए हैं, उसकी गुरुता की तुलना में इन क्लर्कों की यह मनोवृत्ति ही ऐसी कौन-सी भारी है कि मेरे मन पर मानो यही घटना प्रमुख होकर छा गई है।—यह सच है कि कई दिनों से उस ओर से कोई समाचार नही मिले हैं ! नटनागर ने मना कर दिया था, न भी किया होता तो भी क्या बात थी ?—सम्वाद पाने की ऐसी कोई लालसा भी तो मन मे थी नही ! फिर क्या बात है ?—यह अच्छा ही है कि व्यक्ति को लेकर मैं माथा-पच्ची नही करता।

जैसा कि कमल ने प्रस्तावित किया था, वहा जाने की आवश्यकता क्या है ? दाल-भात मे मूसरचन्द बनने की तो कोई जरूरत नही देखता। कमला के मन को जानता हू। उसकी भूख से भी परिचय प्राप्त किया है, और उसकी सामर्थ्य से भी। उसके दिल की गहराइयो मे भी मैं उतरा हू। समझता हू कि किसी भरे हुए बडे बर्तन मे यदि फूटा हुआ बर्तन छोड़ दिया जाए, तो वह टपककर शेष नही हो सकता। कमला को यदि ऐसे ही किसी स्नेह से भरे पात्र मे स्थान मिल पाता, तो मन के छिद्रो के बावजूद उसकी तृप्ति चू न पडती ? किन्तु मुझे क्या ? मेरी जाति बडी कृतघ्न है, निस्सग होकर दूसरो की पीड़ा का व्यवसाय करते रहना ही मेरा धन्धा है। बहुत हुआ तो कमला मेरे किसी आख्यान की नायिका हो जाएगी। यदि सचमुच ही उसने नटनागर की, अपने पति की हत्या की है, तो प्रकट मे अखबार के पाठक उसपर थूकेंगे, मैं अपने हृदय का राग उस पर उत्सर्ग करके अपने उपन्यास के पाठको को प्रेरित करने का प्रयत्न करूगा, कि वे उसके लिए दो बूद आसू बहा दे। इससे अधिक एक अकर्मण्य दरिद्र लेखक कर ही क्या सकता है ?

दूसरे दिन प्रातःकाल जब नौकर अखबार खरीदने बाजार गया हुआ था, डाकिए ने लाकर एक तार पकडा दिया। तार कपूर साहब का है, एक्सप्रेस, लिखा है समाचारपत्र मैंने पढा ही होगा—मुझे पहली गाडी से वहा पहुचने का अनुरोध है। बडी जरूरत है। सो मैं मानता हू—बडी जरूरत हो सकती है कपूर साहब की—पर उसमे मेरा क्या ? जो हो। आज शाम की गाडी से पहले तो जाना हो नही सकता।

फिर भी जाना तो होगा ही। जीवन जब जी रहा हू, तो जिसने भी इसे जीने लायक बना रखा है, उनका दावा तो स्वीकार करना ही पडेगा। निस्सग, अपने मानी मे अधिक से अधिक हो तो मन हो सकता है, सो रहे मन निस्सग ! मन तो कही पर भी जाकर स्वतन्त्र रह सकता है।

कपूर साहब से दफ्तर मे ही मिलना हुआ। सोम शरीर से बीमार

तो था, किन्तु श्रीमती नटनागर के इस काण्ड ने उसे इतना अधिक प्रभावित किया है कि अपने शरीर के अस्वास्थ्य का उसे खयाल ही नही रह गया है। फिर भी सारी परिस्थिति को समझकर अब वह प्रकृतिस्थ होने का प्रयत्न कर रहा है।

घटना वास्तव मे बडी अशोभनीय हो गई। हत्या किसने की, यह कहना बडा कठिन है, श्रीमती नटनागर कहती हैं, कि हत्या उन्होने की, नटनागर का नौकर दादू कहता है कि उसने की। श्रीमती नटनागर किसी प्रकार का लाभ उठाना नही चाहती। कपूर साहब ने स्वयं उन्हे बहुत समझाया कि जब दादू स्वीकार कर रहा है, तो उन्हे क्यो आपत्ति हो रही है ? मान भी लो, हत्या उन्होने की, किन्तु यदि वे जीवित रहकर मुक्त रह सकी तो समाज की कितनी सेवा कर सकेंगी। इधर दादू जैसे नौकर का समाज मे महत्व ही क्या हैं ? यों भी है वह एक हाथ का, यदि उसके कुटुम्ब मे कही कोई हो, तो उसकी जीविका का भार लेने के लिए भी कपूर साहब तत्पर थे। किन्तु श्रीमती नटनागर जाने क्या जिद पकड बैठी हैं उस नौकर के लिए। यह ठीक है कि नौकर ने उनकी ईमानदारी से खिदमत की है। सो वही तो नौकर का फर्ज है। उन्होने भी तो उसे अब तक निभाया है ! कपूर साहब ने तो यहां तक कहा कि खाली किसी-के स्वीकार करने मात्र से कोर्ट किसीको अपराधी नही ठहरा देती, वह उसकी जांच करती है, और प्रकृत हत्यारा बच कर नही जा सकता।

यों, कोई नही मान सकता कि एक हिन्दू पत्नी अपने पति ही की हत्या कर डाले। कमला तो अपने पति की प्राणघातक बीमारी मे भी उनकी सहायता करती आई है। उसकी कमाई से ही श्री नटनागर दुःख के दिनो में अपनी नाव किनारे लगा सके थे। जिसको मौत के मुंह से बचाया जाता है, उसे इस तरह निर्दयता से पीठ में छुरा भोककर मारा नहीं जा सकता। दादू के बारे में भी कपूर साहब ने पूरी जांच कर ली है। नटनागर के लिए उसके मन मे रोष होना स्वाभाविक था। दादू का जब काम करते समय हाथ कट गया था, तो नटनागर ने उसकी फाइल

पर ऐसा नोट लिखा था कि बेचारे को दुर्घटना की क्षतिपूर्ति नही मिल सकी थी। मालूम पडता है तभी से वह उनके खिलाफ हो गया था। नौकरी तो उसे देनी ही पडी थी। श्रीमती नटनागर अपनी दयालुता के कारण उसपर विशेष कृपा करती थी, इसलिए नटनागर उससे और भी जले-भुने थे। कपूर साहब को दादू के बयान से ही यह भी मालूम हुआ था कि नटनागर ने एक बार पहले दादू का खून करने की चेष्टा भी की थी, जिसके फलस्वरूप उसके कटे हुए बाए हाथ मे छुरे का निशान भी था।

वारदात की रात को कपूर साहब घर पर न थे। उन्हे तो श्रीमती नटनागर के उस दिन बीमार होने की सूचना मिली थी। उन्हीके हाथ की लीव-अप्लीकेशन को उन्होने स्वीकृत किया था। नटनागर उस दिन देर तक दफ्तर मे काम करते रहे, यह भी प्रमाणित हो चुका था। मालूम होता है दोनो मे उस दिन अनबन हो गई थी, और जैसा कि दादू कह रहा है, उसका कारण वह खुद है। रात को जब नटनागर देर तक घर न लौटे, तो कमला उनकी खोज करती हुई कपूर साहब के बगले पर पहुची। सोम को बीमार देखकर वह वहा कुछ देर तक रुक गई। इसी बीच नटनागर घर पहुँचे और कमला को न पाकर उसकी खोज मे कपूर साहब के बगले पर दौडे आए। दादू भी चोर की तरह पीछे लग गया, हाथ में छुरा लेकर। कपूर साहब के बगले पर नौकर शिब्बू ने कुछ बीच-बचाव किया तो नटनागर ने उसे नीचे गिरा दिया। बस मौका देखकर दादू ने पीछे से पीठ मे छुरा भोंककर नटनागर का काम तमाम कर दिया।

कपूर साहब ने किस्सा तो पूरा सुना दिया। चाहते थे कि मैं श्रीमती नटनागर को समझाऊ, और मनाऊं कि वे अपने आपको इससे निकाल लें। दादू को किए का फल पाने दे, और न्याय को सहायता दे। कपूर साहब ने व्यवस्था कर दी कि मैं दादू और कमला से जेल मे भेट कर सकू।

दादू से मिलने पर कोई नई बात मालूम नही दी। उसे खूब अच्छी तरह समझा दिया गया था। सारा बयान इस तरह रटे हुए था कि जो

उसे जानता उसे सहज ही विश्वास हो जाता कि उसने बड़े मनोयोग से खूब मेहनत की है, और सारे वक्तव्य को कठाग्र कर लिया है। उससे कमला के प्रति उसकी आन्तरिक भक्ति ही का परिचय मिला।

मैंने कहा, 'दादू ! तुम चाहे जो कहो, मुझे सच्ची बात का पता लग गया है।'

'मेम साहब ने कहा होगा आपसे ! पर वे तो इसलिए ऐसा कहेंगी कि मुझे बचाना चाहती हैं। पर पुलीस ने तो मुझे देखा है। मेम साहब के कपडो पर खून था, पर हाथ तो मेरे खून मे रगे हुए थे, छुरा तो मेरे पास था।'

'तुम्हारी बात सही भी हो, तो मेम साहब तुम्हें क्यो बचाना चाहती हैं ? इस दुनिया मे कौन अप्रतिष्ठा से अपनी जान का मोह छोड़कर दूसरो की जान बचाना चाहता है ?'

दादू ने मेरी ओर इस तरह देखा, मानो कह रहा हैं, मेरी ओर देखो—क्या तब भी तुम्हे उत्तर नही मिलता ?—पर मुह से बोला :

'मैं क्या जानू सरकार ! मगर जब से मेरा हाथ कटा तभी से तो वे मुझे मा की तरह बचाती आ रही है।'

'इसलिए न तुम बेटे की तरह अपना फर्ज अदा करना चाहते हो ?'

दादू की आखें चमक उठीं—उसकी छोटी-सी नाक के नीचे फैले हुए मोटे काले ओठ जरा-से फैल गए, पीले गन्दे दांतों को जीभ से चाट-कर उसने कहा, 'फर्ज की क्या बात है सरकार ? मां का कर्ज कौन उतार सका है। इस तन की चमडी का जूता पहनकर वे चलें तो भी पूरा नही हो सकता। भगवान भला करे।' और उसने अपनी आंखें बद कर दीं। उनमें बहुत दूर कही एक आसू का दरिया तूफान मचाने के लिए बेचैन हो रहा दिखाई दे रहा था !

मुझे देखते ही सीखचों मे से ही हाथ बढ़ाकर कमला ने मेरे पैर पकड़ लिए, और कहा, 'इस पापिनी से घृणा नही की तुमने ?'

'चाह कर घृणा की जाती हे क्या किसीसे ?'

'अनचाहे ही सही !'

'तुम गलत समझ गई कमला ! चाहकर भी जब घृणा नही कर सका, तो अनचाहे कर ही कैसे सकता था ! घृणा-प्रेम, क्या इनपर किसी व्यक्ति का वश रहता है ?'

'नही रहता—यह मुझसे अधिक कौन जानता है—फिर भी तुम्हारी इस 'चाह' शब्द का मैने गलत अर्थ लगा ही लिया था, यह जानते हुए भी कि तुमने कभी भी तो मुझे चाहा नही।'

'फिर भी सदैव कल्याण-कामना तो की है !—खैर, इन सब बातो का प्रयोजन तो तब होता, जब तुम इन सीखचो के बाहर होती। बहुत कुछ कथा कपूर साहब के मुह से सुनी है ! यह आत्महत्या क्यो कर रही हो ?'

'आत्महत्या कह रहे हो ?—अरे भाई, एक हत्या का ऋण चुकाने को आत्महत्या नही कहते, कानून तक इसे ऋण-परिशोध ही कहता है।'

'पर यदि सरलता से पैसा मार देने की सुविधा मिल जाए ?'

'पर किसलिए ?—और जबकि पैसा मार देने का मतलब केवल कर्ज को बढा देना ही हो।—आखिर मेरे कर्ज को दादू क्यो चुकाए ?'

'शायद मुझे विश्वास करना चाहिए, कि हत्या तुम्हीने की है ! अगर दादू ने की हो तो उसका कारण मैं सुन चुका हू ! तुम्हारा कारण भी सुन सकता हू क्या ?'

'तुम्हीको न सुनाऊगी तो और किसे सुनाऊगी ! पर दादू की कहानी पर तुमने विश्वास कर लिया था ?'

'क्यो नही कर लेता ? स्त्रिया यो ही किसीकी हत्या नही कर सकती। फिर तुम तो हिन्दू पत्नी हो, शिक्षित, दीक्षित, सुसस्कृत,—और देखा तो यही गया है कि तुमने अपने पति का सदैव ही ध्यान रखा है।'

कमला ने आखें बन्द कर ली, कुछ समय तक उसने अपने अन्तरतम मे कदाचित् अपने इस रूप को प्रत्यक्ष देखने का प्रयत्न किया, फिर बोली,

यह भी मैं नही जानती। केवल यही जानती हू कि हो गया! किसने मुझसे वह काम करवाया, यह क्या कोई कह सकता है?'

'अच्छा! मुझे यह मालूम न था। कैसे हुआ यह कुछ?'

कमला ने वह समस्त कथा सुना दी! किस तरह वह नटनागर से संघर्ष करती रही, अपने मन से संघर्ष करती रही। फिर उस रात को कैसे वह अपने आपको न रोक सकी, और सोम के लिए वह कपूर साहब के घर जाने को विवश हुई, और किस तरह बाध्य होकर वह दिन उसे वही बिताना पडा। फिर उस काल रात्रि का वर्णन जिसमे विक्षिप्त नटनागर का हत्या के निश्चित उद्देश्य को कपूर साहब के यहा आना, कमला का असफल प्रतिरोध, सोम पर आक्रमण, कमला पर आक्रमण, तथा शिब्बू पर आक्रमण, और शेष मे फिर उनके निःशेष होने की कथा, जितना वह जानती थी, सब सच-सच सुना गई। मै कब जमीन पर बैठ गया, इसका पता ही नही रहा।

लम्बी सास, रुंधा गला तथा भारी आखो कमला ने कहा, 'किसीको यह कहानी सुनानी नही है। कपूर साहब की अप्रतिष्ठा का भी सवाल है!'

'लेकिन तुम्हारी प्रतिष्ठा पर जो आच बढ जाएगी?'

'मरने वाले की प्रतिष्ठा ही क्या है भाई!'

'पर जैसा कि कपूर साहब कहते है, छोटे हित की तुलना मे बडे हित की ओर ध्यान देना ही तो हमारे कल्याण का मार्ग है।'

'मतलब?'

'तुम्हारी मनोस्थिति को देखते हुए जो कुछ तुमने किया वह स्वाभाविक ही कहा जाना चाहिए! सामाजिक जीवन मे दादू की अपेक्षा तुम्हारी उपयोगिता अधिक है, इसे तो तुम भी स्वीकार करोगी!'

कमला कुछ मुस्करा दी, बोली, 'सामाजिक जीवन मे न हो, तब भी एक व्यक्ति के जीवन मे तो होगी ही।'

'मेरा भाग्य कुछ मन्द ही है कमला! सामाजिक उपयोगिता मेरी

कुछ नही है, पर समाज का भार बढाना मैं नही चाहता ।'

कमला ने हसकर कहा, 'तुम्हे यदि इतना निकट से न जानती होती, तो अपने प्रेम का कभी विश्वास मुझे नही होता । मैं कह रही थी कपूर साहब की बात ।'

'कपूर साहब की बात ?—कैसे ?'

'उनके लडके को मिलती मा—और लडके की मा के व्याज से मिलती उन्हे मिसेज़ कपूर···'

'कमला !'

'चौक क्यो उठे ?—अस्वाभाविक क्या है इसमे ?'

'नही, अस्वाभाविक नही है । किन्तु कपूर साहब को देखकर यह अकल्पनीय अवश्य लगता है । खैर, यदि ऐसा हो भी तो मैं समझता हूं बुरा तो इसमे कुछ नही है । कपूर साहब भले आदमी ही हैं । उनके मन मे कोई प्रतारणा तो अवश्य नही होगी ।'

'मनुष्य कब भला नही होता है ?—नटनागर क्यो कम भले थे ? उस बेचारे का क्या दोष था ?—पत्नी होकर भी प्यार नही कर सकी, यह दुर्भाग्य तो मेरा है—पर आज उनके प्रति दया तो उत्पन्न होती ही है । और अनजाने ही जो शिक्षा, दीक्षा, सस्कार मुझे मिले हैं, उनके लिए मुझे उन्हीका तो कृतज्ञ होना चाहिए । बल्कि अपनी इस उपलब्धि के लिए जिन्हें मैं अपना शत्रु अनुभव करती रही हू, उन्हीके निकट तो आभार मानना चाहिए ।—तुम्हें आश्चर्य होगा, परसों मेरे अतीत के प्रेमी धर्मप्रकाश मुझसे मिलने के लिए आए थे !—धर्मप्रकाश को तो जानते हो !'

'हां-हां !—वे ही नटनागर के बडे बाबू···'

'आजकल यहां आए हुए थे—कपूर साहब के ऑफिस मे कुछ काम रहा होगा ।'

'क्या कहते थे ?'

'बडे दुःखित हुए !—पुराना किस्सा एकाएक याद न आया, लगे

नटनागर मे महानुभूति जताने ।—पर जब एक सूत्र मैंने उन्हे थमाया तो मुलाकात शीघ्र ही शेष हो गई ।'

मेरे मन मे आया कि दूसरे प्रेमी कमल का कच्चा चिट्ठा भी पेश कर दू । पर क्यो ? क्यो इस दुःखित-प्रपीडित नारी की शेष यात्रा भारवह हो, और इस दुनिया से उसकी आस्था ही नष्ट हो जाए !

कह रही थी वह, 'उससे मैं तो उसकी ही बाते पूछ रही थी। जीवन सचमुच दुर्वह हो गया है बेचारे के लिए। पहले जैसे दिन तो रहे नही । न वे नौकर, न वे नाज़—बीवी, कहता था, खूब मोटी हो गई है, चल-फिर भी नही सकती, बच्चे-कच्चे बेकाबू हो रहे है, और दफ्तर में कोई उन्हे दो कौडी का नही पूछता ।'

'उनकी बात रहने दो । तुम यह कहो कि कपूर साहब के प्रस्ताव में तुम्हे क्या बुराई लगी ?'

'अच्छाई ही क्या लगती ?—उपलक्ष्यो से खिलवाड करने की न मेरी अवस्था है, न मेरी चाहना ही ।'

'पर मेरा ख्याल है, कपूर साहब निश्चय ही तुम्हारे जीवन मे सुख की सृष्टि कर सकते कमला !'

'पर यह तो तुम नटनागर के लिए भी कहते थे ।'

'खैर, जब वह रहे ही नही, तो उस बात को जाने दो ।'

कमला कुछ क्षण चुप रही, फिर बोली, 'कपूर साहब अच्छे व्यक्ति हैं, आखिर वे मेरी सन्तान को प्राणो से अधिक प्यार करते हैं । मेरे आकर्षण का यही कम कारण नही है । किन्तु इस आकर्षण से तो मैं उनका भेद केवल नटनागर ही से देख सकती हू । केवल इसीलिए घर बसाना दूर रहा, जीवन बसाने की जोखिम मैं कैसे ले लू ?'

'जोखम क्यो कहती हो उसे ?'

'तो और क्या कहू ! गुड्डो से खेलने की मेरी उमर बीत गई भाई !'

'कपूर साहब क्या एक गुड्डे ही हैं ?'

'जहां प्रेम न हो, वहां सभी तो गुड्डे-गुड्डिया है ।—कर्तव्य ने या

सामाजिक विधान ने उन्हे किसी तरह सजाकर आमने-सामने बिठा दिया है। जैसा आदेश मिले, वैसा व्यवहार करने के सिवा और क्या है उनके वश मे ?'

'पर प्रेम भी तो एक आकर्षण ही है।'

'पर वही तो नही—अब तुम कहोगे, प्रेम जैसी कोई स्थायी वस्तु तो होती नही ! नही होनी, यह मै मानती हू, जब जीवन ही स्थायी नही, तो उसमे प्राप्त होने वाली बाहरी वस्तु ही क्यो स्थायी हो जाएगी ?—किन्तु तुम मानो या न मानो, मजाक भी उडा सकते हो, मै प्रेम को एक कला मानती हू। इसके लिए साधना तो करनी ही पडती है, अपने उपकरणो की सामर्थ्य भी परख लेनी होती है। हर किसी कागज पर हर किसी तूलिका से तो कोई चित्र नही बनाया जा सकता ! यदि कागज मे रग ही फैल जाए, या तूलिका ही गड जाए, तो कलाकार के असतोष का अन्दाज लगा सकते हो ?'

'हा—वह कागज ही को फाड फेक सकता है।'

कमला ने मेरी ओर देखा। आंखे चार होते ही, मैने आंखे गिरा ली। एक लम्बी सास का आभास-सा कानो को हुआ, किन्तु मैंने दृष्टि को मोडा नही। सुनाई दिया—'जीवन किसीका पूर्ण नही होता—प्रयत्न इसीलिए करना है कि वह पूर्ण हो जाए।—जिस बर्तन को लेकर हम इसे भरने चले हैं, उसमे समाज ने कितने छेद कर रखे है। रस-पात्र तक पहुच ही नही पाता। इधर जिस गन्दगी मे जीवन का घड़ा पडा हुआ है, वहा उसे जग खाए जा रही है, यदि कभी घडे मे कुछ रस पडा भी तो वह उस जग मे भिदकर घडे को ही खाना शुरू कर देता है। ऐसी ही विडम्बना मे लौट चलने के लिए कह रहे हो ?'

'सम्भव है ऐसा आशय मिल जाए कि उसमे घट और पात्र दोनों ही समा जाए।—बाहर और भीतर जब रस ही रस हो तो, छिद्र होने से भी रस-हानि नही होगी।'

'यही तो चाहा था। यही तो चाहा था नारी ने नर से।—कि

समर्पण कर दे वह अपने आपको समग्र रूप से नर के व्यक्तित्व मे और वही नर, उसी समर्पण मे से उसकी सन्तान बनकर प्रकट हो, और उससे जीवन मागे।—नारी अधिकार नही चाहती, सरक्षण नही चाहती, वह केवल मिट जाना चाहती है समग्र रूप से—पर जब वह मिट नही पाती, तब वह अधिकारो से अपने आपको बहलाना चाहती है, संरक्षण की कामना करती है, और फिर जाने क्या-क्या नही करती।—मैंने भी यही चाहा था, पर नही हो सका।—अब और अधिक जीवन को व्यर्थ करने की दिशा मे नहीं बहकूगी।—जानते हो यह हत्या न हो जाती तो मैं क्या करती ?'

'कहो।'

'पुनः नटनागर के घर लौटने का इरादा न था। तुम्हारा आदेश था कि मैं पति और पुत्र दोनों को प्राप्त करू—लौट आकर कहना चाहती थी कि क्यो दिया तुमने पत्थर से टकराकर मस्तक फोड़ने का आदेश मुझे ? —यदि मेरा सिर ही तुम फोडना चाहते हो, तो तुम्हारे चरणो की धूल का एक कण भी वह कर सकता था। अब यदि वह आदेश नही लौटाना चाहते, तो मुझे मेरी मुक्ति ही लौटा दो ! ··पर अच्छा हुआ—उसका अवसर ही नही आया। तुम कह देते—लो तुम मुक्त हुई !—और मैं एकदम से निरर्थक हो उठती।'

'पर मैंने तो तुम्हे कभी बाधा नही ?'

'तब भी बंध तो गई ही।—आत्मा क्या होती है, मन क्या होता है पता नही, इतना ही कह सकती हू कि अपनी अद्वैतता के गभीर निर्जन तल पर मैंने जिस मूर्ति को पाया, उससे बंधने के सिवा कोई चारा न था।'

'पर उससे अधिक गहरे तल तक भी तो कोई मूर्ति उतर सकती है। आखिर एक दिन नटनागर की मूर्ति को भी तो तुमने निर्जन तल मे देखा था। बंधी शायद तब भी थी तुम !'

'बंधी थी, पर वह बंधन बड़ा सरल था, सरलता से टूट भी गया।

अधिक गहराई की बात कह सकते हो, किन्तु उथली चीजो से दृष्टि ऐसी क्षीण हो गई है कि गहराई मे डर लगता है।—अद्वैत की उस डरावनी गुफा में अधिक उतरकर तो अपने को भी खो दूगी !—नही, इस बन्धन मे ही मेरा बचाव है। गोताखोर की तरह यह बंधन ही मुझे ऊपर की याद दिलाता रहेगा···'

मैंने एक लम्बी सास ली। कमला शायद अब तक आखें बन्द करके ही भावावेश मे सब कुछ भूल-सी गई थी। मेरी आखों को देखकर उसने कहा—'तुम्हे प्यार इसलिए नहीं किया, कि तुम मुझे लेकर दुःख पाओ ! तुम्हे तो तट के स्तम्भ की तरह अकम्प रहना चाहिए। यदि तुम्हीं हिल उठोगे तो तुमसे बंधी हुई नावों का क्या होगा ?—तुम तो लेखक हो, निस्संग—अपने आप में भरपूर, अपनी सृष्टि के नियामक, स्रष्टा, सहारक ! तुम्हें यह मोह शोभा नही देता।—आखिर तुमसे मैंने जो यह रस्सी अटका दी है, इसकी ही कुछ सार्थकता रखो···'

और कमला ने दोनो हथेलियो में अपना मुंह छिपा लिया।

सोच नहीं पाता, क्या कहकर मैं उसे सांत्वना दू।—क्या कह दू कि वह सीखचो से बाहर निकल जाए तो हम दोनो चले जाए कहीं दूर, दुनिया के किसी कोने मे जहा हमें कोई न पहचानता हो, जहां हमारे जीवन का कोई भी उपलक्ष्य निर्वेद न बने।—दादू है ही, केवल कमला के कहने भर की देर है, और फिर जीवन ही जीवन है ! प्रेम से पोषित, उमगों से भरे सब प्रकार से समर्थ दो प्राणियों के लिए इस दुनियां मे अप्राप्य क्या है ?—पर पाना ही क्या जीवन का सब कुछ है ?—यदि ऐसा है तो कितनो ने इस जीवन मे पाया है ? यदि किसीने नही, तो क्या यह दुनिया व्यर्थ हो गई ? सब जीवन व्यर्थ हो गए ?

अपने ही हाथो से आंसू जिसको पोछने पड़ते हैं, रुदन ही उसका रुदन शेष करता है। कमला ने कहा, 'दादू, तुम्हारा कहना मान लेगा। उसकी जिद यह प्रवंचना का नाटक लम्बा होता जा रहा है। उसे कह दो, जीवन उसका ऋणी है ही, मृत्यु को भी वह क्यों न अपना ऋणी बना लेता।

उस मूक जड पिण्ड से सभी ने सदैव ही घृणा की है, किन्तु कोई नही जानता कि इन छल-छन्दो से हीन कितना निर्मल हृदय उसके पास है ! —उसने मुझे बेटी की तरह माना है, बिना मेरे दोषो पर ध्यान दिए ! दुनिया मे मैं यदि किसीकी भक्ति कर पाई हू तो वह केवल इस दादू की ।—और उसे कहना कि वह मुझसे मिलने का प्रयत्न न करे। मुझसे सहा नही जाएगा ।'

'और क्या आदेश है तुम्हारा ?····' मैने अपने आपको कडा बनाकर पूछा ।

'नटनागर के बाद उनके निकट की तो मैं ही हूं। तुम्हे उनकी मा के पास जाना पड़ेगा ।'

'मां के पास ?'

'हा, वे अधी है। जीवन मे उन्हे मैंने सदैव ही दुःख दिया है, पास रहकर न सही, दूर रहकर ही, और अन्त मे उनका बेटा भी छीन लिया। —उनकी व्यवस्था कर देनी होगी।—नटनागर की जो कुछ सम्पत्ति है, रेलवे की निर्वाह-निधि तथा बीमे से जो कुछ मिले, उसके अतिरिक्त निर्वाह-निधि का मेरा पैसा भी उन्हे दे दिया जाए। एक छोटा-सा बीमा मेरा भी है, उसका अधिकार मैंने दादू को दिया है। इसकी लिखा-पढी का भी प्रबन्ध कर देना होगा ।'

'अच्छा !'

'पर तुम्हें एक बार उनकी मा के पास जरूर जाना पडेगा। मा होकर मैंने मां के दर्द को पहचानने का प्रयत्न किया है। इस चोट को वे किस तरह सह सकेंगी, मै कल्पना भी नही कर सकती। यदि उनको कुछ हो गया···'

'तो···सोचती हो, मैं तमाशा देख सकूगा !'

कमला के ओठों पर मुस्कराहट नहीं आई, बोली—'उस बेचारी की दुर्दशा न होने पाएगी ।'

———

'अच्छा ! सोम के लिए कुछ कहना है ?·· यो कपूर साहब शायद तुमसे मिलेंगे ही।'

'नही, उनसे मिलने की आवश्यकता नही है। सोम के लिए क्या कहू ?···वह ठीक हाथो में है। यदि हो सके तो वह न जानने पाए कि मैं उसकी मां थी।···अपनी मा की लाछना सुनकर वह क्यो दु.ख पाए, यद्यपि यह अस्वीकार न करूगी कि मां न समझकर भी उसने मुझे पुत्र का ही आनन्द दिया है।···यह क्या कम दुर्भाग्य है कि मा होकर भी मै यह स्वीकार नही कर सकती।'

फिर काफी देर तक चुप्पी रही। जब कमला का रोने से कुछ दिल हल्का हुआ तो बोली :

'तुम्हें तो और देख पाऊगी न ?'

'दरकार है क्या ?'

कमला ने मेरी ओर देखा, देखती रही, देखती रही !

मैंने कहा, 'कहो''''क्या कहना चाहती हो !'

'शेष कथन।''''उसकी वाणी कांप उठी।

मैंने अपने आपको सम्हालकर कहा, 'नहीं; मैं फिर आऊगा।'

कमला ने कहा, रोते हुए—'मुझे''मुझे तुम भूल जाने की चेष्टा करना।'

'सो क्यो ?'

'इसलिए कि इससे तुम दुःख ही पाओगे।'

'वह मेरी बात है, तुम अपनी कहो।'

'जो तुम्हारी है, वह मेरी नही है क्या ?'

एकाएक मेरे मुंह से निकला, 'तो चलो—मुझे जीवन की बडी साध है। हम दोनों कही बहुत दूर जाकर संसार की दृष्टि से ओझल हो जाएंगे।—देखता हूं, तुम भी तो मृत्यु से डर ही रही हो।'

'नहीं; मैं मृत्यु से नहीं डरती, किंतु जीवन के साथ मेरा अशेष दुलार रहा है। मृत्यु ही तो उसका सबसे बडा सत्य है, फिर उससे डर कैसा ?

जीवन की समस्त चेतनाए, समस्त शक्तिया, उसी समय तो उद्‌बुद्ध होती है ! विकास के उस चरम क्षण से रोमांच हो सकता हो, कुछ आतक भी हो, पर भय कैसा ?—तुम तो उपन्यासकार हो, समाप्ति के चरम क्षण की वह क्षिप्रता, सम्पन्नता, सिद्धि और प्रभाव क्या ऐसे तत्व नही है, जिनकी ओर प्रारम्भ ही से सबकी दृष्टि लगी रहती है !—फिर क्यो मै इससे डरूगी ?—तुम कहोगे कि पुस्तक का अन्त बीच ही मे हो रहा है।—पर किसी परिधि मे कहा आदि है, कहा मध्य है और कहा है अन्त ?—किन्तु प्रत्येक अध्याय की भी तो एक परिसमाप्ति होती है ! कभी यह भी होता है कि किसी ऐसे अध्याय पर ही पटाक्षेप हो जाना ही पुस्तक की प्रभविष्णुता की रक्षा कर सकता है।—मै अनुभव करती हू मैं जीवन के ऐसे ही मोड पर पहुच गई हू।'

'मोड ही तो रास्ते का अन्त नही है।'

'न हो, पर आगे का रास्ता मेरा नही है !'—फिर किंचित मुस्करा-कर उसने कहा, 'तुम्हारे साथ से बढकर जीवन मे सचमुच कामना की कोई वस्तु न थी ! तुम्हारे इस प्रस्ताव का क्षण ही मेरे जीवन की सबसे बडी सार्थकता हो गई है। इस क्षण को पकडे रहकर ही मै अमर हो गई। इससे अधिक मै कुछ नही चाहती। तुम्हे तो मै बहुत जानती हू, यदि कही जन्म-जन्मातर हो, तो शायद कई जन्मो से तुम्हे जानती हू, बध भी तुम जाओगे, पर यदि तुम्हे ही बाधने का प्रयत्न मै करूगी, तो मेरा आधार क्या रहेगा !· '

मैने कहा, 'तो फिर आज मै चलू ?—क्योकि समय तो हो गया है, और इसके पहले कि सिपाही आकर हमे अलग कर दे, हम स्वत ही अलग हो जाए ?'

'फिर आओगे न !'

'कमला—इस मोह को क्या आगे बढाना ठीक होगा ?—पुस्तक न हो—यह अध्याय ही सही, यदि यही समाप्त कर दिया जाए '

'ठीक तो है !—' और उसने सीखचो मे से एक बार और अपने

हाथ बढाकर मेरे आसू पोंछ दिए। तभी दूर पर सिपाही दिखाई दिया। कमला ने शीघ्र ही मेरे पैरो को छूकर माथे से लगा लिया।

मैं उठा, पर एकाएक पैर लडखड़ा गए, गिरते-गिरते बचा—सीखचो पर हाथ टिक गए, पर तभी कमला ने उठकर सीखचो से ही हाथ बढाकर मुझे थाम लिया, बोली, 'क्या हो गया तुम्हे ?'

मैंने सम्हलकर कहा, 'नही, कुछ नहीं—' और मैं चल पडा, दरवाजे की ओर—कानो मे किसीके क्रन्दन की गम्भीर सुबकियां एक आघात करने लगी, करती रही, करती रही जीवन भर!

पर मैं लेखक हूं, यह कमजोरी मुझे शोभा नहीं देती है।